भारत सरकार द्वारा रजि० नं० ३३७०/७३

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष १८ अंक ७ ७ जनवरी, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

अन्तरंग सभा के महत्त्वपूर्ण निर्णय

वेदप्रचार के प्रसार हेतु जिलावार कार्यक्रम

सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य सुदर्शनदेव वेदप्रचाराधिष्ठाता मनोनीत

जनगणना मे जाति आर्य तथा धर्म वैदिक लिखाने का निर्देश

आर्यनेता प्रो० शेरसिंह को योजना आयोग का सदस्य बनाये जाने पर सार्वजनिक अभिनन्दन करने का निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा को बैठक दिनांक ३० दिसम्बर, १९९० को सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक में सम्पन्न हुई। बैठक में हरयाणा के कोने-कोने से अन्तरंग सदस्य तथा सयोजक जिला वेदप्रचार मण्डल आदि विशेष आमंत्रित सदस्य उपस्थित हुए। इस अवसर पर निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण निश्चय किये गये।

१. वेद प्रचार के प्रसार हेतु सभा उपदेशकों तथा मण्डलियों के जिलेवार कार्यक्रम :

हरयाणा प्रदेश जहां दूध दही खाने के लिए प्रसिद्ध था, परन्तु अब हरयाणा में शराब की नदिया वह रही हैं। बाजार में मास की दुकाने, रेहड़ियों पर सब्जी की भांति अण्डों की बिक्री तथा दूरदर्शन एव आकाशवाणी पर अश्लील चित्र और नाच-गाने भारतीय सभ्यता को कलंकित किया जा रहा है। छात्र-छात्राओं पर इसका कुप्रभाव पड रहा है। ग्रामों में राधास्वामी, निरकारी आदि मत-मतान्तर फैल रहे हैं। विवाह आदि के अवसरों पर विदेशी भाषा अंग्रेजी में निमन्त्रण-पत्र छपवाकर राष्ट्रीय भाषा हिन्दी की उपेक्षा की जारही है। स्कूलों में पढानेवाले प्रायः छात्रों को भी पिलाने की शिक्षा दे रहे हैं। डी०ए०वी० विद्यालयों में भारी फीस छात्रों से लेकर उन्हें अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा देकर तथा टाई पहनवाकर विदेशी संस्कृति का प्रचार कर रहे हैं। गत मास दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए भारत के प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर ने कहा है कि ...कट की घडी में महर्षि दयानन्द की शिक्षाए ही देश में प्रकाश फैला ...कती हैं और आर्यसमाज इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ...ामी दयानन्द के दिखाये रास्ते पर चलकर ही मंजिल तक पहुँचा जा ...कता है। इस प्रकार सारा राष्ट्र आर्यसमाज की ओर आशाए लगाये ...ठा है।

अतः इन कार्यों को कार्यान्वित करने के लिये जिलेवार वेदप्रचार ...ण्डलों का गठन सभा ने किया है जिससे प्रत्येक जिले में एक-एक उप...शक तथा भजनमण्डली का प्रचार केन्द्र बनाकर आर्यसमाज के ...ानीय सक्रिय कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से प्रत्येक नगर तथा ग्राम में ...दिकधर्म का प्रचार करके आर्यसमाज की स्थापना की जावेगी और ...पर लिखित सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जनमत तैयार करके आर्य...माज के प्रचार का विस्तार किया जावेगा। इन सभी कार्यों के मार्ग...र्शन के लिए सभा ने आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य सुदर्शनदेव जी को वेदप्रचाराधिष्ठाता तथा श्री सत्यवीर शास्त्री को प्रचारमन्त्री का कार्यभार सौंपा गया है।

२. जनसभा में जाति आर्य तथा वैदिकधर्म लिखाने का निर्देश .

९ फरवरी से २ मार्च तक हरयाणा में सरकार की ओर से जनगणना हो रही है। पता लगा है कि जनगणना के खाने में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, बोध, सिख तथा जैन आदि के मतों को माना गया है। वैदिकधर्म को इसमें सम्मिलित नही किया गया है। अतः यह सभा भारत सरकार के गृहमन्त्री से अनुरोध करती है कि वैदिकधर्म को जोकि आदिकाल से भारत में प्रचलित है और हिन्दू, जैन, बोध तथा सिखमत इसकी शाखाए हैं वैदिकधर्म तथा जाति आर्य लिखाने की व्यवस्था करे।

सभा ने आर्यजनता को निर्देश दिया है कि वे धर्म के खाने में वैदिकधर्म तथा जाति आर्य लिखाने का अनुरोध करें।

३. योजना आयोग का सदस्य नियुक्त होने पर आर्यनेता प्रो. शेरसिंह का सार्वजनिक अभिनन्दन करने का निश्चय :

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह को भारत सरकार द्वारा योजना आयोग का सदस्य नियुक्त किये जाने पर सभा के सदस्यों ने प्रसन्नता व्यक्त को है क्योंकि आठवी पचवर्षीय योजना को तैयार करने में प्रो० शेरसिंह जी शराबबन्दी लागू करनेवाले प्रान्तो को घाटा पूर्ति करने के लिए आर्थिक अनुदान दिलाने, वृद्धों को पेन्शन देनें की स्कीम को केन्द्रीय योजना में सम्मिलित कराने तथा हरयाणा के विकास कार्यों के लिए अधिक धन दिलवाने का यत्न कर रहे हैं। प्रो० शेरसिंह जी का सारा जोवन आर्यसमाज तथा राष्ट्र की सेवा में व्यतीत हुआ है। उन्होंने आर्यसमाज के सभी आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया है। हिन्दी तथा सस्कृत अध्यापकों को अंग्रेजी अध्यापकों के समान वेतन दिलवाकर प्रोत्साहित किया है। हैदराबाद आर्यसत्याग्रहियों को स्वतन्त्रता सेनानी घोषित करवाकर उन्हें केन्द्र तथा राज्य सरकारों से पेन्शन दिलवाने में प्रमुख भूमिका निभाई है। इस प्रकार आर्यनेता को योजना आयोग का सदस्य बनाये जाने पर आर्यसमाज का गौरव बढा है। अतः प्रो० शेरसिंह जी का आर्यजगत् की ओर से स्वागत करने के लिए आर्यसमाज के प्रमुख नेता स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में एक स्वागत समिति का गठन किया गया है। स्वागत समारोह की तिथि तथा स्थान के निश्चय की सूचना सर्वहितकारी में प्रकाशित की जावेगी।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

भारत सरकार द्वारा रजि. न० २३२०/७३ रजि न० P RTK-४२ ...

ओ३म् सर्व...कारी ...श्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक ८ १४ जनवरी, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

मकर सौर संक्रान्ति

जितने काल में पृथिवी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा पूर्ण करती है, उसको एक 'सौर वर्ष' कहते हैं और कुछ लम्बे वर्तुलाकार जिस परिधि पर पृथिवी परिभ्रमण करती है, उसको 'क्रान्तिवृत्त' कहते हैं। ज्योतिषियों द्वारा इस क्रान्तिवृत्त के १२ भाग कल्पित किए हुए हैं और उन १२ भागों के नाम उन-उन स्थानों पर आकाशस्थ नक्षत्रपुञ्जों से मिलकर बनी हुई कुछ मिलती-जुलती आकृतिवाले पदार्थों के नाम पर रख लिए गए हैं। यथा—१ मेष, २ वृष, ३ मिथुन, ४ कर्क ५ सिंह ६ कन्या, ७ तुला, ८ वृश्चिक ९ धनु, १० मकर, ११ कुम्भ, १२ मीन। प्रत्येक भाग वा आकृति 'राशि' कहलाती है। जब पृथिवी एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करती है तो उसको 'संक्रान्ति' कहते हैं। लोक में उपचार से पृथिवी के संक्रमण को सूर्य का संक्रमण कहने लगे हैं। छः मास तक सूर्य क्रान्तिवृत्त से उत्तर की ओर उदय होता रहता है और छः मास तक दक्षिण की ओर निकलता रहता है। प्रत्येक षण्मास की अवधि का नाम 'अयन' है। सूर्य के उत्तर ओर उदय की अवधि को 'उत्तरायण' और दक्षिण ओर उदय की अवधि को 'दक्षिणायन' कहते हैं। उत्तरायणकाल में सूर्य उत्तर की ओर से उदय होता हुआ दीखता है और उसमें दिन बढ़ता जाता है और रात्रि घटती जाती है। दक्षिणायन में सूर्योदय दक्षिण की ओर दृष्टिगोचर होता है और उसमें रात्रि बढ़ती जाती है और दिन घटता जाता है। सूर्य की मकर राशि की संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क-संक्रान्ति से दक्षिणायन प्रारम्भ होता है। सूर्य के प्रकाशाधिक्य के कारण उत्तरायण विशेष महत्त्वशाली माना जाता है और अतएव उत्तरायण के आरम्भ दिवस मकर की संक्रान्ति को भी अधिक महत्त्व दिया जाता है और स्मरणातीत चिरकाल से उस पर पर्व मनाया जाता है। यद्यपि इस समय उत्तरायण परिवर्तन ठीक-ठीक मकर संक्रान्ति पर नहीं होता और अयनचलन की गति बराबर पिछली ओर को होते रहने के कारण इस समय (संवत् १९९८ वि. में) मकर संक्रान्ति से २२ दिन पूर्व धनु राशि के ७ अंश २४ कला पर 'उत्तरायण' होता है। इस परिवर्तन का लगभग १६५० वर्ष लगे हैं परन्तु पर्व मकर संक्रान्ति के दिन ही होता चला जाता है। इससे सर्वसाधारण की ज्योतिष शास्त्रानभिज्ञता का कुछ परिचय मिलता है, किन्तु शायद पर्व का अचल रहना अनुचित मानकर मकर संक्रान्ति के दिन ही पर्व मनाने की रीति चली आती हो।

मकर संक्रान्ति के अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है। जनावास, जंगल, वन, पर्वत सर्वत्र शीत का आतंक छा रहा है, चराचर जगत् शीतराज का लोहा मान रहा है, हाथ-पैर जाड़े से सिकुड़े जाते हैं, "रात्रौ जानुर्दिवा भानु" रात्रि में जंघा और दिन में सूर्य, किसी कवि की यह उक्ति दीनों पर आजकल ही पूर्णरूप से चरितार्थ होती है। दिन को अब तक यह अवस्था थी कि सूर्यदेव उदय होते ही अस्ताचल के गमन की तैयारियां आरम्भ कर देते थे, मानो दिन रात्रि में लीन ही हुआ जाता था। रात्रि सुरसा राक्षसी के समान अपना देह बढ़ाती ही चली जाती थी। अन्त में उसका भी अन्त आया। आज मकर संक्रान्ति के मकर ने उसको निगलना आरम्भ कर दिया।

आज सूर्यदेव ने उत्तरायण में प्रवेश किया। इस काल की महिमा संस्कृत साहित्य में वेद से लेकर आधुनिक ग्रन्थ पर्यन्त सविशेष वर्णन की गई है। वैदिक ग्रन्थों में उसको 'देवयान' कहा गया है और ज्ञानी लोग स्वशरीर त्याग तक की अभिलाषा इसी उत्तरायण में रखते हैं। उनके विचारानुसार इस समय देह त्यागने से उनकी आत्मा सूर्यलोक में होकर प्रकाश मार्ग से प्रयाण करेगी। आजीवन ब्रह्मचारी भीष्म-पितामह ने इसी उत्तरायण के आगमन तक शरशय्या पर शयन करते हुए प्राणोत्क्रमण की प्रतीक्षा की थी। ऐसा प्रशस्त समय किसी पर्वता (पर्व बनने) से कैसे वञ्चित रह सकता था। आर्य जाति के प्राचीन नेताओं ने मकर संक्रान्ति (सूर्य की उत्तरायण-संक्रमण तिथि) का पर्व निर्धारित कर दिया।

जैसा कि पूर्व बतलाया जा चुका है कि यह पर्व बहुत चिरकाल से चला आता है। यह भारत के सब प्रान्तों में प्रचलित है, अतः इसको एकदेशी न कहकर सर्वदेशी कहना चाहिए। सब प्रान्तों में इसके मनाने की परिपाटी में भी समानता पाई जाती है सर्वत्र शीतातिशय के निवारण के उपचार प्रचलित हैं।

वैद्यक-शास्त्र में शीत के प्रतिकार तिल, तैल, तूल (रूई) बतलाए हैं। जिनमें तिल सबसे मुख्य है। इसलिए पुराणों में इस पर्व के सब कृत्यों में तिलों के प्रयोग का विशेष माहात्म्य गाया गया है और उनको पापनाशक कहा गया है। किसी पुराण का निम्नलिखित वचन प्रसिद्ध है—

> तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमी तिलोदकी।
> तिलभुक् तिलदाता च षट्तिलाः पापनाशनाः॥

अर्थात् तिलमिश्रित जल से स्नान, तिल का उबटन, तिल का हवन, तिल का जल, तिल का भोजन और तिल का दान ये छः तिल के प्रयोग पापनाशक हैं।

मकर संक्रान्ति के दिन भारत के सब प्रान्तों में तिल और गुड़ या खांड के लड्डू बनाकर जिनको 'तिलवे' कहते हैं, दान किए जाते हैं और इष्टमित्रों में बांटे जाते हैं। महाराष्ट्र प्रान्त में इस दिन तिलों का 'तिलगूल' नामक हलवा बांटने की प्रथा है और सौभाग्यवती स्त्रियां तथा कन्याएं अपनी सखी सहेलियों से मिलकर उनको हल्दी, रोली, तिल और गुड़ भेंट करती हैं। प्राचीन ग्रीक लोग भी वधू वर को सन्तान वृद्धि के निमित्त तिलों का पकवान बांटते थे। इससे ज्ञात होता है कि तिलों का प्रयोग प्राचीनकाल में विशेष गुणकारक माना जाता रहा है। प्राचीन रोमन लोगों में भी मकर संक्रान्ति के दिन अंजीर, खजूर और शहद अपने इष्टमित्रों को भेंट देने की रीति थी। यह भी मकर संक्रान्ति पर्व की सार्वत्रिकता और प्राचीनता का परिचायक है।

मकर संक्रान्ति पर्व पर दीनों को शीतनिवारणार्थ कम्बल और घृत दान करने की प्रथा मध्यप्रदेश में प्रचलित है। "कम्बलवन्तं न बाधते शीतम्" का हिन्दी कहावत रूप संस्कृत से प्रभावित है। घृत का भी

(शेष पृष्ठ ७ पर)

हरयाणा सरकार द्वारा जनता को एक विनाशकारी तोहफा

(अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, सभा उपदेशक)

एक समय तो वह था जबकि भारतवर्ष सब देशों का गुरु था। यहां की सभ्यता संस्कृति महान् थी, इस देश में अनेक ऋषि-मुनि, महात्मा, आदर्श राजनेता, कर्मयोगी, मर्यादा पुरुषोत्तम, नीतिकार, विद्वान्, क्रान्तिकारी, देशभक्त हुए। वास्तव में यह ऋषि मुनि योगियों का देश था। महाभारत से एक हजार वर्ष पहले यहां फूट ने डेरे डाले। कई वर्षों तक देश गुलाम रहा। लेकिन कोई भी विदेशी राज लाख कोशिश करने के बाद भी हमारी सभ्यता एवं संस्कृति को नहीं मिटा पाया।

लेकिन बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है जब से हमें आजादी मिली है, तब से हमारे देश के नेता एक आध को छोड़कर देश को बर्बाद करने एवं यहां की सभ्यता, आदर्श संस्कृति को मिटाने पर तुले हुए हैं। सभी राजनेता अपने तुच्छ स्वार्थों के लिए महात्मा गांधी का नाम लेते हैं। लोगों को मूर्ख बनाकर अपनी कुर्सी प्राप्त करते हैं, वोट मांगते हैं। सारे भारतवर्ष में एक गुजरात प्रान्त को छोड़कर बुरा हाल है। चाहे किसी भी प्रान्त में, किसी भी दल या पार्टी की सरकार हो, सब शराब को बढ़ावा दे रही हैं। हरयाणा प्रान्त उनमें सब से आगे है। कहा तो यह कहावत प्रसिद्ध थी कि "देशों में देश हरयाणा जहां दूध दही का खाना।" अब इसके विपरीत है "देशों में देश हरयाणा जहां शराब मांस का खाना।" हरयाणा में किसी भी लाल या अन्य की सरकार आई, सब ने अपने समय में शराब को बढ़ावा दिया। (सिर्फ अढाई वर्ष जनता पार्टी सरकार को छोड़कर)। हरयाणा में शराब की नदियां बहा दी। शहर और गांवों में ठेकों की भरमार है। चाहे शिक्षण संस्था हो या बस अड्डा तथा पनघट सब मुख्य जगहों पर शराब के ठेके, इससे भी सबर नहीं किया। ठेकों के साथ अहाते तथा एक रुपया पंचायत को प्रति बोतल, अढाई रुपये नगरपालिका को प्रति बोतल का लालच देकर तो शराब, जुआ, व्यभिचार, भ्रष्टाचार को बढ़ावा देकर चार चांद लगा दिए। इसके अतिरिक्त ठेकेदार पुलिस की मिली भगत से प्रत्येक छोटे-बड़े गांव में जहां शराब के ठेके नहीं हैं वहां अवैध शराब की बिक्री जोरों पर है। परचून की दुकानों पर या असामाजिक तत्त्व सरेआम घरों में शराब बेचते हैं। दस-दस वर्ष के बच्चे दो-दो रुपये में शराब लेकर पीते हैं। शाम को जाने वाली प्रत्येक बस में शराबियों की भरमार से बस अड्डे पर शराबी ही नजर आयेंगे। सायंकाल गांव में शराबियों का बोलबाला है। महिलाओं एवं सज्जन पुरुषों का जीना दूभर हो रहा है। सरकार आमदनी के लिए शराब बढ़ावा नीति से विकास नहीं विनाश कर रही है।

जब मजदूर किसान की खून पसीने की कमाई शराब में चली जावेगी तथा नवयुवकों का चरित्र खत्म हो जावेगा, अर्थात् माता बहनों की सरेआम इज्जत लूटी जावे। उसको हम प्रगति कहें या घटिया पदलोलुप राजनैतिकों का व्यक्तिगत स्वार्थ। आज के नेताओं को धन चाहिए चरित्र नहीं। पाप की कमाई समाज को पाप की ओर ले जावेगी।

अभी कुछ दिन पहले हरयाणा सरकार ने जनता को एक और विनाशकारी तोहफा भेंट किया है जिससे रही सही कुछ सभ्यता हरयाणा में शेष थी वह पूरी तरह नष्ट हो जावेगी। सरकार ने एक उद्योगपति को हरयाणा में शराब का एक बड़ा कारखाना लगाने का अनुमति-पत्र (लैटर आफ इन्टेंट) दिया है। मद्य के इस कारखाने को जो जिला फरीदाबाद में है अब तक केवल उद्योगों के काम में आने वाली मद्य (इन्डस्ट्रियल अल्कोहल) बनाने का लाइसेंस मिला हुआ था। अब वह इस मद्य से शराब तैयार करके बेच सकेगा। इस कारखाने की क्षमता प्रतिवर्ष २५ लाख लीटर मद्य बनाने की है। इस बारे नौकरशाही की यही दलील है कि इससे "सरकारी खजाने में ज्यादा धन जमा होगा।" इसके साथ ही हरयाणा सरकार ने २ दिसम्बर से रेडियो पर सांग का घटिया प्रोग्राम देकर हरयाणे की संस्कृति को मिटाने का षड्यन्त्र किया है।

अगर समय रहते आर्यसमाज के नेता तथा अन्य धार्मिक, सामाजिक संगठनों के बुद्धिजीवी लोग इकट्ठे होकर उपरोक्त बुराइयों के खिलाफ सरकार पर दबाव नहीं डाला यानी संघर्ष नहीं किया तो हमारी संस्कृति सभ्यता मिट जावेगी। आने वाली पीढी हमें धिक्कारेगी कि हमारे बुजुर्ग इतने कायर और कमजोर थे कि इन बुराइयों का विरोध नहीं कर सके। अत: शराब हटाओ देश बचाओ।

—❀—

जिला हिसार में नशाबन्दी एवं वेदप्रचार की धूम

दिनांक १५-१२-९० को ग्राम नलवा में शराबबन्दी एवं वेदप्रचार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी ने सत्संग का चमत्कार तथा इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान पर प्रकाश डाला। साथ में नवयुवकों को आह्वान किया कि अगर अपना एवं अपने बच्चों का कल्याण चाहते हो तो आर्यसमाज के सम्पर्क में आओ। श्री हरध्यानसिंह आर्य रेडियो सिंगर के प्रभावशाली शिक्षाप्रद भजन हुए। प्रात: आर्यसमाज मन्दिर में यज्ञ किया।

दिनांक १६-१२-९० को ही प्रात: १० बजे ग्राम कंवारी में सूबेदार रामेश्वरदास आर्य के नवगृह निर्माण के उपलक्ष्य में क्रान्तिकारी जी ने यज्ञ किया। यज्ञ पर आर्यसमाज कंवारी के अधिकारी एवं गांव के गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। यज्ञ पर पंच महायज्ञ, यज्ञोपवीत का महत्त्व, विद्यार्थियों के कर्तव्य बारे विस्तार से विचार रखे। ओमप्रकाश आर्य ने एक भजन रखा। सूबेदार जी ने भी दया एवं कर्म बारे प्रेरणाप्रद विचार रखे तथा धन्यवाद किया। रात्रि को चौपाल में प्रचार हुआ। प्रधान श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी ने आर्यसमाज के आन्दोलन एवं शराब बन्दी बारे विचार रखे। गांव में पूर्ण नशाबन्दी बारे नवयुवकों को प्रेरणा दी। महाशय हरध्यानसिंह ने फुटकर भजनों के अतिरिक्त इन्द्रजीत एवं चन्द्रकान्ता का प्रेरणाप्रद इतिहास रखा।

दिनांक १७-१२-९० को खेतों की ढाणी (आर्य निवास नलवा) में प्रचार किया गया। प्रचार में अन्य ढाणियों से भी काफी संख्या में परिवार सहित लोगों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। नलवा गांव से श्री क्रान्तिकारी के आग्रह पर कई नवयुवक पधारे। स्वामी जगतमुनि जी एवं हरध्यानसिंह जी ने भजनों के माध्यम से प्रभावशाली प्रचार किया। प्रचार में गऊ एवं कन्या की रक्षा नवयुवकों के चरित्र पर बल दिया गया। प्रात: ६ बजे निकट की ढाणी मुढालवाला के निवास पर क्रान्तिकारी जी एवं स्वामी जगत मुनि जी द्वारा यज्ञ किया गया। एक खूंखार शराबी श्री सुखबीर जी ने शराब न पीने का व्रत लिया तथा जनेऊ धारण किया। इसी अवसर पर दो नवयुवक श्री भलेराम तथा सुमेरसिंह ने भी जनेऊ धारण किया। स्वामी जी ने शराब की बुराई पर तथा लड़कियों को शिक्षाप्रद भजन सुनाए। कार्यक्रम सभी स्थानों पर प्रेरणादायक एवं रोचक रहा। सामर्थ्य अनुसार लोगों ने कुछ दान भी दिया। कई पत्रिका के सदस्य भी बनाए गये।

डा० ओमप्रकाश आर्य
मन्त्री, आर्यसमाज कंवारी

शराब हटाओ देश बचाओ

विचार गोष्ठी

बल्लभगढ। स्थानीय चावला कालोनी स्थित आर्यसमाज में यहां एक विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसका विषय था– "वर्तमान परिस्थितियों में आर्यसमाज को युवाशक्तियों का योगदान", जिसमें लगभग पैंतीस उच्चशिक्षाविद् शिक्षक पुरोहित, उपदेशक, व्यवसायी, व्यापारी, सामाजिक कार्यकर्त्ता और आर्यसमाज के युवाओं ने भाग लिया। इस गोष्ठी का शुभारम्भ ही इतना गर्म हुआ कि ऐसा लगता था कि यदि व्यवस्था सचेत न हुई और वर्तमान परिस्थितियों का सृजन इसी प्रकार से लगातार होता रहा तो निकट भविष्य में ही व्यवस्था को लेने के देने पड सकते हैं। अपने विचार व्यक्त करते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय से संस्कृत में स्वर्ण पदक प्राप्त श्री सुशील शास्त्री ने इस सदर्भ में अपने तीखे खीजभरे किन्तु ओजपूर्ण स्वर में कहा कि युवक निर्माण चाहता है। निर्माण उसके सन्तोष की सीमा है, किन्तु जब वह देखता है कि व्यवस्था निर्माण की जगह विनाश दे रही है तब उसमें उसके प्रति असन्तोष पैदा होजाता है और उसका निर्माण विनाश में परिवर्तित होजाता है। युवा वस्त्रव्यवसायी और आर्यवीर दल के श्री वेदप्रकाश जी की खीझ यद्यपि विवेकपूर्ण थी परन्तु उनका आक्रोश भी व्यवस्था के उच्च नेतृत्व के प्रति था। उनका कहना था जब तक आर्यसमाज का नेतृत्व हमारे इस समय के उच्च नेताओं के हाथ में है तब तक वास्तविकता तो यह है कि युवक उसके होते हुए सक्रिय नही हो सकते और कदाचित् हुए भी तो उच्च नेतृत्व युवकों को जो मौलिक करना चाहते हैं उनको न करने देकर अपने ढग से चलायेगा। दो अनजान युवकों का विचार था कि आर्यसमाज के लोग जब अपनी बुराई भी प्रखरता से कह और सह सकते हैं तो यह बात सभी भारतवासियों की उच्च आकांक्षाओं और आशाओं का प्रतीक है क्योंकि आज का सोच कल का कर्म बन सकता है। हम इस विचार गोष्ठी में चल रही विचार चर्चा से बहुत प्रभावित हैं। वर्तमान में साम्प्रदायिकता मन्दिर मस्जिदवाद, भाई भतोजावाद और राजनैतिक हडकम्प से फैली महामारी को आर्यसमाज की औषधि रामबाण सिद्ध हो सकती है। आर्यसमाज के प्रति नवयुवक कैसे आकर्षित हों इस विषय में श्री ओम्प्रकाश जी के विचार कम उत्तेजनापूर्ण न थे। उनका कहना था कि विदेशी धर्मावलम्बी अपने धर्म में दीक्षित हुए लोगों के रोजमर्रा के जीवन की आवश्यकताओं की भरसक पूर्ति का सतत प्रयास करते रहते हैं, किन्तु हम आर्यसमाज के लोग इस प्रकार का आर्यसमाज में क्या रखते हैं। इस पर कई सज्जनों के विचार आये कि आर्यसमाज में सभी चीजो के साथ-साथ इस ओर भी ध्यान दिया जाना चाहिये। कुछ का विचार यह भी था यदि उच्च वर्ग में आर्यसमाज के विचार को तेज किया जाये उसके लिए टेलीविजन, रेडियो तथा आधुनिकतम पत्र पत्रिकाओं का सहारा लिया जाए तो आशातीत सफलता मिल सकती है। पेशे से पुरोहित श्री हरिशरण आचार्य ने इस सदर्भ में कहा कि रोटी, कपड़ा और मकान की उपेक्षा युवकों के मानसिक जागरण की ही भारी आवश्यकता है क्योंकि पिछले लगभग ४० सालों से राजनैतिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक स्तर पर हमारे देश ने आंख मूदकर मन को दूषित किया है।

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टकारा के पूर्व उपाचार्य श्री हरिओम् जी ने अपने शान्त किन्तु गवेषणापूर्ण और गम्भीर स्वर में कहा कि यह समय भाषण देने का नहीं बल्कि काम करने का है, आज का युवक पिछले २०० सालों का युवक नहीं है। वह आधुनिक युग में गतिशील होना चाहता है। यदि कोई उसकी गति मे बाधा बनता है तो वह उसके प्रति बगावती होगा। इस अवसर पर श्री जीवन लाल ने कहा कि सबसे पहली आवश्यकता स्वय के सुधार की है क्योंकि घर से बाहर निकलने के बाद आज सड़क पर आकर किसी की भी पहचान कर पाना कठिन है। सभी का आहार-व्यवहार, पहनना-ओढना आदि गुड़गोबर होगया है। इस गोष्ठी को श्री भूदेव आचार्य ने आमन्त्रित किया।

प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का समापन तथा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

(प्रो० ओमकुमार आर्य, आर्यसमाज जीन्द शहर)

जीन्द दिसम्बर २३। आर्यवीर दल जीन्द ने गत २ दिसम्बर १९९० से प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया हुआ था जिसका समापन समारोह २३ दिसम्बर १९९० रविवार को सुबह ८ बजे से १० बजे तक चला। मुख्य अतिथि माननीय चौ० कुलवीरसिंह जी मलिक, राज्यमन्त्री हरयाणा सरकार, थे जिन्होंने आर्यवीर दल के इस रचनात्मक कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की और अपनी तरफ से हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया तथा प्राकृतिक चिकित्सा जैसे उपयोगी कार्य के लिए दस हजार रु० का अनुदान देने की घोषणा की। कार्यक्रम के अध्यक्ष माननीय श्री पी० पी० सिंह जी साहनी, उपायुक्त जीन्द ने भी आर्यसमाज और आर्यवीर दल के ठोस रचनात्मक कार्यों को तारीफ की और सहयोग का आश्वासन दिया। जीन्द उपमण्डल के उपमण्डल अधिकारी (ना.) माननीय श्री रामभक्त जी लांगायन भी उपस्थित थे और बीच में भी समय-समय पर शिविर में आकर प्रेरणा देते रहे। आर्यसमाज रामनगर के भू० पू० प्रधान, नगरपालिक जीन्द के भूतपूर्व अध्यक्ष तथा नगर के सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री अभयसिंह जी आय, चौ० रामकरण जी आर्य नगर परिषद् जीन्द, श्री रामकिशन जी गुप्ता, श्री कर्णसिंह जी आर्य मण्डलपति आर्यवीर दल, श्री दलबीर सिंह जी आर्य नगरनायक आर्यवीर दल जीन्द तथा श्री देवराज जी आर्य आदि महानुभावों ने आमंत्रित अतिथियों का माल्यार्पण से स्वागत किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी को भी श्रद्धांजलि दी गई। प्रो० ओमकुमार आर्य, उपसंचालक आर्यवीर दल हरयाणा ने कार्यक्रम का संचालन किया। आर्यवीर दल ने पेशकश की कि आर्यवीर रक्तदान जैसे पुनीत समाजोपयोगी कार्यक्रम में भी जिला प्रशासन को सहयोग देंगे और निकट भविष्य में बढती अश्लीलता और नग्नता-प्रधान फिल्मी पोस्टरों के विरुद्ध भी जनमत को जाग्रत करेंगे। शान्ति पाठ के साथ सभा विसर्जित हुई।

हाथी के दांत खाने के और....!

(मा० रामचन्द्र आर्य 'नलवा')

शोषणखोरी खत्म हुई ना बीत कई साल लिये।
गरीब आदमी गरीब बना होया धनी धन माल लिए॥ टेक॥

बीबी बच्चे सारे कमावें मिलता टेम का अन्न कोन्या।
पहरन ओढन का टोटा दिखे कपड़ा उनके तन कोन्या।
कोडी जूती पाटे कपड़े पर चुराते काम ते मन कोन्या।
चार-चार वर्ष मजदूर पर होता बाफर धन कोन्या।
बारह घन्टे काम कराके धनी कहदे रोटी दाल लिये॥१॥

मंहगाई दिन रात बढे पर बढ़ती नही मजदूरी।
ब्याज मूल तै ज्यादा होज्या जिब क्यूकर हो सबूरी।
टोटे में कोए काम बनै ना रहज्या बात अधूरी।
चुप रहकै सोज्या सै जै कोए कहदे बात गरूरी।
इज्जत हुई निलाम गरीब की फिरै धनी शान लिये॥२॥

पढ़ना लिखना दूर रहा मिलै काम तै टेम नहीं।
सारे धर्म अमीर करें कह गरीब कै कोए नेम नहीं।
ढूंढ पड़े गरीबां कै पर कोठी कै आती सेम नहीं।
शरीर सूख कै जर्जर होज्या चढ़ता कोए फेम नहीं।
जिन्दगी भर दुःख ठावें ईश्वर इनने सम्भाल लिये॥३॥

रामचन्द्र कह नलवे आला आग्या भौतिकवाद सुणो।
फसल सस्ते दाम बिकें मंहगे बीज और खाद सुणो।
पाखण्डी छलिया मूंछ मरोड़े करता वाद विवाद सुणो।
सत्य का प्रचार नहीं बोलें झूठ का नाद सुणो।
हीन बनके रहज्या से गरीब मन में अधूरे ख्याल लिये॥४॥

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

आर्य वीर दल रोहतक नगर की ओर से १६-१२-९० रविवार को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह आर्यनगर के बड़े पार्क में सोत्साह मनाया गया जिसमें पं० इन्द्रसेन विश्वभारती के मधुर भजन तथा स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनी पर बहुत ही प्रेरणादायक अपने विचार रखे। अन्त में मन्त्री हरयाणा आर्य वीर दल श्री वेदप्रकाश ने प्रो० वेदसुमन तथा मण्डलपति श्री जगदीशमित्र के अनुज के देहावासन पर शोक प्रस्ताव रखा जिसमें इन दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई।

—मा० मेघराज आर्य

संग्रहणीय विशेषांक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रमुख साप्ताहिक पत्र सर्वहितकारी का "स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक" प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एवं आकर्षक था। इसमें सभी लेख शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक थे। स्वामी जी के सम्बन्ध में ढेर सारी सामग्री पढ़ने को मिली। अतः पत्रिका का यह अंक सभी दृष्टियों से उत्तम तथा संग्रहणीय रहा है। विशेषांक की सफलता के लिए बधाई।

—रामकुमार आर्य
वाटर सप्लाई जोशी चौहान (सोनीपत)

प्रो० वेदसुमन को श्रद्धांजलि

आर्यसमाज शान्तिनगर सोनीपत के समस्त सदस्य प्रो० वेदसुमन जी के दुर्घटनावश आकस्मिक निधन पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवगत आत्मा को शान्ति और सद्‌गति प्रदान करे तथा शोकातुर परिवार को यह दुःख कष्ट एवं वियोग को सहन करने की शक्ति देवे।

प्रो० साहिब एक उच्च प्रतिभावाले व्यक्ति थे जिनका सारा जीवन वेद प्रचारार्थ समर्पित था। वह एक चलती फिरती आर्यसमाज थे। वह एक कर्मठ, उत्साही एवम् निष्ठावान् व्यक्ति थे। युवावर्ग हेतु उनका प्रभावशाली नेतृत्व अत्यन्त प्रशंसनीय है। उनके निधन से आर्यजगत् का एक प्रकाश स्तम्भ गिर गया है जिसकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती। हम उनके उच्च आदर्शों पर चलकर उनका नाम अमर रख सकें।

शोकातुर परिवार के सदस्य हरिश्चन्द्र स्नेही महामन्त्री एवम् सदस्यगण, आर्यसमाज शान्तिनगर सोनीपत।

शराब बुरी है

प्रेषक—मा० जगदीशचन्द्र जांगड़ा

शरारत की जननी होती है शराब।
राष्ट्र का पतन भविष्य होता है खराब॥
नशा से बचे रहो सुख पाओगे।
बुरी लत में फंस जीवन गंवाओगे॥
रीत निभाने रामचन्द्र ने बात कही।
है कथन यह शास्त्रों का सही॥

—मुख्याध्यापक
एस० के० एजूकेशनल सोसाईटी,
एस० के० मिडिल स्कूल,
शामसुख (हिसार)

शोक समाचार

श्रीमती लक्ष्मीदेवी आर्या बुआ श्री देवराज आर्य नारनौल निवासी का दिनांक १९ दिसम्बर, १९९० को लम्बी बीमारी के पश्चात् होगया। उनकी आयु ७० वर्ष थी। उनमें आर्यसमाज के प्रति अगाध श्रद्धा थी जब तक वह रोहतक रही तब तक प्रतिदिन यज्ञ में सम्मिलित होती तथा आर्यसमाजों के कार्यों में भाग लेती रही। उनके निधन पर दयानन्दमठ रोहतक तथा आर्यसमाज नारनौल की ओर से श्रद्धांजलि देते हुए उनकी आत्मा को सद्‌गति तथा शान्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

महाशय ताराचन्द आर्य
सभा अन्तरंग सदस्य

"कौन सा आकार"

क्या भगवान् मिला तुझे ?
मंदिर मस्जिद जोड़ तोड़कर।

क्या इनाम मिला तुझे ?
मेरा दिल तोड़कर।

कितने जेवर मिले तुझे ?
मेरा प्यार छोड़कर।

कितना सम्मान मिला तुझे ?
मेरी पूजा छोड़कर।

कितने फूल चढ़े तुझे ?
मेरी भावनाएं तोड़कर।

कितने पराये अपने हुए ?
अपनों से गद्दार बनकर।

कौन-सा आकार मिला तुझे ?
मेरा निराकार छोड़कर।

क्या इनाम मिला तुझे ?
मेरा दिल तोड़कर।
कौन प्रिय मिला तुझे ?
मुझसा सर्वहितकारी छोड़कर॥

अनिलकुमार भगला 'पिंकी'
१३ गोयल ऐपार्ट०, फैक्ट्री लेन,
बोरिवली (पश्चिम), बंबई-४०००९२

'हमारी केन्द्र सरकार कोई तो काम करे'

(सुबोधानन्द, दयानन्द मठ धहरा)

देश खंड-खंड होरहा है, सब विधायक, राज्य-सभाई लोक-सभाई अपनी गद्दी सुरक्षित करने में लगे रहते हैं, भारत को शक्तिशाली बनाने वाली कोई बात, संगठन करनेवाली बात, निर्धनता दूर करनेवाली बात सूझती नहीं, जिस भारतवर्ष में २०० अरब की शराब पी जाती हो, जिसमें मुकदमेबाजी पर अरबों धन खर्च होता हो, जिसकी जनसंख्या ८० करोड़ हो. जिसमें जनशक्ति हो, वह क्यों न उठे, देश में दस अरबपति हैं जिनके पास देश का १/१० भाग धन है, जो राजनीति पर छाये रहते हैं, जो अपने उद्योगों में निम्न वर्ग को भागीदार बना सकते हैं। ६ लाख साधु हैं उनको काम पर लगाया जा सकता है, उपज बढ़ सकती है, घर-घर उद्योग चल सकता है, हिन्दी राष्ट्रभाषा व प्रदेशों की अपनी-अपनी भाषाएं हो सकती हैं, शिक्षा हो सकती है, जन्म जात-पांत मिटाकर सभी लोग भारतीय कहलाएं, गोहत्या बन्द हो, शराबबन्दी हो, घर-घर टी० वी० न हों, ग्रामपंचायत हों, सबकी मार्शल ट्रेनिंग हों, मुकदमेबाजी कम हों, मानवता का संगठन हो, सादा जीवन हो, फिजूलखर्ची शादी गमी पर न हों।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज मनाना (पानीपत) के प्रधान माननीय चौ० रतनसिंह आर्य के निधन (दिनांक १-१२-९०) पर आर्यसमाज मनाना शोक प्रस्ताव पारित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि उनके परिवारजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दे। चौधरी साहब ऋषिभक्त लगनशील आर्य थे वे लगातार ८ वर्ष समाज के प्रधान रहे। उन्हीं की लगन से हर वर्ष वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम से हुए। आर्य वीर दल का गठन हुआ, शिविर लगे तथा विभिन्न अवसरों पर वैदिकधर्म के प्रचार का अवसर उन्होंने कभी जाने नहीं दिया। उनके बड़े पुत्र भी ऋषिभक्त हैं। आशा है यह परिवार आर्यसमाज को सहयोग देता रहेगा। पुनः परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति व सद्‌गति प्रदान करे तथा परिवारजनों को इस अभाव में सहनशक्ति प्रदान करे।

भवदीय
रामस्वरूप उपमन्त्री आर्यसमाज मनाना
पानीपत-१३२१०१

आचार्य आर्य नरेश द्वारा वेदप्रचार

राष्ट्र संस्कृति व युवाशक्ति के उत्थान हेतु उद्गीथ साधन स्थली ओमवन् हिमाचल के संस्थापक आचार्य आर्य नरेश द्वारा निम्न स्थानों पर प्रचार किया गया। पिंजौर, चण्डीगढ, दिल्ली, फरीदाबाद आर्यसमाज से० ४, मुरादाबाद, आर्यसमाज मण्डी बांस, आर्यसमाज बरेली, शाहजहांपुर, जनपद ग्राम प्रचार, आर्यसमाज बांगरमऊ व जनपद उन्नाव के ग्रामों में आर्यसमाज शिगरनगर तथा आदर्शनगर लखनऊ आर्यसमाज, कानपुर में राजेन्द्रनगर, आर्यसमाज स्वरूपनगर, पारिवारिक सत्संग, आर्यसमाज विद्यालय आर्यपुर, प्रयाग-चौक आर्यसमाज, आर्यसमाज कृष्णनगर, काशी आर्यसमाज ग्राम बसीला गाजीपुर, ग्राम प्रचार जनपद गोरखपुर, गोण्डा इकौना, गिलौला आदि।

इस यात्रा में जातिगत आरक्षण को हटा गरीबी से लगाने व भारतीय संस्कृति पर बने विदेशी लुटेरों के भवनों को हटाया जाए।

—कामेश्वरनाथ चतुर्वेदी

ग्राम खेड़ा (भिवानी में वेदप्रचार)

दिनांक १३.१२.९० को ग्राम खेडा में वेदप्रचार किया गया। सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी ने शराबबन्दी एवं शराब से होनेवाले नुकसान बारे विचार रखे। सरकार की शराब बढ़ावा नीति की घोर निन्दा की। पं० चिरंजीलाल जी ने भी शराबबन्दी बारे भजन एवं रूपवती का प्रेरणाप्रद इतिहास रखा। ज्ञातव्य है कि इस गांव में क्रान्तिकारी जी की प्रेरणा से एक नवयुवक संगठन बहुत ही सराहनीय कार्य कर रहा है। गत दिनों गांव सिवानी का ठेकेदार जीप द्वारा शराब के कट्टे डालने आया तब नवयुवकों ने बस अड्डे पर जीप रोककर वापिस जाने को कहा। लेकिन वह बाज नहीं आया तब युवकों ने हिम्मत करके उसकी बोतलें फोड़ दीं। उसके बाद आज तक गांव में ठेकेदार की जीप नहीं आई है। महाशय प्रेमी जी ने विद्वानों का धन्यवाद किया। प्रचार में सभा को ११५ रुपए प्राप्त हुए।

इन्द्रराज आर्य
खेड़ा निवासी

आर्यसमाज गन्नौर द्वारा वेदप्रचार

आर्यसमाज गन्नौर शहर ने विभिन्न चौराहों के नाम बलिदानी वीरों के नाम पर रखे हैं और इन स्थानों पर वेदप्रचार का व्यापक कार्यक्रम बनाया है जो निम्नकार्यक्रमानुसार घोषित किया गया है—

स्वामी श्रद्धानन्द चौक दिनांक २३.१२.१९९०, शहीद वीरप्रताप चौक ३०.१२.९०, शहीद भगतसिंह चौक ६.१.९१, महात्मा प्रभु आश्रित चौक १३.१.९१, वीर सुभाष चौक २०.१.९१, महर्षि दयानन्द चौक २७.१.९१, पण्डित लेखराम चौक ३.२.९१। यह कार्यक्रम प्रत्येक रविवार सायं २.०० बजे से ५.०० बजे तक आयोजित होंगे।

इसमें मुख्य वक्ता हरिश्चन्द स्नेही (संयोजक वेदप्रचार मण्डल एवं मण्डलपति आर्य वीरदल), श्री रामस्वरूप वर्मा, महात्मा प्रेमभिक्षु जी, आशानन्द जी बधवा (संयोजक हिन्दू मंच), श्री ओमप्रकाश चुघ, पं० जयदेव जी जतोई वाला एवम् श्री मा० ओमप्रकाश जी वर्मा होंगे।

—हरिश्चन्द स्नेही (संयोजक जिला वेदप्रचार मण्डल)

आर्यसमाज रादौर का चुनाव

प्रधान श्री डा० निर्मल विश्वास, उपप्रधान श्रीमती विद्यावती आर्या, मन्त्री श्री योगेशकुमार आर्य, उपमन्त्री श्री राजकुमार वर्मा, प्रचारमन्त्री श्री रामकिशन वानप्रस्थी, कोषाध्यक्ष श्रीमती विमला बन्सल आर्या, पुस्तकाध्यक्ष श्रीमती चमेलीदेवी आर्या।

आर्यसमाज होली मोहल्ला—करनाल का चुनाव

१ प्रधान श्री रतनसिंह लाठर, २. मन्त्री हरीशचन्द्र गुलाटी, ३. कोषाध्यक्ष श्री हरिसिंह सन्धु, ४. वरिष्ठ उप-प्रधान मा० सुन्दरसिंह, ५ कनिष्ठ मा० जसवन्तसिंह, ६. उपमन्त्री डा० यज्ञदत्त, ७. प्रचारमन्त्री श्री एच०एन० बन्सल वकील, ८. पुस्तकालय अध्यक्ष श्री रणजीतसिंह, ९. यज्ञप्रमुख मा० धर्मचन्द आर्य, १०. प्रापर्टी इन्चार्ज श्री सुरिन्द्रसिंह काम्बोज, ११. लेखानिरीक्षक श्री ईश्वरसिंह मलिक।

बैठक सूचना

आर्य नेता प्रो० शेरसिंह स्वागत समारोह समिति की बैठक १३ जनवरी को १२ बजे स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में गुरुकुल झज्जर में होगी।

—संयोजक

पारिवारिक यज्ञ सम्पन्न

दिनांक ९.१२.९० को प्रातः ग्राम भापड़ (जिला हिसार) में सभा उपदेशक श्री अतरसिंह जी आर्य क्रान्तिकारी द्वारा श्री रणवीरसिंह आर्य के घर नवगृह प्रवेश के उपलक्ष्य में यज्ञ विधिवत् सम्पन्न हुआ। दम्पति ने यजमान का स्थान ग्रहण किया तथा जनेऊ धारण किया। क्रान्तिकारी जी ने यज्ञोपवीत एवं यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला। यज्ञ में काफी संख्या में नर-नारियों ने भाग लिया। आर्यजी सर्वहितकारी पत्रिका के सदस्य भी बने तथा अन्य सभी सज्जनों ने अगले मास वेदप्रचार हेतु भजनमण्डली भेजने का आग्रह किया।

—महाशय रामसिंह आर्य

संस्कृत में प्रथम

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय (हरिद्वार) द्वारा स्वा० श्रद्धानन्द बलिदान दिवस २४ दिसम्बर, १९९० को आयोजित अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता में गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के ब्र० योगेन्द्रकुमार ने संस्कृत भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान तथा हिन्दी में ब्र० पुनीतकुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। २५ दिसम्बर को इन दोनों विजेता ब्रह्मचारियों का आश्रम में भव्य स्वागत किया गया तथा अपने साथियों के विजय पर उन्हें हार्दिक बधाई दी।

मन्त्री
स्नातक मण्डल
गु०कु० प्रभात आश्रम टीकरी भोला,
मेरठ (उ० प्र०)

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

४. **संस्कृत विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करनेवाले परीक्षार्थियों को छात्रवृत्ति दी जावेगी :**

हरयाणा शिक्षा बोर्ड भिवानी, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र के परीक्षार्थियों को संस्कृत विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करनेवालों को सभा की ओर से २५०, २५० रु० की चार छात्रवृत्तियां देने का निर्णय किया है। यह योजना चालू वर्ष से आरम्भ की जावेगी। इस प्रकार संस्कृत पढनेवाले छात्र तथा छात्राओं को प्रोत्साहित किया जावेगा।

५. **अध्यापकों का शिक्षण शिविर लगाने का निश्चय :**

हरयाणा प्रदेश के आर्य अध्यापकों का इस वर्ष एक शिक्षण-शिविर लगाया जावेगा और उन्हें वैदिक संस्कारों आदि का शिक्षण देकर उनसे आर्यसमाज के प्रचार कार्य में सहयोग प्राप्त किया जावेगा।

—सूबेसिंह, सभामन्त्री

सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन देहली के अवसर पर

धर्म देशभक्त आर्यजनों का आह्वान

ऋषि दयानन्द के अनुयायी हे वेद धर्म प्रिय आर्य जनो।
क्या देश सेवा पर संकट है इसको जानो व पहचानो॥
क्यों आर्यावर्त महान् देश इण्डिया व हिन्दुस्तान बना।
क्यों भारत मा का अंग-भंग होकर यह पाकिस्तान बना॥
क्यों आर्य जाति के लाल करोडो ईसाई मुसलमान बने।
क्यों वेद ज्ञान ईश्वर के होते बाइबिल और कुरान बने॥
क्यों हिन्दू मन्दिर नष्ट हुए नारी सतीत्व किसने लूटे।
क्यों वेदशास्त्र सद्ग्रन्थ जले, क्यों सोमनाथ मन्दिर लूटे॥
निराकार ईश्वर की जगह क्यों पत्थर के भगवान् बने।
क्या कारण है ईसाई यवन फिर हिन्दू की न सन्तान बने॥
क्यों आर्य हिन्दू राष्ट्र यह बन सकता नही हिंदुस्तान।
इस्लामी राज्य बन चुका है जब बगलादेश व पाकिस्तान॥
पंजाब, असम काश्मीर आदि में क्यों हत्याए होती हैं।
कितनी माता, कितनी बहने, कितनी विधवाए रोती हैं॥
कितने आरक्षण के कारण विद्यार्थी कर गये आत्मदाह।
किन्तु क्रूर निर्दय शासन ने करी न इसकी कुछ परवाह॥
निर्मम, भीषण, हत्याओं का जो काण्ड हुआ अयोध्या में।
उस जैसी कोई मिसाल शायद ही मिलेगी दुनिया में॥
मस्जिद के फूटे खडहर को रक्षार्थ प्रबन्ध करवा डाले।
पर अनगिनतो मन्दिर रक्षक श्रीराम भक्त मरवा डाले॥
इन बलिदानो की वेला मे कई आर्यवीर बलिदान हुए।
प्रिय देश धर्म पर मिटने के उनके पूरे अरमान हुए॥
इस विषय में आर्यसमाज का क्या सिद्धान्त है यह जग जानता है।
निराकार ईश्वर की जगह वह मूर्तिपूजा नही मानता है॥
पर राम जन्मभूमि को उसने इसी भांति स्वीकारा है।
जिस भांति महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टकारा है॥
मन्दिर की बात करनेवाले हिन्दू को सम्प्रदायी कहते।
मस्जिद का पक्ष लेनेवाले क्यों असम्प्रदायी बने रहते॥
क्यो रामजन्म के मन्दिर का हो सकता है निर्माण नही।
बाबर ने राम मन्दिर तोडा क्या राम का यह अपमान नहीं॥
श्रीराम अयोध्या में जन्मे इतिहास से यही प्रमाणित है।
उनका मन्दिर बाबर से सहस्रों वर्ष पूर्व स्थापित है॥
यह सत्य राजनैतिक नेतागण इस कारण नहीं मान रहे।
वे इसी प्रश्न पर वोट मुसलमानों के लेना ठान रहे॥
धर्मविरोधी सभी दलों का यह षड्यन्त्र भयकर है।
देशभक्त धार्मिक हिन्दू आर्यों से इसकी टक्कर है॥
यह नीति राजनेताओं की यह धर्म देशभक्तों का दमन।
ऐलान आर्यवीरों का है अब आगे और न होगा सहन॥
अब जीना है सम्मान से तो संगठन शक्ति अपनाना है।
शान्तिपाठ कर चुके बहुत अब क्रान्तिनाद गुंजाना है॥
इस आर्य महासम्मेलन को दृढ़ता से सफल बनाना है।
इसके निश्चय व सन्देशा अब जन-जन तक पहुंचाना है॥
संगठित हो करके शीघ्र बढो प्रिय देश धर्म बचाने को।
जो इन्हें मिटाना चाहते हैं उनके षड्यंत्र मिटाने को॥
मिथ्या मत पथ से हटा जगत् को वैदिक मार्ग चलाने को।
ऋषि दयानन्द का सन्देशा सारे जग में फैलाने को॥
सत्यार्थप्रकाश ऋषिवर के ग्रन्थ से कोई ग्रन्थ महान् नहीं।
वेद, ईश्वर, धर्म, देश का इस जैसा कही ज्ञान नही॥
इसके प्रचार से बढकर जग का और कोई कल्याण नही।
उपकार जगत् में हैं जितने इसके कोई समान नही॥
इसके हित बलिदान से बढकर और कोई बलिदान नहीं।
आर्यों के लिए सिद्धान्त भास्कर इससे बड़ा सम्मान नहीं॥

भगवतीप्रसाद सिद्धान्तभास्कर
प्रधान नगर आर्यसमाज,
1430, प० शिवदोन मार्ग, कृष्णपोल, जयपुर।

होगा कभी सलूक नहीं

ले० स्वरूपानन्द सरस्वती

सोये पड़े देश के प्रहरी बेसुध हुए जागरूक नही।
राष्ट्र सुरक्षा कर न सकेगी ये खाली बन्दूक नही॥
समझ न पाए अथाह सिन्धु को कूप का मण्डूक नही।
काव-कांव कागा सम कोयल मीठी जैसी कूक नही॥
अधियारी मे बोले दिन में आते नजर उलूक नही।
डीजल पैट्रोल पोकर भी मिटती इनकी भूख नही॥
आरक्षण के वगैरह राष्ट्र पर कोई दवा अचूक नही।
आपस के झगडे टण्टो का होगा कभी सलूक नही॥

दामला में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

आर्यसमाज दामला में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस श्री प० सत्य सनातन जी की अध्यक्षता में बडी धूमधाम से मनाया गया जिसमें श्री पं० विद्याभूषण जी के मधुर भजन स्वामी जी के जीवन पर हुये। साथ ही श्री आचार्य वचनपाल जी शास्त्री के प्रवचन और वानप्रस्थी रामकिशन जी के भजन हुए, जनसमूह पर अच्छा प्रभाव रहा। यज्ञ पर नौजवानो ने यज्ञोपवीत धारण किये, बीडी सिग्रेट छोडने की प्रतिज्ञा ली। सभा को १०२ रुपया वेदप्रचारार्थ दिया गया।

आर्यसमाज दामला, (जि० अम्बाला)

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मसर्ज परमानन्द साईदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक।
२. मैसर्ज फूलचन्द सीताराम गांधीचौक, हिसार।
३. मैसर्ज सन-अप-ट्रेडर्ज सारंग रोड, सोनीपत।
४. मैसर्ज हरीश एजेंसीज 499/17 गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५. मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार, करनाल।
६. मैसर्जघनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७. मैसर्ज कृपाराम गोयल रुडी बाजार, सिरसा।
८. मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप न० 115, मार्किट न० 1, एन० आई० टी० फरीदाबाद।
९. मैसर्ज सिंगला एजेंसीज सदर बाजार, गुड़गांव।

मंगलमय हो नूतन वर्ष

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ प्र.)

पुष्प खिले नव आशाओं के,
जगे शुचितम अभिलाषा ।
दे सन्देश धरणि को सारी—
सौम्य-सुखों की परिभाषा ।
महिमण्डल पर छा जाए फिर—
जागृति लिए हुए नव हर्ष ।
मंगलमय हो नूतन वर्ष ॥

नए वर्ष की शुभ बेला में,
निखरे जीवन के प्रतिमान ।
जन-जन में जाग्रत हो पावन—
त्याग-तपस्या व बलिदान ।
मानवता के विमल सुतत्वों—
का हो धरती पर उत्कर्ष ।
मंगलमय हो नूतन वर्ष ॥

दनुज वृत्तियों का विनाश हो,
हो शोषण का पूर्ण समापन ।
धरती के जन-जन में आए,
प्रेम भरा अतुलित अपनापन ।
स्वार्थ तथा आतंकवाद का—
हो निश्चित सा अब अपकर्ष ।
मंगलमय हो नूतन वर्ष ॥

अहंकार नष्ट कर देता

—महेश आर्य ग्राम पन्हैड़ा खुर्द (फरीदाबाद)

मानव चोला रत्न अमोला, क्यों नही बनावे ।
अहंकार के नशे में क्यों तू, अपना नाश करावे ॥

अभिमानी बाली को राम ने क्षण में मार गिराया ।
सुग्रीव को पम्पापुर का राजा राम ने स्वयं बनाया ॥
थोडी सी जिन्दगानी भाई, क्यों नहीं लक्ष्य लगावे ।
अहंकार के नशे में — — ……॥

रावण ने अभिमान किया था पूरा कुटुम्ब खपाया ।
मारे गये भूप बलधारी, इससे नहीं बच पाया ॥
गौरव का इतिहास बने नहीं हर मानव ठुकरावे ।
अहंकार के नशे में…………॥

प्रहलाद भक्त को कष्ट दिये थे हिरणाकुश ने भारी ।
नरसिंह रूप सामने आया परमेश्वर न्यायकारी ॥
लोहा ले न सका कोई भी नष्ट-भ्रष्ट हो जावे ।
अहंकार के नशे में…………॥

उग्रसेन सम्राट् बने कृष्ण ने कंस पछारे ।
साक्षी है इतिहास हमारा अभिमानी ही हारे ॥
'महेश आर्य' राज पाट, अहंकार दैत्य खा जावे ।
अहंकार के नशे में क्यों तू, अपना नाश करावे ॥
मानव चोला रत्न अनमोला क्यों नहीं सफल बनावे……

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न० २३७०/७३ रजि न० P/RTK-४६ ०८८१२ पूर्णिमवत् १,९६, ०८, ५३, ०६०

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक ८ १४ जनवरी, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

मकर सौर संक्रान्ति

जितने काल में पृथिवी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा पूरी करती है, उसको एक 'सौर वर्ष' कहते हैं और कुछ लम्बी वर्तुलाकार जिस परिधि पर पृथिवी परिभ्रमण करती है, उसको 'क्रान्तिवृत्त' कहते हैं। ज्योतिषियों द्वारा इस क्रान्तिवृत्त के १२ भाग कल्पित किए हुए हैं और उन १२ भागों के नाम उन-उन स्थानों पर आकाशस्थ नक्षत्रपुञ्जों से मिलकर बनी हुई कुछ मिलती-जुलती आकृतिवाले पदार्थों के नाम पर रख लिए गए हैं। यथा—१ मेष, २ वृष, ३ मिथुन, ४ कर्क, ५ सिंह ६ कन्या, ७ तुला, ८ वृश्चिक, ९ धनु, १० मकर, ११ कुम्भ, १२ मीन। प्रत्येक भाग वा आकृति 'राशि' कहलाती है। जब पृथिवी एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करती है तो उसको 'संक्रान्ति' कहते हैं। लोक में उपचार से पृथिवी के संक्रमण को सूर्य का संक्रमण कहने लगे हैं। छः मास तक सूर्य क्रान्तिवृत्त से उत्तर की ओर उदय होता रहता है और छः मास तक दक्षिण की ओर निकलता रहता है। प्रत्येक षण्मास की अवधि का नाम 'अयन' है। सूर्य के उत्तर ओर उदय की अवधि को 'उत्तरायण' और दक्षिण ओर उदय की अवधि को 'दक्षिणायन' कहते हैं। उत्तरायणकाल में सूर्य उत्तर की ओर से उदय होता हुआ दीखता है और उसमें दिन बढ़ता जाता है और रात्रि घटती जाती है। दक्षिणायन में सूर्योदय दक्षिण की ओर दृष्टिगोचर होता है और उसमें रात्रि बढ़ती जाती है और दिन घटता जाता है। सूर्य की मकर राशि की संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क-संक्रान्ति से दक्षिणायन प्रारम्भ होता है। सूर्य के प्रकाशाधिक्य के कारण उत्तरायण विशेष महत्त्वशाली माना जाता है और अतएव उत्तरायण के आरम्भ दिवस मकर की संक्रान्ति को भी अधिक महत्त्व दिया जाता है और स्मरणातीत चिरकाल से उस पर पर्व मनाया जाता है। यद्यपि इस समय उत्तरायण परिवर्तन ठीक-ठीक मकर संक्रान्ति पर नहीं होता और अयनचलन की गति बराबर पिछली ओर को होते रहने के कारण इस समय (संवत् १९९४ वि० में) मकर संक्रान्ति से २२ दिन पूर्व धनु राशि के ७ अंश २४ कला पर 'उत्तरायण' होता है। इस परिवर्तन का लगभग १६५० वर्ष लगे हैं परन्तु पर्व मकर संक्रान्ति के दिन ही होता चला जाता है। इससे सर्वसाधारण की ज्योतिष शास्त्रानभिज्ञता का कुछ परिचय मिलता है, किन्तु शायद पर्व का चलते रहना अनुचित मानकर मकर संक्रान्ति के दिन ही पर्व मनाने की रीति चली आती हो।

मकर संक्रान्ति के अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है। जनावास, जंगल, वन, पर्वत सर्वत्र शीत का आतंक छा रहा है, चराचर जगत् शीतराज का लोहा मान रहा है, हाथ-पैर जाड़े से सिकुड़े जाते हैं, "रात्रौ जानुर्दिवा भानु" रात्रि में जंघा और दिन में सूर्य, किसी कवि की यह उक्ति दीनों पर आजकल ही पूर्णरूप से चरितार्थ होती है। दिन की अब तक यह अवस्था थी कि सूर्यदेव उदय होते ही अस्ताचल के गमन की तैयारियां आरम्भ कर देते थे, मानो दिन रात्रि में लीन ही हुआ जाता था। रात्रि सुरसा राक्षसी के समान अपना देह बढ़ाती ही चली जाती थी। अन्त को उसका भी अन्त आया आज मकर संक्रान्ति के मकर ने उसको निगलना आरम्भ कर दिया। आज सूर्यदेव ने उत्तरायण में प्रवेश किया। इस काल की महिमा संस्कृत साहित्य में वेद से लेकर आधुनिक ग्रन्थ पर्यन्त सविशेष वर्णन की गई है। वैदिक ग्रन्थों में उसको 'देवयान' कहा गया है और ज्ञानी लोग स्वशरीर त्याग तक की अभिलाषा इसी उत्तरायण में रखते हैं। उनके विचारानुसार इस समय देह त्यागने से उनकी आत्मा सूर्यलोक में होकर प्रकाश मार्ग से प्रयाण करेगी। आजीवन ब्रह्मचारी भीष्म-पितामह ने इसी उत्तरायण के आगमन तक शरशय्या पर शयन करते हुए प्राणोत्क्रमण की प्रतीक्षा की थी। ऐसा प्रशस्त समय किसी पर्वता (पर्व बनने) से कैसे वञ्चित रह सकता था। आर्य जाति के प्राचीन नेताओं ने मकर संक्रान्ति (सूर्य की उत्तरायण-संक्रमण तिथि) का पर्व निर्धारित कर दिया।

जैसा कि पूर्व बतलाया जा चुका है कि यह पर्व बहुत चिरकाल से चला आता है। यह भारत के सब प्रान्तों में प्रचलित है, अतः इसको एकदेशी न कहकर सर्वदेशी कहना चाहिए। सब प्रान्तों में इसके मनाने की परिपाटी में भी समानता पाई जाती है सर्वत्र शीतातिशय के निवारण के उपचार प्रचलित हैं।

वैद्यक-शास्त्र में शीत के प्रतिकार तिल, तैल, तूल (रूई) बतलाए हैं। जिनमें तिल सबसे मुख्य है। इसलिए पुराणों में इस पर्व के सब कृत्यों में तिलों के प्रयोग का विशेष माहात्म्य गाया गया है और उनको पापनाशक कहा गया है। किसी पुराण का निम्नलिखित वचन प्रसिद्ध है—

> तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमी तिलोदकी।
> तिलभुक् तिलदाता च षट्तिलाः पापनाशनाः॥

अर्थ—तिलमिश्रित जल से स्नान, तिल का उबटन, तिल का हवन, तिल का जल, तिल का भोजन और तिल का दान ये छः तिल के प्रयोग पापनाशक हैं।

मकर संक्रान्ति के दिन भारत के सब प्रान्तों में तिल और गुड़ या खांड के लड्डू बनाकर जिनको 'तिलवे' कहते हैं, दान किए जाते हैं और इष्टमित्रों में बांटे जाते हैं। महाराष्ट्र प्रान्त में इस दिन तिलों का 'तिलगूल' नामक हलवा बांटने की प्रथा है और सौभाग्यवती स्त्रियां तथा कन्याएं अपनी सखी सहेलियों से मिलकर उनको हल्दी, रोली, तिल और गुड़ भेंट करती हैं। प्राचीन ग्रीक लोग भी वधू वर की सन्तान वृद्धि के निमित्त तिलों का पक्वान बांटते थे। इससे ज्ञात होता है कि तिलों का प्रयोग प्राचीनकाल में विशेष गुणकारक माना जाता रहा है। प्राचीन रोमन लोगों में भी मकर संक्रान्ति के दिन अंजीर, खजूर और शहद अपने इष्टमित्रों को भेंट देने की रीति थी। यह भी मकर संक्रान्ति पर्व की सार्वत्रिकता और प्राचीनता का परिचायक है।

मकर संक्रान्ति पर्व पर दीनों को शीतनिवारणार्थ कम्बल और घृत दान करने की प्रथा भारतनिवासियों में प्रचलित है। "कम्बलवन्तं न बाधते शीतम्" की श्लिष्ट उक्ति संस्कृत में प्रसिद्ध ही है। घृत को भी

(शेष पृष्ठ ७ पर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती की हिन्दी सेवा

(डा० धर्मपाल, वरिष्ठ प्राध्यापक, जाकिर हुसैन स्नातकोत्तर कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली)

गतांक से आगे—

काशी का अभाग्य और भारतवर्ष गवर्नमेण्ट का अभाग्य नहीं तो कोई बालशास्त्री या कोई बापूदेव वेदों का भी निकल आता और जो खोज जर्मनी में हुई, वे काशी मे होती और वह ही समय आता जब एक वेदपाठी गुजराती संन्यासी काशी के पडितों को 'ख सूची' बनाकर छोड जाता जैसा कि आगे लिखा जाएगा।"

यहा पर वेदपाठी गुजराती से तात्पर्य महर्षि दयानन्द सरस्वती से है और प्रसग काशी शास्त्रार्थ का है। जब ऋषि काशीवासी पडितों से प्रश्न पूछते थे, तो वे आकाश की ओर देखने लगते थे (ख सूची) अथवा बगले झाकने लगते थे। बालशास्त्री व्याकरण के पडित थे और बापूदेव शास्त्री ज्योतिष के प्रसिद्ध पडित थे।

काशी-शास्त्रार्थ का विवरण देते हुए गुलेरी जी आगे लिखते हैं—

"इन्ही दिनो स्वामी दयानन्द धूम्रकेतु की तरह काशी में आ पहुचे और अक्षोभ्य समुद्र की सतह उनके आने से पेंदे तक हिल गई। लोग विस्मय से आख फाडे रह गए कि स्वामी जी का जहां मन्त्रपाठ, कटस्थ करनेवाले वैदिकों से मिलता है, वहा उन्हें अपने भाष्य-व्यापी व्याकरण के ऊपर स्थित अर्थज्ञान से गूगा कर देता है और जहां नव्य व्याकरण मिलते हैं, वहा वह 'घटो-घट:'का तुपकण्डन छोड़कर उन्हे सीधा व्याकरण की चकाव में गोते खिलाता है।

यह विवरण गुलेरी जी ने १९११ ई० मे लिखा था और इससे यह भी स्पष्ट है कि उस शास्त्रार्थ मे महर्षि विजयी रहे थे। यहा पर इसका विस्तृत विवरण अपेक्षित नहीं है तथापि यह निश्चित है कि गुलेरी जी जैसे हिन्दी के विद्वान् भी ऋषि से अत्यधिक प्रभावित थे।

प० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, जिन महापुरुषों द्वारा हिन्दी को बढावा मिला और इसकी श्रीवृद्धि हुई, उनके गुणकथन में किसी भी प्रकार का सकोच नहीं करते। उन्होंने 'समालोचक' (जनवरी-अप्रैल, १९०५) पत्र में लिखा था—"आर्यसमाज के प्रचारक एक बड़े दूरदर्शी पुरुष थे। जिन्होने अपने शिष्यों की वृद्धि और गौरव के लिए हिन्दी का आश्रय लिया। इस बात को कट्टर से कट्टर आर्यसमाजी भी मानेगा कि यदि स्वामी दयानन्द हिन्दी को अपनी धर्मभाषा न मानते, तो उनका यह जलवा नहीं होता।"

जब महर्षि दयानन्द सरस्वती का भारतीय सार्वजनिक रगमच पर पदार्पण हुआ, तो भारत मे राजनीति एव राष्ट्रीय एकता को बाधनेवाला कोई सूत्र न था, तब उन्होंने साहस के साथ निर्णय लिया था कि प्रारम्भ में बोलचाल के लिए टूटी-फूटी हिन्दी ही चलेगी किन्तु देवनागरी में हिन्दी भारती (आर्य) भाषा में ही अपने ग्रन्थ लिखूंगा। हिन्दी के लिए स्वामी दयानन्द का संकल्प एक नींव का पत्थर सिद्ध हुआ है। विकृत विखण्डित समाज को एक दिशासूत्र प्रदान करने में ऋषि दयानन्द अग्रगण्य हैं।

उन्होंने हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर विशेष बल दिया था। बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना के अवसर पर कहा था कि जहां आर्यसमाज की स्थापना हो, वहां पर एक पुस्तकालय अवश्य ही खोला जाए। लाहौर में आकर तो उन्होंने हिन्दी सीखना, प्रत्येक आर्यसमाजी के लिए अनिवार्य कर दिया, जबकि दुर्दैव से उस समय पंजाब, फ्रन्टियर प्रान्त और सिन्ध में कोई बिरला ही हिन्दी जानता था।

एक सज्जन ने जब हरिद्वार में यह सुझाव रखा कि वे अपने ग्रन्थों का अनुवाद फारसी में करायें तो उन्होंने कहा था कि ज्ञानवर्धन के लिए कोई भी भाषा सीखी जा सकती है। उसी प्रकार किसी भाषा में अनुवाद किया जा सकता है, किन्तु अनुवाद विदेशी लोगों के लिए होने चाहिए। अपने देशवासियों के लिए, स्वयं अपनी राष्ट्रीय भाषा के माध्यम से साहित्य सृजन होगा तो एकता एवं सगठन भी इसके सम्पर्क से निश्चय ही आएगा।

ऋषि दयानन्द ने अपने व्याख्यानो मे यह उत्कृष्ट इच्छा प्रकट की थी कि "मैं तो वह दिन देखना चाहता हूं जब हिमालय से लेकर सागर तक एव सारे ब्रह्मावत, आर्यावर्त में देवनागरी लिपि मे ही सभी आर्यभाषा को अपनाय।"

हिन्दी साहित्य के विद्वानों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित आत्मकथा हिन्दी गद्य साहित्य की सर्व-प्रथम आत्मकथा है। कुछ दिन पूर्व डा० रामप्रकाश आर्य ने एक गवेषणापूर्ण लेख लिखा था। उन्होने लिखा है कि इस आत्मकथा मे कवि, कथाकार और इतिहासकार के तत्त्व एक साथ उपलब्ध होते हैं। स्वामी जी महाराज धर्मोपदेशक थे, समाजसुधारक थे परन्तु इस आत्मकथा को देखकर तो लगता है कि वे बहुत ही भावप्रवण कवि थे, प्रकृति के कुशल चितेरे थे तथा वे साथ ही अपने भी आलोचक। उन्होने आत्मविश्लेषण किया है तथा अपनी गलतियों को स्वीकार भी किया है। महर्षि की यह आत्मकथा एक उत्कृष्ट साहित्यिक कृति है। यह अलकारविहीन होते हुए भी आकर्षक है। यह छंदोमय नही है, तथापि इसमें एक विशिष्ट गति और लय है। यह दूसरे की कथा होने पर भी अपनी सी लगती है। इसमें भले ही रस-सिद्धात के अवयव न हों, पर यह सरस है। इसमें प्रगीत के तत्त्व नही है, पर यह मधुर है।

महर्षि के हमने अनेक रूप देखे हैं। वे शास्त्रार्थ महारथी हैं। वे दार्शनिक हैं। वे आदिम विद्रोही हैं। वे धर्मोपदेष्टा हैं। वे बहुत ही खरे, और कड़वी बात कहने का साहस रखनेवाले निर्भीक संन्यासी हैं, परन्तु हिन्दी साहित्य को जो उन्होने योगदान दिया, उसकी ओर हमारी दृष्टि कम ही गई है। यह विस्मयकारी है कि एक अहिन्दी भाषी व्यक्ति ने हिन्दी मे अपेक्षाकृत आधुनिक विधा आत्मकथा लेखन मे भी अपूर्व योगदान दिया है।

हिन्दी साहित्य मे अनेक जीवनिया लिखी गई थी परन्तु आत्म-कथाएं नहीं। सस्कृत साहित्य तथा हिन्दी साहित्य के लेखक, कवि आदि अपने विषय में बहुत ही कम लिखते थे और यही कारण है कि उनकी प्रामाणिक जीवनियां नही मिलती और जो मिलती हैं, उनमें साहित्यिकता अधिक होती है, श्रद्धा होती है परन्तु वास्तविकता बहुत कम होती है। आधुनिक युग के निर्माता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र भी अपने चरितनायकों के चित्रण में तटस्थ नही थे।

स्वामी जी की भी अनेक जीवनियां स्वभाषा में प्राप्य हैं जिनमें कुछ तो काफी विस्तृत तथा महत्त्वपूर्ण हैं, परन्तु उन सब में वह सब नहीं जो स्वामी जी के अपने लिखे शब्दों में हमे मिलता है। स्वामी जी ने कर्नल स्काट के अनुरोध पर अप्रैल १८७९ में यह जीवनी लिखी थी। स्वामी जी की यह आत्मकथा स्वरचित आत्मचरित्र बहुत ही सराहनीय है। अपने विशिष्ट साहित्यिक गुणों के कारण यह छोटी सी रचना साहित्य के अध्येताओं का ध्यान आकर्षित करती है।

इस रचना में इतिहासकार जैसा तथ्य निरूपण है और साथ ही आत्माभिव्यक्ति भी है।

"गुजरात देश में दूसरों की अपेक्षा मोहविशेष है। यदि मैं इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु की पहचान दू या पत्रव्यवहार करूं तो मुझे बडी उपाधि होगी। जिन उपाधियों से मैं छूट गया हूं, वही उपाधियां मेरे पीछे लग जायेंगी।" आप ही देखिए कितने सरल शब्दों में अपनी मनोदशा की अभिव्यक्ति दी गई है। इतने ही सरल-सरल ढंग से तथ्यों का निरूपण किया गया है—"मैंने पांचवें वर्ष में देवनागरी अक्षर पढ़ना प्रारम्भ किया था।"

(ऋषि दयानन्द स्वरचित जीवन-चरित्र पृष्ठ १ और ३)

महर्षि ने मूर्तिपूजा से विरक्ति के भाव का तथा आत्ममंथन के भाव का वर्णन मनोरम एवं अकृत्रिम शैली में किया है।

"अतः चूहे की यह लीला देख मेरी बालबुद्धि को ऐसा प्रतीत हुआ कि जो शिव अपने पाशुपतास्त्र से बड़े-बड़े प्रचण्ड दैत्यों को मारता है, क्या उसमें एक निर्बल चूहे को भगा देने की की शक्ति नहीं।"

कदम-कदम पर ऋषि अपनी उत्सुकता तथा हृदय की व्यग्रता का वर्णन करता है। ऐसा ही छोटी बहन और चचा की मृत्यु के वर्णन में और फिर अपनी मुक्ति के उपाय सोचना" आदि में मिलता है। भाषा सौष्ठव की ओर लेखक का ध्यान जाता ही नही, क्योंकि उसका हृदय भावविभोर है।

—क्रमशः

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का संक्षिप्त परिचय

१९१२ ई० में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जो द्वारा कहे हुये ऐतिहासिक वचन याद आरहे हैं जब उन्होंने कहा था "जिस धर्म-क्षत्र कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि में एक दिन भारत भूमि के विनाश का बीज बोया गया था, उसी भूमि में आज यह भारत की उन्नति का बीज बोया गया है। मंगलमय भगवान् करे कि इस ज्ञानतरु के ऐसे सुगन्धित फूल उत्पन्न हों, भारत भूमि को फिर से अपनी पुरानी उन्नत अवस्था में लाने में सहायक हो।" आप इस ज्ञान तरु की उपलब्धिया जानकर अत्यन्त प्रसन्नता व गौरव का अनुभव कर रहे होंगे। यह देखकर कि ससार के सभी क्षेत्रो में इस ज्ञान तरु के फूल ब्रह्मचारीगण चहुं ओर देश व धर्म की स्वय उन्नति का डका बजाकर सुगन्ध बिखेर रहे हैं।

सन् १९१२ ई० में शहर के आर्य दानवीर ला० ज्योतिप्रसाद जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के सपनों को साकार करने के लिए अपनी १०४५ बीघा भूमि व १०००० रुपये नकद गुरुकुल स्थापना के लिए दिए और जब तक जीवित रहे अपनी दानवीरता से सीचते रहे। अब भी उनके वशजो का स्नेह पूर्ववत् बना हुआ है और बना रहेगा। स्वामी श्रद्धानन्द जी की पावन प्रेरणा से और इस विद्यादान से अनेक घरों में ज्ञान ज्योति जगमगा रही है। यहा प्रातः की बेला से वेद-मन्त्रो का और उपनिषदों का गायन सुनाई देता है तो विद्यालय समय में गुरुकुल के ब्रह्मचारी सस्कृत के साथ अग्रेजी के ज्ञान का स्रोत बहाते हुए कुलभूमि में गुरुकुल के योग्य स्नातक अध्यापकों, प्रशिक्षित अध्यापकों व विद्वानों के हाथों में अपने भविष्य को सुरक्षित अनुभव करते हैं। आप सब के सहयोग से इस वर्ष की परीक्षा में ४७२ छात्र ब्रह्मचारी उपस्थित हुए ७१ शहरी व ४०१ देहाती बालक हैं, जो गत वर्ष से ५४ अधिक हैं। हमें गौरव है कि इस वर्ष हमने ५२५ बच्चों को प्रवेश दिया जो १९१२ से अब तक सर्वाधिक हैं और अनेकों माता-पिता को केवल इसलिए नाराज होना पड़ा कि हम उनके बच्चों को स्थानाभाव के कारण प्रवेश न दे सके सो हम क्षमाप्रार्थी हैं। क्योंकि आगे प्रवेश हम तभी दे सकते हैं जब निर्माणाधीन गायत्री भवन पूर्ण हो।

सांस्कृतिक-कार्यक्रम

बच्चों के मानसिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक विकास के लिए अनेकों प्रयोग किए गए हैं, क्योंकि यह प्राय: माना जाता है कि गुरुकुल में बिगड़े हुए व शरारती बच्चे या जिनका बौद्धिक स्तर निम्न हो, संक्षेप में जिनके माता-पिता उनसे तंग हों, उन्हें ही यहां प्रवेश दिया जाता है। ऐसे बच्चों को माता-पिता का प्यार देकर उनके बौद्धिक स्तर को ऊंचा उठाकर उन्हें सफल आर्य नागरिक बनाना हमारा ध्येय रहता है। इसलिए प्रति शनिवार बाल वाग्वर्धिनी सभा का आयोजन किया जाता है। उन्हें घर जैसे वातावरण में अपनी सभ्यता, परम्परा एव आचार-विचार तथा आहार-व्यवहार की मर्यादाओं का पालन करते हुए अपनी संस्कृति से प्रेम करना सिखाया जाता है। जिसके लिए भाषण प्रतियोगिता आदि का भी आयोजन कर उन्हें प्रोत्साहन दिया जाता है।

जहां खेल-कूद के क्षेत्र में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने कीर्तिमान स्थापित किये हैं, वहां पर सास्कृतिक कार्यक्रम में भी पिछडे नहीं हैं। इस बार दिसम्बर मास को राज्य प्रतियोगिता भारतीय सेवा सघ मन्दिर में आयोजित की गई थी। जिसमें गुरुकुल के दो छात्रों ने प्रथम स्थान तथा दो ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा आयोजित गीता श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता मे भाग लेकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। १९-१-९० को बसंत पंचमी का त्यौहार खेल उत्सव के रूप मे मनाया गया जिसकी अध्यक्षता श्री महेन्द्रसिंह जी मलिक D.I.G. पुलिस हरयाणा ने की व ५०००/-रु० दान कुश्ती हेतु दिया तथा मुख्य अतिथि श्री बालकिशनसिंह जी ने रामप्रसाद बिस्मिल स्टेडियम की आधारशिला रखी।

भोजन व्यवस्था

बच्चों को भारत सरकार द्वारा स्वीकृत निश्चित वैज्ञानिक खुराक दी जाती है। जिसमे ३०० ग्राम दूध व फल नियमित रूप से दिए जाते हैं। भोजन बनाने के लिए प्रशिक्षित पाचक कार्य करते है। इस व्यवस्था का अनुमान आप बच्चों का स्वास्थ्य देखकर सहज ही लगा सकते हैं।

गोशाला

महर्षि दयानन्द के आदेशानुसार श्री हसराज जी कपूर (भूतपूर्व पुलिस अधीक्षक) विशेषरूप से गोशाला का समय-समय पर मार्गदर्शन करते हैं। गोशाला में इस समय विदेश नस्ल की ४३ गाय, ३६ बछड़िया, २ बच्छे व ६ सांड २ बैल हैं। इस समय हमें गोशाला से २५० कि० ग्राम दूध नित्य प्राप्त होता है, जो बच्चो को दिया जाता है। इस समय हमारी गोशाला में ३५ किलोग्राम तक दूध देनेवाली गायें हैं हमें आशा ही नही पूर्ण विश्वास है कि अगर सबका सहयोग इसी प्रकार बना रहा तो हमारी गोशाला आगामी वर्ष में भारत की उच्चकोटि की गोशाला हो सकती है। गत वर्ष साहिवाल व होस्टन गायों ने क्रमशः १६ लीटर व २१ लीटर दूध देकर ५०००/- का इनाम हरयाणा सरकार से लिया। सम्पूर्ण हरयाणा की गोशालाओं में हमारे गुरुकुल की गौओं ने दूध एव सुन्दरता में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित किया जिसका हमे गर्व है।

पुस्तकालय

बच्चों के बौद्धिक विकास हेतु गुरुकुल का अपना पुस्तकालय है जिसमे ३० हजार के लगभग मूल्य की पुस्तके हैं। इसी वर्ष हमने पुस्तकालय हेतु लगभग ६ हजार रुपये की नई पुस्तके खरीदी हैं जिसमें साहित्य व धर्म के साथ-साथ बालोपयोगी अनेको पुस्तके है। पुस्तकालय में दैनिक साप्ताहिक पत्र पत्रिकाये आती हैं। जिनकी समस्त व्यवस्था श्री इन्द्रमणि जी शास्त्री करते हैं।

प्रशिक्षण शिविर

आर्यसमाज के प्रख्यात योगाचार्य डा० देवव्रत आचार्य के निर्देशन में १५ मार्च से १ अप्रेल तक एक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें गुरुकुल के सभी छात्रो ने विधिवत् प्रशिक्षण प्राप्त किया। क्षेत्र में फैले गम्भीर रोगों से बच्चों को बचाने के लिए डा० देवव्रत आचार्य को देख-रेख में यह योग एक प्राकृतिक चिकित्सा शिविर आपके सामने है। इससे अनेक रोगी लाभ उठा सकते हैं, इस समय आर्यवीर दल का शिविर भी साथ ही चल रहा है और आर्यवीर प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। इस शिविर में ४१२ छात्र लाभान्वित हो रहे हैं तथा यहा अध्यापक, छात्र एव बाहर के व्यक्ति भी लाभ उठाते रहे हैं। इस प्रकार के शिविर वर्ष में दो बार अवश्य लगाये जाते हैं।

अक्टूबर मास में गुरुकुल के छात्रो को व्यायाम, प्राणायाम, योगाभ्यास आदि का प्रशिक्षण दिलाने हेतु श्री डा० देवव्रत जी आचार्य की देख-रेख में दस दिन तक शिविर लगाया गया। इस अवसर पर स० गुरदयालसिंह सैनी संसद सदस्य ने अध्यक्षता की।

शिक्षा विभाग

इस वर्ष हमारा वार्षिक परिणाम १०० प्रतिशत रहा है। जबकि किसी भी श्रेणी के प्रश्नपत्र हमारे अध्यापक स्वय न बनाते हैं और न ही कापियों की जांच करते हैं। सभी प्रश्नपत्र व जांच बाहर से कराई जाती है। निःसन्देह इस समय यह सस्था शिक्षाजगत् में प्रति उन्नति के पथ पर अग्रसर है।

क्रीड़ा

हमारे ब्रह्मचारियों ने खेलो मे भाग लेकर कुरुक्षेत्र जिले का नाम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गुंजाया है।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्य पर्वों की सूची—१९९१

क्र०सं०	नाम पर्व	अंग्रेजी तिथि	वार
१-	मकर सक्रान्ति	१४-१-१९९१	सोमवार
२-	बसन्त पचमी	२१-१-१९९१	सोमवार
३-	सीता अष्टमी	६-२-१९९१	बुधवार
४-	दयानन्द बोधरात्रि	१३-२-१९९१	बुधवार
५-	लेखराम तृतीया	१७-२-१९९१	रविवार
६-	नवसंस्येष्टि	२८-२-१९९१	गुरुवार
७-	होली (फाग)	२-३-१९९१	
८-	आर्यसमाज स्थापना दिवस	१७-३-१९९१	रविवार
९-	राम नवमी	२४-३-१९९१	रविवार
१०-	हरि तृतीया	१४-७-१९९१	रविवार
११-	श्रावणी उपाकर्म	१६-८-१९९१	रविवार
१२-	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	२-९-१९९१	सोमवार
१३-	विजयादशमी/श्री सिद्धान्ती जन्मदिवस	१८-१०-१९९१	शुक्रवार
१४-	गुरु विरजानन्द दिवस	२१-१०-१९९१	सोमवार
१५-	म० दयानन्द निर्वाण दिवस	५-११-१९९१	मगलवार
१६-	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान	२३-१२-१९९१	सोमवार

नोट—सभी आर्यसमाजें इन पर्वों को सोत्साह मनावें तथा इन्हें आर्यसमाज का प्रचार साधन बनावे।

—सभा मन्त्री

स्वर्गीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का ११३वां जन्मदिन

स्वर्गीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के ११३वें जन्मदिन के उपलक्ष में कालावाली मण्डी में श्री मदनलाल जी आर्य की दुकान पर श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी गुरुकुल बठिंडा की अध्यक्षता में मनाया गया। सन्ध्या हवन यज्ञ प्रार्थना के पश्चात् श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थी ने श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द महाराज के तप-त्याग आर्यसमाज की अनथक सेवाओं, हैदराबाद सत्याग्रह, लोहारु काण्ड की घटनाओं को बताते हुए अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। हमें भी उनसे प्रेरणा लेकर उनकी शिक्षाओं का पालन करते हुए अपने को सच्चा आर्य बनाने का यत्न करना चाहिए। मदनमोहन आर्य कालांवाली मण्डी

इसी प्रकार ३१ दिसम्बर को दयानन्द मठ रोहतक यज्ञशाला में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का जन्मदिवस महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी की अध्यक्षता मे मनाया गया जिसमें वैद्य भरतसिंह, धर्मवीर आर्य ने स्वामी जी की जीवनी पर प्रकाश डाला।

—मा० मेघराज आर्य

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न

शामसुख—स्थानीय एस० के० स्कूल में भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। उपरोक्त प्रतियोगिता के विषय निम्न थे।

(१) स्वामी श्रद्धानन्द के कीर्तिस्तम्भ गुरुकुल।

(२) स्वामी श्रद्धानन्द का स्वतन्त्रता प्राप्ति में योगदान।

(३) अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द।

(४) सस्कृति रक्षक—स्वामी श्रद्धानन्द।

इस प्रतियोगिता में दस छात्रों ने भाग लिया। निर्णायक मण्डल के अनुसार महेन्द्रसिंह दगोलिया आत्मज श्री मनफूलसिंह (प्रथम) श्रवणकुमार आत्मज श्री बलवीरसिंह (द्वितीय) तथा रमेशकुमार आत्मज श्री टूरसिंह (तृतीय) घोषित किए गए।

—मुख्याध्यापक

आर्यसमाजों के अधिकारियों के लिए विनम्र चेतावनी

आर्यसमाजों के अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि एक युवक सन्यासी जो अपना नाम आनन्दप्रकाश बताता है और अपने आपको स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज का शिष्य बताकर दिल्ली के आर्यसमाजों में पहुंच जाता है। उसने गुरुकुल हल्दीघाटी (उदयपुर) के नाम से रसीद बुके छपवा रखी हैं और गुरुकुल में भीलों के गरीब बच्चों के लिए उनकी पढ़ाई आदि के लिए नकद राशि तथा गरम वस्त्र आदि एकत्रित करता है। वह कपड़े आदि ले जाकर इधर-उधर बेच देता है। आर्यसमाज जनकपुरी डी-ब्लाक, नई दिल्ली के अधिकारियों ने इस व्यक्ति की पूरी छानबीन कराई है और सभा को सूचना दी है।

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे ऐसे धोखा देकर धन ऐंठने वाले व्यक्ति से सावधान रहें और ऐसे व्यक्ति को आश्रय और धन आदि न दें। प्रचार मन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

कन्या गुरुकुल, हाथरस की मुख्याधिष्ठात्री एवं आचार्या श्रीमती अक्षयकुमारी शास्त्री का निधन

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस (जनपद-अलीगढ़) उ० प्र० की मुख्याधिष्ठात्री एवं आचार्या श्रीमती अक्षयकुमारी शास्त्री का दिनांक १४-१२-९० को गुड़गांव में निधन होगया। उनके आकस्मिक निधन से सारे कुलवासी स्तब्ध रह गये। अचानक महान् वज्रपात होगया। सारा गुरुकुल शोक में डूब गया।

दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं सद्गति के लिए दिनांक १७-१२-९० को शान्ति यज्ञ किया गया, जिसमें १०१ गायत्री मन्त्रों से आहुतियां दीगईं। दिनांक १८-१२-९० से २४-१२-९० तक यजुर्वेद के चुने हुए अध्यायों एवं चतुर्वेद शतकम् से यज्ञ किया गया। दिनांक २४-१२-९० को शुद्धि-यज्ञ में दूर-दूर से महानुभाव एवं स्नातिकाएं पधारे, तथा कुलमाता को भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

श्रीमती अक्षयकुमारी जी शास्त्री ने निरन्तर तीस वर्ष तक कन्या गुरुकुल हाथरस में मुख्याधिष्ठात्री एवं आचार्या पद पर कार्य किया तथा अपनी योग्यता एवं कर्मठता से गुरुकुल की चहुंमुखी आशातीत उन्नति की।

श्री महेंद्रप्रताप जी शास्त्री ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती अक्षय-कुमारी जी शास्त्री की स्मृति में रु० ११००-/ कन्या गुरुकुल, हाथरस हेतु तथा १२ अन्य संस्थाओं को १०१-१०१ रुपये प्रदान किये।

बाराती लौटाए

फिल्लौर—गत दिनों निकटवर्ती गांव मीरसिंह पुरा के निवासी हरभजनसिंह की लड़की की शादी में ५५ सदस्यों की बारात आई। शिरोमणि अकाली दल (मान), सर्कल फिल्लौर के अध्यक्ष जोगासिंह के अनुसार उन्होंने बारातियों से सम्पर्क किया व अधिक बारात लाने पर रोष व्यक्त किया। बारातियों, लड़की के अभिभावकों तथा गांव के सरपच ने मिन्नतें कर २० व्यक्ति बारात में सम्मिलित होने को मनवाया व बाकी वापिस लौटा दिये गये।

श्री जोगासिंह ने सरपंच व अन्य गांव वालों से अनुरोध किया कि किसी भी बारात में ११ से अधिक सदस्य न लाए जाएं।

उन्होंने युवा वर्ग से भी अपील की कि वह उक्त बात का ध्यान रखे व समाज सुधार कार्यों में सहयोग दें। उन्होंने अथियों से भी अनुरोध किया कि वे ज्यादा बाराती न लाए व इन निर्देशों का उल्लंघन करनेवालों को सबक सिखाए। दैनिक ट्रिब्यून

वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द की मासिक बैठकें

प्रो० ओमकुमार आर्य

वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द की मासिक बैठक श्री संयोजक, स्वामी रत्नदेव जी की अध्यक्षता में ९-१२-९० को आर्यसमाज मन्दिर जीन्द शहर में हुई। इसमें स्थानीय एवं बाहर से आये हुए १५ सदस्य उपस्थित थे। बैठक में अब तक के प्रचार कार्य की समीक्षा की गई और प्रगति पर संतोष व्यक्त किया गया। दिसम्बर मास के लिए निम्नलिखित गावों को प्रचार हेतु चुना गया—गतौली, रामकली, गढवाली खेड़ा, करेला, झमोला, मालवी, बूढाखेड़ा लाठर, पौली, हथकला, किला जफरगढ, अनूपगढ़ ब्राह्मणवास तथा मोटावाला। आवश्यकतानुसार इस सूची में परिवर्तन और संशोधन भी किया जा सकता है।

संयोजक स्वामी रत्नदेव जी महाराज ने सुझाव रखा कि मण्डल के बढ़ते हुए कार्य को देखते हुए भजनोपदेशक श्री चन्द्रभान जी की भजनमण्डली की सहायतार्थ एक प्रचार सहायक की भी जरूरत है जो कि व्यवस्था में सहयोग दे सके। अतः कुछ समय के परीक्षण पर श्री सतबीरसिंह जी आर्य (श्यामली कलां) को प्रचार-सहायक नियुक्त किया जाए। सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से यह सुझाव मान्य किया। आर्यसमाज जीन्द जंक्शन के मन्त्री श्री वेदपालसिंह जी आर्य ने सूचना दी कि आर्यसमाज जीन्द जंक्शन ने एक सौ रु० प्रति मास अंशदान मण्डल वास्ते स्वीकृति किया है और उन्होंने पिछला बकाया ३०० रु० जमा भी करवाया।

सभी उपस्थित सदस्यों ने महसूस किया कि सभा से अनुरोध करके आर्यसमाज सफीदों का विवाद भी सुलझाया जाये क्योंकि आर्य समाज सफीदों भी इस क्षेत्र का मजबूत समाज है और विवाद के चलते वहां से मण्डल को अनुदान नहीं मिल पा रहा है।

जनवरी की बैठक—वेद प्रचार मण्डल जिला जीन्द की मासिक बैठक ६-१-९१ प्रातः ११-०० बजे माननीय संयोजक स्वामी रत्नदेव जी की अध्यक्षता में आर्यसमाज मन्दिर जीन्द जंक्शन में हुई। इसमें १२ सदस्य उपस्थित थे। गत् कार्यवाही की पुष्टि की गई और दिसम्बर १९९० में किये गये। वेद प्रचार के कार्य की समीक्षा की गई तथा जनवरी १९९१ के दौरान निम्नलिखित गांवों के प्रचार के लिए चुना गया—खुग,, रायचदवाला, शाहपुर, कुचराणा कलां व खुर्द, छातर, श्रीराख खेड़ा, जीवनपुर, धनखड़ी, दालमवाला, रूपगढ़, जीतगढ़, कैर खेड़ी, अहरीका, अमरहेड़ी। मण्डल के भजनोपदेशक श्री चन्द्रभान जी आर्य की भजनमण्डली की मांग बाहर भी रहती है और इसी के मद्देनजर मण्डली को ७-८ जनवरी को प्रचारार्थ गुरुकुल घरौण्डा भी भेजा गया।

सर्वसम्मति से तय हुआ कि आर्यसमाज जीन्द जंक्शन के प्रधान श्री कृष्णलाल जी गुप्ता तथा आर्य प्राथमिक पाठशाला, आर्यसमाज जीन्द शहर के प्रबन्धक चौ० देशराज जी पूनिया को मण्डल की अन्तरंग में शामिल किया जाये। अतः ये दोनों सज्जन अंतरग के सदस्य बना लिये गए हैं। दोनों ही लगनशील आर्यसज्जन हैं। शांति पाठ हुआ और बैठक विसर्जित हुई। अगली बैठक इसी महीने २७-१-९१ रविवार प्रातः ११-०० बजे आर्यसमाज मन्दिर नरवाना में होगी।

कानपुर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्यसमाज गोविन्दनगर (कानपुर) ने अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस केन्द्रीय आर्य सभा के अध्यक्ष एव आर्य नेता श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता में मनाया गया।

समारोह में वक्ताओं ने कहा कि गणेशशंकर विद्यार्थी की तरह स्वामी श्रद्धानन्द भी सन् १९२६ में साम्प्रदायिकता के शिकार हुये थे। पाकिस्तान बन जाने के बाद आज भी यही साम्प्रदायिकता हमारे देश को खोखला कर रही है। स्वतन्त्रता से पहले अंग्रेज सरकार मुस्लिम तुष्टीकरण करती थी। स्वतत्रता के बाद आनेवाली सभी सरकारें उसी नीति को अपना कर देश को तबाही की तरफ ले जा रही हैं। धर्मनिरपेक्षता की आड़ में यह तुष्टीकरण किया जा रहा है।

शुद्धि समाचार

दिनांक ३०-१२-९० को ग्राम चैनपुर के आदिवासी ईसाइयों को सीतापुर जिला सरगुजा म० प्र० में यज्ञ हवन कराया गया एवं यज्ञोपवीत धारण कराकर शुद्ध किया गया। और गऊ मास अन्य माँस शराब न खाने पीने का सकल्प कराया गया। यह कार्यवाही स्वामी सेवानन्द सरस्वती भारतीय हिन्दू शुद्धि सरक्षिणी सभा हरयाणा वाले के प्रयास से किया गया। यह कार्य स्वामी सर्वानन्द सरस्वती दयानन्नमठ दीनानगर जि० गुरदासपुर (पजाब) वाले के आदेशानुसार किया गया। इस कार्य मे चन्द्रदेव एव बनारसीदास खडगांव वाले का सहयोग रहा और इस कार्य में कपडे की व्यवस्था का सहयोग पवनकुमार स्वास्तिक फैक्ट्री पानीपत हरयाणा का रहा। ३८ नर नारियों की शुद्धि की गई।

दिनांक २७-१२-९० को ग्राम चलता जिला सरगुजा म० प्र० में यज्ञ हवन किया गया। आर्यसमाज चलता के प्रधान श्री गोवर्धन जी की अध्यक्षता में यह कार्य किया गया और यज्ञ मे उरांव आदिवासी ईसाइयो को शुद्ध किया गया। और आहुति दिलाई गई। गऊ मास अन्य मास शराब न खाने पीने का सकल्प कराया गया। यह कार्यवाही सेवानन्द सरस्वती भारतीय हिन्दू शुद्धि सरक्षणी सभा एवं ब्रह्मचारी सुन्दरदेव नैष्ठिक के द्वारा कपडा वितरण किया गया और यज्ञोपवीत धारण कराया गया। ८ नर-नारियों की शुद्धि की गई।

(पृष्ठ ३ का शेष)

श्रद्धानन्द चिकित्सालय

बच्चो के स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए गुरुकुल का अपना चिकित्सालय है जहा श्री सुखबीरसिंह जी, श्री होश्यारसिंह जी उप वैद्य नित्यप्रति बच्चों का स्वास्थ्य निरोक्षण करते हैं। गम्भीर रोगों को नगर के बडे चिकित्सालय मे दिखाना पडता है, क्योंकि धनाभाव के कारण हमारा औषधालय आधुनिक सुविधाओं से युक्त नहीं है।

अपील

आधुनिक पाश्चात्य शिक्षाकेन्द्र कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की पीठ से पीठ सटाए खडा गुरुकुल बिना किसी सरकारी अनुदान के निरन्तर प्रगति कर रहा है। गुरुकुल का मासिक व्यय एक लाख हजार रुपये है तथा विभिन्न स्रोतो से आय ८०-८५ हजार रुपये है। लगभग २५-३० हजार रुपये का मासिक घाटा होता है। जो आप सदृश दानी महानुभवो के सहयोग से पूरा होता है।

ऐसी अवस्था मे हम स्वामी जी के अभीष्ट लक्ष्य की पूर्ति में लगे हैं, परन्तु यह तभी सम्भव है, जब आपका सहयोग पहले की अपेक्षा और अधिक मिल सके। जैसा कि कहा गया है "सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदान विशिष्यते" अर्थात् सब दानो मे विद्या के लिए दिया दान ही अच्छा होता है।

आर्य वीरों का प्रशंसनीय सेवा कार्य

रोहतक—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन २३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर तक नई दिल्ली के रामलीला मैदान में स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता में उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस समारोह को सफल बनाने के लिए जहां आर्य जनता, आर्य संस्थाओं तथा प्रतिनिधि सभाओं ने योगदान दिया वहां आर्य वीरदल के सैनिकों का योगदान अत्यधिक रहा। दिन-रात टैन्टों में रहते हुए २२ दिसम्बर से ही आर्य वीर सेवा कार्य में जुट गये। आचार्य डा० देवव्रत जी की अध्यक्षता में आर्य वीरदल का सेवार्थ शिविर लगाया गया जिसमें जहां देहली, बम्बई, महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तरप्रदेश से आर्य वीरों ने भाग लिया वहां हरयाणा प्रान्त की ओर से लगभग ५०० आर्य वीरों ने बढ-चढ सेवा कार्य किया। एक ओर आर्य वीर रातभर सुरक्षा का कार्य करते बस अड्डे, हवाई अड्डे तथा स्टेशनों पर आनेवाली आर्य जनता का मार्गदर्शन करते वहां सम्मेलन में पधारे हजारों व्यक्तियों की भोजन व्यवस्था भी बड़े सुचारु ढंग से चलाकर समस्त जनता को आश्चर्य चकित कर दिया। भोजन व्यवस्था में विशेष तौर से श्री अजीतकुमार आर्य उपसंचालक आर्य वीरदल हरयाणा, श्री सत्यवीर जी उपसंचालक आर्यवीर दल राजस्थान, श्री सुभाष गुगलानी मण्डलपति आर्य वीरदल पानीपत तथा वेदप्रकाश आर्य महामन्त्री आर्य वीरदल हरयाणा ने भोजन वितरण में आर्य वीरों के सहयोग से बहुत ही उत्तम व्यवस्था बनाई। इतने बड़े स्तर के अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर सभी को भोजन प्राप्त हुआ। इस उत्तम व्यवस्था को लोगों द्वारा विशेष रूप से सराहा गया है। यह सभी आर्य जनता के सहयोग से बन पाया है इस समस्त कार्य के लिए जहां आर्य वीरों का विशेष धन्यवाद है वहां आर्य जनता के सहयोग के लिए भी धन्यवाद है।

विशाल शोभा यात्रा

आर्यजगत् के इतिहास में यह पहला अवसर है कि स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस जो केन्द्रीय सभा देहली के द्वारा २५ दिसम्बर को मनाया जाता है वहां अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर सामूहिक रूप से मनाया गया। एक शोभा यात्रा नया बाजार से तथा दूसरी रामलीला मैदान से चलकर दोनों का संगम अजमेरी गेट पर विशाल रूप से हुआ। शोभा यात्रा में आर्य वीरदल के सैनिकों का व्यायाम प्रदर्शन, मलखम विशेष रूप से रस्से पर मलखम, तलवार, भाला, लाठी देखने के लिए विशाल समूह सडकों पर उमड पड़ा। शोभा यात्रा इतनी लम्बी थी एक सिरा लालकिला पर तो अन्तिम सिरा रामलीला मैदान में अभी चलने की प्रतीक्षा में था। शोभा यात्रा को उत्तम ढंग चलाने में आर्य वीरों ने बहुत ही सराहनीय योगदान दिया। इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे हरयाणा आर्य वीरदल के सैनिकों, आर्य संस्थाओं, समाजों के योगदान के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

वेदप्रकाश आर्य प्रान्तीय मन्त्री
आर्य वीरदल हरयाणा

निखरना है......

बातों से बात नही बनती, जो कहना है वह करना है।
ज्ञान के सुन्दर नक्शे में अब रंग अमल का भरना है॥
औरों को खाक सुधारेंगे, हमने खुद अभी सुधरना है।
बिगडी को बनाने की खातिर पहले खुद आप संवरना है॥
घनघोर घटायें छाई हों, आंधी हो चाहे तूफां हो।
भवसागर से हर हाल में ही, हमने तो पार उतरना है॥
उपवन में सदा बहार रहे, पतझड़ का नाम निशान न हो।
कलियों की तरह चटकना है, फूलों की तरह निखरना है॥
मर-मर के जीना आसां है, मुश्किल है मुश्किल में जीना।
जिसने दुनिया में जीना है, उसने क्या ? मौत से डरना॥
लाख हम पे बलाएँ टूट पड़ें, परवाह नहीं कुछ भी उनकी।
हम दबके रह सकते ही नहीं, हमने हर हाल उभरना है॥
हम दृढ निश्चयी हैं'नाज' सभी मंजिल पर जाकर दम लेंगे।
हर ऊबड़ खाबड़ रस्ते से हँस-हँस के हमें गुजरना है॥

—नाज सोनीपती

ग्राम कंवारी (हिसार) में वेद प्रचार

दिनांक ३०-१२-९० को ग्राम कंवारी में महाशय जबरसिंह खारी (वेद प्रचार मण्डल हांसी) ने देशभक्ति के भजन तथा स्वर्णकुमार का इतिहास रखा। चोपाल में कड़कती सर्दी के बावजूद विशेषकर नवयुवकों ने काफी संख्या में भाग लिया। प्रातःकाल श्री शमशेर के चबूतरे पर यज्ञ किया। दिनांक ३१-१२-९० को लोगों के आग्रह पर सर्दी के कारण दिन में मध्याह्न १ बजे से ४ बजे तक प्रचार किया। इस अवसर पर महाशय जी ने महिलाओं के शिक्षाप्रद भजन तथा आर्य वीर प० लेखराम जी का इतिहास रखा। आर्यसमाज कवारी के प्रधान श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी ने शराब से होनेवाले नुकसान से नवयुवकों को अवगत कराया तथा ग्रामवासियों से आग्रह किया कि अब समय आगया है कि हमारे आसपास में विशेष कर शराब बन्दी लहर चल पड़ी है, अब हमें भी पीछे नहीं रहना चाहिए। शराबी शराब पीना छोड़ें तथा अपने गांव में पूर्ण शराब बन्दी लागू करें। ज्ञातव्य है कि ग्राम सुलतानपुर, उमरा, मुहजादपुर में दिसम्बर मास से पूर्ण शराब बन्दी लागू है।

१ जनवरी को प्रातः आर्य निवास (खेतों की ढाणी) में ब्र० चेतन देव वैश्वानर (अलीगढ) द्वारा यज्ञ किया गया। ब्र० जी ने ईश्वर की सत्ता तथा यज्ञ के महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।

डा० ओमप्रकाश आर्य मन्त्री आर्यसमाज कवारी

हमारे पूर्वज क्यों बलवान् होते थे

मेरी आयु ८५ वर्ष है मैं १९१७ से १९२० तक अन्दोरा पढ़ा, अठारा किलो मीटर सोमवार जाते शनिवार आते थे। फिर १९२१-२२ दो साल कांगडा पढ़ा साल में दो बार ६० मील जाते व दो बार पैदल आते। तब तांगे, मोटरसाईकल, मोटर की सुविधा न थी। आज हर स्कूल में ५० लडके साईकलों पर आते-जाते हैं चाहे एक मील या दो मील स्कूल हो। हमारे दादा धर्मशाला जिला शहादतो पर पैदल ६० मील आते-जाते थे, लोग तीर्थ यात्रा पर पैदल आते-जाते थे। चक्की का आटा, शुद्ध घरेलू घी दूध, साग-पात की सब्जी, मोटा खद्दर पहनते थे, सारा दिन सख्त परिश्रम करते, खुली हवा में रहते, कठिन परिश्रम से खाया-पीया सब हजम, कभी कब्ज, बुखार, खांसी, जुखाम न होता था। शादी २५ वर्ष से पहले न होती थी। आवश्यकताएं कम थीं। पानी एक-एक मील से लाना पडता था, सौदा कपड़ा लाने दीनानगर ३० मील एक दिन जाते दूसरे दिन आते। आज क्या व्यवस्था है घण्टों मोटर का इन्तजार ३ मील के लिए करते हैं। आज का युवक कोई काम हाथ से करना पसन्द नहीं करता तभी कमजोर शरीर, भूख-प्यास सह नहीं सकता और बिना परिश्रम कर्त्तव्य निभाए अच्छा वेतन चाहता है वेतन ही नहीं ऊपरी आमदन भी चाहता है उसे देश, राष्ट्र, समाज की कोई चिन्ता नहीं होती। श्रवणकुमार जैसे सुकुमार पुत्र अब कहां ? जो अन्धे माता-पिता को बैहगी में उठा तीर्थ यात्रा कराते थे।

ले०—सुबोधानन्द

सर्वजन सूचनार्थ

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी (वीरेन्द्रसिंह) विद्याधिकारी की अंक तालिका गुम होगई है। जिस सज्जन को प्राप्त हो उसे निम्न पते पर पहुंचाने का कष्ट करें।

मेरा पता—
वीरेन्द्रसिंह S/o भीमसिंह
V. P. O.–आंवली
जि०—रोहतक

पूर्ण विवरण
अंक तालिका-विद्याधिकारी
अनुक्रमांक १११
सन् १९७८, शिक्षा केन्द्र-
गुरुकुल भैसवाल, गुरुकुल
कांगडी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार।

क्या आज भी कन्याओं को यज्ञोपवीत का अधिकार नहीं ?

ले०—सुखदेव शास्त्री महापदेशक सभा

आधुनिक युग में जबकि नारी किसी भी क्षेत्र में पुरुष से पीछे नही है, कानून की दृष्टि मे लड़के और लड़की दोनों को समान अधिकार प्राप्त हैं, ऐसे में उपरोक्त प्रश्न कुछ निराधार प्रतीत होता है। परन्तु वर्तमान समय मे कन्याओं के यज्ञोपवीत के औचित्य को नकारता हुआ, हरयाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय का आदेश हमे इस प्रश्न पर पुनर्विचार करने के लिये बाध्य करता है। कुलपति के आदेशानुसार विश्वविद्यालय का कोई अध्यापक अथवा कर्मचारी अपनी भविष्य निधि में से अपने पुत्र के यज्ञोपवीत सस्कार के लिये तो ऋण ले सकता है परन्तु पुत्री के यज्ञोपवीत संस्कार के लिये नही।

कुलपति महोदय का यह आदेश हमें उस युग की याद दिलाता है जबकि निहित स्वार्थ के कारण पोगे पंडितों ने कहा था 'स्त्री शूद्रौ नाधीयताम्'। अर्थात् नारी और शूद्र को वेद पढने का अधिकार नही। महर्षि दयानन्द ने इस वेद विरुद्ध मान्यता का जबरदस्त खण्डन किया तथा अनेको प्रमाण सहित यह सिद्ध किया कि नारियों को वेद पढने तथा यज्ञोपवोत धारण करने का उतना ही अधिकार है जितना कि पुरुष जाति को।

कितने शर्म की बात है कि आज स्वतन्त्र भारतवर्ष में जहां सरकार बालिका वर्ष मनाकर समाज में नारी उत्थान के लिये जागृति पैदा कर रही है, स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता है, नारि जाति के लिये परम्परागत भेदभाव को भावना को दूर करने के लिये सरकार कृतसंकल्प है, वहीं, विश्वविद्यालय प्रशासन कन्याओं के यज्ञोपवीत सस्कार को अमान्य घोषित कर सरकार की अपनी नीतियो का उपहास कर रहा है।

हमारे राष्ट्र की धर्मनिरपेक्ष सरकार प्रत्येक व्यक्ति को अपनी धार्मिक मान्यताओ के अनुसार आचरण करने का अधिकार देती है तथा सभी धर्मों के अनुयायियो को धार्मिक भावनाओ का समुचित आदर करने के लिये वचनबद्ध है। परन्तु कुलपति महोदय की हठधर्मी तो देखिये कि, कन्याओं का यज्ञोपवीत सस्कार वैदिकधर्म की मान्यताओं के अनुकूल है तथा पूर्ण रूप से धर्म संगत है, इस आशय की जानकारी उन तक पहुंचाने के पश्चात् भी वह निर्णय देते हैं कि यह युक्ति सगत प्रतीत नही होता इसलिये कर्मचारी अपनी पुत्री के यज्ञोपवीत सस्कार के लिए ऋण नही ले सकता।

हरयाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन का यह निर्णय वैदिक धर्म की मान्यताओं का अपमान करता है। आर्यों की धार्मिक भावनाओ पर कुठाराघात है तथा सामाजिक न्याय की मर्यादाओं के विरुद्ध है। आर्यसमाज, प्रशासन के इस निर्णय की निन्दा करता है तथा कुलपति महोदय से इस आदेश को तुरन्त वापिस लेने को मांग करता है।

हरियाणा खादी बोर्ड हजारों युवकों को रोजगार देगा

नीलोखेड़ी—हरयाणा में चालू वर्ष के दौरान खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा २५ हजार युवकों को रोजगार उपलब्ध करवाया जाएगा व चार हजार नयी इकाइयों को प्रोत्साहित किया जाएगा।

उपरोक्त जानकारी हरयाणा खादी एवं ग्रामोद्योग के चेयरमैन सतीश मित्तल ने गत दिनों स्थानीय भारत सरकार के उद्योग मंत्रालय के विकास आयुक्त (लघु उद्योग) के अन्तर्गत एकीकृत प्रशिक्षण केन्द्र के निष्कर्षण सत्रों के समापन समारोह मे दी।

इस अवसर पर श्री मित्तल ने कहा कि भारत जैसे कृषिप्रधान देश में जहां ८० प्रतिशत लोग गांव में बसते हैं। इसलिए ग्रामीण एवं लघु उद्योग के बिना देश में विशेषत: गाँव में आर्थिक तरक्की एव साधनहीन व्यक्तियों की कायाकल्प के लिए कोई अन्य मार्ग नहीं हो सकता।

उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए उन्हें विश्वास दिलाया कि हरयाणा खादी एव ग्रामोद्योग बोर्ड उन्हें ज्यादा

दिनांक २३–२६ दिसम्बर, १९९० को आयोजित आर्य महा-सम्मेलन में शिक्षा सम्मेलन में पारित प्रस्ताव

भारत की गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ससार की सबसे प्राचीन शिक्षा पद्धति है। देश की वर्तमान परिस्थितियो में गुरुकुल शिक्षा पद्धति सर्वथा उपयोगी है। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती से प्रेरणा ग्रहण कर १९वीं शदी के उत्तरार्द्ध मे स्वामी श्रद्धानद ने गुरुकुल आन्दोलन प्रारम्भ किया था और हरिद्वार में गगा तट पर हिमालय की उपत्यका में कागडी ग्राम के पास पहला गुरुकुल स्थापित किया था। गुरुकुल कागडी की सफलता से प्रभावित होकर पजाब, उत्तरप्रदेश, हरयाणा, राजस्थान, बिहार, गुजरात, मध्यप्रदेश, उडीसा आदि अनेक राज्यो में गुरुकुल स्थापित किए गए।

खेद है कि देश की स्वाधीनता के पश्चात् शासन के कर्णधारों ने गुरुकुल शिक्षा पद्धति की ओर उचित ध्यान नही दिया।

अनेक शिक्षा आयोगों और शिक्षासमितियों की सिफारिशों के बावजूद आज भी देश की कोई सुविचारित और स्पष्ट शिक्षानीति नही है। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का निश्चित मत है कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति देश के युवकों का चारित्रिक, मानसिक, बौद्धिक, शारी-रिक, आत्मिक और भौतिक विकास करने मे समर्थ है। अत यह सम्मेलन भारत सरकार से आग्रहपूर्वक अनुरोध करता है कि :

१. सरकार गुरुकुल शिक्षा पद्धति को मान्यता और संरक्षण प्रदान कर इसे देश की शिक्षा नीति का अभिन्न अंग बनाए।
२ यह सम्मेलन देश के समस्त आर्य गुरुकुलों से अनुरोध करता है कि वे समान पाठ विधि अपनाकर गुरुकुल शिक्षा पद्धति और गुरुकुलों के एकीकरण मे सक्रिय सहयोग प्रदान करें।
३. सम्मेलन का निश्चित विचार है कि आर्यसमाज की समस्त शिक्षा सस्थाओ में वैदिक सिद्धान्तों की शिक्षा, नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा और भारतीय सस्कृति के शिक्षण पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

निजी सहायक कुलपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

आकाशवाणी रोहतक केन्द्र से सुनिये—

सुखदेव शास्त्री का भाषण

दिनाक १७ जनवरी, १९९१

समय : रात-७-०० बजे

विषय है—लड़का-लड़की मे फर्क की भावना समाप्त करना।

(द्वारा—सत्यवान)

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वैदक मे ओज और तेज को बढानेवाला तथा अग्नि दीपक कहा गया है। आर्य पर्वो पर दान, जो धर्म का एक स्कन्ध है, अवश्यमेव ही कर्त्तव्य है और—

देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्विकं स्मृतम्।

गीता, अध्याय १७। श्लोक २०॥

अर्थ—देश, काल और पात्र के अनुसार ही दिया हुआ दान 'सात्विक' कहलाता है। तथा—

दरिद्रान्भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरे धनम्।

अर्थ—हे अर्जुन ! दरिद्रों का पालन करो, धनियों को धन मत दो। इन श्रीमद्भगवद्गीता के वचनों के अनुसार इस प्रबल शीतकाल में मकर सक्रान्ति पर दीनों को कम्बल आदि का दान परम धर्म है।

पंजाब में मकर संक्रान्ति के पहिले दिन लोढ़ी का तेवहार मनाने की रीति है। इस अवसर पर स्थान-स्थान पर होली के समान अग्नियां प्रज्वलित की जाती हैं और उनमें तपे हुए गन्ने भूमि पर पटकाकर आनन्द मनाया जाता है। उससे अगले दिन वहा मकर सक्रान्ति का भी उत्सव होता है, जिसको वहा 'माघो' बोलते है। ज्ञात होता है कि यह दोनों दिन के लगातार दो उत्सव न होकर दिनद्वय-व्यापी मकर सक्रान्ति महोत्सव के एक ही पव का अपभ्रष्ट रूप है। पजाब के आर्यसामाजिक पुरुषो को चाहिए कि वे दो दिन त्यौहार न मनाकर मकर सक्रान्ति की तिथि को ही परिमार्जित रूप मे इस पर्व को मनाए और आर्यसामाजिक जगत् में पर्वो को एकाकारता स्थापित

पीयूष-पान

सुख शान्ति कैसे मिले ?

(प्रवाहक—देवेन्द्र कुमार कपूर, बम्बई)

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शंनो विष्णुरुरुक्रमः।
ऋ० १।९०।९

भावार्थ—सुख तथा शान्ति की प्राप्ति के लिए इस पवित्र मन्त्र द्वारा भगवान् से प्रार्थना की गई है, जो मित्र-वरुण-अर्यमा-इन्द्र-बृहस्पति-विष्णु तथा उरुक्रम है।

सुख-शान्ति का पिपासु जीव इन्हीं उत्कृष्ट गुणों को जीवन में धारण करते ही उस शाश्वत शान्ति का रसास्वादन करने लगता है।

'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे' अर्थात् मैं सब प्राणि-मात्र को मित्र की दृष्टि से देखूं—इस वैदिक लोरी में जब मानव झूमेगा, उसका कोई वैरी ही संसार में न रहेगा, तो शान्ति तो स्वयमेव स्थित रहेगी, तथा उसका जीवन मैत्री-भाव के पलने में सुसमीर से झूमता रहेगा।

इसी प्रकार उन्नति के मार्ग पर अग्रसर, वरनेयोग्य शुभ गुणों को धारण करनेवाला जब वह वरुण बन जावेगा, तो यश की कीर्ति सुगन्ध में जीवन सुखमय हो जावेगा।

न्याय की भावना से प्रेरित, जब किसी में मनसा वाचा कर्मणा अन्याय न रहेगा, तो आत्मशक्ति अन्तर्हृदय को अपना सदन बना लेगी। ऐश्वर्यप्राप्ति के साधनों में जुटा हुआ सुक्रतु तथा शतक्रतु बना हुआ, जब सब प्रकार के सुख साधनों को सम्पादित कर सोमी बन जावेगा, किसी प्रकार का अभाव ही उसके जीवन में न रहेगा, तो सुख-शान्ति तो दासी बनकर उस इन्द्र की सदा परिचर्या करेगी ही।

वेदज्ञान का पालन करनेवाला बृहस्पति बनेगा, तो उसी वेदज्ञान से प्राप्त विज्ञान-धन से वह सदा सुख का उपभोग करेगा। सब गुणों में व्याप्त विष्णु की भांति जब जीव का प्रवेश भी सब दिव्य गुणों में निरन्तर होता रहेगा, तब वह सब गुणों का स्वामी बनकर दिव्य सुखों का अनुभव करेगा।

इस प्रकार इन विविध गुणों को जीवन का अंगसंगी बनकर वह उरुक्रम बन जावेगा। सब प्रकार का पराक्रम उसकी सुख-शान्ति की सदा रक्षा करेगा।

प्रभुदेव ! कृपा करो ! हम आपके इन विविध गुणों को जीवन में धारण कर सदा सुखी तथा शान्त रहें।

जगदीश हमारा सखा मित्र, सदा शान्ति की वृष्टि करे।
वरने योग्य वही वरुण देव, शांति से हम सब को भरे॥
न्यायकारी वह महान् देव, सदा न्याय से शान्त करे।
सब ऐश्वर्यों का दाता देव, सुख-सम्पदा का दान करे॥
वेदज्ञान का महान् दाता, घर-घर व्यापक शान्त करे।
महान् शक्ति विपुल बलदाता, सौम्य शान्ति दान करे॥

आर्य प्रतिनिधि सभा ... मुद्रक ... वेदव्रत शास्त्री द्वारा ... प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, ... से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० २३२०/७३ फोन नं० ७४८१७ / ५८ मुद्रित संख्या १,६६, ०८, ७२, ०६०

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक ६ २१ जनवरी, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

वेद में ज्योतिष विद्या

(पं० धर्मदेव 'मनीषी' वेदतीर्थ, गुरुकुल कालवा।)

लोक दो प्रकार के होते हैं, एक तो प्रकाश करनेवाले और दूसरे वे जो प्रकाश किये जाते हैं। इस विषय में वेद के प्रमाण :-

सत्येनोत्तभिता भूमिः सत्येनोत्तभिता द्यौः।
ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति दिवि सोमो अधिश्रितः॥

सोमेनादित्या बलिनः सोमेन पृथिवी मही।
अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः॥

(अथर्व० का० १४। अनु० १। मं० १। २)

अर्थात् सत्यस्वरूप परमेश्वर ने ही अपने सामर्थ्य से सूर्य आदि लोकों का धारण किया है। उसी के सामर्थ्य से सूर्यलोक ने भी अन्य लोकों का धारण और प्रकाश किया है तथा ऋत अर्थात् काल ने बारह महीने सूर्य ने किरण और वायु ने भी सूक्ष्म स्थूल त्रसरेणु आदि पदार्थों का यथावत् धारण किया है। (दिवि सोमो०) इसी प्रकार दिवि अर्थात् सूर्य के प्रकाश में चन्द्रमा प्रकाशित होता है। उसमें जितना प्रकाश है सो सूर्य आदि लोक का ही है और ईश्वर का प्रकाश तो सब में है परन्तु चन्द्र आदि लोकों में अपना प्रकाश नहीं है, किन्तु सूर्य आदि लोकों से ही चन्द्र और पृथिव्यादि लोक प्रकाशित हो रहे हैं।

(सोमेनादित्या०) जब आदित्य की किरण चन्द्रमा के साथ युक्त होके उससे उलटकर भूमि को प्राप्त होके बलवाली होती हैं, तभी वे शीतल भी होती हैं, क्योंकि आकाश के जिस-जिस देश में सूर्य के प्रकाश को पृथिवी की छाया रोकती है, उस-उस देश में शीत भी अधिक होता है। जिस-जिस देश में सूर्य की किरण तिरछी पडती है उस-उस देश में गर्मी भी कमती होती है। फिर गर्मी के कम होने और शीतलता के अधिक होने से सब मूर्तिमान् पदार्थों के परमाणु जम जाते हैं। उनके जमने में पुष्टि होती है और जब उनके बीच में सूर्य की तेज रूप किरण पडती है, तब उनमें से भाप उठती है। उनके योग से किरण भी बलवाली होती हैं। जैसे जल में सूर्य का प्रतिबिम्ब अत्यन्त चमकता है और चन्द्रमा के प्रकाश और वायु से सोमलता आदि औषधियाँ भी पुष्ट होती हैं और उनसे पृथिवी पुष्ट होती है। इसीलिये ईश्वर ने नक्षत्र लोकों के समीप चन्द्रमा को स्थापित किया है।

कः स्विदेकाकी चरति क उ स्विज्जायते पुनः।
कि ँ स्विद्धिमस्य भेषजं किं वावपनं महत्॥

सूर्य एकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः।
अग्निर्हिमस्य भेषज भूमिरावपनं महत्॥ (यजु० २३/८,१०)

अर्थ—(कः स्वि०) इस मन्त्र में चार प्रश्न हैं। उनके बीच में से पहिला (प्रश्न)—कौन एकाकी अर्थात् अकेला विचरता और अपने प्रकाश से प्रकाशवाला है? दूसरा—कौन दूसरे के प्रकाश से प्रकाशित होता है? तीसरा—शीत का औषध क्या है? और चौथा—कौन बडा क्षेत्र अर्थात् स्थूल पदार्थ रखने का स्थान है।

इन चारों प्रश्नों का क्रम से उत्तर देते हैं—(सूर्य एकाकी०) १-इस संसार में सूर्य ही एकाकी अर्थात् अकेला विचरता और अपनी ही कील पर घूमता है, तथा प्रकाशस्वरूप होकर सब लोकों का प्रकाश करनेवाला है। २—उसी सूर्य के प्रकाश से चन्द्रमा प्रकाशित होता है। ३—शीत का औषध अग्नि है। ४—और चौथा यह है पृथिवी साकार चीजों के रखने का स्थान तथा सब बीज बोने का बडा खेत है।

अब पृथिवी आदि लोक घूमते हैं वा नहीं इस विषय में लिखा जाता है। इसमें सिद्धान्त यह है कि वेदशास्त्रों के प्रमाण और युक्ति से भी पृथिवी और सूर्य आदि सब लोक घूमते हैं। इस विषय में ये प्रमाण हैं—

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥

(यजु० ३/६)

अर्थ—गौ नाम है पृथिवी, सूर्य, चन्द्रमादि लोकों का। वे सब अपनी-अपनी परिधि में अन्तरिक्ष के मध्य में, सदा घूमते रहते हैं, परन्तु जो जल है, सो पृथिवी की माता के समान है क्योंकि पृथिवी जल के परमाणुओं के साथ अपने परमाणुओं के संयोग से ही उत्पन्न हुई है और मेघ मण्डल के जल के बीज में गर्भ के समान सदा रहती है और उसके पिता के समान है, इससे सूर्य के चारों ओर घूमती है। इसी प्रकार सूर्य का पिता वायु और आकाश माता तथा चन्द्रमा का अग्नि पिता और जल माता। उनके प्रति वे घूमते हैं। इसी प्रकार से सब लोक अपनी-अपनी कक्षा में सदा घूमते हैं।

या गौर्वर्तनिं पर्येति निष्कृतं पयो दुहाना व्रतनीरवारतः।
सा प्रब्रुवाणा वरुणाय दाशुषे देवेभ्यो दाशद्धविषा विवस्वते॥

(अ०८/अ०२/व०१०/म०१)

अर्थ—जिस-जिस का नाम 'गौ' कह आये हैं, सो-सो लोक अपने अपने मार्ग में घूमता और पृथिवी अपनी कक्षा में सूर्य के चारों ओर घूमती है। अर्थात् परमेश्वर ने जिस-जिसके घूमने के लिए जो-जो मार्ग निष्कृत अर्थात् निश्चय किया है, उस-उस मार्ग में सब लोक घूमते हैं। वह गौ अनेक प्रकार के रस, फल, फूल, तृण और अन्नादि पदार्थों से सब प्राणियों को निरन्तर पूर्ण करती है तथा अपने अपने घूमने के मार्ग में सब लोक सदा घूमते-घूमते नियम ही से प्राप्त हो रहे हैं। जो विद्यादि उत्तम गुणों का देनेवाला परमेश्वर है, उसी के जानने के लिए सब जगत् दृष्टान्त है और जो विद्वान् लोग हैं उनको उत्तम पदार्थों के दान से अनेक सुखों को भूमि देती और पृथिवी, सूर्य, वायु और चन्द्रादि गौ ही सब प्राणियों की वाणी का निमित्त भी है।

इस प्रकार के वेदमन्त्रों से पृथिव्यादिलोक भ्रमण और प्रकाश्य प्रकाशक विषय का ज्ञान होता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की हिन्दी सेवा

(डा० धर्मपाल, वरिष्ठ प्राध्यापक, जाकिर हुसैन स्नातकोत्तर कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली)

गतांक से आगे—

संसार यात्रा के इस पथिक के हृदय में भोलापन और निश्छलता है—जो मेरे पास थोड़े से रुपये, अंगूठी आदि आभूषण था, वह सब पोपों ने ठग लिया कि तुम पक्के वैराग्यवान् तब होगे, जब अपने पास की चीज सब पुण्य कर दोगे। उनके कहने से मैंने सब दे दिया।

यह वर्णन बहुत ही स्वाभाविक और सामान्य है। यह कल्पना का वर्णन नहीं है, मन में किये गये चिन्तन का वर्णन है। इसमें ठगे जाने का भाव स्पष्ट है। कभी-कभी व्यक्ति जानता है कि वह ठगा जा रहा है, वह जानता है कि उसका शोषण हो रहा है, फिर भी वह उसी राह पर चलता है।

"कुछ दूर चलकर मेरा गमन एक ऐसे घने वन में हुआ, जहां के शैल खण्ड वन और नाले भी शुष्क और वहां से आगे को मार्ग भी न चलता था, पर चोटी की उच्चता और कठिनता के विचार से मैंने सोचा कि पर्वत की चोटी पर चढ़ना असम्भव है। अगम्य पहाड़ियों, टीलों और जंगल के अतिरिक्त जिसमें मनुष्य का गमन असम्भव था, अब कुछ दिखाई न पड़ा ··· बड़े-बड़े कांटों से उलझकर वस्त्रों की धज्जियां उड़ गयी और शरीर भी क्षत होगया और पांव भी लंगड़े होगए।

यह सारा वर्णन अभिधा में है पर इसका लक्ष्यार्थ भी हो सकता है—पूरा संसार घना वन है। बाधाओं के विशाल शैल खंड हैं। पथ प्रदर्शक नहीं है। मंजिल बहुत दूर है। विषाद निराशा और दीनता साधक को कमजोर बनाती है।

ऐसे अनेक उदाहरण महर्षि की रचना में मिलेंगे। इस वर्णन को देखकर विश्वास हो नहीं होता कि ऋषि की मातृभाषा हिन्दी के अतिरिक्त कुछ और रही होगी। शैली की नैसर्गिकता एवं मनोरमता पाठकों को अभिभूत करती है।

आत्मकथा के लेखन के लिए आवश्यक है कि वह केवल आत्मप्रकाशन ही न करे, अपितु अपने दोषों, दुर्बलताओं के बारे में भी ऋषि ने संकोच नहीं किया—

मैंने उनसे कह दिया कि यहां से हिलने का प्रयत्न करने की अपेक्षा मैं मर जाना उत्तम समझता हूं तथा दुर्भाग्यवश, वहां मुझे एक बड़ा दोष लग गया अर्थात् भाग पीने का स्वभाव होगया। सो कई बार उसके प्रभाव से मैं बेसुध होजाया करता ···।

यह ठीक है कि स्वामी जी की यह आत्मकथा अधूरी है, पर जितना उन्होंने लिखा, उतना अच्छा ही लिखा। इसमें जीवन के घात प्रतिघातों का समावेश, मानवीय दुर्बलताओं और शक्तियों का सशक्त चित्रण शैली में मनोरमता, नैसर्गिकता तथा प्रभावोत्पादकता का सम्यक् सम्मिश्रण है। डा० चन्द्रभानु सीताराम सोमवर्णी ने "हिन्दी गद्य साहित्य" (२६६) पुस्तक में इसे हिन्दी गद्य की सर्वप्रथम आत्मकथा स्वीकार किया है।

यह बात पहले भी कही जा चुकी है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। महर्षि भारतीय पुनर्जागरण काल में हुए थे और उन्होंने धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में हुए आंदोलनों को नेतृत्व भी प्रदान किया था। अतः यह स्वाभाविक ही था कि उनका विशाल जनसमुदाय से परिचय होता। वे अनेक लोगों के सम्पर्क में आए और उनसे पत्र-व्यवहार १८७० के उत्तरार्द्ध से तो नियमित रूप से और बहुत अधिक लोगों के साथ हुआ। सम्पूर्ण पत्र व्यवहार उपलब्ध नहीं है। यह आश्चर्य की बात है कि ऋषि कितना लिखते थे। कई-कई कार्य वे एक साथ किया करते थे। उनका पत्र साहित्य उनकी मृत्यु के उपरान्त प्रकाशित हुआ, जिसमें से मुख्य प्रकाशन निम्न प्रकार है :—

१९१० —ऋषि दयानन्द का पत्र-व्यवहार भाग-१ सं० महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द)

१९१८-१९२७—महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन भाग १ से ४ : पं० भगवद्दत्त

१९३५ —ऋषि दयानन्द का पत्र-व्यवहार भाग-२ : पं० चमूपति

१९६९ —महर्षि पत्र-व्यवहार विशेषांक (सार्वदेशिक) रामगोपाल शालवाले।

पं० युधिष्ठिर मीमांसक की टिप्पणियों के साथ "ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन" रामलाल कपूर ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित किये गये हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र साहित्य का उल्लेख हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों ने सामान्यतः नहीं किया। यह भी सम्भव है कि उन्हें इनकी जानकारी न थी। कहीं-कहीं उनका विवरण मिलता भी है।

तो उसमें अनेक विसंगतियां हैं जिनकी ओर ध्यान दिया जाना चाहिये।

डा० हरवंशलाल शर्मा द्वारा सम्पादित "हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास चतुर्दश भाग" के खण्ड ६ में पत्र साहित्य के इतिहास को स्पष्ट करते हुए कहा गया है।

"जब हम पत्र साहित्य के इतिहास पर दृष्टि पात करते हैं, तो हमें ज्ञात होता है कि किसी पत्र संग्रह को सर्वप्रथम प्रकाशित रूप में लाने का श्रेय स्वर्गीय मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) को है। स्वामी जी ने सम्भवतः १९०४ में (आज से ८५ वर्ष पूर्व (१९८९) स्वामी दयानन्द सरस्वती के पत्रों का संग्रह प्रकाशित कराया था पृ० (५०६)

इसी प्रकार डॉ० नगेन्द्र द्वारा सम्पादित "हिन्दी साहित्य का इतिहास" में द्विवेदी युग के गद्य साहित्य की गौण विधाओं के विवेचन में ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्रों के संग्रह के विषय में लिखा गया है।

"आलोच्य युग में पत्र साहित्य विषयक दो महत्त्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित हुए। महात्मा मुन्शीराम ने सन् १९०४ में स्वामी दयानन्द सरस्वती संबंधी पत्रों का संकलन किया।" ऐसा लगता है कि दोनों महानुभवों के पत्र संग्रह को देखे बिना ही अपना मन्तव्य व्यक्त कर दिया।

डॉ० हरवंशलाल शर्मा के ही इतिहास में अन्यत्र लिखा गया है—

कुछ समय बाद सम्भवतः १९०९ ई० में पं० भगवद्दत्त जी ने अनथक परिश्रम और खोजबीन करके स्वामी दयानन्द सरस्वती के पत्रों का एक विशाल संकलन "ऋषि दयानंद का पत्र व्यवहार" शीर्षक से सद्धर्म प्रचार यन्त्रालय गुरुकुल कांगड़ी से प्रकाशित कराया। यह टिप्पणी भी बिना मूल ग्रंथों को देखे ही कर दी गयी। पं० भगवद्दत्त द्वारा सम्पादित पत्र संग्रह का शीर्षक "ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन" है। पत्र संग्रह का प्रकाशन वर्ष १९१८ ई० है। यह पत्र संकलन विशाल नहीं है। इसमें कुल मिलाकर ८२ पत्र हैं।

यह भी आश्चर्य है कि "ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन" के भाग २, ३, ४ का कहीं उल्लेख ही नहीं मिलता, जबकि ये १९१९, १९२७ और १९२७ में प्रकाशित हुए थे। पं० चमूपति द्वारा सम्पादित "ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार" का भी कहीं इतिहास ग्रंथों में उल्लेख नहीं है।

जिस महान् विभूति ने हिन्दी को "आर्यभाषा" घोषित करके, उसके प्रचार प्रसार के लिए अनवरत प्रयत्न किए, उसे "राजभाषा" पद पर प्रतिष्ठित कराने के लिए "हण्टर कमीशन" के पास स्थान-स्थान से ज्ञापन पत्र भिजवाये, जिस महापुरुष के पत्र संग्रह प्रकाशित होने के बाद हिंदी में "पत्र साहित्य" विधा का सूत्रपात हुआ उसको इतिहासकारों ने सही स्थान नहीं दिया।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्यनेता प्रो० शेरसिंह के अभिनन्दन हेतु
अपील

निवेदन है कि आर्यनेता प्रो० शेरसिंह अभिनन्दन समिति की एक आवश्यक बैठक दिनांक १३ जनवरी ९१ को गुरुकुल झज्जर में सम्पन्न हुई। इस बैठक में सर्वसम्मति से निम्नलिखित निश्चय किये गए हैं—

१. आर्यनेता प्रो० शेरसिंह के छठी बार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सर्वसम्मति से प्रधान चुने जाने पर इनका आर्यजनता की ओर से अभिनन्दन करने का निश्चय किया गया है। माननीय प्रो० शेरसिंह जो अपना सारा समय राष्ट्र तथा आर्यसमाज की सेवाओं में लगा रहे हैं। इन्होंने आर्यसमाज द्वारा चलाये गए सभी आन्दोलनों में बढ़-चढ़कर भाग लिया है। राजनीति में भी रहते हुए धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में अग्रणी रहे हैं। गुरुकुलों तथा आर्य विद्यालयों को अनुदान दिलवाया तथा आर्ष पाठ विधि को केन्द्र सरकार से मान्यता दिलवाई। संस्कृत तथा हिन्दी अध्यापकों को अंग्रेजी के अध्यापकों के समान वेतनमान स्वीकार करवाये। कुरुक्षेत्र में संस्कृत विश्वविद्यालय तथा रोहतक में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय की स्थापना करवाने में प्रमुख भूमिका निभाई। पृथक् हरयाणा राज्य बनवाने में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए सबसे पूर्व आवाज उठाई और सघर्ष किया। आर्यसमाज के ऐतिहासिक हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों को भारत सरकार द्वारा स्वतंत्रता सेनानी घोषित करवाया और उन्हें सम्मानित पेन्शन दिलवाने के लिए अथक परिश्रम किया। पंजाब तथा केन्द्र सरकार में जिस विभाग के मन्त्री बने, वहां बहुत ही ईमानदारी से सराहनीय कार्य किये। इनकी इन शानदार सेवाओं से प्रभावित होकर भारत सरकार ने योजना आयोग का सदस्य नियुक्त किया है। इससे आर्यसमाज का गौरव बढ़ा है। अतः आर्यजगत् ने भी इनका अभिनन्दन करके सम्मानित करने का निश्चय किया है।

२. प्रो० साहब को एक अभिनन्दन ग्रन्थ तथा कार भेंट की जावेगी।

३. इस योजना को सफल करने के लिए धन संग्रह करने का कार्यक्रम बनाया गया है। अतः प्रत्येक आर्यसमाज तथा आर्यसंस्था के अधिकारियों से नम्र निवेदन है कि वे अधिक से अधिक धनराशि अभिनन्दन समिति के कार्यालय में ३१ जनवरी १९९१ तक भेजने की कृपा करें। इस कार्य हेतु ५१०० रु० देनेवाले दानियों के चित्र अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशित किये जावेंगे।

४. अभिनन्दन समारोह दयानन्द मठ रोहतक में किया जावेगा। इसकी तिथि की सूचना आपकी सेवा में शीघ्र भेज दी जावेगी। अतः इस समारोह को सफल बनाने के लिए तन मन तथा धन से सहयोग देने की कृपा करें।

आपके सहयोग के इच्छुक

ओमानन्द सरस्वती	वेदव्रत शास्त्री	महाशय भरतसिंह
अध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	संयोजक

आर्यनेता प्रो० शेरसिंह अभिनन्दन समिति, दयानन्द मठ रोहतक

फरवरी मास में आर्यसमाजों के उत्सव

१. गुरुकुल धीरणवास जि० हिसार	१ से ३ फरवरी
२. आर्यसमाज ओरंगाबाद मित्रोल जि० फरीदाबाद	१ ,, ३ ,,
३. ,, ,, खेड़की डा० बेरावास	९ ,, १० ,,
४. ,, ,, मानपुर जि० फरीदाबाद	९ ,, १० ,,
५. ,, ,, मीसा जि० फरीदाबाद	१२ ,, १३ ,,
६. ,, ,, कंवारी जि० हिसार	१५ ,, १७ ,,
७. ,, ,, गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक	१५ ,, १७ ,,

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के सम्बन्ध में सार्वजनिक सूचना तथा अपील

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की हितैषी समस्त आर्यजनता से निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा इस गुरुकुल को सुचारु रूप से चलाने के लिए आवश्यक सहयोग करें। सबको ज्ञात होना चाहिए कि गुरुकुल की चल अचल सम्पत्ति एवं प्रशासन का पूर्ण स्वामित्व और अधिकार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का है। हरयाणा की दीवानी अदालत द्वारा इसकी सम्पुष्टि की जाचुकी है और तदनुसार समस्त सम्पत्ति का हरयाणा सभा के नाम इन्तकाल भी होचुका है।

यह सूचना प्रकाशित करना इसलिए आवश्यक समझा गया क्योंकि ज्ञात हुआ कि अनेक स्वार्थी तत्त्व स्वामित्व के सम्बन्ध में अफवाहें फैलाकर किरायेदारी एवं पट्टेदारी की राशि वसूल करने की साजिश रच रहे हैं जो कि बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। जो भी सज्जन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अतिरिक्त किसी अन्य से लेन-देन का व्यवहार रखते हैं, उसके लिए हानि-लाभ के वे स्वयं उत्तरदायी होंगे।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ से सम्बन्धित सभी किरायेदार एवं पट्टेदार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय दयानन्द मठ रोहतक (फोन ७४८१२) अथवा सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी से १४ एम साकेत नई दिल्ली (फोन ६६०३३३/६५४६४४) से सम्पर्क करें। यह प्रसन्नता की बात है कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ प्रबन्ध समिति के प्रधान आर्यजगत् के त्यागी तपस्वी संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती हैं और हरयाणा सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी केन्द्रीय योजना आयोग सदस्य एवं पूर्व रक्षाराज्यमंत्री हैं। दोनों नेता अनुभवी तथा समाज सुधारक एवं गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रबल सरंक्षक एवं समर्थक हैं। आप सभी के सहयोग से यह गुरुकुल सफलतापूर्वक चलता रहेगा। अन्त में यह कहना भी आवश्यक है कि जिन अनधिकृत व्यक्तियों अथवा संस्थाओं को किराये और पट्टेदारी के यदि अगाऊ चैक दे रखे हैं उन्हें अपने बैंको द्वारा तुरन्त रुकवा देवें और चैक अथवा नकद राशि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक के नाम भेजकर रसीद प्राप्त कर लेवें। सभा इस राशि का उपयोग गुरुकुल के संचालन के लिए ही करेगी।

सूबेसिंह
पूर्व उपमण्डल अधिकारी (नागरिक)
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ रोहतक

महाप्रयाण ! (शोक-सन्देश)

दिनांक २८/१२/९० तिथि एकादश शुक्ला वार शुक्रवार रात्रि के लगभग दस बजे महान् योगी श्री श्री १०८ ब्रह्मविद् स्वामी क्षेत्रनाथ (खेतानाथ) जी महाराज के प्राण सुषुम्णा नाडी द्वारा पाचभौतिक शरीर को त्याग इस संसार से विदा हो गए। पूज्य स्वामी जी त्यागी तपस्वी अखण्ड ब्रह्मचारी, पुरुषार्थी, परोपकारी, धार्मिक परमार्थी और कर्मठ योगिराज थे। समाज सेवा और समाज सुधार के लिए स्वामी जी ने हरयाणा और राजस्थान में स्थान-स्थान पर अनेक धार्मिक संस्थाएं और शिक्षण संस्थान, छात्रावास; आश्रम इत्यादि खुलवाएं। आर्ष गुरुकुल झज्जर, दाधियां, गणीयार और खानपुर इत्यादि में भी उन्होंने सराहनीय सहयोग और दान दिया। श्री मंगल जयकोर आध्यात्मिक ज्ञान आश्रम खेड़की और इस क्षेत्र के श्रद्धालु सज्जन सर्वशक्तिमान् सच्चिदानन्द सर्वेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी पवित्र आत्मा मोक्ष में स्वच्छन्द विचरण करे।

सम्प्रेषक—ज्ञानचन्द "विद्यावाचस्पति" श्री मंगल जयकोर ज्ञान आश्रम खेड़की डा०—बेरावास जि० महेन्द्रगढ (हरयाणा)

वर्ण जन्म से नहीं, गुण-कर्म से

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष-वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ०प्र०)

वर्ण-व्यवस्था और गीता

प्रिय पाठकगण !

विचारणीय प्रश्न यह है कि यह वर्ण-व्यवस्था है अथवा जन्म व्यवस्था ? जन्म से तो जन्म-व्यवस्था हो सकती है, वर्णव्यवस्था नही। वर्ण शब्द का अर्थ है—वरण किया हुआ, चुना हुआ, यह जन्म से कैसे लागू होगी ? जन्म के समय नवजात शिशु मे वरण करने, चुनने की योग्यता ही कहा होती है ? विद्याध्ययन काल में जिस प्रकार की योग्यता प्राप्त करली जाती है, उसी प्रकार का वर्ण होजाता है। इस नियम मे गीता का मत है—

"चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।" (गीता अ० ४/१३)

अर्थात् मेरे द्वारा चारों वर्णों का निर्माण गुण-कर्म के विभाग के रूप में हुआ है। मनुष्य में जो योग्यतायें होती हैं, जिस प्रकार के गुण होते हैं, वह वैसे ही कर्म करता है। गीता ने गुण के अनुसार कर्म का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण देकर वर्ण व्यवस्था को गुण अर्थात् योग्यतानुसार कर्म करने के लिए विभाजन कर प्रस्तुत कर दिया है। गीता के १८ वे अध्याय में तो इस 'गुणकर्मविभागश.' का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। पाठकों की जानकारी के लिए उसे यहा दिया जारहा है—

ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥ १८/४ ॥

अर्थात् हे परतम अर्जुन ! ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के स्वभाव और गुणों से उत्पन्न हुए 'कर्माणि प्रविभक्तानि' कर्म विभाग किये गये हैं। कैसे किये गए हैं ? यह भी गीता के शब्दों में पाठकगण पढे।

शमो दमस्तप: शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्मस्वभावजम् ॥ १८/४२ ॥

मनोविचारों का शमन, इन्द्रियो का दमन, वेदादि शास्त्रो के अध्ययन में पुरुषार्थ, पवित्रता, निन्दास्तुति, सुख-दु.ख, हानि-लाभ, मानापमान आदि की चिन्ता से रहित, सरल स्वभाव रहना, वेदादि शास्त्रों और पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करके उससे तदनुसार लाभ लेना, परमेश्वर के अस्तित्व पर जसा वह है, उसे वैसा ही समझकर विश्वास करना यह ब्राह्मण के स्वभाव से उत्पन्न हुए कर्म हैं। 'स्वभावजम्' के साथ 'गुण-कर्मविभागश हो लागू होरहा है।

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम् ॥ १८/४२ ॥

शूरवीरता, तेज, धैर्य, चतुरता, युद्ध में चपलता, मैदान छोडकर न भागना, दान करना तथा ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास रखना, यह सब क्षत्रिय के स्वभाव से उत्पन्न हुए कर्म हैं। यहां भी 'स्वभावजम्' शब्द दर्शनीय है, जिसका अर्थ स्वभाव से उत्पन्न हुए हैं, जन्म से कदापि नही।

कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्।
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥ ११/४९ ॥

कृषि, गोरक्षा और व्यापार वैश्य के स्वभाव से उत्पन्न हुए कर्म हैं तथा सेवा करना कर्म शूद्र का भी स्वभाव से ही उत्पन्न है 'स्वभावजम्' शब्द सभी श्लोकों में और सभी वर्णों के लिए प्रयुक्त होकर जन्मानुसार नही अपितु रुचि अनुसार कर्मों का विवेचन कर रहा है। यह सक्षेप मे गीता का मत है। शूद्र के विषय में इतना कह देना अनुचित न होगा कि जिसमें वह गुण न आ सके, जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों के लिए बताये गए हैं अर्थात् जो किसी कार्यविशेष की योग्यता नही प्राप्त कर पाता, यह अन्य वर्णों के यहां सेवा-कार्य व श्रम आदि करके जीविका प्राप्त कर जीवन-यापन करता है। अभिप्राय यह है कि विद्या-शिक्षा आदि के कार्यों से रहित, रक्षा कार्यों में असमर्थ, उत्पादन द्वारा सम्पत्ति की वृद्धि करने में अयोग्य व्यक्ति शूद्र कहलाता है।

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च ॥ १०/६५ ॥

शूद्र ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लेता है और ब्राह्मण शूद्रता को। वैसे ही विद्या आदि की प्राप्ति के द्वारा क्षत्रिय व वैश्य भी ब्राह्मणत्व को और सद्गुणों तथा उच्च वर्णों के कर्त्तव्य-कर्मों को छोड़कर शूद्रत्व को प्राप्त होते हैं।

वर्ण-व्यवस्था और मनुस्मृति

सृष्टि के प्रारम्भ में ही महर्षि मनु द्वारा मानव-धर्म का विधान और उपदेश किया गया। यही उपदेश मानव-धर्म-शास्त्र और बाद को मनुस्मृति कहलाया। ग्रन्थ के रूप में यह आज भी उपलब्ध है। यद्यपि इसमें समय-समय पर स्वार्थी और भ्रष्ट व्यक्तियो द्वारा अनर्गल तथा भ्रष्ट बातें भी भरी गई हैं, जो ध्यानपूर्वक पढने से समझी जा सकती हैं, किन्तु फिर भी मनु का दृष्टिकोण अत्यन्त स्पष्ट है। राष्ट्र की आर्थिक प्रगति व समृद्धि का धक्का लगता है। राष्ट्र धन के अभाव से ग्रसित हो जाता और धनाभाव से प्रत्येक क्षेत्र में पिछड़ जाता है।

इस ग्रथ में मानव-जीवन के प्रत्येक पहलू पर चाहे वह वैयक्तिक हो अथवा पारिवारिक और या चाहे सास्कृतिक, आध्यात्मिक, शैक्षणिक या प्रशासनिक कोई भी पहलू हो पर्याप्त विवेचना की गई है। यह विवेचना ही उनके द्वारा निर्मित विधान है। इस विधान को उन्होंने जहा सामाजिक ढांचे में ढालने की व्यवस्था दी है, उसी स्थल को लक्ष्य करके यह पक्तियां लिखी गई हैं।

सामाजिक ढाचा वर्ण व्यवस्था के नाम से जाना जाता है। वास्तव में तो यह आर्थिक ढांचा है, क्योंकि अर्थ सम्पादन के प्रकारों के आधार पर ही इसका विवेचन किया गया है। जिसका जो जीविकोपार्जन का साधन उसी के अनुसार उसका वर्ण। कहना यह चाहिए कि वर्ण-व्यवस्था एक प्रकार से श्रम-व्यवस्था का ही दूसरा नाम है। वर्णव्यवस्था क्योकि थोपी गई अथवा जन्मसिद्ध नहीं अपितु रुचि व इच्छानुसार वर्णों अर्थात् वरण की हुई, चुनी हुई होती है अत: नाम वर्णव्यवस्था रखा गया है।

मनु ने अपनी ऋषि दृष्टि से इसे भली-भाँति समझ लिया था और उपयोगितानुसार उसकी व्यवस्था बना दी थी। कालान्तर में एक ऐसा समय आया कि यह व्यवस्था गड़बडा गई और वर्तमान काल में तो इसका नाम ही शेष रह गया है। वर्न-व्यवस्था तो कहीं भी दिखाई नही देती। हां, जन्म-व्यवस्था अवश्य दनदना रही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार तो महाभारत से एक सहस्र वर्ष पूर्व ही स्थिति बिगड़ चली थी, किन्तु महाभारत युद्ध के उपरान्त से अब तक इन सहस्र वर्षों में तो सम्पूर्ण ढांचा ही भ्रष्ट हो गया है नितान्त भ्रष्ट।

अर्थ सम्पादन के प्रकार मनुष्य वही अपनाता है, जिनकी रुचि और जिन्हे कर सकने की योग्यतायें उसमें होती हैं। रुचि और योग्यता के विपरीत यदि व्यक्ति को काय मिलता है तो उसमें वास्तविक रूप में सफल नहीं होता। इस प्रकार व्यक्ति की यह असफलता समाज को असफलता बन जाती है। समाज की असफलता से राष्ट्र की आर्थिक प्रगति व समृद्धि को धक्का लगता है। राष्ट्र धन के अभाव से ग्रसित हो जाता और धनाभाव से प्रत्येक क्षेत्र में पिछड़ जाता है।

गुण-कर्मों का स्थान जन्म ने ले लिया है। जन्म-जात्यभिमान पराकाष्ठा पर है। कहना यह चाहिए कि वर्ण-व्यवस्था अब जन्म व्यवस्था बनकर रह गई है। कुछ वर्गों ने इस बिकृत अवस्था का अनुचित लाभ उठाने में कोई कसर उठा नहीं रखी और कुछ वर्गों की प्रगति के द्वार सहस्राब्दियों से इस प्रकार बन्द रहे हैं, जैसे वह मानव

ही नहीं है। परिणाम इसका यह है कि जन्म-जात्यभिमानियों द्वारा सताये हुए वर्गों को अब कुछ बोलने का अवसर मिला है, तो वह उसी प्रकार फुफ्कार उठे हैं, जैसे फन छूटने पर सांप फुफ्कार उठता है। कुछ वर्ष पहले उत्तरप्रदेश विधानसभा में मनुस्मृति के पृष्ठ फाड़े गये। उसके कुछ दिन पश्चात् मनुस्मृति और तुलसीकृत रामचरितमानस को जलाया गया, किन्तु मनुस्मृति को ध्यानपूर्वक पढना अलग बात है और किसी सुनी सुनाई बात पर अथवा अधूरी जानकारी से भडक उठना अलग बात। आगे हम मनु के विचारों को प्रस्तुत करते हैं। अपनी ओर से आवश्यक टिप्पणी ही करेंगे और यह चाहेंगे कि जन्म-जात्यभिमानी 'उच्च वर्गों के लोग और पिछड़े वर्गों के शूद्र कहाये जानेवाले सभी ठण्डे मन और मस्तिष्क से विचारकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें। मनु का विधान इस प्रकार है—

लोकानां तु विवृद्धयर्थंमुखबाहूरुपादतः ।
ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्य शूद्रं च निरवर्तयत् ॥ अध्याय १/३१ ॥

लोकों अर्थात् मनुष्यों की उन्नति के लिए ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र इस प्रकार उत्पन्न किये गए हैं, जसे मानव के शरीर में मुख, बाहु, उरु और पाद बनाये हैं। इसका स्पष्टार्थ यह हुआ कि जैसे शरीर गतिविधियों के भली प्रकार सचालन के लिए मुह, हाथ, जबडा, पांव होने आवश्यक हैं। इसी प्रकार मानव समाज का कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिए भी चार प्रकार के मानव परमात्मा ने उत्पन्न किए हैं। ब्राह्मण अर्थात् विद्या-शिक्षा-अनुसंधान कार्य करने तथा न्यायव्यवस्था देनेवाले, क्षत्रिय अर्थात् प्रबन्ध व्यवस्था तथा रक्षा करनेवाले, वैश्य अर्थात् उत्पादन व्यापार आदि के द्वारा सम्पत्ति अर्जित कर समाज की अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ करनेवाले तथा उपर्युक्त सब प्रकार की योग्यताओं से रहित शूद्र अर्थात् जो सेवा तथा शारीरिक श्रमों के द्वारा समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करें और इस प्रकार अपने लिए जीविका भी प्राप्त करलें। महर्षि मनु इसका वर्णन इस प्रकार करते है—

अध्ययन अध्यापन यजन याजनं तथा।
दान प्रतिग्रहश्चैव ब्राह्मणानामकल्पयत् ॥ अध्याय १/८८

अध्ययन करे और अध्यापन करे। यज्ञ करे और यज्ञ करायें। दान करें और दान ले—यह छः कर्म ब्राह्मण के हैं।

प्रजानां रक्षण दानमिज्याध्ययनमेव च।
विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः ॥ अध्याय ॥ १/८९

प्रजा की रक्षा, दान करना, यज्ञ करना, अध्ययन और विषय वासनाओं मे न फसना यह पांच क्षत्रियों के कर्म हैं।

पशूनां रक्षण दानमिज्याध्ययनमेव च।
वणिक्पथ कुसीद च वैश्यस्य कृषिमेव च ॥ अध्याय १/९०

पशुओं का पोषण, दान करता, अध्ययन, व्यापार, लेने-देने और कृषि यह सात वैश्यों के कर्म हैं।

एकमेव तु शूद्रस्य प्रभुः कर्म समादिशत्।
एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसूयया ॥ अध्याय १/९१

प्रभु ने शूद्र का एक ही कर्म बताया है—इन वर्णों की निन्दारहित सेवा करना अर्थात् जिस व्यक्ति में उपर्युक्त तीनों वर्णों में से किसी की भी योग्यता न हो, वह इन वर्णों की सेवा द्वारा अपनी जीविका सम्पादन करले, परन्तु किसी के लिए निन्दित कर्म करके जीविका सम्पादन न करे। केवल किसी वर्ग विशेष में जन्म लेने के कारण ही कोई सम्मान अथवा घृणा का पात्र नहीं होता, यह अगले श्लोक में पढ़िये—

विप्राणां ज्ञानेन ज्यैष्ठ्य क्षत्रियाणां तु वीर्यतः।
वैश्यानां धान्यधनतः शूद्राणामेव जन्मत ॥

ब्राह्मणों का बड़प्पन ज्ञान से होता है और क्षत्रियों का पराक्रम से। वैश्यों का धन-धान्य की प्रवृत्ति से और शूद्रों का जन्म से। इसका सीधा अर्थ यह हुआ कि आवश्यक गुणों को प्राप्त हुए बिना कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य वर्ण के बड़प्पन को प्राप्त नही होता। केवल जन्म के कारण यदि कोई बड़प्पन मानता है तो उसे शूद्रत्व का ही प्राप्त हो सकता है द्विज वर्णों का नही। ठीक उसी प्रकार—

यथा काष्ठमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृगः।
यश्च विप्रोनधीयानस्त्रयस्ते नाम बिभ्रतः ॥ अध्याय २/१५७

जैसे लकडी का बना हुआ हाथी नाम का ही हाथी है। हाथी से लिया जानेवाला कोई काम उससे नही लिया जा सकता जैसे चमडे का मृग अर्थात् मरे हुए मृग के चर्म को लेकर और उसमें भूसा आदि भरकर बनाया हुआ मृग नाम मात्र का ही मृग होता है, किन्तु उसमें मृग की आकृति, रग और चर्म को छोड़कर मृग की अन्य कोई बात तो क्या ? जीवन तक भी नही होता। ठीक उसी प्रकार बिना पढा ब्राह्मण का पुत्र भी नाम मात्र का ही ब्राह्मण है, किन्तु वास्तव मे तो उसका ब्राह्मणत्व से दूर का भी सम्बन्ध नही। इससे सिद्ध होता है कि ब्राह्मणत्व विद्या और ज्ञान में निहित है जन्म में नही।

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः ॥ अध्याय २/१६८

जो व्यक्ति द्विज अर्थात् ब्राह्मण होकर भी वेद को छोडकर अन्यत्र श्रम करता है अर्थात् वेद विद्या के पढने और पढाने में श्रम न करके अपना समय अन्य कार्यों में लगाता है, वह जीवित रहते ही शीघ्र वंश सहित शूद्रत्व को प्राप्त होता है। जब अपने विद्या और ज्ञान के कार्यों को छोड देगा, तब स्वय तो अविद्या में फंसकर शूद्रत्व को प्राप्त हो ही जायेगा आगे चलनेवाली वशपरम्परा के लोग भी विद्या क्षेत्र से दूर हो जाने के कारण शूद्रत्व को प्राप्त होते रहेंगे। इससे आगे तो महर्षि मनु ने वर्ण परिवर्तन के विषय मे यहा तक कहा है कि—

शुचिरुत्कृष्टशुश्रूषुर्मृदुवागनहङ्कृत.।
ब्राह्मणाद्याश्रयो नित्यमुत्कृष्टा जातिमश्नुते ॥
अध्याय १/३५५

स्वच्छ रहनेवाला, उत्तम परिश्रम, मधुरभाषी, अहकाररहित तथा नित्य ब्राह्मणादि के आश्रय में रहनेवाला (शूद्र) उच्च जाति को प्राप्त हो जाता है।

इस श्लोक से यह स्पष्ट हो जाता है कि ब्राह्मणादि सवर्ण जन के सम्पर्क रहने से उन वर्णों के गुण-कर्मों को धारण कर लेने पर शूद्र भी ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य वर्णों में से किसी एक वर्ण का अपने प्राप्त गुण-कर्मों के अनुसार बन जाता है। आगे मनुजी कहते हैं—

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च ॥ १०/६५ ॥

शूद्र ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लेता है और ब्राह्मण शूद्रता को। वैसे ही विद्या आदि प्राप्ति के द्वारा क्षत्रिय व वैश्य भी ब्राह्मणत्व को और सद्गुणो तथा उच्च वर्णों के कर्त्तव्य-कर्मो को छोड़कर शूद्रत्व को प्राप्त होते हैं।

मनुस्मृति के इतने उदाहरणों को देने के पश्चात् अब किसी अन्य टिप्पणी की आवश्यकता नही। यह उद्धरण इस बात की प्रबल साक्षी है कि मनु पर किसी को भी किसी वश विशेष में जन्म धारण कर लेने से सम्मान का पात्र बताने का लाछन मिथ्या है। वर्तमान समय की जन्म-जातिप्रथा मनु की मान्यता के विरुद्ध है। तथा वास्तव मे यह वर्ण-व्यवस्था नही है। वर्ण व्यवस्था तो वरण किये जाने की ही व्यवस्था है। जन्म से गले पड़नेवाली तो जन्म-व्यवस्था ही कही जा सकती है, वर्ण-व्यवस्था नही। (क्रमशः)

सम्पादक के नाम पत्र

संग्रहणीय पुस्तक

हैदराबाद सत्याग्रह पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'हैदराबाद सत्याग्रह मे हरयाणा का योगदान' पढने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। निःसन्देह यह पुस्तक काफी भव्य एव आकर्षक है। इसमें हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के सम्बन्ध मे ढेर सारी सामग्री पढने को मिली। हैदराबाद सत्याग्रह आर्यसमाज का एक ऐतिहासिक सत्याग्रह था, और इसमें हरयाणा राज्य का योगदान काफी महत्त्व रखता है। पुस्तक में हरयाणा के सत्याग्रहियो का सचित्र जीवन परिचय पढकर एक बार फिर इस सत्याग्रह की तरोताजा घटना याद हो गई। अतः यह पुस्तक सभी दृष्टियों से उत्तम तथा सग्रहणीय है। इस पुस्तक के कुशल सम्पादन के लिए डा० रणजीतसिंह जी विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं।

रामकुमार आर्य, मन्त्री आर्य युवक परिषद्
गोहाना (रोहतक)

गऊ माता की करुण पुकार

सत्य सनातन वेद ग्रन्थ ने जो महिमा गौ की गाई
अल्प सामर्थ्य-युक्त मनुष्य से वह कैसे जावे बतलाई।
ऋषियों की पावन भारत भू पर देवगण वास किया करते
घी दूध गाय का सेवन करके, योगाभ्यास किया करते।

सबसे श्रेष्ठ प्राणी जग में गौ माता को बतलाते थे
पहले पूजते गौ माता को पीछे भोजन खाते थे।
दर्दनाक अवस्था में अब वही गौ माता करे पुकार
अबला गऊ का रोदन सुनकर ऐ गौ भक्तो करो विचार।

हा, भगवन् भद्र जन क्यों आज बधिर हो गये
पुकार भी सुनते नहीं जाने कहां पड सो गये।
दो तिनके घास के खा करके मैं मीठा दूध पिलाती हूं
गौ माता कहलाने वाली मैं दर-दर धक्के खाती हू।

किससे कहूं निज व्यथा-कथा न कोई सुनने वाला है
न गौ भक्त दिलीप रहा न कृष्णचन्द्र गोपाला है।
रो-रो कर हाल-बेहाल हुई, हा कौन पुकार सुने मेरी
है कोई माई का लाल कहे जो "मैं रक्षा करूंगा मां तेरी"।

सुन आर्तनाद गौ माता का बडौली गांव आगे आया
गोशाला हेतु भूमि दी गौ रक्षा का बीड़ा ठाया।
सत्साहस देख बडौली का चालीस गांव सग आन मिले
गोशाला की बात चली भई और खुशी के फूल खिले।

१९९० की सज्जनो जब शुभ दीपावली थी आई
राष्ट्रीय गौशाला की स्थापना बडौली में करवाई।
सभी गऊ भक्त सज्जनों से यह नम्र अपील हमारी है
१०१/- रुपये देकर मैम्बर बनने की बारी है।

११००/- रुपये के दानी का दीवार पर नाम लिखा जावे
५१००/ रुपये देकर पत्थर पर निज नाम खुदवाये।
२५०००/- रुपये देकर वह कमरा निर्माता कहलावे
५१०००/- के दानी को विशाल भवन निर्माता लिखा जावे।

जो देवे रुपये एक लाख वह महादानी कहा जावे
इससे अधिक देने वाला गौ उद्धारक पदवी पावे।
यह कथा निरीह गौ माता ने 'बलदेव' के हाथों लिखवाई
सत्य प्रकाश आर्य ने निज सात्विक दान से छपवाई।
आओ हम सब अनुकरण करे, गौ रक्षा का प्रण करे
गौशाला हित धन अर्पण करें, सब पुण्य पथ का वरण करे।

श्रीमती लाजवन्ती मुखीजा के निधन पर श्रद्धाञ्जलि

आर्यसमाज शान्ति नगर सोनीपत के उपमन्त्री श्री जीतकुमार डडेजा की बड़ी बहिन श्रीमती लाजवन्ती मुखीजा धर्मपत्नी श्री चन्द्र भान जी मुखीजा का दिनांक ६.१२.१९९० को हृदयगति रुक जाने के कारण निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। वह एक नेक, उदार, दयालु, सुशील दानवीर, प्रभु भक्त एवम् आदर्श देवी थी। उनके निधन से आर्यसमाज का एक प्रकाश स्तम्भ गिर गया है। परम पिता परमात्मा से दिवङ्गत आत्मा की शान्ति एवम् सद्गति तथा परिवार के लिए इस आघात को सहन करने के लिए असीम शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

हरिचन्द्र स्नेही
महामन्त्री,
आर्यसमाज शान्ति नगर, सोनीपत
(हरयाणा) १३१००१

आर्यावर्त की तीन महान् विभूतियां

लेखक—मा० रामचन्द्र आर्य नलवा, बी० ए० (आनर्ज) एल०एम०एस०एच० (होम्यो०)

देश धर्म के रखवाले थे वेदों के अनुयायी।
मिटती थी हिन्दू जाति तीनों ने प्रान बचाई॥ टेक॥
जा मथुरा की सर्वखाप में या बात बताई थी।
गुलामी दोजख आजादी को राह दिखाई थी।
व्याकरण का सूरज बनके वेद जोत जलाई थी।
प्रज्ञाचक्षु था पर मन बुद्धि में चतुराई थी।
विरजानन्द ब्रह्मर्षि ने वेदपताका लहराई॥१॥

स्वराज का मन्त्र का फूंका दी वीरों को ललकारी।
सत्यार्थप्रकाश लिख ऋषि ने पोल खोली सारी॥
पाखण्डी मस्टण्डों की अड़े होगी थी जान ख्वारी।
दयावान ना उस जिसा चाहे जगति ढूंढो सारी॥
दयानन्द महर्षि जिसने आर्य फौज बनाई॥२॥

कोठी किले ऐश भोग छोड़ ऋषि वचन प्यार किया।
जा हरिद्वार संस्कृत का गुरुकुल एक तैयार किया।
उसी जगह पर आजादी की तोपों को तैयार किया।
महर्षि का अधूरा सपना एकदम तै साकार किया।
महात्मा श्रद्धानन्द थे वे ऋषि के अनुयायी॥३॥

इनका कर्ज कदे भारत उतार नहीं सकता।
पर देशद्रोही कदे देश कर प्यार नहीं सकता।
रामचन्द्र कह नाम नै कोई मार नही सकता।
आर्य वीर अपने घर मैं कोए कर तैयार नहीं सकता।
चरण कमल पै चल इनके हो ज्या कला सवाई॥४॥

प्रेषक का पता—
आर्य-निवास नलवा (हिसार) १२५०३७

अमर शहीद पं० रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस सम्पन्न

आर्य युवक सभा लुधियाना की ओर से प्रेम मॉडल हाई स्कूल गली न० १०, जनकपुरी लुधियाना में अमर शहीद पं० राम प्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस मनाया गया।

श्रद्धांजलि समारोह श्री रोशनलाल आर्य, प्रधान आर्य युवक सभा पंजाब की अध्यक्षता में आरम्भ हुआ। समारोह को श्री सुखदर्शन मदहोश, चेयरमैन पंजाब पब्लिक कल्याण समिति लुधियाना, श्री वेदप्रकाश तिवारी, प० राजेश्वर शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना ने पं० रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन पर प्रकाश डालते हुए अपनी श्रद्धांजलि भेंट की। प्रेम मॉडल हाई स्कूल के बच्चों ने देशभक्ति के गीत प्रस्तुत किये।

(सुरेशकुमार चड्ढा) जिला संयोजक
लुधियाना

आर्यसमाज बाबरा मौ० रोहतक का वार्षिक चुनाव

१. प्रधान—श्री दीपचन्द आर्य
२. उपप्रधान—श्री बलवीर आचार्य
३. मन्त्री—श्री रूपचन्द चावला
४. उपमन्त्री—श्री आनन्दसिंह
५. कोषाध्यक्ष—श्री महेन्द्रपालसिंह
६. पुस्तकाध्यक्ष—श्री प्रेमचन्द शास्त्री

बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

१- दी वेदाज (अंग्रेजी भाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी १-००
२- दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज—पं० चमूपति एम०ए० १-५०
३- जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)— ,, ३-००
४- निहारिकावाद और उपनिषद् ,, ०-५०
५- आर्यसमाज की विचारधारा—पं० क्षितीशकुमार वेदालकार १-००
६- निजाम की जेल में ,, २०-००
७- स्मारिका (हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह) १-००
८- आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह स्मारिका २०-००
९- आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण-पं० ओम्प्रकाश त्यागी०-५०
१०- बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य शहीदों का परिचय) ४-५०
११- ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह १-००
१२- हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह ५-००
१३- धर्म-प्रवेशिका—डा० रणजीतसिंह ३-००
१४- धर्म-भूषण ,, ५-००
१५- पंजाब का आर्यसमाज—प्रि० रामचन्द्र जावेद २-००
१६- आदर्श धातु रूपावली—महावीर आजाद शास्त्री २-००
१७- वैदिक उपासना पद्धति— डा० सुदर्शनदेव आचार्य ३-००
१८- मूर्तिपूजा—सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती ००-५०
१९- वेदस्वरूप निर्णय ,, ००-७५
२०- वेदाविर्भाव ,, १-००
२१- वेदभाष्य पद्धति ,, १-००
२२- वैदिक विवाह पद्धति ,, ६-००
२३- गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती ०-२०
२४- सत्यार्थप्रकाश ,, १०-००
२५- महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,, ०-५०
२६- हमारा फाजिल्का—योगेन्द्रपाल १-००
२७- बड़ स्वामी ओमानन्द सरस्वती १-५०
२८- वीर हेमू ,, ०-७५
२९- पीपल ,, १-५०
३०- मिर्च स्वामी ओमानन्द सरस्वती १-५०
३१- श्लीपद वा हाथीपांव की चिकित्सा ,, ०-२०
३२- बिच्छू विष चिकित्सा ,, ०-५०
३३- लवण ,, १-२५
३४- विदेशों में मैंने क्या देखा ,, २-५०
३५- नैरोबी यात्रा ,, १-५०
३६- ब्रह्मचर्य साधन ६-११ ,, १०-००
३७- ,, १-२ ,, १-००
३८- ,, ३ ,, १-००
३९- ,, ४ ,, २-५०
४०- ,, ५ ,, २-००
४१- ,, ६ ,, ३-००
४२- ,, ७-८ ,, २-००
४३- ,, ९ ,, ०-३०
४४- ,, १० ,, १-५०
४५- ,, ११ ,, २-००
४६- हल्दी ,, १-५०
४७- नीम ,, १-२५
४८- कर्तव्य दर्पण—म० नारायण स्वामी ४-००
४९- विद्यार्थी जीवन रहस्य ,, २-५०
५०- योग रहस्य ,, ४-००
५१- आर्यसमाज क्या है ? ,, २-००
५२- कथा माला ,, १-२०
५३- संस्कारविधि ८-००
५४- वैदिकधर्म परिचय—पं० जगदेवसिंह सिद्धांती ३-५०
५५- वैदिक यज्ञ पद्धति—सार्वदेशिक सभा प्रकाशन ००-६०
५६- मृत्यु के पश्चात् जीव की गति—श्री जगदेवसिंह सिद्धांती १-५०
५७- नैतिक शिक्षा दसवां भाग—सत्यभूषण वेदालंकार एम.ए. ५-००
५८- पं० जगदेवसिंह सिद्धांती जीवन चरित—डा. सुदर्शनदेव १०-००
५९-हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान-डा.रणजीतसिंह ३०-००

प्राप्ति-स्थान : आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, सिद्धान्ती भवन, रोहतक

बाल गायन

हम बच्चे हैं आर्य आदर्श विद्यालय गनौर के,
हम बनेंगे चेले स्वामी दयानन्द के।
लेंगे शिक्षा वेदों की, करेंगे प्रचार वेदों का,
हम वतन की धरती पर, बोयेंगे बीज अनुशासन का,
शिक्षिकाओं की प्रेरणाभरी शिक्षा से,
हम करेंगे एक-एक सपने सच्चे शहीदों के,
हमें मिली है एक ऐसी अध्यापिका,
जो हमें देती है प्रेरणा बन जाओ चेले स्वामी के।

(प्रेम आहूजा)

(पृष्ठ २ का शेष)

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस विधा के पल्लवन में "नींव की ईंट" का काम किया है। महर्षि कितना अधिक व्यग्र थे हिन्दी को राजभाषा की मान्यता दिलाने के लिए, वह उनके पत्रों में स्पष्ट परिलक्षित है। ये पत्र ऋषि के जीवन दर्शन के परिचायक हैं और आर्यजनों के लिए प्रेरणा के अजस्त्र स्रोत है।

(ए/एच-१६, शालीमार बाग, दिल्ली-५२)

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१ मसर्ज परमानन्द साईदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक।
२. मैसर्ज फूलचन्द सीताराम गांधीचौक, हिसार।
३ मैसर्ज सन-अप-ट्रेडर्ज सारंग रोड, सोनीपत।
४. मैसर्ज हरीश एजेंसीज 499/17गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५ मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार, करनाल।
६. मैसर्जघनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७. मैसर्ज कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा।
८. मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप न० 115, मार्किट न० 1, एन० आई० टी० फरीदाबाद।
९. मैसर्ज सिंगला एजेंसीज सदर बाजार, गुड़गांव।

निराकार प्रेम

किस मंदिर में फूल चढाऊ।
मेरे फूल न मुरझायें।
किस दीप में ज्योत जलाऊ।
ज्योत न बुझ जाय।
लाख मंदिरों में फूल चढाया।
मेरे फूल मर जाते।
दीप खूब जलाये।
मेरा हाथ जलाकर बुझ जाते।
मेरे निराकार प्रेम, तुझे देवी मानकर।
तेरे क़दमों को चूमता हूँ।
प्रेम भावनाओं के फूल,
तुझे अर्पण करता हूँ।
हवाओ साथ देना मेरा हाथ न जले।
अपने अंधकार हृदय में।
प्रेम यज्ञ की ज्योत जलाकर।
नफरत को दूर कर,
हर दिल रोशन करता हूं॥

अनिल कुमार मंगला 'पिंकी'
१३ गोयल ऐपार्ट. फैक्ट्री लेन
बोरिवली (पश्चिम) बंबई ४०००९२

मोटापा कम करने के उपाय

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

(१) प्रतिदिन प्रातःकाल को जल में शहद मिलाय।
करते रहो प्रयोग यह मोटापा घट जाय॥

(२) मात्रा १ गिलास जल ५० ग्राम मधु
भोजपत्र दस ग्राम को, जल में लेओ उबाल।
मोटापा कम होगा, पीओ प्रातः काल॥

(३) चाय की तरह उबाल कर पीयें।
मॉड चावलों की पिओ, नमक मिला प्रभात।
कुछ दिन करने यह होगा हल्का गात॥

(४) १ गिलास मॉड नमक मिलाकर
हर्ड बहेड़ा, आमला, लीजे साथ गिलोय।
मधु मिलाकर चाटिये, मोटापा कम होय

(५) ३ ग्राम चूर्ण मधु मिलाकर लें।
नींबू रस प्रतिदिवस प्रातःकाल पिलाय।
दो महीने तक पीजिये, तन हल्का हो जाय।
१ नीबू १ गिलास पानी में प्रातःकाल
खाली पेट दो महीने तक पीना चाहिये।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न० २३२०/७३ रजि न० P/R मुद्रित [illegible]

प्रधान सम्पादक - सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक १० २८ जनवरी, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

आर्यसमाज की प्रगति के लिए कुछ सुझाव

स्वामी सुबोधानन्द, दयानन्द मठ धगड़ा (कांगड़ा)

सच्चे व सुच्चे कार्यकर्त्ताओं का होना—१८७५ के बाद कुछ समय वकीलों, वानप्रस्थियों, संन्यासियों, अवैतनिक प्रचारको की भरमार रही और हर व्यक्ति एक चलता फिरता प्रचारक व शास्त्रार्थ महारथी था। १८८३ से १८९० तक यह हालात रहे।

शिक्षा संस्थाओं का जाल—१८८३ से डी० ए० वी० संस्थाओं का शिक्षा जाल खूब फैला और सरकार की शिक्षा नीति से भी आगे गया। वह शिक्षा अंग्रेजी संस्कृति के प्रचार के विरुद्ध थी। अतः खूब काम हुआ परन्तु अब अंग्रेज चला गया और पाश्चात्य सभ्यता व अंग्रेजी भाषा के दीवाने बन गए और वैदिक संस्कृति को भूल गये। जिस राष्ट्र की अपनी कोई भाषा न हो वह राष्ट्र भी क्या राष्ट्र हो सकता है। [illegible] में स्वामी श्रद्धानंद ने गुरुकुल प्रणाली शिक्षा आरम्भ की उससे [illegible] राष्ट्रभक्त पैदा हुए। हमने उस शिक्षा पद्धति को नकारा। आज [illegible] करोड जनसख्या में से दो करोड़ ही अंग्रेजी १०७ साल में सीख सके और २% ही भारत राष्ट्र पर शासन कर रहे हैं यह नही चाहते कि अंग्रेजी हटे। जनता ग्रामों मे बसती है उनको मातृभाषा काम आती है। अतः हमें अपनी मातृभाषा को ही प्रोत्साहन देना चाहिए और केन्द्र में सबको जोडनेवाली राष्ट्रभाषा हिन्दी हो, तभी राष्ट्र सशक्त हो सकता है।

विश्व में ५००० आर्यसमाज हैं। दो करोड़ आर्यसमाजी हैं। २५ से ऊपर प्रतिनिधि सभाएं होंगी। इनमें कुछ लगनशील आर्य, कुछ अच्छे आर्यसमाज और प्रतिनिधि सभाएं होंगी। यह गार्डियन (Guardian) बनकर व्यक्तिगत पुरुषों, समाजों व प्रतिनिधि सभाओं को सशक्त करें।

प्रचार के तीन साधन हैं प्रेस, प्लेटफार्म व साहित्य वितरण। हमारे यह तीनों साधन कमजोर हैं। स्वामी दर्शनानंद ने १९०१ में १३ पैसे प्रति पम्फलेट १०० प्रकार के छापकर लाखों बांटे। आर्यसमाज ने ६ आने में सस्कार विधि, १० आने सत्यार्थप्रकाश बाटा। आज ६ रु० सस्कार विधि व १० रु० सत्यार्थप्रकाश है। साहित्य तो १०० से १००० रु० प्रति है। कौन पढेगा, खरीदेगा, बांटेगा।

आर्यसमाज जन्म, जाति, भेद को ११५ साल में न मिटा सका, न आश्रम मर्यादा ला सका। कार्यकर्त्ताओं की कथनी व करनी में अन्तर है। समानता हो तब प्रभाव पड़ेगा।

यह शिक्षा बन्द हो—राजा व रंक को समान शिक्षा मिले।

नरवाना में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस धूमधाम से मनाया

आर्यवीर दल नरवाना ने आर्यसमाज के खुले प्रांगण में श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया। जिसका आरम्भ श्री बलवीरसिंह जी एस० डी० एम०, नरवाना ने ओ३म् का झण्डा लहराकर किया। उन्होंने शहीद स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर बोलते हुए उनके बताये हुए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

आर्यसमाज क्या है? स्वामी दयानन्द कौन थे? इन विषयो पर आर्यवीरों, आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, आर्य कन्या पाठशाला, महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल व डी० ए० वी० स्कूल के छात्रों व छात्राओं ने भजनों व भाषणों के द्वारा प्रकाश डाला। बच्चों को प्रोत्साहन के लिए एस० डी० एम० नरवाना ने आर्यग्रन्थ, कापी, पैन आदि इनाम के रूप में बांटे।

शाखा नायक श्री विजयकुमार जी ने अनुशासित रहकर कार्य करने के लिए कहा। अन्त में श्री राधाकृष्ण जी आर्य प्रधान आर्यवीर दल नरवाना ने सभी आए हुए श्रोताओं को कहा इस समय देश के बिगड़े हुए हालात मे आर्यसमाज ही सही दिशा दे सकता है। अतः आर्यवीरों का हमें तन, मन, धन देकर उनका हौंसला बढ़ाना चाहिए। अन्त में आर्यवीर दल की ओर से रात्रि भोज का प्रबन्ध किया गया। जिसमें आर्यवीरों ने अपने निजी परिश्रम से दान के रूप में पैसे इकट्ठे करके तीन हजार के लगभग खर्च किये तथा सभी ने यज्ञ को साक्षी मानकर आर्यसमाज के सिद्धांतों की रक्षा की प्रतिज्ञा की।

अश्वनीकुमार आर्य, मन्त्री

आर्यनेता प्रो० शेरसिंह अभिनन्दन हेतु दान सूची

प्रिंसिपल गुगनसिंह जी ग्राम मोखरा, जि० रोहतक	२००० रु०
श्री जगवीरसिंह जी सुपुत्र प्रि० गुगनसिंह ग्राम मोखरा, जि० रोहतक	२००० रु०
श्री परवीरसिंह जी ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,	२००० रु०
श्री धर्मवीरसिंह जी ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,	२००० रु०
श्री सत्वीरसिंह जी दामाद ,, ,, ,, ,, ,, ,,	२००० रु०
पं० भीमसेन जी विद्यालंकार भीमसेन कालोनी बल्लभगढ, जि० फरीदाबाद	११०१ रु०
श्री धर्मवीरसिंह मलिक ग्राम बोधल, जि० सोनीपत	५०१ रु०

जिन दानदाताओं ने इस निधि में धनराशि भेजने का वचन अंकित करवा रखा है, उनसे निवेदन है कि यथा शीघ्र अपना योगदान भेजने की कृपा करें जिससे अभिनन्दन समारोह की तैयारी आरम्भ की जावे।

—म० भरतसिंह

सयोजक आर्यनेता प्रो० शेरसिंह, अभिनन्दन समिति

हजारों अंग्रेजों ने मांसाहार का त्याग किया

आज विश्व में शाकाहार का आदोलन जोर पकड रहा है। लंदन में २२ जुलाई को आयोजित एक विशाल रैली में हजारों अंग्रेजों ने मांस न खाने की प्रतिज्ञा ली है। इस कार्यक्रम को आयोजना के पीछे एक जैन सस्था (दि यंग इंडियन वेजिटेरियन्स) ने स्तुत्य कार्य किया है।

आज विश्व मे शाकाहार के व्यापक प्रचार-प्रसार की अत्यन्त आवश्यकता है।

(गंगाधर चांपसी 'मुबई समाचार' से)

साम-सुधा शतक

(१)

मेरी अग्नि प्रज्वलित हो !

ओं अग्ने आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥१॥ (आग्नेय-पर्व साम.)

विश्व यज्ञ की अग्नि प्रभुवर,
चला रहे निश दिन यह याग।
करके भोग हव्य-गव्यों का,
देते सबको उनका भाग।
मेरी जीवन-ज्योति जला दो,
भभक उठे अन्दर को आग।
यह भी यज्ञरूप बन जाये,
गावें देवों का वस राग।

(२)

जीवन यज्ञमय हो !

ओं त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः।
देवेभिर्मानुषे जने ॥२॥

जीवन-याग की आग अरि ओ,
तू क्यों पड़ी हुई है सुप्त।
जगती भर के दिव्य गुणों ने,
तेरा वरण किया है गुप्त।
अरि धधक उठ तू अन्तर में,
ओ ! मेरे जीवन की आग।
सत्कर्मों में ही सन्नद्ध हो,
जीवन स्वयं बने यह याग।

(३)

मेरे जीवन यज्ञ के होता बनो !

ओं अग्नि दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥३॥

अग्नि रूप हे प्रभुवर मेरे,
तुम हो जग के जाननहार।
विश्व-याग के होता हो तुम,
चला रहे इसके व्यापार।
मम जीवन भी एक यज्ञ है,
तुम्हीं बनो इसके करतार।
वरण तुम्हारा ही हम करते,
दीन जनो की सुनो पुकार।

(४)

ज्योति से ज्योति जले !

ओं अग्निर्वृत्राणि जंघनद् द्रविणस्युर्विपन्यया।
समिद्ध शुक्र आहुतः॥

अरी धधक उठ जीवन-ज्वाला,
जगती में कर ज्ञान-उजाला।
हो तेजस् मव पाप मिटा दे,
जैसे दिनकर घन-तम-माला।
विश्व यज्ञ की ज्योति में ही,
तू करदे निज को आहूत।
सारे बाधा-विघ्न भेदकर,
पाने बल-वैभव अकूत।

—प्रो० धर्मचन्द विद्यालंकार,
पलवल

शाकाहार की महत्ता

इस्लाम ने मांस खाने को ही नही, हिंसा करने को भी अच्छा नहीं माना है। इसके सबूत में हज करने के बारे में विधान है, वह खासतौर से ध्यान देने योग्य है। जब कोई व्यक्ति हज करने जाता है तो वह अहराम (सिर पर बांधने का सफेद कपड़ा) बांधकर जाता है और जब तक हज नही हो जाती, वह उसे बांधे रहता है। अहराम की स्थिति में हज करनेवालों को पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ता है। इस स्थिति में वह न तो किसी पशु पक्षी को मार सकता है, न किसी जीवधारी पर ढेला चला सकता है और न ही घास नोच सकता है। यहां तक कि वह किसी हरे भरे वृक्ष की टहनी/पत्ती तक भी नहीं तोड सकता है। इस प्रकार हज करते समय अहिंसा के पूर्ण पालन का स्पष्ट विधान है।

इतना ही नही, इस्लाम के पवित्र तीर्थ मक्का स्थित कस्बे के चारों ओर कई मीलो के घेरे में किसी भी पशु-पक्षी की हत्या करने का निषेध है और हज-काल में हज करनेवालों को मद्य-मांस का भी सर्वथा त्याग जरूरी है। इस्लाम में आध्यात्मिक साधना में मांसाहार पूरी तरह वर्जित है, जिसे तर्के हैवानात (जानवर से प्राप्त वस्तु का त्याग) कहते हैं।

'यदि तुमने मांस खाया है, तो मेहरबानी कर अन्दर मत आओ' यह चेतावनी किसी हिंदू अथवा बौद्ध मन्दिर में नही बल्कि एक मुस्लिम दरवेश की समाधि के दर्शन करनेवालों को दी जाती है। यह समाधि कर्नाटक राज्य में गुलबर्गा में आलन्द जान के मार्ग में ८ किलोमीटर की दूरी पर चौदहवी शताब्दी के मशहूर दरवेश हजरत ख्वाजा बन्दानवाज गेसूदराज के समकालीन दरवेश हजरत शा रुक्नुद्दीन की है, जहां सिर्फ शाकाहारी ही दर्शन करने जा सकते हैं।

(साभार 'शाकाहार क्रांति')

पंचम अंतर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष सिलिगुड़ी में

अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद की ओर से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी ग्रीष्मावकाश में पचम अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन आर्यसमाज, सिलिगुड़ी के तत्वावधान में सिलिगुड़ी में किया जा रहा है।

यह शिविर इस वर्ष १५ मई से १५ जून ९१ तक आर्यसमाज भवन, सिलिगुड़ी में लगाया जा रहा है। इस शिविर में १६ वर्ष से अधिक आयु वाले स्त्री-पुरुष जिनकी योग्यता कम से कम मैट्रिक के समकक्ष हो समानरूप से भाग ले सकते हैं। महिलाओं के निवास की पृथक् व्यवस्था की जाती है।

विगत वर्षों में इस प्रकार का प्रशिक्षण मौरीशस (विदेश में) हैदराबाद एव तपोवन आश्रम देहरादून में सफलतापूर्वक किया जा चुका है जिसमे सैंकड़ों पुरोहितों को सफल प्रशिक्षण दिया जा चुका है। एक मास के इस शिविर में भाग लेने के इच्छुक जन तीन रुपये के पोस्ट के टिकट भेजकर पूर्ण विवरण एवं आवेदन पत्र निम्नलिखित पते पर प्राप्त कर सकते हैं।

शिविर की समाप्ति के बाद दार्जिलिंग एवं नेपाल यात्रा की भी विशेष व्यवस्था रहेगी। पता इस प्रकार है :—

आचार्य, अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान,
हैदराबाद-५०००२७ (पिनकोड लिखना न भूलें)

विशेष रूप से सभी आर्यसमाजों और आर्यसंस्थाओं से निवेदन है कि वे प्रतिभाशाली एव सेवानिवृत्त सज्जनों को समुचित प्रशिक्षण दिलाकर मानव निर्माण को पवित्र योजना में महत्त्वपूर्ण योगदान करें। अपने क्षेत्र के अध्यापकों एव प्रोफेसरों को विशेष रूप से प्रेरणा प्रदान कर भिजवाने का यत्न करें। प्रशिक्षण देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त कर्मकाण्ड के महारथी आचार्य वेदभूषण स्वयं देंगे।

—०—

योगाभ्यास का महत्त्व

ले०—ब्र० ज्ञानेश्वरार्य

इस संसार में मनुष्यादि असंख्य प्राणी अपने-अपने कर्मफलानुसार जन्म लेते हैं और अनेक प्रकार के सुख-दुःख भोगते हैं। यद्यपि यह बात अच्छी प्रकार से सिद्ध है कि पशु-पक्षी आदि जन्मों में दुःख अधिक और सुख कम प्राप्त होता है, (क्योंकि कोई भी मनुष्य पशु-पक्षी नहीं बनना चाहता,) तथा मनुष्य जन्मों में सुख अधिक और दुःख कम मिलता है; परन्तु सर्वश्रेष्ठ मनुष्य जन्म पाकर भी व्यक्ति सांसारिक दुःखों से पूर्णतया छुट नहीं पाता। प्रत्येक मनुष्य के जीवन में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, छल, कपट, विश्वासघात, राग, द्वेष, मृत्यु-भय और अविद्या आदि से सम्बन्धित अनेक घटनाएं घटती हैं। इन घटनाओं के उपस्थित होने पर व्यक्ति अशान्त, खिन्न, दुःखी और अपने मार्ग से विचलित होने लगता है। ऐसी संकट की घड़ियों में उपर्युक्त समस्याओं को सुलझाने के लिये उसके पास एकमात्र उपाय रह जाता है, कि वह सम्पूर्ण जगत् को उत्पन्न और धारण करके रक्षा करनेवाले सच्चे हितैषी, आनन्दस्वरूप, परमपिता परमात्मा की शरण लेवे। इसके अतिरिक्त उसे कोई मार्ग नहीं सूझता। संसार में ऐसा कौन मन्दभागी मनुष्य होगा, जो इन समस्याओं से मुक्त होना नहीं चाहेगा। बस, इन समस्याओं से छूटने का जो एकमात्र उपाय है, वह है—'ईश्वर की शरण में जाना' 'योगाभ्यास करना'। इसके बिना कोई भी मनुष्य दुःखों से पूर्णतया नहीं छूट सकता, चाहे वह किसी भी देश, जाति, सम्प्रदाय या वर्ण से सम्बन्ध रखता हो।

इसके अतिरिक्त जन्म-जन्मान्तरों के और इस वर्तमान जन्म के भी मलिन संस्कार आत्मा और अन्तःकरण पर बने रहते हैं। इन संस्कारों से व्यक्ति प्रेरित होकर अनेक प्रकार के अनिष्ट कर्म करता रहता है और फिर उन कर्मों का फल भोगने के लिये भिन्न-भिन्न योनियों में भटकता एवं दुःख भोगता रहता है। जैसे साबुन आदि उपायों से वस्त्रों को धोकर शुद्ध-पवित्र बना दिया जाता है, ऐसे ही 'योगाभ्यास' रूपी साबुन से आत्मा और अन्तःकरण को धोकर शुद्ध-पवित्र बना दिया जाता है। आत्मा और अन्तःकरण के शुद्ध हो जाने पर व्यक्ति पाप-कर्मों का आचरण नहीं करता और इस जन्म-मरण के चक्र से छूटकर दुःखों से सर्वथा मुक्त हो जाता है। यही मानव-जीवन का अन्तिम एवं सर्वोच्च लक्ष्य है। इसी के लिये हमें मनुष्य जन्म मिला है। इस लक्ष्य की प्राप्ति केवल मनुष्य जन्म में ही की जा सकती है, अन्य किसी जन्म में नहीं। इसलिये 'दुःखों से पूर्णतया छूटने' रूपी परम लक्ष्य की प्राप्ति के लिये प्रत्येक मनुष्य को 'योगाभ्यास' अवश्य ही करना चाहिये।

जो व्यक्ति इस 'योगाभ्यास-ईश्वरोपासना' को करते हैं, वे सम्पूर्ण दुःखों से छूटकर ईश्वर के परम-आनन्द को प्राप्त होते हैं तथा जो इसे नहीं करते, वे मन्दभागी दुःखसागर में ही डूबे रहते हैं। इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार देखिये :—

"...जो आकाश के समान व्यापक, सब देवों का देव परमेश्वर है, उसको जो मनुष्य न जानते न मानते, और उसका ध्यान नहीं करते, वे नास्तिक मन्दमति सदा दुःखसागर में डूबे ही रहते हैं। इसलिये सर्वदा उसी को जानकर सब मनुष्य सुखी होते हैं।"

—(सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास)

महर्षि दयानन्द सरस्वती उपासना का फल लिखते हैं :—"...परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिये। इससे...आत्मा का बल इतना बढ़ेगा (कि) वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी न घबरावेगा, और सबको सहन कर सकेगा। क्या यह छोटी बात है? और जो परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना नहीं करता, वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है। क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिये दे रक्खे हैं, उसका गुण भूल जाना, ईश्वर ही को न मानना कृतघ्नता और मूर्खता है।"

—(सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास)

इतना ही नहीं ईश्वर की उपासना करने से निम्न लाभ भी होते हैं :—मेधा बुद्धि की प्राप्ति, तीव्र स्मृति की प्राप्ति, एकाग्रता की प्राप्ति, मन और इन्द्रियों पर नियन्त्रण, शान्ति, प्रसन्नता, सन्तोष, निर्भयता, परोपकार की भावना, अपने आत्म-स्वरूप का ज्ञान, ईश्वर का साक्षात्कार एवं ईश्वर के नित्य आनन्द व ज्ञान की प्राप्ति, शारीरिक व आत्मिक बल की प्राप्ति, अभिमानादि दोषों का नाश इत्यादि।

इसलिये प्रत्येक बुद्धिमान् मनुष्यको दुःखों से पूर्णतया छूटने एवं ईश्वरीय आनन्द को प्राप्त करने के लिये प्रतिदिन योगाभ्यास–ईश्वर की उपासना अवश्य ही करनी चाहिये।

अन्धश्रद्धा से मुक्त ईश्वरभक्ति का प्रकार

ईश्वर का ओंकार नाम है, सो पिता-पुत्र के सम्बन्ध के समान है, और यह नाम ईश्वर को छोड़ के दूसरे अर्थ का वाची नहीं हो सकता। ईश्वर के जितने नाम हैं, उनमें से ओंकार सबसे उत्तम नाम है। इसलिये इसी नाम का जप अर्थात् स्मरण और इसी का अर्थ विचार सदा करना चाहिये कि जिससे उपासक का मन एकाग्रता, प्रसन्नता और ज्ञानको यथावत् प्राप्त होकर स्थिर हो। जिससे उसके हृदय में परमात्मा का प्रकाश और परमेश्वर की प्रेम-भक्ति सदा बढ़ती जावे। फिर उससे उपासको को यह भी फल होता है कि उस अन्तर्यामी परमात्मा की प्राप्ति और अन्तराय अविद्यादि क्लेशों तथा रोगरूप विघ्नों का नाश हो जाता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत
ऋ० भा० भूमिका से

प्रा. धर्मेन्द्र धींग्रा
"ओंकार कुंज" खारीवाव, वडोदरा—३९०००१

महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा में ऋषि मेला

महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा (सौराष्ट्र) गुजरात में भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन किया गया है। यह बोधोत्सव ११, १३, १४ फरवरी १९९१ को होगा। उत्सव मे आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् एवं भजनोपदेशक अपने-अपने प्रवचनो एवं भजनों से आर्यजनों को लाभान्वित करेंगे। प्रतिवर्ष की भांति व्याख्यान तथा रोचक कार्यक्रम होंगे।

दिल्ली से यात्रियों को टंकारा ले जाने के लिये तीन बसों का प्रबन्ध किया गया है। एक बस श्री शामदास सचदेव मन्त्री, आर्यसमाज चूना मण्डी पहाड़गंज नई दिल्ली–११००५५ फोन न० ७३८५०४ चला रहे हैं। दूसरी बस श्री रामचन्द्र आर्य ४६६ भीमनगर गुड़गांव हरयाणा चला रहे हैं। और तीसरी बस, श्री रामशरणदास आर्य, महामन्त्री, दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल, ओ–१७ बी, जगपुरा एक्स०, नई दिल्ली—११००१४ फोन न० ६९९४०८ चला रहे हैं। जो आर्यजन बसों से टंकारा जाना चाहें वे उपरोक्त किसी भी पते पर अपनी सीटें सुरक्षित करवा सकते हैं।

दिल्ली से एक गाड़ी प्रतिदिन रात्रि १० बजे अहमदाबाद मेल जाती है जोकि राजकोट तक जाती है। राजकोट से टंकारा केवल ४५ कि० मी० है। वहां से हर समय बसें उपलब्ध हैं। जो यात्री रेल से टंकारा जाना चाहें वे अपनी सीटें रेलवे स्टेशन से सुरक्षित करवा लेवें। टंकारा में पधारनेवाले आर्यजनों के आवास एवं भोजन का प्रबन्ध टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगा। रेल की वापसी टिकट के लिये आप आचार्य ओमप्रकाश शास्त्री, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा, राजकोट ३६३६५० से सम्पर्क करें। टंकारा ट्रस्ट द्वारा चल रहे कार्यों के लिये आप अधिक से अधिक दान राशि "महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा" के नाम केवल खाते में आर्यसमाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली—११०००१ पत्ते पर भेजने की कृपा करें। इस ट्रस्ट को दी गई राशि आयकर से मुक्त होती है।

(रामनाथ सहगल मन्त्री)

गतांक से आगे—

वर्ण जन्म से नहीं, गुण-कर्म से

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष-वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ०प्र०)

वर्ण-व्यवस्था और वेद

यजुर्वेद के ३१वें अध्याय में वर्ण-व्यवस्था की रूपरेखा का वर्णन है। यजुर्वेद "कर्म-काण्ड" का वेद है। आजकल "कर्म-काण्ड" का अर्थ केवल यज्ञमात्र आदि हो अधिक प्रचलित है किन्तु इसका वास्तविक अर्थ है 'कर्म-विभाग" यजु का एक अर्थ कर्म भी है इस प्रकार यजुर्वेद कर्म का वेद है। यह भी कहा जा सकता है कि वेद के कर्म-व्यवस्था विभाग का नाम ही यजुर्वेद है। वर्ण-व्यवस्था क्योंकि श्रम-व्यवस्था का ही दूसरा नाम है और श्रम-व्यवस्था की दृष्टि से कर्मानुसार समाज का वर्गीकरण ही कर्म-व्यवस्था है। अतः कर्मकाण्ड (कर्म-विभाजन) होने के कारण इसे यजुर्वेद में आना चाहिये था। एतदर्थमेव जैसा कि हमने लिखा है, यजुर्वेद के ३१वें अध्याय में इसकी रूपरेखा दी गई है और समझने को भ्रांति न रह जाय, इस कारण से उसे उपमा देकर प्रस्तुत किया गया है।

इस अध्याय का ऋषि नारायण है अर्थात् नरों का अयन, सम्वहन धारण करनेवाला। अध्याय का दृष्टिकोण भी नरों को अयन, सम्वहन, धारण करनेवाले परमात्मा तथा सामाजिक विषय का है। वर्ण-व्यवस्था की रूपरेखा जिन मन्त्रों में दी गई है, उनका देवता है "पुरुष"। पुरुष का अर्थ है पूर्ण तथा पुरुषार्थमय। परमात्मा पूर्ण है और समस्त पुरुषार्थों से युक्त है। समाज भी अपने वर्गीकरण में पूर्ण और अपने लिए आवश्यक समस्त पुरुषार्थों से युक्त होता है। इस प्रकार उक्त दो मन्त्रों को समाज के सभी अंगों, समस्त नरों और (नर-समूह) परिवारों को अयन, सम्वहन, धारण करने की दृष्टि और समाज के वहन करने के विषयों (देवताओं) को दृष्टिगत रखकर ही समझा जाना चाहिए। जो लोग मन्त्र के ऋषि और देवता का विचार किये बिना वेद-मन्त्रों के अर्थ करते है, वे उनसे भले ही कुछ अच्छे विचारों को ले लें, किन्तु मन्त्र का वास्तविक उद्देश्य—जो उसके ऋषि और देवता को समझकर प्रकट हो सकता है—अन्य प्रकार सम्भव नहीं।

मन्त्र इस प्रकार है—

> यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
> मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥
> यजु० ३१/१०/

अर्थ—(यत्) जो (पुरुषम्) पुरुष को अर्थात् पूर्ण को और पुरुषार्थ-युक्त को (वि—अदधुः) विविध प्रकार (कतिधा) कितने (ही) प्रकार (वि—अकल्पयन्) विशेष कर कहते हैं। (मुखम्) मुंह (किम्—अस्य आसीत्) क्या इसका था। (किम् बाहू) क्या भुजा (किम्—उरु) क्या नाभि से जघ्डाओं तक का भाग और क्या (पादा उच्येते) पैर कहे जाते हैं?

अभिप्राय यह है कि यदि मानव समाज का उसकी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, उसके अपने भीतर के सामर्थ्य के अनुसार, जो उसकी अपनी आवश्यकताओं के लिए, उसमें पूर्ण है—वर्गीकरण किया जाए तो जिस प्रकार शरीर में मुख, हाथ, जघ्डायें और पैर अपने-अपने कर्त्तव्यों की पूर्ति करके इसे पुरुष अर्थात् पुरुषार्थयुक्त कहलाने का अधिकारी बनाये रखते हैं। इसी प्रकार इस समाज में वह कौन तत्त्व अर्थात् कौन-कौन वर्ग होंगे, जो इसे पुरुष कहलाने का अधिकारी सिद्ध कर सकें। इसका उत्तर इससे आगे के मन्त्र में इस प्रकार दिया गया है—

> ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
> उरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥
> यजु० ३१/११/

अर्थ—(ब्राह्मणः) ब्राह्मण (अस्य) इसका (मुखम् आसीत्) मुंह (बनाया) था (बाहू) भुजाएं (राजन्यः) राजपुत्र, क्षत्रिय (कृतः) की गई, बनाई गई। (उरु) नाभि से जघा पर्यन्त भाग (तत्) वह (अस्य) इसका (यत्) जो (वैश्य) वैश्य (है)। (पद्भ्याम्) पैरों (के स्थान) के लिए (शूद्रः) शूद्र (अजायत) जन्मा है।

अर्थात् जिस प्रकार शरीर की शक्तियां शरीर के ही विविध अंगो मुख आदि के रूप में अपने-अपने कर्त्तव्यों को पूरा करके मानव जीवन का पूर्ण अयन, सम्वहन, धारण कर लेती हैं। ठीक इसी प्रकार समाज में भी पूरी शक्तियां विद्यमान हैं, जो सम्पूर्ण समाज का वहन ठीक प्रकार कर सकती हैं, यदि उनका वर्गीकरण ठीक प्रकार से हो। जैसे शरीर में मुख-ज्ञानादि कार्य करनेवाला है, इसी प्रकार समाज में भी विद्या-विज्ञान के कार्यों का सम्पादन करनेवाले लोग अर्थात् ब्राह्मण पैदा कर दिये गये हैं। जिस प्रकार शरीर की रक्षा के लिए शरीर में भुजायें उत्पन्न की गई हैं, उसी प्रकार समाज की रक्षा-व्यवस्था के लिए समाज में पराक्रमी लोग क्षत्रिय उत्पन्न कर दिये गए हैं। जैसे खाये हुए भोजन को सभाल, पचा और रस बनाकर पेट सम्पूर्ण शरीर को बांट देता है और जंघायें शरीर का गति में योग देती हैं, इसी प्रकार अर्थ सम्पादन कर समस्त समाज में दान व करों के द्वारा बांट देनेवाला और देश-विदेश जाकर व्यापार द्वारा राष्ट्र को समृद्धि में लगा रहनेवाला वर्ग अर्थात् वैश्य-वर्ग उत्पन्न किया गया है। इन तीनों वर्गों के कार्यों में सेवा व परिश्रम द्वारा योगदान करनेवाला शूद्र भी उत्पन्न हुआ है, जैसे पैर सम्पूर्ण शरीर का भार वहन कर उसे सब स्थानों पर लिए फिरते हैं।

सत्यासत्य के निश्चय के लिए यदि निष्पक्षता से पूर्वाग्रह रहित होकर विचार किया जाए तो मुख, हस्त, उरु, पाद आदि उदाहरण ही यह सिद्ध करने को पर्याप्त हैं कि प्रधानता गुण कर्मों की है, जन्म की नहीं। यदि वास्तविक रूप में यह व्यवस्था वर्तमान काल में भी लागू हो जाए तो कोई राष्ट्रीय और सामाजिक समस्या ऐसी नहीं है, जो बिना किसी उलझन के स्वाभाविक रूप से हल होती न चली जाए।

वर्ण-व्यवस्था और महाभारत पुराण व धर्म-सूत्र

अभागे भारत में जन्म-जातीयता ने अपनी जड़ें इतनी गहरी जमा ली हैं कि इससे उत्पन्न भेदभाव तथा छुआछूत के कारण एक सहस्र वर्ष पराधीनता में विदेशियों द्वारा पादाक्रांत रहकर भी भारत-वासी नेत्र खोलने को तैयार नहीं। निकृष्ट से निकृष्ट कर्म करके भी कुछ लोग तो अपनी उच्चता का ढोल पीटने में गौरव की न केवल अनुभूति ही अपितु अभिव्यक्ति भी करते हैं। इन लोगों को इतना तक भी पता नहीं कि इनके अपने धर्मशास्त्र इस विषय में क्या कहते हैं?

इस लेख में हम कतिपय धर्मशास्त्रों की सम्मति उद्धृत कर रहे हैं। पाठकगण देखेंगे कि शास्त्रों के नीचे दिये वचनों से यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि वर्ण का सम्बन्ध जन्म से नहीं अपितु गुण-कर्म से है। साथ ही यह भी कि गुणों-कर्मों के परिवर्तित हो जाने से वर्ण भी परिवर्तित हो जाते हैं। इस विषय में पहले भारत के महान् इतिहास ग्रंथ महा-भारत से उद्धरण प्रस्तुत है। पाठकगण ध्यानपूर्वक पढ़ें।

> इन्द्रो ब्राह्मणः पुत्र. क्षत्रिया कर्मस्य कारणम्।
> महाभारत शांति पर्व॥ ४३/११/

अर्थ—इन्द्र ब्राह्मण का पुत्र था, कर्म द्वारा क्षत्रिय होगया। अब पुराणों के प्रमाण देखिए—

> श्वपाकी गर्भसम्भूतः पिता व्यासस्य पार्थिवः।
> तपसा ब्राह्मणो जातः संस्कारस्तेन कारणम्॥
> भविष्य पुराण ब्रह्मपर्व-४३/२७/

अर्थ—चाण्डाली के गर्भ से उत्पन्न व्यास जी के पिता क्षत्रिय थे। तप के द्वारा ब्राह्मण हो गये इसका कारण संस्कार है। इस श्लोक से स्पष्ट है कि चाण्डाली माता और क्षत्रिय पिता के संयोग से जन्म लेकर भी पुरुषार्थ पूर्वक विद्याध्ययन करके अपने संस्कारों को परिवर्तित कर व्यास जी ब्राह्मण बने तथा महर्षि वेद व्यास कहलाए।

गणिकागर्भसम्भूतो वशिष्ठश्च महामुनिः।
तपसा ब्राह्मणो जातः संस्कारस्तेन कारणम्॥

भविष्य पुराण ब्रह्मपर्व ४३/२८/

अर्थ—गणिका अर्थात् वेश्या के गर्भ से उत्पन्न महामुनि वशिष्ठ तपस्या अर्थात् पुरुषार्थ पूर्वक विद्याध्ययन करके ब्राह्मण बने, इसका कारण यह है कि उन्होंने विद्या तथा आचरण द्वारा उत्तम संस्कार निर्माण किये और इस प्रकार के उत्तम आचार-विचार अर्थात् गुण-कर्म-स्वभाव ब्राह्मणत्व का उपलक्ष्य हुआ, जिसके कारण समाज में ब्राह्मण पद प्राप्त हुआ।

इससे यह तो स्पष्ट है हो कि जिसके संस्कार, आचार-विचार, गुण, कर्म, स्वभाव उत्तम हों, वही ब्राह्मण होता है फिर चाहे वह किसी शूद्र घर में जन्मा हो अथवा अतिशूद्र घर में। बिना उत्तम संस्कारों की प्राप्ति के कोई ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता, चाहे वह ब्राह्मण परिवार में हो जन्मा हो। उत्तम संस्कारों की प्राप्ति के लिए विद्याप्राप्ति अत्यन्त आवश्यक है। ब्रह्म पुराण ५३/२२३ में कहा भी है—

शूद्रोपि आगमसम्पन्नो द्विजो भवति संस्कृतः।

अर्थ—शूद्र भी शास्त्रसम्पन्न अर्थात् शास्त्रों का ज्ञाता और संस्कारित होकर द्विज हो जाता है।

आपस्तम्ब धर्म सूत्र का विधान भी पठनीय और मननीय है, जो नीचे उद्धृत है।

धर्मचर्यया जघन्यो वर्णः पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ।१।
अधर्मचर्यया, पूर्वो वर्णो जघन्य जगन्यं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ।२।
(आपस्तम्ब सूत्र)

धर्म के आचरण से निकृष्ट वर्ण के लोग भी स्व-स्व कर्मानुसार पूर्व अर्थात् अपने से उच्च वर्ण को प्राप्त होते है और इस प्रकार उनका जाति परिवर्तन हो जाता है। इस का अभिप्राय यह है कि शूद्र जिस वर्ण के गुण-वर्ण-स्वभाव को पुरुषार्थ पूर्वक विद्या-विज्ञान प्राप्त करके धारण कर लेगा, उसी वर्ण का अर्थात् वैश्य, क्षत्रिय अथवा ब्राह्मण हो जाएगा। इसी प्रकार वैश्य भी परिश्रम करके क्षत्रिय अथवा ब्राह्मण और क्षत्रिय पुरुषार्थ द्वारा ब्राह्मण बन सकता है, जिस प्रकार विश्वामित्र और वेदव्यास क्षत्रिय से ब्राह्मण बने थे।

इसी प्रकार अधर्म का आचरण करने के कारण अर्थात् स्व-वर्ग के आचरण से निम्न स्तर के आचरण करके उच्च वर्ण का व्यक्ति भी अपने से जघन्य अर्थात् निम्न वर्ण को प्राप्त होता है। इसका स्पष्टार्थ यह हुआ कि जब ब्राह्मण के गुण-कर्म-स्वभाव के विपरीत कर्म करने लगता है तो उन कर्मों के द्वारा जिस वर्ण के अनुसार वह कर्म होते हैं उसी वर्ण को प्राप्त हो जाता है। अभिप्राय यह है कि ब्राह्मण से क्षत्रिय वैश्य तथा और अधिक पतित होकर शूद्र बन जाता है। इसी प्रकार क्षत्रिय भी वैश्य और शूद्रपन को तथा वैश्य शूद्रपन को प्राप्त हो जाता है। गोस्वामी तुलसीदास जी का यह कथन भी उक्त शास्त्रीय प्रमाणों की पुष्टि करता है।

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।
जो जस कीन्हा तो तस फल चाखा॥

अर्थ—विश्व में कर्म की प्रधानता स्वीकार की जाती है। जो जैसा करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है। जैसे आचरण अर्थात् कर्म होंगे, वैसा हो पद (स्थान) समाज में मिलेगा। इन प्रमाणों के होते हुए भी जो लोग जन्म जातिवाद के समर्थक हैं, शास्त्र का निम्न वचन भी उन्हें ध्यान में रखना चाहिए।

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।

अर्थ—जन्म से सब शूद्र अर्थात् अशुद्ध, गन्दगी में लिपटे हुए तथा मूर्ख ही उत्पन्न होते हैं। शुद्ध किये जाने पर विद्या की प्राप्ति और शुभ-संस्कारों के द्वारा ही स्व-स्व गुण-स्वभाव के अनुसार द्विज ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र हो जाते हैं।

द्विज का अर्थ है द्विजन्मा—जिसके दो जन्म हुए हो। एक माता पिता के संयोग से तथा दूसरा विद्या प्राप्ति द्वारा गुरुजनों से। किसी भी प्रकार की विद्या प्राप्त कर पानेवाला अर्थात् माता-माता से जन्म प्राप्त करने मात्र से तो मनुष्य शूद्र ही रह जाता है। सृष्टि-उत्पत्ति काल में मानव समाज की स्थिति और उसके वर्णों में परिवर्तन हो जाने अर्थात् वर्ण-विभाजन का वर्णन करते हुए ब्रह्मर्षि भगवान् भृगु के शब्दों को जो उन्होंने बृहस्पति के पुत्र भारद्वाज से कहे है—हम यहां उद्धृत करते हैं। श्लोक इस प्रकार है—

न विशेषोऽस्ति वर्णानां सर्वं ब्राह्ममद जगत्।
ब्रह्मणः पूर्वं सृष्टा हि कर्मणापि वर्णता गता॥
पिशाचाः राक्षसाः प्रेताः विविधा म्लेच्छजातयः।
नष्टज्ञान-विज्ञानाः स्वच्छन्दाचारचेष्टिताः॥

महाभारत शान्तिपर्व १९६/१/१८

अर्थ - वर्णों को कोई विशेषता नहीं सम्पूर्ण जगत् ब्रह्ममय है। पहले सब ब्राह्मण थे, कर्मों द्वारा वर्णों को प्राप्त पिशाच, राक्षस, प्रेत आदि विविध जातियां होगयी।

प्रिय पाठकवृंद ! आपने ध्यानपूर्वक इस सम्पूर्ण लेख को पढ़ा ही है। यह आपको स्पष्ट होगया होगा कि जो लोग जन्म जातीयता के आधार पर स्वयं को उच्च और अन्यों को नीच मानते उनसे घृणा और छुआछूत करते हैं, वह इन सभी ग्रंथों को अपने धर्मग्रन्थ और शास्त्र मानते हैं, जिनके प्रमाण हमने इस लेख में दिये। ऐसी स्थिति में उन भाइयों की ऊंच-नीच की भावना और मान्यता तथा अपने ही धर्मबन्धुओं से घृणा अनुचित है। हमारा आप सब से विनम्र निवेदन है कि इस प्रकार के विचारों और व्यवहार को त्यागकर अपने धर्म बन्धुओं के साथ समानता और प्रेम का व्यहार करें।

जो कोई जन्म से वर्ण-व्यवस्था माने और गुण-कर्म के योग से न माने तो उससे पूछना चाहिए कि जो कोई अपने वर्ण को छोड़ नीच अथवा कृश्चियन, मुसलमान होगया हो, उसको भी ब्राह्मण क्यों नहीं मानते ? तब यही कहोगे कि उसने ब्राह्मण के कर्म को छोड़ दिया इसीलिये वह ब्राह्मण नहीं है। इससे यह सिद्ध होता है कि जो ब्राह्मण आदि उत्तम कर्म करते हों, वे ही ब्राह्मणादि और जो नीच भी उत्तम वर्ण के गुण कर्म, स्वभाव वाला होवे तो उसको भी उत्तम वर्ण में और उत्तम वर्णस्थ हो, के नीच काम करे तो उसको नीच वर्ण में गिनना अवश्य चाहिए।

पुरोहित प्रशिक्षण-शिविर

श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी त० पलवल, जिला फरीदाबाद के ५४वें वार्षिकोत्सव पर पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसमें कम से कम दसवीं तक की योग्यता रखनेवाले व्यक्ति भाग ले सकते हैं। १८ फरवरी प्रातः से २४ फरवरी तक सोलह संस्कार वैदिक रीति से कराने का प्रशिक्षण दिया जाएगा। भोजन एवं आवास की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से की जाएगी। ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लायें। प्रशिक्षण के अन्त में प्रमाण-पत्र भी दिया जाएगा जिसके लिए ५०/- रुपये का प्रावधान है।

अतः स्थान सुरक्षित करालें।

प्रधान
श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ
गदपुरी (बल्लभगढ़) फरीदाबाद-१२१००४

—०—

'जाग्रत ज्योति जगाई जिसने…'

वृद्ध हुए भारत में जिसने,
चेतनता का फूका मंत्र।
जिसके सतत प्रयासों से हो—
गया हमारा देश स्वतन्त्र।
जिसने पुन: धरणि पर निर्भय,
वेदधर्म संदेश दिया।
जिसने निर्भय सिंह गर्जना—
करके, मधु उपदेश दिया।
जिसकी ललकारो ने जन-जन,
को नव शक्ति प्रदत्त किया।
जिसने युवकों को स्वदेशहित—
लड़ने को उन्मत्त किया।
ज्ञान सूर्य की प्रखर रश्मि सा,
जिसने लिखा सत्यार्थप्रकाश।
आलोकित जिस दिव्य ग्रंथ से,
आज मनुजता का विकास।
जाग्रत ज्योति जगाई जिसने,
कुटियो से ले राजमहल तक।
जिसकी गतिविधियो से कंपित,
हुआ शत्रु था लंदन तक।
जिसने रोती अबलाओं को,
आगे बढ़कर त्राण दिया।
जिसके शंख निनादों ने हो,
कण-कण को नव प्राण दिया।
वर्णाश्रम की पुण्य व्यवस्था—
जिसने किया पुनःस्थापित।
वैदिक धर्म पुन: जाग्रतकर,
जिसने किया धरा का हित।
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का—
जिसने नव उद्घोष किया।
बढकर आगे नित्य निरन्तर,
जिसने था यह घोष किया।
पाखण्डों के गहन दुर्ग भी—
जिसके सम्मुख नष्ट हुए।
धर्माडम्बर तथा दनुजता—
के सब तत्त्व विनष्ट हुए।
जिसने दिया पुन: जगती को,
वेदों का मंगलमय ज्ञान।
धन्य-धन्य भारत का सुत वह,
दयानन्द ऋषि महान्॥

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

शोक समाचार

दिनांक ७-१-९१ को अचानक हृदयगति रुकने से श्री जगदीशराय आर्य (कंवारी वाले) की माता श्रीमती रुकमणी देवी का दिल्ली में निधन होगया। वे ७३ वर्ष की थी। माता जी बड़ी धर्मात्मा थी। अतिथि सेवा का विशेष गुण था। दान में भी विशेष रुचि थी। अपने सम्पन्न तीनों पुत्रों को धार्मिक जगहों में दान देने हेतु प्रेरित करती रहती थी। बालावास आर्यसमाज मन्दिर में विशेष योगदान था। गाव कवारी में बस अड्डे पर बैठने की कुर्सी तथा प्याऊ एव गाव में लोगों के आग्रह से एक विशाल गीता भवन, बच्चों को प्रेरित कर बनवाया। माता जी की अन्त्येष्टि सस्कार दिल्ली में डा० महेश आर्य ने करवाया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधिसभा के प्रधान डा० धर्मपाल जी तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। हमारी भगवान् से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी प्रधान, आर्यसमाज कवारी

नरवाना में महायज्ञ

आर्यवीर दल नरवाना ने मकर सौर संक्रांति के उपलक्ष्य में आर्यसमाज नरवाना के खुले प्रागण में एक महायज्ञ किया जिसका आरम्भ वृद्ध आर्य नेता श्री ताराचन्द जी आर्य ने ओ३म् का झण्डा लहराकर किया। यज्ञ की अध्यक्षता श्री वीरेन्द्र कुमार जी आर्य प्रधान आर्यसमाज नरवाना ने की तथा उन्होंने आयवीरों को अनुशासन मे रहकर कार्य करने की प्रेरणा दी।

आर्यवीर हरीश आय, प्रमोद आर्य व नरेन्द्रकुमार आर्य ने ईश्वर भक्ति तथा देशभक्ति के मधुर भजनो से सभी का मनोरजन किया। श्री विजयकुमार जी आर्य शाखानायक ने देशभक्ति के भजन के साथ सभी आर्यवीरों को उत्साह से कार्य करने को प्रेरणा दी। श्री सत्यपाल शास्त्री उपशाखा नायक ने अपना भाषण देते हुए आर्यवीरो को अपनी शक्ति का प्रयोग राजनीति से ऊपर उठकर देश की एकता तथा देश की रक्षा के लिए करने की प्रेरणा दी। श्री वीर बन्त जी शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज ने अपने भाषण में मकर सक्रांति का महत्त्व बताते हुए कहा कि उत्सव मनाने से ही आर्यसमाज व वैदिक धर्म जीवित रहता है।

अन्त मे श्री राधाकृष्ण जी आर्य प्रधान वीर दल नरवाना ने अपने भाषण मे क्रांतिकारियों के उदाहरण देकर सभी आये हुए बालकों, जवानों तथा वृद्धों से प्रार्थना की कि हम इस महायज्ञ पर अपने जीवन की एक बुराई छोड़ने की प्रतीज्ञा करे तथा आर्यसमाज के सिद्धातों की रक्षा के लिए तन, मन, धन न्योछावर करने का सकल्प करके जाए, सभी ने प्रधान जी की प्रार्थना का स्वागत तीन तालियों से किया। शांति पाठ के साथ महायज्ञ का कार्य समाप्त हुआ।

अश्वनीकुमार आर्य मन्त्री, आर्यवीर दल, नरवाना

जिला गुड़गांव में वेदप्रचार

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से स्वामी देवानन्द जी की भजनमण्डली ने गत मास निम्नलिखित आर्यसमाजों में वेदप्रचार किया।

आर्यसमाज रामनगर गुड़गांव, नई कालोनी गुड़गांव, सोहना, नूह, महिला आर्यसमाज जंकमपुरा गुडगाव, पुरुष आयसमाज जैकमपुरा गुडगाव, फिरोजपुर झिरका, बसई मेव, जोवा, कावली, नगीना, पिनगवा, पुनाहना।

श्यामलाल आर्य सयोजक जिला गुड़गाव वेदप्रचार मण्डल

सुताना (पानीपत) में आर्यसमाज मन्दिर

६ जनवरी को ग्राम सुताना जिला पानीपत में पं० धर्मपाल शास्त्री द्वारा यज्ञ करवाया गया। श्री जयसिंह आर्य ने अपने ग्राम में आर्यसमाज मन्दिर बनवाने के लिए एक कनाल भूमि तथा ५००० रु० दान देने की घोषणा को और मन्दिर को आधारशिला रखवाने आदि निश्चित करने का अधिकार सभा के कोषाध्यक्ष श्री रामानन्द सिंहल को दिया गया। इस अवसर पर श्रीमती बुगली देवी जी को स्वामी धर्मानन्द जी तथा प० धर्मपाल शास्त्री ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

'वेद-वेदांग एवं वेदोपदेशक पुरस्कार'

आर्यसमाज सान्ताक्रुंज द्वारा प्रवर्तित वेद-वेदांग एवं वेदोपदेशक पुरस्कार १९९१ के लिए स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती एवं महात्मा प्रेमभिक्षु जी महाराज मथुरा का चयन किया गया है। वेद-वेदांग पुरस्कार विजेता पूजनीय स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को २१००० एव वेदोपदेशक पुरस्कार के विजेता महात्मा प्रेमभिक्षु जी को ११००० रुपये की थैली एव अभिनन्दन-पत्र, रजत ट्राफी, शाल एव श्रीफल से सम्मानित किया गया।

समारोह १९-१-१९ को आर्य विद्या मन्दिर सभागृह में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि डा० कर्णसिंह, अध्यक्ष डा० शिवाजीराव निलगेकर एव विशेष अतिथि डा० राममनोहर त्रिपाठी थे। समारोह का संयोजन कैप्टिन देवरत्न आर्य ने किया।

इससे पूर्व वेद-वेदाग पुरस्कार से प० उदयवीर जी शास्त्री, श्री विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड, डा० रामनाथ जी वेदालकार, आचार्य प्रियव्रत जी ज्वालापुर एव प० हरिशरण जी सिद्धान्तालंकार को एवं वेदोपदेशक पुरस्कार से प० शान्तिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी, श्री पन्नालाल जी पीयूष एव श्री ओमप्रकाश जी वर्मा भजनोपदेशक को सम्मानित किया जाचुका है।

इसके अतिरिक्त आर्यसमाज सान्ताक्रुज ने महामहोपाध्याय प० युधिष्ठिर जी मीमासक को ७५००० एवं प० सत्यकाम जी विद्यालकार को ५१००० रुपये की थैली से विशेषरूप से सम्मानित करने का सौभाग्य प्राप्त किया है।

कैप्टिन देवरत्न आर्य

सम्पादक के नाम पत्र

फरवरी मास में आर्यसमाजों के उत्सव

१.	गुरुकुल धीरणवास जि० हिसार	१ से ३ फरवरी
२.	आर्यसमाज औरगाबाद मित्रोल जि० फरीदाबाद	१ „ ३ „
३. „	„ खेड़की डा० बेरावास	६ „ १० „
४ „	„ मानपुर जिला फरीदाबाद	९ „ १० „
५. „	„ मीसा जिला फरीदाबाद	१२ „ १३ „
६. „	„ कवारी जिला हिसार	१५ „ १७ „
७. „	„ गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक	१५ „ १७ „
८. „	„ कवरियावास जिला महेन्द्रगढ़	२३ „ २४ „
९. „	„ गदपुरी जि० फरीदाबाद	२२ „ २४ „
१०. „	„ बालसमन्द जि० हिसार	२२ „ २४ „
११. „	„ गुरुकुल मटिण्डू जि० सोनीपत	२२ „ २४ „

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि उपरिलिखित तिथियों को छोड़कर अपने उत्सवों की तिथियां निश्चित करके सभा को सूचित करें जिससे उपदेशक तथा भजनोपदेशकों के कार्यक्रम बनाये जावे।

सुदर्शनदेव आचार्य
वेदप्रचाराधिष्ठाता

संग्रहणीय पुस्तक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा प्रकाशित पण्डित जगदेवसिंह सिद्धान्ती जी की जीवनी पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सिद्धान्ती जी का यह जीवन-चरित्र काफी रोचक एव संग्रहणीय है। इसके माध्यम से उनके विषय मे ढेर सारी सामग्री पढने को मिली। नि:सन्देह सिद्धान्ती जी आर्यसमाज के एक प्रमुख वैदिक विद्वान् थे। जिन्होने जीवन-पर्यन्त आर्यसमाज की भरपूर सेवा की। अत: उनकी स्मृति में सभा ने यह पुस्तक प्रकाशित कर एक अनुकरणीय कार्य किया है। इसके लिए सभा के समस्त पदाधिकारी एव इस पुस्तक के लेखक आचार्य सुदर्शनदेव जी विशेषरूप से बधाई के पात्र हैं।

—रामकुमार आर्य मन्त्री आर्य युवक परिषद्,
गोहाना (रोहतक)

महर्षि दयानन्द विद्यालय नीमड़ीवाली में संक्रान्ति-पर्व समारोह

नीमडी वाली, जिला भिवानी में महर्षि दयानन्द विद्यालय में मकर संक्रान्ति के पुनीत पर्व पर जनवरी १४, १९९१ को सुबह १० बजे से दोपहर २ बजे तक प्रचार कार्य का सफल आयोजन किया गया। नीमडीवाली के उत्साही एवं लग्नशील युवक श्री शेरसिह जी आर्य एव उनकी धर्मपत्नी गांव में महर्षि दयानन्द विद्यालय चला रहे है जिसके माध्यम से गांव के बच्चों पर बहुत उत्तम सस्कार डाल रहे हैं। संक्रान्ति पर्व पर आर्यवीर दल की ओर से उन्होंने विद्यालय में प्रचार का कार्यक्रम रखा जिसका शुभारम्भ सुबह १० बजे यज्ञ से हुआ। फिर छात्र-छात्राओं ने बहुत ही सुन्दर और शिक्षाप्रद भजन प्रस्तुत किये। रा. मा. वि. नारनौल के भौतिक शास्त्र के सुयोग्य प्राध्यापक डा० भूपसिह जी आर्य ने यज्ञ पर बहुत ही तर्कसम्मत एव खोजपूर्ण विचार रखे। आर्यवीर दल भिवानी के उत्साही प्रचारमन्त्री एव आर्य भजनोपदेशक श्री रामस्वरूप जी आर्य ने शिक्षाप्रद भजन प्रस्तुत किये और रपट लेखक ने भी मकर-सक्रान्ति पर्व का महत्त्व स्पष्ट किया तथा महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के योगदान पर प्रकाश डाला। गाववालो के सहयोग और सहमति से संकल्प लिया गया कि शराब जैसे घातक दुर्व्यसन से गाव को सर्वथा मुक्त रखने का प्रयास किया जायेगा। बड़ी सख्या में गाव के स्त्री पुरुष कार्यक्रम में शामिल हुये तथा आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया। आर्यवीर दल हरयाणा श्री शेरसिह जी आर्य को आश्वासन देता है कि उनके पुनीत कार्य में हम हर सभव सहयोग सदा उन्हें देते रहेगे। शांतिपाठ के पश्चात् सभा विसर्जित हुई। प्रसाद रूप में केले वितरित किये गये।

प्रो० ओमकुमार आर्य
उपसचालक, आर्यवीर दल, हरयाणा

मकर संक्रान्ति पर्व के उपलक्ष में

१४-१-१९९१ को मकर सक्रान्ति पर्व के उपलक्ष में आर्यसमाज मन्दिर नलवा (हिसार) मे सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी द्वारा यज्ञ किया गया। यजमान का स्थान स्थानीय डाकघर में सह पोस्टमैन श्री बाबूलाल जी ने ग्रहण किया। इस अवसर पर क्रान्तिकारी जी ने पच महायज्ञ एव मकर संक्रान्ति पर्व के महत्त्व पर विस्तार से विचार रखे।

भलेराम आर्य, नलवा

शोक समाचार

श्री दलीपकुमार (बडवा) का स्कूटर दुर्घना में स्वर्गवास होगया है। श्री कुमार मधुरभाषी, मिलनसार, हंस-मुख एक अच्छे फोटोग्राफर थे। यद्यपि वे पौराणिक प्रवृत्ति के थे तथापि ४ वर्ष पूर्व बडवा में वेद प्रचारार्थ काफी सहयोग दिया था।

मा० रामचन्द्र आर्य, नलवा

शोक समाचार

गुड़गांवा के समाजसेवी आर्यनेता सेठ फतेहचन्द अग्रवाल का दिनांक १५-१२-९० को आकस्मिक निधन होगया। वह आर्यसमाज छावनी गुडगावां, डी. ए. वी. एजूकेशन सोसाईटी गुडगावा, आर्य नेत्र चिकित्सालय गुडगांवां के विशेष कर्त्ताधर्त्ताओ मे थे। स्वय भी दान खूब देते थे औरो से भी दिलवाते थे। पूर्णरूप से ऋषि-भक्त थे। उनके निधन से गुडगांवां आर्यसमाज को बहुत हानि हुई है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

श्यामलाल आर्य
जिला गुडगावा वेदप्रचारमण्डल

राष्ट्रभाषा के लिए १५ पैसे तथा ५ मिनट का समय दान करें

राष्ट्रभक्त तथा राष्ट्रभाषा प्रेमियों से राष्ट्रभाषा के सम्मान के लिए निवेदन है कि माननीय राष्ट्रपति महोदय को एक १५ पैसे का पोस्टकार्ड लिखें जिसमें २६ जनवरी १९९१ तथा १५ अगस्त १९९१ (गणतन्त्र दिवस तथा स्वाधीनता दिवस) की पूर्व सध्या पर राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्रसारित किये जानेवाले "राष्ट्र के नाम संदेश" अंग्रेजी के स्थान पर किसी भी भारतीय भाषा में प्रसारित करने का निवेदन किया गया है क्योंकि राष्ट्रपति महोदय कोई न कोई भारतीय भाषा या अपनी मातृभाषा अथवा प्रांतीय भाषा अवश्य जानते है। अतः राष्ट्र के मान सम्मान के प्रतीक विशेष दिवसों पर राष्ट्रभाषा/मातृभाषा/प्रांतीय भाषा का प्रयोग ही उचित है। अंग्रेजी तो गुलामी को प्रतीक ही कही जाएगी। क्या हमारा राष्ट्र गूंगा है? क्या इसकी कोई भाषा नहीं है? या वह भाषा तुच्छ या निम्न कोटि है? जिससे राष्ट्रपति जी गुलामी की प्रतीक अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं। कृपया अपनी-अपनी भावना के अनुसार शिष्ट शब्दों में सानुरोध प्रार्थना पूर्वक एक पत्र अवश्य आज ही अभी लिख दें। भूल नही। यदि आपको भारत की मिट्टी से प्रेम है और अपने को भारतपुत्र समझते हैं तो अवश्य शीघ्र लिखें।

—एक भारतपुत्र

मण्डी डबवाली में मकर संक्रांति पर्व

आज १४-१-१९९१ दिन सोमवार को श्री लाला दीवानचन्द जी सिंगला मण्डी डबवाली जिला सिरसा ने अपने घर श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थी-गुरुकुल बठिण्डा द्वारा वृहद् हवन यज्ञ कराया। श्री वानप्रस्थी जी ने आर्य पर्वों के सम्बन्ध में एवं दान की महिमा पर अपने विचार रखे। इस शुभ अवसर पर श्री दीवानचन्द जी सिंगला ने २१२५/- रु० दो हजार एक सौ पच्चीस रु० शहीद परिवार सहायता फण्ड में और २२५/- रु० सवा दो सौ रु० गोशाला मण्डी डबवाली को दान दिया।

कालांवाली मण्डी में पारिवारिक सत्संग

दिनांक ६-१-९१ दिन रविवार को प्रातः साढे आठ बजे श्री अमरनाथ जी गोयल कालांवाली मण्डी जिला सिरसा ने अपने पिता श्री चाननराम जी गोयल की बरसी पर अपने परिवार में श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थी गुरुकुल बठिण्डा द्वारा हवन यज्ञ कराया। श्री वानप्रस्थी जी ने जीवन-मृत्यु सम्बन्ध में अपने विचार रखे। इस अवसर पर श्री अमरनाथ जी गोयल ने १०० रुपए आर्यसमाज कालांवाली को दान दिया। उपस्थित भाई-बहिनों का मिठाई एवं चाय से सत्कार किया गया।

—मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० २ /RTK-४६ फोन न० ७४८१२ मुद्रितमबन् १,६६, ०८, ५३ ०६०

सर्वहितकारी
रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक ११ ७ फरवरी, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

वेद में गणित विद्या

(पं० धर्मदेव 'मनीषी' वेदतीर्थ, गुरुकुल कालवा)

वेद में अंक, बीज और रेखा भेद से तीन प्रकार की गणितविद्या सिद्ध होती है। इसमें वेदों के प्रमाण :—

एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च मे एकादश च मे एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च मे एकविंशतिश्च मे एकविंशतिश्च मे त्रयोविंशतिश्च मे त्रयोविंशतिश्च मे पञ्चविंशतिश्च मे पञ्चविंशतिश्च मे सप्तविंशतिश्च मे सप्तविंशतिश्च मे नवविंशतिश्च मे नवविंशतिश्च मे एकत्रिंशच्च मे एकत्रिंशच्च मे त्रयस्त्रिंशच्च मे त्रयस्त्रिंशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

चतस्रश्च मे चतस्रश्च मेऽष्टौ च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च षोडश च मे षोडश च मे विंशतिश्च मे विंशतिश्च मे चतुर्विंशतिश्च मे चतुर्विंशतिश्च मेऽष्टाविंशतिश्च मेऽष्टाविंशतिश्च में द्वात्रिंशच्च मे द्वात्रिंशच्च मे षट्त्रिंशच्च मे षट्त्रिंशच्च मे चत्वारिंशच्च मे चत्वारिंशच्च मे चतुश्चत्वारिंशच्च मे चतुश्चत्वारिंशच्च मेऽष्टाचत्वारिंशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

(यजु० अ० १८। मं० २४। २५)

गणित विद्या में से प्रथम अंक (१) जो संख्या है, सो दो बार गणने से दो की वाचक होती है। जैसे १+१=२ ऐसे ही एक के आगे एक तथा एक के आगे दो, वा दो के आगे एक आदि जोडने से भी समझ लेना। इसी प्रकार एक के साथ तीन जोड़ने से चार (४) तथा तीन (३) को तीन (३) के साथ जोड़ने से ६ अथवा तीन को तीन से गुणने से ३×३=९ हुये ॥

इसी प्रकार चार के साथ चार, पांच के साथ पांच, छः के साथ छः, आठ के साथ आठ इत्यादि जोड़ने व गुणने तथा सब मन्त्रों के आशय को फैलाने से गणित विद्या निकलती है। जैसे पांच के साथ पांच (५५) वैसे ही पांच पांच छः छः (५५) (६६) इत्यादि जान लेना चाहिये। ऐसे ही इन मन्त्रों के अर्थों को आगे योजना करने से अङ्कों से अनेक प्रकार की गणितविद्या सिद्ध होती है। क्योंकि इन मन्त्रों के अर्थ और अनेक प्रकार के प्रयोगों से मनुष्यों को अनेक प्रकार की गणितविद्या अवश्य जाननी चाहिए।

और जो कि वेदों का अङ्ग ज्योतिषशास्त्र कहाता है, उसमें भी इसी प्रकार के मन्त्रों के अभिप्राय से गणित विद्या सिद्ध की है और अंकों से जो गणितविद्या निकलती है, वह निश्चित और संख्यात पदार्थों में युक्त होती है और अज्ञात पदार्थों की संख्या जानने के लिए बीजगणित होता है, सो भी (एका च मे०) इत्यादि मन्त्रों ही से सिद्ध होता है। जैसे (अ+क) (अ—क) (अ÷क) इत्यादि संकेत से निकलता है। यह भी वेदों ही से ऋषि-मुनियों ने निकाला है।

२ ३ १ २ २ १२ ३ २३ १२ १र २र

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि

२ १ २

बर्हिषि ॥

(साम० छ० प्र० १। ख० १)

इस मन्त्र के संकेतों से भी बीजगणित निकलता है और इसी प्रकार से तीसरा भाग जो रेखागणित है सो भी वेदों ही से सिद्ध होता है—

इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्या अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः।
अयꣳसोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्माय वाचः परमं व्योम ॥

(यजु० २३। म० ६२)

कासीत् प्रमा प्रतिमा किं निदानमाज्य किमासीत् परिधिः क आसीत्। छन्दः किमासीत् प्रउगं किमुक्थ यद्देव देवमयजन्त विश्वे ॥

(ऋ० अ० ८। अ० ७। व० १८। मं० ३)

इन मन्त्रों में रेखागणित का प्रकाश किया है, क्योंकि वेदों की रचना में रेखागणित का भी उपदेश है। जैसे तिकोन, चौकोन, श्येन पक्षी के आकार और गोल आदि जो वेदी का आकार किया जाता है सो आर्यों ने रेखागणित ही का दृष्टान्त माना था। क्योंकि पृथिवी का जो चारों ओर घेरा है, उसको परिधि और ऊपर से अन्त तक जो पृथिवी की रेखा है उसको व्यास कहते हैं। इसी प्रकार से इन मन्त्रों में आदि मध्य और अन्त आदि रेखाओं को भी जानना चाहिये और इसी रीति से तिर्यक् विषुवत् रेखा आदि भी निकलती।

(कासीत्प्रमा) अर्थात् यथार्थ ज्ञान क्या है ? (प्रतिमा) पदार्थों का तोल किया जाय सो क्या चीज है ? (निदानम्) अर्थात् कारण जिससे कार्य उत्पन्न होता है, वह क्या चीज है। (आज्यम्) जगत् में जानने के योग्य सारभूत क्या है ? (परिधि०) परिधि किसको कहते हैं ? (छन्द०) स्वतन्त्र वस्तु क्या है ? (प्रउ०) प्रयोग और शब्दों से स्तुति करने के योग्य क्या है ? इन सात प्रश्नों का उत्तर यथावत् दिया जाता है (यद्देवा देव०) जिसको सब विद्वान् लोग पूजते हैं वही प्रमा आदि नामवाला है।

इन मन्त्रों में प्रमा और परिधि आदि शब्दों से रेखागणित साधने का उपदेश परमात्मा ने किया है। सो तीन प्रकार की गणित विद्या आर्यों ने वेदों से ही सिद्ध की है और इसी आर्यावर्त्त देश से सर्वत्र भूगोल में गई है। यह सब महर्षि दयानन्द ने हमें बताया।

'शाकाहार क्रान्ति से'

अण्डा शाकाहार है ऐसे विज्ञापनों पर प्रतिबन्ध

भारतीय शाकाहारी कांग्रेस ने एन० ई० सी० सी०, जो कि पूरे देश में अण्डों की विज्ञापन एजेंसी है, उसके विज्ञापन पर आपत्ति उठायी है, जिसमें अण्डे को 'शाकाहारी भोजन' बताया गया था। इस आपत्ति को सही करार देते हुए एडवर्टेजमेंट स्टेंडर्ड्स कौंन्सिल आफ इण्डिया ने एन० ई० सी० सी० से कहा है कि वह अण्डों की लोकप्रियता बढाने के सिलसिले में अपने विज्ञापनों में संशोधन करे।

(बम्बई स्थित यह परिषद् देश में विज्ञापन-संबंधी विवादों को निपटाती है।)

साम-सुधा शतक

(५)

उसकी महिमा अपरम्पार है

ओं अभ्यूर्णोति यन्नग्नं भिषक्ति विश्वं यत् तुरम्।
प्रेमन्धः स्वयत्, निःश्रोणो भूत्॥ (ऋ० ८/७९ २/॥

उस करुणामय की करुणा का
लोगो देखो भेद अपार।
नगे को वह कपडा देता
दुखी दीन का कर उपचार।
अन्धे को भी साक्ष बना दे
पगु करता पद-संचार।
नही असम्भव उसको कुछ भी
महिमा उसकी अपरम्पार॥

(६)

हमको भी अपना लीजिये

ओं यस्मै त्व सुद्रविणो ददाशो अनागस्त्वमदिते सर्वताता।
य भद्रेण शवसा चोदयासि प्रजावता राधसा ते स्याम॥

हे अखण्ड नियामक प्रभुवर।
तेरे नियत नियम अविच्छिन्न।
जिस जन को निर्दोष बनाते।
हो रहता तुमसे वह अभिन्न॥
कर्मशुद्धि जिसको देते हो
देते सर्जक बल धन-धान।
वह बल वैभव हमें दीजिये
अपना हमको उसी समान॥

(७)

सरस्वती का सागर उमड़ रहा है

ओं महो अर्णः सरस्वती प्रचेतयाति केतुना।
धियो विश्वा विराजति॥ ऋ० म०१/सू० ३/म० १२

महासागर यह सरस्वती का,
होता रहता है उदबुद्ध।
आलोकित कर ज्ञान-विभा से
करता मन मेधा को शुद्ध॥

(८)

समाज संगठन के अमोल मन्त्र

ओं ज्यायस्वतरश्चित्तिनो मा वियौष्ट: संराधयंत सधुराश्चरन्तः।
अन्यो अन्यस्मै वलगु वदन्त एत सध्रीचीनाम्वः संमनसस्कृणोम्कम्।

जितने भी हों जन जगती के
बनो परस्पर वढ गुणवान्।
बनो विवेकी 'औ' अविरोधी
एक सुपथ में हो गतिमान।
अलग विलग तुम कहीं न होवो
मिलकर पाओ लक्ष्य महान्।
नियमभ्रष्ट तुम कभी न होवो
बोलो मिलकर मीठे बोल।
हुए सगठित सहचारी हो
मनसे भी करता समतोल।
होवे श्रेष्ठ समाज तुम्हारा
यही हैं जिसके मत्र अमोल॥

—प्रा० धर्मचन्द विद्यालंकार,
पलवल

दिशाहीन समाज व राष्ट्र

'साम्प्रदायिकता' का विष मानवसमाज को डस रहा है। धर्म व जाति के नाम पर साम्प्रदायिक दगे, निर्दोष व्यक्तियों की हत्याएं आदि मानव सभ्य समाज पर कलंक तथा पशुता के प्रतीक हैं। शांति, प्रेम, अहिंसा तथा सद्भावना का वातावरण ही मानवसमाज को सुखी, खुशहाल, प्रगतिशील बना सकते हैं। राम और रहीम तो मानवसमाज को जोडते हैं तोड़ते नहीं। विडम्बना है कि तथाकथित राजनैतिक नेता तथा राजनैतिक पार्टियां उत्तरप्रदेश के अलीगढ, मेरठ, कानपुर, वाराणसी, खुरजा, आगरा आदि तथा हैदराबाद व अहमदाबाद जैसे बड़े नगरों में वोटों की राजनीति की आड में मौत का व्यापार कर रहे हैं। धार्मिक व सामाजिक कार्यकर्ताओं को अविलम्ब मैत्री, भाईचारा, शान्ति, मानवता का वातावरण बनाए रखना चाहिए। ईश्वर व खुदा इन अनेक नेताओं और लोगों को सुमति व सद्बुद्धि दें।

पंजाब में चण्डीगढ तथा जालन्धर रेडियो स्टेशन से हिन्दी बुलिटन को अकस्मात् व अकारण बन्द कर देना तथा कार्यालय में दैनिक हिन्दी समाचार-पत्रों पर रोक लगाना अनैतिक असंवैधानिक है। ४५ प्रतिशत हिन्दी भाषियों के साथ अन्याय है। केवल और केवल मात्र हिन्दी ही सारे भारत को कश्मीर से कन्याकुमारी तक पिरो सकती है। हमें हिन्दी अपनाओ व अंग्रेजी हटाओ पर पूरी शक्ति लगा देनी चाहिए। भारत सरकार को इस अन्यायसगत निर्णय के आगे नही झुकना चाहिए, अपितु कठोर कदम उठाने चाहिएं। असम व अन्य दंगाग्रस्त नगरों में सेना भेजी जा सकती है तो पंजाब में क्यों नही पाकिस्तान पंजाब सीमा सुरक्षा पट्टी बनाना नितान्त अनिवार्य है।

अर्द्धनग्न चित्र व अश्लील मुद्राएं विज्ञापन, चित्राहार चित्रमाला की विभिन्न मुद्राएं व हावभाव समाज को दूषित बना रहे हैं सिने पत्रिकाएं, अश्लील नावल, बल्यू फिल्में युवक व युवतियों को चरित्रहीन तथा दिशाहीन बना रहे हैं। अतः युवक युवतियों को निर्माण कार्यों तथा समाजसेवा कार्यों में अपना समय व शक्ति लगानी चाहिए। जनता को अश्लीलता तथा स्मैक आदि ड्रगज के विरुद्ध जन आंदोलन करना चाहिए।

आज भारत के प्रत्येक नगर व शहर में अश्लीलता अर्थात् जिसमफिरोशी तथा स्मैक आदि ड्रगज आदि का बोलबाला है श्रद्धानन्द नगर व श्रद्धानगर बाजार देहली में तथा बड़े-बडे होटलों में नग्न नृत्य, अश्लील मुद्राएं, पोशकालोनी में ऐश्वर्यमय रंगीन जीवन बितानेवाले युवक युवतियां जिस्म फिरोख्त का चरित्रहीन, अनैतिक धन्धा करते हैं। आए दिन समाचार पत्रों में शीर्षक पढ़नेको मिलते हैं। दो नम्बर की कमाई करनेवाले व्यापारी, अधिकारी, कर्मचारी इस अनैतिक व्यापार व व्यभिचार को बढावा देते हैं।

इसूरा स्मैक, हशीश, ब्राउन शुगर, हफीम, गांजा, चरस आदि नशे देश के बड़े-बड़े नगरों शहरों में बल पकड़ते जारहे हैं। ढाई अक्षरों का शब्द स्मैक ढाई वर्षों में जान ले लेता है। जीवनलीला समाप्त करनेवाले भयानक नशे ड्रगज आदि तथा बढती हुई अश्लीलता के विरुद्ध आर्यों की शिरोमणि सभा, सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा, प्रान्तीय सभाओं, आर्यसमाजों एवं आर्यवीर दल को जन जागरण, जन आन्दोलन, धरने आदि कार्यक्रम चालू करने चाहिएं।

भारत की राजधानी श्रद्धानन्द बाजार देहली में नृत्य की आड़ में अनैतिक कार्य व धन्धे सदा के लिए बन्द होने चाहिएं।

ओमप्रकाश कालड़ा मण्डलपति,
आर्यवीर दल जिला गुड़गांवां

शराब पीने से मानव दानव बन जाता है।

पंजाब में नई पहल

(लेखक : सुशीलकुमार शर्मा, जालन्धर)

आखिर पजाब के प्रमुख अकाली धड़ों में फिर प्रतीक्षित एकता स्थापित होगई। जिसके लिए जोरदार प्रयास किए जारहे थे। अकाली दल (मान) के अध्यक्ष श्री सिमरनजीतसिंह मान एक निर्विवाद नेता के रूप में उभरकर अकाली राजनीति के शीर्ष पर पहुंच गये हैं। उनकी यह सफलता निश्चितरूप से स्वागत योग्य है, लेकिन इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि उन्हें शीर्ष पर पहुचने मे उन खाडकू संगठनों का बडा हाथ है जिनके प्रति श्री मान का रवैया हमेशा से सहानुभूतिपूर्ण रहा है। आज स्थिति यह है कि खाड़कू जत्थेबंदिया अकाली राजनीति पर इस कदर हावी हैं कि कोई भी अकाली गुट या अकाली नेता उनकी उपेक्षा का साहस नही कर सकता। अब तो श्री प्रकाशसिंह बादल जैसे उदारवादी नेता भी खाड़कुओं की प्रशंसा करते नही अघाते। दूसरी ओर चन्द्रशेखर सरकार अकाली एकता से उत्साहित होकर पजाब में विधानसभाई चुनाव कराने की फिराक में है। सरकार की ओर से इस आशय के कई संकेत दिए जाचुके हैं, जिससे लगता है कि जल्दी ही इस गडबड ग्रस्त सीमावर्ती राज्य में राजनैतिक प्रक्रिया शुरु होनेवाली है। केन्द्र सरकार पंजाब समस्या पर कोई समझौता करने जैसी सम्भावना पर भी गहराई से विचार कर रही है। कुछ पर्यवेक्षकों का विचार है कि सरकार को चुनावों के लिए उपयुक्त वातावरण बनाये जाने पर अधिक जोर न देते हुए अविलम्ब राजनैतिक प्रक्रिया बहाल कर देनी चाहिए जिससे राज्य में लोकप्रिय सरकार के गठन का मार्ग प्रशस्त हो सके। इसके पीछे यह तर्क दिया जारहा है कि जैसे-जैसे समय निकलता जायेगा पजाब समस्या अधिक उलझती जायेगी।

पिछले दस वर्षों से पजाब की पवित्र भूमि पर हिंसा तथा अलगाववाद का भयावह खूनी दौर जारी है जिसने समूचे राष्ट्र को दहला कर रख दिया है। इस लम्बी रक्तिम अवधि के दौरान हजारों निरपराध लोग हिंसा का शिकार होचुके हैं तथा असख्य परिवार अपने जानोमाल की हिफाजत के लिए देश के अन्य भागों की ओर पलायन कर गये हैं। सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थिति अत्यन्त गम्भीर है। वहा प्रशासन नाम की कोई चीज दिखाई नही देती। लोगों में असुरक्षा की भावना तथा विस्थापन का भय बुरी तरह समाया हुआ है। इस दीर्घकालिक समस्या को सुलझाने के लिए हमारे राजनेताओं की ओर से अनेक प्रयोग तथा प्रयास किए गये लेकिन राजनैतिक सकल्प के अभाव में सभी विफल रहे। वास्तव में हमारे राजनेता (चाहे कही से भी और किसी स्तर के हो) राजनैतिक समीकरणों को ध्यान में रखे बिना किसी समस्या पर विचार कर ही नही सकते। सत्ता सुख का लाभ दिखाई देते ही समीकरण बनते बिगडते देर नही लगती। हमारे राजनेताओं की इसी मजबूरी का परिणाम है कि आज पजाब समस्या पहले से कही अधिक विकराल रूप लिए देश को धमका रही है। सन् १९८० में केन्द्र सरकार ने बादल सरकार को उसकी अवधि पूरी होने से पहले ही बर्खास्त कर दिया। सन् १९८१ में सत हरचन्द सिंह लौंगोवाल के नेतृत्व में अकाली दल ने अपनी मागों को लेकर 'धर्मयुद्ध' आरम्भ किया। इस धर्मयुद्ध के चलते पजाब को अनेक दुर्दिन देखने पड़े जिनका सिलसिला आज भी यथावत् जारी है। पिछले दस वर्षों में दो राज्य सरकारें बनी लेकिन अपना कार्यकाल पूरा करने से पहले ही आतंकवाद की भेंट चढ गईं। अक्टूबर ८३ में दरबारा सरकार बर्खास्त हुई और राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू हुआ। जुलाई १९८५ में राजीव-लौंगोवाल समझौता हुआ और सितम्बर ८५ में श्री बरनाला के नेतृत्व में अकाली सरकार सत्ता में आई। अनेक कारणो से राजीव-लौंगोवाल समझौता लागू न हो सका लेकिन केन्द्र सरकार से समझौता करने की कीमत संत हरचदसिंह लौंगोवाल सरीखे नेक दिल धार्मिक नेता को अपनी जान देकर चुकानी पडी। सन् ८७ मे स्वर्ण मन्दिर परिसर में पुलिस कार्रवाई के मामले को लेकर बरनाला सरकार का पतन हुआ और जून १९८७ में लागू हुआ राष्ट्रपति शासन आज भी जारी है। पिछले दस वर्षों से पंजाब में लगभग आधे समय तक राष्ट्रपति शासन लागू रहा और इस दौरान यहा कई गवर्नर बदले गये लेकिन प्रशासन विघटनकारियो को कोई विशेष चुनौती न दे सका, हिंसा का खूनी दौर बराबर चलता रहा।

यहा प्रश्न यह उठता है कि अगर वर्तमान परिस्थितियो मे पजाब में चुनाव होते हैं तो क्या सत्ता मे आनेवाली सरकार पजाब को आतंकवाद की गहरी अंधेरी गलियो में से निकाल पाने मे सक्षम होगी। क्या नया अकाली नेतृत्व जिसके सत्ता मे आने की अच्छी सम्भावनाएं हैं, सभी खाडकू सगठनों को राष्ट्र की मुख्य धारा के साथ जोडने में सफल होगा। क्या निर्दोष लोगो को हत्यायें रोकी जा सकेगी। अभी राष्ट्र प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर तथा श्री मान के बीच हुई वार्ता पर सतोष ही व्यक्त कर रहा था कि खाड़कुओ ने लुधियाना जिले के एक गाव मे हिन्दू समुदाय के बारह निर्दोष व्यक्तियों की निमम हत्या करके अपने घिनावने मसूबे स्पष्ट कर दिए। इससे एक बात साफ होजाती है कि श्री मान सभी खाडकू सगठनों पर अपना प्रभाव होने का दावा नही कर सकते। आज खाडकू सगठन जिस तरह भाषा, शिक्षा, व्यवसाय, खानपान तथा पहनावे के सम्बन्ध में अपने आदेश जारी करके उन्हे लागू करवाने पर आमादा हैं, और सारे प्रशासन की उनके सामने घिग्गी बंधी हुई है इससे तो कम से कम ऐसा नही लगता कि हम किसी लोकतान्त्रिक, धर्मनिरपेक्ष देश के नागरिक हैं। जहा प्रशासन नकारा होकर दिन काट रहा हो, चुन चुन कर न्यायाधीशो की हत्या करके न्याय व्यवस्था पंगु बनादी गई हो, सरकारी मीडिया तथा स्वतन्त्र प्रेस के नाम समाधि गीत लिख दिये गये हों वहां राजनैतिक प्रक्रिया के जरिए किस तरह निष्पक्ष चुनाव करवाये जा सकते हैं? जहां सविधान की प्रासगिकता पहले ही समाप्त होचुकी हो वहां उसमे संशोधन करके समस्या किस तरह हल की जा सकती है, यह हमारे राजनीतिज्ञ ही बेहतर जानते हैं। पजाब की पथक कमेटी ने भी पजाब समस्या पर किन्हीं शर्तों के अन्तर्गत बातचीत करने की इच्छा व्यक्त की है, लेकिन इन शर्तों को कोई भी लोकतान्त्रिक सरकार स्वीकार नही कर सकती। यह भी हो सकता है कि सीमावर्ती कुछ क्षेत्रों में सेना तैनात किए जाने के बाद खाडकू संगठन भारी दबाव में हों और वे सरकार को बातचीत का झांसा देकर थोडा समय लेना चाहते हों। सरकार के नर्म रुख का फायदा उठाकर वे दुबारा अपनी हिंसक कार्रवाइयां शुरु कर सकते हैं। केन्द्र सरकार को एक बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि पजाब की जुननी समस्या का कोई आनन-फानन समाधान विनाशकारी सिद्ध हो सकता है। यह लगभग निश्चित है कि खाड़कुओं के न चाहने पर कोई भी सरकार यहां अधिक देर नही चल पायेगी। इसलिए बडी सतर्कता के साथ इस दिशा में नीति निर्धारित की जानी चाहिए। वैसे भी सत्ता प्राप्ति के पश्चात् अकाली दल में बिखराव की परम्परा काफी पुरानी है, जो अपने आप में एक बड़ी समस्या है। यह ठीक है कि राष्ट्रपति शासन पजाब समस्या का समाधान नही है, लेकिन इसके अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प भी तो नहीं।

पजाब में चुनाव होने से पहले चुनाओं के लिए उपयुक्त वातावरण तो बनाना ही चाहिए। श्री मान पर सर्वोच्च अकाली नेता होने के नाते भारी जिम्मेदारी आयत होती है। अभी उन्हे पजाब के हिन्दू समुदाय का विश्वास जीतना है लेकिन श्री मान स्व-निर्णय के अधिकार की बात करके लोगों के मनो मे नई आशकाए पैदाकर रहे हैं। श्री मान को चाहिए कि वे अपने प्रभाव प्रयोग से पजाब में सुखद वातावरण बनाए जाने की दिशा में पहल करे। खाडकू सगठनों को भी पजाब समस्या पर केन्द्र से बातचीत करने के लिए राजी करना चाहिए। केन्द्र सरकार को भी चाहिए कि वह पजाब की सवैधानिक तथा न्यायोचित मांगों पर जल्द कार्रवाई करे परन्तु देश को तोडने वाली विघटनकारी शक्तियों तथा निर्दोष लोगों की हत्या करनेवालों से कोई समझौता नही हो सकता। ऐसी शक्तितों को अलग-थलग करके

(शेष पृष्ठ ६ पर)

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के स्वामित्व का विवाद निपटा : फैसला हरयाणा के हक में

हथीन, २४ जनवरी (निस)। हरयाणा दिल्ली की सीमा पर जिला फरीदाबाद में स्थित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का वर्षों से चला आरहा कानूनी विवाद राजस्व रिकार्ड में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नाम तहसील फरीदाबाद में २७-११-९० को इन्तकाल हो जाने से स्वामित्व का कानूनी विवाद समाप्त होगया है। हरयाणा पंजाब के नवम्बर १९६६ के विभाजन के बाद एक पंच फैसले में हरयाणा के हक में फैसला होने के बावजूद पंजाब सभा ने निर्णय नही माना और मामला न्यायालय में चला गया। विवादों का लाभ उठाकर इस दौरान ताकत और राजनैतिक जोड़-तोड़ से अनेक व्यक्तियों ने कब्जा कर लिया और संस्था के आर्थिक स्रोतों का निजी हितों में खुलकर उपयोग किया गया। इस कारण पिस्तौल और बन्दूक के बल पर खूनी मुठभेड़े हुई। इन मुठभेडों में श्रमिक नेता आदर्श सक्सेना एवं तथाकथित संचालक स्वामी शक्तिवेश को अपनी जान से हाथ धोना पडा। जिनका निर्णय अभी न्यायालयों मे विचाराधीन है।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की स्थापना तत्कालीन राष्ट्रीय नेता त्यागमूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दिल्ली के निकट निर्जन विरान जगह पर पहाड़ों के मध्य आर्यसमाज और गांधीजी के राष्ट्रीय आंदोलन मे योगदान देने के लिए की थी। मराय ख्वाजा गांव से ६५००/- रुपये में खरीदी लगभग ११०० बीघा जमीन १९१६ में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के रूप में विकसित हुई। अनेक देशभक्तों के संग्रहालय में रखे हुए दुर्लभ चित्र, स्मृति चिन्ह और उनकी डायरियां दीमको ने खराब करदी हैं। बहुत सा महत्वपूर्ण सामान लोग उठाकर ले गये। गोशाला में ७० गायों में से अब एक भी नही है। सन् १९८४ में गुरुकुल में एक एम्बेसडर कार, एक मारुति वैन, एक जोंगा गाड़ी, एक स्कूटर, एक मोटर साइकिल, एक एस्कार्ट ट्रेक्टर था अब वहा कोई सामान दिखाई नहीं देता। इस संवाददाता द्वारा क्षेत्र का दौरा करने से पता चला कि इस क्षेत्र में अनेक माफिया सरगनाओं ने अड्डे बना रखे हैं। क्षेत्र में लगभग एक दर्जन फैक्ट्रियां और डेढ दर्जन क्रेशर हैं जिन्होंने ग्रुप बना रखे हैं। इनमें आर्थिक शीतयुद्ध चलता रहता है जो गुरुकुल के प्रबंध को भी अपने ढग से प्रभावित करता है। अनेक राजनेता भी इस सोने का अण्डा देनेवाली मुर्गी को काबू करने के लिए जोड़-तोड़ करते रहते रहे हैं। गत मास अम्बाला की एक अदालत से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पक्ष में स्वामित्व का निर्णय होने और इंतकाल तहसील फरीदाबाद में होने से अब लगता है कि हरयाणा की सभा इस संस्था को ठीक प्रकार चलाने को उत्सुक है।

(दैनिक जनसंदेश से साभार)

सम्मानित करना परम कर्त्तव्य

(सार्वदेशिक यति मण्डल के प्रधान सन्तशिरोमणि का पत्र)

श्रीमान् माननीय हरयाणा सभा प्रधान, हरयाणा के आर्यनेता श्री चौ० प्रो० शेरसिंह जी को सम्मानित करने का प्रोग्राम बना है जो बहुत आवश्यक था। चौधरी जी हरयाणा के अधिकारों के लिए केन्द्रीय सरकार तथा पंजाब सरकार तथा अकालियों से लड़ते चले आ रहे हैं। इनको सम्मानित करना हरयाणा की जनता और विशेषकर आर्यों का तो परम कर्त्तव्य है। इस अवसर पर श्री चौधरी जी को कोई बड़ी धनराशि भी अर्पित की जाएगी। उस के लिए मठ की ओर से १८-१-९१ को रोहतक स्टेट बैंक का एक ड्राफ्ट आप की सेवा में डाक द्वारा भेजा है जो ५१०० रुपयों का है। इस धनराशि को उनको अर्पित करनेवाली राशि में सम्मिलित करने की कृपा करें।

इनका सारा जोवन देशसेवा तथा आर्यसमाज की सेवा में बीता है। ऐसे कर्तव्यपरायण, सहिष्णु ईमानदार नेता बहुत कम हैं।

इधर के हालात आप समाचार पत्रों में पढते ही रहते हैं जो दिन प्रतिदिन बिगडते ही जा रहे हैं। लोग प्रायः चिन्तित और भयभीत हैं। बहुत से ग्रामों से प्राय हिन्दू निकल गए हैं। जो आदमी सफर को जाता है वह जब तक लौटे नही उसकी चिन्ता ही रहती है। पता नहीं यह अवस्था कब तक चलेगी। १०-१५ कभी इससे अधिक लोग प्रतिदिन मारे जा रहे हैं। सब मठ वासियों की सादर नमस्ते।

सेवा में—
श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती
आचार्य महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर
जिला रोहतक (हरयाणा)

भवदीय
सर्वानन्द
दयानन्दमठ, दीनानगर
गुरदासपुर-१४३५३१
२१-१-९१

फरवरी मास में आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव

(१) आर्यसमाज खेड़की डा० बैरावास जि० महेन्द्रगढ ९,१० फरवरी, (२) मानपुर जि० फरीदाबाद ९,१०, (३) मौसा जि० फरीदाबाद १२,१३ (४) गोहाना शहर जि० रोहतक १३,१४ (५) गुरुकुल झज्जर रोहतक १५,१६,१७ (६) कवारी जि० हिसार १५,१६ (७) कवरिया वास तह० नारनौल जि० महेन्द्रगढ २३,२४ (८) गुरुकुल गदपुरी जि० फरीदाबाद २२,२३,२४ (९) बालसमन्द जि० हिसार २२,२३,२४ (१०) आयसमाज गुरुकुल मटिण्डू जि० सोनीपत २२,२३,२४ फरवरी (११) गुमाना (रोहतक) १५ से १७ फरवरी —सुदर्शनदेव आचार्य

आर्यनेता प्रो० शेरसिंह अभिनन्दन हेतु दान सूची

मन्त्री आर्यसमाज रादौर जि० यमुनानगर	१०१-००
" " दामला " "	१०१-००
सू० करतारसिंह आर्य बरौदा मार्ग गोहाना जि० रोहतक	१०१-००
चौ० सूरतसिंह खोखर सेवानिवृत्त अभियन्ता गोहाना जि० रोहतक	१०१-००
श्री राजेन्द्रलाल मल्होत्रा गोहाना जि० रोहतक	१०१-००
श्रीमती सुमित्रा आर्या मंत्री आर्यसमाज महर्षि दयानन्द विद्यालय जीन्द मार्ग रोहतक	५१-००
मन्त्री आर्यसमाज ठोल जि० कुरुक्षेत्र	२००-००
श्री सोहनलाल आर्यमन्त्री आर्यसमाज खेड़की जि० महेन्द्रगढ	१०१-००
श्री नन्दराम सैनी प्रधान आर्यसमाज झज्जर जि० रोहतक	५०१-००
मा० दीपचन्द आर्य कासनी द्वारा	
श्री हनुमानसिंह बीकानेर	१०१-००
श्री दीपचन्द आर्य ग्राम कासनी जि० रोहतक	१०१-००
श्री यशपाल सुपुत्र श्री दीपचन्द ग्राम कासनी जि० रोहतक	१०१-००
श्रीमती प्रकाशवती धर्मपत्नी श्री यशपाल " " "	१०१-००
श्री राजपाल सुपुत्र श्री दीपचन्द " " "	१०१-००
सूबेदार जयपालसिंह " " "	१०१-००
श्री जतरसिंह सुपुत्र चौ० मांगेराम ग्राम मोहम्मदपुर जि० रोहतक	१०१-००
श्री लखीराम आर्य गुड़गांव	१०१-००
श्री विजयकुमार आर्य साकेत नई दिल्ली	१०१-००
श्री छोटूराम मुख्याध्यापक झज्जर जि० रोहतक	१०१-००
श्री दयाराम आर्य खेड़ी " "	१०१-००
मुख्याध्यापक श्री छाजूराम आर्यनगर झज्जर जि० रोहतक	१०१-००
श्री जगदीशचन्द्र अमरसिंह " " " "	१०१-००
श्री अभयराम ग्राम कलोई सुरा जि० रोहतक	१०१-००
श्री जयपालसिंह आर्य भजनोपदेशक द्वारा	
ठा० प्रतापसिंह आर्य पूर्व सरपंच ग्राम बराणी जि० रोहतक	१०१-००
मा० चन्द्रभानु आर्य प्रधान आर्यसमाज जहाजगढ़ माजरा जि० रोहतक	१०१-००

जिन दानदाताओं ने इस निधि में धनराशि भेजने का वचन अंकित करवा रखा है, उनसे निवेदन है कि यथाशीघ्र अपना योगदान भेजने की कृपा करे जिससे अभिनन्दन समारोह की तैयारी आरम्भ की जावे।

—म० भरतसिंह
संयोजक आर्यनेता प्रो० शेरसिंह, अभिनन्दन समिति

कब होगी मुक्ति अंग्रेजी—शिकंजे से ?

बदलूराम गुप्त, सी–८/१०, माडल टाउन दिल्ली–११०००६

इसे देश का महादुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि कुछ अंग्रेजी भक्त लोग, विशेषकर तमिलनाडु वाले, अंग्रेजी-प्रयोग जारी रहना देश के लिए वरदान और उसके स्थान पर राष्ट्रभाषा हिंदी का आजाना एक अभिशाप समझते हैं। ऐसा कहते समय 13 अगस्त, 1990 को इन्दौर सम्मेलन में चार हिन्दीभाषी-राज्यों (मध्यप्रदेश, हिमाचलप्रदेश और राजस्थान) के मुख्य मंत्रियों के निर्णय जिनके अनुसार शासन के कार्यों में अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी का प्रयोग होगा और उन पर अंग्रेजी भक्तों की प्रतिक्रिया मेरे दिमाग में गूंज रही है।

उदाहरण के लिए 20 अगस्त 1990 को कुछ तमिल और कांग्रेस (आई) संसद सदस्यों ने विरोध में लोक सभा से यह कहकर वहिर्गमन किया कि उन पर हिंदी 'थोपी' जा रही है। तमिलनाडु के प्रमुख संसद सदस्यों और अन्य अहिंदी भाषी राज्यों के लगभग सात सांसदों ने 23 अगस्त, 1990 को भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री वी० पी० सिंह को एक पत्र भेजकर उस प्रस्ताव पर चिन्ता प्रकट की और उनसे यह आश्वासन प्राप्त कर लिया कि 'केन्द्रीय सरकार किसी राज्य पर कोई भाषा थोपी जाने का विचार नहीं कर रही'। अखिल भारतीय अन्ना द्रमुक की महामंत्री श्रीमती जयललिता ने भी मुख्यमंत्रियों के प्रस्ताव की निन्दा-गीत के सुर में सुर मिलाकर अपना कर्तव्य पूरा किया। उन्होंने तो यहां तक कह डाला कि मुख्य मंत्रियों के विचार पंजाब और कश्मीर के अलगाववादियों की भावना से किसी कदर कम नहीं हैं।

हिन्दी के विरोध में इस पूर्णतया अवांछित होहल्ला के बारे में जो कुछ कहा जाए सो थोड़ा है। एक विदेशी भाषा हटाकर अपनी ही राष्ट्रभाषा को स्थान देना अगर 'थोपना' कहा जाएगा तो इससे अधिक असंगत और अनुचित क्या होगा ? ऐसी ओछी सोच मूल्यों के प्रति विकृत भावना रखने वाले की ही हो सकती है।

वर्तमान स्थिति का अत्यन्त मूर्खतापूर्ण पहलू यह है कि लगभग सभी अहिंदी भाषी राज्यों ने अपने प्रशासन की भाषा के रूप में अपनी अपनी क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग आरम्भ कर दिया, और देश के राजनीतिक वातावरण में तनिक भी हलचल नहीं हुई। किंतु जब किसी हिंदी भाषी राज्य में अपनी भाषा का प्रयोग होता है तब अंग्रेजी भक्त कांप जाते हैं और देश भर में खतरे की घंटी बजाने लगते हैं। इस प्रकार अहिन्दी राज्यों के प्रति पक्षपात की प्रवृत्ति और हिंदी भाषी राज्यों के प्रति टकराओ जैसी स्थिति सभी लोकतन्त्रीय प्रतिमानों के विरुद्ध है। स्पष्ट है कि एक ही देश में लोगों के लिए दो अलग-अलग मानक नहीं हो सकते।

अब बहुत हो चुका। आखिर हिंदी भाषी राज्यों ने कौन सा ऐसा पाप किया है कि वे अपना काम अपनी भाषा में करने की उसी सुविधा से वंचित रहें, जिसका उपयोग अहिंदी-भाषी राज्य कर रहे हैं ? इन राज्यों के निवासियों ने ऐसा कौन सा अक्षम्य अपराध किया है कि वे द्वितीय श्रेणी के नागरिक बनाए जाकर अपने ही प्रशासन में भाग लेने से वंचित रखे जाएं क्योंकि प्रशासनिक कार्य आज भी एक विदेशी भाषा के महंगे और बोझिल माध्यम से किया जा रहा है ? इन राज्यों के सारे के सारे विद्यार्थियों ने ऐसी कौनसी भूल की है जो माफ नहीं हो सकती और वे ऐसी असंख्य मुसीबतें झेलने को बाध्य हैं जो शिक्षा संस्थाओं में अंग्रेजी का एक अनिवार्य विषय पढ़ाकर और उसे ही शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाकर उन पर ढाई जाती हैं, और जिनके कारण ही वे कालेजों में बहुतायत से असफल रहते हैं ? मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने का मूलभूत मानव अधिकार सर्वमान्य है और न्याय की बात तो यह है कि छात्रों को उनके इस जन्मसिद्ध अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता।

शिक्षाविशेषज्ञों की यह सुविचारित सम्मति है कि शिक्षा का उद्देश्य भली-भांति तभी पूरा हो सकता है जब वह मातृभाषा के माध्यम से दी जाए। कठिन विचार और दुस्साध्य तकनीकी अवधारणाएं सदा अपनी भाषा के माध्यम से ही भलीभांति ग्रहण की समझी और समझाई जा सकती है। दुर्भाग्य से ऐसी कोई भी बात निष्ठुर राजनीतिज्ञों के हृदयों को प्रभावित या द्रवित नहीं करती। उन्हें तो हर हालत में सत्ता से चिपके रहने की ही चिन्ता रहती है।

याद रहे कि राष्ट्रभाषा का प्रश्न ऐसा मौलिक और सारभूत प्रश्न है जिस पर किसी राष्ट्र की नियति अतत निर्भर होती है। इस प्रश्न का निर्णय लापरवाही से सरसरी तौर पर नहीं हो सकता। किंतु खेद है कि स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद से ही हमारे नेतृत्व का रवैया प्रत्येक महत्त्वपूर्ण मामले में ऐसा ही रहा है, चाहे वह धर्म-निरपेक्षता का हो या समाजवाद का, गोवध-निषेध का हो या मद्य-निषेध का, एक समान नागरिक संहिता बनाने का हो या कश्मीर पंजाब समस्या का हल हो। हमारे नेता आखिरकार कब तक राष्ट्रभाषा के अहम सवाल को समझने की कोशिश में लगे रहेंगे और समस्या से आमने सामने होने से इनकार करते रहेंगे ?

मूलभूत प्रश्न यह है कि अंग्रेजी में जन-सामान्य की दक्षता और क्षमता की वर्तमान वास्तविक स्थिति क्या है ? तथ्य तो यह है कि लगभग दो सौ साल तक एडी चोटी का पसीना एक करने के बाद भी अंग्रेजी राष्ट्र के हाशिये से भीतर नहीं घुस पाई, यह मुश्किल से केवल दो प्रतिशत लोगों तक ही पहुंच पाई है। ऐसी भाषा सदा-सदा के लिए लोगों के लिए लोगों के गले के नीचे कैसे उतारी जा सकती है ? हां, अगर सारे राष्ट्र को ही स्वतः विदेशी बने पाश्चात्य बौद्धिक बौनों और अदना लोगों की भीड़ में बदल देना चाहते हैं तो और बात है।

ससार में कोई भी देश अपनी भाषा अपनाए बिना अपनी पहचान नहीं बना सकता। यह एक ऐसी सच्चाई है जिससे इनकार नहीं किया जा सकता तथा जिस पर बहस नहीं हो सकती। समग्र मानवता के विचार और संस्कृति की दिशा में जो कुछ भी योगदान यह देश कर सका है, अपनी भाषाओं के माध्यम से ही कर पाया है। राष्ट्र की श्रेष्ठतम प्रतिभाएं अपनी भाषाओं के माध्यम से ही उभरी और चमकी हैं कालिदास, टैगोर, तुलसीदास, सूर, बंकिमचंद्र, प्रेमचन्द, ज्ञानदेव और अन्य तमाम महामनस्वियों की महान् साहित्यिक कृतियों के अनुवाद संसार की अनेक भाषाओं में हुए हैं, और सराहना करते हैं। हाल में दूरदर्शन द्वारा दिखाए गए दो प्रसिद्ध धारावाहिक "रामायण" और "महाभारत" अपनी कहानी आप कहते हैं। कोई ऐसी कृति जो साहित्यिक उत्कृष्टता के अतिरिक्त, चल-चित्र-निर्माण एवं प्रक्षेपण की उत्कृष्टता में भी उनके बराबर की, पासग में भी हो, प्रस्तुत कर सकना विश्व की मनीषा के लिए एक चुनौती है। अंग्रेजी के पक्षधर किसी भी कृति की डींग हांकते रहें, वह इनके आश्चर्यजनक रेकार्ड के सामने पानी ही भरती रहेगी।

एक बात और। अंग्रेजी के लिए उपलब्ध सभी टेकों और बैसाखियों के होते हुए भी सारे देश में इसके स्तर में सर्वतोमुखी ह्रास हुआ है। शैक्षिक संस्थानों कार्यालयों और अन्य में बेकारी अंग्रेजी का जो स्वरूप बोला-सुना जाता है, वह किसी के लिए भी सम्मानप्रद नहीं है, बल्कि वह राष्ट्र के सुनाम पर निश्चित कलंक है। किंतु क्या कभी हमने जरा ठहर कर इस मनहूस हालत के कारणों पर विचार करने का कष्ट किया है ? कारण खोजना मुश्किल नहीं है। संक्षेप मे कहें, तो सारे के सारे विद्यार्थियों को अनिवार्यतः कोई भी विदेशी भाषा प्रभावी ढंग से और कुशलतापूर्वक सिखाना हर्गिज संभव नहीं है। यही समस्या का मूल है। आजादी मिलने के बाद देश में शिक्षा का अत्यधिक विस्तार हुआ है, यहां तक कि यह लगभग बेकाबू और अत्यंत कठिन काम हो गया है, और अगर इसके लिए जिम्मेदार व्यक्ति अपना दिल साफ रखते हुए सचाई बरतें तो कह सकते हैं कि समस्या का कोई संतोषजनक समाधान नहीं हो पाया। फिर भी स्वेच्छापूर्वक अंग्रेजी सीखने-सिखाने के बारे में कोई आपत्ति नहीं हो सकती और हमारे जैसे स्वतन्त्र देश में यही अंग्रेजी का उचित स्थान हो सकता है। कोई भी समझदार और तर्कशील व्यक्ति यह नहीं चाहेगा कि अंग्रेजी यहां से बोरियां-बधना समेटकर चली जाए।

अंग्रेजी के पक्ष में नेहरु के आश्वासन की प्रायः चर्चा की जाती है। किंतु स्पष्ट है कि वह इस विषय में अंतिम निर्णय नहीं समझा जा सकता और न सदा-सदा के लिए लागू ही किया जा सकता है। राष्ट्रीय जीवन और वास्तव में किसी भी स्तर का जीवन गतिहीन नहीं होता। उसमें सदा एक प्रवाह होता है। वह एक सतत प्रगतिशील और विकासमान प्रक्रिया है और परिस्थिति की आवश्यकताओं के अनुसार, उसके प्रति नई दृष्टि और नई प्रवृत्ति आवश्यक होती है। राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा अथवा राजभाषा के प्रश्न पर शासन की नौका का सुचारु संचालन निर्भर करता है। इसलिए यह सही और उचित ही है कि इसका फिर से ऐसी सचाई और ईमानदारी के साथ आकलन और मूल्यन हो जैसी समस्या की गंभीरता की मांग है।

प्रत्येक समझदार व्यक्ति यह भी जानना चाहेगा कि देश के लोगों में से आखिर तमिल लोग ही भाषा-समस्या के प्रति इतने अधिक संवेदनशील क्यों हैं ? यदि लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति उनमें तनिक भी आदर भाव है तो वे सारे राष्ट्र को अपने अंग्रेजी के प्रति अनुचित प्रेम से, बल्कि मोह से, कैसे मुट्ठी में कर सकते हैं ? इस प्रकार से वे सारे राष्ट्र को बन्धक नहीं रख सकते। यही अवसर है कि वे इस मामले में शेष राष्ट्र के साथ मिलकर देश को अंग्रेजी के शिकंजे से छुड़ाने में सहायक हों।

प्रशासन में और शिक्षा संस्थानों में शिक्षा के माध्यम के रूप में विदेशी भाषा के प्रयोग में उसका सांस्कृतिक आधिपत्य निहित होता है, और कुल मिलाकर यह समझ लेना अत्यंत आवश्यक है कि किसी देश पर सांस्कृतिक आधिपत्य दूसरे देश के राजनीतिक अधिपत्य से भी अत्यन्त बुरा होता है। सांस्कृतिक उद्धार के बिना देश की स्वतंत्रता अधूरी ही रहेगी। फिर भी, यह एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है जो रुकावट डालने वालों की सारी झांसा-पट्टी के बावजूद अपने वांछित लक्ष्य तक पहुंचे बिना नहीं रहेगी। यदि अंग्रेजी देश के लिए इतनी ही अनिवार्य है तो स्वयं तमिलनाडु राज्य इसे छोड़कर तमिल भाषा में क्यों काम करता है ?

भाषा समस्या हल करने के लिए यदि अधिकारियों में अपेक्षित इच्छाशक्ति और संकल्पशक्ति होती तो तेतालीस वर्ष का समय निश्चित ही पर्याप्त था। सभी मोर्चों पर अत्यन्त हठधर्मितापूर्वक अपनाई हुई अन्यमनस्कता की वर्तमान नीति ने देश को वर्तमान दयनीय स्थिति में ला छोड़ा है। अंतिम विश्लेषण का परिणाम यह है कि यह सब सत्ता का खेल है। इतने सालों तक सत्ता का निर्बाध उपभोग करते रहने के बाद अंग्रेजी-पढ़ा विशिष्ट वर्ग जिसने इस समय पतवार पकड़ रखा है, उसे आसानी से छोड़ देगा, ऐसी आशा नहीं की जा सकती। उसे राष्ट्र का ध्यान बिल्कुल नहीं है और वह अपनी पकड़ बनाए रखने के लिए अंत तक लड़ेगा। उसके विरुद्ध दृढ़ निश्चय पूर्वक संघर्ष हो तभी वह दब सकता है।

इस मामले में गांधी जी ने जो कहा था, उससे अधिक निर्णायक कुछ भी कहना संभव नहीं है। आइए जरा ठहरकर उनके दूरदर्शी विचारों पर ध्यान दें। उन्होंने निर्णायक मोड़ देते हुए जोर देकर कहा था, "स्वराज्य की अपनी अवधारणा के ऊपर ही हमारा निर्णय निर्भर है। यदि यह स्वराज्य केवल अंग्रेजी जाननेवाले भारतीयों का और केवल उनके लिए ही है, तो निस्संदेह अंग्रेजी सर्वसामान्य माध्यम है ही। किन्तु यदि यह करोड़ों भूखे, निरक्षर स्त्री पुरुषों और दलित अछूतों का और उनके लिए है, तो केवल हिंदी ही एक सर्वमान्य भाषा हो सकती है।"

किंतु लगता है कि हम गांधी जी की शिक्षाओं का केवल मौखिक सम्मान ही करते हैं, उनका अनुसरण केवल वहीं तक करते हैं, जहां वे हमारी सुविधा के अनुकूल हों।

—दैनिक "नवभारत टाइम्स" के २०-११-९० के अंक में छपे लेख का विस्तार

—आर्यसमाज सरस्वती विहार, दिल्ली-११००३४ द्वारा प्रचारित

राष्ट्रभाषा की चेतना जगाएं !

"संस्कृति तब तक गूंगी रहती है, जब तक राष्ट्र की अपनी वाणी नहीं होती, राष्ट्रभाषा नहीं होती। राजनीतिक पराधीनता की हमारी हथकड़ी-बेड़ी जरूर कटी है, किन्तु अंग्रेजों और अंग्रेजियत के रूप में हमारे मनोजगत् में जो दासता के चिह्न विद्यमान हैं, उन्होंने हमें निष्क्रिय बना रखा है। भाषा परिधान-मात्र नहीं, राष्ट्र का व्यक्तित्व है। हमारे बहुभाषी देश के ही समान रूस भी बहुभाषी देश है, जिसमें ४२ भाषाएं बोली जाती हैं, किन्तु उनकी राष्ट्रभाषा रूसी है। हमारी संस्कृति के गोमुख से निकली हुई सब भारतीय भाषाएं हमारी हैं, किन्तु उनमें अपनी व्यापकता, आरम्भ से ही जनविद्रोह और जनसंघर्ष की वाणी देते रहने के कारण एवं जीवन के हर क्षेत्र को सम्हालने में समर्थ होने के कारण हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। केवल संविधान में लिख देने मात्र से यह बात पूरी नहीं हो पाती, इसे राष्ट्र के जीवन में प्रतिष्ठित करना होगा, अन्यथा स्वतंत्रता का क्या मूल्य है ? विश्व-चेतना जगाने के पहले अपने देश में राष्ट्रभाषा की चेतना जगाए।"

—महादेवी वर्मा

(शेष पृष्ठ ३ का)

उनका दमन करना ही उचित है। हमारे भारतीय दर्शन में अहिंसा को परम धर्म स्वीकार किया गया है, किन्तु इस सिद्धान्त की सार्थकता तभी है जब सभी इसे स्वीकार करें। मासूम लोगों की रक्षा के लिए आततायियों का दमन करना आवश्यक होजाता है जिसे किसी रूप में अनुचित नहीं ठहराया जा सकता। हमारे राष्ट्रीय जीवन में जब तक इस भावना को बल मिलता रहेगा कि दबाव के जरिए किसी भी उचितानुचित बात को मनवाया जा सकता है तब तक परिस्थितियों में सुधार आना कठिन है। दबाव पर टिकी हुई इस राष्ट्रीय व्यवस्था को बदलकर ही हम देश को आगे ले जा सकते हैं, अन्यथा कुछ समस्याएं इसी तरह जनमानस को उद्वेलित करती हुई अनेक नई समस्याओं को जन्म देती रहेंगी और निर्दोष मानवता का दामन इसी तरह रक्तरंजित होता रहेगा। इति।

शांतिः शांति शांतिःओ३म्

आर्यनेता प्रो० शेरसिंह अभिनन्दनग्रंथ की तैयारी

दिनांक २०-१-९० को डा० रणजीतसिंह जी की अध्यक्षता में म० भरतसिंह वरिष्ठ उपप्रधान, चौ० सूबेसिंह जी सभामन्त्री, डा० सुदर्शन देव वेदप्रचाराधिष्ठाता, प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार उपस्थित हुए। विचार विमर्श के उपरान्त सर्वसम्मति से यह निश्चय हुआ कि अभिनन्दन ग्रन्थ की रूपरेखा इस प्रकार होगी—

संदेश

प्रथम खण्ड :—जीवन परिचय

द्वितीय खण्ड :—प्रो० साहब के राष्ट्रीय समस्याओं में तथा राष्ट्रीय सम्मेलनों के सम्बन्ध में लेख

तृतीय खण्ड :—प्रो० शेरसिंह जी के पत्र

चतुर्थ खण्ड :—प्रो० शेरसिंह जी के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के लेख

पंचम खण्ड :—दानी महानुभावों के चित्र और प्रो० साहब से सम्बन्धित चित्र

इसमें से प्रथम खण्ड का लेखन का कार्य प्रो० साहब से सम्पर्क करके डा० रणजीतसिंह जी करेंगे।

द्वितीय खण्ड से सम्बन्धित सामग्री संकलन का कार्य श्री डा० सुदर्शनदेव जी को सौंपा गया।

तीसरा प्रो० शेरसिंह जी से सम्बन्धित सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक लेख तथा संदेश मंगवाने का दायित्व प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार को दिया गया।

चौथा प्रो० शेरसिंह से सम्बन्धित पत्रों का कार्य डा० रणजीत सिंह को दिया गया।

पांचवां दानी महानुभावों के चित्र तथा अन्य चित्र सभामन्त्री एवं वरिष्ठ उपप्रधान को सौंपा गया।

इसमें यह भी निश्चय हुआ कि यह सामग्री २८ फरवरी, ९१ से पूर्व सभा कार्यालय में आजानी चाहिए।

इस सम्पूर्ण सामग्री का सम्पादन करना डा० रणजीतसिंह जी का दायित्व है।

मुद्रण का कार्य भी डा० रणजीतसिंह जी को सौंपा गया।

इस ग्रंथ पर होनेवाले व्यय को जुटाने का कार्य डा० रणजीत सिंह पर होगा।

सीता जन्माष्टमी पर गीत

(१)

सुन्दर भोजन वस्त्र, राजसुख जिसने छोड़ा।
सास, ससुर, परिवार-प्रेम का बंधन तोडा॥
हठ कर पति के संग विपिन में रहना चाहा।
सह कर कष्ट कठोर पतिव्रत धर्म निबाहा॥

(२)

भारत के कवि कीर्ति न जिसकी कह थकते हैं।
उस देवी को भूल कभी क्या हम सकते हैं॥
जब तक हिन्दू जाति धरातल पर जीवित है।
तब तक उसकी कीर्ति-कथा सादर सचित है॥

(३)

हृदय में यदि जाति-द्वेष का विष न बहेगा।
देश-भेद-भय सच्चरित्रता में न रहेगा॥
तो उस का सम्मान सम्य संसार करेगा।
मान उसे आदर्श नारि-जीवन सुधरेगा॥

(४)

जनकसुता, सुन्दरी, शुभा, साध्वी सुकुमारी।
सती, सुशीला, सदाचारिणी, विदुषी नारी॥
रामप्रिया, पति-भक्ति-भूषिता थी वह सीता।
अब तक है हृदयस्थ, काल यद्यपि अति बीता॥

(५)

दशरथ ने युवराज, राम को करना चाहा।
राज्य-भार अधिकतर उन्हीं पर धरना चाहा॥
सुनकर प्रजासमेत राजकुल ने सुख माना।
पर कैकेयी रूठ गई, उसने हठ ठाना॥

(६)

भूप मनाने लगे—'प्रिये, मांगो, मैं दूंगा।
करता हू प्रण अटल, कहोगी वही करूंगा'॥
पति को वश में जान, कहा उसने, ये वर दो।
सच्चे हो तो सफल-मनोरथ मुझ को कर दो॥

(७)

भरत बने युवराज, राम हों कानन-वासी।
सुनते ही गिर पड़े भूप, छागई उदासी॥
पितु के प्रण की बात राम ने जब सुन पाई।
राज छोड़ वन चले राम लछमन दोउ भाई॥

(८)

रो कर हाय, अचेत गिरी कौशल्या माता।
बढ़ा हर्ष में शोक, विमुख होगया विधाता॥
सुना शोक-संवाद, विकल सीता उठ धाई।
करती हुई विलाप, राम के सम्मुख आई॥

(९)

निष्ठुर बनो न आर्यपुत्र करुणा उर धारो।
दासी को ले साथ नाथ, वन ओर सिधारो॥
वन के कष्ट सहर्ष आपके साथ सहूँगी।
नाथ तुम्हारे बिना स्वर्ग में भी न रहूगी॥

(१०)

सुख से पति के साथ बसूंगी निर्भय वन में।
कुटिया का आनन्द कहां है राजभवन में॥
साथ ले चलो नाथ, नही जीवित न रहूँगी।
कैसे विषम-वियोग-दुसह दुख हाय, सहूगी॥

(११)

सुन सीता के वचन राम श्रद्धा में साने।
उमड़ा प्रेम समुद्र, लगे उसको समझाने॥
दुर्गम वन का भूरि भयानक दृश्य दिखाया।
पशु,निशिचर,गिरि,नदी आदि से बहुत डराया॥

(१२)

पर पति-प्रेम-सरोज-भ्रमर सीता के मन में।
कंटक-भय ने नही विषाद बढ़ाया वन में॥
हठ कर पति के संग रही वह वन वन फिरती।
राक्षस द्वारा कभी विषम संकट में घिरती॥

(१३)

खा केवल कदमूल फल, भूपर सोती थी।
वल्कल वस्त्र लपेट न मन-मलिना रोती थी॥
वन के दारुण कष्ट धैर्य धर कर सहती थी।
पतिसेवा में मग्न-प्रसन्न सदा रहती थी॥

(१४)

पचवटी में पहुंच राम ने कुटी बनाई।
सीता देवी सहित बसे वे दोनों भाई॥
धोखा देकर उन्हें चोर लकेश अभागा।
सूनी पाकर कुटी जानकी को ले भागा॥

(१५)

बिनती करने लगा—कहा, "बन मेरी रानी"।
पर सीता ने झिड़क कहा—'सुन रे अज्ञानी॥
चोर, नीच, निर्लज्ज चुरा कर लाया मुझ को।
इसका दण्ड कठोर अवश्य मिलेगा तुझ को'॥

(१६)

पापी मेरे साथ मृत्यु आई है तेरी।
अब तू अपने सर्वनाश में समझ न देरी॥
रहा मानना दूर, बात सुन भी न सकूंगी।
प्राणेश्वर से रहित कभी मैं जी न सकूंगी॥

(१७)

सागर में पुल बांध उतरकर डाला डेरा।
वानर-सेन, सबंधु राम ने लंका घेरा॥
बेटा-बन्धु-समेत दुष्ट रावण को मारा।
मिला अलौकिक सती जानकी को छुटकारा॥

(१८)

वन-निवास की अवधि वर्ष चौदह जब बीते।
कहा राम ने—'चलो अवध हे लक्ष्मण सीते'॥
सीता लक्ष्मण राम अयोध्या में फिर आये।
मिलकर जननीबधु, मित्र से अति सुख पाये॥

(१९)

निष्कलंक सच्चरित जानकी ने दिखलाया।
पड़ रावण के हाथ सतीत्व स्वधर्म बचाया॥
दृढ़ पतिव्रता भारतीय ललना हैं जैसी।
पृथ्वी भर के किसी देश में कही न वैसी॥

(कविवर श्रीरामनरेश त्रिपाठी)

हैदराबाद के सत्याग्रहियों की सम्मान पेंशन के संदर्भ में

हैदराबाद सत्याग्रह १९३८-३९ के जिन ४१ सत्याग्रहियों की पेन्शन सुप्रीम कोर्ट से १७-७-९० को स्वीकार हुई थी, उसका भुगतान सुप्रीम कोर्ट ने ३ मास के भीतर-भीतर करने के आदेश दिये थे और पेन्शन भी १-८-८० से ही देने के आदेश दिये थे। परन्तु भारत सरकार के गृहविभाग के कर्मचारी ८-१० केसों में तरह-२ के मामूली आपत्तियां लगाते रहते हैं। अब पता चला है कि यह लगभग २०-२-९१ तक दे दी जायेगी।

हैदराबाद के दूसरे जिन ५८ सत्याग्रहियों का मुकदमा (रिट) सुप्रीम कोर्ट में दाखिल की थी, उसकी पेशी २१-१-९१ थी। इस पेशी पर तो स्टाम्प जो लगना था वह माफ कर दिया गया। अगली पेशी १२ दिन में लग जायेगी और हमारे वकीलों का ऐसा अनुमान है कि अप्रैल मई तक इस केस का भी फैसला हो जायगा। इस केस में जो आगामी पेशी लगेगी उसकी सूचना सर्वहितकारी में दे दी जायेगी।

महाशय भरतसिंह
संयोजक हैदराबाद स्वतन्त्रता सेनानी सम्मान
पेन्शन समिति (हरयाणा) दयानन्द मठ
रोहतक

'वेद ऋचाएं गूंज उठें'

वेद महान् अपौरुषेय है,
ईश्वरीय शुचि ज्ञान है।
मानवता की विमल विभूति वे,
सद्प्रेरक विज्ञान हैं।
देशकाल व इतिहासों की,
सीमाओं से हैं बाहर।
वेद ज्ञान की गरिमा से,
मानव उन्नति करता सत्वर।
सभी सत्य विद्याओं का है,
पुस्तक दिव्य हमारा वेद।
आदिकाल से पावन गंगा—
धर्म की रहा बहाता वेद।
मंगलमय हो जीवन जन का,
सदा सफलता शुचि सरसे।
जन-जन में नवजीवन आए,
वेदाऽमृत अम्बर में बरसे।
दिव्य ज्ञान के पुञ्ज वेद हैं,
जिनसे होता जग कल्याण।
सत्यं-शिवम्-सुन्दरता पूरित,
होता जन-मानस निर्माण।

गौरव मण्डित वेद हमारे,
करते कण-कण का उत्थान।
सुख-समृद्धि भरा जीवन हो,
करके वेद सुधा का पान।
ज्योतिर्मयी ऋचाओं से यह,
ज्योतित हो अब सब संसार।
पुनः प्रकाशित जन का पथ हो,
क्षत विक्षत हो तिमिरागार।
वेद ऋचाएं गूंज उठें फिर,
धरती के शुचि प्रांगण में।
सामगान की मृदुल लहरियां,
लहराएं भू-आंगन में।
शाश्वत ज्ञान पुनः प्रस्थापित,
हो सारे महिमण्डल में।
पंथ तथा पाखण्ड-मतान्तर,
भस्मभूत हो रविमण्डल में।
'कृण्वन्तोविश्वमार्यम्' से,
गुंजित हो सम्पूर्ण धरा।
सुख-समृद्धि-सफलता-समता-
से हो पावन वसुन्धरा॥

राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० २३२०/७३ फोन नं० ७४९१२ सृष्टिसंवत् १,९६, ०८, ५३, ०९०

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक १२ १४ फरवरी, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

ऋषि बोध विशेषांक

दयानन्द-जन्म दिन

अथवा

दयानन्द-बोधरात्रि फाल्गुन बदि १४

वीर छन्द

विश्वविदित गुजरात देश में, टङ्कारा इक सुन्दर ग्राम।
उसमें था औदीच्य ब्राह्मणों, का कुल बहुश्रुत एक ललाम॥
पुत्र लालजी के कर्सनजी, थे उसके मुखिया अभिराम।
महादेव में अविचल श्रद्धा, उनकी रहती आठों याम॥१॥
उनके कुलदीपक दयालजी, वे जन्मे अति प्रतिभावान्।
शिवरात्रि-व्रतपूजन में वे, पित्राज्ञा से श्रद्धावान्॥
शिवमन्दिर में निशि भर जागे, अटल ध्यान हो निष्ठावान्।
पर शिवपिण्डी पर चूहे की, लीला देख हुए हैरान॥२॥
बोध हुआ उनको तब ही से, हो नहीं सकता शिव पाषान।
है यह जगती तल में फैला, जड़-पदार्थ-पूजा अज्ञान॥
निराकार शिव की पूजा ही, है वेदोक्त सनातन ज्ञान।
इसी ज्ञान की महिमा से वे, दयानन्द बन गए महान्॥३॥

रुचिरा

उस ही दिन से शिवरात्री भी, बोधरात्रि विख्यात हुई।
बोधदान से आर्यजनों को, महिमा उसकी ज्ञात हुई॥
पर्वरूप में तब ही से वह, जनता में सुप्रसिद्ध हुई।
उसे मनाकर आर्यमण्डली, वास्तव-ज्ञान-समृद्ध हुई॥४॥

(प० सिद्धगोपाल कविरत्न)

इस संसार में नाना प्रकार की साधारण घटनायें सर्वसाधारण के समक्ष प्रतिदिन होती रहती हैं, जनसाधारण की दृष्टि में वे कोई महत्त्व नहीं रखती। जनता एक क्षण में उन पर दृष्टिपात करती है और दूसरे क्षण में उनको भूल जाती है। किन्तु यही साधारण घटनायें महापुरुषों के जीवन में महापरिवर्तन उत्पन्न कर देती हैं। इतिहास साक्षी है कि अति साधारण घटनाओं ने जगत् में बड़ी-बड़ी क्रान्तियां कर दी हैं।

साधारण रोगियों, वृद्धों, शवों (मुर्दों) की ले जाई जाती हुई रथियों और संन्यासियों को सहस्रों जन प्रतिदिन देखते हैं, किन्तु इन्हीं साधारण दृश्यों ने शाक्य राजकुमार सिद्धार्थ को वह बोध प्रदान किया जिसका प्रभाव संसार के आधे मनुष्यों पर अब तक विद्यमान है। इन्हीं दृश्यों से उद्बुद्ध बुद्ध की दया ने करोड़ों प्राणियों की निर्दय रक्तपात से रक्षा करके संसार में करुणा और सहानुभूति का स्रोत बहाया था।

वृक्षों पर से फलों को गिरते हुए नित्य ही लाखों मनुष्य देखते हैं, किन्तु आइज़क न्यूटन की दिव्य दृष्टि ने एक वृक्ष से फल के पतन को देखकर पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के नियम का साक्षात्कार किया।

बटलोई की भाप अपने ऊपर के ढक्कन को अनेक मनुष्यों के नेत्रों के सामने हिलाती रहती है, किन्तु न्यूकोमेन की दूरगामिनी बुद्धि ही उसमें वर्तमान वाष्प-इंजन का बीज देख सकी।

वृक्ष के पत्रों में से छनता हुआ सूर्य का आलोक बहुधा मनुष्यों की दृष्टि के सामने आता रहता है, किन्तु इटली निवासी पोर्टा महानुभाव ने एक वृक्ष के नीचे मध्याह्न के विश्राम करते हुए इसी दृश्य को देखकर आलोक चित्र (फोटोग्राफी) का मूल सिद्धान्त ढूढ निकाला।

इसी प्रकार की एक घटना आज हमारे प्रस्तुत प्रकरण से सम्बन्ध रखती है, जिसने वर्तमान शताब्दी के भारत के धार्मिक इतिहास में अपूर्व क्रान्ति उत्पन्न करदी।

गुजरात प्रायद्वीप के मोरवी राज्य में मछुकाटा के इलाके में 'टङ्कारा' एक ग्राम है। सम्प्रति यह ग्राम बड़ोदा राज्य के अन्तर्गत है। उसमें गुजराती ब्राह्मणों की औदीच्य शाखा का दाल्भ्यगोत्रीय एक समृद्ध सामवेदी कुटुम्ब चिरकाल से वास करता था। उसकी अल्ल त्रिवेदी थी। शिवपुराणोक्त शैवसम्प्रदाय में इस कुल की असीम आस्था थी। वह बड़ी भक्ति से कैलाशाधिपति महादेव की पूजा-अर्चा में तत्पर रहता था और शैवों के शिवरात्री पर्व को बड़े समारोह से मनाकर विधि-अनुसार व्रत रखता था। प० करसनजी लालजी तिवारी इस कुटुम्ब का प्रमुख पुरुष था। तिवारी त्रिवेदी पद का अपभ्रंश है और करसनजी के पिता का नाम लालजी था। करसनजी के कई सन्ततियां थी। उनमें से उनके एक पुत्र का नाम दयाराम वा दयालजी था। दयालजी बड़ा प्रतिभाशाली बालक था। ५ वर्ष की अवस्था में उसने देवनागरी अक्षर सीखकर बहुत से स्तोत्र और श्लोक कण्ठाग्र कर लिए थे। आठवें वर्ष उसका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ और वह अपने सम्प्रदायानुसार सन्ध्यावन्दनादि कर्म करने लगा। उसके पिता ने सामवेदी ब्राह्मण होने पर भी रुद्राष्टाध्यायी से युक्त होने के कारण उसको यजुर्वेद कण्ठाग्र कराया था और पार्थिव पूजन आदि का उपदेश दिया था। चौदह वर्ष की अवस्था में दयालजी को नियमपूर्वक शैव मत की दीक्षा देने की तैयारी की गई और शिवरात्रि की महारात्रि का पर्व इसके लिए उचित चुना गया। गुजरात देश में शिवरात्रि का पर्व माघ बदि १३ को होता है और उत्तर भारत में फाल्गुन बदि १४ को यह पर्व मनाया जाता है। इस अन्तर का कारण यह है कि दक्षिण भारत में अमावस्यान्त और उत्तर भारत में पूर्णिमान्त मास की गणना प्रचलित है। संवत् १८९४ विक्रमी की शिवरात्रि को दयालजी नियमपूर्वक व्रत रखकर रात्रि जागरण के लिए पिता के साथ ग्राम से बाहर वर्तमान अपने कुल के शिवमन्दिर में गया। रात्रि के प्रथमार्द्ध की पूजा के पश्चात् उसके पिता आदि निद्रा के वशवर्ती होगये, किन्तु श्रद्धालु बालक दयालजी भक्ति के आवेश में आंखों पर जल के छींटे मार-मार कर जागता रहा। कुछ देर पश्चात् वह क्या देखता है कि एक मूषक (बालक की मातृभाषा गुजराती में उसका नाम 'ऊंदर' था) शिव की पिण्डी पर आकर चढावे के अक्षत आदि खाने के लिए उछल-कूद मचाने लगा। दयाल जी के बाल हृदय में उसको देखकर शङ्काओं का समुद्र उमड़ पड़ा। वह अपने मन में सोचने लगा कि शिव तो पुराण में विकराल गणों, पाशुपत अस्त्र और त्रिशूल से युक्त, वर और शाप देने में समर्थ, सर्वशक्तिमान् वर्णित है। यह कैसे सम्भव है कि अपनी मूर्ति पर से वह इस चूहे को भी नहीं हटा सकता? इस आशंका ने दयालजी

को तर्कणा शक्ति में ऐसा आघात-प्रतिघात उत्पन्न किया कि उसी क्षण से उसको पाषाण की पिण्डी के शिव न होने का निश्चय हो गया और उसने उसी समय सत्य शिव की गवेषणा का सङ्कल्प धारण कर लिया। उसने तत्काल अपने पिताजी को जगाया और अपनी शङ्का उनसे निवेदन की। उन्होंने उसकी शङ्का के समाधान का नाना प्रकार से उद्योग किया, किन्तु दयालजी का सन्देह निवृत्त न हुआ, तब उसने अपने मन में यह व्रत दृढ कर लिया कि मैं शिव साक्षात्कार किये बिना उसका पूजन कदापि न करूंगा।

चूहे की इस क्षुद्र घटना ने ही दयालजी के दयानन्द बनने का सूत्रपात किया। आगे की घटनावली केवल उसकी सहायक मात्र थी, वह क्रिया-प्रतिक्रिया की क्रममात्र थी। वस्तुतः इस शिवरात्रि ने ही दयानन्द को बोध प्रदान किया था और वही दयानन्द के जीवन भर के मूर्तिपूजा के विरुद्ध विकट संग्राम का आदि कारण थी। इसीलिए उसको आर्यसमाज के इतिहास में 'दयानन्द-बोधरात्रि' कहते हैं और आर्यसामाजिक परिवारों में उस दिन प्रत्येक वर्ष दयानन्द बोधरात्रि नाम का पर्व मनाया जाता है। शायद इस समय, जबकि ऋषि दयानन्द के उद्योग ने मूर्तिपूजा के विश्वास को जड़ से हिला दिया है, साधारण दृष्टि में दयानन्द बोधरात्रि का उतना महत्त्व न जचे, किन्तु आर्यसमाज के आचार्य के कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण होने से पूर्व की मूर्तिपूजा की दशा पर जब हम दृष्टिपात करते हैं तो दयानन्द बोधरात्रि के प्रभाव का पूर्ण चित्र हमारे हृदय-पटल पर अङ्कित हो जाता है। उस समय मूर्तिपूजा के विरुद्ध एक शब्द का भी उच्चारण हिन्दू धर्म के मूल पर कुठाराघात समझा जाता था और ऐसा करनेवालों को नास्तिक की उपाधि तत्काल मिलती थी। महाभारत युद्ध के पश्चात् वेदानुयायियों में अनेक सिद्धान्तों पर मतभेद रखनेवाले बहुत से मतप्रवर्तक उत्पन्न हुए हैं, किन्तु वेद के प्रमाणों के आधार पर मूर्तिपूजा के खण्डन का गौरव वेद के अद्वितीय भक्त, आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द को ही प्राप्त है। ऋषि दयानन्द के आविर्भाव से पूर्व मूर्तिपूजक जनता मूर्तियों को साक्षात् उपास्यदेव मानकर ही पूजती थी और अब तक सर्वसाधारण अज्ञ जनों की यही भावना है। किन्तु ऋषि दयानन्द के मूर्तिपूजा का प्रबल परिहार करने पर सनातनी पण्डितों ने इस नवीन युक्ति का आश्रयण आरम्भ किया था कि मूर्तिया तो केवल चित्त की एकाग्रता का साधन मात्र हैं। वे मूर्तिपूजा के अर्थ मूर्तेः पूजा=मूर्ति की पूजा छोड कर मूर्तौ पूजा=मूर्ति में पूजा करने लगे। परन्तु दयानन्द की दीर्घ दृष्टि ने खूब ताड़ लिया था कि ये युक्तिया पुजारियों के द्रव्यापहरण के हथकण्डे हैं और अपने अनुयायियों की बुद्धियों को जड़ बनाए रखने का साधन मात्र हैं। ऋषि दयानन्द ने भले प्रकार अनुभव कर लिया था कि इस समय मूर्तियों के मन्दिर दुराचार के दुर्गम दुर्ग बने हुए हैं। अधिकाश मादक-द्रव्य-सेवी मूर्खों, भगेडियों गजेडियों और मद्यपों को काली भैरव और महादेव के मन्दिरों में ही शरण मिलती है और वही उनका जमाव रहता है। स्वेच्छाचारी और अनाचारी महन्तों की सम्पत्तिशालिता के साधन भी यही मन्दिर हैं, इसलिए जब तक इनकी जड़-मूर्तिपूजा का उन्मूलन भारत मे न होगा, तब तक यथार्थ ज्ञान के प्रसार और भारत माता के उद्धार की आशा दुराशामात्र है। इसी विचार-परम्परा ने महर्षि दयानन्द को मूर्तिपूजा के घोर विरोध के लिए उद्यत और कटिबद्ध किया था और उसका परिणाम आपके नेत्रों के सामने स्पष्ट है कि चाहे हमारे पौराणिक भाई अपने मुख से स्वीकार करें या न करें पर अन्तःकरण में वे इस को भली प्रकार जानते हैं कि साक्षर जनता का विश्वास मूर्ति पूजा से उठ चुका है। इतना तो सनातनी पण्डित भी अवश्य कहने लगे हैं कि मूर्तिपूजा केवल अज्ञानियों के लिए है, ज्ञानियों को उसकी आवश्यकता नही है। क्या यह धार्मिक जगत् में बोधरात्रि की की हुई महाक्रान्ति नही है कि जिस मूर्तिपूजा की जड़ को महमूद गजनवी का खड्ग और औरङ्गजेब का अत्याचार अपने बल से न हिला सका था उसको महर्षि दयानन्द के प्रबल तर्क तथा प्रचार ने मृदुता-पूर्वक खोखला कर दिया। अब समझदार सनातनी भी मूर्ति-मन्दिर-निर्माण की निरर्थकता को भले प्रकार समझ गए हैं और वे भी स्थान स्थान पर विद्यालय, ऋषिकुल, ब्रह्मचर्याश्रम और कॉलिज खोल रहे हैं। ये बात दर्शा रहीं हैं कि आर्यसन्तान वास्तविक मन्दिरों के स्वरूप को जान गई है और उस स्वरूप को उनके समक्ष लाने वाला दयानन्द ही था।

बोधरात्रि का वृत्तान्त दयानन्द के व्रत की दृढता का भी सूचक है। उसने केवल १४ वर्ष की बाल्यावस्था मे जो व्रत ग्रहण किया था उसको आजीवन निभाया। मूर्तिखण्डन छोड देने के लिए उसको नाना प्रकार के प्रलोभन और भय दिखलाये गए, किन्तु वह अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहा। उदयपुर राज्य की घटना आर्यसामाजिक पुरुषों को ज्ञात ही होगी कि उनके शिष्य उदयपुराधीश्वर महाराणा सज्जनसिंह ने उनसे निवेदन किया था कि उदयपुर का राज्य एकलिंगेश्वर महादेव के मन्दिर के अधीन है। यदि आप यहा मूर्तिपूजन का खण्डन न करें तो इस मन्दिर की गद्दी आप को मिल सकती है, जिस से आप का कई लाख रुपये का अधिकार हो जाएगा। यह सुनकर स्वामी जी को बहुत क्रोध आया और उन्होंने कहा कि "तुम मुझको तुच्छ लालच देकर बड़े बलवान् ईश्वर की आज्ञा तुड़वाना चाहते हो। यह छोटी सी रियासत और उसका मन्दिर कि जिस में से मैं एक दौड से बाहर जा सकता हू, मुझे कभी भी वेद और ईश्वर की आज्ञा के तोड़ने पर बाधित नही कर सकते।" (यह उक्ति प० मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या की बतलाई हुई प० लेखराम जी आर्यपथिक-सगृहीत महर्षि की जीवनी में दी हुई है)। यह सुनकर महाराणा साहब ने उनके धार्मिक भाव से चकित होकर निवेदन किया कि "महाराज मैंने यह सब इसलिए कहा था कि मैं देखू कि आप इसके खण्डन पर कितने दृढ़ हैं? अब मेरा निश्चय पहिले से बहुत अधिक दृढ होगया है कि आप वेद की आज्ञा पालने में दृढ हैं।" ऐसे ही दृढव्रती और अविचलित निश्चय पुरुषों से संसार का कल्याण होता है, जो बाल्यावस्था में ही दयानन्द और बुद्ध आदि के समान साधारण घटनाओं से भी बोध प्राप्त करके अविद्यान्धकार को हटाकर ज्ञानज्योति का प्रसार करते रहते हैं।

आर्य महाशयों को दयानन्द-बोधरात्रि से यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये कि प्रत्येक पुरुष का कर्त्तव्य है कि वह साधारण घटनाओं को भी दीर्घदृष्टि से अवलोकन करने का अभ्यासी बने और अपने अंगीकृत व्रत को प्राणपण से पालता रहे। दयानन्द-बोधरात्रि को प्रत्येक आर्य के यहा ऋषि दयानन्द के गुणों का कीर्तन होना चाहिये। अतः ऋषि की वास्तविक जन्मतिथि ज्ञात न होने के कारण उस दिन आर्यसंसार उनकी जयन्ती मनाने में असमर्थ है, इसलिए बोधरात्रि को ही उनकी जयन्ती मानकर उसका मनाना उचित है, क्योंकि तत्त्वदृष्टि से देखा जाए तो वही वास्तविक दयानन्द की जन्मदात्री है।

पद्धति

श्रीमद्दयानन्द जन्मदिवस समस्त आर्यसमाजों में प्रान्तीय श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभाओं द्वारा निर्धारित दयानन्द सप्ताह के रूप में निम्नलिखित कार्यक्रमानुसार मनाया जाता है—

कीर्तन—प्रतिदिन सूर्योदय से २ घड़ी पूर्व नगर २ और ग्राम २ में टोलियां बनाकर कीर्तन करना चाहिये।

यज्ञ—कीर्तन के पश्चात् मन्दिर में सार्वजनिक यज्ञ किया जाना चाहिये। यथासम्भव इस सप्ताह में सम्पूर्ण यजुर्वेद संहिता से बृहद् यज्ञ की योजना की जाय।

प्रचार—आर्य-मन्दिरों अथवा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर विराट् सभाओं की योजना करना और उनमें वैदिक सिद्धांतों तथा ऋषि जीवन पर विद्वान् पुरुषों के व्याख्यान कराना, पुरुषों तथा ग्रामों में ट्रैक्ट बांटकर व्याख्यान तथा मैजिक लैम्टर्न द्वारा प्रचार करना चाहिए। प्रचार में अधिक ध्यान नैतिक (Moral) उन्नति की ओर दिया जाए। विशेष योग्य व्यक्तियों को आर्यसमाज का सभासद बनाने का प्रयत्न करना चाहिये। अयोग्य आदमियों को सर्वथा सभासद न बनाया जाए। जो ऐसे लोग आर्यसमाज में पहिले ही से प्रविष्ट हों, उन्हें सच्चा आर्य बनाने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए।

दलितोद्धार—इस सप्ताह में अछूत माने जाने वाली जातियों में विशेष प्रकार से जा-जा कर प्रचार करना चाहिए। उनकी दबी हुई आत्मा को स्वाभिमान के भाव भरकर उठाना चाहिये।

सहभोज—आर्यजाति में पारस्परिक प्रेम-वृद्धि के हित सप्ताह में एक दिन सहभोज की भी योजना की जाए। नीच-ऊंच के भावों को भुलाकर आर्यमात्र को सहभोज में सम्मिलित होना चाहिये।

गुरुकुल धीरणवास (हिसार) का उत्सव सम्पन्न

दिनांक १, २, ३ फरवरी १९९१ को गुरुकुल धीरणवास का उन्नीसवां वार्षिकोत्सव विधिवत् सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मूर्धन्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी जगत् मुनि जी, प्रो० ओमकुमार आर्य, पण्डित रणवीर शास्त्री, आचार्या बहन सुनीति आर्या तथा वानप्रस्थी आनन्द मुनि आदि विद्वानों ने ईश्वर की सत्ता धर्म क्या है, महर्षि दयानन्द जी का दृष्टिकोण, आर्यसमाज क्या है क्या चाहता है। राष्ट्र रक्षा, गोरक्षा, देश में फैला भ्रष्टाचार एव आतंकवाद, नारी शिक्षा, शराबबन्दी तथा आर्यों का इतिहास व आंदोलनों पर विस्तार से प्रकाश डाला। इसी अवसर पर श्रीमती शशि गुलाटी अतिरिक्त उपायुक्त हिसार भी पधारी। जिन्होंने दो सौर ऊर्जा की लाईट एव पानी की टंकी लगाने तथा बनवाने की स्वीकृति प्रदान की तथा आर्य भजनोपदेशक चौ० बेगराज, स्वामी इन्द्रवेश, महाशय रामकुमार, प० सुलतानसिंह, प० जबरसिंह खारी तथा महाशय फूलसिंह आदि के शिक्षाप्रद समाज सुधार के भजन हुये। इसके अतिरिक्त उत्सव पर सबसे आकर्षित कार्यक्रम गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों का आसनों का व्यायाम, रस्से पर महाराष्ट्र का व्यायाम तथा गुरुकुल धीरणवास के बच्चों का पोटी डबल, लेजियम एवं क्रांतिकारियों का नाटक रहा। ब्रह्मचारियों के व्यायाम प्रदर्शन ने लोगों पर अमिट छाप छोडी।

इस बार गुरुकुल आर्य नगर के आचार्य प० रामस्वरूप तथा आजाद मुनि जी भी पूरी श्रद्धा से छात्रों को लेकर उत्सव मे पधारे। प्रातःकाल यज्ञ पर कई नवयुवकों ने जनेऊ धारण किए तथा शराब व धूम्रपान को बुराई छोड़ने की प्रतिज्ञा की। उत्सव पर काफी सख्या में इलाके के आर्य नर-नारियों ने भाग लिया। दिल खोलकर दान भी दिया। ज्ञातव्य है कि गत तीन महीनों में गुरुकुल कार्यकारिणी कमेटी के प्रधान महाशय रामजीलाल आर्य एव श्री दीवानसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज बालसमन्द ने ८८ हजार नकद रुपए का दान इकट्ठा किया। सभा का मंचसंचालन एवं विद्वानों की सेवा शुश्रूषा का कार्य श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने बड़ी कुशलता पूर्वक बड़ी श्रद्धा से किया।

आचार्य गंगासिंह,
गुरुकुल धीरणवास

डॉ० भवानीलाल भारतीय का प्रचार विवरण

ऋषि दयानन्द की जीवनकथा

डा० भवानीलाल भारतीय द्वारा महर्षि की जीवनी पर सरस, रोचक तथा ज्ञानवर्धक कथायें विगत नवम्बर में आर्यसमाज सेक्टर ७ तथा सेक्टर १६ चडीगढ के आर्यसमाजों में प्रस्तुत की गई। डा० भारतीय अखिल भारतीय प्राच्यविद्या परिषद् के हरिद्वार अधिवेशन में सम्मिलित हुए तथा वहां की वैदिक परिषद् में वेदों का सार्वभौम स्वरूप विषय पर अपना शोधप्रबन्ध प्रस्तुत किया। आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर में उनके तीन भाषण ऋषि जीवन पर हुए।

दि० ३ दिसम्बर को डा० भारतीय सपत्नीक मध्यप्रदेश के उद्योगनगर भिलाई पधारे। यहा आर्यकन्या विद्यालय दुर्ग, तुलाराम आर्यकन्या विद्यालय दुर्ग, घनश्यामसिंह गुप्त कन्या महाविद्यालय दुर्ग तथा सुराणा कालेज दुर्ग में उनके प्रभावशाली भाषण हुए। वे रायपुर के राजकीय संस्कृत कालेज में भी वैदिक साहित्य और शोध विषय पर प्रसार भाषण के लिए पधारे। ८ दिसम्बर को डा० भारतीय के करकमलों से डी. ए. वी. माडल स्कूल दुर्ग के नवीन भवन का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। उनके दो प्रभावपूर्ण प्रवचन आर्यसमाज भिलाई के वार्षिकोत्सव में भी हुए। (संवाददाता)

× × ×

डॉ० भवानीलाल भारतीय के दो पौत्रों के क्रमशः अन्नप्राशन तथा नामकरण संस्कार दि० ३० दिसम्बर को उनके निवास कोठी ४१ सैक्टर १५-D चण्डीगढ़ में सम्पन्न हुए। नवजात पौत्र का नाम प्रणव रखा गया।

अम्बाला छावनी में ऋषिबोध पर्व

वैदिक प्रचार मण्डल, अम्बाला छावनी के तत्वावधान में ऋषिबोध पर्व दिनांक १२-२-९० को रामनगर में बड़े उत्साह पूर्वक मनाया जा रहा है। इसके अध्यक्ष श्री सतीश मित्तल, अध्यक्ष हरयाणा खादी बोर्ड एव सदस्य हरयाणा सभा करेंगे। इस अवसर पर अन्य विद्वान् एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

कृपया आप सादर आमन्त्रित हैं।

नोट—नव-निर्मित भवन के लिये नीचे लिखे पते पर अधिक से अधिक दान भिजवायें।

वेद मित्र हापुड़ वाले,
मन्त्री
वैदिक प्रचार मण्डल,
७२-बी गोविन्द नगर,
अम्बाला छावनी

खुंगाई जिला रोहतक में वेदप्रचार की धूम

आर्यसमाज खुंगाई जि० रोहतक में ४, ५ फरवरी को वार्षिक वेदप्रचार कार्यक्रम धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा की ओर से पं० जयपाल आर्य, पं० ईश्वरसिंह तूफान तथा गुरुकुल झज्जर से पं० आशाराम प्रेमी ने भजनों द्वारा वेदप्रचार किया तथा शराब, मांस, दहेज, गोहत्या आदि सामाजिक बुराइयों का जमकर खण्डन किया और आर्यसमाज के कार्यों में सहयोग करने का परामर्श दिया। नवयुवकों ने प्रचार में भाग लिया। श्री राममेहरसिंह आर्य प्रधान तथा श्री प्रतापसिंह आदि ने प्रचार को सफल करने के लिए परिश्रम किया तथा सभा को ३००) वेदप्रचारार्थ दिए।

सर्वहितकारी के आजीवन सदस्य

सभा के भजनोपदेशक श्री मुरारीलाल बेचैन ने गत मास सर्वहितकारी के निम्नलिखित बनाये हैं।

१—श्री देवीदास आर्य प्रबन्धक आर्य कन्या इन्टर कालेज गोविन्दनगर, कानपुर।
२—श्री प्रहलादराय सोनी ग्राम भडफ जि० महेन्द्रगढ।
३—प्रधानाचार्या जी आचार्यकुल शीदीपुरलोवा कलां जि० रोहतक।
४—आचार्य जी गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी जि० फरीदाबाद।
५—मन्त्री आर्यसमाज बडा बाजार, मुन्शी सदरुद्दीन लेन, कलकत्ता-६
६—श्री राजाराम शास्त्री ५६-ए बी. टी रोड, फूलबागान, कलकत्ता-२

केदारसिंह आर्य

आर्यसमाज मिर्जापुर बाछोद का पुस्तकालय शिलान्यास समारोह

आर्यसमाज मिर्जापुर बाछोद जि० महेंद्रगढ (हरयाणा) के पुस्तकालय का शिलान्यास दिनांक २ फरवरी १९९१ को जिला महेंद्रगढ के उपायुक्त माननीय श्री दिपेन्द्रसिंह जी ढेसी के कर कमलों द्वारा किया गया। उपायुक्त महोदय के अभिनन्दन के पश्चात् ग्रामवासियों ने "प्याऊ' में कनेक्शन की मांग की। उपायुक्त महोदय ने ग्रामवासियों की माग सहर्ष स्वीकाराते हुए, आर्यसमाज के प्रगतिशील कार्यों की मुक्तकण्ठ से प्रशसा की तथा इस पुस्तकालय के निर्माण के लिए हरयाणा सरकार के पचायत विकास कार्यो के अन्तर्गत धनराशि देने का वचन दिया। इस समारोह के सयोजक म० ताराचन्द जी (प्रधान आर्यसमाज नारनौल), समारोह अध्यक्ष—श्री छोटेलाल जी प्रधान (मुडिया खेडावाले) थे। मा० मोरमुकटसिंह प्रधान; डा० विश्वम्भर दयाल आर्य (मन्त्री) एव समस्त ग्रामवासी व अन्य सज्जनो के सतत प्रयास से विधिपूर्वक समारोह सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल श्री प्रद्युम्न जी आचार्य गुरुकुल खानपुर (म० गढ) द्वारा यज्ञ करवाया गया। इस समारोह मे इस क्षेत्र के भजनोपदेशको ने सुन्दर-सुन्दर वैदिक भजन सुनाये। वेदप्रचार मण्डल के सयोजक प० ताराचन्द जी वैदिक ने वेद-प्रचार और सामाजिक कुरीतियो पर प्रकाश डाला। श्री लालचन्द जी 'विद्यावाचस्पति' (श्री मगल जयकौर आ० ज्ञान आश्रम खेड़की) ने अपने लघु 'भजन' में 'मृत्यु' जसे विशाल विषय को 'गागर में सागर' और सागर में भी मोती की तरह वर्णित करके श्रोताओं को मन्त्र-मुग्ध कर दिया। "मृत्यु" जोकि 'काल' है। यह 'काल' भी अपने आप में एक कटु सत्य है; प्रतिक्षण मनुष्य को घण्टी बजाकर चेतावनी देता रहता है किन्तु मनुष्य जसा कि पूज्य महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने बताया है कि प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अज्ञान के वशीभूत होकर इस 'काल की घण्टी' के उपदेश को नहीं समझता है। और अन्ततोगत्वा फिर होना वही है जो सदा से होता आया है। अर्थात् 'इत: नष्ट. तत भ्रष्ट.'। इसलिये आइये, हम इस 'काल की घण्टी' के उपदेश को 'गाना' में सुन तथा इसकी चेतावनी से कुछ सीखें।

गाना

अब यात्री बिस्तर गोल करो, घण्टी उपदेश सुनाती है ॥टेक॥
जिस गाड़ी से तुझे जाना है।
वैसा ही मोल चुकाना है॥
रही घण्टी बजा यह ढोल सुनो, उठ नींद तुझे क्यों आती है ॥१॥
घण्टी उपदेश······

दुनिया मुसाफिरखाना है।
किसे जाना है किसे आना है॥
यह सही घण्टी का बोल सुनो, तुझे बार-बार समझाती है ॥२॥
घण्टी उपदेश······

जाली टिकट से जाएगा।
तो मार्ग में फस जाएगा॥
नही करती है घण्टी मखौल सुनो, ना रक्षक गोती-नाती है ॥३॥
घण्टी उपदेश······

ठीक टिकट ले बैठो आनन्द से।
ईश-गान सुनो फिर 'लालचन्द' से॥
सदा साज-बाज का रमझोल सुनो, घण्टी यही गाना गाती है ॥४॥
घण्टी उपदेश······

संकलनकर्त्ता—महात्मा सुशीलदेव
श्री मगल भवन खेड़की (म० गढ)

आर्य वन में योग शिविर

आर्य वन-विकास फार्म में ७ से १६ मार्च १९९१ तक दस दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। १७ मार्च को उत्सव मनाया जायेगा। शिविर में क्रियात्मक योगप्रशिक्षण के साथ योगादि दर्शनों के चुने हुए सूत्रों का अध्यापन भी किया जायेगा। शिविर शुल्क २००) रुपये रखा गया है। जो आर्थिक दृष्टि से असमर्थ होंगे उनको योग्य जानकर शुल्क में छूट दी जा सकेगी। शिविरार्थी २५ फरवरी से पूर्व ही अपनी योग्यता, व्यवसाय, आयु सहित आवेदन पत्र निम्न पते पर लिखकर स्वीकृति ले लेव तथा मन्त्री, आर्य वन के पास शुल्क जमा करवा देवें।

पता—दर्शन योग महाविद्यालय, आर्य वन विकास, रोजड़, पो० सागपुर, जि० साबरकाठा, गुजरात ३८३३०७

धन जी वाल जी पटेल (प्रधान, आर्य वन) —स्वामी सत्यपति (शिविराध्यक्ष)

ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में :—

महर्षि दयानन्द स्तवन

प्रो० ओमकुमार आर्य सह-सयोजक वेद प्रचार मण्डल जि० जींद

विस्मित चकित विश्व ने पूछा यह कौन निराला सन्यासी।
किसकी प्रबल ललकारों से भयभीत हुई मथुरा काशी॥
यह किसका गर्जन तर्जन है यह किसने उगली ज्वाला है।
किसकी सासो से फूटी यह महाभयकर ज्वाला है॥
उत्तर दिया दिशाओं ने यह देव दयानन्द बोल रहा।
जिसकी सिहगर्जना से धरती और अम्बर डोल रहा॥
यह किसके तर्क तीर हैं कि पाखण्ड-दुर्ग सब ध्वस्त हुए।
पौंगापन्थी सब सहम गए पो-पों के हौसले पस्त हुए॥
यह किसने चुनौती दी कि विरोधी सुन करके भयग्रस्त हुए।
प्रकाश का दावा करते थे वे किसकी चमक में अस्त हुए॥
इस बार हिमालय बोल उठा यह दयानन्द तपधारी है।
जिस एक अकेले के आगे यह सारी दुनिया हारी है॥
यह किसकी थाप नगाड़े पर कि सहसा फिरंगी चौंका है।
किस फौलादी के हाथों ने हर जोर जुल्म को रोका है॥
दानवता की ताकत को किस महामानव ने टोका है।
किस मलयगिरि से बहकर आया यह शीतल सुखकर झोंका है
सागर गरजा है दयानन्द इतिहास बदलकर जायेगा।
ढोंग, गुरुडम रूढिवाद को कुचल मसलकर जायेगा॥
बनकर भगीरथ वेदज्ञान की गगा जग में बहा गया।
सदियों से सोई पड़ी हुई जाति को दयानन्द जगा गया॥
जादू ब्रह्मचर्य-शक्ति का दुनिया को फिर से दिखा गया।
इतिहास साक्षी है योगी एक बार जमाना हिला गया॥
गगन चुम्बी व्यक्तित्व-युक्त आला इन्सान दयानन्द था।
सच तो यह है कि दुनियां के लिए दैवी वरदान दयानन्द था।

बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

१- दी वेदाज (अंग्रेजी भाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२- दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज—प० चमूपति एम०ए०	१-५०
३- जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)— ,,	३-००
४- निहारिकावाद और उपनिषद् ,,	०-५०
५- आर्यसमाज की विचारधारा—प० क्षितीशकुमार वेदालकार	१-००
६- निजाम की जेल में ,,	२०-००
७- स्मारिका (हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
८- आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह स्मारिका	२०-००
९- आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण-पं० ओम्प्रकाश त्यागी	०-५०
१०- बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य शहीदों का परिचय)	४-५०
११- ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
१२- हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१३- धर्म-प्रवेशिका—डा० रणजीतसिंह	३-००
१- धर्म-भूषण ,,	५-००
१५- पंजाब का आर्यसमाज—प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१६- आदर्श धातु रूपावली—महावीर आजाद शास्त्री	२-००
१७- वैदिक उपासना पद्धति – डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३-००
१८- मूर्तिपूजा—सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	००-५०
१९- वेदस्वरूप निर्णय ,,	००-७५
२०- वेदाविर्भाव ,,	१-००
२१- वेदभाष्य पद्धति ,,	१-००
२२- वैदिक विवाह पद्धति ,,	६-००
२३- गोकरुणानिधि – स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४- सत्यार्थप्रकाश ,,	१०-००
२५- महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,,	०-५०
२६- हमारा फाजिल्का—योगेन्द्रपाल	१-००
२७- बड स्वामी ओमानन्द सरस्वती	१-५०
२८- वीर हेमू ,,	०-७५
२९- पीपल ,,	१-५०
३०- मिर्च स्वामी ओमानन्द सरस्वती	१-५०
३१- श्लीपद वा हाथीपांव की चिकित्सा ,,	०-२०
३२- बिच्छू विष चिकित्सा ,,	०-५०
३३- लवण ,,	१-२५
३४- विदेशों में मैंने क्या देखा ,,	२-५०
३५- नैरोबी यात्रा ,,	१-५०
३६- ब्रह्मचर्य साधन १-११ ,,	१०-००
३७- ,, १-२ ,,	१-००
३८- ,, ३ ,,	१-००
३९- ,, ४ ,,	२-५०
४०- ,, ५ ,,	२-००
४१- ,, ६ ,,	३-००
४२- ,, ७-८ ,,	२-००
४३- ,, ९ ,,	०-३०
४४- ,, १० ,,	१-५०
४५- ,, ११ ,,	२-००
४६- हल्दी ,,	१-५०
४७- नीम ,,	१-२५
४८- कर्त्तव्य दर्पण—म० नारायण स्वामी	४-००
४९- विद्यार्थी जीवन रहस्य ,,	२-५०
५०- योग रहस्य ,,	४-००
५१- आर्यसमाज क्या है ? ,,	२-००
५२- कथा माला ,,	१-२०
५३- संस्कारविधि	८-००
५४- वैदिकधर्म परिचय—पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	३-५०
५५- वैदिक यज्ञ पद्धति—सार्वदेशिक सभा प्रकाशन	००-६०
५६- मृत्यु के पश्चात् जीव की गति—श्री जगदेवसिंह सिद्धांती	१-५०
५७- नैतिक शिक्षा दसवां भाग—सत्यभूषण वेदालंकार एम.ए.	५-००
५८- पं० जगदेवसिंह सिद्धांती जीवन चरित—डा. सुदर्शनदेव	१०-००
५९-हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान-डा.रणजीतसिंह	३०-००

प्राप्ति-स्थान : आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, सिद्धान्ती भवन, रोहतक

हर गांव को पेयजल अगले चार वर्षों में

—प्रो० शेरसिंह

झज्जर, ६ फरवरी : आगामी चार साल के दौरान देश का कोई गांव ऐसा नहीं होगा जहां पीने का स्वच्छ जल उपलब्ध न हो।

उपरोक्त जानकारी केन्द्रीय योजना आयोग के सदस्य एवं पूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह ने यहां स्थानीय विश्रामगृह में पत्रकारों को दी। प्रो. शेरसिंह ने बताया कि हमारी सरकार ने निर्णय लिया है कि ४ साल के दौरान १५ से ३५ साल तक की आयु वाले युवकों को अनपढ़ नहीं रहने दिया जाएगा।

उन्होंने बताया कि हमारी योजना है कि बेरोजगारों को गांव में ही रोजगार उपलब्ध हो इसके लिए गांवों में व्यापक स्तर पर लघु उद्योग लगेंगे ताकि गांव में ही कच्चे माल की वस्तुयें बनकर शहरों में जायें।

प्रो सिंह ने पीने के पानी की बरबादी को रोकने के लिए पानी के सदुपयोग पर बल दिया।

उन्होंने बताया कि सरकार वर्षा के पानी के सदुपयोग हेतु नई तकनीकी के इस्तेमाल पर काफी पैसा खर्च करेगी।

पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए केन्द्रीय योजना आयोग के सदस्य ने बताया कि केन्द्रीय सरकार देश के बजट का ५० प्रतिशत देहात के विकास कार्यों पर खर्च करेगी।

प्रो० शेरसिंह विश्रामगृह के बाद भारत सरकार के योजना आयोग के अन्तर्गत झज्जर खण्ड के कार्यालय में समन्वित ग्रामीण ऊर्जा आयोजना कार्यक्रम द्वारा ऊर्जा पर आधारित विभिन्न प्रणालियों की प्रदर्शनी को देखने गए। वहां सहायक परियोजना अधिकारी ने बताया कि ग्रामीण इलाकों में हरिजन बस्तियों, पचायत भवनों, सरकारी भवनों, स्कूलों आदि में प्रकाश प्रणाली, सौर जलतापन प्रणाली, सौर जल पम्पिंग प्रणाली, सामुदायिक बायोगैस संयत्र, सामुदायिक धुआं रहित चूल्हा और ऊर्जा चालित टेलिवीजन लगाने के लिए ४० से ८० प्रतिशत तक की अनुदान राशि (सबसीडी) के रूप में आर्थिक सहायता दे रही है। (दैनिक हिन्दुस्तान)

आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव

१	आर्यसमाज गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक		१५ से १७ फरवरी
२.	,,	कन्या गुरुकुल खानपुर कलां जिला रोहतक	१६ से १७ ,,
३.	,,	कवारी जि० हिसार	१५ से १७ ,,
४	,,	दाल बाजार लुधियाना (पंजाब)	१५ से १७ ,,
५.	,,	गुमाना जि० रोहतक	१५ से १७ ,,
६.	,,	कवरियावास जि० महेन्द्रगढ	२३, २४ ,,
७.	,,	गुरुकुल गदपुरी जि० फरीदाबाद	२२ से २४ ,,
८.	,,	बालसमन्द जि० हिसार	२२ से २४ ,,
९.	,,	गुरुकुल मटिण्डू जि० सोनीपत	२२ से २४ ,,
१०	,,	कन्या गुरुकुल मोरमाजरा जि० पानीपत	२२ से २४ ,,

—सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

शोक समाचार

दिनांक ८-१-९१ को लम्बी बिमारी के कारण महाशय झाब्बेराम (मकडोली कलां) की धर्मपत्नी श्रीमती कस्तूरी देवी का निधन होगया। वे ६७ वर्ष की थी अपने पीछे ६ लडकी, एक लडका छोड गई। वे धर्मात्मा महिला थी। अतिथि सेवा उनका विशेष गुण था। वे आर्य सम्मेलनों में तथा गुरुकुल के उत्सवों में बढ-चढ़ कर भाग लेती थी। अपने सभी बच्चों की शादी में एक रुपए मे रिश्ता किया। पांच बाराती बुलाए तथा बारात में चढाए। भगवान् से हमारी प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा शोकाकुल परिवार को दुःख सहन करने का बल प्रदान करें।

अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी,
सभा उपदेशक

मकरसंक्रान्ति पर्व

पानीपत आर्य महिलासमाज बडा बाजार पानीपत ने १०, ११, १२, १३, १४ जनवरी को मकरसंक्रान्ति के पर्व पर ५ दिन का बड़ी धूमधाम से चतुर्वेद शतकों से यज्ञ किया जिसके ब्रह्मा पं० धर्मपाल शास्त्री थे। साथ ही श्री शिवकुमार जी आर्य पुरोहित बडा बाजार पानीपत ने अर्थसहित वेदपाठ किया। उपस्थिति से निरन्तर ५ दिन तक पूरा समाजमन्दिर २ से ५ बजे तक के समय में भरा रहा। इस अवसर पर श्रीमती उर्मिला जी आर्या पं० जगदीशचन्द्र वसु तथा प्रो० उत्तमचन्द शरर ने अपने हृदयगम ओजस्वी व्याख्यानों से महिलाओं को प्रभावित किया।

इस यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद महिलासमाज ने सभा को १०१) श्रद्धापूर्वक दान दिया।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा आर्य महिलासमाज का धन्यवाद करती है।

स्वामी दयानन्द के आदर्शों पर चलें

मऊ (उ०प्र०)—प्रधानमन्त्री चन्द्रशेखर ने आज युवकों और शिक्षकों से अपील की कि वे स्वामी दयानन्द सरस्वती के दिखाए रास्तों पर चलें, जिन्होंने सामाजिक परिवर्तन और महिला मुक्ति के लिये अथक संघर्ष किया था।

यहां डी० ए० वी० कालेज के स्वर्ण जयन्ती समारोह का उद्घाटन करते हुए प्रधानमन्त्री ने यह बात कही। उन्होंने कहा कि हरेक बच्चे में विपुल ऊर्जा-स्रोत होता है और यह शैक्षणिक संस्थानों का दायित्व है कि वे इस स्रोत को जीवन्त व सक्रिय बनाएं।

महिला शिक्षा पर बल देते हुए प्रधानमन्त्री ने मऊ शहर में एक महिला डिग्री कालेज खोलनें के लिये पांच लाख रुपये देनें की घोषणा की।

आर्यनेता प्रो० शेरसिंह अभिनन्दन हेतु दान सूची

श्री जयपालसिंह आर्य भजनोपदेशक द्वारा

श्री भरतसिंह सरपंच ग्राम दूबलधन, जिला रोहतक	१०१
श्री सूबेदार सोसराम ग्राम माजरा दूबलधन, जिला रोहतक	१०१
श्री सूजानसिंह मन्त्री आर्यसमाज कोसली जि० रेवाड़ी	१०१
श्री मुरलोधर प्रधान आर्यसमाज लूखी, ,, ,,	१०१
श्री रामपत प्रधान आर्यसमाज सिहोर, जि० महेन्द्रगढ	१०१
पं० सत्यनारायण आर्य प्र०आर्यसमाज चरखीदादरी, जि० भिवानी	१०१
मा० छत्तरसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज बहरोड, जि० रोहतक	१०१
ठा० महावीरसिंह आर्य मन्त्री आर्यसमाज बराणी, जि० रोहतक	१०१
श्री सत्यवान आर्य मन्त्री आर्यसमाज कासनी, जि० रोहतक	१०१
श्री प्रभातीलाल सूबेदार मन्त्री आर्यसमाज सिहोर, जि० महेंद्रगढ	१०१
श्री रामस्वरूप आर्य प्र० आर्यसमाज राजलूगढी, जि० सोनीपत	२००
श्री मौजीराम आर्य ग्राम नाहरी, जि० सोनीपत	१००
श्री रामस्वरूप आर्य मन्त्री आर्यसमाज नाहरी, जि० सोनोपत	१००
श्री दयाचन्द आर्य मन्त्री आर्यसमाज खरावड़, जि० रोहतक	२००
श्री सोसराम ,, ,, ,, गढी कुण्डल जि० सोनीपत	१००
श्री बलवीरसिंह ,, ,, ,, सिहोटी ,, ,,	१००
श्री वैद्य टेकराम आर्य ग्राम सिवाना, जिला रोहतक	१०१
श्री धूपसिंह आर्य प्र० आर्यसमाज ,, ,, ,,	१०१
श्री शुभराम आर्य मन्त्री ,, ,, ,, ,,	१००
श्री जिलेसिंह आर्य सूबेदार ,, ,, ,, ,,	५०
श्री धूपसिंह सु० श्री अमृतप्रसाद ,, ,, ,,	५०
श्री रामलाल मास्टर ग्राम मोरवाला जि० भिवानी	५१
श्री जयपाल आर्य सभा भजनोपदेशक ग्राम आसन जि० रोहतक	१००
स्वामी देवानन्द आर्यसभा भजनोपदेशक ,, सुलतानपुर जिला गाजियाबाद	१००

जिन दानदाताओं ने इस निधि में धनराशि भेजने का वचन अंकित करवा रखा है, उनसे निवेदन है कि यथाशीघ्र अपना योगदान भेजने की कृपा करें जिससे अभिनन्दन समारोह की तैयारी आरम्भ की जावे।

म० भरतसिंह
सयोजक आर्यनेता प्रो० शेरसिंह, अभिनन्दन समिति

वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द की मासिक बैठक

वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द की मासिक बैठक रविवार दि० २७-१-९१ को सुबह ११-०० बजे आर्यसमाज मन्दिर नरवाना में हुई जिसकी अध्यक्षता मण्डल के संयोजक पूज्य स्वामी रत्नदेव जी ने की। बैठक में मण्डल के १० सदस्य उपस्थित थे। सर्वसम्मति से अग्रलिखित निर्णय लिये गये :—

पिछली बैठक की कार्यवाही की पुष्टि की गई और जनवरी मास के प्रचारकार्य का विवरण दिया गया जिस पर सभी सदस्यों ने संतोष व्यक्त किया तथा मण्डल के भजनोपदेशक श्री चन्द्रभान जी व उनकी भजन मण्डली की कार्यक्षमता की सराहना की गई। संयोजक श्री स्वामी रत्नदेव जी भी जिस लग्न व उत्साह से मार्गदर्शन कर रहे हैं वह भी प्रशंसनीय है और मण्डल के लिए सौभाग्य का विषय है।

फरवरी मास के लिए प्रथम चरण में ये १२ गांव प्रचार हेतु चुने गए—बरौदी, लोन, काम्हा खेड़ा, फरायण कलां, डूमर खां, झील, सुन्दरपुरा, दबलेण, धमतान साहब, खरल उत्सव (फरवरी ८, ९, १०) कुम्भाखेडा उत्सव (१६, १७, १८ फरवरी) सच्चाखेडा (११, १२, १३ फरवरी) साथ ही संयोजक/सहसंयोजक को यह अधिकार भी दिया गया कि वे आवश्यकतानुसार कार्यक्रम में यथोचित संशोधन भी कर सकते हैं। जनवरी मास का आय-व्यय का ब्यौरा भी दिया गया जो कि सर्वसम्मति से पारित हुआ।

यह भी महसूस किया गया कि मण्डल के आय के साधन बढ़ाये जायें ताकि मण्डल और भी प्रभावी ढंग से कार्य कर सके। मण्डल की आगामी मासिक बैठक रविवार २४-२-९१ को सुबह ११ बजे आर्यसमाज मन्दिर जीन्द शहर में होनी तय की गई। सभी सदस्यों को इस रपट के माध्यम से सूचना दी जाती है कि वे कृपया बैठक में उपस्थित होवें।

माननीय संयोजक श्री स्वामी रत्नदेव जी ने आर्यसमाज नरवाना के उत्साही एवं आस्थावान् अधिकारियों का धन्यवाद किया कि उन्होंने बैठक की सुन्दर व्यवस्था की। तत्पश्चात् सभा विसर्जित हुई।

—प्रो० ओमप्रकाश आर्य
सह-संयोजक, वेद प्रचार मण्डल, जिला—जीन्द
आर्यसमाज जीन्द शहर

मानव दैत्य बना

भारत की इस देव धरा पर मानव दैत्य बना।
धर्म छोड़ दिया मानव ने, अधर्म के बीच सना॥
महापुरुषों ने दिया हमें, वह ठोकर से ठुकराया।
किया उल्लघन मर्यादा का, धर्म नजर नहीं आया॥
मां-बहिनों की इज्जत का अब, खतरा बहुत बना।
धर्म छोड़ दिया मानव ने अधर्म के बीच सना॥
हुक्का, बीड़ी, सिगरेट का अब बना नसेडी भारी।
मांस, तम्बाकू के सेवन से अक्ल गई मारी।
दर्द करें हैं दांत मसूड़े, चबता नहीं चना॥
धर्म छोड़ दिया मानव ने अधर्म के बीच सना॥
लुटा रहे फैशन पर पैसा, बाल-युवा नर-नारी।
क्षणिक सुखों में आज मनुष्य की, गई जिन्दगी सारी॥
कामवासना बढ़ी हुई है, जीवन नर्क बना।
धर्म छोड़ दिया मानव ने अधर्म के बीच सना॥
ऋषियों का यह देश अनोखा, क्यों इसे धूल मिलाओ।
अपनी सभ्य संस्कृति को, पुनः आज दोहराओ॥
भारत देश 'महेश' आज फिर से सरताज बना।
धर्म छोड दिया मानव ने अधर्म के बीच सना॥

—महेश आर्य, ग्राम पन्हैड़ा खुर्द, जिला फरीदाबाद।

—०—

प्राचीन महाशिवरात्रि : आज का बोधोत्सव

(श्रीमती प्रभात शोभा पण्डित)

आर्यसमाज प्रतिवर्ष 'महाशिवरात्रि व्रत' के पर्व को 'ऋषि बोधोत्सव' के रूप में मनाता है। मूलशकर से शुद्ध चैतन्य व अन्ततः शुद्ध चैतन्य से ऋषि दयानन्द सरस्वती बननेवाले युगान्तरकारी महामानव के निर्माण की कहानी 'महाशिवरात्रि' के प्रसंग से घटी एक साधारण सी घटना के साथ इस तरह जुड़ गई कि यह पर्व आर्य-जनों के लिए एक ऐतिहासिक प्रेरणा का विषय बन गया। घटना क्या थी! मूर्तिपूजक परिवारों में प्रचलित पौराणिक प्रथा अनुसार 'महा-शिवरात्रि व्रत' के अनुष्ठान में उपवास रखकर बालक मूलशकर 'जागरण' कर रहा था। घर के छोटे-बड़े अन्य सभी सदस्य अवश होकर नींद की गोद में समा चुके थे, लेकिन गहरी निष्ठा का धनी मूलशंकर अकेला बड़े यत्न से नींद पर काबू पाकर सजग बैठा था। तभी अचानक जो कुछ घटित हुआ उससे मूलशकर ऐसा चौंका कि उसकी नींद न केवल उस रात के लिए बल्कि सदा के लिए उड़ गई। वह आदित्य ब्रह्मचारी महायोगी ऋषि दयानन्द उस रात के बाद ऐसा जागा कि सदियों से सोये अपने पूरे देश व समाज को जगाकर रख दिया। सच तो यह है कि उसने समूची मानवजाति और मानवता को जगा दिया। न स्वय सोया न जग को सोने दिया। मूलशकर ने देखा कि शिवलिंग पर चढाए गए भोग को—अर्थात् फल व मिष्ठान्न को एक चूहे ने खाकर झूठा कर दिया और विष्ठा से अपवित्र भी। लेकिन 'महाशक्ति' के रूप में पूजित वह 'शिव' मौन रहे, पत्थर के जो थे। 'शिव' की मौन जड़ताभरी वह भारत के भाग्याकाश मे एक अत्यन्त मुखर प्रभात की जननी सिद्ध हुई। एक अभूतपूर्व सयोग है कि इस वर्ष 'मूलशकर' और 'दयानन्द' दोनों का जन्मपर्व साथ-साथ पड़ रहा है।

इस निमित्त से 'महाशिवरात्रि' के अनुष्ठान का वास्तविक स्वरूप बता देना बहुत उपयुक्त होगा। पौराणिक आख्यानों में गगावतरण की कथा से पहिले 'महाशिवरात्रि' व्रत का कहीं उल्लेख नहीं। वैदिक ऋचाओं में 'शिव' का उल्लेख आया है और वह प्राय. 'शम्' के साथ आया है। प्रतिदिन सन्ध्या में मन्त्र-पाठ किया जाता है।

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च।
नमः शकराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च।'

इस मत्र के साथ शाति प्रकरण के छः 'शिवसकल्प' मन्त्रों को (तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु) मिलाकर यदि पढें तो महाशिवरात्रि' का स्वरूप समझना कुछ भी कठिन नहीं। पहले उद्धृत मत्र में 'कल्याण को सम्भाव्य (Possible) बनानेवाली 'ज्ञानशक्ति' के स्वरूप में प्रभु को याद किया गया है और किसी भी कल्याणकारी कार्य को सिद्ध करने के लिये सुविधाकारक उपकरणों की सम्भावना को प्रणाम किया गया है। महाभारत कथा का प्रसिद्ध इन्जीनियर शिल्पी 'मय' था। किसी भी कार्यसिद्धि के लिए जो शिल्प और यन्त्र-निर्माण कला है वही 'मयस्कर' है। कल्याणकारी कार्यों के सम्पूर्ण होने का जो परिणाम है वही 'शिव' है। देश का सर्वतःप्रसिद्ध शिव तीर्थ 'केदारनाथ' है। पहले सूर्यवशी राजा सगर और बाद में महाराजा भगीरथ ने देश की खेती-बाड़ी की व्यवस्था को पुष्ट करने के लिए हिमालय की अनेक छोटी-बड़ी धाराओं को दिशा देकर गगा का निर्माण किया। गगा का नाम 'भागीरथी' इसीलिये पड़ा। 'केदार' सस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है कृषि-क्षेत्र। 'केदार-नाथ' के मन्दिर में जो 'शिवलिंग' है वास्तव में उसकी रचना दीपक में जलती हुई एक लौ के जैसी है।

गीता में योगियों के हृदय में जलने वाली भक्ति व सकल्प 'दीप-शिखा' का वर्णन करते हुए योगिराज श्री कृष्ण लिखते हैं :—

'यथा दीपो निवातस्थो नेंगते सोपमा स्मृता'

'हवा के झोकों से कम्पित न होनेवाली लौ के समान वह सकल्प ज्योति होती है। शिवलिंग वास्तव में उसी पत्थर जैसी कठोर सकल्प शक्ति का प्रतीक है। भगीरथ के हृदय में यह वज्र-सकल्प यदि न होता तो कठोर तप करके वो गगावतरण का अपना स्वप्न कभी पूरा न कर पाते। समाज के कल्याण के लिए हर छोटा संकल्प एक 'शिवरात्रि' के समान है, और प्रत्येक महाविराट संकल्प, जैसा कि भगीरथ ने लिया था महाशिवरात्रि पर्व है। अब जो चमत्कारिक सत्य 'रात्रि' शब्द का प्रयोग करने के पीछे है उसे समझ ले तो और भी आनन्द होगा। कोई भी सकल्प पूर्ण होने से पहले मनुष्य को घोर कष्टों और नाना प्रकार की कठिन समस्याओं को झेलने के दौर से गुजरना पड़ता है और साधक द्वारा इन समस्याओं को धैर्यपूर्वक झेलने की शक्ति पर ही निर्भर करता है कि कोई यज्ञ सफल होगा या नही यह कष्ट का सारा काल साधक इसी आशा में बिताता है कि एक दिन आएगा जब साधना सफल होगी और सुफलदायिनी सुबह के दर्शन होगे। साधना का यह सारा काल एक लम्बी रात है लेकिन क्योंकि यह कष्ट किसी भावी लोक कल्याण की भावना से स्वेच्छा से उठाया जाता है। अतः हम इसे 'महाशिवरात्रि' नाम से याद करते हैं। वास्तव में सूर्यवंशी राजाओ ने 'गगा' को लोकोपयोगी बनाने के लिए तप किया उसकी ही याद में यह पर्व मनाया जाने लगा। इस पर्व की प्राचीन लोक जीवन में वही प्रतिष्ठा है जो भारतीयों के जीवन मे आज १५ अगस्त तथा २६ जनवरी की है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज की अनुपम देन

पहलीदेन—महात्मागांधी, राजा राममोहनराय आदि ने हिन्दू-मुसलमान-सिक्ख-ईसाई सब धर्मों के बराबर होने का प्रचार किया, बल्कि मुसलमान राज्य के समय जब एक विद्वान् को ऐसा प्रचार किया जाने पर मृत्युदण्ड भी दिया गया, जब तक मुसलमानों का राज्य रहा तब तक कोई हिन्दू अपने धम को इस्लाम के बराबर बताने की हिम्मत नहीं कर सकता था।

केवल महर्षि दयानन्द ने ही यह घोषणा की कि केवल वैदिक-धर्म ही सत्य धर्म है और शेष सब असत्य कपोलकल्पित और भ्रांत हैं—यह महर्षि की सबसे बड़ी पहलीदेन थी। महर्षि की इस घोषणा को सुनते ही हिन्दुओं में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई क्योंकि वह स्वाभिमानी थे उनके झुके हुए सिर स्वाभिमान से ऊंचे होगए।

दूसरी देन—सन् १८५७ ई० की क्रान्ति के बाद महर्षि दयानन्द ने ही यह घोषणा की थी कि न्याय और दयापूर्वक पक्षपातरहित विदेशी राज्य ऐसा नही हो सकता जैसा स्वदेशी राज्य होता है। महर्षि दयानन्द ने कांग्रेस के स्वराज्य आन्दोलन से पहले ही स्वराज्य की घोषणा कर दी थी और –

तीसरी देन—भारतीयो मे एकता उत्पन्न की इसके लिए वेद को धर्म-पुस्तक के रूप में रखा। हिन्दुओं में अनेक मतमतान्तर थे। वैदिक-धर्मियो में भी सस्कार पद्धतिया अलग-अलग थी महर्षि ने संस्कार-विधि और पञ्चमहायज्ञविधि लिखकर सब हिन्दुओं के सस्कार और उपासना की विधि एक कर दी और साथ ही अपना अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश लिखकर सब भ्रान्तिया दूर कर दी।

चौथी देन शुद्धि-संस्कार—यह राष्ट्रीय शक्ति और सगठन को बढानेवाली देन है। जो हिन्दू-मुसलमान और अग्रेज के राज्य में मुसलमान ईसाई बन गए थे। उनको वापिस लाने के लिए शुद्धि-आन्दोलन चला। महात्मा गाधी का लड़का हीरालाल जब अब्दुल्ला बन गया था। महात्मा गांधी इस कड़वे घूट को चुपके से पी गए। माता कस्तूरबा रोती रही उनके आसू पूंछनेवाला भारत में कोई न था तब आर्यसमाज ने यह कार्य किया और अब्दुल्ला फिर हीरालाल बनाकर माता कस्तूरबा की गोदी में ला बिठाया।

पांचवीं देन—स्त्री जाति की करुण कहानी सुनी, लाजपत सब बचाई दयानन्द ने। स्त्री जाति को पैर की जूती समझा जाता था, शिक्षा से वंचित रखा जाता, वेद भी पढने का अधिकार न था। स्त्री-शिक्षा, विधवा विवाह को उचित बनाकर स्त्री जाति को सिर का मुकुट बताया और घोषणा की कि जिस घर में नारी का सम्मान होता है वहां देवता जन्म लेते हैं।

काश कि हम महर्षि दयानन्द की देन को पूर्ण समझ सके।

—ओमप्रकाश वानप्रस्थी, गुरुकुल बठिण्डा।

महर्षि दयानन्दाभिमत 'वेद' शब्द की व्याख्या

(प्राचार्य डॉ० सुरेन्द्रदेव स्नातक, शास्त्री, शिरोमणि, एम० ए० (संस्कृत तथा हिन्दी) पी-एच० डी०,
अवकाश प्राप्त प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, भोगाव (मैनपुरी)]

'वेद' शब्द का निर्माण "विद्" ज्ञाने धातु से घञ् (अ) प्रत्यय करने से होता है। अतएव 'वेद' शब्द का सीधा सा अर्थ हुआ "ज्ञान" किन्तु यह ज्ञान मानवीय अथवा मानव से उत्पन्न नहीं है। यह तो पूर्णरूपेण ईश्वरीय है। ईश्वर द्वारा मानवमात्र के लिये प्रदत्त यह ज्ञान है।

इस ज्ञानार्थक "विद्" धातु के अतिरिक्त अन्य अर्थों के रखनेवाले तीन अन्य धातुओं से भी "वेद" शब्द का निर्माण किया जाना सम्भव है। ये धातु हैं—(१) 'विद्" सत्तायाम् (२) विद्लृ लाभे और (३) विद् विचारणे। कहने का अभिप्राय यह है कि वेदों के प्रसिद्ध भाष्यकार महर्षि दयानन्द सरस्वती ने "होना" "लाभ" तथा विचारणार्थक उपर्युक्त इन तीन धातुओं से भी "वेद" शब्द का निष्पन्न होना स्वीकार किया है। उन्होने स्वलिखित ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका के वेदोत्पत्ति विषयक विवरण में लिखा भी है :—

"विद् (ज्ञाने), विद् (सत्तायाम्), विद्लृ (लाभे), विद् (विचारणे) एतेभ्यो 'हलश्च' इति सूत्रेण करणाधिकरणकारकयोर्घञ्प्रत्यये कृते वेदशब्दः साध्यते"।

उन्होंने उपर्युक्त चारों धातुओं के आधार पर 'वेद' शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए उसी प्रकरण में लिखा भी है :—

"विदन्ति जानन्ति, विद्यन्ते भवन्ति, विन्दन्ति विन्दन्ते लभन्ते, विन्दते विचारयन्ति सर्वेमनुष्याः सर्वाः सत्यविद्या यैर्येषु वा तथा विद्वान्सश्च भवन्ति ते वेदाः।"

अर्थात् एक 'विद्' धातु ज्ञानार्थक है, दूसरा 'विद्' सत्तार्थक है, तीसरे 'विद्लृ' का अर्थ लाभ अथवा प्राप्त करना तथा चतुर्थ 'विद्' का अर्थ विचार करना है। इन चारों धातुओं से करण और अधिकरण कारक में 'घञ्' (अ) प्रत्यय के करने से 'वेद' शब्द सिद्ध होता है।

जिन वेदों का अध्ययन करने से यथार्थ विद्या का ज्ञान प्राप्त होता है, जिनका अध्ययन करने से मानव विद्वान् हुआ करते हैं, जिनके अध्ययन से सब प्रकार के सुखों की प्राप्ति हुआ करती है तथा जिनके अध्ययन से ठीक-ठीक सत्या-सत्य का विचार मनुष्यों को हुआ करता है। इस प्रकार के ग्रंथों का नाम ही 'वेद' है।

वेदों को 'श्रुति' नाम से भी कहा जाया करता है। इस सम्बन्ध मे ऋषिवर ने उपर्युक्त 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' के उसी प्रकरण में लिखा है —

"श्रु" श्रवणे इत्यस्माद्धातोः करणकारके 'क्तिन्' प्रत्यये कृते,
श्रुतिशब्दो व्युत्पद्यते।"

अर्थात् श्रवणार्थक (सुनना अर्थवाले) 'श्रु' धातु से करण कारक में 'क्तिन् (ति) प्रत्यय के करने से 'श्रुति' शब्द सिद्ध होता है। कहने का अभिप्राय यह है कि सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज तक सब सत्य विद्याओं का श्रवण करने की दृष्टि से 'वेदों' को 'श्रुति' नाम से भी कहा जाया करता है। अथवा सृष्टि के प्रारम्भ से मानव गुरुमुख से श्रवण करते चले आ रहे हैं, अतएव वेदों को 'श्रुति' नाम से भी कहा जाता रहा है। श्रवण किये जाने के कारण ही वेदों को 'श्रुति' शब्द द्वारा भी कहा जाने लगा था।

चतुर्वेद भाष्यकार सायणाचार्य ने भी 'वेद' शब्द की व्याख्या इस प्रकार की हैं :—

"इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रंथो वेदयति स वेदः।"
(तैत्तिरीय-संहिता भाष्य की भूमिका में)

अर्थात्—जो ग्रन्थ इष्टप्राप्ति तथा अनिष्ट—निवारण का अलौकिक उपाय बतलाता है उसी का नाम 'वेद' है।

इन वेदों की संख्या चार है—१) ऋग्वेद २) यजुर्वेद ३) सामवेद ४) अथर्ववेद। सृष्टि के प्रारम्भ मे अग्नि, वायु, आदित्य और अगिरा नामक ऋषियों को ही इस ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। ऋग्वेद में 'ज्ञान' का, यजुर्वेद में 'कर्म' का और सामवेद में 'उपासना' का विषय वर्णित है। अथर्ववेद में ज्ञान, कर्म तथा उपासना—इन तीन प्रकार के विषयों का प्रतिपादन किये जाने के कारण चारों वेदों को वेदत्रयी शब्द द्वारा भी कहा जाया करता है। 'वेदत्रयी' का अर्थ ही है "ज्ञानत्रयी" अर्थात् तीन प्रकार का ज्ञान। परम्परा से यह ज्ञान उत्तरकालीन ऋषियों को भी प्राप्त होता रहा।

ईश्वर तो अनन्तज्ञानसंपन्न है। इस ईश्वरीय अनन्तज्ञान में से परमात्मा उतने ही ज्ञान को मानव-मात्र के लिए वेदों के माध्यम से प्रदान कर दिया करता है कि जितना ज्ञान मानव मात्र के लिए आवश्यक हुआ करता है।

ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण ही वेदों को अथवा इस ईश्वरीय ज्ञान को आप्त प्रमाण अथवा शब्द प्रमाण माना जाया करता है। इस भांति वेदों में प्रतिपादित ज्ञान को स्वतःप्रमाण स्वीकार किया गया है। 'प्रत्यक्ष' तथा 'अनुमान' प्रमाणों के आधार पर जिस ज्ञान को प्राप्त किया जाना सम्भव नहीं है इस प्रकार का ज्ञान हम मानवों को वेदों के द्वारा ही प्राप्त हुआ करता है। इसी दृष्टि से कहा भी गया है—

"प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते।
एवं विदन्ति वेदेन, तस्माद् वेदस्य वेदता॥"

चारों वेदों के रूप में प्रदत्त यह ज्ञान अनश्वर तथा नित्य है। मानवो द्वारा लिखा गया ज्ञान तो विनाशी तथा घटाने बढाने योग्य हुआ करता है। किन्तु यह ईश्वरीय-ज्ञान (वेद) सृष्टि के प्रारम्भ से ही एक रूप में ही चलता चला आ रहा है। इसको तो आज तक न घटाया, बढाया जा सका और न किसी प्रकार का परिवर्तन ही किया जा सका है। भविष्य में भी इस प्रकार की कोई सम्भावना नहीं की जा सकती है।

आदि कवि वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण' में तो अनेक श्लोक तथा सासारिक विषयों से सम्बन्धित बातों—विषयों को बढाया जा चुका है। इसी भांति महाभारत में भी बहुत कुछ बढ़ाया जा चुका है किन्तु वेदों में तो आज तक एक मन्त्र अथवा एक पद भी नहीं बढ़ाया जा सका है। इसका प्रमुख कारण वेदों का ईश्वरीय होना ही है।

भारतीय संस्कृति के मूल आधार चार प्रकार के पुरुषार्थ ही हैं जिनमें सर्वप्रथम स्थान 'धर्म' का है। इस 'धर्म' का मूलभूत 'आधार' वेद ही है। मूलरूप में विद्यमान 'धर्म' के वास्तविक तत्त्वों को जानने तथा समझने का एकमात्र साधन वेद ही है जैसा कि मनुस्मृतिकार मनु ने कहा भी है—

"वेदोऽखिलो धर्ममूलम्" ॥मनुस्मृति-२/६॥

मानवीय कर्त्तव्य मात्र के ज्ञान के निमित्त मनु द्वारा वेदों को ही स्वीकार किया गया है—

"यः कश्चिद् कस्यचिद् धर्मो मनुना परिकीर्तितः।
स सर्वोऽपि हितो वेदे, सर्वज्ञानमयो हि सः।" (मनु २।७॥)

सम्पूर्ण प्राचीन वैदिक साहित्य (जैसे ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक ग्रंथ, सूत्र ग्रंथ तथा उपनिषद् आदि ग्रंथ) की रचना भी वेदों के आधार पर की गई है। इसी कारण उन सभी ग्रंथों की प्रामाणिकता भी स्वयं सिद्ध है।

ज्ञानपूर्वक कार्यों को करते हुए ईश्वरोपासना का किया जाना ही मानव जीवन का प्रधानतम लक्ष्य है। अतएव 'वेद' वह ज्ञान है कि जो मानव मात्र को मानव जीवन के प्रमुख लक्ष्य की ओर उन्मुख करता है।

चारों पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष) की पूर्ति के लिये कौन-कौन से कार्य करणीय हैं तथा कौन-कौन से नहीं? इसका विवरण भी हमें वेदों द्वारा अथवा वेदों के आधार पर लिखे गए ग्रंथों द्वारा ही उपलब्ध हुआ करता है।

स्वाधीनता के मंत्रद्रष्टा—स्वामी दयानन्द

(डॉ० सुरेशचन्द्र वेदालंकार आर्यसमाज—गोरखपुर)

जब हम महर्षि के जीवन पर दृष्टिपात करते हैं तो हमें लगता है कि 'वह लाखों वनचरों में सिंह के समान पराक्रमी मर्द होकर जन्मा, बरसाती घास-फूस और मच्छरों की तरह फैले हुए, मनुष्य जन्तु की मूर्खता को चरमसीमा के प्रमाणस्वरूप मतमतान्तरों को जिसने मुठमर्दी से विश्वध्वंसिनी ज्वाला की तरह विध्वंस कर दिया, मरे हुए हिन्दूधर्म को अपने जादू के चमत्कार से जीवित ही नहीं किया किन्तु उसे नोच-नोचकर खानेवाले गीदडों को एक ही हुंकार से भगा दिया, कीडे-मकौड़े और मच्छरों की तरह रेंगकर पलनेवाले हिन्दू बच्चों के लिए जिसने पुण्यधाम गुरुकुलों और अनाथालयों की रचना की, निर्दयी हिन्दुओं की आंखों के सामने डकराती, गर्दन कटाती गायों के आंसू जिसने अग्नि के नेत्रों से देखे, अबला, विधवाओं के कष्टों को दूर करने के लिए जिसने अमर छाया की, अछूतों के असाध्य घावों पर जिसने संजीवनी मरहम लगाया, जो अखंड ब्रह्मचारी था, जिसके प्रकाण्ड पांडित्य ने न दिया और काशी को पुरानी ईंटों को हिला दिया, सारी पृथ्वी पर जिसकी आवाज गूंज गई, युगदेवता की तरह जिसने वेदों का उद्धार किया, जो लगातार ६५ वर्ष तक ऊंची आवाज में पुकारता रहा 'उठो, जागो, निर्भय रहो, खड़े होओ और सच्चे सिपाही की तरह रणक्षेत्र में जिसने अपने प्राण गवा दिए।' वह महर्षि दयानन्द था।

इस सबसे अतिरिक्त महर्षि दयानन्द को मैं स्वतन्त्रता का मन्त्र-द्रष्टा, स्वदेश, स्वभाषा तथा स्वधर्म का उपासक मानता हूं। पट्टाभि सीता रामैया ने एक स्थान पर स्वामी दयानन्द की चर्चा करते हुए कहा था कि 'यदि महात्मा गांधी राष्ट्रपिता हैं तो हमें महर्षि दयानन्द को राष्ट्रपितामह कहना होगा।'

महर्षि दयानन्द को देशभक्ति, राष्ट्रभक्ति की भावना इतनी पवित्र, उत्कृष्ट और सर्वव्यापी थी कि उनके सारे जीवन में और जीवन के समस्त कार्यों में मनुष्य के देह में रुधिर को तरह समाई हुई थी। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में लिखा है कि 'यह आर्यावर्त देश ऐसा है, जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं। इसीलिए इस भूमि का नाम स्वर्णभूमि है क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। ······जितने भूगोल में देश हैं वे इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है, वह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारस-मणि है जिसको दरिद्र विदेशी छूने के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।'

दिनकर ने प्रार्थनासमाजियों और ब्रह्मसमाजियों और महर्षि दयानन्द में अन्तर बताते हुए संस्कृति के चार अध्याय पुस्तक में लिखा है कि दयानन्द एक विशाल अडिग शिलाखंड के समान थे जिन्होने ईसाइयत की और पाश्चात्य संस्कृति की वेगवती धारा के सामने खड़े होकर उसे लौटा दिया और वेदों की ओर लौटो का नारा लगाया तथा दिनकर ब्रह्मसमाजियों और प्रार्थनासमाजियों को कमजोर समझा है और उनकी देशभक्ति राष्ट्रभक्ति में भी वह तेज नहीं बताया है जो महर्षि दयानन्द में है। आप सत्यार्थप्रकाश ग्यारहवें समुल्लास में देखिए वे कहते हैं 'ब्रह्मसमाजियों और प्रार्थनासमाजियों में स्वदेश-भक्ति बहुत न्यून है।·········भला यह आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुए हैं और इसी देश का अन्न जल खाया-पीया, अब भी खाते-पीते हैं तब अपने माता-पिता व पितामहादि के मार्ग को छोड़ दूसरे विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना और एतद्देशस्थ संस्कृत विद्या से रहित अपने को विद्वान् प्रकाशित करना, इंगलिश भाषा पढ़के पण्डिता-भिमानी होकर झटिति एक मत चलाने में प्रवृत्त होना, मनुष्यों का स्थिर और वृद्धिकारक काम क्यों हो सकता है।'

इन शब्दों में उनके हृदय में जितनी वेदना और व्यथा मिलती है। राष्ट्रभक्ति, स्वभाषा, स्वदेश और स्वराज्य के प्रति दी गई उनकी प्रेरणा के कारण ही पट्टाभि सीता रामैया ने उन्हें पितामह कहा है।

महर्षि दयानन्द ने बड़ी वेदना, पीड़ा और व्यथा के साथ लिखा है 'विदेशियों के आर्यावर्त में राज्य होने का कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना, पढ़ाना, बाल्यावस्था में अस्वयम्बर विवाह, विषयासक्ति और मिथ्या भाषण आदि कुलक्षण वेदविद्या का अप्रचार, अन्धविश्वास आदि कुकर्म हैं।' वे कहते हैं कि 'जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं, तभी तीसरा आकर पंच बनकर बैठ जाता है।' उन्होंने फूट और पारस्परिक वैमनस्य से छूटकर स्वराज्य प्राप्त करने का निर्देश किया है। वे लिखते हैं—'आपस की फूट से कौरव, पाडव और यादवों का नाश होगया, सो तो होगया, परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा या आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुःख-सागर में डुबा मारेगा। उसी दुष्ट गोत्र हत्यारे स्वदेश विनाशक, नीच के दुष्टमार्ग में आर्य लोग अब तक भी चलकर दुःख बढ़ा रहे हैं। परमात्मा कृपा करे कि यह राजरोग हममें से नष्ट हो जाय।'

इस प्रसंग में अपनी भावना प्रकट करते हुए ऋषि ने लिखा है 'जब तक एक मत, एक हानि-लाभ, एक सुख-दुःख परस्पर न मानें, तब तक उन्नति होना बहुत कठिन है।' महर्षि दयानन्द ने कूपमडूकत्व से बचाने और दूरदृष्टि की स्थापना के लिए दशम समुल्लास के भक्ष्याभक्ष्य और आचार अनाचार के प्रकरण में लिखा है 'क्या बिना देश-देशान्तर व द्वीप-द्वीपान्तर में राज्य व्यापार किए स्वदेश की उन्नति कभी हो सकती है? जब स्वदेश में ही स्वदेशी लोग व्यवहार करते और परदेशी स्वदेश में व्यापार और राज्य करें तो बिना दुःख दारिद्र्य के दूसरा कुछ भी नहीं हो सकता।' स्वामी दयानन्द उसी प्रकरण में आगे फिर एकता और बन्धुत्व की जागृति के लिए कहते हैं 'इसी मूढ़ता से इन लोगों ने चौका लगाते-लगाते विरोध करते-करते सब स्वातन्त्र्य, आनन्द, धन व राज्य, विद्या और पुरुषार्थ पर चौका लगाकर हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं।' व्यापार और भ्रमण द्वारा देश को समृद्ध और उन्नत करने की प्रेरणा कितनी जोरदार भाषा में व्यक्त की गई है।

दादाभाई नौरोजी ने १९०६ ई० में होमरूल आंदोलन के समय स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया, तिलक महाराज ने १९१६ ई० में 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार' होने की घोषणा की, १९२८ ई० में कांग्रेस ने लाहौर में पूर्ण स्वराज्य की घोषणा को परन्तु स्वामी दयानन्द ने आधी सदी पूर्व ही घोषणा की थी 'कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रहरहित अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय एवं दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।

स्वामी दयानन्द की विचारधारा का आधार वेद था। उन्होंने वेद की ऋचाओं, स्मृति-ग्रन्थों के श्लोकों और ऋषि-मुनियों के आप्त वचनों से राष्ट्रवाद की शिक्षा और दीक्षा ली थी। उनके गुरु विरजानन्द ने अपनी शिक्षा द्वारा उन्हें बता दिया था कि 'स्वतन्त्रता स्वाधीनता, स्वराज्य का तात्पर्य है कि हमारे ऊपर किसी भी अन्य का बन्धन नहीं होना चाहिए। यदि बन्धन किसी का हो तो वह 'स्व' का बन्धन, अपनी आत्मा का बन्धन होना चाहिए। अथर्ववेद का १०।७।३१ का मन्त्र है—

> यदज· प्रथम सबभूव, सह तत्स्वराज्यमियाय।
> यस्मान्नान्यत्परमस्ति भूतम्॥

अर्थात् जब कि कर्मयोगी प्रजामय सबसे प्रथम सगठित होता है, तब वह स्वराज्य प्राप्त करता है। जिससे श्रेष्ठ दूसरा कोई राज्य नहीं है। ऋषि ने इस मन्त्र की यही व्याख्या की है। इससे उनके स्वराज्य की रूपरेखा देखिए। हम अधिक स्थान न होने से इस विषय को समाप्त करने से पहले यह बता देना चाहते हैं कि ग्यारहवें समुल्लास में सत्यार्थप्रकाश में ऋषि ने लिखा है 'सृष्टि से लेकर ····· ·· पांच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती

(शेष पृष्ठ १० पर)

कहीं आप बैल का मांस तो नहीं खा रहे?

मेनका गांधी, पर्यावरण मन्त्री—भारत सरकार

क्या आप भोजन के अन्त में पान, मिठाई या खुशबूदार सुपारी खाना पसन्द करते हैं? और अगर इन चीजों पर वर्क लगा हो तब तो क्या कहने! खुशबूदार सुपारी पर भी वर्क चढाया जाता है। घर में त्यौहारों पर बनने वाली मिठाई पर वर्क होता ही है।

चांदी का वर्क बहुत महगा नही होता। कीमत उसके वजन पर निर्भर करती है। आमतौर पर १६० वर्क १०० रु० से २०० रु० से मिल जाते हैं। यानी करीब एक एक रुपये में एक वर्क लगाया जाने लगा है, कुछ आयुर्वेदिक दवाइयों को भी वर्क में लपेटकर खाने को सलाह दी जाती है।

आपका क्या ख्याल है—चांदी वर्क कैसे बनता है? कलेजा थाम लीजिये।

बैल की आंत की तहों को किताब-सी बनाकर उसमें चांदी की पतली पत्ती रखकर, वर्क बनाया जाता है। दूसरे शब्दों में—बैल को बूचड़खाने में मारने के बाद उसकी आंते निकालकर फौरन वर्क बनाने वाले को बेच दी जाती हैं पुरानी आंतों से बनी चमडी काम नही, आती, यहां तक कि एक दिन पुरानी आंते भी नही, क्योंकि कुछ घण्टे बाद लचक जाती रहती है।

वर्क बनानेवाला आंतों से रक्त और मल साफ करके उसके टुकडे-टुकडे कर देता है और एक के ऊपर एक टुकडा रखकर तहों की किताब सी बना लेता है। अपने घर या 'कारखाने' में जाकर इस किताब के एक-एक पन्ने में चांदी (या सोने) के टुकडे रखकर हथौड़े से पीटता है। ऐसा करने से चांदी (या सोने) की पत्ती पतली होते-होते वर्क का रूप धारण कर लेती है।

बैल की आंते इतनी मजबूत होती हैं कि लगातार हथौड़े मारने पर भी उसका कुछ नहीं बिगड़ता और फिर, इसमें रखी चांदी की पत्ती इधर-उधर नही होती। हथौड़े मारने से बैल की आंत का कुछ अंश वर्क में मिल जाता है।

इसके बाद वर्क वाला ये वर्क हलवाइयों और मीठी सुपारी बनाने वालों को थोक में बेच देता है। छोटे पैमाने पर वर्क तैयार करने वाले लोग मन्दिरों को वर्क बेचते हैं, जहां वर्क को प्रसाद पर चढाया जाता है।

यह वर्क गन्दी चीज तो है ही, मांसाहार भी है। मांस खाने वाले भी आंत नहीं खाते। और तो और, यह वर्क, सुपारी और मिठाई को भी मांसाहार बना देता है। कुछ साल पहले इण्डियन एयर लाइंस को पता चला कि वर्क शाकाहार नही है, तभी से भारतीय विमानों में परोसी जानेवाली मिठाई पर वर्क नही चढाया जाता है।

पान के शौकीन शाकाहारी लोग अब तक बैल की कई मील आंते खा चुके हैं। उनके लिए एक और खबर—

जो चूना आप खाते हैं, वह भी शाकाहार नहीं है।

कुछ चूना तो असली चूना होता है, जो अपने आप में हानिकारक है। लेकिन पानवाले ज्यादातर जो चूना इस्तेमाल करते हैं वह सीपियों से बनता है। 'सीपी' क्या है? समुद्री जीवों के शरीर का एक हिस्सा है। वे जीव हमारे समुद्रों और तटों को साफ रखते हैं, इसलिये बहुत उपयोगी हैं।

इन छोटे-छोटे जीवों को पानी से निकालकर मार दिया जाता है। फिर सीपियां निकालकर भून लेते हैं। सीपियां भून जाने के बाद वह 'इथल' बन जाती है। इसे पानी में भिगोकर नरम कर लेते हैं। इसके पश्चात् इसे सुखाकर, कूटकर, सफेद पाउडर बना लेते है। इसमें गोंद जैसा रसायन मिला लेते हैं। बस, चूना तैयार, जो पान में इस्तेमाल होता है।

आप चूना मुंह में डालते हैं, तो कई मरे हुए जीवों को खा जाते है। यह वैसे ही है जैसे किसी बकरे या सूअर को मारकर खाना। जीवन सभी प्राणियों में है। पीडा भी सभी को एक सी होती है।

अगर जब आप पान खाएं तो चूना नहीं खायें। न ही मिठाई या मीठी सुपारी पर लगा वर्क खाकर जानवर की आंत खाइए। अगर कोई हलवाई या मीठी सुपारी बनानेवाला आपका परिचित हो, तो उससे कहिये कि वर्क इस्तेमाल न करे। कभी-कभी खुशबू और वर्क से सभी कुछ छिप जाता है, इसलिए सुपारी बनाने वाली कम्पनियां कभी-कभी खराब या पुरानी सुपारी से खुशबूदार सुपारी बनाती हैं जो शरीर के लिये बहुत खतरनाक हैं। अगर वे वर्क न चढ़ाएं तो आपको पता चल सकता है कि सुपारी ताजा और खाने लायक है या नही।

—इलस्ट्रेटिड वीकली आफ इंडिया से साभार

विश्वशान्ति यज्ञ

प्रसिद्ध आर्यसमाजी साधुपुरुष प्रि० होश्यारसिंह जी की अध्यक्षता में गांव बामनौली (जिला—रोहतक) में विश्वशान्ति व भाईचारे के विकास व आध्यात्मिक शान्ति की पुनीत कामना को लेकर आर्यसमाज छोटूराम पोलोटैकनिक घेवरा की ओर से लोहड़ी व मकरसंक्रान्ति के पवित्र अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया। जिसमें विश्वशान्ति की कामना से आहुतियां डाली गई। यज्ञ में इलाके के गणमान्य व्यक्ति तथा आसपास के गांववासी बड़ी संख्या में आए हुए थे। यज्ञ समाप्ति पर प्रि० साहब ने गांव में यज्ञ-समिति का गठन किया जो गांव के आर्यसमाज के तत्वावधान में वैदिक रीति से समय-समय पर यज्ञ एवं धार्मिक गोष्ठियां व अनुष्ठानों का आयोजन करती रहेगी। सभा में प्रि० साहब का इलाके व आर्यसमाज के कार्यों के लिए साधुवाद व धन्यवाद दिया। उन्होंने सभा को सम्बोधित करते हुए यज्ञ का महत्त्व वैदिकधर्म आज के परिवेश में विश्वशान्ति पर अपने विचार व्यक्त किए तदनन्तर सभा विसर्जित हुई।

—शमशेरसिंह 'आर्य'
(मन्त्री) आर्यसमाज छोटूराम पोलोटैकनिक
घेवरा/कझावला, दिल्ली-८१

आर्यो! सुनहरा अवसर

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि आजकल जनगणना का कार्य पूरे भारतवर्ष में जोरों से चल रहा है हरयाणा में यह कार्य ९ फरवरी से आरम्भ होरहा है। सभी आर्यजनों, आर्यवीरों से निवेदन यह है कि आप इस अवसर का विशेष ध्यान करते हुए घर-घर जाकर इस बात का प्रचार करें कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी भाषा हिन्दी तथा संस्कृत आर्यभाषा ही लिखवाए। यह ठीक है कि हरयाणा एक हिन्दी बहुल राज्य है फिर भी इसमें काफी क्षेत्र ऐसा है जहा पर जागृति लाना आवश्यक है अतः इस अवसर पर प्रत्येक आर्यवीर अपने-अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक प्रचार करे। इस कार्य से ही राष्ट्र एकता मजबूत होगी।

मनोहरलाल, सह संचालक, आर्यवीर दल, हरयाणा।
वेदप्रकाश आर्य, प्रांतीय मन्त्री, आर्यवीर दल, हरयाणा।

(पृष्ठ ९ का शेष)

राज्य था। अन्त मे इस प्रकरण में उन्होंने लिखा है—"अब इनके सन्तानों का अभाग्योदय होने से राज्यभ्रष्ट होकर विदेशियों के पदाक्रान्त होरहे हैं' लिखा है। आठवें समुल्लास में लिखा है कि अभाग्योदय से आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों में राज्य करने की बात ही क्या किन्तु आर्यावर्त मे आर्यों का अखंड, स्वतन्त्र, स्वाधीन निर्भय राज्य इस समय नही है।' इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने राष्ट्रीयता को जागृत करने के लिए और स्वतन्त्रता की प्रेरणा के लिए सार्वभौमिक चक्रवर्ती राज्य की चर्चा की है। हिटलर, मुसोलिनी, चीन, ब्रिटेन आदि की तरह उनका लक्ष्य शोषण, उत्पीडन और दमन नहीं। उन्होने वेद, मनुस्मृति, शुक्रनीति तथा विदुरनीति के साथ उनका लक्ष्य रखा है 'वय प्रजापतेः प्रजा अभूम' अर्थात् हम सभी राष्ट्र के वासी परमेश्वर की प्रजायें और वह हमारा राजा है। प्रजापति की प्रजा और राजा का सम्बन्ध क्या होगा यह तो यजुर्वेद अट्ठारहवें अध्याय के उन्नीसवें मन्त्र की उनकी व्याख्या से समझ जायेंगे। वे परमात्मा से कहते हैं "आपकी कृपा से हम 'स्वरगम्य' उत्तम सुख को प्राप्त हों।"

इस प्रकार स्वधर्म, स्वभाषा और स्वदेश की भावना को जागृत करनेवाले ऋषि के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

साम.सुधा शतक

(९)

देव तुम मेरी टेक रख दो

ओं वचसो मां समनवतत्वग्नि मेधां मे विष्णुर्न्यनक्तवासन्।
रयिं मे विश्वे नियच्छतु देवाः स्योनामापः पवनैः पुनन्तु॥
अथर्व० ।८।३। ॥

अग्निमय हे प्रभुवर मेरे,
कर मेरा वर्चस् अभिषेक।
विभु प्रभु व्यापक कण-कण में
कर दो मम मेधा उद्रेक।
कर्मनिष्ठ हों गुण-गुण मेरे,
विश्व विभव का हो अतिरेक।
ज्ञानी जन निज ज्ञान कर्म से,
कर पवित्र रखें मम टेक।

(१०)

धीर ही तो परं पद पाते हैं

ओं तद्विष्णोः परमं पद सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवीव चक्षुराततम्॥ ऋ०म० १/सू० २२/मंत्र २०

रम्यमाण है जो अग जग में,
विष्णु रूप में वह भगवान्।
चरम चरण है जो मुक्ति पद,
है वह उसका परम महान्।
देख उसे पाते हैं वे ही,
ज्ञानी जन हैं जो मुनि-धीर।
जैसे नेत्र विलोकन करता,
विस्तृत रवि प्रकाश के तीर।

(११)

यह धन किसका है!

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम्॥
यजु० अ० ४०

जड़ जंगम जो भी जगती में,
दीख पड़े यह विभव अपार।
विभुवर ने विरचा है इसको,
कण-कण में करता संचार।
दिया उसी का तुम भोगो रे,
लालच का कर दो तुम त्याग।
किसका यह विभव विश्व का,
है उसका सो सबका भाग।

(१२)

वही उपासनीय है!

ओं हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां, कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
यजुर्वेद अध्याय ३२

वही ज्योतिमय प्रथम पूर्व था,
विश्व ज्योति का परम निधान।
जगती भर के जीव जगत् का,
था वह पालक एक महान्।
कर सर्जन धारा उसने ही,
इन भू-द्यु लोकों का भार।
उसी एक सुखमय जगस्रष्टा,
को हम होते हैं बलिहार।

—प्रो० धर्मचन्द्र विद्यालंकार,
पलवल

गुरुकुल कार्यालय का शिलान्यास

जीन्द—श्री देशराज, बिजली, सिंचाई एवं जेल राज्यमन्त्री ने यहां से लगभग २५ कि० मी० दूर कन्या गुरुकुल, शादीपुर (जुलाना) में गुरुकुल कार्यालय का शिलान्यास किया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि गुरुकुल हमारी प्राचीन सभ्यता को कायम रखे हुए हैं और अंग्रेजी स्कूलों को अपेक्षा यह पद्धति उत्तम है जहां आने वाली पीढ़ियों को वैदिक शिक्षा मिलेगी एवं सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में मदद मिलेगी। इस अवसर पर उन्होंने अपने ऐच्छिक कोष से २१ हजार रु० देने की घोषणा की।

इस अवसर पर शिक्षा राज्यमन्त्री श्री सुरेन्द्रसिंह बरवाला ने अध्यापक कक्ष का शिलान्यास किया और २१ हजार रुपये गुरुकुल को देने की घोषणा की। उन्होंने बताया कि हरयाणा सरकार लड़कियों की शिक्षा के लिए तीन गुणा मैचिंग ग्रांट देती है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे कन्याओं को जरूर शिक्षित करें क्योंकि एक कन्या को पढ़ाने से दो परिवारों का सुधार होता है।

इस समारोह की अध्यक्षता श्री कुलबीरसिंह मलिक, पशुपालन राज्यमन्त्री ने की। उन्होंने कुलपति भवन का शिलान्यास किया एवं गुरुकुल को ११ हजार रुपये देने की घोषणा की।

बोध शिवरात्री पर्व

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (अधिष्ठाता वेदप्रचार वि०)
(कुण्डलिया छन्द)

ब्रह्मचारी प्रिय मूल ने, पितु आज्ञा को पाय।
व्रत शिवरात्रि का रखा, अति मन में हरषाय।।
अति मन में हरषाय, चला शिव मन्दिर आया।
बिल्वादि, मिष्ठान, भोग शिवजी को चढाया।।
बजा शंख घड़ियाल, कीर्तन करके भारी।
बनकर शम्भूभक्त मूलशंकर ब्रह्मचारी।।

शिवमन्दिर में बैठकर, कर्षन जी का लाल।
भाल तिलक गल में पड़ी थी रुद्राक्षी माल।।
थी रुद्राक्षी माल, पीत पट तन पर धारण।
बम बम हर हर श्लोकादि कर उच्चारण।।
कूट-कूट कर भरी हुई श्रद्धा दिल अन्दर।
बैठा आसन मार मूल शंकर शिव मन्दिर।।

गुजराती प्रिय भक्तजन, लगा लगा कर भोग।
वापिस होगये रह गये, कुछ थोड़े से लोग।।
कुछ थोड़े से लोग, रात आधी हो आई।
लगे ऊंघने सभी, नींद ने लिये दबाई।।
छा रही पूर्ण स्तब्धता, जल रही दीपक बाती।
जाग रहा था सिर्फ एक, बालक गुजराती।।

अभिलाषा लिये कर रहा, मूल ईश का ध्यान।
पिण्डी से प्रकटे अभी, गौरीपति भगवान्।।
गौरी-पति भगवान्, बिल से एक चूहा निकला।
लगा चढ़ावा खाने, पिण्डी ऊपर उछला।।
बाल मूलशंकर ने देखा, अजब तमाशा।
जंच गई बात नहीं होय, पूर्ण मेरी अभिलाषा।।

कहलाता महादेव जो, हरे सकल सन्ताप।
कर नहीं पाता आज वह, रक्षा अपनी आप।।
रक्षा अपनी आप, जगत् में छाई महिमा।
खुले ज्ञानचक्षु, ये है पाषाण प्रतिमा।।
उठ गई आस्था जड़पूजा से तोड़ा नाता।
इसीलिये यह पर्व, बोधरात्रि कहलाता।।

पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज कृष्ण नगर भिवानी (हरयाणा) के लिए एक विद्वान् योग्य व अनुभवी पुरोहित की तत्काल आवश्यकता है। वेतन योग्यता के आधार पर निश्चित किया जायेगा। आवास, बिजली, पानी की सुविधा नि.शुल्क होगी। इच्छुक सज्जन, मन्त्री आर्यसमाज कृष्ण नगर भिवानी से शीघ्र पत्राचार करें।

—मन्त्री

—०—

'प्रभार'—वैशाख'२०४८

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०/७३ रजि. नं० P/RTK-४६ फोन नं० ७४८१२ सृष्टिसंवत् १,९६, ०८, ५३, ०९०

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक – सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक १३ २१ फरवरी, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा के अन्तर्गत गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को सुचारु रूप से चलाने का निश्चय

आर्यजगत् के विख्यात त्यागी तपस्वी संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की यज्ञशाला में सभा के अधिकारियों तथा जि० फरीदाबाद के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की १० फरवरी ९१ रविवार को प्रातः ११ बजे बैठक सम्पन्न हुई। इस बैठक में निम्नलिखित आर्य महानुभावों की उपस्थिति उल्लेखनीय है।

१. स्वामी ओमानन्द सरस्वती, २. प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान, ३. म० भरतसिंह सभा उपप्रधान, ४. ला० लछमनदास आर्य सभा उप प्रधान, ५. श्री राजेन्द्रसिंह बिसला पूर्व विधायक, फरीदाबाद, ६. श्री कन्हैयालाल महता फरीदाबाद, ७. डा० सोमवीरसिंह सभा उपमन्त्री ८. श्री वेदव्रत शास्त्री, ९. प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार, १०. प्रो० सत्यवीर शास्त्री, ११. श्री सुमेरसिंह आर्य, १२. श्री भरतसिंह सरपंच, १३. श्री बलवानसिंह आर्य, १४. श्री मदनलाल, १५. श्री मित्तल एडवोकेट, १६. श्री अमृतसिंह सरपंच, १७. श्रीचन्द आर्य, १८. श्री महावीर सिंह शास्त्री, १९. स्वामी सिंहमुनि, २०. स्वामी ब्रह्मानन्द, २१. श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री, २२. श्री फिरेराम अनगपुर, २३. श्री जगदीशचन्द्र अनंगपुर २४. श्री तेजपाल चौहान बल्लबगढ, २५. श्री महिपाल आर्य मिरजापुर, २६. श्री तरुण फरीदाबाद, २७. गिरधारीलाल फरीदाबाद, २८. श्री गोपीराम बल्लबगढ, २९. श्री सत्यवीर शास्त्री सभा उपमन्त्री ३०. श्री प्रहलादसिंह अनगपुर, ३१. श्री श्यामलाल आर्य गुड़गांव, ३२. श्री सत्यवीरसिंह शास्त्री सोनीपत, ३३. श्री हरिराम आर्य कारोली, ३४. श्री सुरेश भडाणा एडवोकेट बल्लबगढ़, ३५. अतरसिंह सरपच पाली, ३६. श्री दीवानसिंह नम्बरदार झाडसा, ३७. श्री सत्यप्रकाश आर्य गाडोली कलां, ३८. आचार्य विनोदकुमार खूसी, ३९. श्री फतेह सिंह आर्य कारोली, ४०. म० किशोरसिंह आर्य औरंगाबाद, ४१. श्रीचन्द भडाना पाली, ४२. श्री सुखपाल बल्लबगढ़, ४३. अतरसिंह पूर्व सरपंच पाली, ४४. श्री सत्यवीरसिंह भडाना, ४५. श्रीमती कौशल्यादेवी, ४६. श्रीमती बन्सरीदेवी, ४७. प्रियम्वदा आर्या, ४८. प्रिंसिपल लाभसिंह ४९ भजनलाल आर्य मितरोल, ५०. श्री रतनसिंह लाठर, ५१. श्री आर. एस. तहलान दिसावर खेडी, ५२. सुखबीरसिंह आर्य बल्लबगढ़, ५३. ईश्वरसिंह आर्य मिरजापुर, ५४. रविन्द्र चावला फरीदाबाद, ५५. चन्द्रसेन शास्त्री सोनीपत, ५६. पं० बुधराम आर्य तिलपत, ५७ श्री रामचन्द्र आर्य रोहणा तथा दयानन्द विद्यालय फरीदाबाद की अध्यापिकाएं तथा छात्राए आदि।

बैठक में उक्त महानुभावों ने श्री ओमानन्द जी सरस्वती तथा प्रो० शेरसिंह जी सभा प्रधान को आश्वासन दिया कि हम गुरुकुल के सचालन में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को तन, मन तथा धन से पूरा सहयोग तथा समर्थन देंगे। इन्होंने सभा से यह भी अनुरोध किया कि स्थानीय आर्यकर्त्ताओं को भी प्रबन्ध समिति में सम्मिलित करके विश्वास में लिया जावे जिससे गुरुकुल की सुरक्षा में योगदान दे सकें।

पर्याप्त विचार विमर्श करके सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि १ स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, २ प्रो० शेरसिंह जी, ३ महेन्द्र प्रतापसिंह विधायक, ४ ला० लछमनदास आर्य, ५ श्री सूबेसिंह सभा मन्त्री पर आधारित उपसमिति शीघ्र ही गुरुकुल के शुभचिन्तकों से विचार विमर्श के पश्चात् सभा की ओर से गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की प्रबन्ध समिति का गठन करके गुरुकुल संचालन तथा सभा की सम्पत्ति की सुरक्षा का कार्यभार आरम्भ कर दिया जावे।

केदारसिंह आर्य

जिला सोनीपत वेदप्रचार मण्डल के नये अधिकारी

आर्य वेद प्रचार मण्डल सोनपत तथा जिला सोनीपत के आर्य-समाजों की बैठक दिनांक १३ फरवरी ९१ को आर्यसमाज मन्दिर १४ सैक्टर सोनीपत में सम्पन्न हुई। जिला सोनीपत में आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ करने तथा वेद प्रचार का प्रसार करने के उद्देश्य से आर्य वेद प्रचार मण्डल सोनीपत का जिला सोनीपत वेद प्रचार मण्डल में सर्वसम्मति से विलय किया गया। इस प्रकार जिला सोनीपत वेद प्रचार मण्डल के नये अधिकारियों का चुनाव निम्न प्रकार किया गया—संरक्षक चौ० सूर्यमल आर्य बाघड़ू, महाशय टेकचन्द आर्य कुराड़, श्री रामगोपाल आर्य सोनीपत, प्रधान श्री सत्यवीरसिंह शास्त्री काठमण्डी सोनीपत, उपप्रधान श्री देवप्रिय आर्य १४ सैक्टर सोनीपत, मन्त्री श्री रामचन्द्र आर्य सोनीपत नगर, कोषाध्यक्ष श्री ईश्वरदयाल आर्य सैक्टर १४ सोनीपत, कार्यालय मन्त्री श्री देवदत्त आर्य सोनीपत नगर

जिला सोनीपत के अन्य आर्यसमाज के सक्रिय आर्य कार्यकर्त्ताओं का चयन करने का अधिकार मण्डल के प्रधान एवं मन्त्री को दिया गया। जिला सोनीपत में आर्यसमाज का प्रचार करने के लिए एक भजन मण्डली को नियुक्त करने का निश्चय किया गया। एक प्रस्ताव द्वारा प्रो० वेदव्यास जी द्वारा ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज के मन्तव्यों के विरुद्ध लिखे गये लेखों की निन्दा की गई और प्र० वेदव्यास जी से अनुरोध किया गया कि वे अपने लेखों में सुधार करें अन्यथा दयानन्द ऐंगलो वैदिक विद्यालय प्रबन्धक समिति से त्याग-पत्र देने का कष्ट करें जिससे आर्यसमाज के प्रचार कार्यों में बाधा दूर हो सके।

आर्यसमाज १४ सैक्टर सोनीपत का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज १४ सैक्टर सोनीपत का चौथा वार्षिक उत्सव ११ से १३ फरवरी तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर वैदिक विद्वानों के प्रवचन तथा श्रीमती राजबाला आर्या के प्रभावशाली संगीत हुए। ऋषिबोध दिवस पर ऋषि लगर का भी आयोजन किया गया।

केदारसिंह आर्य

गुरुकुल झज्जर की हीरक जयन्ती पर राज्यपाल तथा मुख्यमन्त्री का आगमन

गत वर्ष गुरुकुल झज्जर को स्थापित हुए ७५ वर्ष पूरे होने पर हीरक जयन्ती महोत्सव का शुभारम्भ किया गया था। इस वर्ष १५ से १७ फरवरी को इसका समापन समारोह धूमधाम से सम्पन्न हो गया। इस शुभावसर पर आर्यजगत् के सवमान्य वीतरागी संन्यासी श्री स्वामी सर्वानन्द जी के अतिरिक्त हरयाणा के राज्यपाल श्री धनिक लाल मण्डल, मुख्यमन्त्री श्री हुकमसिंह उनके मन्त्री परिषद् मन्त्री श्री घोरपालसिंह, श्री मांगेराम, श्री कुलवीरसिंह मलिक, श्री श्रीकृष्ण हुड्डा तथा श्रीमती मेधावी कीर्ति आदि विशेषरूप से पधारे। इस प्रकार जहां आर्यजगत् के उच्चकोटि के सन्यासी मंच पर विराजमान थे वहां हरयाणा प्रदेश के सर्वोच्च अधिकारी भी उपस्थित थे। इस संगम को देखकर सभी का मन हर्षित था कि गुरुकुल झज्जर का महत्त्व जहां आर्यसमाज में प्रमुख है वहां राज्य सरकार भी इससे अत्यधिक प्रभावित है। श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने जब इस कार्यभार को सम्भाला था, उस समय गुरुकुल बन्द होने की अवस्था में था, परन्तु आज श्री स्वामी जी के निरन्तर तप त्याग तथा साधना से गुरुकुल एक विश्वविद्यालय का रूप धारण कर चुका है। यह आर्यजगत् के लिए एक गौरव का विषय है।

१७ फरवरी को प्रातः यज्ञ की कार्यवाही के साथ गुरुकुल शिक्षा सम्मेलन का उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरद्वार के कुलाधिपति, गुरुकुल झज्जर के कुलपति तथा योजना आयोग भारत के सदस्य प्रो० शेरसिंह ने किया तथा गुरुकुल हीरक जयन्ती पर एक लाख से अधिक दान देने वाले आर्य किसान श्री सुमेरसिंह स्वरूपगढ भिवानी तथा आर्य उद्योगपति श्री मित्रसेन आर्य खाण्डाखेडी (हिसार) का विशेषरूप से स्वागत किया गया। दोनों आर्य महानुभाव आर्यसमाज की अन्य संस्थाओं को भी उदारतापूवक दान देते रहते हैं। इन पर आर्यसमाज को गर्व है। इस सम्मेलन पर सभा की प्रभावशाली भजन मण्डली श्री जयपालसिंह तथा प० हरलाल ने गुरुकुल तथा आर्यसमाज की महिमा पर भजन सुनाकर सभी को मोहित किया। आर्यसमाज के एक विख्यात विद्वान् पं० चिन्तामणि जी ने अपने ओजस्वी व्याख्यान में गुरुकुल के संचालकों की सहायता करते हुए कहा कि स्कूल तथा कालेज अंग्रेजी तथा पश्चिमी संस्कृति को बढावा देरहे हैं, परन्तु गुरुकुल सच्चे अर्थों में वैदिक संस्कृति का पालन-पोषण करके वैदिक विद्वान् तथा पण्डित तैयार कर रहे हैं। महात्मागांधी समझौतावादी थे परन्तु ऋषि दयानन्द सिद्धान्तवादी थे। भारत को स्वतन्त्र कराने का मार्ग दर्शन ऋषि दयानन्द ने सर्वप्रथम किया। यदि ऋषि दयानन्द न आते तो भारत स्वतन्त्र नहीं हो सकता था। कांग्रेस के आंदोलन में ८५% आर्यसमाजी थे जिन्होंने बड़े से बड़ा बलिदान दिया। आज भी आर्यसमाज राष्ट्ररक्षा के कार्यों में अग्रणी है। विख्यात समाजवादी कवि अवधविहारी ने मनोहर कविता सुनाकर उनकी पुष्टि की। हरयाणा के माननीय राज्यपाल तथा मुख्यमन्त्री आदि के मंच पर पधारने पर गुरुकुल झज्जर के स्नातक डा० योगानन्द जी तथा डा० सुदर्शनदेव जी आचार्य ने उन्हें अभिनन्दन पत्र भेंट किये तथा सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने उनसे अनुरोध किया कि स्कूल कालेजों की भांति सरकार गुरुकुलों को उदारतापूर्वक अनुदान देवे क्योंकि हरयाणा में वैदिक संस्कृति की रक्षा ये गुरुकुल कर रहे हैं। स्वामी श्रद्धानन्द ने इसी उद्देश्य से हरयाणा की इस पवित्र धरती पर झज्जर, मटिण्डू भैंसवाल, इन्द्रप्रस्थ तथा कुरुक्षेत्र में गुरुकुलों की स्थापना करवाई थी। आज गुरुकुल झज्जर के स्नातक भारत के सभी गुरुकुलों में योगदान देरहे हैं और वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। प्रो० शेरसिंह ने जहां हरयाणा सरकार को वृद्धों तथा बेरोजगारों को पेन्शन देने की सराहना की वहां हरयाणा प्रदेश में शराब की नदियां बहाने पर आलोचना की और मुख्यमन्त्री को परामर्श दिया कि वे शराबबन्दी लागू करके हरयाणा की खुशहाली तथा वैदिक संस्कृति की रक्षा करें अन्यथा विकास के सारे कार्य व्यर्थ जावेंगे। आपने कहा कि मेघालय, नागालैंड, मिजोरम ने शराबबन्दी लागू करदी है। योजना आयोग ने गुजरात राज्य को उसकी जनसंख्या से अधिक योजना के लिए धन दिया है। वहां भी शराब बन्द है और वहां शराब की बिक्री करनेवाले राज्यों से अधिक वार्षिक आय में वृद्धि हुई है। गुरुकुल डिकाडला के आचार्य ब्र० ओमस्वरूप ने विद्यालयों की भांति गोशालाओं को भी अनुदान देने की मांग की।

श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने राज्यपाल तथा मुख्यमंत्री महोदय को अपने ओजस्वी भाषण में स्मरण करवाया कि यदि आर्य-समाज अपने गुरुकुलों के सहयोग से ऐतिहासिक हिन्दी आंदोलन न चलाता तो हरयाणा प्रदेश न बनता और आपको हरयाणा राज्य की कुर्सी पर बैठने का अवसर न मिलता। अतः हरयाणा सरकार को आर्यसमाज की संस्थाओं को अधिक से अधिक आर्थिक सहायता देनी चाहिए।

श्री धनिकलाल मण्डल राज्यपाल महोदय ने आर्यनेताओं की अपील को न्यायसंगत स्वीकार करते हुए कहा कि स्कूल कालेजों की भांति गुरुकुलों को भी सरकार को सभी प्रकार का संरक्षण देना चाहिए। कालेजों के विद्यार्थी जहां भौतिक विज्ञान में आगे बढ रहे हैं वहां गुरुकुलों के विद्यार्थी आध्यात्मिक ज्ञान में पीछे नहीं रह सकते परन्तु इनकी उपेक्षा होने पर सन्तुलन बिगड़ रहा है। और इसी कारण भारत उतनी उन्नति नहीं कर सका जितनी उन्नति महाभारतकाल से पूर्व थी। आपने महर्षि दयानन्द सरस्वती को श्रद्धाजलि देते हुए कहा कि उनके सिद्धांतों पर ही चलकर विश्व में शांति हो सकती है। उनके ही अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द तथा स्वामी ओमानन्द ने अपने तप तथा त्याग से गुरुकुलों का सचालन करके सिद्ध कर दिया है कि वर्तमान की सभी समस्याओं का समाधान गुरुकुल शिक्षा पद्धति से हो सकता है। वैदिक धर्म तथा संस्कृति को गुरुकुल ही जीवित रखे हुए हैं। आपने विश्वास दिलाया कि मैं गुरुकुलों की प्रत्येक प्रकार की सहायता करने के लिए तैयार रहूगा।

सम्मेलन के अन्त में श्री हुकमसिंह जी मुख्यमन्त्री महोदय ने गुरुकुलों की पढाई की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि यदि मेरा वश चले तो मैं अंग्रेजी की अनिवार्यता को एकदम बन्द करदूं परन्तु अभी रुकावटें हैं। अंग्रेजी भाषा के समर्थकों की पोल खोलते हुए आपने कहा कि प्राचीन भारत के आर्य क्या अंग्रेजी जानते थे? वे विज्ञान में भी आज के युग के वैज्ञानिकों से बहुत आगे थे। आपने हरयाणा प्रदेश में १०+२ पाठ्यक्रम में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करने के पश्चात् शीघ्र ही कालेजों में भी इसका सफाया करने की घोषणा की और गुरुकुल झज्जर के छात्रावास को २ लाख व्यायाम-शाला को ८० हजार अनुदान दिया जायेगा। श्रीमती मेधावी कीर्ति ने भी २५ हजार अनुदान दिया।

हरयाणा के शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं से निवेदन

शराब के ठेकों की नीलामी स्थान पर प्रदर्शन करें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने हरयाणा प्रदेश के शराबबन्दी तथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन किया कि फरवरी के अन्तिम सप्ताह तथा मार्च में जिलों के जिन मुख्यालयों पर शराब के ठेकों की नीलामी होगी, वहां प्रदर्शन करें तथा हरयाणा सरकार को पूर्ण शराबबन्दी लागू करने का ज्ञापन देवें। स्मरण रखें कि यदि हरयाणा में शराब की बिक्री पर पाबन्दी न लगाई गई तो हरयाणा की प्राचीन वैदिक संस्कृति समाप्त हो जावेगी और किसान मजदूरों की खून पसीने की कमाई शराब खरीदने तथा पीने पर बर्बाद हो जावेगी।

अध्यापकों के चरित्र की निंदा

एलनाबाद, ११ फरवरी (निस)। निकटवर्ती गांव के निवासियों में सरकारी स्कूल के अध्यापकों को लेकर भारी रोष व्याप्त है। गांव वालों का कहना है कि कुछ अध्यापकों को छोड़कर कोई भी अध्यापक समय पर स्कूल में नहीं आता तथा जिस वक्त आते हैं तो शराब पीकर आते हैं दिन दहाड़े स्कूल में मीट बनाई जाती है। तथा शराब उड़ती है। गत दिनों उपायुक्त महोदय द्वारा लगाए गए खुले दरबार में भी गांव निवासियों ने एक अध्यापक को शराबी हालत में पेश किया था।

दैनिक जन सन्देश

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत संगोष्ठी में आर्यसमाज के मन्तव्यों की गूंज

डा० भवानीलाल भारतीय

गत २८-३० दिसम्बर को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संस्कृत तथा प्राच्य विद्या संस्थान की ओर से एक राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठी आयोजित की गई। इसका उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलपति जनरल कृष्ण स्वामी बलराम ने किया और मुख्य अतिथि के रूप में आर्यसमाज के तप:पूत संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी ने अपना भाषण प्रस्तुत करते हुए हरयाणा के प्रांचलिक भागों में बिखरी पडी पुरातात्त्विक सम्पदा की ओर शोध विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि आज भारत के इतिहासविद् पाश्चात्य देशों के इतिहासकारों के अनुवर्ती बनकर अनेक गलत तथ्यों को प्रचारित कर रहे हैं जिससे हमारी राष्ट्रीय अस्मिता को गहरा धक्का पहुंच रहा है। संगोष्ठी के निदेशक प्रो० यज्ञवीर ने समागत विद्वानों का स्वागत करते हुये विभिन्न सत्रों में प्रस्तुत किये जाने वाले शोध-पत्रों तथा वाचकों का परिचय दिया।

तत्पश्चात् २८ दिसम्बर की प्रात:कालीन कार्यवाही आरम्भ हुई। इस सत्र में संस्कृत व्याकरण पर कुछ महत्त्वपूर्ण पत्र पढे गये। सर्वप्रथम पंजाब विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रवक्ता डा० विक्रमकुमार ने संस्कृतव्याकरणक्षेत्रे दयानन्दस्वामिनो योगदानम्' शीर्षक अपना विद्वत्तापूर्ण पत्र पढा। इसमें महर्षि दयानन्द द्वारा आर्ष व्याकरण के पुनरुद्धार, पाणिनीय अष्टाध्यायी तथा पातंजल महाभाष्य की व्याकरण अध्ययन में उपयोगिता आदि की चर्चा के साथ-साथ सिद्धान्त कौमुदी आदि ग्रन्थों की त्रुटियों का भी निदर्शन किया गया था। पत्र वाचन के पश्चात् प्रश्नोत्तर काल में जब एक विद्वान् ने कहा कि व्याकरण अध्ययन में कौमुदी की उपयोगिता को तो स्वीकार करना ही पडेगा। इस पर परोपकारी के सम्पादक तथा दयानन्द कालेज अजमेर के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा० धर्मवीर ने अपना सटीक समाधान प्रस्तुत करते हुए कहा कि कौमुदी की उपयोगिता उतनी ही है, जितनी परीक्षार्थी के लिये किसी Help Book (पास बुक या कुंजी) की होती है। मुख्य व्याकरण ग्रन्थ तो अष्टाध्यायी और महाभाष्य ही हैं जो व्याकरण की Text Books हैं। उनकी अवहेलना करने और केवल पास बुक की सहायता लेने से व्याकरण का ज्ञान अत्यन्त सामान्य स्तर का ही होगा।

उनके इस युक्तिपूर्ण समाधान का मेजें थपथपा कर स्वागत किया गया। इस पर प्रतिपक्षी विद्वान् ने स्वामी दयानन्द द्वारा कौमुदी पर किये गये आक्षेपों से किंचित् उद्विग्न होकर व्यंग्यपूर्ण स्वर में कहा कि वस्तुत: कौमुदी तो विद्वानों के लिये ही है। इस पर डा० धर्मवीर ने पुन: कहा कि आप लघु सिद्धान्तकौमुदी के मंगल श्लोक की व्याख्या को देखें वहां लिखा है—पाणिनीयप्रवेशाय बालानां पाणिनीय व्याकरणशास्त्रे प्रवेशार्थं ·····ताम् करोमि आदि। अर्थात् इस कौमुदी की रचना तो बालकों के लिये हुई है न कि विद्वानों के लिये। इस पर सभा भवन पुन: अट्टहास से गूंज उठा। प्रतिपक्षी विद्वान् ने जब कहा कि "बालानां" सुखबोधाय की बात तो लघुकौमुदी पर घटित होती है न कि सिद्धान्तकौमुदी पर तो सभी विद्वानों ने स्वीकार किया कि सारे ही कौमुदी ग्रन्थ एक ही कोटि के हैं। इस प्रकार महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का जयजयकार हुआ। इसी सत्र में पंजाबी विश्वविद्यालय के रीडर डा० भीमसिंह एवं डा० धर्मवीर ने भी अपने शोध पत्र पढे जो क्रमश: 'महाभाष्य के आधार पर शब्द का स्वरूप' तथा 'वैयाकरणों की दृष्टि में ध्वनि का स्वरूप' विषयों पर थे।

द्वितीय दिन (२९ दिसम्बर) की संगोष्ठी वेद तथा दर्शन विषयों पर रक्खी गई। इसके प्रथम सत्र में दयानन्द शोध पीठ पंजाब विश्वविद्यालय के प्रो० भवानीलाल भारतीय ने 'महर्षि दयानन्द के शिक्षा विषयक विचारों की प्रासंगिकता' विषय पर अपना शोध पत्र पढा। इसमें महर्षि के ग्रन्थों से उनके शिक्षाविषयक विचारों का संकलन तो था ही, इन विचारों की आज के संदर्भ में प्रासंगिकता भी स्पष्ट की गई थी। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के डा० निगम शर्मा ने संस्कृत में 'आर्य मीमांसा' शीर्षक पत्र का वाचन किया। इसमें विद्वान् वक्ता ने आर्य ग्रन्थों और शास्त्रों को भूरिश: उद्धृत करते हुए "आर्य शब्द की गरिमा का आख्यान किया। आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द से सम्बद्ध अन्य पत्र भी पढे गये जिनमें डा० कृष्ण लाल का शुक्ल यजुर्वेद प्रथम अध्याय के दयानन्द भाष्य में यज्ञ, डा० चित्तरंजनसिंह कौशल का स्वामी दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य में इन्द्र का पारमार्थिक अर्थ आदि उल्लेखनीय हैं।

इस संगोष्ठी में जिन आर्य विद्वानों ने भाग लिया उनमें उल्लेखनीय है प्रो० यज्ञवीर (सम्प्रति आप महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष पद के लिये चयनित हो चुके हैं तथा इन्होंने अपना नवीन पद भी सभाल लिया है) प्रो० भवानीलाल भारतीय (चण्डीगढ) डा० विक्रमकुमार (चण्डीगढ) डा० भीमसिंह (पटियाला) आप आर्यसमाज के महान् विद्वान् वयोवृद्ध पं० विद्यानिधि शास्त्री के पुत्र तथा संस्कृत व्याकरण के प्रकाण्ड विद्वान् हैं) डा० धर्मवीर (अजमेर) डा० अरविन्दकुमार (कुरुक्षेत्र) डा० रणवीर (कुरुक्षेत्र), डा० कृष्णलाल (दिल्ली), डा० निगम शर्मा (हरिद्वार) डा० बलदेवसिंह (रोहतक) आदि।

मैंने अपने दस वर्ष के विश्वविद्यालय कार्यकाल में यह अनुभव किया है कि आर्यसमाज के प्रति आस्था रखनेवाले तथा महर्षि के मन्तव्यों के प्रति श्रद्धा रखने वाले शतश: विद्वान् प्रोफेसर, रीडर तथा प्रवक्ता उत्तर भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में कार्यरत हैं तथा वे अपने-अपने ढंग से संस्कृत भाषा तथा वैदिक साहित्य की सेवा कर रहे हैं। किन्तु हमारी संस्थायें और संगठन अपने साधनों को उन तक नहीं पहुंचाते और न इन विद्वानों की विद्वत्ता, लेखन शोध तथा अध्ययनशीलता का ही समुचित उपयोग करते हैं। मेरा प्रयास है कि भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में कार्यरत आर्यसमाजी विद्वानों का कोई मंच बनाया जाये ताकि वे अपने बौद्धिक योगदान द्वारा आर्यसमाज को भी लाभान्वित करें। क्या हमारी शिरोमणि सभायें इस महत्त्वपूर्ण कार्य में हमारा हाथ बटायेंगी।

आर्यसमाज खेड़ी आसरा का उत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न

२, ३ फरवरी को आर्यसमाज खेड़ी आसरा जिला रोहतक का वार्षिक उत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दोनों दिन प्रात: सायं यजुर्वेद से यज्ञ का आयोजन भी किया गया और पं० अर्जुनदेव आर्य, प० रवीन्द्र विद्यालंकार, पं० धर्मवीर आर्य ने यज्ञ पर प्रवचन दिये।

३ फरवरी को आर्य सम्मेलन पर सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, प्रिंसिपल होशियार सिंह जी संयोजक वेदप्रचार मण्डल बहादुरगढ़, श्री प्रियव्रत जी ठेकेदार, श्रीमती प्रभात शोभा पंडित आदि आर्य नेताओं ने ग्रामीण नर नारियों को सम्बोधित करते हुए आर्यसमाज के कार्यों में सम्मिलित होने की प्रेरणा की और शराब आदि सामाजिक बुराइयों को छोड़ने का अनुरोध किया।

पं० जयपालसिंह आर्य, श्री ईश्वरसिंह तूफान की मण्डलियों के मनोहर भजनों ने समय बान्ध दिया। आर्यसमाज की ओर से सभा को १४०० वेद प्रचारार्थ दिये गये।

गांधी उवाच—

'दुनिया से कह दो कि गांधी अंग्रेजी भूल गया'

(सन् १९४७ में भारत स्वतन्त्र होने पर बी.बी.सी. द्वारा मांगे गए सन्देश के उत्तर में गांधीजी द्वारा दिया गया केवल एक वाक्य का सन्देश)

'अगर मेरे हाथ मे तानाशाही सत्ता हो, तो मैं आज से ही विदेशी माध्यम के जरिए अपने लडकों और लडकियों की शिक्षा बन्द कर दू और सारे शिक्षकों और प्रोफेसरों से यह माध्यम तुरन्त बदलवा दू या उन्हें बरखास्त करा दू। मैं पाठ्य-पुस्तकों की तैयारी का इन्तजार नही करूगा। वे तो माध्यम के परिवर्तन के पीछे-पीछे चली आएगी।'

—गान्धी

'युवक और युवतियां अंग्रेजी और दुनिया की दूसरी भाषाएं खूब पढ़ें और जरूर पढ़ें। लेकिन उनसे मैं आशा करूगा कि वे अपने ज्ञान का प्रसाद भारत को और सारे संसार को उसी तरह प्रदान करेंगे, जैसे बोस, राय और स्वयं कवि रवीन्द्रनाथ ने प्रदान किया है। मगर मैं हरगिज यह नही चाहूंगा कि कोई भी हिन्दुस्तानी अपनी मातृभाषा को भूल जाए या उसकी उपेक्षा करे या उसे देखकर शरमाए अथवा यह महसूस करे कि अपनी मातृभाषा के जरिए वह ऊचे से ऊचा चिन्तन नहीं कर सकता है।'

'मेरा यह सुचिन्तित मत है कि जिस रूप में अंग्रेजी की शिक्षा यहां दी गई है, उसने अंग्रेजी पढ़े-लिखे हिन्दुस्तानी कमजोर हो गए हैं। इस पद्धति ने भारतीय छात्रों की स्नायविक ऊर्जा पर भयानक दबाव डाला है तथा हम सबको नक्काल बना दिया है। कोई भी जाति नक्कालों की कौम पैदा करके बडी नही हो सकती।'

'मुझे पक्का विश्वास है कि किसी दिन हमारे द्रविड भाई बहन, गम्भीर भाव से, हिन्दी का अध्ययन करने लगेंगे। आज अंग्रेजी भाषा पर अधिकार प्राप्त करने के लिए वे जितनी मेहनत करते हैं, उसका आठवां हिस्सा भी हिन्दी सीखने में कर तो बाकी हिन्दुस्तान, जो आज उनके लिए बन्द किताब की तरह है, उससे वे परिचित होंगे और हमारे साथ उनका ऐसा तादात्म्य स्थापित हो जाएगा, जैसा पहले कभी नहीं था।

'. . . जरा सोचकर देखिए कि अंग्रेजी भाषा में अंग्रेज बच्चों के साथ होड कराने में हमारे बच्चों पर कितना वजन पडता है। पूना के कुछ प्रोफेसरों से मेरी बात हुई। उन्होंने बताया कि चूंकि हर भारतीय विद्यार्थी को अंग्रेजी के मार्फत ज्ञान सम्पादन करना पड़ता है, इसलिए उसे अपने बेशकीमती बरसों में से, कम से कम, छह वर्ष अधिक जाया करने पडते हैं। हमारे स्कूलों और कॉलेजों से निकलनेवाले विद्यार्थियों की संख्या मे इस छह का गुणा कीजिए और फिर देखिए कि राष्ट्र के कितने हजार वर्ष बर्बाद हो चुके हैं।'

'हिन्दी भाषी लोगों को दक्षिण की भाषा सीखने की जितनी जरूरत है, उसकी अपेक्षा दक्षिण वालों को हिन्दी सीखने की आवश्यकता अवश्य ही अधिक है। सारे हिन्दुस्तान में हिन्दी बोलने और समझनेवालों की संख्या दक्षिण की भाषाएं बोलनेवालों से दुगुनी है। प्रान्तीय भाषा या भाषाओं के बदले में नही, बल्कि उनके अलावा एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त का सम्बन्ध जोड़ने के लिए एक सर्वमान्य भाषा की आवश्यकता है। ऐसी भाषा तो एकमात्र हिन्दी या हिन्दुस्तानी ही हो सकती है।'

'अगर स्वराज्य अंग्रेजी बोलनेवाले भारतीयों को और उन्हीं के लिए होने वाला हो, तो निस्सन्देह अंग्रेजी ही राष्ट्रभाषा होगी। लेकिन अगर स्वराज्य करोडों भूखों मरनेवालों, निरक्षरों, निरक्षर बहनों और दलितों व अन्त्यजों का हो और इन सबके लिए होनेवाला हो, तो हिन्दी ही एकमात्र राष्ट्रभाषा हो सकती है।'

'अंग्रेजी आज इसलिए पढी जा रही है कि उसका व्यावसायिक एवं तथाकथित राजनैतिक महत्त्व है, हमारे बच्चे अंग्रेजी यह सोचकर पढते हैं कि अंग्रेजी पढे बिना उन्हें नौकरियां नही मिलेंगी। लड़कियों को अंग्रेजी इसलिए पढाई जाती है कि इससे उनकी शादी में सहूलियत होगी। मैं ऐसी कितनी ही औरतों के बारे में जानता हूं जो अंग्रेजी फकत इसलिए सीखना चाहती थी कि अंग्रेजों के साथ वे अंग्रेजी में बातचीत कर सकें। मैं कितने ही ऐसे पतियों को जानता हूं, जिन्हें इस बात का मलाल है कि उनकी बीवियां उनके साथ और उनके दोस्तों के साथ अंग्रेजी में बात नहीं कर सकती। मुझे ऐसे परिवारों की जानकारी है, जहां अंग्रेजी मातृभाषा बनाई जा रही है। . . . ये सारी बातें मेरी नजर में गुलामी और घोर पतन के चिह्न हैं। मैं इस बात को बर्दाश्त नहीं कर सकता कि देशी भाषाएं इस तरह कुचल दी जाएं, भूखों मार डाली जाएं।'

'वास्तव में ये अंग्रेजी में बोलनेवाले नेता हैं जो आम जनता में हमारा काम जल्दी आगे बढने नहीं देते। वे हिन्दी सीखने से इन्कार करते हैं जबकि हिन्दी द्रविड प्रदेश में भी तीन महीने के अंदर सीखी जा सकती है, अगर सीखने वाले इसके लिए दो घंटे हर रोज दें।'

'लाखों लोगों को अंग्रेजी का ज्ञान कराना उन्हें गुलाम बनाना है। मैकाले ने भारत में जिस शिक्षा की नींव रखी, उसने हम सबको गुलाम बना दिया है।'

'आप और हम चाहते हैं कि करोड़ो अन्तर्प्रान्तीय सम्पर्क कायम करें। स्पष्ट है कि अंग्रेजी के द्वारा कई पीढियां गुजर जाने पर भी वे परस्पर सम्पर्क स्थापित न कर सकेंगे।'

'मैं कहना यह चाहता हूं कि मुझे इस पवित्र नगर में, इस महान् विद्यापीठ के प्रांगण में अपने ही देशवासियों से एक विदेशी भाषा में बोलना पड रहा है, यह बडी अप्रतिष्ठा और शर्म की बात है।'

क्या वे लोग जो अपनी मातृभाषा का अपमान करते हैं, कभी देश का भला कर सकते हैं ? मैं इसकी कल्पना नहीं कर सकता कि गुजरात के लोग अपनी मातृभाषा छोड़कर अन्य कोई भाषा अपना लें। ऐसा हो तो यह कहने में जरा अतिशयोक्ति न होगी कि जो लोग अपनी भाषा छोड देते हैं, वे देशद्रोही हैं और जनता के प्रति विश्वासघात करते हैं।'

—'मेरे सपनों का भारत' से

इन्सान बनो

—नाज सोनीपती

इन्सान नही, हैवान हैं वे, जो चाल चलें शैतानों की।
इस धरती पर इन्सान बनो, यह धरती है इन्सानों की॥

दाना तो फिर भी दाना है, उनकी भी दाल नहीं गलती।
बेबस भी हैं, मजबूर भी हैं, इस बस्ती में नादानों की॥

कुछ अमल करो तो बात बने यों बात बनाना ठीक नही।
इस दुनिया में औकात है क्या ? बेहिस्स झूठे एलानों की॥

अपनों से यह उम्मीद न थी कि अपनेपन को खोदेंगे।
और अपने जाकर बैठेंगे, खुद महफिल में बेगानों की॥

बेचैनी में दिन कटता है और रात को किस बेताबी से।
जलते ही शमां जल मरते हैं, क्या बात है उन परवानों की॥

हसरत जो दिल की दिल में है, वह नाज निकल पाए क्योंकर।
जिस दिल के घर में भीड़ लगी दुनिया भर के अरमानों की॥

इतने राम कहां से लाऊँ ?

प्राचीनकाल त्रेता युग में अयोध्यापति राजा दशरथ के घर मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म हुआ। श्री राम ने विश्वामित्र अगस्त्य आदि ऋषियों से उत्तम अस्त्र-शस्त्र के संचालन की शिक्षा व उत्तम विद्या पाई थी। ऋषियों का उद्देश्य भी यही था कि श्री राम दुष्ट लंकापति रावण का वध करके ऋषियों व समाज को उसके अत्याचारों से मुक्ति दिलाय और अन्त में हुआ भी यही। श्री राम ने रावण को मारकर सत्य धर्म की स्थापना की।

हम देखते हैं कि उस समय की एक लका नगरी और उसके शासक रावण ने ऋषियों और सभ्य मनुष्यो का जोवन कष्टमय बना दिया था। रावण के अत्याचारों व दुराचारों से पीडित ऋषियो व मनुष्यों के हाहाकारों व चीत्कारो से चारों दिशायें गूजती थी। ऋषियों का यज्ञ भ्रष्ट करना, मनुष्यों को मारकर खा जाना, किसी प्रकार का धर्म कार्य न करना, जन जीवन से भरपूर किसी रमणीय स्थान को निर्जन व उजाड बना देना तो राक्षसो का नित्य का कर्म था। ऋषियों ने इनके मुकाबले में एक मर्यादित, शक्तिशाली व आजानबाहु श्री राम को खडा किया। जिसने रावण व राक्षसों का वध करके उनके अत्याचारो से मुक्ति दिलाई।

रामायण को पढने से पता चलता है कि रावण का वध होगया था। भौगोलिक दृष्टि से लका नगरी नष्ट होचुकी है, परन्तु क्या वास्तव में रावण नही रहा ? क्या लका नगरी सममुच नष्ट होचुकी है। नहीं वे हैं और एक नही लाखो है। समाज में हम दृष्टिपात करते हैं तो हर मनुष्य रावण और हर घर लका नजर आता है। राम व मनु के द्वारा बसाई अयोध्या नजर नही आती। न कोई राम नजर आता है। निरपराध व्यक्तियों की हत्या, निरीह बच्चो का वध, अबलाओं की इज्जत पर हमला, इज्जत के साथ खिलवाड़, शोषण, तानाशाही राक्षसी कर्म नही तो और क्या है ?

श्री राम का सिद्धान्त था कि 'केवलाघो भवति केवलादी' अर्थात् अकेला खानेवाला पाप करता है। ठीक इसके विपरीत रावण का सिद्धान्त था—"यावज्जीवेत् सुख जीवेत् परं हत्वा रक्त पिबेत्। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमन कुत:।।" Eat drink be marry अर्थात् खाओ, पियो करो आनन्द। हम देखते हैं कि विश्व, देश, नगर, समाज और घर आदि में यत्र-तत्र सर्वत्र रावण के सिद्धान्तो का प्रचार प्रसार अधिक है और राम के सिद्धान्तो का कम। घर के अन्दर मुखिया रावण है तो अन्य सदस्य राक्षस हैं अर्थात् रावण व रावण की लका नगरी तैयार। मासभक्षण करना, सुरापान, व्यभिचार व गरीबों असहायों को सताना तो इनका काम ही है। एक रावण के मुकाबले में एक राम था। अब लाखों रामों की जरूरत है, किन्तु कहा से ढूढा जाये फिर से उसो मर्यादित, आजानबाहु वेदज्ञ राम को जो अधर्म, अत्याचार और अन्याय को दूर करके धर्म, सदाचार और न्याय की स्थापना इस वसुधा पर पुन: करे। रावण ने अपने भाई से ईर्ष्या व द्वेष किया तो उसे अपने प्राणों को त्यागना पडा क्योंकि सारे गुप्त भेद बतलानेवाला उसका भाई विभीषण ही था। ठीक इसके विपरीत यदि कोई भाई या अन्य सदस्य सत्य बात कहता है तो उसे अपने प्राण त्यागने पड़ते हैं। सारे ही रावण के अनुगामी हैं।

समाज के अन्दर हमें निराशा ही हाथ लगती है। मन यह सोचने को विवश होजाता है कि क्या पुन: सत्यधर्म की स्थापना होगी ? क्या फिर से मनु और राम के सिद्धान्त प्रचलित होगे ? क्या पुन: लोग वेदमार्ग के अनुगामी बनेंगे ? अन्त में बडे दु:ख के साथ कहना पड़ रहा है।

अन्याय अधर्म और अत्याचार को,
हाय कैसे दूर भगाऊ।
जन-जन रावण, घर-घर लंका,
इतने राम कहां से लाऊ।।

—अरविन्द कुमार 'कमल' विद्यावाचस्पति
आर्यसमाज टोहाना (हिसार)

ऋषियों का संदेश

(१) विषयों को भोगकर इन्द्रियों की तृष्णा को समाप्त करने वाला तुम्हारा विचार ऐसा ही है, जैसा कि आग को बुझाने के लिए उसमें घी डालना।

(२) यह मानना तुम्हारा सबसे बडा अज्ञान है कि "मैं कभी मरूगा नही," "यह शरीर बहुत पवित्र है," विषय भोगों में पूर्ण और स्थायी सुख है," तथा "यह देह ही आत्मा है।"

(३) तुम्हारे मन में अच्छे या बुरे विचार अपने आप नही आते। इन विचारो को तुम अपनी इच्छा से ही उत्पन्न करते हो, क्योकि मन तो यन्त्र के समान जड वस्तु है, उसका चालक आत्मा है।

(४) किसी के अच्छे वा बुरे कर्म का फल तत्काल प्राप्त होता न देखकर तुम यह मत विचारो कि इन कर्मों का फल आगे नही मिलेगा। कर्म-फल से कोई भी बच नही सकता, क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ तथा न्यायकारी है।

(५) ससार (=प्रकृति), ससार को भोगनेवाले (=जीव) तथा ससार को बनानेवाले (=ईश्वर) के वास्तविक स्वरूप को जानकर ही तुम्हारे समस्त दु:ख भय, चिन्ताए समाप्त हो सकती हैं और कोई उपाय नही है।

(६) 'मनुष्य जीवन ईश्वरप्राप्ति के लिए मिला है," इस मुख्य लक्ष्य को छोडकर अन्य किसी भी कार्य को प्राथमिकता मत दो, नही तो तुम्हारा जीवन चन्दन के वन को कोयला बनाकर नष्ट करने के समान ही है।

(७) तुम्हारे जीवन की सफलता तो काम, क्रोध, लोभ मोह, अहकार आदि अविद्या के कुसस्कारो को नष्ट करने में ही है। यही समस्त दु:खों से छूटने का श्रेष्ठ उपाय है।

(८) जब तक तुम ससार के सुखो के पीछे हुए दु:खों को समझ नहीं लोगे, तब तक वैराग्य उत्पन्न नहीं होगा। बिना वैराग्य के चचल मन एकाग्र नही होगा, एकाग्रता के बिना समाधि नही लगेगी, समाधि के बिना ईश्वर का दर्शन नही होगा, बिना ईश्वर दर्शन के अज्ञान का नाश नहीं होगा और अज्ञान का नाश हुए बिना दु:खों की समाप्ति और पूर्ण तथा स्थायी सुख (=मुक्ति) की प्राप्ति नही होगी।

(९) तुम इस भ्रम को समझो कि अज्ञानी मनुष्य ही जड़ वस्तुओं (=भूमि, भवन, सोना, चादी) तथा चेतन वस्तुओं (पत्नी, पुत्र, मित्र आदि) को अपनी आत्मा का एक भाग मानकर, इनकी वृद्धि होने पर प्रसन्न तथा हानि होने पर दु:खी होता है।

(१०) तुम्हारे लोहेरूपी मन को, विषय भोगरूपी चुम्बक सदा अपनी ओर खींचते रहते हैं। ज्ञानी मनुष्य विषय भोगों से होनेवाली हानियों का अनुमान लगाकर इनमें आसक्त नही होते, किन्तु अज्ञानी मनुष्य इनमे फसकर नष्ट होजाते हैं।

महान् ज्ञान, बल, आदि गुणों का भण्डार ईश्वर एक चेतन वस्तु है, जो अनादिकाल से तुम्हारे साथ है, न कभी वह अलग हुआ, न कभी होगा। उसी ससार के बनानेवाले, पालन करनेवाले, सबके रक्षक, निराकार ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना तुम सब मनुष्यों को सदा करनी चाहिए।

(दर्शन योग महाविद्यालय गुजरात)

सत्यार्थप्रकाशस्य महिमा

सत्यार्थप्रकाश: नाम्ना ग्रन्थ एव, अखिलविश्वम् प्रकाशयति।
बुद्धिमन्त: स्वपुत्रान् शिष्यान् च नूनमेव पाठयन्ति ।।१।।
ईश: नाम्ना व्याख्या तस्य स्वरूपश्च परिपूर्णा: सम्मुलासा।
पठन-पाठन-राजनियमाश्चापि पश्यति प्रकाशा ।।२।।
आर्षग्रन्थमण्डनम् अनार्षखण्डनम् अस्य ग्रन्थस्य प्रयोजनम्।
सत्यासत्यसर्वकादीम् सर्वविधिम् च महापुरुषस्य वर्णनम् ।।३।।
ऋषिविरचित. अयम् ग्रन्थ उद्घोषयति कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
रामचन्द्रार्य: मूढ: कथयति मा काव्यम् मम कार्यम् ।।४।।

—लेखक रामचन्द्र आर्य, नलवा (हिसार)

॥ १३ ॥

यज्ञमयी नौका पर आरूढ हो

ओ३म् पृथक् प्रायन् प्रथमा देवहूतयोकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा।
न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुहमीर्मेव ते न्यविशन्त केपयः ॥

यज्ञमयी जो सत्कर्मों की,।
नौका देवगणों की यान।
दिव्य गुणों के वाहक जन ही,
कर सकते उसका आह्वान।
चढ उस पर पा जाते मंजिल,
बनते बली और यशवान।
आरोहित जो हो न सकेंगे।
भटकेंगे वे पतित समान।

॥ १४ ॥

सबल सत्संकल्पी बनें !

आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वतो
अदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ॥
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्न
प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥ऋ. १ ८९। यजु. २५.१४

सत्संकल्प करें हम मन में,
सभी तरह से हो अविकार।
स्वस्थ सबल अभिलाषा होवे,
देवे विपदों को ललकार।
देव विप्रजन जो जगती के,
देवे हमें स्नेह-सहकार।
निरलस हो रक्षक नित होवें,
पा जाए उत्कर्ष अपार।

॥ १५ ॥

प्रभु भक्त तेजस्वी होता है !

यो अस्मै घ्रंस उत वा य ऊधनि,
सोम सुनोति भवति द्युमं अह।
अपय शक्रस्ततनुष्टि ऊहति,
तनु शुभ्रं मघवा यः कवासखः ॥ ऋ० ५.३४.३

उस प्रभुवर के ज्ञान ध्यान में,
रहता निशिदिन जो लयमान।
भक्तिरसपायी वह होता
धारण करता तेज महान।
विषय वासना में भटका नित
जो जन तन का पोषक मात्र।
दुष्टजनों की संगति करता
बने नाश का ही वह पात्र।

॥ १६ ॥

देवों में भी देव !

ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्,
ये ब्रह्मणः पुर एतारो अस्य।
येभ्यो न ऋते पवते धाम किंचन,
न ते दिवो न पृथिव्या अधिस्नुषु ॥ यजु० १७.१४

परमहंस योगिजन हैं जो,
देवों में भी देव महान्।
वही वहन करते हैं देखो,
वेदों का वृहत्तर ज्ञान।
तपःपूत हैं वे ही तो जन,
करते जगती को पवमान।
भूतल-द्युतल तक न सीमित,
भव के कण-कण में रममाण।

प्रो० धर्मचन्द, विद्यालंकार, पलवल

२१ फरवरी को अंग्रेजी की अनिवार्यता के विरोध में संसद भवन पर प्रदर्शन

नई दिल्ली ११ फरवरी (निज संवाददाता द्वारा) २१ फरवरी १९९१ को एक विशाल प्रदर्शन संसद भवन पर किया जा रहा है। यह प्रदर्शन "संघ लोक सेवा आयोग" की परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता के विरोध में किया जाएगा। प्रदर्शन मुंह पर पट्टी बांधकर मौनरूप से किया जाएगा। प्रदर्शन का आयोजन १६ अगस्त १९८८ से निरन्तर अंग्रेजी की अनिवार्यता के विरोध में जूझ रहा "अखिल भारतीय भाषा संरक्षण संगठन" कर रहा है। स्मरण रहे पिछली १० जनवरी को संगठन के संस्थापक अध्यक्ष श्री पुष्पेन्द्र चौहान ने संसद की दर्शक दीर्घा से "अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करो।" "बहरे सांसदो—भारतीय भाषाओं को स्वतन्त्र करो" के नारों के साथ नीचे छलांग लगा दी थी। संगठन के महासचिव श्री राजकरण सिंह ने सभी देशभक्त युवाओं से प्रदर्शन में भाग लेने की पुरजोर प्रार्थना की है। उन्होंने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा है कि हम आखरी दम तक सरकार से लड़ेंगे। अपनी मातृभाषा तथा राष्ट्रभाषा का सब स्तर पर प्रयोग कर सकना हर भारतीय का जन्मसिद्ध अधिकार है कोई भी दुनियां की ताकत अधिक दिन तक हमारे अधिकारों को नहीं कुचल सकती। एक दिन हम अपने अधिकार लेकर ही रहेंगे।

हरियाणा के कोने-कोने में ऋषि बोधोत्सव

१. बाघपुर बेरी रोहतक

आर्यसमाज बाघपुर बेरी जि० रोहतक में१२ फरवरी को ऋषि बोध दिवस के उपलक्ष्य में प० जयपाल आर्य की भजन मण्डली तथा पं० धर्मवीर आर्य एवं पं० रवीन्द्रकुमार विद्यालंकार के ऋषि दयानन्द के जीवन पर भजन तथा व्याख्यान हुए।

१३ फरवरी को प्रात: ९ बजे आर्यसमाज बेरी में प० धर्मवीर आर्य ने यज्ञ करवाया तथा सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह तथा आर्यसमाज बेरी की प्रधान श्रीमती प्रभात शोभा विद्यालंकृता ने ऋषिबोध दिवस के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हम ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों के अनुसार आर्यसमाज के कार्यक्रम को पूरा करने के लिए शराब, दहेज आदि सामाजिक बुराइयों को समाप्त करें। सभा की ओर से कई वर्षों से शराब बन्दी अभियान चलाया जारहा है। अत: इस सामाजिक सर्वहितकारी कार्य में सहयोग देना चाहिए। पं० जयपाल आर्य ने भी भजनों द्वारा सामाजिक बुराइयों का खण्डन किया।

२. आर्यसमाज जीन्द

ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में आर्यसमाज रामनगर जीन्द ने अपने यहां तीन दिवसीय वेदप्रचार का आयोजन किया। फरवरी ११, १२, १३ को प्रात: साय भजनोपदेश एव वेदोपदेश हुआ। इस अवसर पर श्री जगदीशचन्द्र वसु तथा भजनोपदेशक श्री लक्ष्मणसिंह बेमोल के व्याख्यान तथा भजन हुए। आर्यवीर दल के आर्यवीरों ने बढ-चढकर भाग लिया। मण्डलपति श्री कर्णसिंह आर्य नगरनायक श्री दलबीरसिंह आर्य और कोषाध्यक्ष श्री मोहनसिंह आर्य तथा आयसमाज रामनगर जीन्द के प्रधान लाला जगन्नाथ आर्य आदि सभी अधिकारियों ने इस आयोजन में तन, मन, धन का पूरा योगदान दिया।

३. कालांवाली मण्डी जिला सिरसा

११ और १२ फरवरी को कालांवाली मण्डी में ऋषि बोधोत्सव का बड़ा सुन्दर कार्यक्रम रखा गया। हवन यज्ञ के पश्चात् श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थी गुरुकुल बठिण्डा का "महर्षि दयानन्द जी महाराज की अनुपम देन" पर प्रवचन हुआ।

१२-२-९१ दिन मंगलवार को प्रात: दयानन्द महिला कालिज (आर्यसमाज मन्दिर कालांवाली) में बृहद् यज्ञ (जिसमें चार यजमान अपनी पत्नियोंसहित सम्मिलित हुए) के पश्चात् "महर्षि दयानन्द महाराज के उपकारों" पर अपने विचार व्यक्त किए। विद्यालय की कन्याओं ने भजन प्रस्तुत किए।

४. टोहाना जिला हिसार

आर्यसमाज टोहाना (हिसार) में ऋषिबोधोत्सव बड़े ही धूमधाम से श्री बृजलाल गुप्ता प्रधान की अध्यक्षता एवं पं० धर्मप्रकाश शास्त्री की संयोजकता में मनाया गया। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द उच्च विद्यालय के अंजुबाला, दीपिका, मीनाक्षी, विनय आदि छात्र छात्राओं ने अपने भाषण एवं भजन के माध्यम से ऋषि की जीवनी पर प्रकाश डाला। आर्यसमाज के उपमंत्री एवं विद्यालय के मैनेजर श्री ओमप्रकाश ने सभी बच्चों को इनाम दिये जिसका वितरण प्रधानजी ने किया। इस अवसर पर ओमप्रकाश ने संकल्प लिया कि मैं सारा जीवन आर्यसमाज के प्रसार तथा प्रचार में लगाऊंगा। अन्त में प्रधान जी ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए कहा कि हम ऋषि के उपकारों को याद करें तथा उस पर चलने का प्रयत्न करें तभी हमारा जीवन सफल है।

मन्त्री

५. नरवाना में शोभायात्रा

ऋषि बोध दिवस के उपलक्ष्य में कन्या गुरुकुल खरल (जीन्द) के वार्षिक उत्सव पर जाते समय आर्यसमाज नरवाना, महिला आर्यसमाज नरवाना व आर्यवीर दल नरवाना ने प्रधान आर्यवीर दल नरवाना श्री राधाकृष्ण आर्य की अध्यक्षता में एक विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया। यह शोभायात्रा स्कूटरों व फोरव्हीलरों में सवार शहर के मुख्य बाजारों से होती हुई तथा आर्यसमाज के मन्त्री श्री अनिलकुमार आर्य, उपप्रधान आर्यसमाज व शाखानायक आर्य वीर दल नरवाना श्री विजयकुमार गुप्त, उपप्रधान आर्यसमाज व नगर नायक आर्यवीर नरवाना श्री जोगीराम गुप्त, अभिषेक आर्य, गोविन्द राम तायल, कोषाध्यक्ष आर्यवीर दल नरवाना व श्री नरेन्द्रकुमार सदस्य आर्यवीर दल ने 'आर्यसमाज अमर रहे', 'स्वामी दयानन्द की जय' ! वेद की ज्योति, जगती रहे ! आदि नाना प्रकार के नारों से सारा शहर नरवाना व पास के गाव वेलरखा, हमीरगढ व खरल को कुछ समय के लिए गुंजाया व दर्शकों पर आर्यसमाज के प्रति काफी अच्छा प्रभाव पडा। शोभायात्रा में आर्यसमाज के भूतपूर्व उपप्रधान श्री ओंकार जी भी शामिल थे।

यात्रा में आगे-आगे स्कूटरों पर हाथ में ओ३म् ध्वज लिये सर्व श्री राधाकृष्ण जी आर्य, नरेन्द्र जी, हरीश आर्य, अश्वनीकुमार आर्य, महावीर आर्य व रणवीर आर्य चल रहे थे।

खरल में आर्यवीर दल के सदस्य हरीश आर्य ने एक मधुर भजन व श्री विजयकुमार गुप्त ने एक भाषण भी प्रस्तुत किया।

रास्ते में जाते समय पूर्व मन्त्री व आर्यनेता श्री धर्मपाल आर्य एव श्री जयगोपाल आर्य ने सभी आर्य सदस्यों को जो कि शोभायात्रा में जारहे थे, सबको हाथ हिलाकर आशीर्वाद दिया तथा मन से इस कार्य की प्रगति की कामना की। आर्यसमाज नरवाना की तरफ से २५१ रुपये कन्या गुरुकुल खरल मे दान स्वरूप भेंट किये।

अश्वनीकुमार आर्य

६. रोहतक

आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से १२ फरवीर को धनवन्ती आर्य कन्या विद्यालय रोहतक मे ऋषिबोध दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प० सुखदेव शास्त्री पं० रवीन्द्र विद्यालंकार आदि विद्वानों ने ऋषि जीवन तथा उन द्वारा किये उपकार के कार्यों पर प्रकाश डाला। ऋषि लंगर का भी आयोजन किया गया।

मेघराज आर्य

आर्यवीर दल नरवाना की ओर से गर्म कम्बल वितरित

सामान्य हस्तपाल नरवाना में आर्यवीर दल नरवाना द्वारा कैम्प का आयोजन किया गया जिसमें आर्यवीर दल नरवाना की ओर से स्थानीय एस. डी एम श्री बलवीरसिंह जी ने गर्म कम्बल वितरित किये। एवं समारोह की अध्यक्षता आर्यसमाज नरवाना के मन्त्री श्री अनिल आर्य ने की।

नरवाना में आर्यवीर दल द्वारा हस्पताल में निर्धन रोगियों को कम्बल वितरित करते हुए आर्यसमाज के मन्त्री श्री अनिल आर्य आदि।

बारातों में लड़कियों के नाच पर पाबंदी

हांसी, १० फरवरी (निस)। स्थानीय पंजाबी समाज ने बारातों में लड़कियों के नाचने पर पाबंदी लगा दी है। पंजाबी नेता ज्ञानचंद सेठी ने बताया कि बारातों में लड़कियों का नाचना पंजाबी संस्कृति नहीं है।

पंजाबी समाज में फैल रही कुरीतियों के सुधार के लिए युवकों ने पंजाबी सुधार मोर्चा गठित किया है।

दैनिक ट्रिब्यून

गुरुकुल आमसेना का महोत्सव एवं शुद्धि कार्यक्रम सम्पन्न

२६-२८ जनवरी ९१ को गुरुकुल के २३ वें महोत्सव में श्री स्वामी दिव्यानंद जी, महात्मा प्रेमप्रकाश जी आचार्य हरिदेव श्री ओमप्रकाश वर्मा श्री इंजीनियर प्रियव्रत दास जी, श्री रामदेव आर्य आदि अनेक विद्वानों के उपदेश तथा कई विशिष्ट सम्मेलनों का आयोजन हुआ। व्यायाम सम्मेलन में ब्र० कुंजदेव नैष्ठिक का प्रभावशाली प्रदर्शन हुआ।

श्री महात्मा प्रेमप्रकाश की अध्यक्षता में पुनर्मिलन (शुद्धि) कार्यक्रम हुआ इसमें दस ईसाई परिवारों के ६०-६५ लोगों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली।

जीन्द में प्रभात फेरी का आयोजन

फरवरी १२, ऋषिबोधोत्सव के उपलक्ष्य में जीन्द की सभी समाजों आर्य संस्थाओं एवं आर्यवीर दल की ओर से एक संयुक्त प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। प्रभात फेरी प्रात: 5 बजे आर्यसमाज मन्दिर जीन्द शहर से प्रारम्भ हुई तथा नगर की प्रमुख सड़कों एवं मुख्य-मुख्य गलियों में से होती हुई आर्यसमाज मन्दिर रामनगर जीन्द में समाप्त हुई।

८०-९० की संख्या में आर्य नर-नारी वैदिक धर्म, महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज मातृभूमि आदि के जयकारे लगाते हुये मधुर भजन गाते हुए गलियों में विचरण कर रहे थे जिसका अच्छा प्रभाव पड़ा। वेद प्रचार मण्डल जिला जीन्द के भजनोपदेशक महाशय चन्द्रभान जी आर्य अपनी मण्डली के साथ ओजस्वी गीत गाते चल रहे थे। आर्य वीर दल के उत्साही सैनिकों ने भी भरपूर सहयोग दिया। इस प्रकार आर्यसमाज मन्दिर शहर, आर्यसमाज रामनगर जीन्द, आर्य समाज जीन्द जक्शन आर्य प्राथमिक पाठशाला जीन्द शहर, वेद प्रचार मण्डल जिला जीन्द आर्य वीर दल जीन्द, ने अपने प्रयासों से प्रभात फेरी को सफल बनाया।

प्रो० ओमकुमार आर्य

०—०

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०/७३

फोन नं० ७४८[illegible] सृष्टिसंवत् १,९६, ०८, ५३, ०९०

प्रधान सम्पादक – सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८   अंक १४   २८ फरवरी, १९९१   वार्षिक शुल्क ३०)   (आजीवन शुल्क ३०१)   विदेश में ८ पौंड   एक प्रति ७५ पैसे

सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ९

विद्या और अविद्या

(डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए० आर्यसमाज गोरखपुर)

विद्यां चाऽविद्यां च यस्तद्वेदोभयंᳬसह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥ यजु० अ० ४०। म० १४

स्वामी जी महाराज ने सत्यार्थप्रकाश में इसको व्याख्या करते हुए लिखा है जो मनुष्य विद्या या अविद्या के स्वरूप को साथ ही साथ जानता है वह अविद्या अर्थात् कर्मोपासना से मृत्यु को तर के विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है।

यहां हमारे सामने पहला प्रश्न यह उपस्थित होता है कि विद्या क्या है? अविद्या क्या है? बहुत से लोग और उपदेशक भी विशेष रूप से भजनोपदेशक अपने गाने के साथ भजन गाते हुए अविद्या का अर्थ अज्ञान कर देते हैं। परन्तु अज्ञान से मृत्यु तरना कैसे संभव है? अतः हमें इस मंत्र को समझने के लिए विद्या और अविद्या को समझना होगा।

अविद्या का अर्थ है कर्म और विद्या का अर्थ है ज्ञान। नारायण स्वामी जी महाराज ने अपनी 'ईशोपनिषद्' की व्याख्या में लिखा है कि विद्या का सीधा अर्थ ज्ञान है और आत्मा के दो गुण प्रयत्न=कर्म और ज्ञान दोनों होने से विद्या का विपरीतार्थक कर्म ही हुआ। उन्होंने ज्ञान और कर्म का समन्वय किया है। ज्ञान के बिना कर्म अन्धा हो जाता है और कर्म के बिना ज्ञान लंगड़ा हो जाता है। जब दोनों का समन्वय होता है तभी मनुष्य का जीवन सफल होता है।

अविद्या का अर्थ भौतिक ज्ञान और विद्या का अर्थ आध्यात्मिक ज्ञान माना है। उनका कहना है कि जो अविद्या अर्थात् भौतिकवाद की उपासना करते हैं वे केवल उसकी उपासना से गहन अन्धकार में पहुँच जाते हैं। और जो विद्या अर्थात् जो अध्यात्मवाद में रत रहते हैं भौतिक जगत् की परवाह ही नहीं करते वे उससे भी अधिक गहन अन्धकार में चले जाते हैं।

इस भौतिकवाद और अध्यात्मवाद के अतिरिक्त अविद्या या विद्या के और भी अर्थ किए हैं। अविद्या का अर्थ सृष्टि विद्या, प्रकृति विज्ञान, भौतिक विज्ञान है तथा विद्या का अर्थ ब्रह्मविद्या, आत्मविद्या या अध्यात्मविद्या किया है। वास्तव में भौतिकवाद और अध्यात्म वाद अर्थ करनेवालों से इनका अर्थ मिलता ही है।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में इस उपर्युक्त मन्त्र का अर्थ लिखते हुए बताया है- जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ ही साथ जानता है वह अविद्या अर्थात् कर्मोपासना से मृत्यु को तर के विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है। आगे सत्यार्थप्रकाश में स्वामी जी ने पातंजल द० साधन पाद। सू० ५ दिया है—

'अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या'

अर्थात् अनित्य अपवित्र दुःख और अनात्मा में नित्य पवित्र सुख और आत्मा की प्रतीति ही अविद्या है।

अनित्य को नित्य समझने का अभिप्राय यह है कि यह मेरा शरीर नित्य रहेगा, यह सृष्टि, शक्ति बल से संचित राज्य, यह वैभव, यह अतुल सम्पत्ति मेरी है और सदा रहेगी ऐसा जो मिथ्याज्ञान है, वह अविद्या है। इस अविद्या से बहुत से लोग अन्धकार में पड़ते है।

अशुचि, अपवित्रता ही अशुचि है, अपवित्र मनुष्य को पवित्र समझ लेना अशुचि है। अपने को चमड़ी उधेड कर देखिए इसके नीचे खून, मज्जा, शौच और मलमूत्र भरा पडा है। आखिर, यह शरीर मल मूत्र का समुदाय ही तो है परन्तु इसकी रक्षा और दूसरे स्त्री या पुरुष को प्रेम के नाम पर प्राप्त करने के बाद यौन की इच्छा अविद्या ही है। इसको लेकर दूसरों का वध करते हैं। झूठ बोलते हैं। [illegible] मांसभक्षण, सिनेमा, कैबरे नृत्य और न जाने किन-किन भयंकर कृत्यों में लीन हो जाते हैं। भर्तृहरि जी के जीवन की एक [illegible] है। एक बार वे अपने महल से शाम के धुंधलके में घूमने के लिए निकले। उन्होंने चन्द्रमा की किरणों के पड़ने से जगमगाते पदार्थ को देखा। उन्होंने उसे हीरा समझा झपट कर जो उठाया तो देखा कि उनका हाथ पान की फेंकी हुई पीक से सन गया है। इसी समय उन्हें ज्ञान हुआ कि 'हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्' सत्य का मुख चमकीले पदार्थ से ढका हुआ है। यह एक अविद्या का रूप है।

इसी प्रकार भर्तृहरि जी का एक युवती से प्रेम होगया। उन्हें कहीं से एक सुन्दर सोने का फल मिला। उन्होंने वह फल अपनी प्रेमिका को दे दिया। प्रेमिका किसी और को चाहती थी उसने वह उसे दे दिया। उस प्रेमी ने अपनी प्रेमिका को दिया, भर्तृहरि जी को पहुंचा दिया। यह सब देख जानकर भर्तृहरि जी को यह भी अविद्या प्रतीत हुई और उन्हें वैराग्य हुआ। उन्होंने वैराग्य शतक पुस्तक लिखी। उसका प्रारम्भ इसी से हुआ—

> यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता,
> साऽप्यन्यमिच्छति जनं स जनोऽन्यसक्तः।
> अस्मत्कृतेऽपि परितुष्यति काचिदन्या
> धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च।

कहते हैं कि मैं जिसको चाहता था वह मुझसे विरक्त होकर दूसरे को चाह रही थी। वह किसी दूसरी से फंसा था और वह मुझसे प्रेम कर रही थी। भर्तृहरि जी के मुख से निकल पड़ता है कि उसको धिक्कार है, उस पुरुष को धिक्कार है, कामदेव को धिक्कार है। मुझसे प्रेम करने वाली को धिक्कार है और मुझे भी धिक्कार है। यह भी अविद्या का रूप है।

अविद्या का तीसरा रूप दुःख है। संसार के विषय दुःख ही हैं, परन्तु इन विषयों की पूर्ति के लिए मानव इतना लिप्त हो जाता है कि उनसे निकलना कठिन हो जाता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, शोक ईर्ष्या, द्वेष आदि ऐसे विषय हैं जिन्हें मनुष्य सुख समझता है और वे वास्तव में दुःख के कारण होते हैं।

अविद्या का चौथा रूप अनात्मा में आत्मबुद्धि कर लेना है। अनात्मा को आत्मा समझकर विश्व में अधिकांश व्यक्ति पापों में लीन हैं। शरीर को आत्मा मानकर, सब आत्मा की पूजा छोडकर उसे पूजित कर रहे हैं। (क्रमशः)

॥ १७॥

तेरी शरण सुखमय है।

ओं देवानामसि मित्रो अद्‌भुतो
वसुर्वसूनामसि चारुरध्वरे।
शर्मन्त्स्याम तव सप्रथस्तमे
अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ स० १-१४-१३

अग्निरूप तुम प्रभुवर मेरे
देवों में हो देव महान्।
मित्रों में भी मित्र अनुपम
सभी धनों के परम निधान।
विश्वयज्ञ के याजक हो तुम
शरण तुम्हारी दीर्घ-वितान।
परम सखा तुमको पाकर हम,
कभी न होवें सब क्षयमान।

॥ १८ ॥

देव हमें ऋजुपथगामी करें।

ओं देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां
देवानां रातिरभि नो निवर्तताम्।
देवानां सख्यमुपसेदिमा वयं
देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥

दिव्य गुणाकर ज्ञानी जन जो
देवें हमें सुमति का दान।
मित्र समान बने हम उनके
होंवे सत्पथ में गतिमान।
दिव्य सम्पदा जो जगती की
होवे हम पर वृष्टिमान।
चिर जीवन पावें सुखकारी
सरल सुगम मग में थिरमान।

॥ १९ ॥

वरुण हमारे पाप क्षम्य हों।

ओं यत्किंचेदं वरुण दैव्ये जने अभिद्रोहं मनुष्याश्चरामसि।
अचित्ती यत्तवधर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः ॥
ऋ० ७-८९।५। अथर्व. ६-५१-३

राजाओं के भी राजा तुम,
जन हो दिव्य वरुण भगवान।
तेरे नियम अटल हैं, प्रभुवर।
जग के कण-कण में अभिमान।
हम अल्पज्ञ जीव आलस से
करते तव आज्ञा क्षयमान।
करुणामय यह पाप क्षम्य हो
जिससे होवें न दुःखमान।

॥ २० ॥

उसकी लीला अपरम्पार है।

ओं युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।
वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः ॥
ऋ० ५-८१-१

महामनस्वी उस प्रभुवर को,
महिमा देखो अरे अपार।
ज्ञानी जन जगती के उससे
जोड़े मन-बुद्धि का तार।
सकल जनों के सत्कर्मों का
है वह देखो जाननहार।
"विश्व-यज्ञ" का याजक है वह
लीला उसकी अपरम्पार।

प्रो० धर्मचन्द, विद्यालंकार, पलवल

भारतीय भाषाओं के योद्धा पुष्पेन्द्र चौहान की सुध ली जाए

इस देश में उग्रवादियों एवं गुण्डों की भी जेल तक में सेवा की जाती है लेकिन भारतीय भाषाओं के विकास के लिए विगत अनेक वर्षों से धरनों प्रदर्शनों और अनशनों द्वारा यत्नशील, होनहार युवक, अखिल भारतीय भाषा संरक्षण संगठन के संस्थापक प्रधान श्री पुष्पेन्द्र चौहान की दिल्ली स्थित राममनोहर लोहिया अस्पताल में भी उचित देखभाल नहीं की जा रही है। यह अत्यन्त खेदजनक है। उक्त शब्द रोहतक नगर के प्रबुद्ध नागरिकों तथा भारतीय भाषा सेवकों की गोष्ठी में भारत पुत्र संघ के अध्यक्ष श्री महावीरसिंह फोगाट ने कहे।

श्री फोगाट ने कहा कि स्वाधीन राष्ट्र में प्रत्येक नागरिक का यह जन्मसिद्ध अधिकार है कि वह हर स्तर पर राष्ट्रभाषा या मातृभाषा का प्रयोग कर सके लेकिन कैसी विडम्बना है कि ४४ वर्ष की लम्बी स्वाधीनता के बाद भी आज भारतीय भाषाओं के हक के लिए प्रबुद्ध युवकों को बहरी व गूंगी संसद को सुनाने के लिए संसद की दर्शकदीर्घा पर से नीचे छलांगें लगाने पर मजबूर होना पड़ रहा है।

स्मरण रहे पुष्पेन्द्र चौहान तथा उनके सहयोगी लगातार २ वर्ष से संघ लोक सेवा आयोग के सामने आयोग की परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं के माध्यम की भी छूट दिलाने के लिए धरना दिए हुए हैं। इन्होंने गत वर्ष महीना भर अनशन भी किया था तथा सरकारी आश्वासन के बाद ही व्रत तोड़ा था। सरकार ने सतीशचन्द्र कमेटी भी इसके लिए गठित की थी। कमेटी ने रिपोर्ट भी दे दी थी लेकिन उसे दबाया हुआ है। लगभग ४०० सांसदों ने भी हस्ताक्षर करके माध्यम में छूट देने की बात कही है। १८ जनवरी १९६८ को संसद में भी ऐसा संकल्प पारित हुआ था इस सबके बावजूद भी जब बात सिरे न चढ़ती दिखाई पड़ी तो गत ११ जन १९९१ को निराशा व भावावेश में फंसे श्री पुष्पेन्द्र चौहान संसद की दर्शकदीर्घा से नीचे कूद पड़े थे। उन्हें काफी चोटें आई हैं लेकिन बहरी और गूंगी संसद एवं सरकार के कान पर जूं तक नहीं रेंग रही हैं। युवकों को एक ओर शराब और अश्लीलता फैलाकर चरित्र भ्रष्ट किया जा रहा है तथा दूसरी ओर उन्हें अपनी भाषा में शिक्षा व रोजगार प्राप्त करने के अधिकार से वंचित रखकर उसके भविष्य को बिगाड़ा जा रहा है। दो चार प्रतिशत लोगों की संतुष्टि के लिए ८० करोड़ जनता पर अंग्रेजी की अनिवार्यता का कहर ढाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सभी सरकारें शराब अश्लीलता और अंग्रेजी को बढ़ाने में एक मत रही दिखाई पड़ती हैं। ४४ साल से हिन्दी-हिन्दी चिल्लाकर हिन्दी को ही नहीं सभी भारतीय भाषाओं को दबाया जा रहा है। देश विदेश में जनता को मूर्ख बनाने के लिए अरबों रु० हिन्दी विकास के नाम पर व्यय किए जा रहे हैं लेकिन प्रश्न पैदा होता है कि हिन्दी को उसका स्थान क्यों नहीं मिल रहा है? यदि एक प्रान्त हिन्दी विरोध करता रहे तो पूरे देश पर अंग्रेजी थोपे रखना कहां की बुद्धिमत्ता है? सरदार पटेल ने तो ६०० के लगभग विद्रोही रियासतों को भी कुछ दिनों में ही भारत में विलय के लिए मना लिया था लेकिन परवर्ती नेता राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर ४४ साल के लम्बे अन्तराल के बाद भी एक दो प्रान्त को नहीं मना सके।

इस प्रकार अंग्रेजी आराम से बढ़ती रहेगी। यदि हम हिन्दी को इस प्रकार प्रस्तुत न करके प्रान्तीय भाषाओं और संस्कृत को महत्त्व देते तो हिन्दी आज तक बिन कहे राष्ट्र भाषा बन गई होती। गोष्ठी में इलाहाबाद विद्वान् परिषद् के अध्यक्ष श्री ओ३म्प्रभात अग्रवाल, श्री प्रदीप जैन, आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रचार मंत्री श्री सत्यवीर शास्त्री, श्री सर्वजीत सांगवान आदि ने भाग लिया। गोष्ठी में अविलम्ब हर स्तर पर भारतीय भाषाओं के माध्यम की (अंग्रेजी के स्थान पर) छूट देने के लिए तथा संस्कृत अनिवार्य करने के लिए तथा राष्ट्रपति द्वारा किसी भी भारतीय भाषा में राष्ट्र संदेश सम्बन्धी प्रस्ताव पारित किए गए।

आर्यसमाज कंवारी के वार्षिकमहोत्सव का अद्भुत दृश्य

आर्यसमाज कंवारी जि० हिसार का वार्षिक महोत्सव दिनांक १५-१६-१७ फरवरी को ईश्वर कृपा एवं विद्वानों के आशीर्वाद से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर निम्न विद्वान् पधारे सर्व श्री स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी जगत् मुनि, स्वामी अग्निदेव भीष्म, प्रि० भगवानदास आर्य, प्रो० ओमकुमार आर्य, व्याकरणाचार्य दयानन्द शास्त्री, श्री महावीरप्रसाद प्रभाकर, श्री प्रतापसिंह शास्त्री, श्री जयसिंह जी योगी, विदुषी बहन आचार्या सुनीति आर्या तथा कुमारी नीलम एम० ए०, स्वतन्त्रता सेनानी श्री मानसिंह ढांडा आदि विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से राष्ट्र रक्षा, गौ रक्षा, हिन्दी रक्षा, नारी शिक्षा, अन्ध विश्वास, पत्थर पूजा व्यर्थ, आर्यसमाज का इतिहास, आर्यसमाज क्या है? क्या चाहता है? नवयुवकों का चरित्र निर्माण कैसे हो? अध्यापकों के कर्तव्य, महर्षि दयानन्द जी का जीवन एव सर्वहितकारी कार्यक्रम तथा शराबबन्दी पर विस्तार से विचार रखे। साथ में सरकार की शराब बढावा नीति की सभी वक्ताओं ने घोर नीन्दा की। प्रातः हवन पर १०-१५ निष्ठावान नवयुवकों ने जनेऊ धारण किये तथा भविष्य में जीवन में कोई भी गलत कार्य न करने का व्रत लिया।

इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० ईश्वरसिंह तूफान, प० विश्वामित्र, महाशय धर्मपालसिंह भालोठिया, महाशय धर्मसिंह, महाशय फूलसिंह, महाशय मनसाराम आदि के समाज सुधार के शिक्षा प्रद क्रान्तिकारी भजन हुवे।

आर्यसमाज कंवारी के प्रधान श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने १६-२-९१ को हवन पर नवयुवकों को आह्वान करते हुवे अपने कर्त्तव्य की याद दिलाई तथा सच्चे आर्य वीर क्रान्तिकारियों के कार्यों का इतिहास दुहराया। स्पष्ट शब्दों में कहा कि हमारा उत्सव तभी सफल होगा जब हम अपने गांव में अवैध शराब की बिक्री को रोकें तथा गांव में प्रत्येक बुराई का विरोध करे। वरना यह उत्सव ढोंग बनकर रह जाएगा। हम आर्यों पर महर्षि का ऋण है। चाहे कितना भी कष्ट आए हमें निस्वार्थ-भाव से नेक कार्य करके ऋषि ऋण चुकाना है। प्रातः १७-२-९१ को हवन पर कालेज में पढने वाले विद्यार्थियों ने यज्ञोपवीत लिये। उसी समय हांसी से एक जीप अवैध तरीके से शराब के कट्टे डालने आई। क्रान्तिकारी ने तुरन्त नवयुवकों को आदेश दिया। इन बदमाशों को पकडो और सारी बोतले फोड दो। तब नवयुवक एवं स्कूली बच्चे जीप पर टूट पड़े, सैकडों बोतलें जमीन पर पटक कर फोड दी। विद्वानों के हस्तक्षेप से जीप जलने से बच गई। जीप के ड्राईवर को एक घण्टे सभा में बैठाकर प्रचार सुनाया। एक उनका साथी भाग गया। प्रधान जी ने उसे चेतावनी दी की अगर दुवारा ऐसी हरकत की तो जीप जला देंगे और तुम्हें इस नीम के पेड से बांधकर पीटेंगे। सारे गांव में खुशी की लहर दोड़ गई। गांव की महिलाओ एव बुजुर्गों ने इस अच्छे कार्य के लिए आर्यसमाज कंवारी की सहराना की। कुछ मूर्खों के घरों में मातम छा गया।

इसबार उत्सव में गांव के अतिरिक्त जिला हिसार आर्यसमाज के प्रधान सेठ रामधारी मल, आर्य केन्द्रीय आर्य सभा हिसार के प्रधान श्री हरवन्सलाल कपूर, वैदिक पारावारिक सत्संग सभा के प्रधान श्री चुनीलाल लाम्बा तथा प्रोपर्टी डीलर श्री सुमेश सिंघल आदि महानुभाव अपने साथियों सहित अपने निजी वाहन लेकर उत्सव पर पधारे। श्री सिंघल ने ऋषि लंगर का खर्च दिया तथा आर्यसमाज मन्दिर बनवाने हेतु आर्थिक सहयोग देने का वचन दिया। विद्वानों को देशी घी का हलवा खिलाया गया। लोगों ने बडी श्रद्धा से विद्वानों की बाते सुनीं तथा दिल खोलकर दान दिया। सभा को ४८० रु० दान दिया गया।

डा० ओमप्रकाश आर्य मन्त्री आर्यसमाज कंवारी

❀ चेहरे की झाइयां व मुहासों को दूर करने के लिए दही में नीबू तथा संतरे के छिलकों का सूखा पाउडर, थोड़ा बेसन तथा गुलाब जल मिलाकर चेहरे का उबटन करने से फायदा होता है।

धरम के ठेकेदार

टेक—रिश्वत को वे ले लेकर के दे देते हैं मुक्तिद्वार।
ये हैं धरम के ठेकेदार॥

जन्म से जाति बताकर खुद ही सर्व उच्च कहलाते हैं,
जिसका मांगकर खाते उसके घर पर नही वे खाते हैं।
नित ही सफाई सेवा करता, करते उससे घृणा अपार,
ये हैं धरम के ठेकेदार।

दो-दो बार पकाने पर भी कच्चा उसे बताते हैं,
देशी घी में अगर पका दो, बडे चाव से खाते हैं।
मीठे पकवानों को लखके आ जाती है मुह में लार,
ये हैं धरम के ठेकेदार।

सध्या हवन-यज्ञ कभी न करते न करवाते हैं,
वेदों का ये नाम न जाने, पण्डित जी कहलाते हैं।
करम-बिना वे "राम-राम" कहने से करते बेडा पार,
ये हैं धरम के ठेकेदार।

अगर कही कोई मर जाता तो तेरहवी करवाते हैं,
ब्रह्मभोज के नाम पे खुद ही, भर-भर पेट वे खाते हैं।
दुःखी जनों से गऊ मांगकर करते हैं वैतरिणी पार,
ये हैं धरम के ठेकेदार।

छुआछून अरु पाखण्डों ने बुरी तरह से घेरा है,
यही अवस्था रही तो इकदिन लूटा ही भारत मेरा है।
कृष्णपालसिंह इन्हें भगाओ, दो लाठी-डण्डों की मार,
ये हैं धरम के ठेकेदार।

ले०—कृष्णपालसिंह शास्त्री
आदर्श गुरुकुल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
सिंहपुरा, रोहतक

वैदिक प्रचार मण्डल अम्बाला छावनी में ऋषि बोध पर्व

वैदिक प्रचार मण्डल अम्बाला छावनी के तत्त्वावधान में ऋषि बोध पर्व बड़े उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह के अध्यक्ष पद से बोलते हुए आर्यबन्धु श्री सतीश मित्तल अध्यक्ष हरयाणा खादी ग्रामोद्योग बोर्ड ने ऋषि के बताये मार्ग पर चलने तथा आर्यसमाज के प्रचार को आगे बढ़ाने का आह्वान किया। इस अवसर पर नगर पालिका पार्षद डा० कुलभूषण हरजाई, प्रो० नरेश बत्तरा तथा ब्रह्मचारी रामप्रकाश जी ने भी अपने विचार रखे। भजनोपदेशक श्री दादुदयाल जी ने भजनों से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर श्रीमती लाजवन्ती बाठला ने ५,००० रुपये तथा श्री वेदप्रकाश जी शर्मा ने ५०,००० रुपए पूरे कर देने की घोषणा की। मण्डल के मन्त्री ने मञ्च का सफल संचालन किया तथा सभी का धन्यवाद किया। शान्ति पाठ एवं प्रसाद वितरण के बाद पर्व कार्य समाप्त हुआ।

कृपया निर्माण कार्य में अधिक से अधिक दान भेजकर कार्य को पूरा कराने में सहयोग दें।

वेदमित्र हापुड वाले, मन्त्री
७२ बी, गोविन्द नगर अम्बाला छावनी

सम्पादक के नाम पत्र

संग्रहणीय-विशेषांक

सर्वहितकारी का ऋषि बोध विशेषांक प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एवं आकर्षक था। इसमें सभी लेख शिक्षाप्रद एव प्रेरणादायक थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में ढेर सारी सामग्री पढने को मिली। इस पत्र के विशेषांकों की बडी धूम रहती है। यह भी अपनी उसी शान के अनुरूप निकला है। अतः पत्रिका का यह अंक सभी दृष्टियों से उत्तम तथा सग्रहणीय रहा है। विशेषांक की सफलता के लिए बधाई स्वीकार करे। रामकुमार आर्य

पानीपत में शिवरात्रि सप्ताह

आर्य केन्द्रीय सभा पानीपत की ओर से ५-१-९१ से १०-२-९१ तक शहर में प्रभात फेरियां निकाली गईं। १० फरवरी को आर्य सीनियर सेकेण्डरी स्कूल में ऋषि मेले का आयोजन किया गया। ध्वजारोहण श्री रामानन्द सिंगल प्रधान केन्द्रीय आर्यसभा ने किया। बच्चों एवं वृद्धों महिलाओं के आकर्षक खेल हुए। १२ फरवरी को शोभायात्रा निकाली गई जिसका नेतृत्व श्री रामानन्द जी एवं श्री राममोहनराय मंत्री आर्यकेन्द्रीयसभा ने किया। शिवरात्रि के दिन १३ फरवरी को आर्यसमाज बडा बाजार में मुख्य समारोह मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री बलवीरपालशाह विधायक पानीपत ने की। उसी समय उनका यज्ञोपवीत संस्कार कराया गया। यज्ञोपवीत सस्कार श्री शिवकुमार शास्त्री ने कराया। उन्होंने शपथ ली कि जीवनभर यज्ञोपवीत नही उतारूगा। मुख्य अतिथि के तौर पर श्री अनन्तकुमार ढुल एस. पी. पानीपत जिला ने की और विजेताओं को पुरस्कार दिये। मुख्य वक्ता श्री सोमभाई विद्यालंकार ने ऋषि जीवन पर प्रकाश डाला।

'सर्वहितकारी' के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से सम्बन्धित विवरण

फार्म-४ (नियम ८ देखिये)

१ प्रकाशन स्थान	दयानन्दमठ, रोहतक
२ प्रकाशन अवधि	साप्ताहिक
३ मुद्रक का नाम	वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	है
पता	आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, गोहाना रोड, रोहतक
४ प्रकाशक का नाम	वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	है
पता	दयानन्दमठ, रोहतक
५ सम्पादक का नाम	वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	है
पता	दयानन्दमठ, रोहतक
६ उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के सांझीदार या हिस्सेदार हों।	आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

मैं वेदव्रत शास्त्री एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
वेदव्रत शास्त्री

श्री दानीराम जी का देहावसान

श्री सेठ दानीराम जी ढाकला निवासी का अचानक हृदयगति रुकने से देहावसान २९-१-९१ को प्रातः ९ बजे होगया उनकी आयु ९२ वर्ष की थी। वे नित्य यज्ञ तथा गीता पाठ करके भोजन किया करते थे। वे उदार हृदयदानी थे। कलकत्ता, बम्बई, सोनीपत, ढाकला में उनकी बनाई धर्मशालायें तथा मन्दिर उनके कार्य को दिखा रहे हैं। हैदराबाद सत्याग्रह में पांच सत्याग्रहियों का व्यय दिया था। जेल में रहने तक भी परिवार को सहयोग देने का वचन दिया था। उसी समय इस धार्मिक युद्ध की सफलता हेतु दैनिक यज्ञ शुरु किया था। यह पवित्र कार्य अन्तिम दिन तक चलता रहा। प्राण त्यागने वाले दिन भी नित्यकर्मों के बाद ही शरीर छोडा। इस पवित्र आत्मा के परिवारवालों को उनके दु.ख सहन करने की शक्ति दे तथा पवित्र आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

दीपचन्द
ग्राम पोस्ट—कासनी

जिला वेदप्रचार मण्डल महेन्द्रगढ़ में वेदप्रचार

गत मास ९ जनवरी से सभा की ओर से स्वामी देवानन्द जी की भजनमण्डली तथा आर्यसमाज नारनौल के पुरोहित प० महावीर आर्य जिला महेन्द्रगढ के ग्रामों में वेदप्रचार, यज्ञादि का कार्यक्रम कर रहे हैं। सर्दी में भी भारी संख्या में नर-नारियों ने वैदिक धर्म प्रचार से लाभ उठाया। यज्ञ पर नवयुवकों तथा नवयुवतियों को यज्ञोपवीत दिये और उन्हें धूम्रपान, शराब, मांस आदि से दूर रहने की प्रेरणा दी। ग्राम मुकन्दपुरा, छीलरो, मढाण, खानपुर, बलाहा, तिगरा, भोडीकला, कुण्डिया, अखराना, नामसराणा, गुवा आदि में सफलता पूर्वक प्रचार सम्पन्न हुआ। सभी ग्रामों में प्रातः यज्ञ तथा सायंकाल सामूहिकरूप में सन्ध्या करवाई गई।

वेदप्रचार मण्डल के संयोजक पं० ताराचन्द कार्य एव सहसंयोजक म० ताराचन्द आर्य के मार्गदर्शन में फरवरी मास में भी वेद प्रचार कार्यक्रम सफलतापूर्वक चल रहा है। इसका विवरण आगामी अंक में प्रकाशित किया जावेगा।

मन्त्री आर्यसमाज नारनौल

घरोण्डा में ऋषिबोध दिवस

१३ फरवरी को घरोण्डा में प्रात यज्ञ की कार्यवाही के साथ ऋषिबोध दिवस मनाया गया। श्री स्वामी ओम्‌ के पौत्र श्री शिव कुमार के भजन तथा श्री देवव्रत आचार्य गुरुकुल गुरुत्रेत्र आदि के ऋषि जीवनी पर व्याख्यान हुए।

मन्त्री

रोहतक शहर के सुधार हेतु ज्ञापन

गत सप्ताह समाजसुधार समिति लालचन्द कोलोनी रोहतक के संयोजक श्री धर्मचन्द जी ने एक शिष्टमण्डल के साथ रोहतक में श्री ओमप्रकाश चौटाला को ज्ञापन देकर रोहतक शहर में फैल रही गंदगी तथा अव्यवस्था की ओर ध्यान दिलाया और उनसे पक्की सडके, सिवरेज आदि की सुन्दर व्यवस्था करवाई जावे। रोहतक हरियाणा का प्राचीन ऐतिहासिक तथा राजनीति का प्रमुख केन्द्र है, परन्तु यहां नगरपालिका शहर की समस्याओं पर ध्यान नहीं दे रही।

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव का वार्षिक चुनाव

सर्वश्री किशनचन्द चुटानी प्रधान, किशनचन्द कोटि उपप्रधान, ओमप्रकाश कालड़ा महामन्त्री, सोमदत्त आर्य मन्त्री, मास्टर श्याम सुन्दर आर्य कोषाध्यक्ष, श्री अमीरचन्द श्रीधर भण्डारी एवं पुस्तकाध्यक्ष, गणेशदत्त आर्य लेखा निरीक्षक।

शोक समाचार

आर्यसमाज के प्रचारक स्वामी वेदानन्द जी पूर्व श्री साहबसिंह भजनोपदेशक ग्राम कालौन्दा जि० रोहतक का १२ फरवरी को देहान्त होगया। उन्होंने सारी आयु आर्यसमाज का प्रचार किया। आजकल वदिक आश्रम २०वां मिल जि० सोनीपत का संचालन कर रहे थे।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्‌गति प्रदान करे।

केदारसिंह आर्य

जीन्द ईकाई द्वारा आयोजित २५.१.९१ को रक्तदान शिविर

आर्यवीर दल जीद के उत्साही समाजसेवी आर्यवीरों ने २५-१-९१ को रैडक्रास भवन जीन्द में रक्तदान शिविर का सफल आयोजन किया। इस रक्तदान शिविर में ६५ आर्यवीरों ने रक्तदान किया। आर्यवीरों ने यह शिविर स्वेच्छा तथा स्वयप्रेरणा से आयोजित किया था तथा जिला प्रशासन के सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हुआ। रक्त-दान महादान है, जीवनदान है तथा अत्यन्त मानवतावादी, समाजो-पयोगी और राष्ट्रीय महत्त्व का कार्य है। उपायुक्त जीन्द तथा उप मण्डल अधिकारी (ना) जीन्द उपमण्डल ने आर्यवीर दल को इस पुनीत कार्य के लिए बधाई दी तथा रचनात्मक कार्यों में दल की भूमिका की सराहना की और ऐसे कार्यों वास्ते दल को सदा पूरे सहयोग का आश्वासन दिया। ज्ञातव्य है कि आर्यवीर दल जीन्द आर्यसमाज मन्दिर रामनगर जीन्द में एक प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र भी चला रहा है जिसका अब और ज्यादा विस्तार किया जारहा है तथा सुबह शाम तीन चार घण्टे प्रतिदिन रोगोपचार की नियमित व्यवस्था की जारही है। आर्यवीर दल जीन्द के सभी अधिकारी और खासकर मण्डलपति श्री कर्णसिंह आर्य, नगरनायक श्री दलवीरसिंह आर्य, मन्त्री श्री दिनेश आर्य, शिक्षक श्री राजवीर आर्य बड़ी मेहनत और रुचि से इन कार्यों में जुटे हैं। यह हर्ष का विषय है कि आर्यसमाज की युवा पीढ़ी समाजसेवा के कार्य में रुचि ले रही है। स्थानीय सभी आर्य सज्जनों, आर्यसस्थाओं एव जिला प्रशासन का सहयोग एव आशीर्वाद आर्यवीरों को प्राप्त है।

प्रेषक—प्रो० ओमकुमार आर्य,
आर्यसमाज, जीन्द

हैदराबाद सत्याग्रहियों की एक आवश्यक बैठक

हैदराबाद सत्याग्रह के उन सत्याग्रहियों को सूचित किया जाता जिन्होंने केन्द्र से पेन्शन प्राप्त करने के लिए हमारे पास अपने प्रमाणित पत्र भेज रखे हैं। उनकी एक आवश्यक बैठक १०-३-९१ को ११ बजे दयानन्दमठ रोहतक में होगी। उन सभी से निवेदन है कि वकालतनामें पर हस्ताक्षर करने के लिए और वकील और दूसरे सब खर्चों के लिए दो हजार रुपये लेकर ठीक समय पर अवश्य पधारें, ताकि यह तीसरा मुकदमा भी सुप्रीम कोर्ट में दायर कर दिया जाये। इस तारीख के पश्चात् हम कोई मुकदमा सुप्रीम कोर्ट में नही करेंगे। इसके बाद तो जो भी भाई आयेंगे उनको अपना मुकदमा स्वयं सुप्रीम कोर्ट में दायर करना पड़ेगा। हम परामर्श आदि का जितना सहयोग होगा करेंगे।

जिन सत्याग्रहियों ने अभी तक हमारे पास १०-१० जेल के प्रमाण-पत्र नही भेजे हैं, ऐसे सब सत्याग्रहियों से भी निवेदन है कि यदि उनके पास जेल प्रमाण-पत्र मौजूद हैं और किन्ही कारणों से अभी तक उन्होंने हमसे सम्पर्क नही किया है और भारत सरकार से सम्मान पेन्शन प्राप्त करना चाहें तो ऐसे सब सत्याग्रही भाई भी १०-३-९१ को यहां आकर इस तीसरे केस में सम्मिलित हो सकते हैं। ऐसे सब भाई भी वकील वगैरह के लिए दो हजार रुपये साथ लावें।

भवदीय
संयोजक, हैदराबाद स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेन्शन समिति

शोक प्रस्ताव

आनन्दप्रिय जी (भ्राता जी) का स्वर्गवास दि० १६-१-९१ को उनके निवास स्थान बडौदा में होगया है। आपने अपने जीवनकाल में आर्यजगत् व शिक्षा-संस्थाओं की तन-मन धन व लगन से जो सेवा की है वह अनुकरणीय है। स्वामी दयानन्द जी महाराज की जन्म-भूमि में स्मारक बनवाने में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के वे प्राण थे।

ओम्प्रकाश शास्त्री

धूम्रपान पर प्रतिबंध की मांग

कुरुक्षेत्र, २५ फरवरी (नन्हा) : इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ने लोगों की सेहत के दृष्टिगत धूम्रपान पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने की मांग की है। इण्डियन मैडिकल एसोसिएशन की हरयाणा इकाई की कल यहा एक कांफ्रेस हुई, जिसमें उक्त आशय का एक प्रस्ताव पारित किया गया। यह प्रस्ताव एसोसिएशन की कुरुक्षेत्र इकाई के अध्यक्ष डा० के० सी० अग्रवाल ने पेश किया। पी० जी० आई० चण्डीगढ़ के पूर्व निदेशक डा० पी० एल० वाही कांफ्रेंस में मुख्य अतिथि थे।

वेद प्रचार मण्डल तथा आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन

शराब के ठेकों की नीलामी स्थान पर भारी संख्या में प्रदर्शन करें

हरयाणा प्रदेश में दिन प्रतिदिन शराब का प्रचार तथा विस्तार हो रहा है, जिसके कारण ग्रामों तथा नगरों में वातावरण बहुत ही दूषित बनता जा रहा है। बहन-बेटियों को शराबियों से अपनी इज्जत बचानी कठिन हो रही है। स्कूलों के छात्र भी शराब के जाल में फसते जा रहे हैं, वे अपने माता-पिता की कमाई शराब की बोतल खरीदने में नष्ट कर रहे हैं। परीक्षाओं में पास होने के लिए नकल करने हेतु परीक्षा केन्द्र निरीक्षकों को शराब पिलाई जाती है। इसी प्रकार सरकारी कार्यालयों में उचित अनुचित कार्य करवाने के लिए शराब का प्रयोग किया जाता है। हरयाणा जहां पूर्व दूध दही की नदियां बहने पर प्रसिद्ध था, अब यह प्रदेश शराब की नदियां बहने पर बदनाम हो रहा है। नगर के कोने कोने तथा ग्रामो की गली गली में अबंध रूप से शराब की बिक्री दिन रात हो रही है। किसान-मजदूरों की परिश्रम की कमाई शराब के कारण बर्बाद हो रही है। भ्रष्टाचार, दुराचार तथा धीगामस्ती आदि सामाजिक बुराइयों की जड़ शराब है। स्मरण रखे शराब रही तो हरयाणा की वैदिक संस्कृति नष्ट हो जावेगी और विकास आदि कार्य व्यर्थ होकर रह जावेंगे।

अत: शराब की लानत से छुटकारा दिलाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से गत वर्षों से शराब विरोधी अभियान चलाया जा रहा है। पचायतों से शराबबन्दी प्रस्ताव करवाकर सरकार को भिजवाये जाते हैं। ठेकों पर धरणों का आयोजन किया जाता है। जन जागृति के लिए शराबबन्दी सम्मेलन तथा पदयात्रा भी की जाती है। सभा के प्रचारक हरयाणा भर में घूम-घूम कर शराब की बुराइयों से जनता को सावधान कर रहे हैं। परन्तु सरकार अपनी आमदनी बढाने के लालच में शराब की बिक्री बढाती जा रही है। उसे शराब से होनेवालीहानियों की चिन्ता नही है।

अत: हरयाणा के वेद प्रचार मण्डल तथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से हमारा निवेदन है कि सरकार का इस ओर ध्यान दिलाने तथा उसकी शराब की घातक नीति का विरोध करने के लिये जिस जिले मे जिस दिन शराब के ठेकों को नीलामी की जावे, उस स्थान पर अपने अन्य सहयोगियो के साथ भारी सख्या में पहुंच कर विरोध प्रदर्शन करें तथा हरयाणा में शराबबन्दी लागू कराने का ज्ञापन भी देकर अपने कर्तव्य का पालन करें।

आपके सहयोग के इच्छुक एवं निवेदक

ओमानन्द सरस्वती — संरक्षक
प्रो० शेरसिंह — प्रधान
सूबेसिंह — मन्त्री
सुदर्शनदेव आचार्य — वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक।

सार्वदेशिक सभा की मांग :—

कश्मीरी विस्थापितों को भी १९८४ के दंगा पीड़ितों जैसी सहायता दी जाए

दिल्ली, २० फरवरी—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैमासिक अन्तरंग अधिवेशन १७ फरवरी १९९१ को आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली में सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में देश के अनेक प्रांतो के आर्यनेताओं ने भाग लिया। अधिवेशन में देश की वर्तमान परिस्थितियों पर गम्भीरता पूर्वक विचार हुआ और सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित हुए :—

प्रस्ताव सं० १

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में सरकार की गिरती हुई साख पर गहरो चिन्ता प्रकट करती है। पंजाब सरकार लाहौर से जारी पथिक आदेशों को मानने के लिए बाध्य है। पंथिक आदेशों में सरकारी एवं गैर सरकारी स्तरों पर गुरुमुखी का प्रयोग, हिन्दी का प्रयोग बन्द करना, स्कूलों और कालेजों की छात्राओं को सलवार, कमीज तथा विशेष रंग का दुपट्टा पहनना तथा आकाशवाणी और दूरदर्शन पर भी हिन्दी भाषा के प्रसारण न करना आदि मुख्य हैं। ऐसे आदेशों का पंजाब के राजकीय प्रशासन द्वारा पालन करना भारत राष्ट्र का सरासर अपमान है। पंजाब के उग्रवादियों के साथ बिना शर्त बातचीत के प्रस्ताव से भी ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार ने उग्रवादियों के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया है। सार्वदेशिक सभा राष्ट्र विरोधी पथिक आदेशों का कड़ा विरोध करती है और सरकार से मांग करती है कि वह पंजाब के विषय में दृढ़तापूर्वक कार्यवाही करे।

कश्मीर की दिन प्रतिदिन बिगड़ती हुई परिस्थितियों पर भी यह सभा गम्भीर चिन्ता प्रकट करती है। यदि वहां यथाशीघ्र नियन्त्रण न किया गया तो वह दिन दूर नहीं होगा जब हमारे देश का एक हिस्सा अलग हो जाएगा। कश्मीरी हिन्दुओं के भारत के अन्य भागों में पलायन को हमारी सरकार रोक नहीं पाई है, कश्मीर के उग्रवादी पाकिस्तान में विलय की मांग करते हैं। वे इसे अलग राष्ट्र घोषित करने का स्वर भी बार-बार उठाते हैं।

सार्वदेशिक सभा सरकार से मांग करती है :

१. पंजाब और कश्मीर को सेना के हवाले कर दिया जाए।
२. साम्प्रदायिकता और विघटनकारी प्रवृत्तियों को समाप्त करने के लिए सख्त कदम उठाये जावे।
३. कश्मीरी विस्थापितों को भी १९८४ के दगा पीड़ितों जैसी सहायता दी जावे।
४. केन्द्र तथा प्रान्तीय सरकारे अपने कार्यों से यह सिद्ध करें कि वे किसी भी प्रकार से विघटनकारी शक्तियों को अवरोध पैदा नहीं करने देगी।

प्रस्ताव सं० २

यह बहुत ही चिन्ता एवं अपमान की बात है कि देश के कुछ भागों में विशेषकर पंजाब में हिन्दी के महत्त्व को कम करने के प्रयास ही नहीं किए जा रहे हैं, बल्कि उसके अस्तित्व को प्रशासकीय एवं राजकीय क्षेत्रों से पूरी तरह मिटाया जा रहा है। पंजाब में उग्रवादियों के दबाव में पंजाब सरकार हिन्दी को पूरी तरह समाप्त करने के लिए प्रयत्नशील है।

आर्यसमाज किसी भी भाषा का विरोध नहीं करता। आर्यसमाज यथा सम्भव अधिकाधिक भारतीय भाषाओं के अध्ययन एवं प्रयोग करने का पक्षधर है। परन्तु आर्यसमाज राष्ट्रभाषा हिन्दी के महत्त्व को कम करने के प्रयास का पूरी ताकत से विरोध करने के लिए प्रतिबद्ध है।

प्रस्ताव सं० ३

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा हमारे संचार माध्यमों—आकाशवाणी तथा दूरदर्शन द्वारा संगीत तथा चित्रहार आदि के माध्यम से अश्लील प्रसारणों तथा दृश्यों का कड़ा विरोध करती है। यह सभा सरकार से मांग करती है कि इनके स्थान पर राष्ट्रभक्ति राष्ट्रीय एकता अथवा नवयुवकों के चरित्रनिर्माण सम्बन्धी विषयों को प्रोत्साहन दिया जावे। यदि सरकार ने इन पर प्रतिबन्ध न लगाया तो आर्यसमाज इनके विरुद्ध राष्ट्रव्यापी आंदोलन छेड़ने के लिए बाध्य होगा।

डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

हरयाणा में आर्यसमाज के उत्सवों की बहार

	वैदिक आश्रम गुगोढ जिला रोहतक	२८ फरवरी
आर्यसमाज अलाहर जिला यमुनानगर		१२ मार्च
,,	ऊण जि० भिवानी	२ से ४ मार्च
,,	मन्धार जि० यमुनानगर	१ से ३ मार्च
गुरुकुल लाढौत माग रोहतक (शिलान्यास)		३ मार्च
आर्यसमाज मनाना जिला पानीपत		८ से १० ,,
,,	गुरुकुल भैंसवाल जिला रोहतक	१६, १७ ,,
,,	सोहना जिला गुड़गांव	६ से ८ ,,
,,	आचार्यकुल लोवा कलां जिला रोहतक	९, १० ,,
मेला भालौट जि० रोहतक		६, ७ ,,
आर्यसमाज मुआना जि० जीन्द		१५ से १७ ,,
,,	पायल जि० हिसार	१५ से १७ ,,
,,	उकलाना मण्डी जि० हिसार	२३ से २४ ,,
,,	सालवन जिला पानीपत	२४ से २६ ,,
,,	बरोण्डा जि० करनाल	२६ से ३१ ,,
,,	वैदिक आश्रम भादस जिला गुड़गांव	३०, ३१ ,,
,,	गुरुकुल डिकाडला जिला पानीपत	२९, ३०, ३१ ,,
,,	वैदिक यज्ञ समिति पानीपत	३१ मार्च से ७ अप्रैल
,,	माडल टाउन सोनीपत	१ से ७ अप्रैल
,,	गुरुकुल कुरुक्षेत्र	५ से ६ ,,
,,	लोहारू जिला भिवानी	११ से १२ मई
,,	रादौर जिला यमुनानगर	३१ मई से १, २ जून

जो आर्यसमाज, गुरुकुल अपने उत्सव रखना चाहते हैं वे मार्च के तीसरे सप्ताह तथा अप्रेल, मई मास में तिथियां निश्चित करके सभा को शीघ्र सूचित करें, जिससे उपदेशक तथा भजन मण्डलियों का कार्यक्रम बनाने में सुविधा रहे। सभा के पं० रवीन्द्र विद्यालंकार, प्रो० ओमकुमार आर्य, पं० रणधीरसिंह शास्त्री, पं० सुखदेव शास्त्री, श्री राममेहर एडवोकेट, श्री सत्यवीर शास्त्री आदि विद्वानों ने आदरी रूप में उत्सवों पर व्याख्यान देना स्वीकार किया है। इस समय सभा में पं० चन्द्रपाल शास्त्री, पं० हरिश्चन्द्र शास्त्री उपदेशक तथा पं० सत्य सनातन आर्य, पं० अर्जुनदेव आर्य, पं० रतनसिंह आर्य, पं० भजनलाल आर्य, पं० अतरसिंह आर्य, श्री धर्मवीर आर्य पुरोहित पद पर तथा पं० शेरसिंह आर्य, पं० विद्याभूषण आर्य, भजनोपदेशक एवं पं० चिरञ्जीलाल आर्य, पं० ईश्वरसिंह तूफान, पं० खेमसिंह आर्य, पं० जयपाल आर्य, पं० हरध्यानसिंह आर्य, पं० सीताराम आर्य, पं० मुरारीलाल आर्य, स्वामी देवानन्द भजन मण्डली के रूप में निरन्तर कार्य कर रहे हैं। अतः इन्हें उत्सवों आदि पर एक मास पूर्व आमन्त्रित करके वेदप्रचारकार्यों में लाभ उठावें।

—सुदर्शनदेव आचार्य,
वेदप्रचाराधिष्ठाता

वर्षेष्टि महायज्ञ पद्धति

सभी यज्ञप्रेमी सज्जनों के लाभार्थ "वर्षेष्टि महायज्ञ पद्धति" पुस्तक छपवाई गई है। इसमें वर्षा-यज्ञ की पद्धति के साथ-साथ वेद मन्त्रों का हिन्दी में अनुवाद भी प्रकाशित किया है। लेखक डा० सुदर्शनदेव आचार्य, मूल्य सजिल्द १२ रु०, बिना जिल्द १० रु०।

प्राप्ति स्थान :— १. आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ, रोहतक।
२. अर्जुनदेव आर्य उपदेशक, छोटूराम धर्मशाला, बहादुरगढ़

गुरुकुल की चिट्ठी

१९९० का आखरी महीना गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में कुलपिता पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी की स्मृति को समर्पित रहा। श्रद्धानन्द सप्ताह २३ दिसम्बर से ३० दिसम्बर के बीच गुरुकुल परिसर में सभी कुलवासियों, ब्रह्मचारियों, प्राध्यापकों सहित अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा अत्यन्त निष्ठा और उल्लास के साथ मनाया गया। २३ दिसम्बर को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस प्रभातवेरी के बाद लहराते "ओ३म्" ध्वजों की शोभायात्रा के साथ प्रारम्भ हुआ। दयानन्दद्वार से यज्ञ मडप की इस शोभायात्रा में कुलपति सहित सभी प्राध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी और विद्यालय के उल्लसित ब्रह्मचारी शामिल थे।

यज्ञ मंडप के रूप में बड़े-परिवार के यज्ञ-मदिर का उपयोग कई वर्षों के बाद किया गया। आचार्य श्री रामप्रसाद वेदालकार ने कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार, कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोडा और मुख्य अतिथि श्री रामनाथ वेदालंकार को यजमान बनाकर यज्ञ सम्पन्न कराया। इसके बाद विद्यालय विभाग के ब्रह्मचारियों ने कुलपिता की स्मृति में गीत प्रस्तुत किए। इस अवसर पर हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० विष्णुदत्त राकेश, सस्कृत के प्रोफेसर श्री वेदप्रकाश शास्त्री के अलावा कुलपति एवं मुख्य अतिथि ने स्वामी श्रद्धानन्द के प्रेरक जीवन की घटनाएं सुनाकर उस विराट व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने की बात कही।

उसी दोपहर अखिल भारतीय श्रद्धानन्द हाकी टूर्नामेन्ट विश्वविद्यालय के नवागत क्रीडाध्यक्ष श्री आर०के०एस० डागर के सयोजन में देशभर से आई तेरह टीमों के बीच आरम्भ हुआ। वर्षा जैसे प्राकृतिक अवरोधों के बावजूद टूर्नामेन्ट आठ दिन तक सफलतापूर्वक चला। कुलपति ने जहां पहले दिन खिलाड़ी टीमों के माचपास्ट की सलामी ली वहीं अन्तिम दिन रुडकी विजेता टीम-बी०ई०जी० जालंधर की उपविजेता टीम यंग पार्म क्लब को पुरस्कृत किया। इस टूर्नामेन्ट में दर्शकों के रूप में हरिद्वार नगर-परिसर के सैकड़ों लोग सम्मिलित हुए।

दिसम्बर १९९० और जनवरी, १९९१ के महीने विश्वविद्यालय परिवार के विज्ञान सकाय में वनस्पतिशास्त्र विभाग में डा०डी०के० माहेश्वरी प्रोफेसर पद पर, भौतिकशास्त्र में डा० यशपाल, प्राणि-शास्त्र में डा० देवराज खन्ना, रसायन विभाग में डा० श्रीकृष्ण और कम्प्यूटर विभाग में सर्वश्री दिनेश विश्नोई, कर्मजीत भाटिया, अचल कुमार ने कार्यभार संभाला।

मानविकी संकाय में संस्कृत विभाग में डा० सोमदेव शतांशु ने रीडर पद पर, मनोविज्ञान विभाग में डा० चन्द्रपाल खोखर, वेद विभाग में डा० तैजीमित्र, प्रौढ़ शिक्षा में डा० जसबीरसिंह मलिक तथा क्रीड़ा विभाग में श्री आर०के० एस० डागर ने कार्यभार ग्रहण किया।

विश्वविद्यालय में १९९१-९२ के सत्र से हिन्दी विभाग में हिन्दी पत्रकारिता डिप्लोमा आरम्भ करने का निश्चय किया है। इसके लिए हिन्दी विभाग में प्रतिष्ठित पत्रकार, नवभारत टाइम्स के संवाददाता तथा अनेक वर्षों से हिन्दी साहित्य का अध्यापन करा रहे श्री कमलकान्त बुधकर को प्रवक्ता के रूप में विश्वविद्यालय परिवार में सम्मिलित किया गया।

६ जनवरी को विश्वविद्यालय के माम्य कुलाधिपति तथा केन्द्रीय योजना आयोग के सदस्य प्रो० शेरसिंह ने पुस्तकालय के विस्तारित कक्ष के रूप में "संदर्भ एवं शोध पुस्तकालय" के लिए उ०प्र० सरकार ने ७ लाख रुपया प्रदान किया है। जबकि केन्द्रीय सरकार ने सातवी पंचवर्षीय योजना में इसके लिए ५ लाख तथा आठवीं योजना में पन्द्रह लाख रु० का प्रावधान किया है। इस तरह से २७ लाख की लागत से भविष्य में पुस्तकालय भवन का विस्तार कार्य संभव हो सकेगा। प्रसन्नता की बात है कि पुस्तकालय भवन का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है। आशा है कि मानविकी सकाय के भवन का भी निर्माण कार्य जल्दी ही शुरु हो जाएगा।

इसी बीच विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद् (सीनेट) की बैठक भी ६ जनवरी को अत्यन्त सौहार्दपूर्ण वातावरण में विश्वविद्यालय के ही कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में विभिन्न आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अनेक प्रमुख महानुभाव सम्मिलित हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र ने कुलपति श्री सुभाष विद्यालकार को पुण्यभूमि और विश्वविद्यालय के कार्यों के लिए पांच लाख रुपये उपलब्ध कराने की घोषणा की। विश्वविद्यालय अपने स्तर पर तथा जिला प्रशासन के परामर्श एवं सहयोग से गगापार कागडी ग्राम की पुण्यभूमि के भवनों और गगा नदी के कारण कट रही भूमि की सुरक्षा के लिए शीघ्र ही प्रयास प्रारम्भ करेगा।

श्री वीरेन्द्र ने विश्वविद्यालय के दैनिक यज्ञ के अवसर पर प्राध्यापकों को सबोधित करते हुए कहा कि बरसों बाद वे गुरुकुल की गतिविधियों में जीवन्तता का अनुभव कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान कुलपति के नेतृत्व में जो परम्पराएं गुरुकुल में पड रही हैं वे उसे उसके पुराने गौरव तक जरूर ले जाएंगी।

फरवरी के प्रथम सप्ताह में गुरुकुल में वर्जीनिया विश्वविद्यालय के २० छात्र-छात्राएं भ्रमण पर आए। उन्होंने पुस्तकालय का निरीक्षण किया, गुरुकुल पद्धति तथा यज्ञ-परम्परा के बारे में रुचि पूर्वक जानकारी प्राप्त की। इन अमेरिकी छात्रों ने गुरुकुल फार्मेसी में आयुर्वेदिक औषध निर्माण को अत्यन्त उत्सुकता के साथ देखा। इन छात्रों ने गुरुकुल के पुरातत्व संग्रहालय और इसमें गगोत्री के योगी और पर्वतारोही स्वामी सुन्दरानन्द द्वारा स्थापित की जा रही हिमालय दर्शन वीथी देखकर विस्मय और प्रसन्नता प्रकट की। वर्जीनिया विश्वविद्यालय के ये छात्र योग की क्रियात्मक शिक्षा के लिए निकट भविष्य में ही फिर गुरुकुल आएगे।

६ फरवरी को प्रौढ़ शिक्षा विभाग में तीस प्रशिक्षुओं के विशेष प्रशिक्षण शिविर का कुलपति श्री सुभाष विद्यालकार ने उद्घाटन किया।

बरसों बाद सकाय अधिष्ठाता (डीन) की नियुक्ति की परम्परा भी इन्ही दिनों विश्वविद्यालय में प्रारम्भ की गई। मनोविज्ञान विभाग के प्रोफेसर ओमप्रकाश मिश्रा को मानविकी संकाय के डीन के रूप में नियुक्त करके विश्वविद्यालय को नई शैक्षिक गतिविधियों की ओर उन्मुख किया गया। इस दिशा में विभिन्न विभागों के प्राध्यापकों द्वारा अपने शोधकार्य पर शोधपत्र पढने के लिए सप्ताहांत में शनिवार का दिन सुनिश्चित किया गया। इसी सिलसिले में पहला व्याख्यान हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० विष्णुदत्त राकेश का "साहित्य और सस्कृति" पर ९ फरवरी को सम्पन्न हुआ। कुलपति इस अवसर पर अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे।

भूल सुधार

सर्वहितकारी के १४ फरवरी ९१ में पृ० ८ पर अभिनन्दन समिति की दान सूची में श्री सुजानसिंह मन्त्री आर्यसमाज कोसली की राशि २०१) के स्थान पर १०१) तथा श्रीसत्यनारायण आर्यसमाज चरखी दादरी की राशि २०१) के स्थान पर १०१) भूलवश छप गई। अतः पाठक सुधार कर पढ़ें।

व्यवस्थापक

आया होली का त्योहार

यह होली का पर्व सुपावन,
पुनः देश में आया है।
कण-कण भारत भू का हर्षित,
फूला नहो समाया है।

मधु ऋतु की छवि में प्रमुदित,
है नगर-बाग-बन-घर-आंगन।
नव्य नवल चेतना जगी है,
जाग्रत है मधुरिम प्रांगण।

प्रकृति के उपादान हैं करते,
उसके यौवन का शृंगार।
रंग-विरंगे सुमनदलो का,
लहराता है पारावार।

होली का यह पर्व सुपावन,
आया हमे जगाने को।
अन्तर्निहित वृत्ति आसुरी,
का सब जाल हटाने को।

आओ हम सब प्रेम-दया का,
छा दे धरती पर साम्राज्य।
सत्य-अहिंसा भू पर फैले,
हो मानवता का मधु राज्य।

शुभ संदेश यही होली का,
मधुरिम हो सबका व्यवहार।
मानवता का पाठ पढ़ाने,
आया होली का त्योहार।

राधेश्याम आर्य

ऋषि बोध

बालक मूलशङ्कर को, पिता ने यह कहा आकर।
करो उपवास और पूजा, शिवालय में वहां जाकर॥
वही है देव-देवों का, वही रक्षक हमारा है।
वही है पूज्य हम सबका, वही सबका सहारा है॥
गए तब मूल मन्दिर में, किए उपवास और पूजा।
लग्न थी शिव के दर्शन की, नहीं था ध्यान कुछ दूजा॥
चढ़े फल-फूल और मेवे, वहा जो शिव की मूरत पर।
लगे खाने उन्हें चूहे, वहीं शिवजी पर चढ-चढकर॥
जो देखा घटनाचक्र यह, विचारा मूल ने तत्क्षण।
करेगा जग की रक्षा क्या, जो कर सकता न निजरक्षण॥
मैं ढूंढूगा उसी शिव को, वह जो सबका सहारा है।
जो पालक और पोषक है, व जो रक्षक हमारा है॥
है जो देव-देवों का, जिसे महादेव कहते हैं।
घटक ब्रह्माण्ड के जितने हैं सब आधीन रहते हैं॥
चले कर 'पाल' प्रतिज्ञा लिया फिर ढूंढ शंकर को।
जगाया आनकर जग को, है शत-शत धन्य ऋषिवर को॥

धर्मपाल आर्य, नरवाना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०/७३ RTK-४६ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,०९०

ओ३म्
सर्वहितकारी रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८   अंक १६   १४ मार्च, १९९१   वार्षिक शुल्क ३०)   (आजीवन शुल्क ३०१)   विदेश में ८ पौंड   एक प्रति ७५ पैसे

सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ९

विद्या और अविद्या

(डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए० आर्यसमाज गोरखपुर)

(गतांक से आगे)

अविद्या अर्थात् भौतिकवाद या कर्म और विद्या अर्थात् अध्यात्मवाद या ज्ञान दोनों ही अपने-अपने क्षेत्र में विलक्षण या अद्वितीय हैं। जो व्यक्ति या राष्ट्र या समाज एक को ही अपनाता है, उन्हें अशान्ति का सामना करना पड़ता है। उदाहरणार्थ भौतिकवाद की उन्नति से अमेरिका या यूरोपीय राष्ट्र और रूस आदि बहुत चिन्तित दिखाई देते हैं। कभी-कभी अमेरिका आदि देशों के पत्र पत्रिकाओं को देखें तो पता चलेगा कि इनमें हत्यायें, आत्महत्यायें, पागलपन, एड्स तथा अन्य यौन सम्बन्धी रोग अपनी चरम सीमा पर पहुंचे हुए हैं। वहां के लोग मादक दवाईयां खाए बिना सुख की नींद भी नहीं सो पाते हैं। हिप्पीवाद अपने को धोखा देने का मार्ग है। वे दवाइयां खाकर समलैंगिक एवं विषम लैंगिक भोगविलासों में डूबे हुए हैं। वहां की अशान्ति का वर्णन करना भी संभव नहीं। मनुष्य नैतिकता को भूल गया है। घातक अस्त्रों के निर्माण ने संसार को विनष्ट करने का प्रलय का चित्र खींच दिया है। परन्तु भौतिक उन्नति की आवश्यकता से इन्कार नहीं किया जा सकता है। भौतिक विद्या की उन्नति करनी चाहिए। हां, केवल भौतिक विद्या की ही उन्नति में लगे रहना ठीक नहीं। आत्मविद्या की ओर झुकना भी आवश्यक है। बिना इसके मनुष्य को शान्ति नहीं मिल सकती है। अमृतत्व की प्राप्ति सभव नहीं हो सकती। स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने लिखा है "विद्या और अविद्या एक नदी के दो किनारे हैं। अथवा इनको एक रथ के दो पहिए भी कह सकते हैं। नदी पर पुल बनाने के लिए दोनों पहियों का होना आवश्यक है। अथवा जीवन रूपी मोटर में प्रकृति विद्या इन्जन है और अध्यात्म विद्या ब्रेक है। प्रकृति विद्या के बिना जीवन की गाड़ी चल नहीं सकती और आत्मविद्या के बिना वह टकराकर चूर-चूर हो सकती है। अतः दोनों का समन्वय आवश्यक है।"

बृहदारण्यक उपनिषद् द्वितीय अध्याय चौथे ब्राह्मण में याज्ञवल्क्य मैत्रेयी संवाद आया है। याज्ञवल्क्य जब वानप्रस्थी बनने लगे तो उन्होंने अपनी दोनों पत्नियों कात्यायनी और मित्रा की पुत्री मैत्रेयी को अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति ऐश्वर्य और धन देने की इच्छा की। कात्यायनी तो लेने को तैयार होगई। पर मैत्रेयी ने कहा "भगवन् सारी पृथ्वी वित्त से पूर्ण करके मुझे दे दो जाय तो क्या मैं उससे अमरत्व पा लूगी? याज्ञवल्क्य बोले "नैव-नैव। यथोपकरणवतां जीवनं तथैव ते जीवनं स्यात्, अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेन" नहीं, कभी नहीं। जैसे साधन सम्पन्न व्यक्ति चैन से जीवन निर्वाह करते हैं वैसे ही तुम्हारा भी जीवन हो जाएगा। धनधान्य से अमृत चखने की आशा तो नहीं की जा सकती।

मैत्रेयी ने कहा "येनाह नामृता स्या किमहं तेन कुर्याम्" जिससे मैं अमृत को न चख सकू उसे लेकर मैं क्या करूंगी। "मैत्रेयी आगे बोली" भगवन् अमर होने का नुस्खा यदि आप जानते हों तो यह धन-दौलत न देकर मुझे उसी का उपदेश दीजिए। तब याज्ञवल्क्य ने कहा "अरे पति की कामना के लिए पति प्रिय नहीं होता है, अपनी आत्मा की कामना के लिए पति प्रिय होता है। अरे, पत्नी की कामना के लिए पत्नी प्रिय नहीं होती अपनी आत्मा की कामना के लिए पत्नी प्रिय होती है। इसी प्रकार पुत्र की कामना के लिए पुत्र प्रिय नहीं होता, अपनी कामना के लिए पुत्र प्रिय होता है, लोक की कामना के लिए लोक प्रिय नहीं होते आत्मा की कामना के लिए लोक प्रिय होते हैं। अरे, यह आत्मा ही द्रष्टव्य है, श्रोतव्य, मन्तव्य है, निदिध्यासितव्य है—उसी को देख, उसी को सुन, उसी को जान, उसी का ध्यान कर, आत्मा को देखने से, सुनने से समझने से और ध्यान करने से हृदय की सभी गांठें खुल जाती हैं।"

आगे इसी आत्मा के लिए याज्ञवल्क्य ने कहा है "विश्व के आधिदैविक वाद में जो तेजोमय, अमृतमय पुरुष है वह समष्टि रूप ब्रह्माण्ड की आत्मा है, व्यक्ति के आत्मभाव में जो तेजोमय, अमृतमय पुरुष है वह व्यष्टि रूप पिण्ड का आत्मा है। आत्मा ही अमृत है, आत्मा ही ब्रह्म है, आत्मा ही सबकुछ है।"

इसी प्रकार उपनिषदों का कहना है "भौतिकवाद की उन्नति करो परन्तु 'त्यक्तेन भुञ्जीथा:' वैराग्यभाव से भोग करो। वैराग्यभाव से भोग तभी हो सकता है जब हमें आत्मज्ञान हो। इसलिए भौतिक विज्ञान से मृत्यु को तरकर आत्मविद्या द्वारा अमृत को चखो। "विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभय सह। अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।"

अध्यात्मविद्या और भौतिकवाद के समन्वय की तरह ज्ञान कर्म का भी समन्वय आवश्यक है। आपको सत्य का ज्ञान है पर कर्म में नहीं उतारते तो यह ज्ञान अनुपयोगी है। हां, सत्य का ज्ञान है और आप उसे जीवन में कर्म में प्रयोग करते हैं तो आप कर्म द्वारा मृत्यु को तरकर अमृत को चख सकते हैं। संसार सागर को पार करने का यही मार्ग है। याद रखने की बात है ज्ञान के बिना कर्म अन्धा है वह रास्ता भटका देगा और कर्म के बिना ज्ञान लंगड़ा है। वह कुछ नहीं कर सकता। दोनों यदि साथ-साथ और एक-दूसरे का साथ देते हुए चलेंगे तो जीवन नौका ठीक तरह पार हो जाएगी। वेद के विद्वान् एक मुसलमान कवि ने एक सुन्दर कविता लिखी है। उस कविता का भाव है कि एक गांव में आग लगी, सब लोग भागने लगे। अन्धा भागे कैसे और किधर? लंगड़ा चले तो कहां चले, कैसे चले? दोनों ने सोचा। अन्धे ने लगड़े को कन्धे पर बिठा लिया और लंगड़े ने मार्ग दिखाया। दोनों आग की मुसीबत से बच गए।

इसलिए जहां भौतिक विद्या या अध्यात्मविद्या अर्थात् अविद्या और विद्या का समन्वय आवश्यक है वैसे ही ज्ञान और कर्म का समन्वय होने से मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।

साम-सुधा शतक

॥ २५ ॥

एक्य-साधक ज्ञानी को दुःख कहां ?

ओ३म् यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोह कः शोक एकत्वमनुपश्यतः॥ यजु०अ०४०मंत्र ७

बैठ गया है जो ज्ञानी जन,
परम पिता के पावन अंक।
निजवत् जान रहा जो सबको,
वह राजा हो, हो या रंक।
ऐक्य साधकर जीवमात्र से,
राग-द्वेष मे हुआ निश्शंक।
वही ऐक्यसाधक ज्ञानीजन,
खिल उठता ज्यों अमल मयंक।

॥ २६ ॥

जीव का मोक्षधाम अयोध्यापुरी !

ओ३म् अष्टाचक्रा नव द्वारा देवाना पूरयोध्या।
तस्यां हिरण्ययः कोश स्वर्गो ज्योतिषावृतः॥

अष्ट-चक्र नव द्वार विनिर्मित,
है तेरा यह तन पुर धाम।
दिव्य गुणों का वास यही है,
है अजेय अयोध्या नाम।
अरे इसी में अंतर्निहित है,
ज्योति का वह कोष ललाम।
आभासित करले तू उसको,
हो जायेगा अभय, अकाम॥

॥ २७ ॥

प्रकृति जीव का मोक्ष साधन है !

ओ३म् अपाङ् प्राङेति स्वधया गृभीतो मर्त्येना सयोनिः।
ता शश्वन्ता विषूचीना वियन्तान्यो अन्य नि चुम्पणम्॥

जड, चेतन दो मूल तत्त्व हैं,
जगती के कारण कृतमान।
एक अज्ञ है स्व पर से भी,
दूजा विज्ञ स्वयं पर ज्ञान।
अमर अनादि अजर हैं दोनों,
मूल रूप में बिन तव जान।
साधक जीव को साधन है यह,
हो निर्बन्ध बने लयमान।

॥ २८ ॥

उस अकाय में परम आनन्द है !

ओ३म् बालादेकमणीयस्कमुतैकं नैव दृश्यते।
ततः परिष्वजीयसी देवता मम प्रिया॥

अथर्व० का. ।. सू. ८ मं. २५

बाल मात्र से भी लघुतम जो,
समझो उसको पूर्ण अकाय।
रहा तव भी अग जग में,
जीवों का वह परम सहाय।
अन्तरतल के निबिड कोण में,
देखो लोगो उसका भास।
क्षणभंगुर हैं जग्नो के सुख,
मेरा प्रिय वह परम-विलास।

प्रो० धर्मचन्द, विद्यालंकार
पलवल।

नए वर्ष का शुभारम्भ

भारतवर्ष के नए वर्ष का शुभारम्भ चैत्र शुक्ल पक्ष १ प्रतिपदा से होता है। आगन्तुक नए वर्ष की शुभ कामना प्रेषित है। राष्ट्र एवं आपका परिवार सुखी एवं समृद्धिशाली हो।

अभी तक हमारे देश के अधिकांश नागरिक गुलामी के प्रतीक विदेशी नव वर्ष १ जनवरी को गुलामी की मानसिकता के कारण अपना नया वर्ष मानकर शुभकामनाओं का आदान-प्रदान कर रहे हैं।

इस अराष्ट्रीय मानसिकता को बदलकर चैत्र शुक्ल १ प्रतिपदा के अवसर पर नए वर्ष की शुभकामना प्रेषित करनी चाहिए।

अतः विनम्र निवेदन है कि अपने इष्ट मित्रों को चैत्र शुक्ल १ संवत् २०४८ (१७ मार्च ९१) के अवसर पर शुभकामना भेजने का कष्ट करें।

इस शुभ अवसर पर हम संकल्प करें कि गुलामी की निशानी अंग्रेजी को हटाकर हमारी मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी को सभी स्तरों पर प्रतिष्ठित करेंगे, तथा देश में सम्पर्क भाषा के लिए हिन्दी का उपयोग करेंगे।

इस संकल्प को पूरा करने के लिए जनशक्ति की आवश्यकता है। जनशक्ति के लिए संगठन होना जरूरी है। अभी तक कुछ नगरों में संगठन स्थापित होकर प्रचार का कार्य प्रारम्भ होगया है। किन्तु जहां संगठन स्थापित नहीं हुवे हैं उन नगरों में संयोजक महोदय शीघ्रातिशीघ्र संगठन बनाकर कार्य प्रारम्भ करें।

संगठन को शक्तिशाली बनाने के लिए प्रत्येक प्रांत मे जिला, संभाग तथा प्रांतीय सम्मेलन करना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए शीघ्र ही सम्मेलन करने के लिए योजना बनाकर सूचित करने का कष्ट करें।

जगदीशप्रसाद वैदिक
अध्यक्ष अंग्रेजी हटाओ आंदोलन,
श्रद्धानन्द भवन, महात्मा गांधी मार्ग
इन्दौर

बेरी में शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं की बैठक

दिनांक २० फरवरी को आर्यसमाज मन्दिर बेरी जि० रोहतक में आर्यसमाज बेरी की प्रधान श्रीमती प्रभात शोभा विद्यालंकृता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में बेरी, बाघपुर, वजीरपुर वादयां, दूबलधन आदि के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। इस अवसर पर सभा के उपदेशक पं० रतनसिंह आर्य ने आर्यकर्त्ताओं को सचेत किया कि यदि हरयाणा के माथे से शराब का कलंक न मिटाया गया तो हमारी वैदिक संस्कृति नष्ट हो जायेगी। अतः अब समय आगया है कि प्रत्येक आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता को शराब के ठेके बन्द करवाने के लिए तन, मन तथा धन से सहयोग करना चाहिए। सभा के अन्तरंग सदस्य तथा ग्राम दूबलधन के सरपंच श्री भरतसिंह तथा श्री भगवानसिंह सरपंच बेरी ने शराबबन्दी लागू करने के सुझाव दिये।

श्रीमती प्रभात शोभा ने आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि हरयाणा में शराबबन्दी लागू करवाने के लिए सभी धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं को मिलकर मैदान में कूदना चाहिए। शराबियों से महिलाओं को अधिक कष्ट उठाने पड़ते हैं। अतः मैं अपनी बहिनों तथा बेटियों से अनुरोध करती हूं कि वे चूल्हे चौके से समय निकालकर अपने-अपने ग्रामों के शराब के ठेके बन्द करवाने के लिए संघर्ष करें। मैं शराब बन्द करवाने के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने के लिए तैयार हूं। उनके व्याख्यान से प्रभावित होकर निश्चय किया गया कि २४ मार्च को बेरी में कादयान खाप की पंचायत बुलाई जायेगी जिसमें इस खाप के सभी ग्रामों से शराब के ठेके बन्द करवाने तथा शराब पीने पर पाबन्दी लगाने का कार्यक्रम तैयार किया जावेगा। —केदारसिंह आर्य

—०—

रोहतक में शराब के ठेकों की नीलामी पर आर्यजनता की ओर से विरोध प्रदर्शन किया गया

हरयाणा सरकार को ओर से दिनांक १२ मार्च को दौलता भवन ही पार्क माडल टाउन रोहतक में शराब के ठेकों की सार्वजनिक नीलामी का आयोजन किया गया। हजारों की संख्या में शराब के ठेकेदार लाखों रुपए की बोली बोलकर ठेके छुड़वाने के लिए होड लगा रहे थे। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा की ओर से प्रति वर्ष की भांति सभा उप-प्रधान महाशय भरतसिंह, विश्वप्रसिद्ध आर्य महिला नेता श्रीमती प्रभात शोभा विद्यालङ्कृता, सभा के वरिष्ठ नेता श्री धर्मचन्द सेवानिवृत अतिरिक्त निदेशक सहकारी बेंक सभा के उपदेशक प० अतरसिंह आर्य, श्री अर्जुनदेव आर्य, श्री रतनसिंह आर्य, श्री खेमसिंह आर्य, श्री धर्मवीर आर्य, पं० वासुदेव शास्त्री, सर्वखाप पंचायत महम के प्रधान श्री सूरतसिंह तथा सभा कार्यालय के कर्मचारी एवं रोहतक के निकटवर्ती ग्रामो के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने प्रदर्शन में भाग लिया। इससे पूर्व एक प्रचार वाहन जिस पर शराब सभी बुराइयों की जड़ है। शराब की आय से विकास नही अपितु विनाश होता है। शराब के ठेकेदार देश के गद्दार हैं, हरयाणा में शराबबन्दी लागू करो, शराब विरोधी नारे लिखे हुए थे, द्वारा रोहतक के प्रमुख मार्गों पर जलूस निकाला गया। आबकारी कराधान कार्यालय पर पहुंचने पर जलूस शराबबन्दी सम्मेलन के रूप में बदल गया।

शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन

शराब के ठेकों की नीलामी पर पूंजीपति तथा उनके सहयोगी एवं सरकारी अधिकारी हजारों की संख्या में उपस्थित थे। अतः उन तक आर्यसमाज की आवाज पहुंचाने के लिए प्रचारवाहन पर ध्वनि-विस्तार तथा ओ३म् के झण्डे लगाकर मंच तैयार किया गया। सभा के उपदेशक पं० अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी, पं० अर्जुनदेव आर्य, प्रसिद्ध आर्य बाल प्रभावशाली वक्ता ब्रह्मचारी जितेन्द्र आर्य ने शराब से होने वाली हानियों से शराब के ठेकेदारों तथा उनके दलालो को अवगत कराया। श्री खेमसिंह आर्य की भजन मण्डली ने शराबियों को अपने मधुर गीतों द्वारा सचेत किया कि जहररूपी शराब से बचो, अन्यथा तुम्हारे परिवार बर्बाद हो जायेंगे। इस सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण में श्रीमती प्रभात शोभा ने उपस्थित शराब के ठेकेदारो तथा सरकारी अधिकारियों को धिक्कारते हुए कहा कि तुम लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए ठेकों की बोली बोल रहे हो। तुम्हें यह भी पता है कि शराब एक जहर है जो भी इसका सेवन करेगा, उसको हानि होगी। तुम्हारे परिवारों के सदस्य भी शराब के नशे में फंसकर विनाश की ओर जावेंगे तब तुम्हें अपनी पाप की कमाई पर पछताना पड़ेगा। आपने भारत के प्रधानमन्त्री तथा हरयाणा के मुख्यमन्त्री को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप अपने भाषणों में गरीबी दूर करने की दुहाई तो देते हैं, परन्तु अपनी जनता को जिनकी वोटों के कारण सत्ता में आए हो, को शराबरूपी जहर पिलाकर सरकारी आय में वृद्धि कर रहे हो। अपनी जनता का अपने स्वार्थ के कारण अकल्याण करके कल्याणकारी नहीं बन सकते। चुनाव जीतने के लिए झूठे नारे लगाकर कब तक धोखा दिया जावेगा। पाप का घड़ा एक दिन फूट कर रहेगा। आपने हरयाणा की जनता को आह्वान किया कि आनेवाले चुनाव में किसी भी शराबी तथा शराब पिलवाने वाले उम्मीदवार को वोट न देवे। सम्मेलन के बाद जिला उपायुक्त द्वारा हरयाणा के मुख्यमन्त्री को हरयाणा में शराबबन्दी लागू कराने की मांग का ज्ञापन दिया गया।

दयानन्दमठ मार्ग पर मांस की दूकानों का विरोध

आर्यसमाज के प्रदर्शनकारियों ने इसी दिन नगरपालिका रोहतक के कार्यालय पर प्रदर्शन किया तथा शराब तथा मांस के विरुद्ध नारे-बाजी की और नगरपालिका के प्रधान श्री सुन्दरलाल मेटी को ज्ञापन देकर मांग की गई कि दयानन्दमठ मार्ग पर जो शराब तथा मांस की दूकाने हैं वे हटाई जावें, अन्यथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की ओर से संघर्ष किया जावेगा।

आकाशवाणी से स्वांग का प्रसारण बन्द करवाने की मांग

आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने रोहतक स्थित आकाशवाणी केन्द्र पर भी प्रदर्शन किया और आकाशवाणी केन्द्र से अश्लील रागनियों तथा श्री लखमीचन्द के स्वांग के प्रसारण को बन्द करवाने के लिए द्वार पर नारे लगाये। इस अवसर पर हरयाणा के कोने-कोने से रागनिया गानेवाले उम्मीदवार स्वर परीक्षा देने हेतु आए हुए थे। आकाशवाणी केन्द्र निदेशक को एक ज्ञापन देकर अनुरोध किया गया कि स्वांग की गन्दी रागनियों का प्रसारण बन्द करके सभा के भजनोपदेशको के समाज सुधार तथा देशभक्ति के गीतो को प्रसारित करवाया जावे, जिससे रेडियो सुननेवालों पर अच्छा प्रभाव पड़े। श्री लखमीचन्द की रागनिया हरयाणा की संस्कृति नही है अपितु आर्यसमाज के भजनोपदेशकों के गीत तथा ऐतिहासिक कथाओं के प्रसारण से ही हरयाणा की असली संस्कृति जीवित रह सकती है।

—केदारसिंह आर्य

शराबबन्दी जनजागरण हेतु प्रचार अभियान

दिनाक १२ मार्च को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय सिद्धान्ती भवन रोहतक में श्रीमती प्रभात शोभा जी की अध्यक्षता में आर्यसमाज के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं को एक विशेष बैठक में निर्णय किया गया कि ग्रामीण जनता में शराब की सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जनजागरण करने के लिए दिन में दोपहर बाद नर-नारियों के साथ बैठकर विचारगोष्ठी तथा रात्रि को शराबबन्दी समारोह का ग्रामों में आयोजन किया गया है। इस अवसर पर श्रीमती शोभा विद्यालङ्कृता के व्याख्यान तथा सभा को भजन मण्डलियो के प्रभावशाली भजन होंगे।

प्रचार कार्यक्रम का विवरण

आर्यसमाज	माडल टाउन सोनीपत	१५ मार्च
,,	गुरुकुल भैसवाल कला	१६ ,,
,,	खरावड जिला रोहतक	१९ ,,
,,	मकडोली कला जिला रोहतक	२० ,,
,,	पाकस्मा जिला रोहतक	२१ ,,
,,	बलियाना जिला रोहतक	२२ ,,
,,	गोहाना मण्डी जिला रोहतक	२३ ,,
,,	बेरी जिला रोहतक	२४ ,,
,,	मुरादपुर टेकना जिला रोहतक	२५ ,,
,,	मोखरा जिला रोहतक	२६ ,,
,,	मदीना दांगो जिला रोहतक	२७ ,,
,,	खरकडा जिला रोहतक	२८ ,,
,,	लाखनमाजरा जिला रोहतक	२९ ,,
,,	आहूलाना जिला रोहतक	३० ,,

ऊपरलिखित आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन है कि वे इस कार्यक्रम की तयारी करके शराबबन्दी अभियान में सहयोग देवें।

सत्यवीर शास्त्री प्रचारमन्त्री

शराब के ठेकों को नीलामी न करने का अनुरोध

उपायुक्त महोदय, जिला रोहतक

निवेदन है कि दिनांक १० मार्च १९९१ रविवार को आर्यसमाज बेरी जिला रोहतक में बेरी क्षेत्र के ग्रामों के प्रमुख सरपंचों तथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को एक बैठक सम्पन्न हुई थी, जिसमें सर्वसम्मति से निर्णय किया गया है कि शराब प्रसार प्रचार से होनेवाली बुराइयों को समाप्त करने हेतु बेरी क्षेत्र (कादयान खाप) के किसी ग्राम में शराब के ठेकों की नीलामी न की जावे। यदि सरकार ने पंचायत तथा आर्यसमाज को इस सर्वहितकारी तथा जनकल्याणकारी मांग की अवहेलना की तो विवश होकर शराब के ठेकों को हटवाने के लिए कड़ा विरोध तथा संघर्ष किया जावेगा और ठेकों से शराब की बिक्री नही होने दी जावेगी।

अतः आप से अनुरोध है कि कल दिनाक १२ माच को बेरी क्षेत्र (कादयान खाप) के किसी ग्राम मे ठेको को नीलामी न करवाई जावे।

निवेदक :
मन्त्री आर्यसमाज बेरी
जिला रोहतक

आर्यसमाज क्या मानता है ?

१. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, जो ईश्वर ने सृष्टि के आदि में मनुष्यों के पथ-प्रदर्शन और ज्ञानार्थ प्रदान किया। वेदों को पढने का अधिकार बिना भेदभाव के संसार-भर में सब स्त्री-पुरुषों को है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्द, न्यायकारी, अजन्मा, सर्वव्यापक, अनादि, सृष्टिकर्त्ता, कर्मफलदाता आदि गुणयुक्त तथा मनुष्यमात्र का उपास्य देव है। एकमात्र उसी की उपासना करनी चाहिए।

३. वेदों में ईश्वर का नाम ओम् (परम रक्षक), भूः (सबका प्राणाधार), भुवः (सर्व दुःखनाशक), स्वः (सर्व सुखदाता) एवं माता, पिता, बन्धु, इन्द्र आदि कई प्रकार से आया है।

(क) जड़ पदार्थों—अग्नि, सूर्य, जल, वायु, पृथ्वी आदि के गुणानुसार भी ईश्वर की सत्ता-महत्ता समझाने को वेद में ईश्वर का नाम अग्नि, सूर्य आदि आया है। इससे भ्रम पैदा होकर जड़ पदार्थों की पूजा भी कोई-कोई करने लगे। यह मान्य नहीं।

(ख) रोगों में 'ज्वर' प्रमुख है। तुलसी और पीपल को शास्त्र में ज्वर की प्रमुख औषधि माना है। परन्तु उनसे लाभ उठाना तो दूर, हम उनकी परिक्रमा करते हैं, सूत लपेटते हैं और उन्हें तुलसी भगवती तथा पीपल महादेव कहते हुए नमस्कार करते हैं। कितनी अज्ञानता आगई है।

४. ईश्वर निराकार और सर्वव्यापक है। उसकी मूर्ति नहीं हो सकती। ईश्वर के स्थान में देवी-देवताओं की कल्पित मूर्तियों की पूजा वेदानुकूल नहीं, मूर्तिपूजा में भावना की युक्ति ठीक नहीं। भावना सीधे ही सत्-चित्-आनन्द ईश्वर में होना ईश्वर-भक्त को शीघ्रातिशीघ्र सफलता प्राप्त कराता है। 'मन्दिर' वही कहलाने योग्य है, जहां नित्यप्रति ईश्वरोपासना-धर्म, धार्मिक जीवन और सुकर्म का उपदेश मिले। मन्दिर जाकर घण्टा बजा दिया, पैसा चढा दिया, चरणामृत ले लिया, इससे कुछ नहीं बनता, यदि वहां जाकर बैठे नहीं, उपदेश नहीं सुना, जीवन और कमाई में पवित्रता नहीं लाई।

५. जीव ब्रह्म से भिन्न है। अद्वैतवादियों का 'अहं ब्रह्मास्मि' (मैं ब्रह्म हूं) कहना युक्तियुक्त नहीं। यदि सभी ब्रह्म हैं, तो पूजन किसका ? प्रार्थना किसके आगे ? दुःख में आश्रय किसका ?

'जगत् मिथ्या' कहना भ्रमजनक वाक्य है। जगत् स्पष्टतः इन्द्रिय-गम्य है, सत्य है। हां, इन्द्रियों के रसों में और धनोपार्जन में सुख मानना एवं उस प्रकार के जीवन तक ही जगत् को सीमित समझना मिथ्या है। जगत् के प्रलोभनों, विषय-विकारों में फसना मिथ्याचरण है।

६. हरिद्वार आदि को सत्संग के लिए जाना तो ठीक है, परन्तु 'गंगा, यमुना आदि में स्नानमात्र, हमें पापों के फल भोगने से छुडा सकते हैं', ऐसा मानना तो विवेकी श्रीमानों के योग्य नहीं। अच्छे कर्मों से सुख और बुरे कर्मों से दुःख भोगना अवश्यम्भावी है।

तीर्थों पर जा मरने से सीधे स्वर्गलोक जा पहुंचने की भावना रखनेवाले वृद्ध स्त्री-पुरुषों की मति विकृत हो चुकने का चिह्न है। सत्संग के लिए तीर्थ भले हो आओ।

७. स्वार्थियों ने हिन्दुओं के दान की प्रथा को बिगाडकर रख दिया है।

चेले-चेली बनकर 'सम्पत्तियों के मालिक गुरुओं' को धनमाल अर्पण कर देना शास्त्र-विरुद्ध है। महाभारत का प्रमाण स्पष्ट है—'धनिने धनं मा प्रयच्छ, दरिद्रान् भर कौन्तेय", अर्थात् धनियों को धन मत दो, गरीबों, अनाथों, दुःखी दरिद्रों की पालना करो। इसी प्रकार विद्यालयों, गुरुकुलों, अस्पतालों, परोपकार की परीक्षित संस्थाओं, धनहीन सच्चे त्यागी तपस्वी धर्मप्रचारकों आदि को ही दान पुण्य है। मुफ्तखोरों का दान देने में पाप लगता है।

८. सूर्यग्रहण तथा चन्द्रग्रहण छाया मात्र हैं, यह सभी पढे-लिखे जानते हैं। उन्हें राहु-केतु से ग्रसा जाना मानना ठीक नहीं। ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र आदि तीर्थों पर जाकर स्नान करने में पुण्य मानना अन्धविश्वास है। श्रीमानों को अब अन्धपरम्परा से ऊंचा उठना योग्य है।

९. ईश्वर कभी किसी सूअर, कच्छ आदि की देह धारण करके अवतार नहीं लेता। बडे-बडे सनातनधर्मी अब पुराणों में ऐसे वर्णन को आलंकारिक मानने लगे।

१० ईश्वर कर्मों का फलदाता है, और उसके न्याय-नियम में कर्मों का फल अवश्य मिलता है। कोई ईश्वर का अवतार, 'खुदा का पैगम्बर, खुदा का बेटा' दुष्कर्म के फल-भोग से किसी को बचा नहीं सकता। ऐसा मानना कि दुष्कर्मी के पाप क्षमा हो सकते हैं, पाप को बढावा देता है।

११. स्वर्ग-नरक का विशेष स्थान नहीं है। सुख का नाम स्वर्ग और दुःख का नाम नरक है, और वे भी इसी संसार में तथा इसी शरीर में भोगे जाते हैं। दरिद्रता, ऋण, रोग, क्रोध, विषय-विलासिता, परिवार आदि में कलह, मुकद्दमा, बेरोजगारी, सन्तान आदि की मृत्यु अथवा विमुखता ये नरक हैं। धर्मपरायणता, सुख, स्वास्थ्य, सम्मान, ऐश्वर्य, अच्छे पति-पत्नी, माता-पिता, सन्तान आदि सम्बन्धियों का होना तथा शुभ कर्म में रुचि होना आदि, यह स्वर्ग है।

१२. पुण्य दान, ईश्वरोपासना, स्वाध्याय, सत्संग, सदाचार, माता-पिता, गुरुजनों तथा दीन-दुःखी की सेवा, मांस-मदिरा और विषय-विलासिता का त्याग देवकर्म है।

१३. माता-पिता और आचार्य तीन गुरु होते हैं। जीवित माता, पिता और गुरुजनों की श्रद्धापूर्वक सेवा करना ही श्राद्ध है। मृत पितरों के नाम पर श्राद्ध करना वेद-विरुद्ध और निष्फल है। 'सुमति और सत्संग' का लाभ प्रदान करनेवाले सदाचारी निःस्वार्थ विद्वान् ब्राह्मणों की सेवा करना आर्यसमाज पुण्य मानता है। श्राद्ध के 'विशेष दिन' ब्राह्मण को खिलाया हुआ पदार्थ मृत माता-पिता आदि को जा पहुंचेगा, ऐसा मानना अज्ञानता और अन्धविश्वास मात्र है—इस कटु सत्य के लिए क्षमा करना। वेद में 'श्राद्ध' का प्रतिपादन कोई नहीं दिखा सका, वेद में 'श्राद्ध' शब्द ही नहीं।

१४. वर्ण-व्यवस्था 'गुण, कर्म, स्वभाव' से। ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य यदि आचार और विद्या से विहीन हो, तो उसका शूद्र वर्ण हो जाता है। जन्म से न कोई शूद्र है न ब्राह्मण। कर्म से ही वर्ण-व्यवस्था मानने योग्य है।

१५ ईसाइयों-मुसलमानों के धर्म में इस प्रश्न का कोई युक्तियुक्त उत्तर नहीं क्यों कोई अंगहीन, अस्वस्थ या दरिद्री के घर पैदा होता है, कोई सुन्दर, स्वस्थ धनी घराने में। केवल वैदिक (हिन्दू आर्य) धर्म में इसका उत्तर मिलता है कि पूर्व जन्म के पुण्य पाप के आधार पर यह भेद निर्भर है। ईसाई, मुसलमान 'खुदा की मर्जी' कहकर अपने खुदा को ही अन्यायी और निष्ठुर सिद्ध कर देते हैं।

१६. पशुओं के बलिदान से ईश्वर प्रसन्न नहीं होता, धर्म या यज्ञ के नाम पर मन्दिर आदि में पशु-हिंसा करना घोर पाप है। अपने बच्चों की कामना के लिए दूसरों (गूंगे पशुओं) के गले काटना, अपनी देवी-देवताओं की बुद्धि का अपमान करना है। इन्द्रियों का दमन, परोपकार, अग्निहोत्रादि अनुष्ठान, भले कार्यों में दान, विद्वानों का सत्संग, स्वाध्याय आदि 'यज्ञ' कहलाते हैं। अश्वमेध में घोड़ों की आहुति नहीं, अलंकार से अश्व (इन्द्रियों) के विषयविकारों की आहुति देना ही अभिप्रेत है।

१७ भूत, प्रेत, जादू, टोना, धागा, ताबीज, यन्त्र-तन्त्र, झाड़फूक सब मूर्खों को बहलाने, ठगने का है। ज्योतिषियों के परामर्श से रुपये देकर, कष्ट-निवारण के लिए किसी कमरे में जाप करना अपने-आपको धोखा देना है। स्वयं ही अर्थ विचारकर महामृत्युंजय, गायत्री मन्त्र का जाप करें और प्रभु की कृपा का साक्षात् प्रादुर्भाव देखें।

१८. बिना किसी स्वार्थ के संसार का उपकार करना, अज्ञान, नास्तिकता और कुप्रथाओं का नाश करना, पास डालने वाले रीति-रिवाज की फिजूलखर्चियों से गरीबों को बचाना, सदाचरण और प्रभुभक्ति करना-कराना आर्यसमाज के मूल मन्त्र हैं।

१९. आप्त धर्म के रूप में युवा विधवाओं का पुनर्विवाह होना चाहिए। कुकर्म, अधम अपवाद, अपयश, पश्चात्ताप से बचना चाहें तो 'युवा विधवा' का पुनर्विवाह कर दें। (शेष पृष्ठ ५ पर)

निर्माता आर्यसमाज के

(ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती)

आभारी हम सदा रहेंगे दयानन्द ऋषिराज के।
वेदों के व्याख्याता और निर्माता आर्यसमाज के॥
रास्ता नहीं दिखाई दे जग बीहड़ वन में भटक रहा।
पानी तक नहीं पहुंचा अधवर डोल कुए में लटक रहा।
सटक रहा जो माल मुफ्त का मजे थे धोखेबाज के।
वेदों के व्याख्याता और निर्माता आर्यसमाज के।१।
सूरज बनकर उदय हुआ था दूर अंधेरा भगा दिया।
प्यासों की प्यास बुझाकर बन्दा सत्य मार्ग पर लगा दिया॥
जगा दिया जग फन्दे काटे थोथे रीति रिवाज के।
वेदों के व्याख्याता और निर्माता आर्यसमाज के।२।
ईश्वर का अवतार बताकर जड़ पूजा करवाते थे।
रूढ़िवाद अविद्या का सब साज तराने गाते थे॥
बहकाते थे ध्याते चक्कर लगा रहे गिर्राज के।
वेदों के व्याख्याता और निर्माता आर्यसमाज के।३।
रच सत्यार्थप्रकाश देश के नई रोशनी दिखा दई।
जड़ पूजा छुड़वाई सबको ईश्वर भगती सिखा दई॥
नव सवत्सर चैत्रवदी प्रतिपदा तिथि सरताज के।
वेदों के व्याख्याता और निर्माता आर्यसमाज के। ४।

छोरा हरयाणे का

पहलवानां के अखाड़े बी दारु के अड्डे बनगे

दो-एक दिन पहल्यां सांझ के टैम मैं पहलवानां के एक अखाड़े में चला गया था। कई बै सुनी थी के पहलवान क्यूं वरजिस करैं, अरक्यू वरजिस करे सै क्यू करके इनकी मेहत शरीर ठीक रहवै सै, अर इनकी खुराक भी आच्छी होवै सै, लोग मतलब पहलवानां के बारे मैं बेरा ना के के कहा करते। पर मैं जब अखाड़े मैं गया तो मनै एकदम उल्टा हिसाब दिख्या। अर देख कै बहोत जो दुःख पाया के पहलवानां की ईब या हालात होरी सै। जिस हिसाब तै उस अखाड़े मैं रग ढग देख्या उस तै तो आम आदमी बी अन्दाजा लगा ले के ये असली पहलवान नही नकली सैं मतलब कागजी पहलवान सैं।

सांझ के टैम मैं जब उस अखाड़े मैं पहौचया तो पांच सात पहलवान त्यार होरे थे वरजिस कर खातर खैर शरु कर दी उननै वरजिस। अर मेरे ख्याल मैं एक डेढ घंटे ताही वे वरजिस करते रहे। इतनी देर ताही उननै अपनी देई तोड़न मैं कसर नही छोड़ी। खैर बहोत बढ़िया लाग्या पहलवानां का यो काम। अर फेर पहलवानां का काम बी वरजिस करना। अर आच्छी खुराक लेवणा हो सै, अर फेर कोए घणा बोलै तो उसतै समारन का काम बी इन पहलवाना का होवै सै।

वरजिस करन ताही तो मनै इन पहलवानां का काम ठीक लाग्या, पर जब ये वरजिस करके हाटे तो मैं देखता रहया के ईब ये खुराका के लेवेंगे। थोड़ी सी वार तो उननै आराम सा करया अर जिसनै बीडी सिगरट पीवणी थी, उसने बीडी सिगरट पीयी। थोडी सी वार पाछै कै होया बोतल खुल्लगी अंग्रेजी दारू की अर लागगे चाल चाल के पीवण एक परात सी मैं टमाटर, मूली, गाजर, प्याज काट राखे थे अर एक पतीले मैं बेराना के था कोए उसने चीकन बतावै था अर कोए किमा। ईब तमे देखल्यो वरजिस करके इसी खुराक जो लेता होगा वो किसा पहलवान होगा। अरे भाई दारु दण्पै पै बी तमनै पाच चार सौ रपईये खर्चे होगे। इसका घी लावणा चहिये था, दूध पीवणा चहिए था और बहोत से मेवे सैं खावण के। पहलवानां का अर दारु का मतलब के ?

असल मैं तो बात या सै ईब पहलवानां के अखाड़े नही बलके झगड़े के अखाड़े रहगे। सारे अखाड़े इसे नहीं सै पर बहोत से इसे सै। अर फेर सरकार ने माड़ा मोट्टा ध्यान इन पहलवाना कानी देवणा चाहिए। पर सरकार धोरै इतना टैम नही। लीडर लोग माड़ा मोट्टा ध्यान देवें सैं इन पहलवानां कान्ही पर कद, जब इलेक्शन हो जब। खैर और तो किसे के बसकी नहीं इन पहलवानां कान्ही ध्यान देवणा, पर उपप्रधानमन्त्री चौ० देवीलाल और चौटाला साब इन कान्ही जरूर ध्यान दे सकै सै। क्यू इननै बेरा सै पहलवानां की कीमत के होवै सै। तो चौ० साब की आज के दिन चुरगदे नै सरकार सै, यो चाहवै तो इन पहलवाना का भला कर सकै सै ना तो ये क्यूए वरजिस करगे अर दारु पीवेंगे। (दनिक जनसत्ता)

उठो आर्यवीर देश को कौन बचायेगा

भ्रष्टाचार को मिटाना, दीन-हीन को उठाना।
इतिहास को बताना, नही मानव रहे॥
अण्डे मास का ही खाना, रक्त जीव का बहाना।
निर्बलों को सताना, अत्याचार कर रहे॥
पुण्य धरा पर कौन धर्म का, युद्ध मचायेगा।
तुम उठो आर्यवीर देश को, कौन बचायेगा ॥१॥

शिक्षा है प्रतिकूल, नही वेद अनुकूल।
सहशिक्षा है स्कूल, व्यभिचार ही बढे॥
ब्रह्मचर्य है मूल, शिक्षक गये भूल।
देश मिल गया धूल, कैसे आगे बढ़े॥
वैदिक शिक्षा आज देश में, कौन चलायेगा।
तुम उठो आर्यवीर देश को, कौन बचायेगा॥

अन्धविश्वास लाना, पाखण्ड को बढ़ाना।
जीवन विषयों में लगाना, मनमानी कर रहे॥
मुश्किल आज भाई, भाई-भाई की लड़ाई।
मर्यादा मिटाई, सब भूल ही रहे॥
दयानन्द सन्देश यहां पर, कौन सुनायेगा।
तुम उठो आर्यवीर देश को कौन बचायेगा ॥३॥

राम कृष्ण के लाल, अब उठो गोपाल।
हुआ हाल बेहाल, वीर बलधारी॥
चाहे गर्दन कटाओ, पर शीश न झुकाओ।
ध्यान ईश में लगाओ, जो न्यायकारी॥
महेश आर्यवीर दलों को, कौन बनायेगा।
तुम उठो आर्यवीर देश को, कौन बचायेगा ॥४॥

—महेश आर्य ग्रा० पो० पन्हैडा खुर्द, तह० बल्लभगढ
जिला फरीदाबाद (हरयाणा)

(पृष्ठ ४ का शेष)

२०. शूद्रों या अपने से भिन्न जाति के साफ-सुथरे स्त्री-पुरुष द्वारा पकाये हुए भोजन से धर्म भ्रष्ट नहीं होता। परन्तु अधर्म, अन्याय, घूस, ब्लैक मार्किट, मिलावट आदि पाप-कर्मों से प्राप्त होनेवाले धन से खरीदे हुए अन्न के खाने से अवश्य धर्म भ्रष्ट होता है। (जात्यभिमानी जन हृदय पर हाथ धरकर अपनी-अपनी कमाई जीवनी को इस कसौटी पर परखें।)

२१ आर्यसमाज कोई अलग सम्प्रदाय नही। आर्य का मतलब श्रेष्ठ है, आर्यसमाज श्रेष्ठ, सदाचारी, आस्तिक, ईश्वर-विश्वासी और वैदिक धर्मी जनों का सगठन है। ऊपरलिखित गुण धारण करनेवाले सभी व्यक्ति श्रेष्ठ हैं और आर्य हैं, चाहे वे किसी सम्प्रदाय के हों। आर्यसमाज सम्प्रदायवाद को स्वीकार नही करता।

२२. 'विद्या धर्मेण शोभते।' अधर्मी, कर्त्तव्यहीन, चरित्रहीन, स्वार्थरत तथा 'खाने-पीने और मन को मौज' (Eat Drink and be Merry) तक जिसका जीवन सीमित हो, ऐसे किसी दुर्गुणयुक्त ग्रेजुएट एवं डबल ग्रेजुएट को विद्वान् कहना अशोभनीय है। विद्या की शोभा पवित्र जीवन से ही है।

२३. आर्यसमाज ऐसा मानता है कि सन्ध्या, प्रार्थना, अग्निहोत्र, यज्ञ, स्वाध्याय, पूजापाठ, नित्य कर्म' करते हुए यदि किसी व्यक्ति मे 'सदाचार, दान, पुण्य, पवित्र कमाई, शुद्ध आहार, सत्य व्यवहार नहीं', तो वे नित्यकर्म सभी निरर्थक हैं। इसलिए सभी लोग आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनें। यही आर्यसमाज की मान्यता है, यही आर्यसमाज का सदेश है।

आर्यजन आर्यसमाज स्थापना दिवस उत्साहपूर्वक मनावें

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आगामी चैत्र शुक्ला प्रतिपदा (१७ मार्च १९९१) को आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह उत्साहपूर्वक आयोजित करने के लिए आर्यसमाजों और आर्यजनता तथा वैदिक धर्मियों से अपील की है कि इस दिन आर्यसमाज मन्दिरों में बृहद् यज्ञ करके ओ३म् ध्वज फहराये और सार्वजनिक सभा का आयोजन करके आर्यसमाज की स्थापना का महत्त्व महर्षि दयानन्द के जीवन—वेद और वैदिकधर्म की महत्ता पर विद्वानों के प्रवचन करावें और समाज मन्दिरों को दीपमाला से सुशोभित करें।

स्वामी जी ने इस दिन प्रत्येक आर्य सभासद् एवं आर्यजन आत्म-निरीक्षण करे और देखे कि उनके वैयक्तिक एवं सामाजिक आचरण से आर्यसमाज का कितना गौरव बढ़ा है अथवा उसके कार्य विस्तार में उनका कितना योगदान रहा है? यदि स्वयं में कोई कमी अनुभव करे तो भविष्य के लिए उसमें सुधार करके अपने को आर्यसमाज, देश, धर्म और जाति की रक्षा के लिए अधिकाधिक उपयोगी बनाने का व्रत ले।

स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों तथा वेद प्रतिपादित-सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार के लिए सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा में स्थापित 'वेदप्रचार' निधि के लिए सभी आर्यसमाजों से अपील की है कि वेदप्रचार के लिए अधिक से अधिक राशि संग्रह करके सार्वदेशिक सभा में भेजकर धर्मप्रचार के पुनीत कार्य में यश के भागी बनें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभामन्त्री

वैदिक आदर्शों की ओर बढ़ता गांव कुंगड़

आर्यसमाज की स्थापना—सैकड़ों युवक आर्यसमाज में दीक्षित

दिनांक २२, २३, २४, फरवरी को ग्राम कुंगड़ के चबूतरे पर लगा आर्यसमाज का पाण्डाल गांव के प्रत्येक बच्चे, युवक व वृद्ध के लिए आकर्षण का केन्द्र बना रहा। प्रातःकाल ८ बजे से लेकर रात्रि ११ बजे तक आर्यसमाज के पाण्डाल में मेला सा बना रहता था। प्रतिदिन प्रातःकाल ८ से ११ बजे तक यज्ञ भजन उपदेश तथा १ से ५ बजे तक भजन उपदेश तथा रात्रि ८ से ११ बजे तक फिर भजन उपदेश कार्यक्रम नियमित चलता रहा। प्रातःकाल ज्यों ही मैं गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों के साथ मिलकर यज्ञ प्रारम्भ करता, स्त्री-पुरुष अपने घरों से पात्रों में घृत लेकर आने प्रारम्भ हो जाते। देखते ही देखते सैंकड़ों की उपस्थिति हो जाती। तीन दिन में गांव के ४६ व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत धारण किए। अनेकों ने दुर्व्यसनों से बचने की प्रतिज्ञा की। २३ फरवरी को श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज भी पधारे तथा दोपहर की सभा में आपका प्रभावशाली उपदेश हुआ। इस तीन दिवसीय उत्सव में श्री स्वामी रुद्रवेश जी के क्रांतिकारी भजनों एवं उपदेशों का विशेष प्रभाव रहा। श्री पं० चिरंजीवलाल जी ने भी अपनी विद्वत्ता-पूर्णशैली से श्रोताओं को काफी प्रेरित किया। गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारी योगेश, ब्र० नन्दकिशोर तथा ब्र० सोमदेव के मधुर भजनों को सुनने के लिए ग्रामवासी हमेशा लालायित रहते थे। अन्तिम दिन श्री हरध्यानसिंह जी भजनोपदेशक भी इस वैदिक कुम्भ में आकर सम्मिलित होगए। आपका कार्यक्रम भी प्रभावशाली रहा। दोपहर तथा रात्रि की सभाओं में श्रोताओं की संख्या हजारों में होती रही।

आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन :—

२४ फरवरी को दोपहर गुरुकुल झज्जर से श्री आचार्य विजयपाल जी अपने ब्रह्मचारियों के साथ ग्राम कुंगड में पधारे। ४ बजे तक वेदप्रचार का कार्यक्रम चलता रहा। ठीक ४ बजे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का व्यायाम प्रदर्शन प्रारम्भ हुआ। हजारों की संख्या में स्त्री-पुरुष उपस्थित थे। समीप के घरों की छतों पर भी भारी संख्या में स्त्री-पुरुष खड़े दिखाई दे रहे थे। यहां पर ब्रह्मचारियों ने योगासन, दण्ड-बैठक, लाठी, भाला, तलवार, मलखम्भ तथा रस्से के व्यायाम का प्रदर्शन किया।

मलखम्भ तथा रस्सा मलखम्भ के व्यायाम ने विशेष रूप से प्रभावित किया। ब्रह्मचारियों के व्यायाम के उपरान्त श्री आचार्य विजयपाल जी ने कण्ठ से लोहे के मोटे-मोटे सरिए मोड़कर दिखाए और छाती पर भारी पत्थर तुड़वाकर तो दर्शकों को स्तब्ध ही कर दिया। श्री आचार्य जी ने हाथों से कांच पीसकर भी दिखाया। श्री आचार्य जी तथा ब्रह्मचारियों के व्यायाम ने युवकों को अत्यधिक प्रेरित किया। इस व्यायाम को देखकर अनेक युवकों ने प्रतिदिन व्यायाम करने का संकल्प किया। स्त्री-पुरुषों ने ब्रह्मचारियों को श्रद्धापूर्वक पारितोषिक भी दिया। जयघोषों के मध्य ६ बजे व्यायाम प्रदर्शन सम्पन्न हुआ।

—लेखक स्वामी सुमेधानन्द

हरयाणा में आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

आर्यसमाज मुआना जि० जीन्द	१५ से १७ मार्च
" पायल जि० हिसार	१५ से १७ "
" गुरुकुल भैंसवाल जि० रोहतक	१५ से १७ "
" चौहान फैक्ट्री पानीपत	२० से २३ "
" गोहाना मण्डी जि० रोहतक	२२ से २४ "
" ठोल जि० कुरुक्षेत्र	२२ से ३४ "
" कन्या गुरुकुल नरेला	२३, २४ "
" उकलाना मण्डी जि० हिसार	२२ से २४ "
" सालवन जि० पानीपत	२४ से २६ "
" गुरुकुल डिकाडला जि० पानीपत	२९ से ३१ "
" घरोण्डा जिला करनाल	२६ से ३१ "
" वैदिक आश्रम भादस जि० गुडगांव	३०, ३१ "
" आहूलाना जिला रोहतक	२८ से ३१ "
" माडल टाउन सोनीपत	१ से ७ अप्रैल
" गुरुकुल कुरुक्षेत्र	५ से ७ "
" श्रद्धानन्द नगर पलवल जि० फरीदाबाद	५ से ७ "
" नारग जि० सिरमौर (हि० प्र०)	२६ से २८ "
" लोहारू जि० भिवानी	११, १२ मई
" रादौर जि० यमुनानगर	१, २ जून

—सुदर्शनदेव आचार्य
सभावेदप्रचाराधिष्ठाता

छोटूराम आर्य कालेज को प्रथम पुरस्कार

सोनीपत : स्थानीय छोटूराम आर्य कालेज को प्रथम पुरस्कार राष्ट्रीय-सेवा-योजना के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्य के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। साथ ही कालेज के कार्यक्रम अधिकारी सन्तराम देशवाल को सर्वोत्तम कार्यक्रम अधिकारी का खिताब दिया है।

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के प्रांगण में आयोजित एक समारोह में विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डाक्टर के. एस. सांगवान ने राष्ट्रीय सेवा योजना में प्रथम व द्वितीय स्थान पाने वाले कालेजों को ट्राफी प्रदान की। (दैनिक जनसन्देश से साभार)

बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

१- दी वेदाज (अंग्रेजी भाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२- दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज—पं० चमूपति एम०ए०	१-५०
३- जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)— ,,	३-००
४- निहारिकावाद और उपनिषद् ,,	०-५०
५- आयसमाज की विचारधारा—प० क्षितीशकुमार वेदालंकार	१-००
६- निजाम की जेल में ,,	२०-००
७- स्मारिका(हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१०-००
८- आय प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह स्मारिका	२०-००
९- आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण—प० ओम्प्रकाश त्यागी	०-५०
१०- बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य शहीदों का परिचय)	४-५०
११- ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
१२- हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१३- धर्म-प्रवेशिका—डा० रणजीतसिंह	३-००
१- धर्म-भूषण ,,	५-००
१५- पंजाब का आर्यसमाज—प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१६- आदर्श धातु रूपावली—महावीर आजाद शास्त्री	२-००
१७- वैदिक उपासना पद्धति— डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३-००
१८- मूर्तिपूजा—सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धाती	००-५०
१९- वेदस्वरूप निर्णय ,,	००-७५
२०- वेदाविर्भाव ,,	१-००
२१- वेदभाष्य पद्धति ,,	१-००
२२- वैदिक विवाह पद्धति ,,	६-००
२३- गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४- सत्यार्थप्रकाश ,,	१०-००
२५- महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,,	०-५०
२६- हमारा फाजिल्का—योगेन्द्रपाल	१-००
२७- बड स्वामी ओमानन्द सरस्वती	१-५०
२८- वीर हेमू ,,	०-७५
२९- पीपल ,,	१-५०
३०- मिर्च स्वामी ओमानन्द सरस्वती	१-५०
३१- श्लीपद वा हाथीपाव की चिकित्सा ,,	०-२०
३२- बिच्छू विष चिकित्सा ,,	०-५०
३३- लवण ,,	१-२५
३४- विदेशों में मैंने क्या देखा ,,	२-५०
३५- नैरोबी यात्रा ,,	१-५०
३६- ब्रह्मचर्य साधन ६-११ ,,	१०-००
३७- ,, १-२ ,,	१-००
३८- ,, ३ ,,	१-००
३९- ,, ४ ,,	२-५०
४०- ,, ५ ,,	२-००
४१- ,, ६ ,,	३-००
४२- ,, ७-८ ,,	२-००
४३ ,, ९ ,,	०-३०
४४- ,, १० ,,	१-५०
४५- ,, ११ ,,	२-००
४६- हल्दी ,,	१-५०
४७- नीम ,,	१-२५
४८- कर्त्तव्य दर्पण—म० नारायण स्वामी	४-००
४९- विद्यार्थी जीवन रहस्य ,,	२-५०
५०- योग रहस्य ,,	४-००
५१- आर्यसमाज क्या है ? ,,	२-००
५२- कथा माला ,,	१-२०
५३- संस्कारविधि	८-००
५४- वैदिकधर्म परिचय—पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	३-५०
५५- वैदिक यज्ञ पद्धति—सार्वदेशिक सभा प्रकाशन	००-६०
५६- मृत्यु के पश्चात् जीव की गति—श्री जगदेवसिंह सिद्धांती	१-५०
५७- नैतिक शिक्षा दसवां भाग—सत्यभूषण वेदालंकार एम.ए.	५-००
५८- पं० जगदेवसिंह सिद्धांती जीवन चरित—डा. सुदर्शनदेव	१०-००
५९-हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान-डा.रणजीतसिंह	३०-००

प्राप्ति-स्थान : आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, सिद्धान्ती भवन, रोहतक

आर्यसमाज स्थापना दिवस और हमारा कर्त्तव्य

आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार १७ मार्च को सारे विश्व में आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया जा रहा है। आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के आर्यसमाज के छठे नियम के अनुसार संसार का उपकार करना इसका मुख्य उद्देश्य बताते हुए हमें शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करने का आदेश दिया है। अत: आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाते समय इस महान् कार्यक्रम को पूरा करने के लिए आवश्यक पग उठाना चाहिए। आज सारा संसार आर्यसमाज की ओर निहार रहा है क्योंकि आर्यसमाज कोई सम्प्रदाय नहीं है अपितु एक आंदोलन है और इसके सिद्धान्त विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरते हैं। आज तक कोई भी विद्वान् इसके नियमों तथा सिद्धांतों को असत्य सिद्ध नहीं कर सका है। आर्यसमाज किसी एक राष्ट्र के लिए नहीं बनाया गया अपितु संसार का उपकार करने के लिये बनाया गया है। वेद इसका आधार है जोकि संसार के पुस्तकालय में सबसे पुराना तथा वैज्ञानिक है।

आज संसार के सामने अनेक समस्याएं मुंह बाये खड़ी हैं। इनका समाधान आर्यसमाज के नियमों के पालन करने से ही सम्भव है। अत आर्यसमाज के प्रत्येक कार्यकर्त्ता को आर्यसमाज के नियमों तथा ऋषि दयानन्द के अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश को अधिक से अधिक नर-नारियों तक पहुंचाने के लिए भरसक प्रयत्न करना होगा। आज मांस, गोहत्या का प्रसार हो रहा है जिससे वैदिक संस्कृति के लोप होने का खतरा है। भारत वर्ष ऋषि मुनियों की तपोभूमि रही है यहां से वैदिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए विदेशों से छात्र आते थे, परन्तु आज हम पढ़ने के लिये पश्चिम के देशों में जाकर अवैदिक शिक्षा ग्रहण करने के लिए भाग रहे हैं। अत: राष्ट्र के नेताओं को अपनी प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति तथा वैदिक संस्कृति को प्रोत्साहन देना चाहिए।

केदारसिंह आर्य

आर्यसमाज स्थापना दिवस

(ले० प० गंगाप्रसाद विद्यार्थी एम. ए, एम.फिल. जबलपुर सिटी)

स्थापना दिवस मनाए हम,
जग मे कुछ कर जाएं हम।
निज को आर्य बनाय हम,
फिर सब जग आर्य बनाए हम ।१।
ऋषि की जय बोलने से क्या,
सचमुच ऋषि बन जाये हम।
समाज की जय बोलने से क्या,
समाज को ऊंचा उठायें हम ।२।
ओ३म् का झण्डा ऊंचा उठेगा,
यदि ओ३म्मय बन जायें हम।
वेदों की जय ही न बोलते रहें,
वेद पढ़ें गुने व जानें हम ।३।
हम वेद पढ़े वेदांग पढ़ें,
व्याकरण निरुक्त व निघंटु पढ़ें।
छह दर्शन और उपनिषद पढे,
सत्यार्थप्रकाश व भूमिका पढ़ें ।४।
संस्कारविधि पढ जाये हम,
गार्हस्थ प्रेम उपजावे हम,
मत जीवन व्यर्थ गंवाये हम,
ना अन्त समय पछताये हम ।५।
बोधोत्सव मनाया तुमने,
क्या सही बोध पाया तुमने।
स्वाहाकार किया तुमने,
क्या जीवन यज्ञमय किया तुमने ।६।
कोई साथी नहीं मिलता,
तो प्रभु को साथी बनाओ तुम।
जैसा बोलो वैसा ही बनो,
केवल नारे नहीं लगाओ तुम ।७।
ऋषि ग्रंथों का सत्संग करो,
तो सत्य को जान जाओ तुम।
सत्य की परीक्षा करते रहो,
अरु सत्य ही को अपनाओ तुम ।८।

लाढौत में नए गुरुकुल की स्थापना

जिला रोहतक के प्रसिद्ध ग्राम लाढौत में ब्र० हरिदत्त जी उपाध्याय के प्रयत्नों से दिनांक ३ मार्च १९९१ रविवार को नए गुरुकुल की स्थापना की गई। इस उपलक्ष्य में प्रातः यज्ञ किया गया। सभा के भजनोपदेशक प० खेमसिंह आर्य, स्वामी जगतमुनि, श्री जगवीरसिंह आर्य, म० भावेराम आर्य तथा श्री मनफूलसिंह आर्य ने ऋषि दयानन्द तथा गुरुकुल की महिमा पर मधुर गीत गाये। श्री सत्यवीरसिंह एडवोकेट, श्री सुखदेव शास्त्री, श्री वेदव्रत शास्त्री पूर्व मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री सत्यव्रत शास्त्री, डॉ० राजकुमार आचार्य, श्री भगवानसिंह मन्त्री भापडौदा, स्वामी सत्यानन्द जी, प० रामचन्द्र आर्य भालौट आदि वक्ताओं ने जि० रोहतक में नए गुरुकुल की स्थापना करने के लिए ब्र० हरिदत्त जी के योगदान की सराहना की। स्मरण रहे श्री ब्र० हरिदत्त जी ने अपनी ३ एकड़ उपजाऊ भूमि, उनके परिवार ने एक लाख रु० देकर एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस कार्य में मा० बलजीतसिंह बहादुरगढ़ ने एक लाख रुपए, सेठ हरमोहन ने ५० हजार रु०, चौ० हरकिशनसिंह कटवाडा निवासी ने ५१ हजार रु० दान देकर गुरुकुल शिक्षा पद्धति के प्रति सच्ची श्रद्धा प्रकट की है। उत्सव पर पधारे हुए अनेक आर्यकर्त्ताओं ने भी उदारता पूर्व दान देकर योगदान दिया।

गुरुकुल की आधारशिला गुरुकुल कालवा के सचालक तथा विख्यात गुरुकुल शिक्षा शास्त्री आचार्य बलदेव जी ने रखी और गुरुकुलों की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही राष्ट्र रक्षा तथा संसार का कल्याण हो सकता है। ऋषि दयानन्द के आदर्शों पर चलकर ही हम वैदिक संस्कृति को जीवित रख सकते हैं। जहां-जहां गुरुकुल तथा गुरुकुलों के स्नातक हैं, वहां आर्यसमाज का प्रचार हो रहा है और परोपकार के कार्य हो रहे हैं। आज आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता शराबबन्दी तथा गोरक्षा के लिए प्रयत्नशील हैं।

दयानन्द क्या था

बताएं तुम्हें हम, दयानन्द क्या था।
ऋषि था फरिश्ता, था या देवता था॥
थे विद्या से भरपूर उसके खजानें।
शहन्शाह था गो बजाहिर गदा था॥
रहा उम्रभर शेवये, हकपरस्ती।
वतन का था शैदा, धर्म पर फिदा था॥
था मसरूरी मसरूर पी जाते बहदत।
खुदा का था वो और उसका खुदा था॥
अन्धेरे में जो ठोकरे खा रहे थे।
वह उन गुमरहों के लिए रहनुमा था॥
जिसे हमने गलती से समझा था दुश्मन।
वही किश्तिये कौम का ना खुदा था॥

—०—

'प्रकर'—वैशाख'२०४८

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न० २३२०/७३ रजि न० P/RTK-४१ मुद्रितसबन् १,९६, ०८ ५२ ०९०

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक १७ २१ मार्च, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

आर्यो सावधान !

श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक,
अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)

२० फरवरी को मेरठ नगर में पत्रकारों से वार्तालाप करते हुए विश्व हिन्दू परिषद् के महामन्त्री श्री अशोक सिंघल ने कहा कि "अगर कोई यह कहे कि—कुरान, बाइबिल और दयानन्द की पुस्तक के आधार पर सरकार चलाओ तो अब यह नही हो सकता।" उन्होंने महर्षि दयानन्द की पुस्तक को कुरान और बाइबिल के समकक्ष क्यों रखा ? क्या वह महर्षि की पुस्तक को भी—जिसकी ओर उनका इंगित है, निश्चय ही वह सत्यार्थप्रकाश है—कुरान और बाइबिल की भांति विदेशी धार्मिक सम्प्रदाय की पुस्तक मानते हैं ? इसका स्पष्ट ही यह उत्तर है कि वह ऐसा न तो स्वीकार कर सकते हैं और न कह सकते हैं परन्तु फिर भी उन्होंने ऐसी बात कही तो उसका भी कारण है। इस विषय में बहुत कम लोग जाते हैं। हां, इससे उन आर्य-बन्धुओं की आंखें खुल जानी चाहियें जो विश्व हिन्दू परिषद् का अन्ध-समर्थन करते हैं।

वास्तविकता यह है रा० स्व० से० संघ का ही एक मोर्चा विश्व हिन्दू परिषद् है और रा० स्व० से० संघ के लोग आर्यसमाज के प्रबल विरोधी हैं। इसका मुख्य कारण तो यह है कि इनकी सम्पूर्ण विचार-धारा का मूलाधार "हिन्दू" शब्द है। आर्यसमाज की अवस्थिति और आर्यसमाज के द्वारा "आर्य" शब्द तथा आर्यत्व के प्रचार-प्रसार से इनकी आधारशिला ही उखड़ती है। इसका कारण यह है कि आर्य और आर्यत्व का आधार ठोस है, क्योंकि यह वेद पर आधारित है और हिन्दू का आधार वेद शास्त्राधारित नही है। आर्य जाति के आदिकाल से मिलने वाली ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी आर्य, आर्यत्व और आर्यावर्त पर आधारित है, जबकि हिन्दू और हिन्दुत्व का कोई शास्त्रीय आधार नहीं है अपितु यह शब्द भारतीय आर्य जाति की पतनावस्था और लगभग एक सहस्र वर्ष की पराधीनता के परिचायक हैं परन्तु संघी मनोवृत्ति को यही अधिक प्रिय है। यह लोग तो इस देश का नाम भी भारत नहीं अपितु हिन्दुस्तान ही पसन्द करते हैं। इस प्रकार राष्ट्रीय स्वाधीनता की बात भी पराधीनता के आवरण में परिवेष्टित करके ही प्रस्तुत करते हैं।

विचारणीय प्रश्न यह है कि यह पराधीनता की मनोवृत्ति बनाये रखकर स्वाधीनता को कितने समय सुरक्षित रखा जा सकना सम्भव है ? हिन्दू शब्द का तो अर्थ ही गुलाम, काला, काफिर आदि है, जबकि आर्य का अर्थ श्रेष्ठ, सज्जन, सदाचारी, ईश्वरपुत्र आदि है। हिन्दुस्तान का अर्थ बनता है गुलाम, चोर, काफिर आदि का निवास स्थान तथा हिन्दुत्व का अर्थ बनता है इसी प्रकार के लोगों की विचारधारा। दूसरी ओर आर्यावर्त का अर्थ होता है श्रेष्ठ, सज्जन, सदाचारी लोगों का केन्द्र स्थान और आवास स्थल तथा इसी प्रकार आर्यत्व का अर्थ हुआ श्रेष्ठता, सदाचारपूर्ण आचार-विचार, परन्तु संघी बन्धु इसे स्वीकार करने को कदापि तैयार नहीं।

इनका इस उच्चतापूर्ण आचार-विचार वाली विचारधारा को स्वीकार न कर पतनावस्था, पराधीनता की विचारधारा को अंगीकार कर उसी का पिष्टपेषण करते रहने का कारण है पतनोन्मुख आर्य जाति को उसके वास्तविक तथा गौरवपूर्ण अरबों वर्षों के इतिहास, उसकी उच्च तथा पवित्र वैदिक संस्कृति से दूर रखकर उन्हीं अन्धविश्वासों में फसाये रखना, जिनके कारण यह वैदिक ऋषि-मुनियों की सन्तति और राम कृष्ण की प्रिय जाति सहस्रों वर्षों से पतनोन्मुख होती हुई एक सहस्र वर्ष पूर्व पराधीनता के पाश में आबद्ध हो गई थी। यह लोग समझते हैं कि इसी प्रकार अन्धविश्वास में फसी रहकर जाति हमारी राज्य लिप्सा की पूर्ति का साधन बनी रह सकती है और इसकी गाढ़े खून-पसीने की कमाई पर हम धार्मिक, राजनीतिक तथा शासकीय रूप से गुलछर्रे उड़ाते रह सकते हैं।

महर्षि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश को एक बार भी ध्यानपूर्वक पढ़ लेनेवाला व्यक्ति अन्धविश्वासों में फंसा नहीं रह सकता। यह वह ग्रन्थ है जिसकी देश-विदेश के उच्चकोटि के विद्वान् विचारकों नें मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है और भारतीय स्वाधीनता संग्राम के बड़े-बड़े सेनानी इसी अमरग्रंथ को पढकर स्वतन्त्रता संग्राम में कूदे तथा उनमें से अनेक नें फांसी के फंदे को प्रसन्नतापूर्वक चूमकर मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए जीवन होम दिया तथा ब्रिटिश सरकार की जेलों में उन दिनों अस्सी और पिचासी प्रतिशत तक आर्यसमाजी ही हुआ करते थे। सत्यार्थप्रकाश को एक बार ही पढ़ लेने पर हृदय में स्वाधीनता की ज्वाला धधक उठती है किन्तु सिंहल जी और उनके समर्थक हैं अन्धविश्वासों में लिप्त और यह लोग समझते हैं कि महर्षि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश के रहते इनके नए मठ स्थापित नही हो सकते, इसी कारण इन्होंने सत्यार्थप्रकाश को कुरान और बाइबिल जैसी विदेशी संस्कृति और मतवादों की पुस्तकों की श्रेणी में रक्खा है।

यदि सिंघल जी में कुछ साहस और सत्यार्थप्रकाश की विचारधारा को मिथ्या, भ्रांत तथा अनिष्टकारक सिद्ध करने की योग्यता है तो वह सार्वजनिक रूप से इस विषय पर निर्णायक वार्तालाप के लिए हमारा निमन्त्रण स्वीकार कर अपना पक्ष सिद्ध करे। अन्यथा अपने वक्तव्य पर सार्वजनिक रूप से खेद व्यक्त करते हुए क्षमायाचना करे।

उन्हें यह ध्यान रखना चाहिए कि राम जन्मभूमि के प्रश्न पर सार्वजनिक रूप से प्रकाश में आ जाने से वह न तो सर्वसामर्थ्ययुक्त हो होगये हैं और न सिद्धांतों के पण्डित ही बन गए हैं तथा न इतिहास मर्मज्ञ। हां, उनकी महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश के प्रति इस अभिव्यक्ति का अर्थ या तो नकटे व्यक्ति द्वारा नाकवालों को देखकर "नाक-नाक" पुकारने लगने की अभिव्यक्ति करना है अथवा उनका यह स्वप्न है कि अब भारत उनकी विचारधारा के लोगों के हाथो में आनेवाला है तो सबसे पहले आर्यसमाज को ही कुचलना होगा एतदर्थ इस कार्य के लिए अभी से पृष्ठभूमि तैयार की जाए और इसके लिए आधार बनाया जाए महर्षि दयानन्द की विचारधारा और विशेषकर उनके प्रमुख सिद्धात निर्णायक धर्मग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को।

हम तो हृदय के अन्तस्तल से चाहते हैं कि भारत की शासन सत्ता इन लोगों के हाथों में आ जाए किन्तु इन्हें ध्यान रखना चाहिए कि

(शेष पृष्ठ ६ पर)

साम-सुधा शतक

॥ २९ ॥

पुष्टिदाता प्रभु

ओं अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवेदिवे।
यशस वीरवत्तमम् ॥ ऋग्वेद मं.।/सू.।/मंत्र ३

ज्ञान-रूप हे प्रभुवर मेरे,
ज्योतिर्मय हो तुम्हीं अपार।
अन्न-धनों के दाता भी तुम,
लुटा रहे अपना भंडार।
वह बल वैभव मुझे दीजिए,
सुख सतोषो का आगार।
दिन दिन फूलूं-फलू मे जगत् में,
शौर्य-कीर्ति का पा आधार।

॥ ३० ॥

समर्पण की महिमा

ओं यदग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत्तत्सत्यमगिरः ॥ ऋ. मं.।, सू.।, मंत्र ६

सभी जगत् के प्यारे बन्धु,
और सभी के मित्र महान्।
ज्योतिरूप तुम प्रभुवर मेरे,
नायक भी हो तुम भगवान्।
जो जन मन प्राण से अर्पित,
करता निशदिन तेरा ध्यान।
अपने अटल नियम में बंधकर,
करते तुम उसका कल्याण।

॥ ३१ ॥

प्रभु से पुकार

ओं तमीशान जगतस्तस्थुषस्पति,
धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे
रक्षिता पायुरदब्ध. स्वस्तये ॥ ऋ. मं.।/सू. ८९, म. ५

सकल जगत् के स्वामी प्रभुवर,
जड़ चेतन के रचनाकार।
सद्बुधि के प्रेरक हो तुम,
ज्ञान-विज्ञान के जो भण्डार।
पालक, पोषक, दाता तुम हो,
देते वास-वसन-आहार।
जीवन, साधन दिये तुम्हीं ने,
रक्षा हित कर रहे पुकार।

॥ ३२ ॥

दुष्ट तत्त्वों से रक्षा करो

ओं पाहि नो अग्ने रक्षस. पाहि धूर्तेरराव्णः।
पाहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो यविष्ठ्य ॥

अग्निरूप तुम प्रभुवर मेरे,
दुष्टजनो से कर निस्तार।
कपटी कृपणों की सगत प्रभु,
होवे सदा हमे दुश्वार।
विकट तेज बलशाली स्वामिन,
हिंसकों का कर दो सहार।
सभी दुष्ट दुर्गुण. जन धन को,
हमसे करो आज परिहार।

—प्रो० धर्मचन्द विद्यालकार, पलवल

शंका समाधान

प्रश्न—जब ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों ही अनादि और अनन्त हैं फिर ईश्वर की क्या विशेषता है ?

उत्तर—यह तीनों अनादि हैं परन्तु योग्यता अर्थात् गुण, कर्म, स्वभाव का अन्तर है। योग्यता का अन्तर ही महत्त्व रखता है।
जीव—सत् चित् है—चेतना सत्ता है। कार्य करने में स्वतन्त्र भोगने में ईश्वर आधीन।
ईश्वर—सत्-चित् आनन्द है—सृष्टिकर्त्ता है। जीवों को उनके कर्मों के अनुसार फल का देनेवाला है।

प्रश्न—जब ईश्वर और जीव की सत्ता भिन्न है तो जीव को ईश्वर का अंश क्यों माना जाता है ?

उत्तर—जीव को ईश्वर का अंश मानना अज्ञानता है। ईश्वर अविभाज्य है-अंश उसी का हो सकता है जिसके टुकड़े खण्ड हो सकें—ईश्वर अखण्ड है। इसलिए जीव को ईश्वर का अंश नहीं कहा जा सकता।

प्रश्न—शास्त्र में आत्मा (जीव) को परमात्मा का पुत्र कहा है—जब परमात्मा ने जीव को पैदा नहीं किया, तब वह उसका पुत्र कैसे हुआ ?

उत्तर—परमात्मा जीव को शरीर से युक्त करता है। शरीर के बिना जीव कर्मों का फल नही भोग सकता। इसलिए शास्त्र परमात्मा को पिता और जीव को पुत्र कहते हैं।

प्रश्न—जब ईश्वर ने जीव और प्रकृति को उत्पन्न नही किया तो उन पर ईश्वर को शासन करने का क्या अधिकार है ?

उत्तर—व्यवहार में देखिए स्वामी ने सेवक को उत्पन्न नही किया, गुरु ने शिष्य को उत्पन्न नही किया, राजा ने प्रजा को उत्पन्न नही किया। परन्तु यह सब उनके भले के लिए शासन करते हुए भी बडा उपकार का कार्य करते हैं। इसी प्रकार ईश्वर भी जीवों के कल्याणार्थ ही ऐसा करते हैं जोकि अन्याय नही है।

प्रश्न—क्या ईश्वर सर्वाधार है ? सर्वाधार किसे कहते हैं ?

उत्तर—जो पदार्थ जिसके आश्रय में रहता है वह उसका आधार होता है। जैसे दूध या जल का आधार वर्तन है इसी प्रकार ब्रह्माण्ड का आधार ईश्वर है। ईश्वर स्वयं निराधार है। क्रमशः

ओमप्रकाश वानप्रस्थी
आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल,
भटिण्डा (पंजाब)

स्वर्ण जयन्ती समारोह सम्पन्न

मानवती आर्यकन्या उच्च विद्यालय हांसी का स्वर्ण जयन्ती समारोह २३ फरवरी को धूमधाम के साथ त्यागमूर्ति महामण्डलेश्वर पूज्य स्वामी गणेशानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसके मुख्य अतिथि चौ० सुरेन्द्रसिंह जी (शिक्षामन्त्री) हरयाणा राज्य ने स्वर्ण जयन्ती स्मारक भवन का शिलान्यास भी किया।

इस शुभ अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्री वेदप्रकाश जी गर्ग (बम्बई), श्री प्रेमनाथ जी जैन (दिल्ली), कु० विजया जी मुख्याध्यापिका का अभिनन्दन किया गया। स्वर्ण जयन्ती स्मारक भवन के निर्माण हेतु निम्नलिखित दानराशि प्राप्त हुई :—

श्री वेदप्रकाश जी गर्ग	२,००००० रुपए
श्री नन्दकिशोर जी गोयनका	५१,००० ,,
स्व० महाशय पारसनाथ जी के सुपुत्रों ने	६१,००० ,,
स्व० श्री नुनियामल जी कड़ियोवाले ने सुपुत्रों ने	४१,००० ,,
श्री प्रेमनाथ जी जैन- दिल्ली	११,००० ,,
श्री लाजपतराय जी, हांसी	११,००० ,,
पूज्य स्वामी गणेशानन्द जी ने	११,००० ,,
श्री प्रकाशचन्द जी दिल्ली	५१,००० ,,
वाबू किशोरीलाल जी	५०० ,,

चौ० सुरेन्द्रसिंह जी शिक्षा मन्त्री महोदय ने २१ हजार रुपए विद्यालय के लिए और २१ सो रु० छात्र एवं छात्राओं को मिष्ठान्न वितरित करने हेतु दिये। साथ ही उपरोक्त दी हुई धनराशि का मेंचिंग ग्राट द्वारा तीन गुणा देने की घोषणा की।

सोनीपत में शराब के ठेकों की नीलामी पर विरोध प्रदर्शन

रोहतक की भांति सोनीपत में भी दिनांक १६ मार्च को शराब के ठेकों की नीलामी के अवसर पर आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं की ओर से विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया गया। आबकारी कराधान कार्यालय सोनीपत से ठेकों की नीलामी की तारीख १५ मार्च की सूचना मिली थी। अत: सभा की ओर से आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को १५ मार्च को सोनीपत पहुंचने के लिए पत्र लिखे गए थे, परन्तु उसके बाद सोनीपत से लौटकर सभा के उपदेशक श्री रतनसिंह आर्य ने कार्यालय को बताया कि नीलामी १५ की बजाय १६ मार्च को होगी। इसकी सूचना सभी कार्यकर्त्ताओं को डाक से देना सम्भव नहीं था। अत: जहां सम्भव हुआ वहां सभा के उपदेशकों को भेजकर १६ मार्च को सोनीपत पहुंचने की सूचना भेजने का प्रयत्न किया गया। जिन्हें सूचना न मिल सकी वे १५ मार्च को विरोध करने के लिए सोनीपत पहुंच गये, उन्होंने आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत की ओर से जिला उपायुक्त द्वारा निदेशक आबकारी कराधान विभाग हरयाणा को ज्ञापन दिया तथा मांग की गई कि शराब के बढते हुए प्रसार से प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार चरित्रहीनता, गुण्डागर्दी तथा अनियमितता का बोल-बाला होरहा है। शराबियों के दुर्व्यवहार से बसों तथा रेलों में यात्रा करना कठिन हो रहा है। शराबियो के कारण ही दुर्घटनाओ में वृद्धि हो रही है। स्वयं शराब पीनेवाले भी इसे बहुत बुरा व्यसन मानते हैं और वे अपनी सन्तान को इससे दूर रखना चाहते हैं। अत: जनकल्याण के लिए शराब के ठेकों की नीलामी बन्द की जावे।

१६ मार्च को विरोध प्रदर्शन करने के लिए हम सभा के उप-प्रधान महाशय भरतसिंह, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य तथा आर्य महिला उपदेशिका श्रीमती किरणमयी आर्या के साथ रोहतक से सोनीपत गये। नई दिल्ली से आर्यमहिला नेता श्रीमती प्रभातशोभा ने इस प्रदर्शन का नेतृत्व करने आना था। अत: हमें उन्हें लेने के लिए लोकनिर्माण विभाग के विश्रामगृह पर गये, परन्तु वहां शराब के ठेकों की बोली बोलने वाले व्यापारियों का इतना जमघट था कि वहां उनके अतिरिक्त अन्य कोई भी दिखाई नहीं दिया। इसके बाद हम सभा के प्रतिष्ठित सदस्य श्री पंजूराम आर्य के निवास पर गये तथा उनसे प्रदर्शन की तैयारी करने का अनुरोध किया। वे हमारे साथ चल पड़े। माडल टाउन सोनीपत जहां ठेकों का नीलामी स्थल था, वहा जाकर देखा तो वहां भी शराबी व्यापारियों, सरकारी अधिकारियों तथा पुलिस कर्मचारियों का मेला सा भरा हुआ था और एक सजे सजाये शामियाना में बोली की तैयारी की जा रही थी, हमने स्थानीय एक लाऊड स्पीकर वाले से बात की परन्तु वह कहने लगा कि गत वर्षों से इस अवसर पर पुलिस की ओर से प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज आदि होता रहा है अत: हम लाऊड स्पीकर किराये पर देने का जोखिम नहीं लेना चाहते, हमने इसे कहा कि हम जिम्मेवारी लेते हैं कि तुम्हें कुछ हानि नही होने देंगे। इस प्रकार पुलिस आतंक के कारण बड़ी कठिनाई से वह लाऊड स्पीकर देने को तैयार हुआ। हमने एक रिक्शा पर उसे रखा तथा ओ३म् का झण्डा लगाकर शराबबन्दी के नारे लगाने आरम्भ कर दिये। एक उर्दू के कवि के अनुसार "हम अकेले ही चले थे मंजिल-मंजिल, हम सफर मिलते गए और कारवां बनता गया।" हमारी लाऊड स्पीकर पर आवाज सुनते ही श्रीमती प्रभात शोभा जी आगई। हमारा साहस बढ़ा। थोडी ही देर में श्री टेकचन्द आर्य कुराड़,श्री सूरजमल आर्य बाघड़,श्री रामगोपाल आर्य शहर समाज के कार्यकर्त्ता हमारे साथ आ मिले। आर्यसमाज रोहणा के कर्णधार महाशय दरयावसिंह आर्य, प्रधान श्री इन्द्रसिंह आर्य तथा उनके अन्य साथी भी एक ट्रेक्टर में ओ३म् का झण्डा लेकर सोनीपत पधारे।

शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन :–

नीलामी स्थल पर सरकारी अधिकारी शराब के ठेकों की बोली करते हुए घोषणा कर रहे थे कि श्री बी० के० एण्ड कम्पनी एक करोड ४० लाख रु० और अन्य ने एक करोड़ ४१ लाख रु० आदि। इस प्रकार शराबरूपी जहर बेचने के ठेके लेने के लिए ढाई करोड़ रुपए की बोली देने पर होड लग रही थी और दूसरी ओर आर्यसमाज के मंच पर श्रीमती प्रभात शोभा शराब के ठेकेदारों को उनके नीच कर्म के लिए धिक्कारते हुए जनसमूह को बता रही थी कि भारत को आजाद करवाने के लिए क्या सरदार भगतसिंह, लाला लाजपतराय, श्री चंद्रशेखर आजाद, नेताजी सुभाष, वीर सावरकर आदि अधिक से अधिक बलिदान करवाने के लिए होड इसलिए लगा रहे थे कि हमारे प्यारे भारत में आजादी मिलने पर शराब के कारण हमारी बहन-बेटियों की इज्जत खतरे में पड़ेगी, किसान मजदूर की कमाई शराब में नष्ट होगी। यदि उन्हें मालूम होता कि हमारे बलिदान पर देश के गद्दार मौज उडावेगे तो वे अपनी भरी जवानी देश पर नहीं लुटाते। आपने अपने संस्मरण सुनाते हुए बताया कि बचपन में मैं जब अपने पूज्य पिता पं० बुद्धदेव विद्यालंकार के साथ लाहौर में रहती थी तो एक दिन वे हमारे घर पर आये थे और भारत को आजाद करवाने की प्रतिज्ञा करते हुए एक जलती हुई मोमबत्ती पर अपना हाथ रखा और लहू टपकना आरम्भ होगया था। उन्होने आजादी प्राप्त करने के लिए फांसी के तख्ते पर लटकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। आपने शराब के ठेकेदारों को सावधान करते हुए कहा कि आज तुम लोग धन बटोरने के लालच मे अपने देश के लिए गद्दारी कर रहे हैं। तुम भी जानते हो कि शराब एक जहर है जो इसका सेवन करेगा उसके शरीर तथा चरित्र की हानि होगी। तुम्हारे परिवार के सदस्य भी इस रोग में फंस सकते हैं। शराब के कारण देश के नौजवानों की जवानी बर्बाद हो रही है। यदि हमारे सैनिक शराब के नशे में होंगे तो दुश्मन से किस प्रकार टक्कर ले सकते हैं। इस प्रकार आज शराब के ठेकेदार तथा इनके सहायक शराब के ठेके खोलकर तथा जनता को शराबरूपी जहर पिलाकर पाप के भागी बन रहे हैं। आने वाली पीढी इस पाप के लिए तुम्हें क्षमा नही करेगी। आपने दु:खभरे शब्दों में कहा कि शराब ने हमारे नवयुवक समाप्त कर दिए अन्यथा आज मैं नवयुवकों को आह्वान करती कि वे देश के इन गद्दारों को ठिकाने लगा देवें परन्तु शराब ने सारा खेल बिगाड दिया। शोभा जी इस प्रकार शराब के ठेकेदार तथा इनकी सहायता करनेवाले सरकारी अधिकारियों पर फटकार डाल रही थी तो एक सिख पुलिस अधिकारी आर्यसमाज के मंच के समीप आकर मंच को दूर हटाने के लिए अपना रोब जमाने लगे। इस पर आर्यसमाज के कार्यकर्ता उनके सामने डटकर खड़े होगये और उस पुलिस अधिकारी को कहा कि हमने समाज सुधार के लिए तथा जनता को शराब की हानियों से सचेत करने के लिए यह मंच लगाया है। हम यहां से नही हटेंगे। आपने जो करना हो करो। शोभा जी ने उस पुलिस अधिकारी को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह आर्यसमाज का मंच है हम अपनी बात कहकर रहेंगे। तुम में यदि नैतिक साहस है तो उन ठेकेदारों को यहां से दूर भगाओ जो राष्ट्र के विनाश के लिए बोली दे रहे हैं। उनकी ललकार सुनकर वह अधिकारी विवश होकर वहां से खिसक गया।

इस अवसर पर आर्य उपदेशिका बहन किरणमयी आर्या ने अपने प्रभावशाली व्याख्यान में हरयाणा सरकार से पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की मांग की और इससे होनेवाली हानियों का उल्लेख करते हुए कहा कि इस शराब ने बड़े-बड़े राजाओं, जमींदारों तथा धन धान्य से सम्पन्न व्यक्तियों को बर्बाद कर दिया। परन्तु हमारी सरकार पैसा कमाने के लिए शराब के ठेकों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ा रही है और पंचायतों को भी शराब की अधिक बिक्री करने के लिए एक बोतल की बिक्री करने पर एक रुपया देने का लालच देकर ग्रामीण जनता का विनाश करने की नीति अपना रही है। आपने पूछा कि जब शराब पीने से नर-नारियो का शरीर तथा चरित्र बिगड जावेगा तब शराब की बिक्री की आमदनी से विकास के कार्य किये जावेंगे उनका उपयोग तथा सुरक्षा कौन करेगा। आपने जिला रोहतक के लाढोत ग्राम के सरपंच का उदाहरण देते हुए बताया कि जिला विकास अधिकारी ने ग्राम में शराब की अनुचित रूप से की गई शराब की बिक्री के खाते से १५००) के लगभग देने चाहे तो उस आर्य विचारों के सरपंच ने उस धनराशि को ठुकराते हुए कहा कि हम पाप की कमाई से ग्राम मे विकास नही कर सकते।

(शेष पेज ५ पर)

गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार का वार्षिकोत्सव

समस्त आर्यबन्धुओं को यह जानकर परम होगी कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरद्वार का ९१वां वार्षिकोत्सव एवं दीक्षान्त ७ अप्रैल, १९९१ से समारोहपूर्वक मनाया जारहा है। इस अवसर पर ७ से १४ अप्रैल तक श्री प० मदनमोहन विद्यासागर के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायणयज्ञ होगा। वैदिक प्रदर्शनी गुरुकुल जन्मोत्सव, कवि सम्मेलन, संगीत सम्मेलन, राष्ट्रीय-पत्र और उनकी समस्यायें आदि पर विभिन्न सम्मेलन होंगे। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा सांस्कृतिक एवं विविध शारीरिक व्यायाम के कार्यक्रम भी प्रस्तुत होंगे। इस शुभ अवसर पर आर्यविद्वानों व सन्यासियो के विविध प्रवचन और भाषण सुनने को मिलगे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी, स्वामी ओमानन्द जी, प्रो० शेरसिंह कुलाधिपति, श्री बन्दे मातरम् जी तथा ओजस्वी वक्ता श्री क्षितीश वेदालंकार आदि पधार रहे हैं। आशा है आर्यजन अधिक से अधिक सख्या में पधारकर पुण्य के भागी बनेगे और कुलवासियों के उत्साह को बढायेगे।

नवशस्येष्टि पर्व (होली-पर्व) पर आर्यसमाज रुदड़ौल (जिला भिवानी) की ओर से यज्ञ का आयोजन

होली-पर्व के उपलक्ष्य में आर्यसमाज रुदड़ौल जिला भिवानी के कर्मठ एव उत्साही कार्यकर्त्ता श्री कमलसिंह आर्य एव श्री नन्दराम शर्मा के प्रयत्नों से यज्ञ एव प्रचार कार्य का आयोजन किया गया। गांव के भू०पू० सरपंच श्री मातूराम जो आर्य के निवास पर यज्ञ रखा गया जिसमें उनका समस्त परिवार और पास पड़ौस के स्त्री-पुरुष भी शामिल हुए। प्रो० ओमकुमार आर्य ने यज्ञ करवाया तथा यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला। सक्षेप में यह भी बताया कि हमें अपने परिवार, गांव आदि को दुर्व्यसनों से मुक्त रखने हेतु तथा शुद्ध सात्त्विक वातावरण के निर्माण हेतु आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द द्वारा बताये गये रास्ते का अनुकरण करना जरूरी है। श्री मातूराम जी आर्य ने आर्यसमाज रुदड़ौल को २१-०० रु० दान दिया, सबका धन्यवाद किया और आगे भी ऐसे पुनीत आयोजन करते रहने की इच्छा व्यक्त की। श्री कमलसिंह आर्य, श्री नन्दराम शर्मा तथा अन्य सहयोगी सारे गांव की मदद से एक व्यापक आयोजन भी निकट भविष्य में करने की सोच रहे हैं। रुदड़ौल गांव आर्यसमाज का गढ़ रहा है और कोई भी बड़े से बड़ा आयोजन सहर्ष कर सकता है। हम सभी से सहयोग की अपील करते हैं।

—प्रो० ओमकुमार आर्य
उप-संचालक, आर्यवीर दल हरयाणा

प्रभु का सच्चा दरबार है

(तर्ज—साजन मेरा उस पार है)

प्रभु का सच्चा दरबार है।
वही पे सुख बेशुमार है॥

उसके लिए तू क्यों भटकता है।
वह तो दिल में सबके ही रहता है॥
दिल के अन्दर हो तेरा यार है।
कुल दुनिया का सरकार है॥प्रभु.........

विषयों का पर्दा जब उठाओगे।
दर्शन तुम उसके तब कर पाओगे॥
सारे जग का वो आधार है।
सारे सुखों का वो भण्डार है॥प्रभु.........

विष्णु रुद्र महेश्वर और रचयिता है।
सारे जगत का पालनकर्त्ता है॥
'कमल' वो ब्रह्म सर्वाधार है।
अजर अमर निराकार है॥प्रभु.........

—अरविन्द कुमार 'कमल'

श्रीराम—जन्मोत्सव

(लेखक—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती)

१—जन्म दिवस श्रीराम का, ऋतु वसन्त बहार।
शुक्ल पक्ष नौमी तिथी, महामानव तनधार॥

२—सुविख्यात है जगत् में, पुरी अयोध्या ग्राम।
नृप दशरथ घर प्रकटे, पुरुषोत्तम श्रीराम॥

३—उदय हुआ रघुकुल रवि, किया ज्ञान प्रकाश।
भूतल-तम का कर दिया, श्रीराम ने नाश॥

४-राजमहल में होरहे, सुन्दर मगलाचार।
वेद ध्वनि आने लगी, हर्षित सब नर-नार॥

५—दृढव्रती जितेन्द्रिय, आर्यवीर विद्वान्।
सत्यवादी महामनुज, अति उत्तम सन्तान॥

६—वैदिक मर्यादामय, जीवन भर पर्यन्त।
शूरवीर क्षत्रिय प्रबल, किया दुष्टों का अन्त॥

७—रघुकुल राघव राम को, जाने देश तमाम।
लाखों वर्षों बाद भी, अमर राम का नाम॥

८—पितु वाक्य पालन किया, नहीं उल्लंघन कीन।
ईश-भक्त रघुकुल तिलक, इक्ष्वाकु वंश कुलीन॥

९—वेद पथिक युग परिवर्तक, दृढप्रतिज्ञ श्रीराम।
दशरथ नन्दन राम को, कोटि कोटि प्रणाम॥

१०—जन्मोत्सव यह आपका, मना रहे हरषाय।
सुपथ प्रेरक राम तुम, प्रकटो फिर से आय॥

राम राज्य आ जाये

जितेन्द्रिय जब आज देश का, हर मानव बन जाये।
भारत की इस पुण्य धरा पर, रामराज्य आ जाये॥

रूपवती बनकर सूपनखा, पंचवटी पर आयी थी।
मोहित होकर राम लखन की, पत्नी बननो चाही थी॥
धर्म की राह भुलाई थी फिर, नाक कान कटवाये।
भारत की इस पुण्य धरा पर, रामराज्य आ जाये॥

लंका में प्रवेश हुआ वह, हनुमान ब्रह्मचारी।
जमा पैर अंगद ने दिया, कैसा अजब खिलारी॥
दूत था राम का ब्रह्मचारी, लंकापति घबराये।
भारत की इस पुण्य धरा पर, रामराज्य आ जाये॥

रखे खड़ाऊँ सिंहासन पर, भरत ने त्याग दिखाया।
किसी तरह का भी नहीं स्वार्थ, अपने अन्दर लाया॥
परमार्थ में जीवन पाया, राम के हृदय भाये।
भारत की इस पुण्य धरा पर, रामराज्य आ जाये॥

महेश देश में रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार न पाये।
मदिरा माँस और तम्बाकू, कोसों नजर न आये॥
फिर से देश स्वर्ग बन जाये, जगद्गुरु कहलाये।
भारत की इस पुण्य धरा पर, रामराज्य आ जाये॥

—महेश आर्य
पन्हैड़ा खुर्द त० बल्लभगढ़ (फरीदाबाद)

आर्यसमाज बेरी जिला रोहतक का चुनाव

१. प्रधान श्रीमती प्रभातशोभा पण्डिता, २. उप-प्रधान श्री धनराज, ३. मन्त्री श्री रामकिशन, ४. उप-मन्त्री श्री इन्द्रसिंह, ५ कोषाध्यक्ष श्री फतहसिंह।

सभा का नया टेलीफोन नम्बर ७४८१२ से ७८७२२ हो गया है।

सन्तति निर्माण

'पुंनाम नरकात् त्रायते इति सः पुत्रः' अर्थात् जो माता-पिता को नरक से निकाले और उनका यश लोकों में फैलाये उसे पुत्र कहते हैं। मनुष्य पुत्ररत्न की प्राप्ति के बाद अत्यन्त प्रसन्न होता है। वह भिन्न-भिन्न प्रकार के उत्सव करता है। मां का मन मयूर प्रसन्नता से नाच उठता है। पुत्र के जवान होने पर माता-पिता को और भी खुशी होती है। वे अपने पुत्र को ऊंचे पद पर देखना चाहते हैं। यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। किन्तु वही पुत्र विवेकशून्य होकर क्या-क्या अधर्म के कार्य नही कर डालता। उसके इस कार्य से मां-बाप अत्यधिक दुःखी होते हैं। ऐसे समय पर माता-पिता कहने लग जाते हैं कि अगर यह पुत्र पैदा न होता तो अधिक अच्छा था। पुत्र के अन्दर विवेक शून्यता से कौन-सा अनर्थ नहीं होता। कहा है—

यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्॥

अर्थात् जवानी, धन, सम्पत्ति, अधिकार वाला होना तथा अविवेकिता (विवेक शून्यता) ये एक ही अनर्थ को उत्पन्न करनेवाले हैं। जहां पर ये चारों हों तो कौन-सा अनर्थ नही होगा।

सन्तान के इस तरह के व्यवहार के लिए कौन जिम्मेदार है? महर्षि दयानन्द लिखते हैं 'मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद' जो तीन शिक्षकवाला अर्थात् माता, पिता तथा आचार्यवाला हो वही पुरुष ज्ञानवान् बनता है ये तीनों शिक्षक उत्तम विद्या तथा उत्तम आचरणों के धनी होने चाहिये क्योंकि वेद का आदेश है 'मनुर्भव जनया दैव्यम् जनम्' पहले मनुष्य बनो तत्पश्चात् दिव्य गुणोंवाली सन्तान पैदा करो। जितना मां सन्तान का निर्माण कर सकती है उतना और कोई नही कर सकता। तभी तो कहा है 'माता निर्माता भवति' माता निर्माण करने वाली होती है।

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा॥

अर्थात् वे माता-पिता शत्रु तथा वैरी हैं जिन्होने बालक को नही पढ़ाया। बालक सभा के अन्दर उसी प्रकार शोभा नहीं पाता जैसे हंसों के बीच में बगुला शोभा नहीं पाता। माता-पिता ने अगर एक बच्चा भी ज्ञानवान् कर दिया तो वह बच्चा कुल का नाम रोशन कर देता है। 'स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्' जो पैदा होकर कुल की उन्नति करता है उसी का जन्म सार्थक है।

मां का कर्त्तव्य —

सन्तान ज्यादा मां के सम्पर्क में रहती है। मां चाहे उसका निर्माण कैसे भी करदे। मां से ही सन्तान अधिक गुणवान् बनती है। मां वह सत्य शक्ति है जो बच्चे का निर्माण कर महान् बनाती है। ऐसी माताओं से देश का भविष्य उन्नत होता है जो देश के लिए अपने मातृ स्नेह की परवाह नहीं करतीं। मां के बलिदान, मां के तप, मां का त्याग और मां का स्नेह भरा हाथ इन सबके योग से ही सन्तान का निर्माण होता है। इतिहास साक्षी है कि समय-समय पर माताओं ने अपनी कोख से उज्ज्वल रत्न उत्पन्न किये। कहा गया है 'कोऽर्थः पुत्रेण जातेन यो न विद्वान् न धार्मिकः' अतः मां को चाहिए कि पुत्र को विद्वान् तथा धार्मिक बनाये। उसे उत्तम विद्या तथा गुणों की शिक्षा दे। सभी प्रकार की सिद्धि विद्या से ही सम्भव है। विद्या से कई गुण व्यक्ति के अन्दर आ जाते हैं।

विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्मं ततः सुखम्॥
× × ×
विद्यानाम नरस्य रूपकधिकम् प्रच्छन्नगुप्तं धनम्।

सभी सुखों का आधार विद्या है। मां सन्तान को अच्छा आचार व व्यवहार सिखावे ताकि वह कुसंगति में न पड़े। वेद में कहे गये पच कर्त्तव्यों का नित्य पाठ करावें।

१. ईश्वर को सर्वव्यापक मानो।
२. त्यागपूर्वक भोग करो।
३. किसी के धन का लोभ न करो।
४. कर्म करते हुये सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करो।
५. आत्मा के प्रतिकूल आचरण मत करो।

पिता का कर्त्तव्य—

दूसरा नम्बर पिता का है। सन्तान के निर्माण में पिता का महत्व-पूर्ण स्थान है। 'पाति इति पिता' अर्थात् रक्षा करनेवाला पिता कहलाता है। माता का कोमल अंश बालक में करुणा दया आदि रूपों में अभिव्यक्त होता है और पिता का पौरुष बालक में पौरुष का प्रदीप बनकर जलता है। पिता की आज्ञापालन तथा सेवा जैसा कोई धर्म नही है। माता चित्र तैयार करती है और पिता रक्षण रूपी शक्ति से उस चित्र को चमकदार करता है। पिता को चाहिए कि वह सन्तान की हर तरह से देखभाल करे। उसे हमेशा धर्म का उपदेश करे तथा शारीरिक दृष्टि से उसे परिपुष्ट करे।

आचार्य का कर्त्तव्य—

आचार्य बालक के रूप को हर तरह से निखारता है। वह बच्चे की आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक हर तरह से उन्नति करता है। बालक के जीवन में किसी प्रकार की कमी न रहे यह आचार्य का हमेशा प्रयास रहता है। माता, पिता तथा आचार्य ये तीनों स्तम्भ हैं जिनसे मनुष्य का निर्माण होता है। वर्तमान में छात्र से अध्यापक का सम्बन्ध केवल पाठ्य पुस्तकों को पढ़ाने मात्र के लिए होता है। यह पढ़ाई जीविका तो दे सकती है किन्तु जीवन का निर्माण नही कर सकती है। अतः आचार्य को चाहिए कि उत्तम विद्या की शिक्षा दे। उन्हें असत्य से हटाकर सत्य की ओर प्रेरित करे। उन्हें सत्य बोलने का, धर्म पर चलने का तथा स्वाध्याय में प्रमाद न करने आदि का उपदेश देवे। ईश्वर तथा धर्म की जानकारी देवे। शारीरिक दृष्टि से उन्नति के लिए ब्रह्मचर्य आदि का उपदेश देवे। क्योंकि कहा गया है—

दुराचारो हि पुरुषो लोके भवति निन्दितः।
दुःखभागी च सततं व्याधितोऽल्पायुरेव च॥

अच्छे आचार्य द्वारा जिन बलवान् और चरित्रवान् छात्रों का निर्माण किया जाता है वही माता-पिता की सेवा करते हैं तथा उनके महत्त्व को समझते हैं।

माता-पिता तथा आचार्य इन तीनों को चाहिये कि सन्तान का हर तरह से निर्माण हो तभी समाज तथा देश का कल्याण होगा तथा माता-पिता व आचार्य भी सुख पायेंगे। अन्यथा अधर्मी पुत्र से माता-पिता क्या सभी दुखी होते हैं।

जननी जन्म दे भक्तों को, या दाता दानी वीर रहे।
कपटी देशद्रोहियों से माँ, सूनी तेरी गोद रहे॥

—अरविन्द कुमार 'कमल' विद्यावाचस्पति
आर्यसमाज टोहाना (हिसार)

(पृष्ठ ३ का शेष)

सभा के उपदेशक पं० अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि पापी लोग शराब के ठेके लेते हैं परन्तु हम आर्यसमाज के कार्यकर्ता समाज सुधार का ठेका लेते हैं। हमारी आर्य प्रतिनिधि सभा गत वर्षों से शराबबन्दी अभियान इसी उद्देश्य से चला रहे हैं। हम गिनती में चाहे कम हों परन्तु हम आर्य हैं जो भी आंदोलन आरम्भ करते हैं उसे सफल करके ही दम लेते हैं। हैदराबाद तथा हिन्दी रक्षा आंदोलन इसके साक्षी हैं। यदि नवयुवक हमारा साथ देवें तो हम इन देशद्रोही ठेकेदारों को दिन में तारे दिखा सकते हैं। हमें विश्वास है एक दिन ऐसा आने वाला है। जिला वेदप्रचार मण्डल सोनीपत के संरक्षक श्री टेकचन्द आर्य, श्री सूरजमल आर्य तथा आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री रामगोपाल आर्य ने भी इस शराबबन्दी सम्मेलन में बोलते हुए आर्य महिला नेता पंडिता शोभा जी के शराबबन्दी अभियान में तन, मन तथा धन से सहयोग करने का आश्वासन देते हुए कहा कि आर्यसमाज के कार्यकर्ता इस भयंकर सामाजिक बुराई को समाप्त करने का भरसक प्रयत्न करेंगे। क्योंकि शराब गली-गली में बिकने लगी है और इस कारण ग्रामों के स्कूलों में पढ़नेवाले छात्र भी इसके जाल में फंसने लगे हैं। शराबियों के उत्पात से ग्रामों का वातावरण दूषित होगया है। अतः हम आने वाले चुनाव मे किसी ऐसे उम्मीदवार का डटकर विरोध करेंगे जो स्वय शराब पीता है तथा अपने समर्थकों को शराब पिलायेगा।

सम्मेलन की समाप्ति पर सभा का शिष्टमण्डल जिला सोनीपत के उपायुक्त राव रामचन्द्र जी को शराबबन्दी का ज्ञापन देने उनके निवास पर गया। उपायुक्त महोदय ने सभा के शराबबन्दी कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि मैं आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं का ज्ञापन हरयाणा के मुख्यमन्त्री को अपनी टिप्पणी के सा भेज दूगा। इस प्रकार सोनीपत में आयोजित शराब विरोधी प्रदर्शन से आर्यसमाज का सन्देश सरकार तथा जनता तक पहुँचाने में सफल रहा।

— केदारसिंह आर्य

आर्यो सावधान !

(पृष्ठ १ का शेष)

इनका आर्यसमाज और सत्यार्थप्रकाश के विषय में उस समय सत्ता के मद से उठाया गया विरोधी पग इनके लिए "दही के धोखे में चूना खा लेना" सिद्ध होगा।

दूसरो की बात नही कहता किन्तु मैं भली-भांति जानता हू कि सिघल जी जिस वर्ग से सम्बद्ध हैं, वह सम्पूर्ण वर्ग—अपवाद स्वरूप कुछ व्यक्तियों को छोड़कर··· ···मान्यताओं और सिद्धांतों के विषय में एकदम उथला और सतही है। उदाहरणार्थ गत मार्च मास मे भारतीय जनता पार्टी के तात्कालिक अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने एक प्रेस भेट में कहा था कि राम और कृष्ण दोनों मांस खाते थे, यह मैं शास्त्रों से सिद्ध कर सकता हूं। पाठकगण ध्यान दे कि भारतीय सस्कृति के उन्नायक और सरक्षक बनने का दम भरनेवाले इतने बड़े दल के शीर्षस्थ नेता को यह तक पता नहीं कि किसो का व्यक्तिगत वर्णन ऐतिहासिक विषय होता है, शास्त्रीय नहीं। इससे तो यह सिद्ध होता है कि श्री आडवाणी जी शास्त्र और इतिहास का अन्तर तक नहीं जानते, शास्त्रों तथा शास्त्रीय बातों को समझना तो दूर की बात है।

रामजन्म भूमि को समस्या को भी इन लोगों ने सांप्रदायिक आधार पर श्रीराम को परमेश्वरावतार के रूप में मान्यता देते हुए ही उठाया है, राष्ट्रीयवाद की दृष्टि से नही। यह लोग बार-बार राम को हिंदुओं का आराध्य और उनके हृदय में बसा हुआ ही बताते हैं किन्तु भारत का राष्ट्रीय गौरव, राष्ट्र-पुरुष या राष्ट्र-भक्त राम नहीं कहते। यद्यपि इस प्रकार की अभिव्यक्ति यह सिद्ध और स्पष्ट कर देती है कि उस भारतीय राष्ट्रीयता के गौरव और भारतीयों के प्रेरणा स्रोत राष्ट्र-भक्त और राष्ट्र-पुरुष राम का जन्म स्थान उनका स्मारक होने से भारत राष्ट्र के गौरव और स्वाभिमान का प्रतीक है, जिसे विदेशी बर्बर आक्रान्ता बाबर मुगल द्वारा तोड-फोड़ कर अधूरा मस्जिद का रूप दिया गया था। इस कारण आक्रान्ता द्वारा निर्मित पतनावस्था और पराधीनता के चिन्ह को मिटाकर रामजन्म स्थान को राष्ट्रीय स्मारक के स्वाभिमान और गौरवशाली रूप में स्थापित कर सुरक्षित करना हमारा लक्ष्य है।

आर्यसमाजियों का जो समर्थन रामजन्म भूमि के आन्दोलन को जन-जन के रूप में प्राप्त हो रहा है, उसका कारण उसका यह राष्ट्र-वादी स्वरूप है। परन्तु क्योंकि सिंघल जी और उनका साथी नेतृत्व समग्ररूप से अन्धविश्वासों और यथास्थितिवादी है और इस अन्ध-विश्वास और यथास्थितिवाद को बनाये रखने में अपने भावी निहित स्वार्थ देखता है। इसीलिये उसके राष्ट्रवादी स्वरूप को स्वीकार न करके यही अन्धविश्वासी स्वरूप बनाए रखना चाहता है और इसी कारण से ऋषिवर दयानन्द के उस पवित्र ग्रंथ का विरोध किया गया है जिसके कारण सिघल जी और उनके साथी रामजन्म भूमि का प्रश्न उठाने की स्थिति में हैं और नेता बन बैठे हैं। यदि ऋषिवर दयानन्द और उनका यह ग्रथ न होता, जो सिघल जी की आंखों में कांटे की भाति खटक रहा है तो सिहल जी, उनके साथ समर्थक और हम सब कुछ तो हजरत मोहम्मद की उम्मत में परिवर्तित हो चुके होते और कुछ ईसा के अनुयायी होगये होते। कृतघ्नता की भी तो कुछ सीमा होती है किन्तु "स्वार्थी दोषं न पश्यति" स्वार्थी दोष नहीं देखा करता।

अन्ततोगत्वा यह तो निश्चित है कि जिस दिन भारत में यह वर्ग सत्तासीन होगा, सिन्ध की मुस्लिम लीगी सरकार की भांति सत्यार्थ-प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने में कदापि कमी उठा नहीं रक्खेगा। लुक-छिप कर यदा कदा दबी वाणी से यह लोग आर्यसमाज के विरोध का प्रदर्शन करते ही रहते हैं किन्तु सिघल जी के इस वक्तव्य ने तो यह सिद्ध कर दिया है कि अब बिल्ली थैले से बाहर आने लगी है। अलमतिविस्तरेण बुद्धिमद्वरशिरोमणिषु।

—०—

हर. सरकार को शराबबन्दी हेतु दिया गया ज्ञापन

हरयाणा राज्य में दिन-प्रतिदिन शराब का प्रसार हो रहा है। जहां पूर्व हरयाणा दूध दही के खाने के लिए प्रसिद्ध था, वहां आज हरयाणा गली-गली में शराब की नदियां बाहाने पर बदनाम हो रहा है। शराब सभी सामाजिक बुराइयों की जड है। शराब के सेवन करनेवालों से बहन-बेटियों को इज्जत खतरे में पड जाती है और भ्रष्टाचार, अनाचार, दुर्घटनाओ आदि का विस्तार होता है। किसान मजदूरों को खून पसीने की कमाई शराब के कारण नष्ट हो रही है और शराब के ठेकेदार मालामाल हो रहे हैं। जिन ग्रामों को पंचायतो ने शराबबन्दी के प्रस्ताव करके भेज रखे हैं वहा भी अन्य ठेकेदार अवैधानिक रूप से चोरीछिपे जीप में शराब की बोतले डालकर ग्रामों में बिक्री हेतु भेजते रहते हैं। शिकायत करने पर भी उनके विरुद्ध कार्यवाही नही की जाती क्योंकि शराब के ठेकेदार भ्रष्ट सरकारी अधिकारियों को मुफ्त में शराब आदि पिलाकर तालमेल रखते हैं। इस प्रकार ग्राम-ग्राम में शराब की बिक्री हो रही है। स्कूलों के छात्र भी शराब पीने के आदी होने लग गये हैं। परीक्षा केन्द्रों पर नकल करवाने के लिए भ्रष्ट निरीक्षकों को शराब की रिश्वत दी जाने लगी है। इस प्रकार शराब पीने तथा पिलाने वालों के कारण प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार का विस्तार हो रहा है। अत: आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा आपसे अनुरोध करती है कि गुजरात, मिजोरम, नागालैण्ड आदि प्रदेशों की भान्ति हरयाणा में भी शराबबन्दी लागू करके इसे कल्याणकारी राज्य बनाने को कृपा करें। जो राज्य अपनी जनता को जहर रूपी शराब पिलाकर अपनी आमदनी बढाती है वह कल्याणकारी राज्य नहीं हो सकता क्योंकि इस प्रकार की आमदनी से राज्य का विकास नही अपितु विनाश होता है।

आप एक समाजवादी तथा धार्मिक स्वभाव के अनुभवी नेता हैं। आपने कल्याणकारी कार्य किये हैं। अनेक संस्थाओं की उदारता पूर्वक सहायता की है। अत: आपसे हम नम्रनिवेदन करते हैं कि हरयाणा जोकि ऋषि-मुनियों की भूमि रही है, इस पवित्र धरती से शराब का कलंक हटाने की कृपा करें अन्यथा आप जो विकास के कार्य करवा रहे हैं, वे शराब से होनेवाली सामाजिक बुराइयों से व्यर्थ सिद्ध होंगे। हम आपको विश्वास दिलवाते हैं कि इस शुभ कार्य में सभा तथा आर्य जनता आपको पूर्ण सहयोग देगी। —आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सभा द्वारा आयोजित शराबबन्दी प्रदर्शन का चित्र

मनुस्मृति में वेद महिमा

(पं० धर्मदेव "मनीषी" वेदतीर्थ, गुरुकुल कालवा)

ऋषि दयानन्द जी महाराज सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवे समुल्लास में लिखते हैं—

"जो ग्रन्थ वेद बाह्य, कुत्सित पुरुषों के बनाये संसार को दुःख-सागर में डुबाने वाले हैं वे सब निष्फल, असत्य, अन्धकार रूप इस लोक और परलोक में दुःखदायक हैं। जो इन वेदों से विरुद्ध ग्रन्थ उत्पन्न होते हैं वे आधुनिक होने से शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। उनका मानना निष्फल और झूठा है।"

मनु जी महाराज वेद की महिमा के विषय में कहते हैं—

चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक्।
भूतं भव्यं भविष्यच्च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति॥
बिभर्ति सर्वभूतानि वेदशास्त्रं सनातनम्।
तस्मादेतत्परं मन्ये यज्जन्तोरस्य साधनम्॥

(वैदिक मनुस्मृति १२/४८-४९)

चारों वर्ण, चारों आश्रमों, भूत, वर्तमान और भविष्यत् आदि की सब विद्या वेदों से ही प्रसिद्ध होती है। क्योंकि यह जो सनातन वेद-शास्त्र है सो सब विद्याओं के दान से सम्पूर्ण प्राणियों का धारण और सब सुखों को प्राप्त कराता है, इस कारण से हम लोग उसको सर्वथा उत्तम मानते हैं—और इसी प्रकार मानना चाहिए—क्योंकि सभी सुखों का साधन यही है॥

सेनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च।
सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति॥
वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो यत्र तत्राश्रमे वसन्।
इहैव लोके तिष्ठन्स ब्रह्मभूयाय कल्पते॥

(मनु० १२/५०-५१)

सब सेना और सेनापतियों के ऊपर, राज्याधिकार, दण्ड देने की व्यवस्था के सब कार्यों का आधिपत्य और सबके ऊपर वर्तमान सर्वाधीश राज्याधिकार इन चारों अधिकारों में सम्पूर्ण वेदशास्त्रों में प्रवीण पूर्ण विद्यावाले, धर्मात्मा, जितेन्द्रिय सुशील जनों को स्थापित करना चाहिए। अर्थात् मुख्य सेनापति, मुख्य राज्याधिकारी, मुख्य न्यायाधीश और प्रधान=राजा ये चार सब विद्याओं के पूर्ण विद्वान् होने चाहियें। वेदशास्त्र के तत्त्व को जाननेवाला किसी आश्रम में रहता हुआ इस लोक में स्थित हुआ-हुआ जीवनमुक्त होजाता है॥

तपो विद्या च विप्रस्य निःश्रेयसकरं परम्।
तपसा किल्विषं हन्ति विद्ययाऽमृतमश्नुते॥
प्रत्यक्षं चानुमानं च शास्त्रं च विविधागमम्।
त्रयं सुविदितं कार्यं धर्मशुद्धिमभीप्सता॥
आर्षं धर्मोपदेशं च वेदशास्त्राऽविरोधिना।
यस्तर्केणानुसंधत्ते स धर्मं वेद नेतरः॥

(मनु० १२/५३-५५)

तप=धर्मानुष्ठान और वेदविद्या=ज्ञान ये दोनों ब्राह्मणादि मनुष्यों के लिए परम कल्याण करनेवाले हैं। तप=धर्मानुष्ठान के द्वारा मनुष्य पापों से बचता है और ज्ञान के द्वारा मोक्ष को प्राप्त होता है। शुद्ध रूप में धर्म को पाने के इच्छुक व्यक्ति को प्रत्यक्ष, अनुमान और वेदादि विविध शास्त्र—इन तीनों को भली प्रकार जानना चाहिये। जो मनुष्य आर्ष धर्मोपदेश को वेदशास्त्र के अविरोधी तर्क द्वारा अनुसंधान करता है वह धर्म को जानता है॥

एकोऽपि वेदविद् धर्मं यं व्यवस्येद् द्विजोत्तमः।
स विज्ञेयः परो धर्मो नाज्ञानामुदितोऽयुतैः॥
अव्रतानाममन्त्राणां जातिमात्रोपजीविनाम्।
सहस्रशः समेतानां परिषत्त्वं न विद्यते॥
यं वदन्ति तमोभूता मूर्खा धर्ममतद्विदः।
तत्पापं शतधा भूत्वा तद् वक्तृननुगच्छति॥

(मनु० १२/६१-६३)

एक अकेला भी सब वेदों को जाननेहारा द्विजों में उत्तम संन्यासी जिस धर्म की व्यवस्था करे वही श्रेष्ठ धर्म है क्योंकि अज्ञानियों के सहस्रों, लाखों, करोडो मिल के जो व्यवस्था करे उसको कभी न मानना चाहिए। जो ब्रह्मचर्य-सत्यभाषणादि व्रत और वेदविद्या या विचार से रहित जन्म मात्र से शूद्रवत् वर्तमान हैं उन सहस्रों मनुष्यों के मिलने से भी सभा नहीं कहाती। अविद्यायुक्त, मूर्ख वेदों को न जानने-वाले मनुष्य जिस धर्म को कहें उसको कभी न मानना चाहिए क्योंकि जो मूर्खों के कहे हुए धर्म के अनुसार चलते हैं उनके पीछे सैकडों प्रकार के पाप लग जाते हैं॥

वेद के विषय कवि ने कहा है—

वेद ही जग में हमारा ज्योति जीवन सार है।
वेद ही सर्वस्व प्यारा पूज्य प्राणाधार है॥

आर्यों ने देश जगाया री

आर्यों ने देश जगाया री, कोई माने चाहे ना
१—भारत महाभारत पीच्छे=गिर चुका था बिलकुल नीचे
फिर से ऊंचा उठाया री, कोई माने चाहे ना
२—कोने-कोने में विचर करके=प्रचार वेद का करके
अविद्या अन्धकार नसाया री, कोई·········
३—नीच ऊंचे का भेद भुलाकर=दलितों को गले लगाकर
नफरत का भूत भगाया री, कोई·········
४—अन गिन भूले मलकाने=फिर से अपने को जाने
शुद्धि का शंख बजाया री, कोई·········
५—एक समय नर नारी जाति=जूती दरजा पाती
नारी का मान कराया री, कोई·········
६—विदेशों में आना जाना=निष्कृष्ट गया कभी माना
वह भ्रमजाल हटाया री, कोई·········
७—कम से कम अस्सी सौ में=गये जेल कांग्रेसियों में
अंग्रेज का दिल दहलाया री, कोई·········
८—अनगिन फांसी पर लटके=चले गये पे बेखटके
ना मृत्यु से भय खाया री, कोई·········
९—वीरेन्द्र कष्ट उठाकर=प्राणों की बली चढ़ाकर
भारत आजाद कराया री, कोई·········

प्रस्तुतकर्त्ता—जयपालसिंह
आर्य प्रतिनिधि सभा भजनोपदेशक

सूर्य बन प्रकाश दिखाओ

भारत मां घनघोर कष्ट में पड़ी मुसीबत भारी।
सूर्य बन प्रकाश दिखाओ छाई है अंधियारी॥
सोने की चिड़िया था भारत सभी ने शीश झुकाया है।
सादा जीवन और हमारे, उच्च विचार ही पावे॥
रंग बिरंगे फैशन में अब, फंसे हुए हैं भारी।
सूर्य बन प्रकाश दिखाओ छाई है अंधियारी॥
झगड़े हो रहे जगह-जगह आतंक ने पैर जमाया।
भ्रष्टाचार रिश्वत घोटाला, पुण्य धरा पर आया॥
सभ्य संस्कृति को छोड़ा नीति सभी बिसारी।
सूर्य बन प्रकाश दिखाओ छाई है अंधियारी॥
सत्य, अहिंसा, बापू जी ने, आजीवन अपनाये।
समय समय पर महापुरुषों ने, हमको मार्ग दिखाये॥
आगे आओ अमर सपूतो प्रजा के हितकारी।
सूर्य बन प्रकाश दिखाओ छाई है अंधियारी॥
अनपढ़ से भी नीच कर्म अब पढ़े लिखे करते हैं।
दारू, मांस, चाय, तम्बाखू, स्वागत में धरते हैं॥
'महेश' डूब रहा देश वासना, बढ़ी हुई है भारी।
सूर्य बन प्रकाश दिखाओ छाई है अंधियारी॥

—महेश आर्य
ग्राम-पन्हैड़ा खुर्द, बल्लबगढ़,
फरीदाबाद (हरियाणा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०७/७३ ... न० ५८:८७ मुद्रितसंवत् ... १३, ०६०

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८   अंक १८   २८ मार्च १९९१   वार्षिक शुल्क ३०)   (आजीवन शुल्क ३०१)   विदेश में ८ पौंड   एक प्रति ७५ पैसे

शराबरूपी रावण तथा दुर्योधन राक्षसों का वध करें

खरावड़ तथा मकड़ौली में शराबबन्दी प्रचार अभियान

श्रीमती प्रभात शोभा का आर्य नर-नारियों को आह्वान

रोहतक २२ मार्च (कार्यालय संवाददाता द्वारा)—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा नवसंवत्सर (आर्यसमाज स्थापना दिवस पर्व) से शराबबन्दी प्रचार अभियान और अधिक गतिशील कर दिया है। अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त आर्य महिला नेता श्रीमती प्रभात शोभा विद्यालंकृता ने इसी सिलसिले में दिनांक १२ मार्च को रोहतक तथा १५ मार्च को सोनीपत में शराब के ठेकों की नीलामी के अवसर पर विरोधप्रदर्शन का नेतृत्व किया और कार्यकर्त्ताओं की बैठक में शराबबन्दी प्रचार कार्यक्रम बनाया। उनका प्रथम कार्यक्रम स्वर्गीय आर्य नेता चौ० माडूसिंह जी के ग्राम खरावड़ जिला रोहतक में दिनांक १९ मार्च को रखा गया। इससे पूर्व सभा की ओर से १८ मार्च को ग्राम की चौपाल में रात्रि को पं० ईश्वरसिंह तूफान तथा पं० जयपालसिंह आर्य की भजनमण्डलियों ने शराब तथा सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जमकर प्रचार किया। १९ मार्च को प्रातः सभा के उपदेशक पं० अर्जुनदेव आर्य ने यज्ञ करवाया तथा उपस्थित युवकों को यज्ञोपवीत धारण करवाते हुए शराब आदि सामाजिक बुराइयों से दूर रहने की प्रतिज्ञा करवाई। दोपहर बाद दिल्ली से श्रीमती शोभा जी ग्राम में पधारीं और ग्राम के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं के साथ ग्राम पंचायत की महिला सरपंच श्रीमती सन्तोष से उनके मकान पर मिली तथा शराबबन्दी प्रचार हेतु सहयोग देने की प्रेरणा दी। सरपंच महोदया ने शोभा जी के विचार सुनकर उनकी सराहना करते हुए इस समाज सुधार के कार्य में सहयोग देने का वचन दिया और उन्हें बताया कि खरावड़ में पंचायत की ओर से शराब का ठेका न खोलने का प्रस्ताव करके भेज रखा है, परन्तु ग्राम में निकट के ठेकों से अनुचित तथा गैरकानूनी रूप से शराब की बोतलें चोरी-छिपे बेची जाती हैं।

रात्रि को ८-३० बजे ग्राम की मुख्य चौपाल के पास प्रचार का आयोजन किया गया। सभा की भजनमण्डलियों ने प्रभावशाली ढंग से शराब की बुराइयों की जानकारी देकर इसे सेवन न करने का परामर्श दिया। इसके बाद श्रीमती शोभा जी ने उपस्थित नर-नारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम आर्यसमाज की ओर से बनाया गया है। आर्य उसे कहते हैं जो श्रेष्ठ हों तथा दूसरों के सुख दुःख में सम्मिलित रहें। आज शराब की महामारी से हरयाणा की जनता दुःखी है।

किसान-मजदूर अपनी कमाई शराब के नशे के लिए नष्ट कर रहे हैं और जब उनकी धर्मपत्नी उन्हें शराब पीने से रोकती है तो वे उनको पिटाई करते हैं और जो धन उनके बच्चों के पालन पोषण तथा शिक्षा आदि के लिए व्यय होना चाहिये उसे शराब खरीदने में बर्बाद कर देते हैं। इसी प्रकार शराबी तत्व ग्राम की बहू-बेटियों की इज्जत के ग्राहक बन रहे हैं। इन दुःखी नारियों की कोई सुनने वाला नहीं रहा। राज्य सरकार अपनी राजस्व की आमदनी बढाने के लिए प्रतिवर्ष शराब के ठेकों की वृद्धि कर रही है और शराबियों को अनुचित गतिविधियों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही नहीं कर पाती क्योंकि अधिकांश सरकारी अधिकारी तथा पुलिस कर्मचारी स्वयं शराब के नशे में अन्धे हो चुके हैं।

अतः आर्यसमाज ने अपनी पुरानी परम्पराओं के अनुसार इस संकट काल में महिलाओं के दुःख-दर्द को दूर करने का कार्य आरम्भ किया है। हम इस कार्य के लिए शहीद भगतसिंह, चन्द्रशेखर तथा रामप्रसाद बिस्मिल की भांति बडे से बड़ा बलिदान करने को तैयार हैं। यह शुभ कार्य हम नये वर्ष से पूरी शक्ति के साथ आरम्भ कर रहे हैं। आज पुनः हमारा राष्ट्र रावण तथा दुर्योधन जैसे राक्षसी सत्ताओं के युग की ओर जा रहा है। अतः हम सभी को मिलकर शराब रूपी राक्षस का वध करना होगा। इस प्रचार कार्य में आर्यसमाज के श्री दयानन्द आर्य, डा० राजसिंह आर्य, श्री भीमसिंह नम्बरदार आदि कार्यकर्त्ताओं ने तन, मन तथा धन से सहयोग दिया।

इसी प्रकार २० मार्च को रात्रि आठ बजे रोहतक के प्रसिद्ध ग्राम मकड़ौली कलां के नवनिर्मित आर्यसमाज मन्दिर में शराबबन्दी प्रचार अभियान का आयोजन किया गया। सभा कार्यालय के नवयुवक स्टेनो टाइपिस्ट श्री सत्यवान ने अपने ग्राम के अन्य आर्यसमाज के उत्साही कार्यकर्त्ताओं श्री करतारसिंह आर्य, श्री ऋषिपाल शास्त्री आदि के सहयोग से इस प्रचार कार्यक्रम को सफल करने के लिए सराहनीय परिश्रम किया। आर्यसमाज मन्दिर ग्राम के आर्य नर-नारियों तथा छात्र एवं छात्राओं से खचाखच भरा हुआ था और बाहर भी सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण आर्यसमाज के प्रचार को बडी श्रद्धा से सुन रहे थे। पं० ईश्वरसिंह तूफान के मनोहर भजनों के पश्चात् श्री सत्यव्रत शास्त्री ने श्रीमती शोभा जी का परिचय कराते हुए बताया कि ये आर्यसमाज के प्रकाण्ड विद्वान् स्वर्गीय पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार की सुपुत्री तथा आर्य नेता प्रो० शेरसिंह जी की धर्मपत्नी हैं जिन्होंने कन्या गुरुकुल देहरादून से शिक्षा पाकर आर्यसमाज तथा समाज सुधार के अनुकरणीय कार्य किये हैं। शराब रूपी जहर के रोग को समाप्त करने के लिए नई दिल्ली की सुखसुविधाओं से बाहर आकर शराब के विरुद्ध प्रचार अभियान ग्राम ग्राम में आरम्भ करने का निश्चय किया है।

श्रीमती शोभा जी ने नर-नारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द का हम पर बहुत बड़ा उपकार है जिन्होंने हमें जीने का मार्ग दिखाया। एक हजार बुझे हुए दीपक किसी अन्य दीपक को जला नहीं सकते परन्तु एक जलता हुआ दीपक हजारों दीपकों को जलाकर प्रकाश कर सकता है। स्वामी दयानन्द ने भी वेदाध्ययन करके स्वयं प्रकाशित होकर संसार को वेदज्ञान का प्रकाश दिया।

श्रीमती शोभा जी ने अपना व्याख्यान जारी रखते हुए दुःखमय शब्दों में कहा कि आज पुनः सत्ताधारी नेता रावण तथा दुर्योधन के कुमार्ग पर चलने का यत्न कर रहे हैं। अपनी जनता को विकास का

(शेष पृष्ठ ६ पर)

साम-सुधा शतक

॥ ३३ ॥

उसकी महिमा अपार है

ओ३म् त्वमस्य पारे रजसो व्योमन: स्वभूत्योजा अवसे धृषन्मन: ।
चकृषे भूमिं प्रतिमानमोजसोऽप: स्व: परिभूरेष्या दिवम् ॥

ऋ० मं० १/सू० ५२/मंत्र १२

जगव्यापी हे प्रभुवर मेरे,
तुम इस नभ के दोनों पार ।
छाये हो अपनी महिमा से,
करने हम सबका उपकार ।
सुतल-भूतल और स्वर्ग के,
भी तुम ही हो सिरजनहार ।
यथाभाव सबको विरचा है,
निज की लीला अपरम्पार ।

॥ ३४ ॥

आर्य और दस्यु

ओ३म् वि जानीह्यार्यान् ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान् ।
शाकी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन ॥

ऋ० मं० १/सू० ५१/मंत्र ८

जग वेत्ता हे ज्ञानी स्वामिन्
जान रहे तुम आर्य-अनार्य ।
धर्मनिष्ठ सत्संकल्पी हैं जो
उन्हें मानते हो तुम आर्य ।
लम्पट, कामी, क्रोधी, वंचक
दुष्कृतकर्त्ता दस्यु अनार्य ।
सत्कर्मों के बाधक जो जन
उनका करो नाश अनिवार्य
सत्प्रेरित करते तुम सबको
मैं भी बनूं सदा सत्कार्य ।

॥ ३५ ॥

उत्तम प्रतिष्ठायुक्त सदैव रखो

ओ३म् ऊर्ध्वो न: पाह्यंहसो निकेतुना विश्वं समत्रिणं दह ।
कृधी न ऊर्ध्वाञ्चरथाय जीवसे विदा देवेषु नो दुव ॥

ऋ० मं० १/सू० ३६/मंत्र १४

सबके ऊपर शोभ रहे तुम
श्रेष्ठ सकल गुण गण भंडार ।
पाप-ताप से कर मम रक्षा
दोष दहन कर कर अविकार ।
रस पूरित जीवन यापन हित
भरदो सद्गुण गण अम्बार ।
उत्तम बन उन्नति को पावें
देवों में हो मान जुहार ।

॥ ३६ ॥

भगवान् की मित्रता

ओ३म् त्वं न सोम विश्वतो रक्षा राजन्नघायत: ।
न रिष्येत् त्वावत: सखा ॥

ऋ० मं० १/सू० ९१/मंत्र ८

कांतिदायी हे ! प्रभुवर मेरे
इस जग के स्वामी भगवान् ।
करो हमारी रक्षा, नित ही
पाप निरत हैं जो अज्ञान ।
करे न पाप किसी से हम भी
करे न कोई हमें दुखमान ।
सभी भांति रक्षण दो हमको
तुम्हीं हमारे मित्र महान् ।
सुनते हैं हम तो प्रभुवर नित
मित्र न तेरा हो क्षयमान ।

—प्रो० धर्मचन्द्र विद्यालंकार
पलवल ।

'वैदिक धर्म धरा पर फैले'

सदियों से यह भारत प्यारा,
रहा परतन्त्रता से आबाद ।
भारत मां असहाय हुई थी,
वैरी था निर्मम-प्रतिबद्ध ।

गहन तिमिर छाया था, चारों,
ओर, कालिमा रही भयानक ।
ऐसे ही युग में ज्योतिर्मय,
किरण एक निकली थी अचानक ।

उसी किरण ने भारत मां को,
दिया एक अनुपम संन्यासी ।
जिसने नष्ट किया धरती की,
युगों-युगों से घिरी उदासी ।

ली युग ने नूतन अंगड़ाई,
वेदों का फैला आलोक ।
हुई प्रफुल्लित भारत-माता,
ऋषिवर के सत्कर्म विलोक ।

सारे भारत में नव जागृति,
की अरुणिम—आभा छाई ।
नए जागरण की वेला में,
जगी जवानों की तरुणायी ।

वेद पथों पर बढे सभी हम,
बजा पुन: वेदों का डंका ।
धरती पर अज्ञान-अनय की,
जली पुन: रावण की लंका ।

आज पुन: सारे भारत में,
बढ़ता है अन्याय—अनय ।
भारत की धरती पर होता,
दानवता का सूर्य—उदय ।

आर्य सपूतो ! उठो, बढो तुम
बनो वेद-पंथ के अनुगामी ।
दूर करो भारत माता की,
निर्मम सी सांस्कृतिक गुलामी ।

ऋषिवर, दयानन्द के स्वप्नों—
को निर्भय साकार करो ।
सहमी-सहमी मानवता है,
उसका तुम उपकार करो ।

सैनिक हो तुम ! दयानन्द के,
दनुज वृत्तियों से टकराओ ।
तिमिरमयी यह रजनी काली,
महिमण्डल से दूर भगाओ ।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का,
गूंजे वसुधा पर जयगान ।
वैदिक धर्म धरा पर फैले,
भारत अपना बने महान् ।

सत्य-धर्म फैलाएंगे हम,
आओ हम सब लें संकल्प ।
मानवता की रक्षा का है,
बचा न कोई अन्य विकल्प ।

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर जारी

आर्यसमाज का घोषणा-पत्र

आर्यसमाज की सर्वोच्च संस्था 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' आर्य शब्द को परिभाषित करते हुए कहती है कि आर्य वह लोग हैं जो किसी पंथ के अनुयायी न हों, जो जातिवाद को न मानते हों और जिनका इतिहास शुद्ध चरित्र शिष्टाचार और विवेकशीलता से परिपूर्ण हो। यह परिभाषा आर्यसमाज के संस्थापक, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा आर्य शब्द की व्याख्या पर आधारित है।

१४वें अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन के शुभ अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा समस्त विश्व के आर्यसमाजियों का आह्वान करती है कि वे आर्य शब्द की इस वास्तविक परिभाषा के अनुसार आचरण के संकल्प को दोहराये और वास्तव में आर्य कहलाने के अधिकारी बनें।

मातृ-भूमि की धारणा

आर्य धर्म (वैदिक धर्म) का अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण है परन्तु इस दृष्टिकोण के अवसर पर आर्य धर्म लोगों की भौगोलिक इकाइयों पर आधारित राष्ट्रीय पहचान की अवहेलना नहीं करता। मातृ-भूमि की धारणा आर्यों के लिए नई नहीं है। अथर्ववेद के 'भूमि-सूक्त' में इसकी सजीव व्याख्या की गई है। खण्ड १२ मन्त्र २७ के अनुसार जिस पृथ्वी पर हमारे उपकार के लिए फल, फूल पत्र आदि वृक्ष उत्पन्न होते हैं उस भूमि की हम सावधानी से सदा रक्षा करते रहें।

आर्यावर्त (भारत) नामक भौगोलिक इकाई पर आर्य सबसे पहले निवासी थे। राष्ट्र की एकता तथा अन्य विशेषताओं की रक्षा के लिए इन्होंने किसी भी बड़े से बड़े बलिदान को महान् नहीं समझा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा यह प्रयत्न करेगी कि भारतीय संविधान में संशोधन करके आर्यवर्त को देश के मूल नाम की तरह अनुच्छेद (१) में शामिल किया जाए तथा आर्यों को आक्रमणकारी और आर्यवर्त के मूल निवासी नहीं हैं कह कर इतिहास का अशुद्ध वर्णन कानून की दृष्टि में एक दण्डनीय अपराध माना जाए।

धर्म चर्चा

धर्म से हमारा अभिप्राय आचार संहिता से है। कुछ लोग इसका अभिप्राय सर्वोच्च प्राकृतिक सत्ता में विश्वास और एक निश्चित पद्धति के अनुसार उसकी पूजा से लेते हैं। इस प्रकार के लोग अपने धार्मिक विश्वासों को पूर्ण समझते हैं जिनमें किसी भी कीमत पर परिवर्तन नहीं किया जा सकता। आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती धर्म के इस दृष्टिकोण पर समस्त मुख्य धर्म समुदायों के उच्चाधिकारियों में आपसी विचार विमर्श के इच्छुक थे। सार्वदेशिक सभा उन्हीं प्रयत्नों को पुन सचेत करना चाहती है। यह सब सत्य है कि राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रकार का विचार विनियम आसान कार्य नहीं है, परन्तु सभा की दृष्टि में विश्व को धार्मिक कट्टरतावाद की बुराइयों से बचाने का यही एकमात्र तरीका है। अत: इस दिशा में कार्यरत अन्य विश्वव्यापी सगठनों की सहायता लेकर सार्वदेशिक सभा का यह संकल्प है कि निर्धारित परिणाम प्राप्त करने के लिए अब गम्भीर प्रयत्न किए जाने चाहियें।

संस्कृति

संस्कृति से हमारा अभिप्राय लोगों की मानसिक शुद्धता से है जो कि उनके व्यवहारों, भाषाओं, परम्परागत रीतियों, विश्वासों और अन्य कार्यकलापों में दृष्टिगोचर होती है। संस्कृति धर्म का पर्यायवाची नहीं है। परन्तु भिन्न-भिन्न धार्मिक विश्वास, संस्कृति के विकास या ह्रास में योगदान अवश्य करते हैं। आर्यावर्त में रहनेवाले लोगों की एक विशेष संस्कृति है। नेपाल के वर्तमान संविधान में भी राजा को आर्य संस्कृति का रक्षक कहा गया है जिसके लिए सार्वदेशिक सभा नेपाल के लोगों तथा सरकार को हार्दिक बधाई देती है।

पंथ निरपेक्ष संस्कृति

भारत की संस्कृति को पंथ निरपेक्ष संस्कृति कहा जाता है। भारत के संविधान में सन् १९७६ के संविधान संशोधन के फलस्वरूप 'पंथ निरपेक्ष' शब्द भी जोड़ा गया था परन्तु कहीं पर भी इस शब्द को परिभाषित नहीं किया गया। 'पंथ निरपेक्ष' शब्द पर विस्तृत चर्चा करने के हर प्रकार के प्रयत्नों का सार्वदेशिक सभा स्वागत करेगी और इसमें भाग लेकर हर प्रकार का सम्भव योगदान भी दिया जाएगा।

हमारे कुछ राजनीतिक नेताओं की दृष्टि में भी 'पंथ निरपेक्ष' से अभिप्राय धर्म-विरोध से नहीं है, कि इसे सर्व-धर्म सम्भाव की संज्ञा देते हैं जिससे समस्त धार्मिक विश्वासों के लिए समान आदर की भावना पैदा हो?

सैद्धान्तिक रूप से सार्वदेशिक सभा इस दृष्टिकोण का विरोध नहीं करती जिस प्रकार से हमारे देश में पंथ निरपेक्षता का पालन किया गया है वह दोहरे माप की प्रक्रिया का सूचक हुआ है।

सार्वदेशिक सभा अपने इस विचार के समर्थन में भारतीय संविधान के अनुच्छेद ४४ तथा विधि आयोग के पूर्व सदस्य श्री टी० के० टोपे की टिप्पणी का उल्लेख करती है। अनुच्छेद ४४ के अनुसार समस्त भारत के नागरिकों को भारत सरकार एक समान नागरिक संहिता देने के लिए प्रयत्नशील रहेगी। श्री टोपे ने इस बात पर गहरा शोक व्यक्त किया है कि समस्त नागरिकों के लिए समान संहिता देने में भारत सरकार की अरुचि भी इस पर आधारित है कि इस कार्य से उन्हें मुसलमानों का समर्थन चुनावों में नहीं मिलेगा।

मुसलमान लोग अपने इस्लामिक कानून से किसी भी प्रकार हटाने का विरोध करते हैं क्योंकि इसमें उन्हें एक ही समय पर चार पत्नियां रखने की अनुमति दी गई है। इस सम्बन्ध में उनकी जिद (कठोर हृदयता) संविधान की पंथ निरपेक्ष पद्धति का हनन करती है। इन लोगों को अन्य नागरिकों के समान अधिकार एवं कर्त्तव्य देने के लिए हमारे शासक दृढ़ निश्चय लेने में असमर्थ हैं।

तुष्टीकरण नीति

आर्यावर्त के मुख्य समुदाय से भिन्न इस मुस्लिम समुदाय के लिए शासकों की तुष्टीकरण की नीति के कारण ही १९४७ में मजहब पर आधारित पाकिस्तान बना। इस पाकिस्तान में से एक अन्य राज्य बंगला देश बना जो कि मजहब पर ही आधारित है।

इस तुष्टीकरण की नीति ने जिस पर आज भी हमारे शासक चल रहे हैं, एक बार फिर उसी प्रकार के हालात बना दिए हैं, जैसे कि इस विभाजन से पहले थे। वही पाकिस्तान आज हमारे देश के आन्तरिक सामाजिक एवं राजनैतिक आन्दोलनों को सुलगा रहा है। इसके विपरीत हमारे शासकों को पाकिस्तान के विरुद्ध बयानबाजी या आरोप लगाने से ही सन्तोष हो जाता है। सार्वदेशिक सभा का सुझाव है कि सीधी प्रतिक्रियात्मक कार्यवाही से ही इस संकट का निवारण होगा।

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने वोट बैंक बनाने की आकुलता में मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू करके देश को गृह युद्ध के कगार पर खड़ा कर दिया है। हमें इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि हमारे समाज में हिंसात्मक प्रवृत्तियां राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के समय में सर्वाधिक थी और ये पुन: प्रारम्भ नहीं होंगी, क्योंकि वर्तमान सरकार ने भी अभी देश को इस संकट से उभारने के लिए कोई ठोस निर्णय नहीं लिए।

राष्ट्रवाद

वर्तमान परिस्थितियों से जूझने के लिए देश को योग्य ईमानदार तथा उत्तरदायी नेतृत्व की आवश्यकता है। सार्वदेशिक सभा यह महसूस करती है कि द्विराष्ट्रवाद की धारणा ही इस वर्तमान संकट के लिए जिम्मेदार है। अनेकता से भरे राष्ट्र में इस प्रकार के सकट शीघ्र

पैदा हो जाते हैं। इसलिए हम समान संस्कृति पर आधारित राष्ट्रवाद को विकसित करने पर बल देते हैं।

श्री राम जन्म-भूमि

यदि इस प्रकार के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का पूर्ण विकास आज तक कर लिया गया होता तो राम जन्मभूमि का विवाद इस खतरनाक अवस्था तक न पहुंचता। ऐसा प्रतीत होता है कि आज के मुल्ला मौलवी राष्ट्रीय अपमान की उस घड़ी को यादगार बनाना चाहते हैं जब विदेशी आक्रान्ताओं ने इस देश को लूट कर खा जाने के हर प्रकार से प्रयत्न किए।

सार्वदेशिक सभा इस देश के किसी भी वर्ग के लोगों की सामुदायिक भावना को ठेस पहुँचाना नहीं चाहती परन्तु राष्ट्रीय सम्मान को किसी भी कीमत पर खोना पसन्द नहीं करेगी।

मुस्लिम तथा ईसाई सम्प्रदाय के लोग अपने को अल्पसंख्यक मानते हैं और संविधान उन्हें कुछ विशेषाधिकार देता है, परन्तु अल्पसंख्यक शब्द को वह कहीं भी परिभाषित नहीं करता और न ही कोई प्रतिशत संख्या निर्धारित की गई है जिससे कम रहने पर एक समुदाय के लोगों को अल्पसंख्यक माना जाए।

साधारणत: आधे से कम संख्या वाले समूह को अल्पसंख्यक घोषित करके हमारे संविधान ने विभाजन का कदम उठाया है अत: इस प्रकार के प्रावधानों को जितनी जल्दी हटा दिए जाए, इस देश की एकता के लिए उतना ही अच्छा होगा।

सार्वदेशिक सभा शिक्षा प्रणाली में भी कुछ परिवर्तन करवाने के लिए प्रयत्नशील रहेगी जिससे इस प्रकार की जागृति जनता से पैदा की जा सके कि सभी हिन्दू (आर्य) चाहे वह अभी हिन्दू हैं या मुसलमान और ईसाई धर्मों में जा चुके हैं—सांस्कृतिक एवं वंश परम्परागत रूप में एक हैं। सभा इस बात के लिए भी सरकार पर दबाव डालेगी कि भारतीय संविधान के वे सभी अनुच्छेद जो नागरिकों को धार्मिक समूह, क्षेत्रीयता जाति और भाषा के आधार पर बांटते हैं, उन्हें तुरन्त संविधान में संशोधन करके हटाया जाए।

समाज के पुनर्निर्माण के लिए सामाजिक व्यवस्था

वर्तमान परिस्थितियों का गहरा अध्ययन करने के फलस्वरूप सार्वदेशिक सभा आर्य समाज को इस प्रकार पुनर्गठित करना चाहती है जिससे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से जुड़े धार्मिक रूप से स्वतन्त्र तथा शोषण रहित समाज के निर्माण के लिए प्रयत्न तेज किए जा सकें, जिससे सबको रोजगार उपलब्ध हो, प्राकृतिक संसाधनों का उच्चतम उपयोग सम्भव हो और समाज के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ समस्त विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए प्रयत्न किए जाए।

वेदों में वर्णित वर्णाश्रम पद्धति पर आधारित सामाजिक व्यवस्था को इसके प्राचीन शुद्ध रूप में लागू करने से ही इन उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए एक ऐसी कानून पालक प्रक्रिया की भी आवश्यकता है, जो इस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था की रक्षा रक्षा के साथ-साथ मनुष्यों में बढ़ती पाशविक प्रवृत्तियों पर नियन्त्रण और उनके सामूहिक विकास के लिए जिम्मेदार हो।

भारतीय संविधान के निर्माताओं ने अनुच्छेद ३८ में एक ऐसी ही सामाजिक व्यवस्था की कल्पना की है जिसमें सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय राष्ट्रीय जीवन की सभी संस्थाओं को अनुप्राणित करे। इस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था की स्थापना और संरक्षण के द्वारा लोककल्याण का नैतिक दायित्व सरकार पर डाला गया है।

सार्वदेशिक सभा यह स्पष्ट कहना चाहती है कि इस अनुच्छेद के पीछे वर्णाश्रम पद्धति की ही भावनाएं हैं, इसलिए सरकार को अपने नैतिक दायित्वों का पालन करने के लिए अविलम्ब इस पद्धति का शुद्ध प्रचार एवं प्रसार करके इसे राष्ट्रीय प्रणाली बनाने के लिए प्रयत्न करने चाहिए।

सार्वदेशिक सभा वर्णाश्रम पद्धति पर आधारित सामाजिक व्यवस्था को समस्त मानवता के कल्याण के लिए लागू कराने के विशेष प्रयास करेगी।

सार्वदेशिक सभा प्रजातन्त्र में अपना पूर्ण विश्वास व्यक्त करती है तथा आर्थिक ताकतों और तुष्टीकरण जैसी नीतियों का चुनावों में प्रयोग करने का विरोध करती है। देश का चुनाव तन्त्र हर प्रकार के प्रभावों से मुक्त होना चाहिए।

हम आशा करते हैं कि १४वें अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर जारी इस घोषणा पत्र का सरकार सावधानी से अध्ययन करे तथा अपनी नीतियों में उक्त परिवर्तन करके शुद्ध राष्ट्रवादी विचारधारा को प्रोत्साहित करे। राजकार्यों तथा शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी, जिसे हमने एक सम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकार किया है तथा अन्य भारतीय भाषाओं को उचित स्थान दिया जाए।

सीमान्त क्षेत्रों में घुसपैठ बन्द करने और देश के अन्दर राजद्रोही ताकतों को उखाड़ने जैसे तरीकों से ही वर्तमान हिंसा को रोका जा सकता है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के प्रेमी आर्य बन्धुओं की सेवा में

सभी स्नातक बन्धुओं को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल कांगड़ी की पुरानी भूमि को महानदी गंगा के कटाव से बचाने के लिए तथा वहां अवशिष्ट रूप में विद्यमान भवन के पुनर्निर्माण का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। गुरुकुल और विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने सर्वप्रथम कटाव से बचने के लिए बांध निर्माण हाथ में लिया है। २४ फरवरी १९९१ को बांध निर्माण का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। इस कार्य का नेतृत्व गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने किया और डा० हरिप्रकाश आयुर्वेदालंकार, विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों तथा गुरुकुल विद्यालय के ब्रह्मचारियों तथा गुरुकुल के अन्य अनेक कर्मचारियों ने श्रमदान द्वारा इसमें योगदान किया। भवन के चारों ओर की सफाई की जा चुकी है और यज्ञशाला के आस-पास पेड़ लगा दिये गये हैं। ताकि इसका उद्धार कलात्मक ढंग की रचना के रूप में हो सके। भवन के पुनर्निर्माण और उसकी भी विस्तार की योजना तैयार की गई है जिससे गुरुकुल विद्यालय विभाग की छठी से दसवीं तक कक्षायें वहीं लगायी जा सकें।

सम्पूर्ण लक्ष्य यह है कि पुरानी भूमि में पुन: गुरुकुल के ब्रह्मचारियों तथा आचार्य, अध्यापकों की सजीव गतिविधि आए और हम सभी लोगों की पुरानी स्मृतियों का साकार रूप ले।

यद्यपि कार्य प्रारम्भ हो गया है और हमारी आकांक्षाएं साकार होने लगी हैं, परन्तु इस कार्य के लिए अर्थ और श्रम दोनों की आवश्यकता है। गुरुकुल से सम्बन्धित सभी लोगों से तथा प्रशासन से भी इस कार्य में सहयोग प्रदान करने का अनुरोध किया गया है और स्थिति बहुत आशाजनक है परन्तु स्नातक वर्ग का विशेष दायित्व है कि वे स्वयं आर्थिक सहयोग तो प्रदान करें ही, श्रमदान के लिए भी समय देने की कृपा करें तथा अपने क्षेत्र के धनी मानी लोगों से सम्पर्क कर अर्थ संग्रह में सहयोग करें। इस सम्बन्ध में कृपया श्री सुभाष विद्यालंकार, कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (हरिद्वार) तथा श्री विद्यासागर विद्यालंकार, ए-८४२ राणा प्रताप बाग, दिल्ली-७ से सम्पर्क करें।

विश्वास है कि कुलमाता के पुराने गौरव को लौटाने और उसके आदर्शों की प्रतिष्ठा के लिए आपका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

आपके कुलबन्धु

सुभाष विद्यालंकार	विद्यासागर विद्यालंकार
कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता	ए-८/४२ राणा प्रताप बाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार	दिल्ली-११०००७

हरयाणा के किसानों का व्यापारियों द्वारा जबरदस्त शोषण

राजाओं का भी राजा कठोर श्रम करके अन्नादि खाद्य पदार्थों का उत्पादन करने वाला, मनुष्यों का पेट भरने वाला यह भोला किसान आज बड़ा दुःखी है। इस की ओर किसी राजनैतिक अथवा धार्मिक नेता का ध्यान नहीं। यह कितनी विचित्र वार्ता है। फसल के समय किसान उसे बेचने अनाज मण्डी में ले जाता है और फिर किसान की जिन्स खरीदने उस की बोली बोलनेवाले ग्राहक व्यापारियों की घण्टों प्रतीक्षा करता रहता है। जब व्यापारी लोग एक सिरे से किसानों के माल को बोली बोलने लगते हैं तो भोले किसान उस समय उनके रहम-कर्म पर निर्भर हो उनका मुंह ताकने लग आते हैं, और देखते हैं कि उन का भाग्य का निर्णय यह लोग बोली चढ़ाकर करते हैं या फिर एक-दो बोली बोल एक-दो-तीन कह कर कम भाव में छोड देते हैं और किसान को मजबूरी में अपनी जिन्स बेचनी पड़ती है। जबकि व्यापारी लोगों की और आढती (दलाल) की परस्पर सांठ-गांठ होती है। जिस ने जितना माल खरीदना होता है और जहां उसे वह ठीक जचता है वह अपने साथियों को गुप्त सकेत कर अपनी मनमानी बोली बोल उसे छुडवा लेता है। दूसरे व्यापारी वहां थोड़े शान्त रहते हैं। ऐसा सिलसिला बना हुआ है, और यह सब मैंने देखा-सुना तथा वहां जाकर स्वय अनुभव किया है। मैं किसान का बेटा हू। सत्य बात तो यह है, कि इस देश में मजदूर किसान निर्धन लोगों का नही पूंजीपत्तियो का शासन है। चाहे कोई भी सरकार हो इन के इशारों पर चलती है इसका विशेष कारण यह भी है कि चुनाव के समय यही लोग राजनैतिक दलों को बडा धन देते हैं, और फिर कोई भी सरकार इन व्यापारियों को किसानो द्वारा उनके माल से अधिक लाभ अर्थात् उनका शोषण करने, उनके प्रति अन्याय करने से वह उनको रोक नही सकती। उन पर किसी भी प्रकार का अकुश लगा नहीं सकती। ऐसा अन्याय किसानों के साथ बहुत समय से हो रहा है, पिछले वर्ष जब किसानों की सरसों की फसल मण्डी में आई तो रोहतक आदि के व्यापारी लोगों ने किसानों से ५०० रुपये प्रति क्विंटल के भाव से खरीद कर वहीं १३०० रुपये प्रति क्विंटल के भाव से बेची। खूब भाव कमाया इस बार फिर इन व्यापारियों के वही हथ-कण्डे, दस दिन पहले ९५० का भाव था जब किसानों की सरसों मण्डी में आनी प्रारम्भ हुई तो फिर भाव घटाते-घटाते ६०० रुपये प्रति क्विंटल तक कर दिया, मैं स्वय ३० क्विंटल सरसों रोहतक नई मण्डी में बेचने गया था। वहां किसानों की दुर्दशा देखकर मुझे बडा दुःख हो रहा था, किसान बड़े दुखी और परेशान थे। उनके साथ प्रति वर्ष फसल के समय यह अन्याय क्यों हो रहा है। मैंने किसानों के मध्य में उन व्यापारी लोगों से कहा कि राजाओं के राजा किसानों का आज जो जबरदस्त आप लोग शोषण कर रहे हो यह भविष्य में क्रांति का एक कारण बनेगा। लोकसभा भङ्ग होते ही आप लोगों ने किसानों का अपनी मन मर्जी से खरीदना शुरु कर दिया है। थोड़ा लाभ इनको मिलना चाहिए था। भविष्य में यही सरसों आप ने १२/१३ सौ रुपये प्रति क्विंटल बेचकर खूब लाभ कमाना है। सो हरयाणा सरकार शीघ्र इस ओर ध्यान दे, यदि वह इन किसानों की हितैषी है। अन्यथा किसान लोग इन चुनाव में अपना मत किसी को नहीं देंगे अपने घर बैठे रहेंगे, हरयाणा के किसानों का संगठन हो, इनकी यूनियन बने, राजनैतिक गण आगे आये कौन राजनैतिक अथवा धार्मिक नेता आगे आकर अपने साहस का परिचय देता है और देशबन्धु चौ० छोटूराम जी की भांति किसानों का सच्चा हितैषी बनता है। प्रभु इन भोले किसानों की रक्षा करे इनको न्याय दिलाये।

डा० रघबीर आर्य गो प्रेमी, गांव कलावड़
संचालक—अखिल भारतीय गोशाला पहरावर

आर्यसमाज की भूमिका

पंजाबी विश्वविद्यालय के डा० शिवकुमार गुप्ता ने स्वतन्त्रता-सग्राम में आर्यसमाज की भूमिका को समीक्षा की और कहा कि आर्य समाज ने शिक्षा-सस्थाएं खोली, बाल-विवाह का विरोध किया और अपने अनुयायियो पर पाबन्दी लगाई कि वे २५ वर्ष से कम लड़के और १६ वर्ष से कम लड़की की शादी न करे। विधवा-विवाह का प्रचार किया, पर्दा-प्रथा समाप्त की तथा सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए आंदोलन चलाया।

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय की यज्ञशाला में यज्ञ व्यवस्था तथा हिन्दी में पत्रव्यवहार करने की मांग

रोहतक १९ मार्च। कार्यालय सवाद दाता को रोहतक शहर के धार्मिक तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के उपकुलपति ब्रिगेडियर श्री ओमप्रकाश जी चौधरी से उनके कार्यालय में भेंट की तथा उन्हे एक ज्ञापन देकर मांग की गई कि महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में समस्त पत्रव्यवहार राष्ट्रीय भाषा में करने का आदेश देवें क्योंकि इस विश्वविद्यालय के साथ महान् समाज सुधारक महर्षि दयानन्द का नाम जुडा हुआ है जिन्होने गुजराती होते हुए हिन्दी भाषा को अपनाया और अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी भाषा में लिखे।

उपकुलपति महोदय को विश्वविद्यालय मे बनाई गई यज्ञशाला में दैनिक यज्ञ की व्यवस्था हेतु एक विद्वान् पुरोहित द्वारा करने का अनुरोध किया गया और उन्हे इस पवित्र कार्य में रोहतक की आर्यजनता की ओर से पूरा सहयोग देने का वचन दिया गया।

उपकुलपति महोदय ने शिष्टमण्डल को बताया कि वे इन मांगों पर सहानुभूति पूर्वक विचार करके आवश्यक पग उठाया जावेगा और समय मिलने पर आर्यसमाज के अधिकारियो से विस्तार मे विचार विमर्श करूँगा। इस शिष्ट मण्डल मे महात्मा रमणमुनि वैदिक साधनाश्रम, स्वामी अमरानन्द सोऽम् आश्रम, श्री महावीर शास्त्री आर्यसमाज प्रेमनगर रोहतक, श्री सुरेशकुमार आर्य सैनीपुरा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय से श्री केदारसिंह आर्य आदि सम्मिलित हुए।

शान्ति महायज्ञ

आर्यसमाज के प्रसिद्ध कर्मठ कार्यकर्त्ता चौ० हरफूलसिंह के परिवार में आदरणीय मा० धर्मवीर आर्य ग्राम भदानी (रोहतक) की पूज्या माता श्रीमती धर्मकौर का दिनांक ७-३-९१ को ८० वर्ष की अवस्था में आकस्मिक निधन हो गया। उसके उपलक्ष्य में दिनांक १७-३-९१ को उनके परिवार में एक शान्ति महायज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें पारिवारिक सदस्यों के अतिरिक्त झज्जर के वरिष्ठ अध्यापक, पं० मनुदेव शास्त्री डावावास, प० आनन्ददेव शास्त्री झज्जर, श्री आर्यव्रत जी शास्त्री रोहतक आदि विद्वानों ने भाग लिया। पं० सुदर्शनदेव आचार्य वेदप्रचाराधिष्ठाता आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा रोहतक का वैदिक प्रवचन हुआ। दिवंगत आत्मा को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई। इस शान्ति महायज्ञ का उत्तम प्रभाव रहा। २५१ रुपये गुरुकुल झज्जर को तथा १०१ रुपये सर्वहितकारी पत्र को दान दिया गया।

—फतेसिंह भण्डारी गुरुकुल झज्जर (रोहतक)

अमर सपूतो आओ

भारत माता पुकार रही है, धर्म का ध्वज उठाओ
देश धर्म जाति के हित में, अमर सपूतो आओ

जल रही हैं सीता सावत्री, गीता और मनीता
आत्म-हत्या करती देखी, रीता और सबीता
लगा कलंक देहेज प्रथा का, मिलकर इसे हटाओ
देश धर्म जाति के हित में, अमर सपूतो आओ।

मानव बनकर मानवता का, सबको पाठ पढाये
नफरत की दीवारों को हम, तहस-नहस कर जायें
मिलकर गाये भारत मां का, नारा एक लगाओ
देश धर्म जाति के हित में, अमर सपूतों आओ।

भड़काऊ अश्लील जो शिक्षा, यह खत्म हो जाये
मदिरा मांस चाय तम्बाकू, कोसो नजर न आये
महापुरुष बन आज धरा पर, अपने कदम बढाओ
देश धर्म जाति के हित मे, अमर सपूतो आओ।

गौरव का इतिहास हमारा, पुनः आज दोहराये
भूले बिछडे दीन जनों को, अपने गले लगाये
महेश यह देश तभी बचेगा, शिष्टाचार दिखाओ
देश धर्म जाति के हित मे, अमर सपूतो आओ।

भारत माता पुकार रही है, धर्म का ध्वज उठाओ।

—महेश आर्य पन्हैड़ा खुर्द, त० बल्लबगढ (फरीदाबाद)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार विज्ञप्ति

गत वर्ष दिसम्बर में दिल्ली में आयोजित आर्य महासम्मेलन में निश्चय किया गया था कि भारतवर्ष के सभी गुरुकुलों की पाठविधि समान करने पर विस्तार से विचार विमर्श किया जाए। तब यह भी घोषणा की गई थी कि इस प्रकार का विचार विमर्श गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव के अवसर पर १० अप्रैल के आसपास किया जाएगा। अब निश्चय किया गया है कि यह विचार संगोष्ठी आगामी ८ से १० अप्रैल के बीच गुरुकुल कांगड़ी में आयोजित की जाए। सभी गुरुकुलों के आचार्यों एवं संचालकों से निवेदन है कि वे इस संगोष्ठी में भाग लेकर अपने अमूल्य सुझाव देने की कृपा करें ताकि जुलाई १९९१ से प्रारम्भ होनेवाले शिक्षा सत्र से समन्वित पाठविधि पर क्रियान्वयन किया जा सके।

सूचनार्थ यह भी निवेदन है कि ऐसी समान पाठविधि बनाने का विचार है जिसमें संस्कृत, धर्मशिक्षा, वैदिक वाङ्मय की शिक्षा के साथ साथ हिन्दी माध्यम से आधुनिक विषयों की भी शिक्षा दी जा सके ताकि ब्रह्मचारी प्राचीन भारतीय शास्त्रों और आधुनिक विषयों का ज्ञान समान रूप से प्राप्त कर सकें। यदि इस सम्बन्ध में कोई अन्य जिज्ञासा हो तो सम्बद्ध व्यक्ति "कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार-२४९४०४ से पत्र व्यवहार कर सकते हैं। सभी गुरुकुलों के आचार्यों एवं संचालकों को इस संगोष्ठी हेतु अलग से निमन्त्रित किया जा रहा है किन्तु सभी गुरुकुलों के पते ज्ञात न होने के कारण यह विज्ञप्ति प्रकाशित की जा रही है ताकि अधिक से अधिक गुरुकुलों के संचालक/आचार्य इस सम्मेलन में भाग ले सकें। इस संगोष्ठी में पधारने वाले महानुभावों के निवास और भोजन की समुचित व्यवस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में रहेगी।

कुलपति/मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

अंग्रेजी में काम करनेवाले अधिकारी निलंबित होंगे

कानपुर, (निस)। राज्य सरकार के जिस कार्यालय में अंग्रेजी का प्रयोग होता पाया जाएगा उस विभाग के विभागाध्यक्ष को निलंबित करने में विलम्ब नहीं किया जायेगा। यह घोषणा उ०प्र० के मुख्यमन्त्री मुलायमसिंह यादव ने यहां से ६० मील दूर बिल्होर कस्बे में आयोजित एक चुनाव सभा में की। —दैनिक वीर अर्जुन से

रेवाड़ी में नशाबन्दी अभियान शुरू

रेवाड़ी, (निस)। रेवाड़ी जिले में नशाबन्दी अभियान शुरू कर दिया गया है। केन्द्रीय सरकार के तत्त्वावधान में एक जादूगर तथा दूसरे सम्बन्धित कार्यकर्त्ताओं की एक टीम एक सप्ताह के दौरे पर जिले के गांवों में नाना प्रकार के मनोरंजन कार्यक्रम रख करके लोगों को नशाबन्दी के लिए प्रेरित कर रही है। इस अभियान का उद्घाटन गत दिवस नजदीकी गांव बिठवाना में जिले के उपायुक्त श्री सरबनसिंह ने किया। एक भारी जनसमूह को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि नशा से आर्थिक स्थिति के साथ-साथ मानव मात्र के आचरण पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। उन्होंने नशा की आदत को समाज के उत्थान में रुकावट के साथ-साथ कलंक बताया।

श्री सिंह ने कहा कि सिगरेट बीडी और शराब पीने की आदत से कई एक बुराइयों एवं कुरीतियों को जन्म मिला है। उन्होंने जनता से नशा से दूर रह कर जीवन यापन करने की सलाह दी।

—दैनिक वी अर्जुन से

आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय का वार्षिक उत्सव

आर्ष पाठविधि के अनुसार सम्पूर्ण कार्य करने की शिक्षा देने वाले एकमात्र आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला का वार्षिक उत्सव ३०, ३१ मार्च १९९१ को बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर अनेक वैदिक विद्वान्, आर्य उपदेशक, आर्य साधु-संन्यासी, भजनोपदेशक पहुंच रहे हैं।

घोषणापत्रों में शराबबन्दी सम्मिलित करें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की राजनैतिक दलों से मांग

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने अपने एक प्रेस वक्तव्य द्वारा सभी राजनैतिक दलों के नेताओं से अनुरोध किया है कि वे अपने अपने दल के लिए चुनाव घोषणा पत्रों में जहां अनेक कल्याणकारी कार्यक्रम चालू करने का वचन देंगे वहां पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की भी घोषणा करें क्योंकि शराबबन्दी सभी कार्यक्रमों से अधिक कल्याणकारी योजना है। आपने स्मरण करवाया है कि शराबबन्दी करनेवाले राज्यों को उसकी घाटापूर्ति के लिए केन्द्रीय सरकार भी ५०% से अधिक अनुदान दे सकती है। यदि शराब के बढते हुए प्रचार पर रोक न लगाई गई तो सारे विकास कार्य ठप हो जावेंगे।

पुस्तक-समीक्षा

महामानव श्रीराम के जीवन संस्मरण

संकलनकर्ता—स्वामी केवलानन्द सरस्वती
प्रकाशक—ज्ञानसागर वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र
ज्ञानसागर कृष्णगंज १५, अजमेर
मूल्य—दो रुपये।

प्रस्तुत संकलन में स्वामी केवलानन्द जी ने मर्यादा पुरुषोत्तम दाशरथि राम के पावन संस्मरण वाल्मीकीय रामायण के आधार पर संकलित किए हैं। स्वामी जी ने वाल्मीकीय रामायण के मूल श्लोक उद्धृत करके वैदिक मान्यताओं की पुष्टि की है। रामायण काल में भी श्री राम लक्ष्मण आदि राजकुमार तथा अन्य प्रजाजन भी वैदिक रीति से सन्ध्योपासन तथा अग्निहोत्र एवं गायत्री जप प्राणायाम आदि करते थे। यज्ञानुष्ठान आदि धार्मिक कार्य गृहस्थ जन पत्नी-सहित करते थे। सुप्रसिद्ध राक्षस राजा रावण भी वेदादि शास्त्रों का पण्डित था किन्तु अधर्माचरण के कारण राक्षस कहलाया।

रामायण की शिक्षा, ईश्वरभक्ति, राष्ट्र की उन्नति के अनेक भजनों का संग्रह किया है और अन्त में आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की झांकी प्रस्तुत की है। सब मिलाकर संग्रह अच्छा है। —वेदव्रत शास्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

नारा लगाकर शराब में बेहोश रखकर राजगद्दी पर बैठे रहना चाहते हैं। वे शराब की बिक्री से आमदनी बढ़ाकर विकास नहीं अपितु विनाश कर रहे हैं।

यदि इसी प्रकार शराब पिलाई जाती रही तो हरयाणा के लोग ५० वर्ष की आयु तक पहुंचने से पूर्व ही इस संसार को छोड़ जाया करेंगे और सरकार को वृद्धावस्था पेन्शन भी नहीं देनी पड़ेगी।

सरकार विकास के कार्यों का नाम लेकर गरीबी दूर करने के लिए साधारण जनता को भ्रम में डाल रही है क्योंकि अधिक से अधिक शराब पिलाकर गरीबी को दूर करने की बजाय गरीबों को ही मिटाना चाहती है।

आपने आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को स्वतन्त्रता प्राप्ति आंदोलन की भांति शराबबन्दी आन्दोलन जोकि एक आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्ति आन्दोलन कहा जा सकता है को सफल करने के लिए बलिदान करने के लिए तैयार रहें। शराब घातक वस्तु है। शराब के विक्रेता देशद्रोही हैं। अतः हमें उनके साथ लड़ाई लड़नी ही पड़ेगी। इस लड़ाई में हमारी बहनें प्रमुख भूमिका निभा सकती हैं क्योंकि शराबियों से जितना संकट इन्हें है उतना पुरुषों को नहीं है। आप ने हाथ उठवाकर आर्य नर-नारियों को शराबबन्दी आन्दोलन में सहयोग देने को तैयार किया और विश्वास दिलाया कि मैं इस आन्दोलन की तैयारी के लिए पुनः मकड़ौली तथा अन्य ग्रामों में पहुंचने का कार्यक्रम बनाऊंगी। परन्तु अब लोकसभा के चुनाव की घोषणा हो जाने के कारण राजनैतिक गतिविधियां तथा प्रचार कार्य बढने से हालात बदल गये हैं। अतः शराबबन्दी प्रचार अभियान को चुनाव सम्पन्न होने के बाद पुनः आरम्भ किया जावेगा।

सेवाव्रती श्री रामनाथ सहगल का सार्वजनिक अभिनन्दन

"कौन है अपने जीवन को सार्थक करने वाला वह व्यक्ति जो स्वभाव से सरल, सज्जनों का सहयोगी, आर्य जनों का हितकारक कार्य करने को सदा लालायित, सुशील और प्रबन्ध करने में दक्ष है ?—वह व्यक्ति है श्री रामनाथ सहगल।"

ये शब्द हैं उस अभिनन्दन पत्र के जो श्री रामनाथ सहगल को उनके ६६वें जन्म दिवस पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा नई दिल्ली के फिक्की सभागार में आयोजित अभिनन्दन समारोह में उनको समर्पित किया गया। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ विधिवेत्ता तथा लन्दन में नवनियुक्त भारतीय उच्चायुक्त श्री डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी ने की। डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के अध्यक्ष तथा विधिवेत्ता प्रो० वेदव्यास के सानिध्य एवं आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न इस समारोह में देश के कोने कोने से समागत आर्यजन, डी० ए० वी० संस्थाओं के प्राचार्य एवं आचार्य गण, गुरुकुलों के अधिष्ठाता, अनेकानेक सस्थाओं के अधिकारियों, पुरोहितों, पण्डितों तथा प्रतिष्ठित नागरिकों ने पुष्पमालाओं द्वारा श्री रामनाथ सहगल का अभिनन्दन किया।

परिषद् के अध्यक्ष श्री अनिल आय एव प्राचार्य श्री आर्यवीर भल्ला आदि युवकों ने युवकों द्वारा संग्रहीत २ लाख ११ हजार की थैली श्री सहगल को भेंट की तो श्री सहगल ने अपनी ओर से ११ हजार १११ रु० और मिलाकर उस थैली को युवक निर्माण कार्यार्थ पुन: श्री दरबारीलाल जी को समर्पित कर दिया। तब सुन्दर सुसज्जित एवं जनाकीर्ण सभागार करतल ध्वनि एव हर्ष ध्वनि से गुंजायमान हो उठा। जिस त्याग एव सेवा के लिए श्री सहगल बहुर्चाचत रहे उसका प्रत्यक्ष उदाहरण सभागत आर्य जनों ने अपनी आंखों से देखा।

इस अवसर पर दिल्ली के हिन्दी साप्ताहिक "वीर अर्जुन" ने एक पृष्ठ श्री सहगल को समर्पित कर उसमें उनके विषय मे लेख एव सन्देश आदि प्रकाशित किए।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री सिंघवी ने श्री सहगल को सेवा, निष्ठा त्याग और तपस्या का प्रतीक बताते हुए कहा कि श्री राम को सेवा में जिस प्रकार पवन-पुत्र हनुमान सदा सिद्ध रहते थे, उसी प्रकार श्री सहगल भी समाज की तथा विशेषतया आर्यसमाज की सेवा के लिए सदा सिद्ध पाए जाते हैं। अपने ५० वर्ष के सामाजिक सेवा काल में जिसने शताधिक सज्जनों का अभिनन्दन किया, आज हम स्वयं उनका अभिनन्दन कर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। हमारे समाज में मनुष्यों के गुणों की सराहना और सम्मान होता है। श्री सहगल आर्यजगत् के अलंकार हैं, आभूषण हैं, रत्न हैं।

सांसद श्री विजयकुमार मल्होत्रा, पूर्व सांसद श्री रामचन्द्र विकल, भाजपा के महामन्त्री श्री केदारनाथ साहनी, प्रख्यात पत्रकार एव आर्यजगत् के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार, प्राचार्य किशनसिंह आर्य, प्राचार्य तिलकराज गुप्ता, डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के मन्त्री प्राचार्य जी० पी० चोपड़ा, श्री टी० आर० तुली तथा महिला आर्य सभा की श्रीमती कृष्णा चड्ढा के अतिरिक्त श्री रामनाथ सहगल के प्रेरक श्री पिशौरीलाल 'प्रेम' आदि ने श्री सहगल के जीवन कार्य पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए उनके त्याग, तप, लगन, निष्ठा, सेवा, साधना, कर्तव्यपरायणता, सज्जनता, सरलता, शुचिता, नियमितता, देशभक्ति, दृढ़ता, दानशीलता, दयालुता, कार्य पटुता, सात्विकता, संघर्षशीलता आदि आदि गुणों का बखान किया। सबने एक स्वर से यही कहा कि "आज एक सम्माननीय व्यक्ति का सम्मान करके वे स्वयं को धन्य एवं कृतकृत्य अनुभव कर रहे हैं।

श्री रामनाथ सहगल ने अपने धन्यवाद ज्ञापन में आयोजकों, वक्ताओं एव सभागत सज्जनों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस समारोह से उन्हें अत्यधिक प्रेरणा प्राप्त हुई है और अब तक तो वे ८-१० घण्टे समाज कार्य में व्यतीत करते थे परन्तु अब वे कम से कम १०-१२ घण्टे समाज सेवा में रत रहेंगे। उन्होने कहा कि उन्हें इस अभिनन्दन से भ्रमित होकर उन्मत्त होने का नहीं अपितु द्विगुणित शक्ति से कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त हुई है। जिसे वे अपना कर्तव्य समझ कर पूर्ण करेंगे।

समारोह का शुभारम्भ गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारियो के सस्वर वेद गान से हुआ। तदनन्तर डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, सेक्टर-१४, फरीदाबाद की नन्हीं छात्राओं ने स्वागत गीत गाया।

स्वामी श्री सत्यप्रकाश जी के आशीर्वचन एव शान्ति पाठ के उपरान्त स्वल्पाहार से समारोह सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज मनाना (पानीपत) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनाक ८, ९, १० मार्च १९९१ को आर्यसमाज मनाना का आठवां वार्षिक उत्सव मनाया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से प० चिरंजीलाल भजनोपदेशक तथा चौ० सहदेव जी बेधड़क व श्री रामनिवास आर्य भजनोपदेशक ने शराबखोरी, जाति पांति, छुआछात, मूर्तिपूजा, विभिन्न झूठे मत मतान्तरो का प्रभावशाली ढंग से खण्डन किया तथा वेद मन्त्रों इतिहासों से वैदिक धर्म का मण्डन व भूतकालीन वैदिक गौरव तथा गौरवमयी इतिहास के मधुर गीतों द्वारा जाति को सद्व्यवहार, आचार व वैदिक धर्म ग्रहण करने को प्रेरित किया। श्रोताओं पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। कुछ सज्जनों ने शराब छोड़ने का व्रत लिया तथा यज्ञोपवीत ग्रहण किए। माननीय श्री रणवीर जी शास्त्री, प्राचार्य भारतीय शिक्षा संस्थान समालखा मण्डी ने तीनों दिन प्रात: वेला में यज्ञ कराया। नवविवाहित आधी दर्जन आर्यवीर दल के नवयुवक सपत्नीक यजमान बने। उत्सव स्थल माननीय स्वर्गीय चौ० रतनसिंह आर्य भूतपूर्व प्रधान आर्यसमाज मनाना के घेर में हुआ। गत वर्षों की भांति इस परिवार का अमूल्य सहयोग मिलता रहा। गांव की विषम परिस्थितियों के कारण उपस्थिति सन्तोषजनक ही रही। सभा को ३०१ रु० वैदिक प्रचार हेतु दशांश, सर्वहितकारी शुल्क तथा प० चिरञ्जीलाल को १०० रुपये बतौर इनाम के दिये। पं० रणवीर शास्त्री जी को ३०१ रुपये दक्षिणा तथा भारतीय शिक्षा संस्थान को २०० रुपये दान दिया। चौ० सहदेव जी बेधड़क तथा श्री रामनिवास आर्य भजनोपदेशक को क्रमश: ६००-६०० रु० दक्षिणा दी।

वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश

स्वामी आनन्दबोध के आवाहन पर पांच व्यक्तियों ने वानप्रस्थ ग्रहण किया। बिहार राज्य अन्तर्गत नालन्दा जिले के मुसाढी ग्राम के स्थानीय आर्यसमाज के ३४वें वार्षिकोत्सव के शुभावसर पर, जो दिनांक १, २, ३ मार्च १९९१ को आयोजित हुआ, पांच आर्य पुरुषों ने वानप्रस्थ की दीक्षा ली। इनका नाम निम्न प्रकार से रखा गया :-

१- डा० देवेन्द्रकुमार सत्यार्थी	—अग्निव्रत वानप्रस्थ
२- रामवृक्ष 'आर्य-पथिक'	—सदानन्द वानप्रस्थ
३- रामपृत सिंह आर्य	—ज्ञानव्रत वानप्रस्थ
४- रामलखन गिरी	—म० रामलखन गिरी
५- शिवबालक पंडित	—शिवव्रत वानप्रस्थ

आचार्य का कार्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी 'नैष्ठिक' ने किया।

बिहार राज्य आर्य प्र० सभा के नवनिर्मित भवन के उद्घाटन समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्र० सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी ने लोगों से वानप्रस्थ लेने की अपील की थी।

यह उत्सव होली एवं नवसंवत्सर के अवसर पर मनाया गया इसमें स्वामी ब्रह्मानन्द नैष्ठिक तपोवन आश्रम देहरादून, पं० महावीर सिंह आर्य भजनोपदेशक पटना सिटी एवं श्रीमती विजयावती आय (मुंगेर) ने भाग लिया। जहां होली के अवसर पर शराब का दौर चलता था, वहां सत्संग की धारा बह गयी, २१ बच्चों ने यज्ञोपवीत पहना और सात्विक जीवन बिताने का संकल्प लिया।

—शिवबालक सिंह आर्य, मन्त्री

यह खुदाई भी क्या खुदाई है ?

टांग सब ने यही अड़ाई है ।
बात बिगड़ी कहां ? बनाई है ।
खुद को बन्दे, खुदा समझ बैठे ।
कैसी ! या रब ! तेरी खुदाई है ॥
हम समाए किसी की आंखों में ।
अपने दिल में यही समाई है ॥
मुंह पे कह दो, खरी-खरी बेशक ।
साफ कहने में क्या बुराई है ॥
जिसको अपना समझ रहे हो तुम ।
दुनिया अपनी भी अब पराई है ॥
रो रहा है जो रोना, रोने दो ।
धीर किस ने किसे बंधाई है ॥
अकलमन्दों ने बेवकूफी की ।
अक्ल अपनी भी बेच खाई है ।
अब न कहना, बुरा, बुरे को भी ।
नाज इसमें तेरी भलाई है ॥

मुक्तक

मौत के जब ठिकाने बनते हैं ।
हर तरह के बहाने बनते हैं ॥
काम आती नहीं है, चतुराई ।
लोग बेशक सयाने बनते हैं ॥

—नाज सोनीपती

लाम्बा जि० भिवानी में आर्यसमाज स्थापित

जिला वेद प्रचार मण्डल भिवानी के सहसंयोजक श्री सत्यनारायण आर्य के प्रयत्न तथा श्री जयपाल आर्य की भजन मण्डली के प्रभावशाली भजनों से प्रभावित होकर दिनांक ८ मार्च को ग्राम लाम्बा तहसील चरखीदादरी जिला भिवानी में आर्यसमाज स्थापित हो गया। इस कार्य में सर्व श्री रामदेव, शेरसिंह, कमलसिंह, भरतसिंह भगवान्सिंह आदि ने पूरा सहयोग दिया। रात्रि को ग्राम में प्रचार हुआ जिसमें श्री जयपालसिंह ने शराब, मांस, दहेज तथा गौहत्या आदि सामाजिक बुराइयों का जमकर खण्डन किया और महर्षि दयानन्द के बताये हुए मार्ग पर चलने की प्रेरणा की। श्री पं० सत्यनारायण आर्य ने भी इस अवसर पर ग्राम के नर नारियों को सम्बोधित करते हुए आर्यसमाज के संघटन को सुदृढ़ करने तथा ग्राम में आर्यसमाज मन्दिर बनाने का सुझाव दिया।

प्रातः यज्ञ के अवसर पर १२ पुरुषों तथा दो महिलाओं ने यज्ञोपवीत धारण किये और आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की। सभी ने विश्वास दिलाया कि हम शीघ्र ही आर्यसमाज मन्दिर बनवाने का प्रयत्न करेंगे। सभा को वेदप्रचारार्थ ३०१) दान भी दिया।

—कमलसिंह मन्त्री आर्यसमाज लम्बा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० २३२०/७३ रजि नं० P RTK-४८ प्रतिभवन् १९९१

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक १९ ७ अप्रैल, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

९१वां वार्षिकोत्सव

दिनांक ७ अप्रैल से १४ अप्रैल १९९१ तक

कार्यक्रम

प्रतिदिन : रविवार ७ अप्रैल १९९१ से रविवार १४ अप्रैल १९९१ तक

प्रातः ७-३० से १०-३० बजे तक : यजुर्वेद पारायणयज्ञ एवं प्रवचनादि

ब्रह्मा : पं० मदनमोहन विद्यासागर जी संयोजक : डा० हरिप्रकाश जी सहसंयोजक डा० महावीर जी

सोमवार ८ अप्रैल से १० अप्रैल १९९१ तक

प्रातः ७-३० से १०-३० बजे तक : यजुर्वेद पारायण यज्ञ ११-०० से १-०० बजे तक : "गुरुकुलों के पाठ्यक्रम के एकीकरण" पर विचार संयोजक : आचार्य श्यामसुन्दर जी स्नातक

बृहस्पतिवार, ११ अप्रैल १९९१

प्रातः ७-३० से १०-३० बजे तक : यजुर्वेद पारायण यज्ञ

११-०० बजे ध्वजारोहण

द्वारा-श्री प्रोफेसर शेरसिंह कुलाधिपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार एवं सदस्य योजना आयोग भारत सरकार

मध्याह्नोत्तर २-३० से ५-३० बजे तक : वैदिक प्रदर्शनी एवं वेदसम्मेलन

अध्यक्ष : आचार्य रामनाथ जी वक्ता : आचार्य विश्वश्रवा जी श्री युधिष्ठिर जी मीमांसक श्री मनोहर जी विद्यालंकार

संयोजक : डा० सत्यव्रत राजेश

रात्रि ८-०० से ८-३० बजे तक : भजन श्री ओमप्रकाश वर्मा ८-३० से १०-०० बजे तक : विशेष व्याख्यान वक्ता : श्री सूर्यदेवजी डा० प्रशान्त वेदालंकार

शुक्रवार, १२ अप्रैल १९९१

प्रातः ७-३० से ९-३० बजे तक : यजुर्वेद पारायणयज्ञ गुरुकुल जन्मोत्सव (पुण्यभूमि गंगापार)

अध्यक्ष : स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान, सार्वदेशिक सभा ध्वजारोहण : द्वारा श्री वीरेन्द्र जी प्रधान, आर्यप्रतिनिधि सभा, पंजाब मुख्य अतिथि : आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति वक्ता : प्रो० शेरसिंह जी कुलाधिपति एवं प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा, डा० धर्मपाल जी प्रधान, आर्यप्रतिनिधि सभा, दिल्ली

संयोजक : डा० हरिप्रकाश जी सहसंयोजक : डा० श्रीकृष्ण

रात्रि ८-०० से ८-३० बजे तक भजन, श्री ओमप्रकाश वर्मा ८-३० से ११-०० बजे तक : कवि सम्मेलन अध्यक्ष : डा० श्यामसिंह शशि निदेशक, प्रकाशन-विभाग भारत सरकार

कवि : श्री रामनाथ अवस्थी डा० कुंवर बेचैन श्री मधुर शास्त्री श्री ओमप्रकाश आदित्य श्री कुल्हड़।

संयोजक : डा०विष्णुदत्त राकेश सहसंयोजक : श्री कमलकान्त बुधकर

शनिवार १३ अप्रैल १९९१

प्रातः ७-३० से ९३० बजे तक : यजुर्वेद पारायण यज्ञ ९-३० से १२-०० बजे तक : दीक्षान्त-समारोह अध्यक्ष : श्री प्रो० शेरसिंह जी कुलाधिपति, स्वागत एवं परिचय : श्री सुभाष विद्यालंकार कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

दीक्षान्त भाषण द्वारा : श्री चन्द्रशेखर जी प्रधान मन्त्री, संयोजक : डा० वीरेन्द्र अरोड़ा कुलसचिव, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

रात्रि ८-०० से ८-३० बजे तक : भजन, श्री ओमप्रकाश वर्मा ८-३० से १०-३० बजे तक : संगीत सम्मेलन

अध्यक्ष : श्री विनयचन्द्र जी मौद्गल्य संयोजक : आचार्य श्यामसुन्दर स्नातक सहसंयोजक : डा० कौशलकुमार।

रविवार, १४ अप्रैल १९९१

प्रातः ८-३० से १०-३० बजे तक : यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं पूर्णाहुति १०-३० से १२-०० बजे तक : वेदारम्भ संस्कार (नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश)

संयोजक : आचार्य श्यामसुन्दर स्नातक सहसंयोजक : श्री सत्यदेव

मध्याह्नोत्तर २-०० से २-३० बजे तक : भजन, श्री ओमप्रकाश वर्मा २-३० से ५-०० बजे तक : पत्रकार एवं राष्ट्रीय समस्या

अध्यक्ष—श्री वीरेन्द्र जी प्रधान, आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब, वक्ता : क्षितिश वेदालंकार संयोजक : श्री कमलकान्त बुधकर

रात्रि ८-०० से ८-३० बजे तक : भजन, श्री ओमप्रकाश वर्मा, ८-३० से १०-३० बजे तक : व्यायाम सम्मेलन अध्यक्ष : श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज संयोजक : श्री ईश्वर भारद्वाज सहसंयोजक : श्री रणजीतसिंह

निवेदक

आचार्य प्रियव्रत	सुभाष विद्यालंकार
परिद्रष्टा	कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

गुरुकुल कांगड़ी के उत्सवों में सम्मिलित होने के इच्छुक नर नारियों के लिए विशेष अवसर

गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार का वार्षिक उत्सव ११ से १४ अप्रैल तक धूमधाम से मनाया जा रहा है। इसमें सम्मिलित होने के लिए आर्य नर नारियों को सभा की ओर से सुविधा दी गई है कि वे केवल एक ओर का रोहतक से हरिद्वार तक का किराया ८ अप्रैल तक सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक में ४० रु० देकर अपना स्थान सुरक्षित करवा लेवें। सभा की ओर से जाने तथा आने के लिए सवारी का प्रबन्ध किया जा रहा है। भोजन तथा आवास का प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से किया जावेगा।

सभा मन्त्री

सत्यार्थप्रकाश का एक पाठ

स्तुति और उसका प्रयोजन

(डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए०, आर्यसमाज गोरखपुर)

'सत्यार्थप्रकाश' के सप्तम समुल्लास में स्वामी दयानन्द महाराज ने ईश्वर को दयालु, न्यायी, निराकार सर्वशक्तिमान् बतलाने के बाद ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना करने का विधान किया है। स्तुति का अभिप्राय है ईश्वर के गुणों का कथन। ईश्वर के गुणों के कथन को हम ब्रह्मविद्या भी कह सकते हैं। जिस विद्या में ब्रह्म का वर्णन हो वह विद्या ब्रह्मविद्या कहलाती है। ब्रह्म का वर्णन उसके गुणों द्वारा होता है और गुण उसके वर्णनातीत हैं। अतः ब्रह्मविद्या से हमारा अभिप्राय यह है कि मनुष्य को अपनी उन्नति अर्थात् ब्रह्मप्राप्ति के लिए जिन गुणों की आवश्यकता है, परमेश्वर के उन गुणों का चिन्तन, कथन, मनन यही स्तुति है। परमेश्वर की स्तुति तथा भजन इसलिए नहीं की जाती कि वह खुशामदपसन्द है, न उसे स्तुति की जरूरत है और न वह पापों को माफ करता है। फिर, यह प्रश्न उपस्थित होता है कि स्तुति और भजन का क्या लाभ है? हमारे विचार से स्तुति और भजन का यह लाभ है कि मनुष्य के प्रत्येक कर्म का सस्कार उसके अन्त.करण पर पडता है और अन्तःकरण पर गिरकर संस्कार पडने से वे ही संस्कार स्वभाव का रूप धारण कर लेते हैं। परमेश्वर के गुणों के कथन, चिन्तन और मनन से स्वभाव पापात्मा नही बन पाता।

परमेश्वर की महिमा और उसके गुणों के चिन्तन से आत्मा नम्र होता है। हमें अपनी अल्पज्ञता और प्रभु की सर्वज्ञता का बोध होता है और इस प्रकार उसकी महिमा के चिन्तन से अहंकार का नाश होता है और अहंकार जो पापों की जड़ है उसके उन्मूलन से पाप की प्रवृत्ति का दलन एव नाश होता है। परमेश्वर के गुणों के स्मरण से मनुष्य में अदीनता और निर्भयता का संचार होता है। मनुष्य को यह विश्वास होता है कि वह अकेला नही उसका प्रत्येक स्थान पर और प्रत्येक समय कोई न कोई सहायक है अतः वह संसार में अपने कार्य आत्मविश्वास के साथ करता चला जाता है। अतः स्वामी जी ने "स्तुति से ईश्वर में प्रीति उसके गुण कर्म स्वभाव से अपने गुण कर्म स्वभाव का सुधारना" स्तुति शब्द का अर्थ लिखा है। स्तुति के उदाहरणस्वरूप हम निम्न मन्त्र को ले सकते हैं—

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥ यजु० अ० ४० म ८

भावार्थ—(सः) वह ईश्वर (परिअगात्) सर्वत्र व्यापक है (शुक्रम्) जगदुत्पादक (अकायम्) शरीररहित (अव्रणम्) शारीरिक विकार रहित (अस्नाविरम्) नाड़ी और नस के बन्धन से रहित (शुद्धम्) पवित्र (अपापविद्धम्) पाप से रहित (कविः) सूक्ष्मदर्शी (मनीषी) ज्ञानी (परिभूः) सर्वोपरि वर्तमान (स्वयम्भूः) स्वयंसिद्ध (शाश्वतीभ्य) अनादि (समाभ्यः) प्रजा (जीव) के लिए (याथातथ्यतः) ठीक-ठीक (अर्थात्) कर्म फल का (व्यदधात्) विधान करता है।

वह ब्रह्म सर्वत्र व्यापक है। वह सम्पूर्ण भूतों में है और सब भूत प्राणी चेतन समुदाय उसमें हैं यह ज्ञान विश्वप्रेम को भावना का जनक है। "यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति, सर्वभूतेषु चात्मान ततो न विजुगुप्सते"। और वह विश्वप्रेम की भावना परमेश्वर को सर्वव्यापक समझने से ही आसकती है। "तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य वाह्यतः।" वह परमेश्वर सबके अन्दर और बाहर भी है। यह परमेश्वर की स्तुति हममें विश्वप्रेम, निर्भयता, पाप को देखने वाला होने से पाप से बचने की प्रवृत्ति आएगी।

इसी प्रकार जगत् का आदि (मूलकारण) होने से अपने निर्माता के प्रति कृतज्ञता, शुद्धम् अर्थात् ब्रह्म की शुद्धता से ब्रह्म की समीपता प्राप्त करने के लिए जल से शरीर, सत्य से मन, तप से आत्मा और निर्मल बुद्धि को पवित्र करने की भावना, अपापविद्धम् अर्थात् समीपता निष्पाप परमेश्वर से स्वयं निष्पाप अर्थात् पाप के मूल कारण मिथ्या ज्ञान से निवृत्ति की इच्छा तथा अव्रणम् फोड़े फुंसी आदि शारीरिक विकारों से रहित होने से स्वास्थ्य की प्रेरणा हमे स्तुति के द्वारा ही प्राप्त होती है।

इसी प्रकार परमेश्वर के कवि, क्रान्तदर्शी, सर्वद्रष्टा सर्वज्ञ, मनीषी, स्वयंभू अर्थात् अपनी सत्ता से आप स्थिर, फलदाता याथातथ्यतः ठीक ठीक विधान करने वाला परमेश्वर है। इस प्रकार इस मंत्र में परमेश्वर की स्तुति की गई है।

यदि हम लोक में सच्चे हृदय से किसी की समीपता प्राप्त करना चाहेंगे या किसी के प्रति भक्ति करना चाहेंगे या किसी के प्रति भक्ति करेंगे तो उसके लिए यह आवश्यक है कि हम पहले उसके गुणों का ज्ञान प्राप्त करें, उनका चिन्तन, मनन और ध्यान करें। इसी प्रकार उपासना और भक्ति के लिए परमेश्वर की स्तुति, गुणकीर्तन अथवा ब्रह्मविद्या में प्रवेश के लिए उसके गुणों का ज्ञान आवश्यक है।

स्वामी जी महाराज ने स्तुति के दो भेद माने हैं (१) सगुण स्तुति (२) निर्गुण स्तुति। सगुणस्तुति का मतलब है गुण के साथ प्रभु की स्तुति करना अर्थात् व्यापक, शीघ्रकारी अन्तर्यामी, सत्य शुद्ध, बुद्ध इत्यादि गुणों के साथ परमेश्वर की स्तुति सगुण स्तुति कहलाती है। ऐसी स्थिति में यह शंका की जा सकती है कि यदि परमेश्वर सगुण है तो निर्गुण कैसे हो सकता है? यहां तो विरोधाभास दिखाई देता है। परन्तु इस विरोधाभास का परिहार इस प्रकार किया जा सकता है कि जिस-जिस राग द्वेषादि गुणों से पृथक् मानकर परमेश्वर की स्तुति की जाती है वह निर्गुण स्तुति कहलाती है। इसलिए आर्यसमाज और वैदिक धर्म के अनुसार भगवान् सगुण निर्गुण दोनों है। इसीलिए हमारी उपासना भी स्तुति के समान ही सगुण निर्गुणोपासना है। स्वामी जी ने स्तुति के प्रकरण के अन्त में स्तुति का प्रयोजन लिखा है "इसका फल यह है कि जैसे परमेश्वर के गुण हैं वैसे गुण कर्म स्वभाव अपने भी करना। जैसे वह न्यायकारी है तो आप भी न्यायकारी होवें और जो केवल भांड के समान परमेश्वर के गुणकीर्तन करता जाता और अपना चरित्र नही सुधारता है उसका स्तुति करना व्यर्थ है।"

जिला रोहतक के ग्राम बिचपड़ी तथा सिवानका में हरिजनों को ईसाई बनाने का आर्यसमाज द्वारा विरोध

दैनिक नव भारत टाइम्स नई दिल्ली के १३ मार्च के अंक में कई हरिजन परिवारों ने ईसाई धर्म अपनाया समाचार को पढ़कर आश्चर्य हुआ कि जिला रोहतक के ग्रामों में ईसाई प्रचारक निर्धन हरिजन परिवारों को नौकरियां आदि दिलवाने का प्रलोभन देकर ईसाई धर्म अपनाने का षड्यन्त्र बना रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से सभा के महोपदेशक प० सुखदेव शास्त्री तथा श्री केदारसिंह आर्य दिनांक १३ मार्च को ग्राम बिचपड़ी गये और आर्यसमाज के कार्यकर्ता श्री धर्मपाल शास्त्री के सहयोग से ग्राम के धानक परिवार श्री महासिंह के परिवार में गये, जिनके लड़के श्री रोहतास ने ईसाई धर्मप्रचारकों से सम्पर्क कर रखा है। श्री सुखदेव शास्त्री ने उनके परिवार के सदस्यों को वैदिक धर्म की विशेषता बताते हुए उन्हें विदेशी धर्म ईसाई मत के बहकावे में न आवें क्योंकि आपके पूर्वजों ने विदेशी मुसलमान शासकों के दबाव में भी अपना वैदिक धर्म नहीं छोड़ा था। इसी कारण आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता आपको पथभ्रष्ट होने की सूचना मिलते ही आपको सचेत करने आपके पास पहुंचे हैं। इससे प्रभावित होकर परिवार के सदस्यों ने आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को विश्वास दिलाया कि हम पूर्ववत् वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) में ही बने रहेंगे। इन्होंने ईसाई धर्मप्रचारकों द्वारा दी गई उनकी पुस्तक "कहानी यीशु की" वापिस कर दी।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से ग्राम बिचपड़ी तथा सिवानका में शीघ्र ही सभा की भजन मण्डलियों द्वारा वेद प्रचार करवाकर शुद्धि सम्मेलन का आयोजन किया जावेगा। इसी प्रकार गतमास मेवात क्षेत्र के ग्राम ढूढोली जि० फरीदाबाद में एक बाल्मीकि परिवार द्वारा इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था, उस परिवार से भी सभा के उपदेशक पं० चन्द्रपाल शास्त्री आर्यसमाज के अन्य कार्य कर्त्ताओं के साथ सम्पर्क करके उन्हें वैदिक धर्म में वापिस लाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

बेरी जिला रोहतक में शराबबन्दी पंचायत

गत मास २४ मार्च को आर्यसमाज बेरी जिला रोहतक की ओर से स्थानीय जाट धर्मशाला में बेरी क्षेत्र के सरपंचों तथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की एक पंचायत का आयोजन किया गया। इस की अध्यक्षता सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी ने की।

यज्ञ की कार्यवाही के बाद श्री भगवानसिंह जी प्रधान कादयान खाप ने सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह तथा श्रीमती प्रभात शोभा प्रधान आर्यसमाज बेरी का स्वागत करते हुए कहा कि हरयाणा में शराब-बन्दी कराने के अभियान में कादयान खाप तथा आर्यसमाज के कार्य-कर्त्ताओं की ओर से पूरा सहयोग किया जावेगा। हमें प्रसन्नता है कि इस अभियान का नेतृत्व बेरी क्षेत्र से सम्बन्धित आर्यपरिवार के सदस्य आर्यनेता प्रो० शेरसिंह जी तथा महिला आर्यनेता श्रीमती प्रभात शोभा जी कर रहे हैं। इसे सफल करने के लिए ही बेरी में शराबबन्दी पंचायत बुलाई गई है।

सभा की ओर से पं० रतनसिंह आर्य ने शराब की बुराइयों का उल्लेख करते हुए कहा कि शराब के बढते हुए प्रचार से शराबी सरेआम हुड़दंग मचाकर साधारण नर-नारियों के लिए जीना दूभर कर रहे हैं और शराब की इस बुरी लत में नवयुवक भी फंसते जा रहे हैं। इस प्रकार इस महारोग को समाप्त करने के लिए सभा ने शराबन्दी अभियान चलाया है। सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह राजनीति में रहते हुए आर्यसमाज के कार्यों को प्रमुखता देते हैं और अब श्रीमती शोभा जी ने भी इस अभियान को सफल करने के लिए अपना समय देना स्वीकार कर लिया है। यदि पंचायतें सहयोग करें तो हमें शीघ्र ही इस समाज सुधार कार्य में सफलता मिल सकती है। आपने सुझाव दिया कि आलोचना करने के स्थान पर अपनी त्रुटियों को दूर करके तन मन तथा धन से सभा को सहयोग देवें। आज सारे देश की दृष्टि आर्यसमाज की ओर है। प्रो० साहेब का सारा जीवन देश सेवा तथा समाज सुधार के कार्यों में लगा है और आर्यसमाज के सभी आंदोलनों में बढ़-चढकर भाग लिया है। आशा है इनके नेतृत्व में हरयाणा में शराबबन्दी होगी और आर्यसमाज का नाम ऊंचा होगा।

सूबेदार हरिसिंह ने शराबबन्दी प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा कि आर्यसमाज मन्दिर बेरी के समीप ही शराब का ठेका खुला हुआ है। इसे यहां से हटवाने के लिए हम सभी ने मिलकर संघर्ष करना चाहिए। हम सभा का इस कार्य में पूरा सहयोग करेंगे। अतः श्रीमती प्रभात शोभा जो कि आर्यसमाज बेरी की प्रधान भी हैं, इसे हटवाने के लिए हमारा मार्ग दर्शन करें।

श्रीमती प्रभात शोभा ने उपस्थित कार्यकर्त्ताओं का धन्यवाद करते हुए विश्वास दिलवाया कि आज रामनवमी के पावन पर्व पर बेरी में यज्ञ करके जो शराबबन्दी कल्याणकारी कार्य आरम्भ किया गया है उसे सफल करने के लिये मैं पीछे नहीं रहूंगी और बड़े से बड़ा बलिदान देने के लिए तैयार हूं। आपको भी शराबबन्दी के लिए जुट जाना होगा और अधिक से अधिक नर-नारियों से शराब छुड़ाने की प्रतिज्ञा करावें। आर्य जिस कार्य को हाथ में लेते हैं, उसे पूरा करके दम लेते हैं। इतिहास इसका साक्षी है। राम ने शक्तिशाली राक्षस का मुकाबला किया और सीता का अपहरण करने पर उस पापी का वध किया। इसी प्रकार महाभारत काल में श्रीकृष्ण जी ने द्रौपदी का चीर हरण करनेवालों का नाश करवाया। परन्तु आज शराब के नशे में अनेक सीताओं का अपहरण हो रहा है और अनेक द्रौपदियों का चीर हरण होरहा है और आर्यलोग इन शराबरूपी राक्षसों को सहन कर रहे हैं। आजकल के प्रायः सरपंच स्वयं शराब के नशे में बेहोश हैं। अतः समय आगया है कि हरयाणे की इस पवित्र धरती से शराब हटाकर गुजरात प्रदेश की भांति हमें महर्षि दयानन्द और महात्मा गांधी के सपनों को पूरा करना चाहिए। हरयाणा तो आर्यों का प्रदेश रहा है अतः इसे जगाने के लिए हमें संघर्ष करना ही होगा।

इस अवसर पर प्रो० शेरसिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यसमाज सुधारवादी संस्था है। अपने जन्मकाल से ही समाज सुधार के कार्यों में अग्रणी रहा है। जब भी राष्ट्र पर किसी प्रकार का संकट आता है आर्यसमाज देशसेवा में सबसे पहली पंक्ति में खड़ा मिलता है। आज शराब के कारण अनेक प्रकार की सामाजिक बुराइयां फैल रही हैं। यदि इसी प्रकार प्रतिवर्ष शराब पीनेवालों की संख्या बढती रहेगी तो ग्रामीण जनता इसमें फंसकर बर्बाद हो जावेगी। अतः इस बुराई को समाप्त करने के लिए सभा ने ६-७ वर्षों से शराबबन्दी अभियान चला रखा है। सभा के प्रचारकों द्वारा शराब के विरुद्ध प्रचार करवाया जा रहा है। ग्रामीण पंचायतों को प्रेरणा करके शराब के ठेके बन्द करवाने के लिए प्रस्ताव करवाकर सरकार को भिजवाये जाते हैं। पंचायत के प्रस्तावों की अवहेलना होने पर जहां ठेके खोल दिए जाते हैं, वहां स्थानीय आर्यसमाज के सहयोग से धरनों का आयोजन करके शराब की बिक्री बन्द करवाई जाती है। इसी प्रकार बालावास जिला हिसार, नाहरी, हसनगढ, कतलूपुर जिला सोनीपत, आसोधा, सांघी रिण्ढाणा जिला रोहतक, बापौली जिला करनाल आदि अनेक स्थानों पर शराब के ठेके बन्द करवाये गए। शराब के ठेकों की नीलामी स्थानों पर विरोध प्रदर्शन किया जाना है। जनता में शराब के विरुद्ध जन-जागृति लाने के लिए पद-यात्राओं का भी आयोजन किया जाता है। आपने अन्त में कहा कि इसी उद्देश्य से बड़ी पंचायत जून या जुलाई में की जावेगी।

—सत्यवान आर्य

ध्यान योग-शिविर

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी योगधाम में श्री स्वामी दिव्यानंद सरस्वती की अध्यक्षता में गुरुवार बैसाख कृष्णा ५ तदनुसार ४ अप्रैल १९९१ ई० से शनिवार बैसाख कृष्णा १४ तदनुसार १३ अप्रैल १९९१ ई० तक ध्यान योग-शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें प्राणायाम, प्रत्याहार धारण, ध्यान आदि अष्टांग योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जाएगा तथा यम नियमादि का पालन कराया जाएगा। शिविरार्थी शारीरिक निर्बलता तथा मानसिक अशांति से छुटकारा पाने के लिए विविध यौगिक उपायों से लाभ प्राप्त करके आत्मदर्शन का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। शिविर में यथासमय अन्य विद्वानों के प्रवचन तथा भक्ति संगीत भी होंगे। १२ अप्रैल मध्याह्नोत्तर २ बजे से डॉ० नरेश कुमार ब्रह्मचारी निदेशक योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्रीय सरकार दिल्ली की अध्यक्षता में 'योग और स्वास्थ्य विषय' पर संगोष्ठी होगी। १३ अप्रैल को नवनिर्मित योग भवन का उद्घाटन होगा। अतः योगाभिलाषी अपने इष्टमित्रों एवं परिवार सहित पधार कर प्रशिक्षण प्राप्त करें।

—ब्रह्मानन्द संयोजक

महात्मा कन्फ्यूसियस के विचार

- दुराचारी मनुष्य को ऊंचा पद नहीं देना चाहिए।
- ईश्वर की आज्ञा क्या है—जब तक समझ में नहीं आ जाता, तब तक कोई श्रेष्ठ मनुष्य नहीं बन सकता।
- अधम विचार मन में मत लाओ।
- मनुष्य सौन्दर्य को जितना चाहता है, उतना सद्गुण को चाहने वाला प्राय. नहीं मिलता।
- इच्छा करो कि मैं सद्गुणी बनूं और सद्गुण तुम्हारे पास हैं।
- श्रेष्ठ मनुष्य सद्गुण का चिन्तन करता है ओछा मनुष्य सुख सुविधा का चिन्तन करता है।
- जो व्यवहार तुम अपने प्रति पसन्द नहीं करते, वह दूसरों के प्रति न करो।
- बड़ा आदमी अपना दोष देखता है और छोटा आदमी दूसरे का।
- यदि तुम मनुष्य की सेवा नहीं कर सकते तो देवता की सेवा क्या करोगे।
- मनुष्य और उसका कर्त्तव्य समाज के लिए है।

इस तरह बनेगा स्वर्ग सभी संसार

सब से पहले आर्यनेता संसद में भिजवाये जायें।
भ्रष्टाचारी खोज खोज जहाजों में बिठाये जायें।
ले जाके समुन्दर बीच पत्थर बांधकर डुबाये जायें।
मादक वस्तुओं के ठेके बन्द सभी करवाए जायें।
पीते जो शराब उलटे पेड पर लटकाए जायें।
मांस खानेवाले गर्म तेल मे पकाये जायें।
पके हुए तन के लगभग टुकडे तीन कराये जायें।
चील काग कुत्ते आदि जीवो को खिलाये जायें।
सुलफई सट्टेबाजो पर पड़े गजब की मार॥१॥

करते जो ब्लैक गर्म खम्भे के बन्धवाये जायें।
गिन करके पचास कोड़े पीठ में लगवाये जायें।
लुच्चे गुण्डे बेईमान गोली से उडाये जायें।
जो चीजो में मिलावट करें वो जेल मे पठाये जायें।
डांडी मारे कमती तोले खोद के गडवाये जायें।
झूठी जो गवाही देते वो कोल्हू में पिडवाये जायें।
पंच जो अन्याय करते होली में जलाये जायें।
चुगलखोर हों खत्म करं जो दिन और रात बिगाड॥२॥

डाकू और चोरों के पाव घुटनों से कटवाये जायें।
मसटंडे भिखारी सारे काम पर लगवाये जायें।
कामी नरनारी आधे धरती में गडवाये जायें।
नगे तन पर बेत मारें कुत्ते भिर छुडवाये जायें।
दलालों के हाथ केवल कोहनी से कटवाये जायें।
रिश्वती लोगों के तन आरे से चिरवाये जायें।
लुच्चे और लफगे प्लेटफार्म पर ले जाये जायें।
आवे जब तूफानमेल आगे सभी गिराये जायें।
सांगी और नचकइयों का कोई करे नहीं सतकार॥३॥

जुआरी जूआबाज हवालात में पहुंचाये जायें।
बीड़ी पीनेवालों के मुंह में खूंटे ठुकवाये जायें।
हुक्का पीनेवालों के मुंह इन्जन पे बन्धवाये जायें।
भांग पीनेवाले पक्के रोड पर सुलाये जायें।
माल भरे ठेले इन पर सारे दिन घुमाये जायें।
बूचड़खाने तोड़ प्राण गौ के बचाये जायें।
अलग अलग लडके लडकी गुरुकुल में पढ़ाये जायें।
आर्यों के जलसे सारे विश्व में करवाये जायें।
कह नरदेव सुखी हों फिर सब दुनियां के नरनार।
इस तरह बनेगा स्वर्ग सभी संसार॥४॥

—सुलतानसिंह आर्य
ग्राम पोस्ट आहुलाना, गोहाना (रोहतक)

शराबबन्दी (भजन)

सुनो हरयाणा के बहिन और भाई।
इस शराब ने हरयाणा की शान घटाई॥१
सुनो हरयाणा के लोग और लुगाई।
या शराब आर्यों ने खराब बताई।
इस बुराई को त्याग दो मेरे भाई॥
सुनो हरयाणा के बहिन और भाई॥२
शराब छोड के जिन्दगी आजाद बनाई।
इसमें खुश रहते बच्चे और भाई।
इस शराब ने बहिन और बेटियों की इज्जत घटाई।
इन आर्यों की बात समझ में आई।
सुनो हरयाणा के बहिन और भाई॥३
ये शराब बडे बडे घरों को खत्म कर आई।
अतरसिंह आर्य की शिक्षा लो मेरे भाई।
इसी में है देश की भलाई।
सुनो हरयाणा के बहिन और भाई॥४॥

—सन्दीपकुमार आर्य, ग्राम नलवा (हिसार)

कुराड़ जि० सोनीपत में आर्यसमाज का चुनाव

दिनांक ३ मार्च रविवार को प्रातः ८ बजे ला० सूरजभान की दुकान पर आर्यसमाज कुराड की बैठक हुई और महाशय टेकचन्द ने ग्राम के नवयुवकों और बडे आदमियो को ग्राम के उत्थान और भलाई के लिए आर्यसमाज की आवश्यकता के लिए प्रेरित किया और प० रतनसिह आर्य उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने आर्यसमाज के सिद्धान्त और आर्यसमाज से लाभ के ऊपर रोशनी डाली। सभा के लिए वेद प्रचार दशांश व सब शुल्क केवल १७० रु० पं० रतनसिंह आर्य उपदेशक को दे दिए और आर्यसमाज के पदअधिकारियों का निम्न प्रकार सर्वसम्मति से चुनाव हुआ—प्रधान महाशय टेकचन्द आर्य, मन्त्री मास्टर हरज्ञानसिह आर्य, कोषाध्यक्ष ला० सूरजभान आर्य, उपप्रधान मास्टर महेन्द्रसिह आर्य, उपप्रधान श्री जयकरण आर्य, उपमन्त्री श्री मास्टर खजानसिह आर्य, पुस्तकाध्यक्ष श्री रमेशकुमार आर्य, प्रचार मन्त्री श्री नौरतन आर्य, और ९ बजे मास्टर हरज्ञानसिह आर्य के मकान पर यज्ञ और पारिवारिक सत्संग हुआ और महाशय टेकचन्द और प० रतनसिह आर्य ने यज्ञ और सत्संग से लाभ दर्शाया। —मन्त्री

जिला हिसार में शराब बन्दी एवं वेदप्रचार की धूम

दिनांक १८-३-९१ को खेतों की ढाणी (आर्य निवास) नलवा में वेदप्रचार किया गया। अन्य ढाणियों के नर-नारियों ने बढ़-चढ़कर प्रचार में भाग लिया। प्रात श्री भलेराम आर्य नलवा निवासी की ढाणी में नवभवन निर्माण उपलक्ष्य में यज्ञ किया गया। दो नवयुवकों ने यज्ञोपवीत लिया। श्री धर्मसिंह ने शराब व बीडी न पीने की प्रतिज्ञा की, यज्ञ में नलवा गांव से भी काफी नर-नारियों ने भाग लिया। माताए अपने-अपने घरो से घृत भी श्रद्धा से लाई।

दिनांक १९-३-९१ को श्री जयसिंह जी योगी के प्रयास एव लग्न से ग्राम जाखोद खेड़ा मे उनके योग आश्रम में प्रचार किया गया। श्री योगी जी हिसार से परिवार सहित पधारे साथ में अपना लाऊड स्पीकर भी लाए। परिवार ने बडी श्रद्धा से विद्वानो की सेवा की। प्रात: हवन किया गया। एक अध्यापक समेत श्री फूलसिंह, जयवीर तथा शमशेरसिंह ने जनेऊ लिया। शराब एव बीडो न पीने का व्रत लिया। दो बीड़ी के बण्डल तोड़े। दिनाक २०-३-९१ को ग्राम मिलापुर में प्रचार किया गया। श्री काशीराम आर्य के घर प्रातः हवन किया गया तथा यज्ञ में काफी सख्या में नवयुवकों ने भाग लिया। श्री रमेशचन्द्र, पृथ्वीसिंह, केदारसिंह, रामनारायण, सुरेन्द्रसिंह तथा ओमप्रकाश प्रादि ने जनेऊ लिया तथा शराब, धूम्रपान न पीने व जुआ न खेलने का व्रत लिया। कइयों ने बीड़ी के बण्डल भी तोड़े। दिनाक २१-३-९१ को ग्राम मात्रश्याम में प्रचार किया गया। श्रीराम आर्य पूर्व सरपच का विशेष सहयोग रहा। उपरोक्त गाव में सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने आर्यसमाज का इतिहास तथा शराब से होनेवाले नुक्सान एवं शराब बन्दी के बारे में विस्तार से विचार रखे। ज्ञातव्य है कि मात्रश्याम गाव में स्वर्गीय स्वामी देवानन्द जी की जन्म स्थली है। स्वामी जी ने आर्य नगर तथा मताना डींगी (फतेहाबाद) दो गुरुकुलों की स्थापना एव सचालन किया। क्रान्तिकारी जी ने गाव में शराबियों को लताड़ते हुवे मात्रश्याम गांव को ऐतिहासिक गांव बताया। श्री जयसिंह जी योगी ने प्राणायाम, योग-विद्या, ग्रासन तथा व्यायाम के महत्त्व पर प्रकाश डाला। श्री खेमसिंह जी, अमीचन्द आर्य तथा श्री अतरसिंह आर्य के क्रान्तिकारी भजन हुवे। साथ में दानवीर कर्ण, सुन्दरबाई एव रानी पद्मिनी का इतिहास भी रखा। इस प्रचार का बहुत ही अच्छा प्रभाव देखने को मिला। खेतो में कार्य होने के बाद भी लोगों ने बड़ी सख्या में प्रचार में भाग लिया। श्री योगी जी ने इस प्रचार कार्य में विशेष भूमिका निभाई। मोटर साईकिल पर क्रान्तिकारी जी को साथ लेकर गाव-गाव में जन सम्पर्क करना तथा १०१ रुपये दान स्वयं दिया व अन्य लोगो को प्रेरित किया। कुल मिलाकर शराब बन्दी प्रचार कार्यक्रम इस इलाके में कई वर्षो बाद सफल रहा।

मा० जयप्रकाश आर्य
जाखोद खेड़ा निवासी

श्री अशोक सिंहल का स्पष्टीकरण

नई दिल्ली-२९ मार्च १९९१। कुछ इस प्रकार की गलत अफवाहें फैलाई जा रहो हैं कि २० फरवरी, १९९१ को मेरठ नगर में पत्रकारों से वार्तालाप में मैंने महर्षि दयानन्द सरस्वती या उनकी पुस्तक के सम्बन्ध में कोई अपशब्द कहे थे। यह बात बिल्कुल निराधार है। मेरे मन में स्वामो जी के प्रति अत्यन्त श्रद्धा व आदर का भाव है। स्वामी जी ने हिन्दू समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों को मिटाकर जो समाज का उपकार किया है, उसके लिए हिन्दू समाज उनका हमेशा ऋणी रहेगा।

जारीकर्ता
जसवन्तराय गुप्त
केन्द्रीय सयुक्त मत्री

सिवानका (रोहतक) में लालच देकर हरिजनों को ईसाई बनाने का षड्यन्त्र आर्यसमाज द्वारा विफल

रोहतक ३ अप्रैल—(कार्यालय सवाददाता द्वारा) तहसील गोहाना के ग्राम बिचपड़ी तथा सिवानका मे गतमास ईसाई धर्म के कुछ एजेण्टों ने हरिजन नर-नारियों को लालच के फन्दे में फसाकर ईसाई धर्म अपनवाने का षड्यन्त्र रचा था। इसका समाचार दनिक नवभारत टाइम्स में प्रकाशित हुआ था।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से अपने पिछड़े भाई-बहनों को पुन: वैदिक धर्म में लाने के लिए दिनाक २ अप्रैल को ग्राम छतेहरा के प्रधान डा० जयसिंह आर्य सरपच तथा ग्राम सिवानका के श्री रिसालसिह, श्री रघुवीरसिंह पच, श्री धर्मसिंह पच, श्री गोरधन, प० रामकिशन बैरागी आदि के सहयोग से ग्राम की चौपाल जो कि हरिजन परिवारों के समीप है, में प्रचार का आयोजन किया गया। प० ईश्वरसिंह तूफान तथा पं० जयपालसिंह आर्य ने अपने प्रभावशाली भजनो द्वारा वैदिक धर्म को विशेषता तथा ईसाई मत का जमकर खण्डन किया और ग्रामीणो से शराब आदि सामाजिक बुराइयों से दूर रहने की प्रेरणा की। सभा के उत्साही उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी तथा श्री रवीन्द्र विद्यालंकार ने अपने व्याख्यानों मे देश को आजाद कराने में आर्यसमाज के योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि अग्रेज शासको से स्वतन्त्रता प्राप्ति की लड़ाई में ८५% आर्य-समाजी सम्मिलित हुए थे। इसका उल्लेख काग्रेस के इतिहास में लिखा हुआ है। परन्तु आज ईसाई मिशनरी भारत में ईसाई मत फैलाकर पुनः भारत मे अग्रेजो का राज्य स्थापित करने की योजना बना रहे हैं। उन्होने अब हरयाणा में जो आर्यो का प्रदेश माना जाता है, की घुसपैठ आरम्भ कर दो है और इस ग्राम के कुछ हरिजनो को लालच में फसाकर ईसाई बनाने का कार्यक्रम बनाया है। इन्हे बहकाकर सोनीपत तथा दिल्ली के गिरजाघरों में ले जाकर उनका धर्म परिवर्तन करने का यत्न कर रहे हैं। आर्यसमाज राष्ट्र का चौकीदार है। अत: इन देश द्रोही ईसाई प्रचारको द्वारा राष्ट्र को कमजोर करने का षड्यन्त्र सफल नही होने दिया जावेगा और अपने पिछड़े हुए भाइयो को अपना प्राचीन वैदिक धर्म में ही रखेंगे। उनके दु:ख-सुख में हम भागीदार रहेंगे। इस वेदप्रचार में हरिजन भाइयों ने भाग लिया। ३ अप्रैल को प्रात: आर्यसमाज के उपदेशक उन परिवारों में गये और उनसे पूछताछ करने पर उन्होने बताया कि हमने अपना धर्म नही बदला है। हमारे नाम तथा रीति-रिवाज पूर्ववत् हैं। कुछ ईसाई प्रचारक हमारे घरों में ईसाई मत का साहित्य देकर अवश्य गये हैं। उसे पढने से हमारा मन परिवर्तन हुआ है। हम शराब तथा मास आदि का प्रयोग नही करते। इन परिवारों की महिलाओं ने जोर देकर बताया कि हम अपनी सन्तान को ईसाई नही होने देगी क्योंकि हमारे पूर्वज हजारो वर्षों से हिन्दू हैं। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने उनमे आर्यसमाज का सन्देश, वैदिक उपासना पद्धति तथा ईसाई मत खण्डन की पुस्तके वितरित की। ग्राम के सरपच श्री कटारसिंह ने भी विश्वास दिलाया है कि किसी के दबाव में हम अपने भाइयो को धर्म परिवर्तन नही करने देंगे।

पाठकों की सेवा में

आर्ष-साहित्य-प्रचार-ट्रस्ट ऋषि-कृत ग्रन्थों का प्रकाशन करके लागत-मात्र मूल्य से विक्रय करता रहा है जिससे ऋषिवर के अमर-ग्रन्थ, विशेषकर 'सत्यार्थप्रकाश' को जन-जन तक पहुचाया जा सके। परन्तु कागज का मूल्य, छपाई एवं मजदूरी इत्यादि अतिशय बढने से हमें भी विवश होकर इसका मूल्य बढाना पड़ रहा है? किन्तु यह बढा मूल्य पहली जुलाई १९९१ से लागू होगा। सज्जन, सभा व संस्थायें पहली जुलाई से पूर्व इस अमर ग्रन्थ को मगाने के लिये आदेश करेंगे, उन्हें पुराने मूल्य से ही प्राप्त हो सकेगा।

धर्मपाल आर्य
मन्त्री, आ. स. प्र. ट्रस्ट ५५ खारीबावली दिल्ली-६

चुनाव प्रचार के समय शराब पर पाबन्दी लगाने का अनुरोध

सभाप्रधान द्वारा मुख्य चुनाव आयुक्त के नाम पत्र

लोकसभा के चुनाव को घोषणा होते ही राजनैतिक गतिविधिया बढ गई हैं। राजनैतिक दल अपने प्रत्याशियों का चयन करने में व्यस्त हैं। इस सदर्भ में मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हू कि चुनाव प्रचार के समय शराब की बिक्री तथा इसके पीने-पिलाने पर पूर्ण पाबन्दी लगाई जावे क्योंकि चुनाव प्रचार कार्य में शराब के प्रचार तथा प्रसार से भ्रष्टाचार में वृद्धि होती है। शराब आदि पोकर प्रत्याशी अपने-अपने समर्थकों से गुण्डागर्दी करवाते हैं और मतदान केन्द्रो पर बलात् कब्जे आदि करवाने की धीगामस्ती की जाती है। साधारण मतदाता इस प्रकार अपने अमूल्य मतदान के अधिकार से वंचित रह जाता है। यह लोकतन्त्र की हत्या है। इसी प्रकार चुनाव प्रचार अभियान में निर्धन प्रत्याशी शराब की मांग पूरी न कर सकने की अवस्था में अपने लिए खुलकर प्रचार नही कर सकता क्योंकि शराबी तत्त्व इस प्रकार के प्रत्याशियों की प्रचार सभाओ में विघ्न बाधाए डालते हैं।

प्राय: देखने में आया है कि चुनाव के समय शराब की बिक्री अत्यधिक होती है। शराब का सहारा लेनेवाले प्रत्याशी शराब को बोतलें अवैध रूप से खरीदकर अपने समर्थकों में वितरित करते है। यही कारण है कि इस बार शराब के ठेकों की नीलामी के अवसर पर व्यापारियो ने एक-एक करोड से अधिक की राशि की बोली देकर शराब के ठेके छुड़वाये हैं। इस प्रकार जहां शराब के कारण झगड़े होंगे वहा शराब जैसी सामाजिक बुराई के विस्तार से राष्ट्र को करोडों रुपयों की आर्थिक हानि होगी।

आशा है आप मेरे सुझाव को स्वीकार करेंगे और चुनाव सम्पन्न होनें तक शराब की बिक्री पर पूर्ण पाबन्दी लगवाकर एक कल्याणकारी पग उठावेंगे।

भवदीय
(प्रो०) शेरसिंह सभाप्रधान

विश्वविद्यालय यज्ञशाला में यज्ञ का प्रबन्ध करने की मांग

उपकुलपति के नाम सभा मन्त्री का पत्र

आपको महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में उपकुलपति के महत्त्व-पूर्ण पद पर नियुक्त किया है, हमारी सभा इसके लिए आपका हार्दिक स्वागत करती है। आपका एक आर्य परिवार तथा छोटूराम आर्य कालेज सोनीपत से सम्पर्क रहा है। इस प्रकार आप पर महर्षि दयानन्द तथा वैदिक सिद्धान्तों की छाप है। इसी कारण गत सप्ताह रोहतक के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने भेंट करके मांग की थी कि इस विश्वविद्यालय में निर्मित भव्य यज्ञशाला में प्रतिदिन यज्ञ कराने की व्यवस्था हेतु एक वैदिक विद्वान् (पुरोहित) की नियुक्ति की जावे। आपने इस मांग पर सहानुभूति पूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया था। इस विश्वविद्यालय में गत ३-४ वर्षों से योग की शिक्षा देनेवाले प्राध्यापक का पद भी रिक्त है। अत: आपसे पुन: अनुरोध है कि सभा की इस न्यायोचित तथा समय को आवश्यकता की मांग को स्वीकार करके कृतार्थ करें। इन कार्यों में सभा की ओर से यथासम्भव पूरा सहयोग दिया जावेगा।

भवदीय
सूबेसिंह सभा मन्त्री

सांघी (रोहतक) में ब्रह्मचर्य शिक्षण शिवर

आर्यसमाज सांघी जिला रोहतक की ओर से दिनांक ६ से १० जून तक ग्राम में ब्रह्मचर्य शिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जो युवक अपने जीवन में सुधार लाने तथा सुधार कार्यों में भाग लेना चाहते हैं, वे सम्पर्क करें।

ओमप्रकाश आर्य मन्त्री

आर्यसमाज बालसमन्द (हिसार) का ६३वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक २२-२३-२४ फरवरी १९९१ को आर्यसमाज बालसमन्द का वार्षिकोत्सव विधिवत् सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी जगत् मुनि जी, स्वामी सर्वदानन्द जी, प्रो० ओमकुमार आर्य, प्रो० रामविचार, महात्मा आनन्द मुनि, आचार्या बहन सुनीति आर्या, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी तथा प० प्रभुदयाल प्रभाकर आदि ने आर्य महापुरुषों का इतिहास, देश की आजादी में आर्यसमाज का योगदान, राष्ट्ररक्षा, गोरक्षा, नारीशिक्षा, समाज में फैला पाखण्ड व अन्ध-विश्वास, धर्म क्या है, आत्मा क्या है, परमात्मा का स्वरूप, मनुष्य के कर्त्तव्य, शराब बन्दी त्योहारों का महत्त्व, महर्षि दयानन्द जी के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला। साथ में सरकार में फैला भ्रष्टाचार व शराब बढावा नीति की घोर निन्दा को। प्रात:काल प्रतिदिन यज्ञ पर सध्या का रहस्य, पंच महायज्ञ तथा गायत्री महामन्त्र की व्याख्या की। ४ नवयुवकों ने जनेऊ धारण किया।

दिनांक २३ फरवरी की रात्री को ईश्वर कृपा से वर्षा हुई जिसके फलस्वरूप वेदप्रचार आर्यसमाज मन्दिर के पंडाल में न होकर पंचायत घर में हुआ। दिनांक २४ फरवरी को मध्याह्न की बैठक में गत वर्ष की भांति आर्यसमाज बालसमन्द की ओर से नवयुवकों के प्रेरणास्रोत सभा उपदेशक एवं आर्यसमाज कवारी के प्रधान श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी का अभिनन्दन एवं सम्मान किया गया। अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता श्री रामजीलाल आर्य (बाडाहेडी) ने की। मंच संचालन श्री महेन्द्रसिंह आर्य बैंक मनेजर (डोभी) ने किया। महाशय रामजीलाल आर्य पूर्व सरपच (बालसमन्द) ने एक करण्डी (शाल) भेंट किया। नवयुवक श्री सुनीलदत्त आर्य ने वैदिक साहित्य भेंट किया। स्वामी ओमानन्द जी ने भी सैकड़ों रुपयों की दो पुस्तकें भेंट कीं, श्री सुमेश सिंगला (हिसार) ने स्वास्थ्य हेतु दो किलो च्यवनप्राश भेंट किया। आर्यसमाज डोभी ने १०१ रुपया, इन पंक्तियों के लेखक मन्त्री ने ५१ रुपये, मा० प्रेमसिंह आर्य ने ५१ रु०, श्री दिवानसिंह आर्य ने २१ रुपये सादर भेंट किए।

इसके अतिरिक्त स्वामी ओमानन्द, स्वामी सर्वदानन्द, स्वामी जगत्मुनि, प्रधान श्री दिवानसिंह आर्य, महाशय धर्मपाल भालोठिया, श्री सुनीलदत्त आर्य तथा महेन्द्रसिंह आर्य ने क्रान्तिकारी जी के जीवन एवं कार्यों पर पांच-पांच मिनट प्रकाश डाला व भूरि-भूरि प्रशंसा की। उपरोक्त सभी विद्वानों ने आशीर्वाद के साथ-साथ उसे सच्चा कर्मठ आर्यवीर बताया। तत्पश्चात् क्रान्तिकारी जी ने आर्यसमाज बालसमन्द के अधिकारियों तथा विद्वानों का आभार व्यक्त किया और विश्वास दिलाया की भविष्य में ऋषि ऋण से अनृण होने के लिए वेदप्रचार एव शराबबन्दी प्रचार करता रहूंगा।

इस उत्सव पर महाशय रामकुमार आर्य, महाशय धर्मपालसिंह भालोठिया, महाशय झाब्बेराम तथा महाशय फूलसिंह आदि के समाज सुधार के क्रान्तिकारी भजन हुवे। उत्सव में गाव के नर-नारियों के अतिरिक्त निकट के गुवांडों से भी काफी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

माईलाल आर्य
मन्त्री आर्यसमाज बालसमन्द

शोक समाचार

स्वामी वेदानन्द (श्री साहबसिंह जी) का दिनांक १२ फरवरी सन् १९९१ को दुर्घटना में देहावसान हो गया। स्वामी जी ने दयानन्द शताब्दी समारोह अजमेर में स्वामी सर्वानन्द जी से संन्यास लिया था और वैदिक साधन आश्रम प्रीतमपुरा (सोनीपत) में पाठशाला का संचालन व आर्य भजनोपदेशक का कार्य कर रहे थे।

मन्त्री—आर्यसमाज कानौंदा

धर्म का स्रोत वेद

(पं० धर्मदेव "मनीषी" वेदतीर्थ, गुरुकुल कालवा)

मनुस्मृति कोई असम्बद्ध पुस्तक नहीं। यह वैदिक साहित्य का एक ग्रन्थ है। वैदिक धर्म का प्रतिपादन ही इसका कार्य है। वेद ही इसका मूलाधार है। यह बात कल्पित नहीं है, किन्तु मनुस्मृति से ही सिद्ध है। नीचे के श्लोक इसके साक्षी हैं—

वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्।
आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च ॥

वैदिक मनुस्मृति २/५

सम्पूर्ण वेद, मनुस्मृति तथा ऋषिप्रणीत शास्त्र, सत्यपुरुषों का आचार और जिस जिस कर्म में अपनी आत्मा प्रसन्न रहे अर्थात् भय, लज्जा, शंका जिनमें न हो उन कर्मों का सेवन करना उचित है। देखो, जब कोई मिथ्याभाषण, चोरी आदि की इच्छा करता है तभी उसके आत्मा में भय, शंका, लज्जा अवश्य उत्पन्न होती है। इसलिये व कर्म करने योग्य नहीं ॥

सर्वं तु समवेक्ष्येदं निखिलं ज्ञानचक्षुषा।
श्रुतिप्रामाण्यतो विद्वान्स्वधर्मे निविशेत वै ॥
श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठन् हि मानवः।
इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तमं सुखम् ॥
श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः।
ते सर्वार्थेष्वमीमांस्ये ताभ्यां धर्मो हि निर्बभौ ॥

मनु० २/६-८ ॥

विद्वान् मनुष्य सम्पूर्ण शास्त्र, वेद, सत्पुरुषों का आचार अपने आत्मा के अविरुद्ध अच्छे प्रकार विचार कर ज्ञाननेत्र करके श्रुति-प्रमाण से स्वात्मानुकूल धर्म में प्रवेश करे। क्योंकि जो मनुष्य वेदोक्त धर्म और वेद से अविरुद्ध स्मृत्युक्त धर्म का अनुष्ठान करता है वह इस लोक में कीर्ति और मरकर सर्वोत्तम सुख को प्राप्त करता है। श्रुति वेद को और स्मृति को धर्मशास्त्र कहते हैं। ये सब कर्त्तव्य अकर्त्तव्य विषयों में निर्विवाद है क्योंकि इनके द्वारा ही धर्म का भली प्रकार पूर्णरूप से प्रकाशन हुआ है।

योऽवमन्येत ते मूले हेतुशास्त्राश्रयाद्द्विजः।
स साधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिको वेदनिन्दकः।
वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥
अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते।
धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः ॥ मनु० १/६-११ ॥

जो कोई मनुष्य वेद और वेदानुकूल आप्तग्रन्थों का अपमान करे उसको श्रेष्ठ लोग जाति बाह्य करदें क्योंकि जो वेद की निन्दा करता है वही नास्तिक कहाता है। वेद, स्मृति-वेदानुकूल आप्त मनुस्मृत्यादि शास्त्र, सत्पुरुषों का आचार और अपने आत्मा में प्रिय अर्थात् जिसको आत्मा चाहता है जैसा कि सत्यभाषण, ये चार धर्म के लक्षण कहे गये हैं अर्थात् इन्हीं से धर्माधर्म का निश्चय होता है। परन्तु जो द्रव्यों के लोभ और काम अर्थात् विषय सेवा में फंसा हुआ नहीं होता उसी को धर्म का ज्ञान होता है। जो धर्म को जानने की इच्छा करे उनके लिये वेद ही परम प्रमाण है ॥

वेदमेव सदाभ्यसेत्तपस्तप्यन् द्विजोत्तमः।
वेदाभ्यासो हि विप्रस्य तपः परमिहोच्यते ॥
योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः ॥

मनु-२-११७-११८

द्विजोत्तम अर्थात् ब्राह्मणादिकों में उत्तम सज्जन पुरुष सर्वकाल तपश्चर्या करता हुआ वेद का ही अभ्यास करे। जिस कारण ब्राह्मण वा बुद्धिमान् जन को वेदाभ्यास करना इस संसार में परम तप कहा है इससे ब्रह्मचर्याश्रम सम्पन्न होकर अवश्य वेद विद्याध्ययन करें। जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वेद को न पढ़कर अन्य शास्त्र में श्रम करता है वह जीवित ही अपने वंश के सहित शूद्रपन को प्राप्त हो जाता है। ब्रह्मचर्याश्रम सम्पन्न होकर वेद-विद्या को अवश्य पढे ॥

षट्त्रिंशदाब्दिकं चर्यं गुरौ त्रैवेदिकं व्रतम्।
तदर्धिकं पादिकं वा ग्रहणान्तिकमेव च ॥ मनु० ३।१॥

आठवें वर्ष से आगे छत्तीसवें वर्ष पर्यन्त अर्थात् एक-एक वेद के सांगोपांग पढने में बारह-बारह वर्ष मिलके छत्तीस और आठ मिलके चवालीस अथवा १८ वर्षों का ब्रह्मचर्य और आठ पूर्व के मिल के छब्बीस वा नौ वर्ष तथा जब तक विद्या पूरी ग्रहण न कर लेवे तब तक ब्रह्मचर्य रखे ॥

ऋषि दयानन्द जी ने आर्यसमाज के नियम में बताया है "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ॥

अनमोल वचन

लेखक—महेश आर्य ग्राम पो० पन्हैड़ा खुर्द तह० बल्लबगढ़, जिला—फरीदाबाद (हरयाणा)

१. हर काल हर परिस्थिति में भीतर मौजूद आत्मा के संकेत पर चलो जो सदैव सन्मार्ग का निर्णय देती है।
२. प्रत्येक मनुष्य का अन्तस्थ केवल सत्य की आवाजें देता है, स्वार्थी मन को रोक जो इसका अनुभव करता है वह सत्-चित् आनन्द को पाता है।
३. सुख आये या दुःख महापुरुषों के जीवन को सदैव अपनी दृष्टि के सामने रखना चाहिए।
४. जो प्रकृति के नियमों की अवहेलना करके कृत्रिम सुखों का आदि होता है प्रकृति उसे नष्ट कर देती है।
५. मानव योगसाधना से चमकता है तथा विषय विकारों से मलीन होकर नष्ट हो जाता है।
६. लोहे के साथ ककरीट चूना कई मञ्जिलों तक स्थिर रहता है उसी प्रकार दृढ निश्चय आत्मनिर्भर लोहपुरुष सम्पूर्ण राष्ट्र को स्थिर किये होते हैं।
७. उद्देश्य की प्राप्ति के लिए लगन, श्रम तथा चरित्रवान् होना अत्यन्त आवश्यक है।
८. छोटा नुक्स पूर्णता को कुण्ठित करता है।
९. परोपकार करने वाला कष्टों में रहते हुये भी जीवनभर सुख शान्ति का अनुभव करता है।
१०. साहस पर रुके रहना उद्देश्य के पथ पर चलना है और साहस छोड़ देना पथहीन होना है।
११. कामवासना में फसे मनुष्य को सम्भव कार्य भी असम्भव लगते हैं किन्तु सच्चे ब्रह्मचारी पूरा कर उसमें चमकते हैं।
१२ आत्मा से मिली शुभ कार्य की प्रेरणा को तुरन्त कीजिये नहीं तो स्वार्थी मन विचारों को दूषित कर देता है।
१३. बड़ों से हाथ मिलाना उचित नहीं, झुककर प्रणाम करना चाहिए।
१४. सत्य से विमुख होकर जो असत्य मार्ग से बढना चाहता है सत्य उसका सर्वनाश कर देता है।

दूसरा पारिवारिक महायज्ञ

आर्यवीर दल नरवाना की ओर से दूसरा पारिवारिक महायज्ञ श्री रणवीर आर्य के घर पर रविवार को सायं ४ बजे बडी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। इस महायज्ञ में प्रधान श्री राधाकृष्ण आर्य के साथ काफी सैनिक आर्यवीरदल के भी उपस्थित थे। यजमान श्री रणवीर ने आर्य वीरदल को दान स्वरूप ५१/- रुपये दिये।

मन्त्री आर्य वीर दल नरवाना

आर्यसमाज शान्ति नगर सोनीपत द्वारा श्रद्धाञ्जलि

आर्यसमाज शान्ति नगर सोनीपत के सदस्य एवम् आर्य वीर दल सोनीपत मण्डल के कर्मठ कार्यकर्ता श्री मा० गोपीचन्द जी चुघ की बड़ी बहिन श्रीमती यशोदा देवी धर्मपत्नी श्री देवराज डूडेजा गन्नौर निवासी का हृदय गति अवरोध के कारण ११-०३-१९९१ को आकस्मिक निधन हो गया। उनकी आयु लगभग ५५ वर्ष थी।

वह एक नेक देवी थी जिसमें ईश्वर भक्ति, दयालुता, धार्मिकता, कर्त्तव्यपरायणता एवम् प्राणी मात्र की सेवा की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी।

आर्यसमाज शान्तिनगर। आर्य वीर दल सोनीपत मण्डल के सदस्यों द्वारा उस महान् देवी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से उनको दिवङ्गत आत्मा को शान्ति एवम् सद्गति प्रदान करने तथा उनके परिवार को इस आकस्मिक कष्ट, दुःख एवम् वियोग की घड़ियों में शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

विनीत
हरिचन्द स्नेही (मण्डलपति) आर्य वीर दल एवम्
महामन्त्री आर्यसमाज शान्ति नगर सोनीपत

यज्ञशाला के लिए दान

श्रीमती सुरक्षा देवी आर्या रोहतक की प्रेरणा से सिद्धान्ती भवन रोहतक में यज्ञशाला निर्माण हेतु निम्नदानी महानुभावों ने दान दिया है—

श्री सुभाषकुमार आर्य सीकर (राजस्थान) १०१)
श्री आकाश सुपुत्र श्री करनैलसिंह दिल्ली १०१)
सभा की ओर से इनका धन्यवाद।

आशा है अन्य दानी भी इस पवित्र कार्य में दान देकर यश के भागी बनेंगे।

रामानन्द सिंहल
सभा कोषाध्यक्ष

आर्यसमाज मन्धार का वार्षिकोत्सव

१-२-३ मार्च को बड़ी धूम धाम के साथ सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न विद्वानों ने भाग लिया श्री पं० सत्यप्रिय हिसार श्री स्वामी गुरुदत्त मुनि श्री महाशय हरलाल वानप्रस्थी श्री नरेशपाल उ० प्र० श्री दयाल सिंह श्री पं० विद्या भूषण शेरसिंह आर्य श्री मानसिंह आर्य के व्याख्यान तथा प्रभावशाली भजन हुये। इस अवसर पर सभा को ३०१ रु० वेद प्रचार दशांश व सर्वहितकारी के लिये दान दिया।

मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न० २३२०/७३ रजि नं० P/RTK-/६१ टसवत् १,६६, ०८

प्रधान सम्पादक—सूबेसिह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक २० १४ अप्रैल, १६६१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

मोक्ष—सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ६ का एक पाठ

डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार, एम०ए० आर्यसमाज, गोरखपुर

मुक्ति, अपवर्ग, पुरुषार्थ और मोक्ष शब्द एक ही अर्थ को बतलाने वाले हैं।" मुच्यते अनया इति मुक्तिः" अर्थात् जिस अवस्था से दुःख दूर हों उस अवस्था का नाम मोक्ष है। स्वामी जी महाराज ने मुक्ति की परिभाषा करते हुए लिखा है कि "मुञ्चन्ति पृथग्भवन्ति जना यस्यां सा मुक्तिः॥ जिससे छूट जाना हो उसका नाम मुक्ति है। अब प्रश्न उत्पन्न होता है किससे छूट जाना मुक्ति है। स्वामी जी महाराज ने उत्तर दिया है कि जिससे छूटने की इच्छा मोक्ष है। उत्तर देते हुए कहा गया है कि मनुष्य दुःखों से छूटने की इच्छा सब लोग करते हैं। भोजन करना, सोना, काम करना, दौडना, घूमना आदि जितनी भी क्रियायें मनुष्य या अन्य चेतन प्राणी करते हैं उन सब का मुख्य उद्देश्य दुःखों से छूटना ही है।

मनुष्य को दुःख क्यों होता है? मनुष्य के दुःख का कारण अविद्या या अज्ञान है। अविद्या का अर्थ है "यया तत्त्व स्वरूपं न जानाति भ्रमादन्यस्मिन्नन्यन्निश्चिनोति साऽविद्या।" अर्थात् जिससे तत्व स्वरूप न जान पडे, अन्य में अन्य की बुद्धि होवे वह अविद्या कहाती है और इस अविद्या के द्वारा ही हम संसार में दुःख प्राप्त करते हैं। इस अविद्या के कारण मनुष्य में अभिमान या अवमानना की स्थिति आती है, यह दोनों अवस्थायें दुःख का कारण होती हैं। यह अभिमान ही वह दीवार है जिसने आत्मा को सीमित और स्वार्थबद्ध बना रखा है। यही वह आवास है जिससे परिच्छिन्न आत्मा को अनन्त आत्मा के दर्शन से वंचित कर रखा है, यही वह उलझन है जिसने हमारे विशुद्ध स्वरूप को हम से ओझल किया हुआ है और इसी के कारण हम अनित्य में नित्य की, अशुचि में शुचि को, अनात्मा में आत्मा की कल्पना करते हैं। यह कल्पनायें वास्तविक न होने से हमें दुःख देती हैं और इनसे छुटकारा पाने पर हम सुख या आनन्द की अवस्था में आ जाते हैं। किन्तु जो व्यक्ति अविद्या में है वह बद्ध है और जो व्यक्ति अपनी इच्छा से काम नहीं कर सकता, दूसरों की सीमा में बंधकर चलना पड़ता है वह दुःख में है यह एक निर्विवाद सत्य है। कहा है "सर्वंपरवशम् दुःखम्, सर्वंमात्मवशम् सुखम्' अपने से होने वाले सब कार्य सुख और दूसरे के वश में जो काम किए जाते हैं वह दुःख जनक होते हैं।

अब प्रश्न होता है कि जब मनुष्य अविद्या को दूर कर विद्या को प्राप्त करता है और विद्या या ज्ञान के द्वारा मुक्ति को प्राप्त कर लेता है तब उसका जीवात्मा कहा रहता है? इसका उत्तर स्वामी जी महाराज ने सत्यार्थप्रकाश में दिया है कि वह ब्रह्म में रहता है। अतः ब्रह्म प्राप्ति के लिए हमें अविद्या से छुटकारा पाना चाहिए। अविद्या, अधर्म, कुसंग, कुसंस्कार, बुरे व्यसनों से अलग रहने और सत्यभाषण, ज्ञान विद्या पक्षपात रहित न्याय धर्म की वृद्धि करने, ईश्वर की उपासना, प्रार्थना, स्तुति, योगाभ्यास, विद्याध्ययन, धर्म से पुरुषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने, पक्षपातरहित धर्माचरण करने से मनुष्य बन्धन से मुक्त होकर मोक्ष पा सकता है और वह ब्रह्म को प्राप्त कर सकता है।

मुक्ति की अवस्था में जीव का ब्रह्म से मिलन होता है। मिलन का मतलब लय समझना भूल होगी। मिलन की अवस्था में जीव ब्रह्म में विद्यमान रहता है और सर्वत्र व्यापक परमेश्वर में मुक्तजीव अव्याहत गति अर्थात् बिना किसी रुकावट के सर्वत्र विचरता है वह उस समय आनन्द स्वरूप ब्रह्म में विद्यमान रहने के कारण आनन्दमय, विज्ञानस्वरूप होता है। यहा अब यह प्रश्न किया जा सकता है कि मनुष्य स्थूल शरीर के द्वारा ही आनन्द का उपभोग करता है और मुक्ति में स्थूल शरीर नही होता तो यह जीव किस प्रकार आनन्द की अनुभूति करता है? वास्तव में मुक्ति की अवस्था मे स्थूल शरीर तो नही परन्तु संस्कार शरीर बचा रहता है। शरीर तीन प्रकार के हैं १- स्थूल शरीर २- सूक्ष्म शरीर और ३- कारण शरीर। इनमें से सूक्ष्म शरीर पांच प्राण, पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच सूक्ष्म भूत और तथा बुद्धि इन सत्रह तत्वों का समुदाय है। यही सूक्ष्म शरीर है। यह सूक्ष्म शरीर जन्म मरणादि में भी जीव के साथ रहता है। इसके दो भेद हैं :- (१) भौतिक अर्थात् जो सूक्ष्म भूतों के अंश से बना है। (२) दूसरा स्वाभाविक जो जीव स्वाभाविक गुण रूप हैं। यह दूसरा अभौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है। इसी से जीव मुक्ति में भी सुख भोगता है।

स्थूल शरीर उसको कहते हैं जो यह दीखता है।

तीसरा कारण शरीर है जिसमें सुषुप्ति और गाढनिद्रा होती है, वह प्रकृतिरूप होने से सर्वत्र विभु और सब जीवों के लिए एक है।

चौथा तुरीय शरीर उसको कहते हैं जिससे समाधि द्वारा जीव परमात्मा के आनन्दस्वरूप में मग्न होते हैं। इसी समाधि संस्कार जन्य शुद्ध शरीर का पराक्रम मुक्ति में भी यथावत् सहायक रहता है। इन सब कोष अवस्थाओं से जीव पृथक् है, क्यों जब मृत्यु होती है तब सब कोई कहते हैं कि जीव निकल गया यही जीव सब का प्रेरक, सब का धर्ता, साक्षी, कर्त्ता, भोक्ता कहाता है। जो कोई जीव को कर्त्ता, भोक्ता नही माने तो अविवेकी है।

सत्यासत्य का ज्ञान करने के लिए बुद्धि, स्मरण करने के लिए चित्त और अहकार के अर्थ अहकार रूप अपनी स्वशक्ति से जीवात्मा मुक्ति में ही जाता है। और संकल्पमात्र शरीर होता है जैसे शरीर के आधार रहकर इन्द्रियों के गोलक के द्वारा जीव स्वकार्य करता है वैसे मुक्ति के सब आनन्द भोग लेता। जीव में बल, पराक्रम, आकर्षण प्रेरणा, भक्ति, भाषण, विवेचन क्रिया, उत्साह, स्मरण, निश्चय, इच्छा, प्रेम, द्वेष, सयोग, वियोग, संयोजक, विभाजक, श्रवण, स्पर्शन, दर्शन, स्वादन और गन्ध ग्रहण तथा ज्ञान इन २४ प्रकार के सामर्थ्य से जीव मुक्त है। इससे वह मुक्ति मे भी आनन्द की प्राप्ति करता है। यदि मुक्ति में जीव विद्यमान न रहता तो कौन उस सुख को भोगता यही मोक्ष है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

वैदिक पंचशील–बिना शान्ति नहीं

रचयिता – लालचन्द "विद्यावाचस्पति" श्रीमंगल जयकोर आ० आश्रम खेड़की (महेन्द्रगढ़)

मन्त्र

ईशा वास्यमिद सर्वं यत्किञ्चज्जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥
(यजुर्वेद अ० ४०, मन्त्र १)

भावार्थ—हे मनुष्यों ! इस जगत् में जो भी चराचर वस्तुएं हैं, वे सभी ईश्वर से ही आच्छादित हैं क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापक है। सभी पर ईश्वर की छत्रछाया विद्यमान है। अतः उसी ईश्वर के दिए हुए पदार्थों का, वस्तुओं का, साधनों का साधक बनकर साधना करते हुए भोग करो, प्रयोग करो, सदुपयोग करो तभी साध्य मिलेगा। किसी के भी धन का लालच मत करो, लोभ मत करो क्योंकि किसका है यह धन ? किसी का नहीं, केवल प्रभु का हो सब कुछ है।

प्रस्तुत मन्त्र यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय अथवा ईशोपनिषद् के प्रारम्भ में आता है। यजुर्वेद में कर्मकाड वर्णित है। कर्म के भी कई रूप हैं जैसे कर्म, विकर्म, कुकर्म, अकर्म, सकाम कर्म, निष्काम कर्म, इत्यादि। गीता में भी कहा गया है 'योगः कर्मसु कौशलम्।' योग क्या है ?

"योगश्चित्तवृत्तिनिरोध." (यो०स० सूत्र २)

अर्थात् चित्त की वृत्तियो के निरोध का नाम ही योग है। योग का ही दूसरा नाम अध्यात्मविद्या है। उपनिषद् में अध्यात्मविद्या का अक्षय भडार है। "उपनिषद्" अर्थात् उप=पास, नि.=निश्चय से सद्=बैठना। उपनिषदों का रहस्यात्मक अमृतमय ज्ञान का एक बार श्रवण या मनन करने से समझ में नही आता है। अत प्राचीन समय से ही अध्यात्मविद्या के जिज्ञासु, शांतिमय कल्याणपूर्ण ज्ञान के पिपासु श्रद्धालु सज्जन गुरु के पास निश्चिन्त रूप से बैठकर इनका रहस्य समझते थे। इसी कारण इनका नाम उप+नि.सद (उपनिषद्) प्रसिद्ध हो गया। उपनिषदों में पराविद्या है। इनका रस ऐसी रसायन है जिसके सेवन से मनुष्य का जीवनप्रवाह ही बदल जाता है। ईशोपनिषद् यजुर्वेद का ४०वां अध्याय है। यह साक्षात् वेद का ही भाग है। इसके प्रथम भाग में पांच कर्त्तव्य बताए गए हैं जिनका पालन करके मनुष्य ब्रह्मविद्या का अधिकारी बन सकता है अन्यथा वह मानव मानवता को छोड़ दानव बनता है। इन्हीं पांचों कर्त्तव्यों को यहां वैदिक पचशील का नाम दिया गया है। ये इस प्रकार हैं—

१. ईश्वर सर्वव्यापक है।

ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है। कण-कण में उसकी शक्ति छिपी हुई है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भी सत्यार्थप्रकाश के अन्तगत 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाशः' में तथा आर्यसमाज के दूसरे नियम में भी ईश्वर को सर्वव्यापक माना है। अतः ईश्वर की सर्वव्यापकता जानकर सदैव हमें ज्ञानपूर्वक शुभ, शुद्ध और पवित्र कर्म करने चाहियें।

२. सब भोग्य वस्तुएं भी ईश्वर की हैं।

इस सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता ईश्वर ही है। सब भोग करने योग्य वस्तुयें भी ईश्वर की ही हैं क्योंकि मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र होते हुए भी फल के लिए ईश्वर पर आश्रित है।

३. किसी के धन पर कुदृष्टि न करें।

मनुष्य का तीसरा कर्त्तव्य है कि वह किसी के धन पर कुदृष्टि न करे क्योंकि अन्याय से प्राप्त धन से कभी भी शांति नहीं मिलती है। क्योंकि बिना धन के सुख को प्राप्ति भी नहीं होती है।

४. फल की आकांक्षा छोडकर कर्त्तव्य बुद्धि से कर्म करो

अब चौथा कर्त्तव्य यह है कि मनुष्य कर्म करे फल की आकांक्षा छोड़कर। गीता में भी कहा है—

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
(गीता अ० २, श्लोक ४७)

और भी—ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सग त्यक्त्वा करोति यः।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा।
(गीता अ० ४ श्लोक १०)

अर्थात् फल की आकांक्षा छोड़कर कर्त्तव्य बुद्धि से कर्म करने का ज्ञान प्राप्त भक्त अपने भगवान् से कह उठता है—

जो कुछ किया तनें किन्हीं मैं कुछ किन्हा नाहीं॥
जहाँ भी जो कुछ मैंने किन्हीं तो तुम ही थे मुझ माही॥

५. आत्मा का हनन न करें।

आत्मा सदैव सत्य, धर्मयुक्त पथ पर चलने की प्रेरणा देता है किन्तु दुष्ट मनुष्य आत्मा की प्रेरणा को दबाकर बुरे कर्म कर लेता है। इसी को आत्मा का हनन कहते हैं। उपर्युक्त वर्णित वैदिक पचशील का पालन करते हुए मनुष्य को चारों पदार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्राप्त कर जीवन सफल बनाना चाहिए। किन्तु यह सब ज्ञान, कर्म, उपासना बिना असम्भव है। प्रस्तुत गीत में भी यही बताया गया है कि बिना ज्ञान मानव मानवता को छोड़ दानव बन जाता है।

गाना

बिना ज्ञान इन्सान वृथा, भार समझना धरती पर
मानव नही देखो दानव हैं, ऐसे नर-नार जो धरती पर॥
येषाम् न विद्या न तपो न दानम् ऋषि चाणक्य ने बतलाया है।
ऋषि सन्तों का कहना यही और लेख वेद में पाया है।
शुभ कर्मों से मानव तन पाया है,
करे बैठ विचार कुछ धरती पर॥१॥
आहार निद्रा विषय भोग तो प्रत्येक प्राणी करते हैं।
मननशील से मनुष्य बने जो ध्यान देव का धरते हैं।
भगवान् के स्मरण करते हैं,
हो आनन्द अपार इस धरती पर॥२॥
करें परमार्थ और पुरुषार्थ वह कर्मवीर कहलाते हैं।
कर्मवीर कर्मों के बस से नाम जगत् मे पाते हैं।
झूठे गीत भाग्य के गाते हैं,
आलसी लहबार पड़े धरती पर॥
मानव करले ध्यान, ज्ञान बिना कर्म नाम नही पायेगा।
भजन, उपदेश और सत्संग से जो पैसे लेकर आयेगा।
भाड़े का पशु कहलायेगा,
यह "लालचन्द" का प्रचार धरती पर॥४॥

"जीवन की अमूल्य फुलवाड़ी—वीर्य"

मूर्ख बनकर बहुमूल्य जिन्दगी आज बिगाड़ी।
बहा रहे दिन रात व्यर्थ में जीवन की फुलवाड़ी॥
मन रूपी हाथी को ज्ञान का अकुश नहीं लगाते।
ज्ञान और विज्ञान की बातें बिल्कुल दूर भगाते।
कामवासना की लपटों में फूकी देह को नाड़ी।
बहा रहे दिन रात व्यर्थ में जीवन की फुलवाड़ी॥
महापुरुषों ने समय-समय पर आकर हम समझाये।
धारण किया वीर्य अन्दर अद्भुत कर्म दिखाये।
इतिहास खोलकर आज देख लो एक से एक खिलाड़ी।
बहा रहे दिन रात व्यर्थ में जीवन की फुलवाड़ी॥
भड़के जिससे कामवासना, गन्दे गाने गाते।
सहशिक्षा से लड़का लड़की पतन मार्ग पर आते।
भवनगे फैशन की खुलकर दौड रही है गाड़ी।
बहा रहे दिन रात व्यर्थ में जीवन की फुलवाड़ी॥
शक्तियों का यही खजाना अपनी देह रमाओ।
शरीर आत्मा अपनी बुद्धि उच्च शिखर पहुंचाओ।
'महेश' देश में कामराज ने कैसी हवा बिगाड़ी।
बहा रहे दिन रात व्यर्थ में जीवन की फुलवाड़ी॥

—महेश आर्य, ग्राम—पन्हैड़ा खुर्द तह० बल्लबगढ़
जिला—फरीदाबाद (हरयाणा)

एक लड़की को शिक्षित करने से दो परिवारों का भला होता है : हुकम

कुरुक्षेत्र' २६ मार्च (कमलेश भटनागर) गत दिवस हरियाणा के उपमुख्यमंत्री श्री हुकमसिंह ने स्थानीय दयानन्द महिला महाविद्यालय के प्रशासनिक खण्ड और पुस्तकालय भवन का शिलान्यास किया जिसको दस लाख रुपये की लागत से बनाया जायेगा।

इस अवसर पर उपस्थित छात्राओं को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा है कि हरियाणा सरकार शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कृतसंकल्प है, ताकि छात्र-छात्राएं शिक्षा ग्रहण करके प्रतिस्पर्धा के इस आधुनिक युग में नई चुनौतियों का सामना कर सके, लड़कियों को शिक्षा देने की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि एक लड़की को शिक्षित करने से दो परिवारों का कल्याण होता है इसलिए लड़कियों की शिक्षा पर अधिक से अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। इस दिशा में आर्य समाज द्वारा शिक्षा के प्रचार और प्रसार में किये गये प्रयत्नों की श्री हुकम सिंह ने प्रशंसा की।

इस अवसर पर श्री हुकम सिंह ने इस महाविद्यालय के लिए एक लाख रुपये का अनुदान देने की घोषणा की।

इसके पश्चात् श्री हुकम सिंह ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ज्योति द्वार का उद्घाटन किया। इस मौके पर सम्बोधित करते हुए श्री हुकम सिंह ने कहा कि मुझे बड़ी खुशी है कि यह गुरुकुल अपनी प्राचीन परम्पराओं को सजोकर रखे हुए हैं। उन्होंने कहा कि हमारे लिए यह बड़े ही गौरव की बाते हैं कि इस विद्या मन्दिर में दूसरे प्रान्तों से भी बच्चे शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते हैं। श्री हुकमसिंह ने विश्वास दिलाया कि गुरुकुल में विज्ञान कक्ष पुस्तकालय आदि बनाने के मामले में धन की कमी नहीं आने दो जायेगी।

उपमुख्यमंत्री ने अपने निजी कोष से गुरुकुल के लिए ४१ हजार रुपये का अनुदान देने की भी घोषणा की और गुरुकुल के प्रांगण में एक वट वृक्ष का पौधा लगाया। इस अवसर पर मंत्री बलबीर सिंह सैनी जयसिंह राणा हरियाणा कृषि विपणन बोर्ड के चेयरमैन श्री अशोक कुमार अरोड़ा तथा मक्खन सिंह विधायक भी उपस्थित थे।

१३० परिवारों के ६०० से अधिक ईसाई वैदिक हिन्दू धर्म में दीक्षित

मध्यप्रदेश में श्री स्वामी धर्मानन्द जी की देखरेख में धर्म रक्षा अभियान निरन्तर प्रगति पर है, इस श्रृंखला में फुलवाणी जिले के टीकावाले ग्राम में ब्लाक चेयरमैन श्री शशिभूषण भाई एवं उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचारक श्री नारायण शास्त्री की प्रेरणा पर १३० परिवारों के ६०० से अधिक ईसाइयों ने २४ फरवरी १९९१ को अत्यन्त श्रद्धा एवं उत्साह के साथ वैदिक धर्म में प्रवेश किया। यज्ञोपवीत लेने एव आहुति देने के लिए लोग अत्यंत उत्सुकता पूर्वक प्रतीक्षा कर रहे थे, वातावरण अत्यन्त श्रद्धामय था। नगर के अनेक शिक्षित एवं मुख्य सज्जन भी इस दृश्य को देखकर अत्यन्त प्रभावित हुए।

सभी ने इस कार्य को देखकर अत्यन्त महत्वपूर्ण बताया एव पूर्ण सहयोग दिया। कार्यक्रम शुरू होने से पहले उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी एवं मन्त्री श्री विशिकेसन शास्त्री का भव्य स्वागत किया एव विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। शुद्धि संस्कार श्री विशिकेसन शास्त्री ने करवाया। सारा कार्यक्रम श्री स्वामी धर्मानन्द जी की प्रेरणा एवं देखरेख में सम्पन्न हुआ।

राजा कौन

त्वं राजेन्द्र ये च देवा रक्षा नृन्पाह्यसुर त्वमस्मान्।
त्वं सत्पतिर्मघवा नस्तरुत्रस्त्वं सत्यो वसानः सहोदाः॥

पदार्थ—हे (इन्द्र) परमैश्वर्ययुक्त (त्वम्) आप (सत्पतिः) वेद वा सज्जन को पालनेवाले (मघवा) प्रशंसित धनवान् (नः) हम लोगों को (तरुत्रः) दुःखरूपी समुद्र से पार उतारनेवाले हैं। 'त्वम्' आप (सत्यः) सज्जनों में उत्तम (वसानः) धन-प्राप्ति कराने और (सहोदाः) बल के देनेवाले हैं तथा (त्वम्) आप (राजा) न्याय और विनय से प्रकाशमान राजा हैं इससे हे (असुर) मेघ के समान ! (त्वम्) आप (अस्मान्) हम (नृन्) मनुष्यों को (पाहि) पालो (ये, च) और जो (देवाः) श्रेष्ठ गुणोंवाले धर्मात्मा विद्वान् हैं उनकी (रक्ष) रक्षा करो।

भावार्थ—जो राजा होना चाहे वह धार्मिक सत्पुरुष विद्वान् मन्त्री-जनों को अच्छे प्रकार रख के उनसे प्रयोजनों की पालना करावे। जो ही सत्याचारी बलवान् सज्जनों का संग करने वाला होता है [illegible]

सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आंदोलन होगा

सोनीपत, २५ मार्च (त्यागी)। नौजवान ब्राह्मण सभा ने समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का आह्वान किया है। गत दिवस यहा सभा की बैठक में फैसला किया गया कि ब्राह्मण सभा दहेज प्रथा, शराब के प्रचलन तथा अन्य सामाजिक बुराइयों को रोकने के लिए आगामी मास एक आन्दोलन प्रारम्भ करेगी तथा जनता को जागृत करके उक्त बुराइयों को रोकने हेतु व्यापक प्रचार करेगी।

बैठक में नौजवान ब्राह्मण सभा का वार्षिक चुनाव भी किया गया, जिसमें सर्व सम्मति से निम्न पदाधिकारी मनोनीत किए गए: प्रधान-नरेश भार्गव, उपप्रधान-श्रीभगवान शर्मा, महासचिव-कृष्ण कुमार भार्गव, सचिव-जय भगवान शर्मा, सहसचिव-हरिओम तथा कोषाध्यक्ष-तिलकराज वशिष्ठ।

पति को सरेआम पीटा

जींद, २५ मार्च। स्थानीय सामान्य बस अड्डे पर गत दिवस उस समय सनसनी फैल गई, जब एक महिला ने अपने पति को सरेआम थप्पड जड़ दिए।

जींद पुलिस के एक कर्मचारी के अपनी ससुराल की एक लड़की के साथ कथित अवैध सम्बन्ध थे। वह अपनी इस प्रेमिका को कई बार अपने साथ अपने क्वार्टर पर भी ले गया। गत दिवस जब वह अपनी इस प्रेमिका को लेकर कहीं जाने के लिए सामान्य बस अड्डे पर आया तो उसकी पत्नी को भी इसकी भनक लग गई और वह अपने दोनों बच्चों को लेकर अड्डे पर पहुंच गई। पत्नी ने अपने पति को रोकने की कोशिश की तो पति ने उसे थप्पड मार दिया और बच्चों की भी पिटाई कर कर दी।

पत्नी से अपने पति की चोरी व ऊपर से सीनाजोरी की यह घटना बर्दाश्त नहीं हुई तो उसने भी गुस्से में आकर अपने पति पर हाथ उठा दिया। पति पर पत्नी द्वारा हाथ उठाए जाने की इस घटना ने अड्डे पर लोगों की भीड इकट्ठी कर दी और सभी ने पुलिस कर्मचारी की आलोचना की। (नव भारत से)

दूरदर्शन कार्यक्रम की आलोचना

इन दिनों दूरदर्शन पर मुसलमानी कार्यक्रमों की भरमार हो गई है। कभी-कभी तो ऐसा लगता है मानो भारत के नहीं बल्कि पाकिस्तान के प्रोग्राम देख रहे है। राष्ट्रभाषा हिन्दी की बजाए उर्दू को अत्यधिक समय दिया जा रहा है। मुसलमानी सीरियल भी बहुत बढ़ गये हैं। कई नाटकों में योजनापूर्वक हिन्दू धर्म के प्रति घृणा पैदा करने के लिए हिन्दू धर्माचार्यों को ठग और धोखेबाज दिखाया जाता है। तिलकधारी तथा धोती पहनने वाले को बेईमान और कमीना व्यक्ति दिखाते हैं। कभी संस्कृत पढने वालों को मूर्ख दिखाते हैं। २६-२-९१ को रात ९ बजे "यह गुलिस्ता हमारा" मे तो एक हिन्दू मन्दिर में बम बनाता है, वहां हथियार रखता है और बम फट जाने से वह मर जाता है, ऐसा दिखाया गया। जबकि सब जानते हैं कि हिन्दू मन्दिरों में कभी बम या हथियार नहीं मिले बल्कि हिन्दू और उनके मन्दिर ही तो कश्मीर मे या पंजाब में पाकिस्तान से लाये गये हथियारों का शिकार बन रहे हैं। जिस वर्ग के पूजास्थलों में बमों और हथियारों के भण्डार रखे जाते हैं उस वर्ग की छवि उभारने का प्रयास हो रहा है। हिन्दू ८०% से अधिक संख्या में होते हुए भी यह अन्याय सहन कर रहे हैं, क्योंकि नेतागण हिन्दू समाज की कोई चिन्ता नहीं करते। वे तो अपनी गद्दी को बचाने के लिए भारत विरोधी तत्त्वों से समझौता करने मे भी नहीं चूकते।

दूरदर्शन के कार्यक्रमों को देखने से हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति के प्रति श्रद्धा की बजाये अनादर और उपेक्षा ही पैदा होती है। वास्तव में हिन्दू संस्कृति ही देश की भावनात्मक एकता का आधार है। जब-जब और जहां-जहां हिन्दू संस्कृति क्षीण हुई वहां-वहां पाकिस्तान या नागालैंड बन गये। हिन्दू संस्कृति को मानने वाले ही तो भारत को अखण्ड रखना चाहते हैं वे ही कश्मीर, पंजाब या पूर्वोत्तर भारत के ईसाई बहुल राज्यों, मीज़ोरम, नागालैंड, मणीपुर आदि को भारत का अभिन्न अंग बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील है। अतः देश की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सरकार को चाहिए कि दूरदर्शन को गलत नीति को तुरन्त ठीक करे नहीं तो हिन्दू समाज में फैल रहा रोष और बढ़ेगा। (डा० कैलाशचन्द्र)

हरयाणा में आर्य समाज के उत्सव

आर्यसमाज	खिजराबाद पूर्वी जि० यमुनानगर	२०,२१ अप्रैल
,,	देशराज कालोनी पानीपत	१९,२०,२१ ,,
,,	बालानाथ योगाश्रम आदमपुर डाढी जि० भिवानी	२१ से २८ ,,
,,	जैकमपुरा गुडगांव	२२ से २८ ,,
,,	नारग हिमाचल प्रदेश	२६ से १८ ,,
,,	लोहारु जि० भिवानी	११,१२ मई
,,	नांगल (वहल) जि० भिवानी	१३,१४ ,,
,,	कौल जि० कैथल	१३ मई १,२ जून
,,	रादौर जि० कुरुक्षेत्र	४३ मई १,२ जून
,,	साघी जि० रोहतक (शिक्षा शिविर)	६ से १० जून

सुदर्शनदेव आचार्य
वेद प्रचाराधिष्ठाता

विशाल व्यायाम प्रशिक्षण शिविर

दिनांक २१-४-९१ से २८-४-९१ तक श्री बालानाथ योगाश्रम बलाली, आदमपुर डाढी (भिवानी) में एक विशाल व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें योग्यप्रशिक्षकों द्वारा लाठी, भाला डंड बैठक, कुश्ती, कबड्डी, बोक्सिंग, आसन, प्राणायाम, हठ योग (गाडी रोकना, बाण सैया पर सोना आदि) षट् कर्म (नेती, धोती आदि) न्योली क्रिया व अन्य आधुनिक व प्राचीन शारीरिक व्यायामों का प्रशिक्षण दिया जायेगा। इसके साथ-साथ नोजवानों को प्रतिदिन बड़े योग्य विद्वानों के द्वारा नैतिक शिक्षा दी जायेगी।

—शिवर का प्रवेश २० रुपये होगा।

दिनांक २८ अप्रैल १९९१ को व्यायाम प्रदर्शन के बाद एक विशाल इनामी कुश्तियों का दगल लगेगा।

नोट—आश्रम दादरी से सतनाली रोड पर झोझूकला के नजदीक बलाली गांव के पास दादरी से लगभग १४ किलोमीटर दूर स्थित है।

निवेदक व प्रबन्धक :
ग्राम बलाली, कलाली, आदमपुर डाढी

गुरुकुल टटेसर जान्ती में प्रवेश सूचना

आर्ष गुरुकुल टटेसर जौन्ती दिल्ली ८१ का प्रवेश प्रथम अप्रैल सन् १९९१ से प्रारम्भ हो चुका है। यह गुरुकुल हरयाणा दिल्ली के बोर्डर पर स्थित है। दिल्ली में होते हुये भी इस गुरुकुल की पृष्ठभूमि ग्रामीण एव सादगी से ओतप्रोत है। छठी कक्षा से दसवी कक्षा (विद्याधिकारी) तक गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार से मान्यता प्राप्त है। जो अभिभावक अपनी सन्तान को सुयोग्य बनाना चाहते हैं वे यथाशीघ्र इस अवसर का लाभ उठाये। इस गुरुकुल की कुछ प्रमुख विशेषताए निम्न हैं—

१) शिक्षित एव योग्य प्राध्यापक एव अध्यापकों की व्यवस्था।

२) योग्य सरक्षक की देख रेख में छात्रावास में भोजन एवं आवास की सुव्यवस्था।

३) कुश्ती एवं अन्य शारीरिक विकास हेतु विशेष कोचिंग का प्रबन्ध।

४) हरयाणा एवं दिल्ली में पढ़ाये जानेवाले सभी विषयों की पढाई का उचित प्रबन्ध तथा धर्मशिक्षा अनिवार्य विषय है।

नोट—पहुंचने का मार्ग रोहतक की ओर से घेवरा स्टेशन से या बस द्वारा भी गुरुकुल पहुंचा जा सकता है। दिल्ली रेलवे स्टेशन से ११४ नं० डी.टी.सी. बस द्वारा गुरुकुल बस स्टेड पर उतरे।

मुरथल जि० रेवाड़ी में वेदप्रचार

५ अप्रैल को ग्राम मुरथला जि० रेवाडी में श्री सुरजीतसिंह आर्य की स्मृति में उनके सुपुत्र कप्तान महासिंह जी ने अपने घर पर यज्ञ तथा वेदप्रचार का आयोजन करवाया। इस अवसर पर सभा की ओर से पं० जयपालसिंह आर्य की भजन मण्डली ने भजनों द्वारा वेदप्रचार किया। नर-नारियों ने भारी सख्या में पहुचकर आर्यसमाज का प्रचार सुना। कप्तान जी ने विश्वास दिलाया कि हम अपने पिता जी के पदचिन्हों पर चलते हुए ग्राम में आर्यसमाज का प्रचार करवाते रहेगे। सभा को २००) वेद प्रचारार्थ दान दिया।

वेद का दीप जलाया तूने

ले०—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली)

कर पावन वेद प्रकाश ऋषि, भूतल-तम दूर भगाया तूने।
आर्यसमाज बनाया वेदामृत, पीयूष पिलाया तूने॥
ये पथभ्रष्ट यात्री सारे, बीहड़ वन में डोल रहे।
कपट प्रपची चोर लुटेरे अमृत में विष घोल रहे॥
बोल रहे उल्लूक भयानक, वहाँ प्रकाश दिखाया तूने।
आर्यसमाज बनाया, वेदामृत पीयूष पिलाया तूने॥१॥
मुद्दत से सूखा बाग पडा, दर्शन नही थे हरियाली के।
कुमलाई डाली डाली, बीरान हुआ बिन माली के॥
शुष्क मरुस्थल में भी, सुरभित हरा भरा लहराया तूने।
आर्यसमाज बनाया, वेदामृत पीयूष पिलाया तूने॥२॥
मिथ्या मत पाखण्डों के स्तम्भ पकड कर हिला दिये।
फिर से वैदिक बगियों में फूल सुगन्धित खिला दिये॥
मिला दिये भाई भाई, समता का पाठ पढाया तूने।
आर्यसमाज बनाया, वेदामृत पीयूष पिलाया तूने॥३॥
विविध विकारों की सरिता में, मानव गोते खाता था।
वैदिक नैया फसी किनारा, दूर नजर नहीं आता था।
दिश-भ्रान्त यात्रियों को, पकड़ के बांह बचाया तूने।
आर्यसमाज बनाया वेदामृत पीयूष पिलाया तूने।
परम पूज्य दण्डी गुरुवर की आज्ञा उर में धार लई।
दृढ व्रत ध्रुव सम करके सुख वैभव में ठोकर मार दई।
कहे 'स्वरूपानन्द' देश में वेद का दीप जलाया तूने।
आर्यसमाज बनाया वेदामृत पीयूष पिलाया तूने॥५॥

विवाहसंस्कार पर सभा को दान

सभा के मन्त्री श्री सूबेसिंह जी ने अपने सुपुत्र श्री सुरतसिंह जी के शुभ विवाह के अवसर पर दिनांक २ अप्रैल को अपने निवास स्थान पर सभा के उपदेशक प० चन्द्रपाल शास्त्री, प० रतनसिंह आर्य तथा पं० धर्मवीर जी से यज्ञ करवाया तथा सभा के कर्मचारियों को सहभोज पर आमन्त्रित किया। सभा को १०१) वेद प्रचारार्थ दान दिया। इसी प्रकार ग्राम गुसाईमाना तथा सिखुपुरिया जि० सिरसा में २३ मार्च को श्री इन्द्रपाल आर्य सुपुत्र श्री ओमप्रकाश आर्य के विवाह के अवसर पर प० जयपालसिंह ने वेदप्रचार किया। बारात में १५ व्यक्ति गये। विवाह संस्कार वैदिक रीति से किया गया। सभा को ४००) वेद प्रचारार्थ दान प्राप्त हुआ।

नरवाना में राम नवमी पर्व

दिनाक २४ मार्च १९९१ को राम नवमी के उपलक्ष्य में आर्यवीर दल की ओर से प्रातःकाल आर्यसमाज मन्दिर नरवाना से आर्य वीर आर्यकार्यकर्त्ता गली मुहल्लों एवं बाजार जाते हुए, स्वामी दयानन्द, मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र के भजन गाते हुए वृद्ध आर्य नेता श्री राम सिंह आर्य,की अध्यक्षता में विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया।

सायंकाल ४ बजे आर्यवीर दल नरवाना के पारिवारिक सत्संग के अन्तर्गत श्री जोगीराम जी की अध्यक्षता में श्री विजयकुमार आर्य शाखानायक आर्य वीरदल नरवाना के घर पर वैदिक यज्ञ किया गया तथा बहिनों ने मधुर प्रभुभक्ति का एक गीत सुनाया। यज्ञ के पश्चात् श्री जयगोपाल आचार्य नरवाना ने रामनवमी पर्व पर बहुत अच्छा भाषण दिया श्रीरामचन्द्र जी के जीवन से। अन्त में श्री राधाकृष्ण जी आर्य नरवाना ने अपने भाषण में कहा कि यदि मनुष्य को सुख चाहिए तो जड़ चित्रों की पूजा छोड़कर राम जैसे महापुरुषों के चरित्र की पूजा करनी चाहिए।

मंत्री आर्यवीर दल नरवाना

शोक समाचार

कन्या गुरुकुल खादीपुर जुलाना जि० जीन्द के संचालक स्वामी सत्यवेश जी का दिनांक २ अप्रैल को हृदयगति बन्द होने पर निधन हो गया।

दिनांक १८ अप्रैल को प्रातः १० बजे गुरुकुल में शान्तियज्ञ तथा शोक सभा का आयोजन किया गया है।

शुभ विवाह सम्पन्न

श्री आलोक आर्य (सुपुत्र श्री इन्द्रजीतदेव यमुनानगर) एव सौभाग्यवती सुमेधा आर्या (सुपुत्री श्री विद्याव्रत शास्त्री, रोहतक) जिनका शुभ पाणिग्रहण-संस्कार विगत दिनों रोहतक में जन्मनाजाति बन्धन तोड़कर सम्पन्न हुआ। विवरण देखें "सर्वहितकारी" के ७ मार्च ९१ के अक में। इस अवसर पर वर पक्ष की ओर से विभिन्न संस्थाओं को ६,४००/रु० का सात्विक दान दिया गया। इनमें हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा भी सम्मिलित है जिसे १५०/रु० का दान प्रदान किया गया।

—मन्त्री आर्यसमाज, रेलवे रोड यमुनानगर।

आर्यकुमार सभा रादौर का चुनाव

प्रधान सरदार सतविन्दरसिंह आर्य, उपप्रधान श्री पवनकुमार आर्य, मन्त्री श्री सुनील मोहित, कोषाध्यक्ष श्री सचीन पकुथी—
स्वामी सेवकानन्द

झज्जर में वेदप्रचार की धूम

झज्जर में १ अप्रैल से ४ अप्रैल तक वेदप्रचार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभा के वेद प्रचाराधिष्ठाता एव विद्वान् आचार्य सुदर्शनदेव जो ने वेद मन्त्रों की मधुर व्याख्या द्वारा लोगों को वेद की महिमा का दिग्दर्शन कराया। सभी लोगों पर आचार्य जी के उपदेश का अच्छा प्रभाव पड़ा। लोग उनकी मन्त्र व्याख्या को सुनकर गद्‌गद् हो रहे थे। पं० सीताराम जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सुन्दर भजनों का काफी असरदार प्रभाव हुआ सभा को इस अवसर पर ५००/- रुपए का दान दिया गया और भविष्य में वेद प्रचार मण्डल गठित करने पर विचार किया गया।

संयोजक
रमेशकुमार आर्य झज्जर

आर्य वीरदल सुदकैन कलां का गठन

प्रधान श्री महावीर आर्य, मन्त्री श्री सुरेश आर्य, उपमन्त्री श्री रामफल आर्य, कोषाध्यक्ष श्री रामदिया आर्य, शाखानायक श्री मा० रघुवीर आर्य, उपनायक शाखा श्री रमेश आर्य

आर्यसमाज कौल जि० कैथल का चुनाव

प्रधान डा० ताराचन्द आर्य, उपप्रधान श्री किसनसिंह, मन्त्री श्री जसवीरसिंह आर्य, उपमन्त्री श्री रणवीरसिंह आर्य कोषाध्यक्ष श्री मा० प्रकाशचन्द, स० कोषाध्यक्ष श्री बलजीतसिंह आर्य, सरक्षक श्री म० खेमसिंह श्री रामकिशन निरीक्षक श्री बा० रामसिंह, प्रचारमन्त्री श्री सू० मनशाराम श्री रामकुमार, श्री सुलतानसिंह, श्री महावीरसिंह आर्य।

साम दाम दंड भेद से सुरापान रोका

हैदराबाद ६ अप्रैल (यूम्यू) नक्सलवादी सगठन पोपुल्स वार ग्रुप के एक संगठन सिगरेनी कार्मिक समख्या (सिकासा) ने आंध्रप्रदेश के कोयला क्षेत्रों में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने में सफलता प्राप्त कर ली है। इस प्रकार उन्होंने वह कर दिखाया है जो कानून के कई निर्माता भी नहीं कर पाए थे।

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उन्होंने खुशामद दबाव, भय और यहां तक कि लोगों के हाथ-पैर काटने तक का काम किया।

आदिलाबाद और करीम नगर के कोयला क्षेत्रों की महिलाओं ने इस शराब बंदी का स्वागत किया है। इनमें से कइयों के पति शराब के ठेकेदारों के चगुल में फसे हुए थे।

देश में निर्मित विदेशी शराब और अर्क का धंधा करनेवाली लगभग एक हजार दुकानें पिछले छः माह से बद पड़ी हैं और किसी को शराब बेचने की इजाजत नहीं है। सिकासा के एक सूत्र ने नाम गुप्त रखे जाने की शर्त पर बताया कि हैदराबाद से २५० किलोमीटर दूर स्थित शहर मन्चिरयाल में ही करीब १७५ दुकानें बंद पड़ी हैं।

इस शराब बदी से लगभग एक लाख लोगों को शराब ठेकेदारों से छुटकारा मिला है। एक अनुमान के अनुसार खदानों के श्रमिक लगभग २० से १५ रुपए प्रतिदिन शराब पर खर्च करते थे। इस प्रकार वे साल में लगभग ७० से ८० करोड़ रुपए केवल इस लत पर खर्च करते थे।

शराब बदी के पहले कोयला खदानों के लिपिक श्रमिको के वेतन में से पैसे काट कर उसके बदले में उन्हें शराब के लिए पर्ची दे देते थे। इस प्रकार उनके वेतन का लगभग ४० प्रतिशत शराब पर खर्च होता था।

सूत्र ने बताया कि कोयला क्षेत्र में सफलता के बाद अब शराब बंदी पूरे तेलगाना क्षेत्र में लागू की जाएगी।

शुरु में शराब के ठेकेदारों को पुलिस संरक्षण भी दिया गया था पर भारी विरोध के कारण उसे वापिस ले लिया गया।

शराब ठेकेदारों और विक्रेताओं को कई चेतावनियों के बाद उन्हें दड भी दिया गया। कई लोगो के हाथ पैर काटे गए जबकि कुछ की हत्या तक कर दी गई।

सिकासा ने व्यापारियो को चेतावनी के अतिरिक्त शराब के विरुद्ध नुक्कड़ नाटक और भाषण भी किए।

नवभारत टाइम्स

आर्यसमाज सुदकैन कलां जि० जीन्द का चुनाव

प्रधान मा० वेदपाल आर्य, उपप्रधान श्री मनीराम आर्य, मन्त्री श्री दिलबाग शास्त्री उपमन्त्री श्री भीमसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष श्री प्रेमदास आर्य, प्रचार मन्त्री श्री रमेशआर्य,

सूचना

आज अति हर्ष का विषय है कि सेवा भारती रोहतक नगर की ओर से एक महिला सिलाई केन्द्र आपकी बस्ती (गढ़ी मोहल्ला) में खुल रहा है इससे पूर्व भी दो केन्द्र चल रहे हैं जिनमें लगभग ६० बहिनें सिलाई का कार्य सीख रही हैं इसके साथ साथ एक बालसस्कारकेन्द्र जो कि कक्षा ५ से ७ तक के बच्चों को अपने कोर्स की ट्यूशन तथा धार्मिक शिक्षा प्राप्त कराई जाती है। केन्द्रों में मासिक यज्ञ भी किया जाता है।

यह सभा समय-समय पर हरिजन बस्तियों का सर्वेक्षण भी करती है। इसी बस्ती का विधिवत सर्वेक्षण अक्तूबर १९८९ में किया गया। सभा की कार्यकारिणी के अतिरिक्त मासिक दानी स० ८० है। वर्ष भर में कम से कम ५ पर्वों को सम्मिलित-रूप में मनाया जाता है। हम आपसे आग्रह करते हैं कि आप इस सभा के सदस्य बन, मासिक चन्दा देकर पुण्य के भागी बनें और अपने सम्पर्क से मंगलनिधि हवन यज्ञ द्वारा सहायता प्रदान करें।

भवदीय :
केसरदास आर्य मन्त्री
सेवा भारती रोहतक शाखा

हैदराबाद-सत्याग्रह में हरयाणे का योगदान

लेखक—प्रि० डा० रणजीतसिंह। प्रकाशक व प्राप्ति-स्थान—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्द मठ, रोहतक। मूल्य ३० रु०।

आर्यसमाज के गौरवपूर्ण इतिहास में "हैदराबाद का सत्याग्रह" अतीव प्रसिद्ध है। यथार्थ में यह आर्यसमाज की भीषण अग्नि-परीक्षा का समय था। एक मुस्लिम संस्कृति के कट्टर व क्रूर हिमायती हैदराबाद के नवाब ने आर्यों पर अत्याचार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। हिन्दुओं के मन्दिरों में भजन व कीर्तन करना, शंख व घण्टा बजाना और आर्यसमाज के मन्दिरों में हवन-यज्ञ करने पर भी कठोर पाबन्दी लगा दी थी। आर्य विचारों के प्रचारकों पर तरह-तरह के मिथ्या आरोप लगवाकर कठोर यातनायें दी जा रही थी। जिनका विरोध करने का साहस किसी धार्मिक व राजनयिक नेता का हो नहीं पाता था। ऐसे भयंकर समय में 'करो या मरो' के सिद्धान्त को अपनाकर आर्यजगत् ने जो कठोर कदम एकजुट होकर उठाया था, वह यद्यपि प्रथम उपहासास्पद लगता था, परन्तु 'सोत्साहानां समुद्रोऽपि कुल्यायते, अग्निरपि शीतायते' के अनुसार उत्साही व्यक्ति असंभव को सम्भव कर देते हैं। इस अग्नि-परीक्षा रूप सत्याग्रह में हरयाणा प्रदेश के आर्यवीरों का सर्वोच्च स्थान रहा है। उन आर्य वीरों का संक्षिप्त परीचय व इतिहास इस पुस्तक में संकलित किया गया है। प्रत्येक आर्य परिवार में यह पुस्तक संग्रहणीय है। मान्य विद्वान् ने बहुत ही श्रम करके इस पुस्तक का सकलन किया है।

श्री स्व० पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती का जीवन-परिचय

लेखक—श्री डा० सुदर्शनदेव आचार्य। प्रकाशक व पुस्तक प्राप्ति स्थान—आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा, दयानन्द मठ, रोहतक। मूल्य १० रुपए।

आर्यजगत् का कौन विद्वान् व उपदेशक होगा कि जो मान्य सिद्धान्ती जी के नाम व काम से परिचित न होगा? ऐसे दृढ़ सिद्धान्त प्रिय व्यक्तियों से ही आर्यसमाज जीवित रहा है। अपने जीवन का कल्याणमय-पथ स्वयं बनानेवाले सिद्धान्ती जी का यह जीवन भावी आर्यों के लिए भी एक उत्तम मार्गदर्शक, सुप्रेरक एवं कठिन परीक्षा के अवसरों पर भी संरक्षक बनकर कार्य करेगा, ऐसी मुझे पूर्ण आशा है। (दयानन्द सन्देश से)

मतदाता राष्ट्रविरोधियों से सावधान रहें

राष्ट्रपति द्वारा नौवीं लोकसभा भंग किए जाने के साथ ही चुनावों की सरगर्मी आरम्भ हो गई। चुनावों के समय क्या-क्या हथकण्डे प्रयोग किए जाते हैं, यह एकबार पुनः देखने को मिलेगा। आज देश में अनेक समस्यायें हैं। पंजाब, कश्मीर, असम आदि राज्य आतंकवाद की आग में झुलस रहे हैं। कश्मीर एवं पंजाब से लाखों हिन्दुओं को पलायन के लिए मजबूर किया जा रहा है।

आज देश में ऐसी शक्तियां सर उठा रही हैं जो भारत का विघटन एवं विनाश चाहती हैं। विदेशी ईसाई पादरियों ने नागालेंड तथा मिजोरम में ईसाई प्रचारकों एवं सशस्त्र ईसाई संगठनों का निर्माण करके देश के कई भागों में विद्रोह फैलाने का षड्यन्त्र रच रखा है। नागालेंड (एन. एस. सी. एन.) नेशनल कॉउन्सिल ऑफ नागालेंड नामक संस्था ने असम में उल्फा तथा बोडो उग्रवादियों को हथियारों से लैस किया। आन्ध्र प्रदेश एवं महाराष्ट्र में नक्सलवादियों के नाम से जो सशस्त्र विद्रोह खड़ा कर रहा है, उसके पीछे भी विदेशी पादरियों का ही हाथ है।

भारत की जनता देश में फैले उग्रवाद से तंग आगई है। लोग अब उस दल या पक्ष की सरकार चाहते हैं जो देश विरोधी आन्दोलनों का दमन करे। —डॉ० कैलाशचन्द्र

संकटमोचन आश्रम, रामकृष्णपुरम, सैक्टर-६ नई दिल्ली-२२

(पृष्ठ १ का शेष)

न्याय सूत्र १।२।२ में अपवर्ग की परिभाषा करते हुए कहा है—तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः। दु:खजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये तदनन्तरापायादपवर्गः।

जो दुःख का अत्यन्त विच्छेद होता है वही मुक्ति कहाती है। क्योंकि जब मिथ्या ज्ञान, अविद्या लोभादि दोष, विषय, दुष्टव्यसनों में प्रवृत्तिजन्य और दु:ख का उत्तरोत्तर छूटने से पूर्व के निवृत्त होने से मोक्ष होता है जो कि सदा बना रहता है। अब मोक्ष के साधन देखने चाहियें।

वृद्ध आर्य बन्धुओ जीते जी कारज करो इतिहास बन जाएगा

यह सर्वविदित हो रहा है कि शराब ने देश को बरबाद कर दिया है। जब तक शराब रहेगी देश का विकास नहीं हो सकता चाहे दशरथ का बेटा राम ही राज्य सम्भाल ले। पूर्व इतिहास इसका साक्षी है। मैं आपबीती बताता हूं। शराब के कारण मेरा घर बरबाद हो गया। लड़के शराब पीकर अपनी कमाई को खोकर दूसरों से पिटकर घर आते हैं। जब थोड़ा होश हो जाता है तब अपनी गृहणियों को गाली गलोच देते हैं मारते हैं, घर में कलह मचा देते हैं। बालक भयभीत हो जाते हैं, उनका विकास ठप्प हो जाता है। इस प्रकार यह चंडालनी बालकों पर भी हाथ साफ करती है। बरबाद हुए बालकों के बालक क्या बनेंगे यह आप विचार ले। शराबी आय के मूल साधनों को खत्म कर जाता है। ऐसी अवस्था में आगे इस घर में पैदा होने वाले मजदूर ही बनेंगे। सरकार उन्हें गिरीजनों हरिजनों वाली रियायत तो देती नहीं। सरकार का कर्तव्य है, जिम्मेदारी है कि हर व्यक्ति के स्वास्थ्य को बिगड़ने न दे। पर सरकार स्वयं जहर पिला कर अब मौत में मारने का प्रबन्ध ठेके खोलकर फोजियों को परमिट से शराब रियायती देकर बरबाद कर रही है। इसका इलाज वृद्ध आर्यसमाजी ही कर सकते हैं। यह बात तो सत्य है कि वृद्धों ने आगे अपनी औलाद आर्य नहीं बनाई। अब हमारे कार्य कौन करेगा। देश में कारज करने का रिवाज मरने पर करने का है। कहते हैं उसका नाम अमर हो जाता है।

मैं आप का नाम अमर करने की योजना आप को दे रहा हूं। यह बात भी सत्य है कि आर्य बन्धुओं ने आश्रम मर्यादा नहीं चलाई। वानप्रस्थी बन गए वे अपना ही धन्धा करते रहे। संन्यासी बन गए वे अपना धन्धा करते रहे। वास्तव में जो होना चाहिए था वह हुआ नहीं। भाइयो आज ७५ वर्ष के आर्य नौकरी करते हैं, मठाधीश बने बैठे हैं। सन्यासी जिन्हें गांव-गांव घूमकर अपनी वाणी और करनी तथा आचारविचार से शुभ कर्मों की लहर चलानी थी। यदि यह लहर चली होती तो आज घर-घर में शराब नहीं होती।

खैर जो हो गया सो हो गया, अब जीते जी कारज कर जाओ। जितने वृद्ध आर्य सज्जन जिला रोहतक में हों, वे सब चित्तौड़ की देवियों की तरह उपायुक्त महोदय की कचहरी के सामने यज्ञ करके ज्ञापन देकर जोहर की अग्नि जलाकर सब उस में कूद जाओ।*

निश्चित दिन करके ट्रैक्टर में पांच मन लकड़ी, कम से कम दस सेर घी, २० किलो सामग्री ले। सपरिवार और मित्रों के साथ आकर शराब के नाम पर बलि देकर ऐतिहासिक मौत (शरीर त्यागने) का नया नियम छोड जाओ। शराब सरकार भले ही बन्द न करे हमारा कर्तव्य पूरा हो जाएगा। भगवान् की दया हुई तो कोई न कोई बेटा पोता बेटी पोती बहू जरूर आर्य बन जाएगा। यह सामूहिक बलि ऐतिहासिक बलि के नाम से सदा अमर रहेगी। चित्तौड़ के जोहर से यह जोहर अधिक नहीं तो कम भी नहीं रहेगा। अतः मेरी प्रार्थना निवेदन सब वृद्धों से है कि वे इस पर विचार कर दिन निश्चय कर सरकार की आंखें खोल दें। भाइयो मंडल आयोग पर अनेक छात्र छात्रायें युवक युवतियां बलिदान हो गए। उनका तो रोटी-रोजी का प्रश्न था। हमारा तो आचार बचाने का पवित्र प्रश्न है। आशा है आप मेरी इच्छा को अवश्य पूर्ण करेंगे।

आपका भाई—दीपचन्द, ग्राम पो० कासनी जिला रोहतक।

प्रवेश सूचना

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से मान्यता प्राप्त—'आर्ष गुरुकुल किशनगढ घासेड़ा जि० रेवाड़ी में १ अप्रैल १९९१ से नवीन छात्रों के प्रवेश आरम्भ हो चुके हैं।

इस वर्ष स्थानाभाव के कारण केवल २५ नये छात्रों को ही (छठी एवं सातवीं कक्षा में) प्रवेश मिल सकेगा। छात्र का बुद्धिमान् एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ होना अत्यावश्यक है।

आचार्य आर्ष गुरुकुल किशनगढ़

---

*अग्नि में जलकर मरना, आत्महत्या करना अवैदिक और कायरतापूर्ण निकृष्ट कर्म है। संघर्ष, सत्याग्रह, प्रचार आदि के द्वारा साम दाम दण्ड आदि उपायों से शराबबन्दी सम्भव है।

—वेदव्रत शास्त्री

जलियांवाला बाग की खूनी होली

१३ अप्रैल सन् १९१९ को अंग्रेजों ने देशभक्तों को दानों की भांति भून दिया

(स्वतन्त्रता सेनानी डा० शान्तिस्वरूप शर्मा (पत्रकार, कुरुक्षेत्र)

७२ वर्ष बीत गये १३ अप्रैल सन् १९१९ को अमृतसर के जलियां वाला बाग की धरती खून से लाल हो गयी थी। अंग्रेजी तानाशाही पूरे जोरों पर थी। अंग्रेज समझता था कि वह इतना शक्तिशाली है कि जो वह चाहेगा वही होगा।

महात्मा गांधी जो अफ्रीका से सत्य और अहिंसा से सफल लड़ाई लडकर भारत लौटे थे। बापू गांधी को अंग्रेजों ने धोखा देकर कि यदि वह पहली वर्ल्डवार (लड़ाई) जीत गया तो भारत को स्वतन्त्र कर देंगे। गांधी जी ने सेना की भरती में और लड़ाई के लिए चन्दा इकट्ठा करने में सहायता की। लड़ाई जीत जाने पर महात्मा गांधी को स्पष्ट कह दिया कि वह भारतीयों को राज संभालने के लायक नहीं समझते। इससे महात्मा गांधी के कहने पर सारे देश में रोष प्रकट किया। सारे देश में जलसे जलूसों पर पाबन्दी लगा दी गई।

महात्मा गांधी ने रोल्ट एक्ट के विरुद्ध आन्दोलन की घोषणा की कि ६ अप्रैल को सारे देश मे प्रार्थना सभाए की जाये और शान्तिपूर्वक जुलूस निकाले जाय। देहली में स्वामी श्रद्धानन्द जी के नेतृत्व मे जुलूस निकाला गया। जब जलूस चादनी चौक पहुचा तो अग्रेजो ने उसे आगे बढने से रोकने का आदेश दिया। स्वामी जी ने अपनी छाती खोलकर ललकारा कि "यदि हिम्मत है तो सबसे पहले मेरी छाती पर गोली मारो" और जलूस को आगे बढने को कहा। अग्रेजो ने उस नाजुक स्थिति को भाप लिया और जलूस को जाने दिया।

बापू गांधी को जब वे रेलगाडी मे पजाब आरहे थे, पलवल रेलवे स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिया। सारे देश में जुलूस निकाले गए और प्रदर्शन किये गये। पंजाब में उस समय के कांग्रेस नेता डा० सइफूदीन किचलू और डा० सत्यपाल दोनों को बन्दी बना लिया गया और पंजाब की जनता में अपने नेताओं की गिरफ्तारी से बड़ा रोष पैदा हो गया और उन्होंने अमृतसर में प्रोटैस्ट के तौर पर भारी जलूस निकाला। जब जुलूस उपायुक्त की कोठी पर चला तो अंग्रेजो ने जुलूस पर गोली चला दी जिससे कई लोग शहीद होगये। जोश में आए देशभक्तों ने एक अंग्रेज को मारकर खून का बदला खून से लिया। ११ अप्रैल को भारी जलूस शहीदों की लाशों का निकाला गया और ३० अप्रैल को जलियांवाला बाग में जलसा करने की घोषणा कर दी।

अमृतसर में वैसाखी के पर्व पर लोग भारी सख्या में अमृतसर आए थे। अंग्रेजों ने शहर को सेना के सुपुर्द कर दिया था। और जलसे पर रोक लगा दी थी परन्तु लोग भारी संख्या में जलियांवाला बाग मे एकत्रित हो गए। जनरल डायर जो सेना का इन्चार्ज था, क्रोध में लाल हो गया और सेना तथा मशीनगनों को लेकर जलियांवाला बाग पहुंच गया और बिना किसी चेतावनी के जलसे पर फायरिंग आरम्भ कर दी। जिसके परिणामस्वरूप लाशों के ढेर लग गए। जख्मियों को पानी तक नहीं दिया गया। लोग एक-एक बूंद पानी को तडप कर मर गए।

अंग्रेजों ने अमृतसर शहर में पानी, बिजली के कनैक्शन काट दिये। लोगों को पेट के बल रेंगने को मजबूर किया गया। "मैं भविष्य में कोई जुर्म नहीं करूंगा" मैं शर्मिन्दा हूं जनता को कहा गया कि जब कोई अंग्रेज नजर आए तो उसे झुककर सलाम किया जाए। अंग्रेजों ने जनरल डायर को पुरस्कार देकर इगलेंड भेज दिया।

क्रांतिकारी सरदार उधमसिंह ने वह खूनी कांड अपनी आखों से देखा था। वह २१ वर्षों तक जनरल डायर और राज्यपाल सर ई०ओ० डायर को ताक में रहा। उसने इंगलैंड जाकर जनरल डायर को १३ मार्च १९४० को अपनी पिस्तौल की गोलियों से भून दिया और पिस्तौल को नीचे रखकर "भारत माता की जय" के नारे लगाकर कहा मैंने जलियावाला बाग खूनी कांड का बदला ले लिया है। उस बहादुर देशभक्त सरदार उधमसिह को लन्दन मे फांसी पर लटकाया गया। हम उन सभी शहीदो को आज श्रद्धांजलि भेंट करते हैं जिनके बलिदानो मे यह देश स्वतन्त्र हो गया।

शान्तिस्वरूप शर्मा

सांग का खण्डन

सन्ध्या तर्पण हवन गायत्री महर्षियों की बानी थी
बान्ध घूंगरू नाचन लागे शर्म देश ने आनी थी

१—गाम बीच मे तख्त गिरा दें रूके मारे लगवाड़ा
हीर बने एक राझा बन जा एक बने अक्खन गाड़ा
एक पड़या सादिक में रोवे याद सांप का सै झाड़ा
एक उत नै पची ठाले सारी रात रहे लाड़ा
दयानन्द का देश डोब दिया हीर नहीं धुकवानी था

२—मूंह खोल्या जब दिया फटकारा सब के कारज सार दिये
भजन रागनो गजल कवाली बना काफीये चार दिये
फेर बृहम्मन कौन कहै जब बेत डूम ने मार दिये
सारी रात वह राखा तनै तडके लत्ते तार दिये
आध लोग कहे पालांगा रात डूम को रानी थी

३—हरीचन्द मे दानी थे भगी घर नीर भरया करते
मघनावत रोहतास बिके जो कहके नही फिरया करते
पतजलि और कणाद गोतम घर-घर सैर करया करते
परशराम से बृहम्मन थे चारों वर्ण डरया करते
उन के बेटे पोत्यां ने के डुनयां की वह कहानी थी

४—बड़े आदमी गाल बके जा लगवाड़ा ते प्यार रहे
सीसा देखें मांग पाड ले सहार बोरला त्यार रहे
गोपीचन्द्र कालवे बसता मन में सोच विचार रहे
पिछले दिन देख लियों भाई वेदों का प्रचार रहे
चन्दगीराम सांग का करना कुछ ना आनी जानी थी
बाध घूंगरू नाचन लागे शर्म देश ने आनी थी

सुलतानसिंह आर्य
ग्राम पोस्ट आहुलाना गोहाना रोहतक

यति मण्डल द्वारा गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी मनाने का निर्णय

विराट नगर में शहीद शुक्रराज शास्त्री बलिदान अर्द्धशताब्दी के अवसर पर १६ मार्च को यति मण्डल की एक महत्त्वपूर्ण बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने की। बैठक में यति मण्डल के अध्यक्ष श्रद्धेय श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज व श्री स्वामी दीक्षानन्द जी के अतिरिक्त अन्य २६ व्यक्ति उपस्थित थे। बैठक में निम्न प्रस्ताव पारित हुए।

(१) आगामी सितम्बर मास में दयानन्द मठ रोहतक में विशाल स्तर पर प० गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी समारोह मनाया जावे। यति मण्डल के अध्यक्ष श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने यति मण्डल के सभी सदस्यों से कहा कि हमें अभी से इस कार्यक्रम की तैयारी में जुट जाना चाहिए। आर्य समाज की सभी संस्थाओं से भी इस पुण्य कार्य में तन-मन व अन्न-धन से सहयोग की अपील की।

(२) इस बैठक में सर्व सम्पति से प्रस्ताव पारित किया गया कि भारत में की जाने वाली जनगणना में जो परिपत्र भराया जाता है। उसमें सम्प्रदाय भी लिखा जाता है अतः इससे पृथकतावाद को बढावा मिलता है। सम्प्रदाय के स्थान पर केवल भारतीय ही लिखा जाना चाहिए। इससे सम्प्रदायवाद को बढावा न मिलकर राष्ट्रीयता की भावना पैदा होगी। इस सम्बद्ध में यति मण्डल स्थान-२ पर सम्मेलनों के माध्यम से जनता में जागृति पैदा करेगा। पं० गुरुदत्त शताब्दी समारोह पर भी इस विषय पर सम्मेलन आयोजित किया जावेगा।

नोट—पं० गुरुदत्त शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए एक समिति का गठन किया गया। जो इस प्रकार हैं—

सर्वश्री स्वामी सर्वानन्द जी, स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी प्रमानन्द जी, स्वामी सुमेधानन्द श्री गंगानगर, स्वामी सुमेधानन्द चम्बा, स्वामी धर्मानन्द उड़ीसा स्वामी धर्मानन्द आबू पर्वत, आचार्य हरिदेव जी, ब्र० नन्दकिशोर जी, आचार्य जीवानन्द जी नैष्ठिक।

इस सम्मेलन की तैयारी के लिए श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने श्री स्वामी सुमेधानन्द जी (श्री गंगानगर) को सम्मेलन का संयोजक नियुक्त किया। श्री वेदव्रत जी शास्त्री रोहतक को कोषाध्यक्ष, तथा श्री जीवानन्द जी को प्रचार मंत्री नियुक्त किया। दयानन्द मठ रोहतक में शीघ्र ही कार्यालय खोलने का निर्णय लिया गया। यह भी निर्णय लिया गया कि दयानन्दमठ रोहतक में शीघ्र ही एक बैठक बुलायी जावे जिसमें अन्य समितियां गठित की जावें। इस बैठक में यति मण्डल से सदस्यों के अतिरिक्त अन्य आर्यजनों को भी आमंत्रित किया जावे।

सुमेधानन्द
संयोजक
प० गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं०   K-४६   फोन नं ५६३५६ //   सर्वहितकारी १,६६ ०८,५३ ०६०

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष १८   अंक २१   २१ अप्रैल, १९९१   वार्षिक शुल्क ३०)   (आजीवन शुल्क ३०१)   विदेश में ८ पौंड   एक प्रति ७५ पैसे

बाल जगत् —

ओं क्रतो स्मरः

(हे जीवात्मा ! 'ओ३म्' का स्मरण कर)

डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार, एम०ए० आर्यसमाज, गोरखपुर

एक कहानी है। बहुत सुन्दर है। बालको, तुम्हें एक कहानी सुनाता हूं।

एक महात्मा थे। उनके अनेक शिष्य थे। महात्मा अपने शिष्यों को कहानियां सुना-सुनाकर उत्तम शिक्षायें दिया करते थे। एक दिन उन्होंने अपने शिष्यों को यज्ञ महिमा बतलाई और कहा कि यज्ञ में सब कुछ समझा हुआ है। यह समझाने के बाद एक शिष्य से कहा कि जाकर बाजार से ये ये सामान ले आओ। शिष्य गया। बाजार तक जाते-जाते उसे वस्तुओं का नाम भूल गया। दुकान पर पहुंचकर उसने दुकानदार को पैसा दिया और कहा कि इस पैसे से यह भी दे दो, वह भी दे दो और सब कुछ दे दो। बालक ने किसी वस्तु का नाम नहीं लिया और यह, वह सब कुछ मांगता रहा। दुकानदार पहले तो असमंजस में पड़ा पर वह समझदार और विचारवान् थी। वह दुकान से नीचे उतरा। कागज की पुड़िया में थोडी सी मिट्टी रख दी और कहा कि लो यह 'यह भी है, वह भी है और सब कुछ है'। लड़का उसे लेकर गुरु जी के पास पहुंचा और वह पुड़िया गुरु जी को देकर सब बात सुना दी। गुरु जी पहले तो अचकचाये पर थोड़ी देर बाद सोचकर और शिष्य की बातों पर विचार कर बोले कि देखो यह मिट्टी है। भूमि को संस्कृत में 'वसुन्धरा' भी कहते है। वसुन्धरा का अर्थ होता है जो सब कुछ धारण करे अर्थात् यह रत्नों से भरी पड़ी है, इसमें सर्वत्र ऐश्वर्य ही ऐश्वर्य है। आम का वृक्ष इसी में से मिठास, नींबू खटास, नीम कड़वाहट, मिर्च चरचराहट ले लेती है। इसमें सब प्रकार के रस, सब प्रकार के व्यञ्जन भरे पड़े हैं। तो बच्चो, ऐसा ही है प्यारा 'ओ३म्' नाम इसमें सब कुछ समाया हुआ है। सम्पूर्ण संसार का ज्ञान-विज्ञान इसमें है, इसलिए उपनिषद्कार ने कहा है :-

> सर्ववेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति।
> यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति, तत्ते पद संग्रहेण ब्रवीम्योम् इत्येतत्।

अर्थात् समस्त वेद जिसका प्रतिपादन करते हैं, समस्त तप जिसे बतलाते हैं, अर्थात् जिसके लिए किये जाते हैं, जिसको प्राप्त करने के लिए साधकगण ब्रह्मचर्य का अनुष्ठान करते हैं वह पद मैं संक्षेप से बतलाता हूं वह पद है 'ओ३म्'।

प्रभु के गुण और कर्मवाचक असंख्य नाम हैं परन्तु बालको, ईश्वर का मुख्य नाम 'ओ३म्' है। 'ओ३म' सबमें है और सबत्र है। 'ओ३म्' सर्वव्यापक और सर्वज्ञ है। 'ओ३म्' सर्वाश्रय और सर्वाधार है। 'ओ३म्' अजर और अमर है। 'ओ३म्' सर्वशक्तिमान, निराकार और अरूप है। 'ओ३म्' हमारे विचारों, भावों और कर्मों को जानता है और उसके अनुसार फल देता है। 'ओ३म्' न्यायकारी और दयालु है। 'ओ३म्' अजन्मा और अनन्त है। 'ओ३म्' प्रत्येक परिस्थिति और प्रत्येक क्षण अपनी रक्षा का वरद हस्त हम पर रखता है। 'ओ३म्' का अर्थ है 'अवतीति ओ३म्' जो सदा सर्वदा हमारी रक्षा करता है। संस्कृत में 'अवरक्षणे' धातु से 'ओ३म्' शब्द बनता है। इसका अर्थ है रक्षा करने वाला। एक कहानी सुनो कि परमेश्वर किस तरह रक्षा कर रहा होता है।

एक बार एक राजा अपने मन्त्री के साथ शिकार के लिए जंगल में निकल गया। चलते चलते कांटों वाली झाडी में उसके कपड़े उलझ गए। हाथ से वस्त्रों को सुलझाने का यत्न किया तो अंगुली में घाव लग गए। रक्त बहने लगा। राजा कराहने लगा। मन्त्री ने मरहम-पट्टी की और कहता रहा "कोई बात नही, प्रभु जो करते हैं अच्छा ही करते हैं।"

राजा बार-बार मन्त्री के वचन सुनकर क्रुद्ध होगया और मन्त्री से बोला "मैं पीड़ा से परेशान हूं और आप कह रहे हैं ईश्वर जो करता अच्छा करता है अतः आप अपना रास्ता लीजिए। मैं ऐसे व्यक्ति के साथ रहने की अपेक्षा अकेला ही अच्छा।"

मन्त्री ने कहा 'ईश्वर जो करता है अच्छा ही करता है'। जो आपकी आज्ञा, मैं अपना रास्ता लेता हूं। मन्त्री वहां से चला गया।

राजा भी अकेला चल पड़ा। वह दूसरे राजा के राज्य में पहुंच गया। वहां देवी पर मनुष्यों की बलि चढ़ाई जाने वाली थी। सिपाही किसी पुरुष को बलि के लिए खोज रहे थे। राजा मिल गए। सुन्दर है, शरीर अच्छा है। कहकर बलि के लिए पकड़ ले गए। पुरोहित को बुलाया गया और बलि से पूर्व स्नान कराया जाने लगा। पर पुरोहित ने स्नान कराते समय राजा की कटी अंगुलि देखकर 'अरे, यह तो अंगभंग व्यक्ति है। इसकी बलि नहीं चढ़ाई जा सकती।

राजा बच गया। उसे अब समझ में आगया कि मन्त्री ने कहा था, प्रभु जो करते हैं, अच्छा करते हैं, वह ठीक है। यदि अंगुलि में घाव न होता तो मृत्यु निश्चित थी। अपने राज्य में लौटने के बाद मन्त्री की खोज हुई। उसे आदर से राजा ने बुलाया और कहा 'आपने मेरी अंगुली कटने पर बड़े पते की और मर्म की बात कही थी। मैं अल्प बुद्धि समझ न पाया। इसी अंगुली के घाव के कारण मेरी रक्षा हुई, मैं मौत के मुख से बच गया। परन्तु मन्त्रिवर, जब मैंने डांटकर आपको निकाल दिया, इसमें प्रभु ने आपकी कौनसी भलाई देखी? आपने उस समय भी यही कहा था कि 'प्रभु जो करते हैं, अच्छा करते हैं'।

मन्त्री ने मुस्कराते हुए कहा 'यह तो और भी अच्छा हुआ। यदि आपने मुझे निकाला न होता तो मैं आपके साथ रहता। आप तो घायल होने से छूट जाते क्योंकि सिपाही आपके साथ मुझे भी पकड़ ले जाते? मेरा तो अंगभंग नहीं हुआ था अतः बलि का बकरा तो मुझे ही बनना पड़ता। मेरे ऊपर तो प्रभु की और भी अधिक कृपा हुई। मुझे घायल भी न किया और मृत्यु से भी बचा लिया। इसलिए प्रभु जो करते हैं, अच्छा करते हैं। उसमें मानव का कल्याण होता है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

जो डूबे हैं गिलासों में, न उभरे जिन्दगानी में

आचार्य दयानन्द शास्त्री, प्रा० दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय-हिसार

देशी-विदेशी सभी इस बात पर सहमत हैं कि प्राचीनकाल में भारतवासी गौरव की पराकाष्ठा पर पहुंचे थे। उस समय की एक घटना का छान्दोग्योपनिषद् में उल्लेख है कि एक बार कुछ अध्यात्म-चिन्तक महात्मा अपने एक प्रश्न के समाधान के लिए समित्पाणि होकर ब्रह्मर्षि महाराजा अश्वपति के पास गये। राजा ने उन्हें भोजन के लिए प्रार्थना की। परन्तु उन महापुरुषों ने स्वीकार न की। राजा ने समझा—राजा की आय में पाप का भाग होने से ये महात्मा मेरा अन्न स्वीकार नही करते। अतः उसने गर्वपूर्ण किन्तु वास्तविकता का द्योतक यह वचन कहा—

> नमे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यप।
> नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणीकुतः॥

अर्थात् "मेरे देश में कोई चोर नहीं, कोई कंजूस नहीं, कोई शराबी नहीं, अग्निहोत्र न करनेवाला कोई नहीं, बेपढ़ा-लिखा कोई नहीं, व्यभिचारी कोई नहीं, व्यभिचारिणी कैसे हो सकती है?" इस पर महात्माओं ने भोजन कर लिया।

आज यदि वह राजा भारत में किसी भांति आ सके तो वह इस देश को पहचान न सके। आज इस देश में चोरों की, पढ़े-लिखे चोरों की, समाज के शिरोमणि चोरों की, रक्षा के नाम पर चोरी करनेवाले चोरों की सम्पन्न होते हुए भी चोरी करनेवाले चोरों की भरमार है। शराबियों, दुराचारियों का तो कहना ही क्या? विद्याहीनता में यह देश सबको शिरोभूषण है। यह अवस्था देखकर वह राजा अश्वपति विश्वास ही न करेगा कि यह भारत वर्ष है।

देश को इस पतित अवस्था से उठाकर इसे फिर जगद्गुरु पद पर आसीन करना प्रत्येक भारतीय का प्रथम कर्तव्य है। उस अवस्था को पुन प्राप्त करने के लिए व्यसनों का त्याग अत्यन्त अनिवार्य है जिनमे से शराब ने तो हमारा सर्वनाश ही कर दिया है। जब हम पराधीन थे तो अंग्रेजी शासन ने अपने दो प्रयोजनों की सिद्धि के लिए यहां शराब का प्रचार किया—पहला तो यह कि भारतवासी मदोन्मत्त होकर बुद्धिहीन तथा शिथिल शरीर होकर किसी भी आदोलन में समर्थ न हो सकें। दूसरा शराब के विक्रय से आय में वृद्धि होती थी। वह शासन भी कैसा, जिसके आधार स्तम्भों में 'शराब' भी एक प्रधान स्तम्भ हो। विदेशी शासन तो चला गया। परन्तु अपने सहज दुर्गुणों और दोषों को साथ नही ले गया। वे अभी तक हमारे देश को अपनी दासता के बन्धन में बांधे हुए हैं।

वास्तव में शराब एक नशीला विषपान है। देहात का किसान आज इस बुराई में डूबा हुआ है। किसानों के मसीहा, किसानों के नेता दीनबन्धु सर छोटूराम, दानवीर सेठ छाजूराम, भगत फूलसिंह, चौ० चरणसिंह आदि ऐसे महापुरुष हो चुके हैं जो शराब को हमेशा बुरी समझते थे तथा किसानों को इस बुराई से दूर रहने की नेक सलाह देते थे। लेकिन किसान इन आदर्श महापुरुषों को शिक्षाओं को आज भूल गया है। इतिहास पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि शराब की लत से दुनिया के बड़े-बड़े साम्राज्य नष्ट होगए। इसी शराब ने राजपूतों का राज्य छीना और मुसलमानों का ताज छीना। यदुवंशियों का नाश शराब से हुआ। यहूदी मुसलमान, अंग्रेज सभी शराब की बुराई से सत्ताच्युत हो भारतभूमि को छोड़गये। मि० मिल्टन ने कहा था—संसार की सारी सेनाए मिलकर इतने लोगों एवं सम्पत्ति को नष्ट नही कर सकती, जितना शराब कर देती है।

महात्मा गांधी ने कहा था—'मैं शराब को सभी पापों की जननी मानता हूं। यहां तक कि शराब वेश्यावृत्ति से बुरी है। यदि मुझे आधा घण्टे के लिए डिक्टेटर शासक बना दिया जाए तो मैं पहली कलम से ही शराब को बन्द कर दूगा।"

मृत्यु दर की दृष्टि से देखा जाए तो शराब का नशा सबसे घातक नशा है किन्तु भारत वर्ष का किसान विशेष कर हरयाणा का किसान विवाह के अवसर पर, चुनाव के अवसर पर खुशी व गमी में लाभ अधिक होने पर पार्टी (चाय आदि के साथ) के अवसर पर मेहमान सगे-सम्बन्धी की सेवा के बहाने अनेक अवसरों पर शराब पीने पिलाने से कभी नहीं चूकता। इसमें वह अपनी शान बनाने के लिए घर फूंक तमाशा करने लगा है। उसे पता नहीं कि प्रति वर्ष हजारों लोग हमारे देश में शराब पीने से आकस्मिक मौत से मर जाते हैं। आज देश में सैकड़ों परिवार ऐसे मिलेंगे जो अनाथ, असहाय सम्पत्तिहीन, भूमिहीन व बेघर होकर जैसे तैसे जीवन यापन करते हैं। कारण स्पष्ट है इनके पास सब साधन थे परन्तु परिवार का मुखिया शराब व अफीम जैसी बुरी लत में सारी सम्पत्ति खा पीकर मर गया और परिवार को बरबाद कर गया।

अच्छे भले पढ़े लिखे शराबी लोगों की मान्यता है कि शराब से चिन्ता, पीड़ाओं और तनाव से मुक्ति मिलती है एवं शरीर में स्फूर्ति आती है किन्तु स्वास्थ्य-चिकित्सकों एवं वैज्ञानिकों का कथन उपरोक्त मत के सर्वथा विरुद्ध है। डाक्टर लोगों का कहना है कि शराब में 'अलकोहल' नाम का विष होता है जिसके कारण पीने वाले के रक्त में उत्तेजना हो जाती है। उसकी त्वचा और पेट की सूक्ष्म नसें फूल जाती हैं उससे खून त्वचा की ओर आने से त्वचा गर्म हो जाती हैं तो मनुष्य गर्मी अनुभव करता है। इस प्रकार शरीर की बहुत सी गर्मी व्यर्थ में बाहर निकल जाती है। यह गर्मी क्षणिक होती है। शराब के नशे के साथ यह भी काफूर हो जाती है और तब दुनियां नीरस एवं शून्य लगती है। उसकी वास्तविकता उसे कष्ट पहुचाती है। यह आनन्द एक धोखा है। परिणाम घातक निकलता है।

शराबी यह भी समझते हैं कि शराब पीने से पाचन शक्ति बढ़ती है इस पर डाक्टर लोग कहते हैं कि शराब का प्रभाव मेदे के अर्क उत्पन्न करने वाले अंग पर बुरा पड़ता है। जिससे अजीर्ण दूर नहीं होता परन्तु शराब के प्रभाव से दब जाता है और वह शराब के नशे में अजीर्ण के कष्ट को अनुभव नहीं करता। नशे के कारण वह जो अधिक भोजन खा जाता है वह पचता नही और न ही शरीर का अंग बनता है। वैसा का वैसा मल के रूप में निकल जाता है। अन्न और पेट दोनों खराब होते हैं। इसलिए शराब से शक्ति बढती नही घटती है। शराब में जो अलकोहल होता है उससे दिमाग और शरीर में उत्तेजना उत्पन्न होती है और शराबी बल वा शक्ति अनुभव करता है। किन्तु यह उसकी कल्पना होती है जब नशा उतरता है तो रोता है और सिर धुनकर पछताता है। शराब के नशे में वह यह समझता है कि मेरे अन्दर नई शक्ति का संचार हो गया है किन्तु इस अलकोहल से बाह्य शक्ति पर बुरा असर पड़ता है। शरीर की सब क्रियायें सुस्त और ढीली पड जाती हैं। बल का भण्डार शरीर का सार वीर्य शराब की गर्मी से पतला पड़ जाता है और बाहर निकलने लगता है। इस प्रकार शराबी वीर्य हीन हो जाता है उसका हृदय दुर्बल और मुख निस्तेज हो जाता है। शरीर और मन कुकर्म में लगता है। शराबी आलसी निरुत्साही कामी और क्रोधी हो जाता है। शराब मनुष्य को चोर जुआरी और मांसाहारी बनाती है। दुनिया का कौन सा पाप है जो यह पीने वाले से नहीं कराती। यह लोक और परलोक को बिगाडती और मनुष्य जीवन को मिट्टी में मिला देती है। हमें दुःख है कि "देशों में देश हरयाणा, जित दूध दही का खाणा" की प्रसिद्धि प्राप्त प्रदेश ऐसे लोगों को अपना नेतृत्व सौंपता है जो अधिकांश शराबी होते हैं अतः यह सत्य है कि—

> जल रहा यह घर मेरा कैसे बताऊं तुमको।
> मेरे अपने हो हैं इस घर को जलाने वाले॥

अन्त में "सर्वहितकारी" के माध्यम से शराबी भाइयों से निवेदन है कि—

> जो डूबे हैं गिलासों में, न उभरे जिन्दगानी में।
> हजारों बह गये इन बोतलों के बन्द पानी में।

धर्म का स्वरूप

सावित्री शास्त्री एम० ए०, जनता कालोनी, रोहतक

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने आर्यसमाज के नियम रूप १० मोतियों में प्रथम तथा द्वितीय नियम में ईश्वर की सत्ता एवं स्वरूप का वर्णन करने के उपरान्त तीसरे नियम में धर्म के विषय में कहा—"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

क्योंकि स्वामी जी महाराज से पूर्व धर्म का वास्तविक स्वरूप दर्शन, स्मृति ग्रन्थों में विद्यमान होते हुए भी सामान्य जनता की पहुंच से बाहर हो रहा था सब ओर अविद्या रूप अन्धकार व्याप्त था जिसके आवरण ने सब कुछ पूरी तरह जकड़ रखा था। अतः मानव का परम धर्म वेद पढ़ना सुनना है इस बात को महर्षि दयानन्द ने पुनः प्राणिमात्र को स्मरण कराया।

मनुस्मृति में भी मनु महाराज ने धर्म के लक्षणों का जहां वर्णन किया है वहां सर्व प्रथम वेद को ही स्वीकार किया है—

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम् ॥

मनु० १/१०

अर्थात् वेद, स्मृति, श्रेष्ठ आचरण तथा जो अपनी आत्मा को प्रिय लगे ये धर्म के साक्षात् चार लक्षण हैं।

स्मृति को धर्म ग्रन्थ के रूप में वैदिक वाङमय में माना गया है। इसलिए मनुस्मृति में मनु महाराज ने धर्म के लक्षण बड़ी विशेषता एवं विशद रूप से वर्णन किए हैं।

धर्म का प्रथम लक्षण वेद माना है क्योंकि वेद में परा एवं अपरा दोनों प्रकार की विद्या है इसलिए सबसे पूर्व मनु महाराज ने वेद को धर्म का लक्षण बताया। वेद पढ़के तदनुसार आचरण करना ही मनुष्य का धर्म है। इतना ही नहीं अपितु "नास्तिकों वेद निन्दकः "लिखते हुए नास्तिक की परिभाषा भी करदी कि जो वेद की निन्दा करता है वह नास्तिक है।

नास्तिक शब्द पर यदि व्याकरण की दृष्टि से विचार किया जावे तो पाणिनी मुनि द्वारा अष्टाध्यायी में "अस्ति नास्ति दिष्टं मतिः" ४/४/६० सूत्र द्वारा नास्तिक शब्द बनता है जिसकी व्याख्या में काशिकाकार लिखते हैं कि यहां इस सूत्र से मति सत्ता मात्र में प्रत्यय लगकर ये शब्द नहीं बनते वरन् "नास्ति परलोके मतिरस्य सः नास्तिकः"। इस अर्थ में उपर्युक्त नास्तिक आदि शब्द बनते हैं। इस प्रकार से दोनों ही व्युत्पत्ति एवं परिभाषाओं की समन्वयता है, कारण कि जो परलोक एवं पुनर्जन्म को नहीं मानता वह ही वेद की निन्दा कर सकता है अतः मनु महाराज ने व्यवस्था बांध दी कि वेद की निन्दा करने वाला ही नास्तिक होता है।

वेद के स्वाध्याय को परम तप जो मनु महाराज ने स्वीकार किया है तथा जो वेद का पढ़ना छोड़कर वेद विरुद्ध पुस्तकों के पढ़ने में श्रम करता है वह स्वयं ही नहीं वरन् वंश सहित शूद्रत्व को प्राप्त होता है ऐसी घोषणा भी की है—

वेदमेव सदा भ्यसेत्तपस्तप्स्यन् द्विजोत्तमः।
वेदाभ्यासो हि विप्रस्य तपः परमिहोच्यते॥
योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥

मनु० २।११७-११८॥

इस प्रकार प्रथम लक्षण निरूपण करके धर्मशास्त्र में धर्म का द्वितीय लक्षण स्मृति को स्वीकार किया गया है। क्योंकि धर्मशास्त्र प्रणेता मनु महाराज यह भली भांति जानते थे कि वेद ज्ञान का भण्डार है और परम धर्म है। इतना होते हुए भी संसार के सभी मनुष्य वेदों का पूर्णतया नहीं समझ सकते क्योंकि सब मनुष्यों की मनन एवं बोधन शक्ति एक समान नहीं होती जैसा कि वर्णन वेद में स्वयं है

अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोजवेस्वसमाः बभूवुः।
आदघ्नास: उपकक्षास: उत्वे ह्रदा इव स्नात्वा उत्वेदद्रश्रे ॥

ऋ० १०।७१।७

इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए निरुक्तकार यास्क मुनि लिखते हैं कि -"अक्षिमन्तः कर्णवन्त. सखायः, मनसा जवेस्वसमाः बभूवुरास्यदघ्ना अपरे उपकक्षदघ्ना अपरे" अर्थात् सब मनुष्य समान आंख व कान वाले होते हुए भी ज्ञान ग्रहण करते हुए मानसिक प्रक्रिया में असमान हैं कोई ज्ञान के तालाब में स्नान करते हुए मुख तक सराबोर हो जाते हैं जबकि दूसरे केवल छाती तक ही डुबकी लगाते हैं।

कहने का अभिप्राय यह है कि वेदज्ञान को समझने के लिए सभी में समान रूप से ऊहापोह नहीं होती अतः दूसरे क्रम में धर्म का लक्षण मनु जी ने बतलाया स्मृति।

जिनकी वेदों को समझने की असमर्थता है वे स्मृति ग्रन्थ पढ़कर तदनुसार आचरण करें और जीवन को सफलता की ओर ले जावें तथा धर्म का पालन करें ऐसी व्यवस्था मनुस्मृति में है। क्योंकि स्मृति की भाषा वेद की भाषा से अपेक्षाकृत सरलतम है।

परन्तु यदि दुर्भाग्यवश इतना ज्ञान नहीं कि स्मृति ग्रन्थ पढ़ सके तब धर्म का स्वरूप कैसे जाना जाये? क्या ऐसे व्यक्तियों के लिए धर्म जानना वा तदनुसार आचरण करना आवश्यक नहीं है? परन्तु नहीं, ऐसे व्यक्तियों के लिए ही धर्म का तीसरा लक्षण बताया है सदाचार। व्याकरण बुद्धि से सदाचार दो अर्थों का द्योतक है। १—सताम् आचारः सदाचारः अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषों का आचरण। १—सत् चासौ आचारः सदाचार अर्थात् श्रेष्ठ आचरण।

इस कारण से मनु महाराज जी धर्म की व्यवस्था बांधते हुए कहते हैं कि जो वेद भी नहीं पढ़ सकता, स्मृति ग्रन्थ भी जिसकी बुद्धि गम्य नहीं है ऐसा मनुष्य धर्म का स्वरूप गम्य नहीं है ऐसा धर्म का स्वरूप जानने के लिए निराश न हो वरन् उसके लिए धर्म का लक्षण है सदाचार।

सदाचार से अभिप्राय है कि उसके समीप अथवा संसर्ग में आने वाले जो श्रेष्ठ पुरुष महात्मा साधु सन्यासी रहते हों उनके आचरण को देखकर तदनुसार अपना श्रेष्ठ आचरण बनाए, यह सदाचार भी धर्म के पालन करने में परम सहायक होगा जो कि धर्म के लक्षणों में तृतीय क्रम में आता है।

चतुर्थ नम्बर पर मनु जी महाराज में धर्म का लक्षण बहुत सुन्दर तथा सरल शब्दों में बताया कि 'स्वस्य च प्रियमात्मनः" अर्थात् यदि उपर्युक्त तीनों लक्षण धर्म पालन में, धर्म का स्वरूप जानने में सहायक न बने तब भी धर्म का ज्ञान, पालन तथा तदनुसार आचरण हो सकता है "स्वस्य च प्रियमात्मन" के अनुसार। अर्थात् जैसा व्यवहार तुम्हारे आत्मा को प्रिय लगता है वैसा ही व्यवहार तुम दूसरों के साथ करो। यदि ऐसा करते हो तो धर्म के रास्ते पर चल रहे हो।

कितना सस्ता तथा सुबोध है चौथा लक्षण, क्योंकि संसार का प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि मुझ से कोई झूठ, कड़वा न बोले, अभद्र तथा छल कपट का व्यवहार न करे। तब मनु जी कहते हैं कि तुम्हारा भी यह धर्म है कि किसी के साथ छल कपट का व्यवहार तथा असत्य एवं अप्रिय सम्भाषण न करो। यदि तुम ऐसा कर पाओगे तब अक्षरशः धर्म का पालन कर सकोगे।

इस प्रकार से धर्म का स्वरूप जानने के लिए तथा धर्म का पालन करने के लिए वेद का स्वाध्याय परम आवश्यक है। यदि मनुष्य दृढ निश्चय के साथ कोई भी कामना करके तत्प्राप्ति का प्रयत्न करता है तब उसमें सफलता अवश्यम्भावी है। आवश्यकता है केवल लगन और दृढता की।

राष्ट्रभाषा का स्वाभिमान क्यों नहीं ?

किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रभाषा उस देश की भावनात्मक एकता की सबसे बड़ी कड़ी हुआ करती है। अपनी राष्ट्रभाषा का स्वाभिमान उस देश मे राष्ट्रोत्थान की चेतना का संचार करता है। देश में राष्ट्रभक्ति की लहर को जन्म देता है। स्वयं ब्रिटेन में विदेशी आधिपत्य एवं प्रभाव के कारण अंग्रेजी का राष्ट्रीय जीवन मे कोई स्थान नहीं था। लेटिन भाषा और फ्रेंच का ही बोलबाला था। किन्तु सेक्सपीयर और जॉनसन जैसे देशभक्त लेखको के कारण जिन्होंने ब्रिटेन की जनता की भाषा अंग्रेजी को साहित्य और शासकीय कामकाज में लोकप्रिय बनाने के आन्दोलन का सूत्रपात किया। इंगलेंड में फूहड और दरिद्र समझी जाने वाली अंग्रेजी भाषा को राजकीय कामकाज में स्थान मिलने लगा। न्यायालयो में अंग्रेजी के व्यवहार की अनुमति मिली। इंगलैंड में जागृति आई और इंगलैंड ऊंचे राष्ट्रों की श्रेणी में खड़ा हो गया।

छोटा-सा देश इज्राईल आज मध्य एशिया में जो एक महाशक्ति के रूप में मस्तक उन्नत किये खड़ा है उसकी सफलता का मूलभूत रहस्य भी उनकी राष्ट्रभाषा हिब्रू के लिए इज्राईल के लोगों का उत्कट प्रेम ही है। १९४८ में जब इज्राईल को स्वतन्त्र देश के रूप में मान्यता मिली तो वहां बहुत कम लोग राष्ट्रभाषा का ज्ञान रखते थे क्योंकि अनेक अलग-अलग भाषा-भाषी देशों से आकर यहूदी लोग इज्राईल में बसे थे। हिब्रू को तो मृत भाषा ही माना जाता था। अंग्रेजी, जर्मन, पोलिश, फ्रेंच भाषा-भाषी का बहुमत था तो भी इज्राईल के देशभक्त नेताओं ने दृढ़संकल्प लिया कि समूचे राष्ट्र को यहूदियों की प्राचीन भाषा हिब्रू का ज्ञान करायगे। केवल हिब्रू में ही राजकीय कामकाज चलाने की प्रतिज्ञा की। यहां तक कि सेना में भी हिब्रू पढ़ाने का कार्यक्रम निर्धारित किया गया। राष्ट्रभाषा के प्रति अगाध प्रेम और श्रद्धा उत्कट राष्ट्रभक्ति के रूप मे प्रस्फुटित हुई। संसार ने देखा कि छोटे से नवोदित राष्ट्र इज्राईल ने अपने से सौ गुना जनसंख्या वाले अरब देशों के भरपूर आक्रमण से अपनी मातृभूमि की रक्षा की।

किन्तु भारत है कि अपनी सम्पन्न राष्ट्रभाषा हिन्दी को जिसके पीछे संसार की सर्वोत्कृष्ट भाषा संस्कृत की महान् धरोहर है, निरादृत और पददलित करने पर तुला हुआ है। संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किया गया था किन्तु भारत की केन्द्रीय सरकार ने हिन्दी को कभी राष्ट्रभाषा का स्थान प्राप्त नहीं होने दिया। सरकारी कामकाज में केवल अंग्रेजी को बनाए रखने की जिद बनी रही। उच्च न्यायालयों तथा भारत के उच्चतम न्यायालय में हिन्दी का प्रयोग निषिद्ध है। अधिकारियों के लिए अंग्रेजी का ज्ञान आवश्यक है। सरकार द्वारा अंग्रेजी को ही सम्मान दिया जाता है। सरकार दूरदर्शन द्वारा अंग्रेजी का ही प्रचार करती है। अंग्रेजी को जन-जन की भाषा बनाने का स्पष्ट प्रयास है।

राष्ट्रभाषा मात्र भाषा ही नहीं है बल्कि एक संस्कार भी है। जहां राष्ट्रभाषा से राष्ट्रीयता के संस्कार मिलते हैं वहां विदेशी भाषा से राष्ट्रीयता के संस्कार नष्ट होते हैं। यही कारण है ८० करोड़ की जनसंख्या वाला भारत जैसा प्राचीन राष्ट्र जिसने अनेक देशों को सभ्यता और संस्कृति प्रदान की उन्हें ज्ञान और धर्म के प्रकाश से आलोकित किया। जो देश कभी विश्व गुरु कहलाता आज पिछड़े राष्ट्रों की श्रेणी में खड़ा अपमानित हो रहा है। जब तक देश में राष्ट्राभिमान को झुठलाया जाएगा, राष्ट्रभाषा का निरादर होगा देश उन्नति नहीं कर सकता। संसार के छोटे-छोटे देश भी अपनी राष्ट्रभाषा का आदर करते हैं किन्तु एक भारत ही है जहां राष्ट्रभाषा के द्वेषी कुछ नेताओं का वर्चस्व सरकार पर अभी तक बना हुआ है, जो अब समाप्त किया जाना चाहिये।

डा० कैलाशचन्द्र, सकट मोचन आश्रम, नई दिल्ली-२२

आर्य वीर दल की प्रान्तीय बैठक

आर्य वीर दल हरयाणा की प्रान्तीय बैठक दिनांक २७-४-९१ शनिवार रात्रि ८ बजे आर्यसमाज रामनगर जीन्द मे होगी। जिसमे आगामी ग्रीष्मावकाश के लिए शिविरों की योजना बनाई जावेगी।

—वेदप्रकाश आर्य, प्रान्तीय मन्त्री

कवि की अन्तर्व्यथा और कामना

(वेदोपदेशक ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति)

स्वाधीन भारत में हमारी यह दशा क्यों हो रही?
इतिहास अपने का पता हम बालको को है नही॥
आजाद बिस्मिल और भगत को जो हुई कुर्बानियां।
भूल उनको हैं गये क्या कम हैं ये नादानियां॥
हम कौन थे क्या हो गये इस बात को सोचो जरा।
राणा शिवा गोविन्द की उस जीवनी में क्या भरा॥
गौतम कणाद पतञ्जलि को भावना थ खो रही।
दयानन्द विवेकानन्द को आशायें फिर से सो रही॥
गौरव कहा अब रह गया हम राम की सन्तान हैं।
हे कृष्ण प्यारे अब तेरी सन्तान क्या सन्तान हैं॥
मातृशक्ति का पतन कैसा पतन यह होगया।
सारी व्यथा कैसे कहे सवस्व अपना खो गया॥
इनके पतन के मार्ग में कुछ दोष इनका है नही।
अधिकार से वञ्चित किया क्या पाप का फल है नही॥
गार्गी सुलभा व सीता उर्मिला बनती नही।
मन्दालसा की बात तो अब कोई भी करता नही॥
अब तो जिधर देखो उधर ही एक्टरों को जात है।
ब्रह्मविद्या तो यहां अब बात को ही बात है॥
पथभ्रष्ट नेता हो रहे आदर्श इनका है नही।
सयम नियम का पाठ तो कथनी में है करनी नही॥
काले ही काले है यहां सब लार्ड मंकाले बने।
काले ही धन्धो में फसे ये कालिमा में हैं सने॥
हे प्रभो! इस राष्ट्र का गौरव पुनः भी प्राप्त हो।
सब ओर क्रन्दन है मचा सत्वर ही उसका ह्रास हो॥
भगवान् सारे विश्व में गूंजे हमारी भारती।
फिर से सारा जग उतारे भारती की आरती॥

शराब के ठेकों पर महिलाओं का धरना

अम्बाला, १४ अप्रैल (एस)। अम्बाला छावनी स्थित बाहरी बस्ती एकता विहार कालोनी की महिलाओं ने भी गत २ अप्रैल से खुली शराब की एक दुकान के बाहर लगातार धरना दे रखा है। उनकी मांग है कि कालोनीवासियों को हरयाणा सरकार द्वारा दिया गया यह उपहार तुरन्त वापस लिया जाए।

आज जब इस संवाददाता ने क्षेत्र का दौरा किया, तो शराब की यह दुकान बन्द थी और लगभग ५०-६० महिलाये रामायण की चौपाइयों का जाप कर रही थी। शराब के ठेकेदार के दो कर्मचारी उक्त दुकान के साथ पड़ी चारपाई पर सो रहे थे।

आंदोलनकर्ताओं के प्रवक्ता श्री कौशल के अनुसार धरना व रामायण पाठ का यह कार्यक्रम शराब की दुकान हटाए जाने तक जारी रहेगा। उल्लेखनीय है कि यह ठेका बस स्टेंड से मात्र ५-७ गज और मन्दिर की जमीन के बिलकुल सामने है।

(दैनिक नवभारत टाइम्स से)

आर्यसमाज कुराड़ (सोनीपत) की स्थापना

सभा के प्रचारक पं० रतनसिंह आर्य के प्रचार के फलस्वरूप आर्यसमाज के विभिन्न नेताओं सर्वश्री देवप्रिय जी आर्य, जिला सोनीपत वेदप्रचार मण्डल के प्रधान सत्यवीर जी शास्त्री, महाशय टेकचन्द जी आर्य के सद्प्रयत्नों से ३१-३-१९९१ को वैदिक सत्संग के साथ आर्यसमाज की स्थापना की गई तथा निम्न पदाधिकारी निश्चित किए गए।

प्रधान–श्री महाशय टेकचन्द, उपप्रधान–श्री हरदेवा (हरिजन), मन्त्री–श्री मा० हरज्ञानसिंह, उपमन्त्री–श्री मा० महेन्द्रसिंह, प्रचार मन्त्री–श्री मा० सज्जनसिंह, कोषाध्यक्ष–श्री सेठ सूरजमल, पुस्तकालयाध्यक्ष–श्री मा० सुरेशकुमार, लेखा निरीक्षक–श्री मा० लालचन्द।

इसके साथ यह भी निर्णय लिया गया कि फसल को कटाई के पश्चात् शीघ्र ही वेदप्रचार कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

विनीत—हरिचन्द स्नेही

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा द्वारा प्रेरित "हम चालीस"

'हम चालीस' राष्ट्रभाषा हिन्दी को अगले सात वर्षों मे सारे भारत में उपयोग में लाए जाने के उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु प्रयत्न करनेवाले निष्ठावान हिन्दी प्रेमियों का एक समूह है, उसका न तो कोई संविधान है, न कोई पदाधिकारी और न ही किसी बैंक या किताब में कोई हिसाबी खाता। ये चालीस निष्ठावान कार्यकर्ता राष्ट्र-भाषा प्रचार के लिए अपने खर्च से जो भी कार्य करेंगे उसकी झलक 'राष्ट्रभाषा' मासिक के एक स्तम्भ द्वारा परस्पर एक-दूसरे को देते रहेंगे।

इसका प्रत्येक सदस्य प्रति माह एक बार नए १०-१५ साथियों से सम्पर्क कर एक स्थान पर एकत्र करेगा और उनसे राष्ट्रभाषा के महत्व पर चर्चा करेगा। इसमें सम्मिलित होनेवालों का गुणनफल आगामी सात वर्षों में करीब ४० करोड़ तक हो सकता है। यह संख्या सिर्फ एक करोड़ भी हो जाए तो अपूर्व सफलता मानी जाएगी। गुणन फल से बढ़ती संख्या प्रतिवर्ष भारत के किसी एक स्थान पर एकत्र होगी और अगले वर्ष के लिए अपने उद्देश्य को पूरा करने हेतु पुनः शक्ति एकत्र करेगी। इसमे सम्मिलित होने वाले लोग अपने खर्च से आवेंगे और भारत की भावनात्मक एकता को दृढ़ करने के लिए कटिबद्ध होंगे।

इस कार्य को योजनाबद्ध तरीके से पूरा करने का प्रशिक्षण इन चालीस कमठ व्यक्तियों को गत २२ से २६ अक्तूबर १९८९ तक राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति, वर्धा की ओर से दिया गया है।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा १९९६ में अपनी 'हीरक जयन्ती' मनाएगी। तब तक 'हम चालीस' के उद्देश्य को पूरा करना है। इसी लिए ७ वर्ष की मर्यादा रखी गई है। उद्देश्य नीचे दिए हैं। 'हम चालीस' के साथ कदम मिलाते हुए हम सब आगे बढ़ें :-

१- भारत में प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा मे ही हो।

२- सामान्त परीक्षा एवं उच्च शिक्षा में अंग्रेजी की अनिवार्यता न हो।

३- सरकारी कामकाज में प्रान्तीय स्तर पर प्रादेशिक भाषा और राष्ट्रीय तथा अन्तरिम व्यवहार में राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रयोग हो।

४- भारत के लोग अपने हस्ताक्षर नागरी लिपि में करें।

५- भारतीय संविधान में ऐसी कोई भी धारा जो राष्ट्रभाषा हिन्दी को कार्यान्वित करने में रुकावट डालती हो उसे दूर किया जाए।

६- जहां जो काम हिन्दी में हो रहा हो उसके साथ अंग्रेजी की अनिवार्यता न रखी जाए।

'हम चालीस' के इन सदस्यों को उपर्युक्त उद्देश्य पूरा करने के लिए दिनांक २९ दिसम्बर ९० से २ जनवरी ९१ तक बम्बई में आयोजित प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षण दिया गया है। ये प्रशिक्षित चालीस सदस्य अपने क्षेत्र में जाकर अगले वर्ष में अन्य ४० कर्मठ व्यक्तियों को इसी प्रकार का शिक्षण देंगे।

ये शिविरार्थी इसी क्रम से शृंखलाबद्ध शिविर आयोजित करते गए तो आगामी ७ वर्षों में करोड़ों लोगों तक यह संदेश पहुंचाया जा सकेगा। शिविर में प्रशिक्षित लोग यदि दस प्रतिशत भी क्रमबद्ध आयोजन करने में सफल हुए तो कुछ लाख व्यक्ति निश्चित ही मानसिक रूप से राष्ट्रभाषा के सन्देश को जन-जन में पहुंचाकर एक अद्भुत विचारक्रान्ति लावेंगे।

८० लाख का लक्ष्य प्राप्त न हो सके और मात्र दस प्रतिशत सफलता मिल सकी तो भी सन्तोष का विषय। आठ लाख की यह सेना अंग्रेजी की गुलाम मानसिकता दूर करने में प्रबल शक्ति सिद्ध होगी।

इंग्लैण्ड को अपनी भाषा अंग्रेजी लाने में ४०० वर्ष लगे थे। तो हमारे विशाल देश में हमारे इस प्रयास से ७ साल के प्रयत्नों से हिन्दी की मानसिकता बनाने का यह प्रयास है। जिसकी श्रद्धा हो वे इस योजना को सफल बनाने मे सहयोग दें। हमें इसके लिए कोई आर्थिक सहायता नहीं चाहिये। चाहिये सिर्फ मानसिकता। आइये, भारतीय अस्मिता को जगाने के लिए हम कटिबद्ध हों।

सोनीपत में महात्मा दयानन्द की स्मृति में गायत्री महायज्ञ

स्वामी जगदीश्वरानन्द महाराज की अध्यक्षता एवं ब्रह्मत्व में तपोमूर्ति महात्मा दयानन्द महाराज की पुण्य स्मृति में हिन्दू मञ्च, आर्य वीर दल (मण्डल) सोनीपत, मत जिन्दा कल्याणा रामलीला क्लब सोनीपत के तत्वाधान मे गायत्री महायज्ञ एवं विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्रह्मचारी आचार्य अखिलेश्वर जी (गुरुकुल कालवा), स्वामी ओतानन्द, बहिन प्रतिभा शुक्ला, श्री सुभाषचन्द आर्य, श्री ज्ञान प्रकाश, श्री ज्ञानेन्द्र शास्त्री (स्वतन्त्रता सेनानी), आसानन्द बधवा (संयोजक हिन्दू मंच), हरिचन्द स्नेही (मण्डलपति आर्य वीरदल), श्री प्राशानन्द (मैजिक लालटेन वाले), श्री सोमराज आर्य, श्रीमती सुनीता अरोड़ा, श्रीमती शीलादेवी, महात्मा प्रेमभिक्षु जी वानप्रस्थी (गन्नौर), दयालाल जौहर, रघुनाथ शास्त्री, अमरनाथ आर्य, दयालचन्द, छबीलदास के प्रभावशाली प्रवचन एवं गीतोपदेश हुए। बैसाखी पर्व पर मुलतानी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। —हरिचन्द स्नेही

प्रवेश सूचना

महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा जि० राजकोट (सौराष्ट्र) में नए सत्र इ०स० १९९१-९२ हेतु १ जुलाई ९१ से प्रवेश प्रारम्भ है।

इस विद्यालय में वैदिक संस्कृति के प्रचारार्थ उपदेशक एवं पुरोहित तथा धर्मशिक्षक तैयार किये जाते हैं।

४ वर्ष के पाठ्यक्रम मे वेद, उपनिषद्, व्याकरण, साहित्य एवं ऋषि दयानन्दकृत ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता है।

छात्रों की आवास, भोजन, वस्त्र, पुस्तकें, लेखन सामग्री, साबुन व तेल आदि की सम्पूर्ण व्यवस्था बिना किसी भेद भाव के विद्यालय की ओर से सर्वथा निःशुल्क होती है। छात्र को स्वयं किसी भी प्रकार का आर्थिक बोझ नहीं उठाना पड़ता।

अतः दसवी (मैट्रिक) संस्कृत सहित प्रवेश के इच्छुक छात्र विद्यालय की नियमावली एवं प्रवेश-पत्र यथा समय नि.शुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

—विद्याभास्कर पं० ओमप्रकाश शास्त्री, एम.ए.
प्राचार्य

विवाह संस्कार पर दान

आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री नत्थासिंह जी आर्य के पौत्र श्री जयदेव का विवाह संस्कार २४ फरवरी को जठलाना जि० यमुनानगर में वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। सभा को ५०) वेद प्रचारार्थ दान भेजा गया है।

आर्यसमाज घरोण्डा का वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज घरोण्डा जि० करनाल के वार्षिक उत्सव २९ से ३१ मार्च के अवसर पर विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, डा० देवव्रत जी, आचार्य देवव्रत जी, श्री रणधीरसिंह जी शास्त्री, प० सुखदेव शास्त्री, प० चन्द्रपाल शास्त्री आदि के वेदोपदेश तथा प० चिरञ्जीलाल तथा प० मुरारीलाल बेचैन के मनोहर भजन हुए। सभा को एक हजार रु० दान दिया गया।

शोक समाचार

कन्या गुरुकुल शादीपुर जुलाना (जीन्द) के संचालक स्वामी सत्यवेश जी का २ अप्रैल को निधन हो गया। १८ अप्रैल को शान्तियज्ञ किया गया।

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के दीक्षान्त-समारोह पर स्वागत-भाषण

श्रद्धेय संन्यासीवृन्द, माननीय परिदृष्टा महोदय, आदरणीय कुलाधिपति जी, माननीय प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर जी, आर्यबन्धुओं, माताओं, बहिनों, नवदीक्षित स्नातकों, ब्रह्मचारियो एव सहयोगियो !

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय का यह परम सौभाग्य है कि आज विश्वविद्यालय के ९१वें दीक्षान्त समारोह के शुभ अवसर पर भारत के माननीय प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर जी हमारे मध्य विराजमान हैं। मैं इस दीक्षान्त समारोह में उपस्थित सभी विद्वतवृन्द तथा समस्त कुलवासियो की ओर से आपका हार्दिक स्वागत करता हूं और साथ ही अनुरोध करता हूं कि यदि आपके उचित आतिथ्य में हमारी ओर से कोई त्रुटि रह गई हो तो उसपर इस विश्वविद्यालय के सीमित एवं अल्प साधनो को ध्यान में रखते हुए ध्यान न देने की कृपा करे।

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने आज से ९० वर्ष पूर्व हरिद्वार में पुण्यतोया भागीरथी के तट पर हिमालय की उपत्यका के घने वन में जिस गुरुकुल की स्थापना की थी उस जन्मभूमि को आज फिर एक बार गंगा की बाढ़ के कारण गम्भीर खतरा पैदा हो गया है। सन् १९२४ की विनाशकारी बाढ से आज तक हुए भूमि के कटान के कारण पुण्यभूमि का अधिकांश गंगा के गर्भ में समा चुका है। किन्तु जिस भवन में महात्मा गांधी, उनके सुपुत्र, दक्षिण अफ्रीका के फोनिक्स आश्रमवासी तथा ब्रिटिश प्रधानमन्त्री श्री रैम्जे मैक्डानल्ड, वायसराय चेम्सफोर्ड और लार्ड मैस्टन जैसे महानुभाव ठहरे थे उस राष्ट्रीय एव ऐतिहासिक महत्व के भवन को भी आगामी बाढ में नष्ट हो जाने का वास्तविक खतरा पैदा हो गया है। यदि हमने इस राष्ट्रीय स्मारक को बचाने के लिए तत्काल प्रयत्न नहीं किये तो भविष्य की पीढी हमें क्षमा नही करेगी।

गुरुकुल के सीमित साधनों से तथा ब्रह्मचारियों के श्रमदान से इस भूमि को बचाने के प्रयत्न किए गए हैं किन्तु सरकारी सहयोग एवं सहायता के अभाव में हमारे प्रयत्न अधूरे ही सिद्ध हो रहे हैं। ब्रिटिश सरकार ने गुरुकुल कांगड़ी को हर सम्भव सहायता देने की अनेक कोशिश की थी किन्तु राष्ट्रीय आत्मसम्मान के प्रतीक स्वामी श्रद्धानन्द ने ब्रिटिश शासको की कोई सहायता कभी स्वीकार नहीं की। आज स्थिति पूरी तरह विपरीत है। माननीय प्रधानमंत्री जी और माननीय मुख्यमन्त्री महोदय के आदेशों के बावजूद इस दिशा में कोई प्रगति नहीं हो पा रही है।

गुरुकुल शिक्षाप्रणाली ससार की सबसे प्राचीन शिक्षा पद्धति है। भारत की इस गुरुकुल शिक्षा पद्धति का पुनरुद्धार करने के लिए स्वामी जी ने गुरुकुल कागड़ी की स्थापना की थी। गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली के मुख्य उद्देश्य हैं : सभी ब्रह्मचारियों को अमीर-गरीब के भेदभाव के बिना समान खान-पान, समान रहन-सहन और शिक्षा के समान अवसर प्रदान करना, सादा और तपस्यामय जीवन व्यतीत करना, चरित्र निर्माण, गुरु शिष्य के बीच घनिष्ठ एव निरन्तर सम्पर्क, सयम और स्वाध्याय।

गुरुकुल में इन उद्देश्यों को पूरा करने के अतिक्ति वैदिक वांग्मय और सस्कृत के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की उच्चतम शिक्षा हिन्दी माध्यम से देने का भी क्रम पिछले ९० वर्षों से निरन्तर चला आ रहा है।

इन दिनों गुरुकुल में निम्नलिखित कार्यक्रम पूरे करने के लिए प्रयत्न किए गए हे :

१- वैदिक साहित्य, भाषाविज्ञान, सस्कृत, पाली एव प्राकृत के अध्ययन अध्यापन एवं अनुसधान केन्द्र की स्थापना।

२- योग शास्त्र के अध्ययन एव अनुसंधान केन्द्र की स्थापना।

३- इस विश्वविद्यालय के द्वितीय परिसर कन्या गुरुकुल देहरादून में मानविकी के आधुनिक विषयों में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम आरम्भ करना।

४- भारतीय विद्याओ, प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति सस्थान की स्थापना।

५- हिमालय के पर्यावरण पर विशेष ध्यान देते हुए पर्यावरण के क्षेत्र में अनुसधान तथा गंगाजल को प्रदूषित न होने देने के उपायों का अध्ययन।

६- विश्वविद्यालय के निकटवर्ती क्षेत्रों में ग्राम विकास की सुविधाय जुटाना तथा ग्रामवासियों को ऊर्जा के नये स्रोतों से परिचित कराना।

उपरोक्त कार्यों के अतिरिक्त हरिद्वार तथा निकटवर्ती क्षेत्रों के निवासियों की अनेक वर्षों से माग है कि गुरुकुल को उनकी बालिकाओं को उच्च शिक्षा का प्रबन्ध भी करना चाहिए। गुरुकुल की यह मांग पूरी करने में कोई हिचक नहीं है लेकिन सरकार द्वारा मान्यता एवं सहायता न देने के कारण यह योजना आगे नही बढ पाई है।

इस अवसर पर मैं माननीय प्रधानमन्त्री जी और माननीय मुख्य-मन्त्री जी से यह भी निवेदन करना चाहूंगा कि वे गुरुकुल के आयुर्वेद महाविद्यालय और कृषि महाविद्यालय के भवन हमें सौंपने के आदेश सम्बद्ध अधिकारियों को देने की कृपा करे। उत्तरप्रदेश के महामहिम राज्यपाल महोदय कुलवासियो को इस सम्बन्ध में आश्वासन दे भी चुके हैं। अत: गुरुकुल के ये भवन हमें सौपने में और अधिक विलम्ब उचित प्रतीत नही होता।

मुझे आशा ही नही, पूर्ण विश्वास है कि माननीय प्रधानमन्त्री जी और माननीय मुख्यमंत्री जी की उपस्थिति का लाभ न केवल विश्व-विद्यालय की उपरोक्त योजनाओं को गति देने में और स्वामी श्रद्धानन्द जी की तप स्थली एवं राष्ट्रीय स्मारक की रक्षा करने में ही नहीं मिलेगा अपितु हरिद्वार के निवासियों की कन्या महाविद्यालय की मांग पूरी करने में भी दोनों ही महानुभावों का सक्रिय एवं उल्लेखनीय सहयोग मिलेगा ताकि अगले शिक्षा सत्र से गुरुकुल कन्याओं के विद्या-ध्ययन का प्रबन्ध कर सके और श्रद्धानन्द जी की तपस्थली में गंगापार ब्रह्मचारियों के अध्ययन एवं निवास की सुविधा फिर से प्रारम्भ करने के अतिरिक्त ग्राम विकास के कार्यक्रम को गति प्राप्त हो सके।

मैं एक बार पुन: माननीय प्रधानमन्त्री जी और आर्यजनों को कुलवासियों की ओर से हार्दिक धन्यवाद देता हू कि उन्होंने अपने अमूल्य समय में से समय निकालकर यहा पधारने की कृपा की और हम कुलवासियों को अपनी उपस्थिति से कृतार्थ किया।

सुभाष विद्यालंकार
कुलपति

आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव

कुजपुरा जि० महेन्द्रगढ	२७, २८ अप्रैल
जेकमपुरा गुड़गाव छावनी	२६ से २८ अप्रैल
योगाश्रम बालानाथ आदमापुर डाढी जि० महेन्द्रगढ	२६ से २८ अप्रैल
नाण (हिमाचल प्रदेश)	२६ से २८ अप्रैल
लोहारू जिला भिवानी	११, १२ मई
नांगल (बहल) जि० भिवानी	१३, १४ मई
कौल जि० कैथल	३१ मई, १, २ जून
रादौर जि० यमुनानगर	३१ मई, १, २ जून
सांघी जि० रोहतक	९ से १० जून

जो आर्यसमाज मई तथा जून मास में अपने उत्सव अथवा वार्षिक वेदप्रचार रखना चाहते हैं, वे शीघ्र तिथियां निश्चित करके सभा को सूचित करें।

—सुदर्शनदेव आचार्य वेद प्रचाराधिष्ठाता

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक २८ अप्रैल को प्रात १०-३० वजे रोहतक में होगी।

—सभा मन्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

प्रभु हजारों सिरों वाला, हजारों आंखों वाला है। उसकी आंखें बहुत दूर दूर तक देखती हैं।

तुम्हारी चाही में प्रभु है मेरा कल्याण।
मेरी चाही मत करो मैं मूरख नादान।

इसलिए बालको, ईश्वर भक्त बनो। ईश्वर भक्ति सब रोगों को अचूक दवा है। ससार के सभी महापुरुष, ऋषि, महर्षि भक्त हुए हैं। राम, कृष्ण, प्रताप, शिवा ईश्वर भक्त थे। गांधी महात्मा ने ईश्वर का नाम लेते हुए प्राण छोड़े। स्वामी दयानन्द ने 'ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो' कहते हुए हसते हुए प्राण छोड़े। स्वामी श्रद्धानन्द ने प्रभु का नाम लेते हुए अपने निःश्वास त्यागे। इसलिए तुम भी 'ओ३म्' का नाम लेते हुए ग्राम, नगर, वन, पर्वत, समुद्र कहीं भी विचारो, सर्वत्र तुम्हारा कल्याण होगा। विश्वास रखो 'ओ३म्' सर्वत्र तुम्हारे साथ है। सुख में 'ओ३म्' का स्मरण करो दुःख न होगा। दुःख में 'ओ३म' का स्मरण करो कष्ट दूर होगा। सुख में सोते, जागते, लिखते-पढ़ते, खेलते-कूदते, खाते-पीते 'ओ३म्' का ध्यान रखो। तुम्हारा कल्याण होगा। विदेह स्वामी के शब्दों में याद रखो—

ओ३म् का ले नाम पंछी।
ओ३म् का कर काम पंछी।

ग्रीष्म ऋतु में जरा ख्याल रखें

☼ ग्रीष्म ऋतु में दोपहर को घर से बाहर निकलने से पहले एक गिलास ठण्ठा पानी अवश्य पी लिया करे और एक साबित प्याज जेब में रख लिया करे। इस उपाय से लू का प्रभाव नहीं होता।

☼ यदि यात्रा पर जा रहे हों तो २—४ बताशे और देहरादून वाली अमृतधारा फार्मेसी की बनी "अमृतधारा" या डाबर की बनी पुदीन हरा या इन्दौर को "प्राण सुधा" की एक शीशी अवश्य साथ रखें। उलटी, दस्त, पेट दर्द, सिरदर्द आदि व्याधियों के लिए इनमें से किसी भी एक दवा की ३-४ बून्द बताशे पर टपका पर खा लेने से आराम हो जाता है।

☼ यदि रात को १० बजे के बाद भी जागना पड़े तो १-१ घण्टे से १-१ गिलास ठण्डा पानी पीते रहें। इससे वात और पित्त कुपित नहीं हो पाते।

☼ तेज धूप में जाना हो तो सिर पर टोपी, हेल्मेट हेट लगा कर जाएं या तौलिया अथवा अगोछा सिर पर लपेट कर जाएं ताकि सिर पर धूप की सीधी किरणें न पड़े। इस उपाय से लू नहीं लगती।

☼ धूप में तेज गर्मी में घूमते हुए ठण्डा पेय न पिएं, घर पहुंच कर भी तत्काल ठण्डा पानी न पिएं। थोड़ी देर सब्र रखे और जब पसीना सूख जाए तथा शरीर ठण्डा हो जाए तब घूंट-घूंट कर धीरे-धीरे पानी पिएं।

☼ शाम को भारी, तले हुए, तेज मिर्च मसाले वाले और उष्ण प्रकृति के पदार्थों का आहार न करे। इससे अपच होने पर अनिद्रा, कब्ज या अतिसार, स्वप्न दोष, शीघ्र पतन, सिरदर्द, पेट दर्द, कमर, या पीठ का दर्द, मुंह के छाले और मुहासे होना आदि व्याधियां हो जाया करती हैं। दही, प्याज, लहसुन भी शाम के भोजन में न खाएं। यदि पहले से ही अपच, उदर विकार, कब्ज, या एसिडिटी आदि की शिकायत हो तो फिर शाम को मूंग की दाल व चावल को खिचड़ी ही खानी चाहिए। ३-४ दिन में ही पेट ठीक हो जाएगा।

☼ सुबह उठ कर शौच जाने से पहले ठण्डा पानी पीना, सुबह-शाम दोनों वक्त शौच जाना और सोने से पहले एक गिलास मीठे दूध में १-२ चम्मच शुद्ध घी डालकर घूट-घूट करके पीना चाहिए। यह दूध शाम को भोजन करने के दो घण्टे बाद पीना चाहिए।

☼ प्यास के वेग को न रोके बल्कि बिना प्यास के भी १ गिलास पानी घण्टे-घण्टे भर से पी लिया करे। शोषांग सादबाबाधिर्य सम्मोह भ्रम हृदगदा. के अनुसार प्यास का वेग रोकने से मुंह सूखना, अंगों में शिथिलता, ज्ञान का अभाव, चक्कर आना और हृदय को पीड़ा होना आदि परिणाम होते हैं।

☼ दिन में एक या दो बार नींबू पानी शक्कर डाल कर शिकंजी बनाकर या मीठी लस्सी, मीठा शर्बत या मीठा पतला सत्तू अवश्य पीना चाहिए। ठण्डाई घोंट कर पी सकते हैं। कुछ न मिले तो एक गिलास पानी में १-२ चम्मच ग्लूकोज घोल कर पी लेना चाहिए। इससे शरीर में शीतलता व तरावट बनी रहती है।

गुरुकुल खोलो आर्यसमाज बचाओ

तमाम हिन्दुस्तान, नेपाल घूमकर मैं वैदिक धर्म का ह्रास महसूस करता हूं। बच्चे आर्यसमाज में नहीं आते। प्रायः रविवार को दो घण्टे के लिए सत्संग होता है। पीछे कोई आर्यसमाज में कुछ धर्मप्रचार नहीं करना चाहता। मुसलमान ईसाई अन्य अनार्य क्या वीभत्स दृश्य दिखा रहे हैं। आप देख रहे हैं घर में बूढे बीमार की सेवा नहीं करना चाहते। स्वतन्त्रता के बाद डेढ लाख वर्ग मील इलाका चीन और पाकिस्तान के नीचे चला गया है। कहां हैं लाहौर और कराची के आर्यसमाज मन्दिर। आर्यो सोचो। हर आय अपनी आय का कम से कम सौवां हिस्सा गुरुकुल को दे। जगह-जगह गुरुकुल खोलो। बच्चों को २४ घण्टे वैदिक वातावरण में रक्खा जाये। वैदिक विद्वानों का पूर्ण सम्मान किया जाए तभी आर्यसमाज की पूर्ण रूपेण उन्नति होगी। बच्चों को जैसा सिखाया जाएगा वैसा ही वे करेंगे। ओ३म् वेद पढ़ो।

—रामकृष्ण मित्तल प्रचारक, गुलजार मशीन, शामली (उ.प्र.)

आर्यसमाज स्थापना दिवस की भव्य झलक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की अनुप्रेरणा से चैत्र शुक्ला प्रतिपदा (दि० १७ मार्च १९९१) को आर्यसमाज (पुराना) नारनौल जिला महेन्द्रगढ (हरयाणा) में आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह बहुत ही ओजस्वी, तेजस्वी, भव्य और दिव्य रूप से मनाया गया। इस सुअवसर पर प्रात: यज्ञ और 'ओ३म्' ध्वजारोहण हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्रीमती जयवन्ती श्योकन्द, आई.ए.एस. अतिरिक्त उपायुक्त नारनौल ने की। श्रीमती श्योकन्द ने अध्यक्षीय भाषण में महर्षि दयानन्द जी सरस्वती, आर्यसमाज के नियमों तथा नारी जाति इत्यादि पर प्रकाश डाला। इस समारोह की सुव्यवस्था प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता म० ताराचन्द जी प्रधान आर्यसमाज नारनौल, श्री छोटेलाल जी प्रधान मुण्डियां खेड़ा वाले, श्री रामनरेश जी मन्त्री, श्री महावीर जी पुरोहित तथा अन्य महानुभावों ने की। श्री छोटेलाल जी प्रधान प्रत्येक उत्सवों की भांति इस उत्सव में भी बहुत उत्साहपूर्वक भाग ले रहे थे। मंच संयोजक का कार्य श्री हरिश्चन्द्र जी वैद्य ने किया। महाशय प्यारेलाल जी आर्य, स्वामी देवानन्द जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, पं० ताराचन्द जी वैदिक, श्री लालचन्द जी विद्यावाचस्पति इत्यादि ने बहुत ही सुन्दर भजनों द्वारा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। श्री लालचन्द जी विद्यावाचस्पति ने स्थापना दिवस की विश्वव्यापकता को दर्शाते हुए महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के अन्तिम सन्देश, अमर उपदेश, अमृतमय निर्देश जो उन्होंने अजमेर नगर में आर्यों को एकत्र करके दिया। गाने के रूप में गा कर सुनाया।

(महर्षि दयानन्द जी सरस्वती कहने लगे)

गाना

अब आर्यो मेरी नमस्ते है, इस जग से अब मैं जाता हूं।टेक।
घृत चन्दन समिधा लेकर दूर नगर से ले जाना।
अन्त्येष्टि संस्कार कर वहां शरीर मेरे को जलाना है।
वृद्ध बाल सुनो, कर ख्याल सुनो, मैं जो उपदेश सुनाता हूं।१।
उपजाऊ भूमि में आर्यो गड्ढा एक बनाना है।
हड्डियों सहित भस्म मेरी को पृथ्वी बीच दबाना है।
नहीं स्वार्थ हो, परमार्थ हो, मैं परोपकार फैलाता हूं।२।
बना समाधि ना पाखण्ड करना आप मेरे शमशान पर।
उसकी लागत धनराशि लगाना किसी होनहार नौजवान पर।
यह पूजा जड, हो जा गड़बड़, मैं जड़-पूजा छुड़वाता हूं।३।
और नहीं चाहता यह चाहता मैं करना उन्नत देश को।
देकर यह उपदेश ऋषिवर रटने लगे भुवनेश को।
हुए बोल बन्द, कह लालचन्द, यह रोना है नहीं गाता हूं।४।

—महात्मा सुशीलदेव

जला के खाक बना देगी तेरे ढांचे को,
शराब आग है मुंह से न लगाना हरगिज।

'अमर'—वैशाख'२०४८

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०/७३   रजि. नं० P/RTK-४१   फोन ..... सृष्टिसंवत् १,९६, ०८, ५३, ०९०

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८   अंक २२   २८ अप्रैल, १९९१   वार्षिक शुल्क ३०)   (आजीवन शुल्क ३०१)   विदेश में ८ पौंड   एक प्रति ७५ पैसे

वेद भगवान् आज्ञा देता है किसे चुने ?

रचयिता—लालचन्द "विद्यावाचस्पति"

त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथः सदांसि ॥
(ऋग्वेद ३।३८।६)

वेद उपदेश करता है कि हम किसे चुने ? क्योंकि चुनाव पर ही राज-व्यवस्था, प्रशासन-प्रबन्ध, दण्ड-विधान इत्यादि निर्भर है। लोकोक्ति भी प्रसिद्ध है—"यथा राजा तथा प्रजा" अर्थात् यदि राजा विद्वान्, न्यायकारी, प्रजा का हितैषी है तो प्रजा भी सुखमय, शांतिमय और समृद्धिपूर्वक जीवन व्यतीत करेगी। अत शासक, नेता या राजा में सर्वप्रथम और सर्वोपरि यह गुण हो कि वह अज्ञान, अभाव और अन्याय को जड़ सहित नष्ट करे। इसीलिए प्रशासन को सुदृढ़, सुव्यवस्थित बनाने के लिए उपर्युक्त मंत्र के आधार पर युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के षष्ठं समुल्लास में तीन सभाएं बताई हैं—

१. विद्यार्य सभा, २. धर्मार्य सभा, ३ राजार्य सभा।
तं सभा च संमितिश्च सेना च ॥अथर्व० १५।९।२॥
सभ्य सभा मे पाहि ये च सभ्याः सभासदः ॥
॥अथर्व० १९।५५।६॥

अर्थात् उस राजधर्म की न्याय व्यवस्था का तीनों सभाएं, सेना, राजा और सभासद सभी पालन करें। प्रस्तुत पद्य-संकलन में भी यही विषय दर्शाया है कि हम किसे चुनें ?

॥ गाना ॥

चुनने-योग्य बताएं तुम्हें प्रधान देश का।
जिसके चुनने से होवेगा उत्थान देश का ॥टेक ॥
लोकप्रिय, जितेन्द्रिय रिपु दल का नाश करे।
वेदोक्त विधान धास करे तो हो कल्याण देश का ॥१॥
जिसके चुनने से······

तीनों श्रेष्ठ सभा करे स्थापित तो नहीं हो जनता को कष्ट।
गोली से मरवा डाले जो हों नर-नारी भ्रष्ट॥
दुर्व्यसन हों नष्ट सुधरे खान-पान देश का ॥२॥
जिसके चुनने से·········

धन धाम कोष भरपूर करे, ना करे कभी पक्ष-पात।
कड़ा दण्ड दे उस दानव को जो करे मानव से छुआ-छात।
ना करे कभी उत्पात तो, हो सम्मान देश का ॥३॥
जिसके चुनने से·········

वेद-युक्त प्रधान चुनने से होवेगा आनन्द।
वेद-पथ पर चलें सभी तो कटे दुःखों के फन्द ॥
लिखे छन्द "लालचन्द" नित्य महान् देश का ॥४॥
जिसके चुनने से·········

संकलन कर्त्ता—महात्मा सुशीलदेव श्री मंगल भवन
खेडकी महेन्द्रगढ (हरयाणा)

शराबियों को वोट न देना

श्री पृथ्वी सिंह जी बेधड़क का पुराना गीत

आज के चुनाव में पापियों को नाव में बैठियों ना भाई

जो इस नौका में बैठोगे तो डूब जाओगे,
पांच साल तक रोओगे और गोते खाओगे।
गऊ मारी जायेंगी कहीं ना ढूण्डो पावेंगी,
घी दूध और मलाई।

एक वैद्य ने दवा पिलाई पांच साल तक,
पेट की हड्डी टूटी अच्छी होगी साल तक।
जिसने नहीं नाड़ी परखी ऐसे मूर्ख डाक्टर की,
मतना लेना दवाई।

भारत के मजदूर किसानों देश बिगाड़ो ना,
झोटे तले बाल्टी धरकर दूध निकालो ना।
जैसी भाई वैसी भरेगी बच्चा पैदा करेगी,
कभी भी बांझ लुगाई।

जाति-पाती छूआ-छूत मिटाकर यहां प्रेम रहे,
पार्टी-बाजी झगड़े मिटाकर भारतीयों में प्रेम रहे।
देवियों की लाज हो शुद्ध हमारा काज हो,
सब परिवार हो सुखदाई।

मुकदमा ठगी लूट मचाई चोरी डकैती होवे ना,
जिस कारण दुःख पाते हो यहां शराब की प्याली होवेना।
दहेज का यहां लेना-देना पास ना रखो चान्दी गहना,
जिससे मरती बहन-बेटियां भाई।

प्रार्थना है ईश्वर हमारी भारत अखण्ड अपार रहे
गुरुकुल खुलवाये आवें वेदों का प्रचार रहे।
आर्यसमाज हो सन्ध्या हवन का रिवाज हो,
ऋषि दयानन्द ने बतलाई।
चान्दी सोना चीज कीमती नोट ना लेना,
कह पृथ्वीसिंह इन शराबियों को वोट ना देना।
जिसने सारे देश की भाषा और भेष की,
सभ्यता सभी मिटाई।

प्रस्तुत कर्त्ता—जयपालसिंह आर्य सभा भजनोपदेशक

सूचना

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार हरयाणा में १ जुलाई से नवीन छात्रों का प्रवेश आरम्भ है। जो छात्र मैट्रिक हो वे आवेदन कर सकते हैं। यहां २५०/- रु० प्रवेश शुल्क है। बाकी सारी व्यवस्था नि.शुल्क है। स्थान सीमित है। प्रवेशार्थी आचार्य से पत्र व्यवहार कर स्वीकृती लेवें।

वेद का सूर्य अस्त होगया

(डा. सुरेशचन्द्र वेदालंकार, आर्यसमाज गोरखपुर)

या गतानामा दीधीथा ये नयन्ति परावतम्।
आरोह तमसो ज्योतिरेह्या ते हस्तौ रभामहे॥
(अथर्व० ८।१।८)

अर्थात् गए हुओं को, मरे हुए लोगों की मत चिन्ता कर, जो दूर तो जाते हैं, अन्धकार को छोड़कर प्रकाश पर आरूढ हो आ तेरे हाथों को हम वेगयुक्त करते हैं।

जीवन और मरण का चक्र दिन रात चल रहा है। जीवन-मरण एक दूसरे के अनुबन्धी हैं। ससार में यदि मरण न हो तो जीवन में कोई रस ही न रहे। विविधता ही जीवन है। मृत्यु में एकरसता है, स्थिरता है, जड़ता है। मनुष्य उत्पन्न होता है, बढता है, विकसित होता है, प्रौढ होता है, वृद्ध होता है और फिर मृत्यु भी हो जाती है। होने, घटने, बढने और बदलने का नाम जीवन है। 'या गतानामा-दीधीका:' इन शब्दों में वेद कहता है मरों की चिन्ता मत कर। आज समाचार-पत्र से वेद के सूर्य श्री पूज्य पंडित विश्वनाथ जी वेदालकार की मृत्यु की सूचना मिली। उस पत्र में यह भी पढ़ा कि उनकी आयु १०३ वर्ष की थी। मैंने पूज्य पण्डित जी से वेद पढ़े थे। वेदों में रस भी लिया था। मेरे एक थोड़े समय के गुरु श्री पं० रामनाथ जी वेदालकार भी उनके शिष्य थे। अत्यन्त योग्य। श्री रामनाथ जी की योग्यता का वर्णन तो कठिन है पर मेरे अध्यापकों में श्री पं० वागीश्वर जी, श्री पं० सत्यकेतु जी विद्यालकार, डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार जैसे विद्वान् थे। आचार्य श्री अभयदेव जी और स्वर्गीय चन्द्रगुप्त वेदालंकार भी अध्यापक थे। शायद समझता हूं कि वह विद्वता की दृष्टि से गुरुकुल का स्वर्णयुग था। आचरण और महानता की दृष्टि से उस समय के सभी आचार्य और अध्यापक इतने ऊंचे थे कि वर्णन करना असम्भव है। इनमें आयु में सबसे अधिक, नम्रता की और सौजन्य की मूर्ति और विद्वता तथा वैदिक ज्ञान के सूर्य श्री पं० विश्वनाथ जी विद्यालंकार स्मरण आते ही आज भी श्रद्धा से सिर झुक जाता है।

श्री प० विश्वनाथ जी मर गए। पर, मैं समझता हूं कि वे कभी नही मर सकते। नास्ति येषां यश. काये जरा मरणजम् भयम्' वे तो ऐसे व्यक्ति थे। जिनके शरीर में जरा और मरण हो ही नही सकता था। उनका अपना कहना था—"प्राणो वै मृत्यु:" मृत्यु प्राप्त है। उनका विचार था "वैदिक विचारधारा ने मृत्यु का दंश काटकर उसे सुन्दर और मधुर बना दिया है।" वे मानते थे "मृत्यु मानो खेल है। मृत्यु मानो आनन्द है। मृत्यु मानो काव्य है। मृत्यु मानो पुराने वस्त्र बदलना है। जिन्होंने मृत्यु के इस काव्य को समझा है, उन्हें मृत्यु से भय नहीं लगता। उन्हें मृत्यु में भी काव्य का सा रस मिलता है।"

खैर, उन्होंने अपना शरीर छोड़ दिया। पर उनका दिया ज्ञान अमर है। मैं कक्षा में बहुत तेज पढनेवालों में न था। पर, कक्षा में विषयों को ध्यान से सुनता था और समझ में न आने पर अपने प्रोफेसर से पूछता भी था। चालीस वर्ष तक अध्यापन कार्य करने के बाद मुझे बहुत से अनुभव हुए। इन अनुभवों पर अपने विद्वान् प्रोफेसरों का आधार था। मैं अध्यापकों को परेशान करने के लिए और अध्यापन के समय को कम करने के लिए प्रश्न पूछता था। एक बार की बात है कि मैंने उनसे किसी प्रसग में पूछा—"चारों वेदों में ऋक्, यजु, साम और अथर्ववेद का वर्णन आता है, तो क्या इनसे पूर्व भी कोई और वेद थे?" उन्होंने वेद और सृष्टि की चर्चा की और लगभग पूरा पीरियड यह समझाने में लगाया। उनकी एक-एक बात और शब्द सुनते समय कक्षा में सन्नाटा छा गया। ऐसा लगा कि साक्षात् सरस्वती वेदों के प्रमाणों के साथ उनके मुख से अवतरित होगई हैं। उन्होंने कहा ऋग्वेदादि वेद ही अपने से पूर्व ऋग्वेद का वर्णन करता है। वह पूर्व ऋग्वेद और कुछ नहीं है, वह वही वर्तमान ऋग्वेद ही है। इस भूत और वतमान दोनों हो समयों में एक ही वेद अव्याहत गति से चले आरहे हैं। जिस प्रकार वर्तमान ऋग्वेदादि में वेदों का वर्णन आ जाने से यह वर्तमान ऋग्वेद उस ऋग्वेद से नया नही होता, ठीक इसी प्रकार अब तक वर्णित ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम आ जाने से वेद उनके पश्चात् के बने हुए सिद्ध नहीं होते।"

उन्होंने बताया कि वेदों की विचित्र शैली है, जो बड़े मार्मिक ढंग से भूत, भविष्य और वर्तमान पदार्थों का वर्णन एक ही रीति से करती है।" उन्होंने आगे विस्तृत रूप में वेदों की नित्यता का प्रतिपादन करते हुए कहा "इस एक रीति से वर्णन करने से वेदों की नित्यता ही कारण है। नित्य पदार्थ, नित्य और अनित्य पदार्थों को एक ही समान अनुभव करता है। इसी प्रकार नित्य सिद्ध वेद भी नित्य और अनित्य पदार्थों का वर्णन एक ही समान करते हैं।"

उनका व्याख्यान तो विस्तृत था पर भाव यही था और गोरखपुर जिले की आर्यसमाज घुघली में इसी प्रश्न का मेरा किया हुआ समाधान विज्ञजनों ने स्वीकार किया। पर वह मुझे पंडित जी से ही मिला था।

एक बार की बात है कि वे अथर्ववेद पढ़ा रहे थे। मैं कक्षा १३ या १४ में था। अथर्ववेद में 'बृहच्छेप' का प्रयोग किया था। कुछ सकोच के साथ उन्होंने इस शब्द का अर्थ बतलाया। दीर्घ शिक्षा अर्थात् 'बृहत् लिंग।' इसी प्रकार ऋग्वेद में 'सप्तवध्रि' और 'शिपिविष्ट' का भी वर्णन आया है। हम लोगों ने पंडित जी से पूछा पडित जी, आप यह बताइए कि क्या वेदों में अश्लीलता मिलती है? क्या वेदों में गुप्तेन्द्रियों का भी वर्णन है। उन्होंने अथर्ववेद के मन्त्र का पाठ किया और इतनी सारगर्भित, निरुक्त आदि से पुष्ट व्याख्या की मुझे आज वह मन्त्र तो याद नही। क्योंकि आज उस बात को बीते ५४ वर्ष से अधिक समय बीत गया है, पूरा-पूरा तो मुझे याद नहीं उन्होंने कहा "ये शब्द गुप्तेन्द्रिय के वर्णन नहीं। आकाश स्थ सातों किरणों का वर्णन है। सातों किरणें एक साथ मिलकर पृथ्वी की ओर आती है तब उनका रूप शिश्न=लिंग की तरह हो जाता है और उसी आकार में वह पृथ्वी की ओर बढता है और यदि रास्ते में बादल आ जाते हैं और उनमें वह छिप जाता है तो आलकारिक भाषा में उसे 'वधिया' होना मानते हैं।" उन्होंने कहा "आकाश में भी स्त्री-पुरुष हैं, उनके विवाह हैं, गर्भाधान है रति है और वाजीकरण आदि भी है। वेदों में गुप्तांगों के वर्णन विषयक आकाशीय वर्णन से हुई भ्रांति का भी निराकरण किया गया है। वेद में कहा गया है "मा शिश्नदेवा अपि गुऋ तं न. ऋग्वेद ७।२१।५ में स्पष्टरूप से कहा गया है। अरे लोगो! याद रखो जो शिश्न को देव मानकर उसी की सेवा में रहते हैं अर्थात् व्यभिचार के चक्कर में रहते हैं प्रभु कहता है वे मुझे प्राप्त नही कर सकते।"

श्री पं० विश्वनाथ जी की ब्रह्मयज्ञ=संध्या पर लिखी गई पुस्तक 'संध्या रहस्य' एक अद्भुत और अनुपम कृति है। कक्षा में बहुत आदि ज्ञान का स्वरूप वैदिक ज्ञान का स्वरूप—यज्ञ, यज्ञ की महिमा यज्ञों में आयुर्वेद, यज्ञों में ज्योतिष, यज्ञों में भौगोलिक ज्ञान, यज्ञों में ललित कलाये आदि विषयों पर दिए गए प्रमाण, मन्त्र तथा प्रमाण, वैदिक ज्ञान की अपौरुषेयता आदि विषयों पर मुझे तो अन्य कोई इतना प्रभावशाली विद्वान् दृष्टिगोचर नही हुआ। यदि उनकी रचनाओं पर लिखा जाय तो लेख क्या एक पुस्तक तैयार हो सकती है। वे मृत्यु से एक सप्ताह पूर्व तक वेदभाष्य करते रहे। वे केवल वैदिक साहित्य के विद्वान् नहीं थे। संस्कृत साहित्य के ज्ञान के विषय में पं० वागीश्वर जी उनका उल्लेख करते थे और उनसे मिलकर शकाओं का निवारण करते थे। दर्शनशास्त्र के भी प्रकांड विद्वान् थे। श्री पं० सुरेन्द्रनाथ जी दर्शनाचार्य के गुरुकुल से जाने के बाद छात्र इस विषय की समस्याओं का उनसे समाधान करते थे और सबसे बड़ी बात यह है कि साहित्यिक वैज्ञानिक नहीं हो सकता इसके अपवादस्वरूप रसायनशास्त्र का उन्होंने गहन अध्ययन कर रखा था। दलितोद्धार के कार्य में उनकी प्रमुख भूमिका थी। आचार्य अभयदेव जी कांग्रेस, अरविन्द तथा गांधी से प्रभावित थे परन्तु गांधी जी के अनुयायी हरिजन सेवक संघ के सर्वेसर्वा श्री ठक्कर बाप्पा इनसे इतने प्रभावित थे कि उनके लिखने से मुझे श्री ठक्कर बापा ने गोरखपुर में डोम जाति के लिए कार्य करने को नियुक्त किया था। मैंने सफलतापूर्वक ५ मास कार्य किया पर अपने लिए शिक्षा-क्षेत्र को अधिक उपयुक्त समझकर मैं

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सात्विक बुद्धि का कार्य

लेखक—स्व० स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती

मनुष्य को अविद्या आदि क्लेशों के कीचड़ से खींच कर बाहर निकाल लेना भी बुद्धि देवी का ही काम है। हम अपने आप को (आत्मा और शरीर के सम्बन्ध को) और अपने साथ सम्बन्ध रखने वाली, परिवार, भवन, भूमि, धन आदि सामग्री को नित्य समझे हुए हैं। चाहे हम यह कहते भी रहें कि यह सब जगत् बदल रहा है, नाशवान् है, परन्तु जिस समय कार्य-क्षेत्र में पहुंच हमारे व्यवहार की ओर कोई दृष्टिपात करता है तो उसे यह प्रतीत हुए बिना नहीं रहता कि हम अपने आप को और इस सामग्री को नित्य मान रहे हैं। हम अपनी इस सामग्री से इतना घना सम्बन्ध जोड़ लेते हैं कि उसके वियोग का कभी ध्यान भी नहीं आता और इसी लिए हम अपना कार्य-क्रम इतना लम्बा बना लिया करते हैं कि जीवन के अन्तिम समय तक भी पूरा होने में नहीं आता। हमारे उस कार्य-क्रम का लक्ष्य, ऊपर गिनाई गई इस सामग्री के प्राप्ति व्यय और वृद्धि ही हुआ करते हैं। इसी चक्र में पड़े हुए हम "मानव जीवन का यथार्थ ध्येय क्या है?" इस विषय पर विचार करने में भी असमर्थ रहते हैं। कारण स्पष्ट है कि हमें इन सांसारिक प्रलोभनों के लिए बनाये हुए कार्य-क्रम से कभी अवसर ही नहीं मिलता, हमारे अन्तःकरण पर प्रभुत्व रखने वाली अविद्या का यह एक अंग है। यदि हम यह निश्चय कर लें कि यह सब सामग्री अनित्य है, और अतएव इसके साथ हमारा सम्बन्ध कुछ काल के लिए ही है, वह तत्त्व और है जिसके साथ हमारा शाश्वत सम्बन्ध है तो हमारा दृष्टिकोण ही बदल जाये, और इसी लिए हम अपने कार्य-क्रम में भी कुछ परिवर्तन करने पड़े। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि अन्तःकरण से अविद्या के इस पर्दे को हटाने और अपने दृष्टिकोण के बदलने के कार्य में बुद्धि के अतिरिक्त हमारा और कोई सहायक नहीं।

इसी प्रकार कितनी ही अपवित्र वस्तुओं को पवित्र, दुःख-दायक को सुखदायक और अनात्मक वस्तुओं को आत्मा समझकर हम किसी ऐसे कार्य-क्रम के स्रोत में बहे चला करते हैं जिससे पार होना कठिन हो जाया करता है। अविद्या के इन तीन महास्रोतों में बहते हुए मनुष्य को, इनसे निकाल कर बाहर खड़ा करना भी बुद्धि का ही काम है।

—प्रा० धर्मेन्द्र धींग्रा,
ओंकार कुंज, खारीवाव मार्ग, वडोदरा-३९०००१

स्वस्थ रहने का उपाय

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

१ जो आहार विहार में, रहते संयमवान।
उनसे रहते दूर सब, रोग शोक, भयमान॥

२ नित्य प्रति मंजन करो, उठते ही प्रभात।
ताजे जल से स्नान कर, सुखी रहेगा गात॥

३ भोजन के पश्चात् दो, मूत्र वेग को त्याग।
बनी रहे नीरोग्यता, ब्राह्ममुहूर्त में जाग॥

४ जब भी तुमको लगे, भूख कड़ाकेदार।
भोजन करने के लिए, हो जाओ तैयार॥
हो जाओ तैयार और चबा चबा कर खाओ।
बिना भूख भोजन के कभी पास मत जाओ॥
वरना रोग तुम्हारी चौखट पर आयेगा।
भोजन खाया हुआ, तुम्हें ही खा जायेगा॥

५ पैदल चलना स्वास्थ्य को, देता है आराम।
मांसपेशियों का सभी, हो जाये व्यायाम॥

६ चाय, तम्बाकू, डालडा जो नहीं करे प्रयोग।
फिर उस नर से दूर रहे, भांति-भांति के रोग॥

आर्यसमाज कंवारी (हिसार) का चुनाव एवं महत्त्वपूर्ण निर्णय

दिनांक १५-४-९१ को आर्यसमाज कंवारी की एक महत्त्वपूर्ण बैठक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। वर्तमान आर्यसमाज कंवारी के कार्यक्रम पर सभी ने सन्तुष्टि व्यक्त की तथा क्रान्तिकारी के कुशल नेतृत्व एवं लग्न की सब ने प्रशंसा की। तत्पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नियमानुसार तीन वर्ष के लिए समाज का चुनाव सर्वसम्मति से किया गया।

प्रधान—श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, उपप्रधान—श्री ज्ञानीराम आर्य (पूर्व सरपंच), मन्त्री—श्री सूबेदार रामेश्वरदास आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री महेन्द्रसिंह आर्य, संगठनमन्त्री—श्री हरिसिंह आर्य, प्रचारमन्त्री—डा० ओमप्रकार आर्य, लेखानिरीक्षक—श्री वजीरसिंह आर्य।

इसके अतिरिक्त आर्यसमाज कवारी की ओर से कन्या गुरुकुल खादीपुर जुलाना के कुलपति स्वामी सत्यवेश जी के २-४-९१ के आकस्मिक निधन पर दुःख व्यक्त किया गया तथा शोक प्रस्ताव पास किया गया। दिनांक २८, २९ मई को स्वर्गीय पं० तालेराम आर्य का दशवां स्मृति दिवस मनाने का निश्चय किया गया। गांव में फसल के समय अज्ञानी किसानों-मजदूरों में शराब पीने की बढ़ती आदत पर चिन्ता व्यक्त की गई। साथ में सभी अधिकारियों एवं सदस्यों ने निर्णय लिया कि वर्ष में कम से कम प्रत्येक आर्य सदस्य ५-५ शराबियों को समझा-बुझाकर शराब छुड़वाएंगे। विवाह शादी में जनाने कपड़े पहनकर बाजा बजाने, शराब पीने पिलाने, बारात में ज्यादा आदमी ले जाने आदि बुराइयों को भी न करने का व्रत लिया। गांव में नवयुवकों की भावना व्यायाम एवं चरित्र निर्माण के कार्यों में रुचि पैदा करने का भी निर्णय लिया गया। शान्ति पाठ के बाद सभा समाप्त हुई।

सूबेदार रामेश्वरदास आर्य, मन्त्री आर्यसमाज कवारी।

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज बबरपुर जि० करनाल

प्रधान—श्री यशवन्तसिंह, उपप्रधान—श्री जयपाल, मन्त्री—श्री पूर्णचन्द, उपमन्त्री—श्री सुन्दरलाल, प्रचार मन्त्री—श्री हरिसिंह, पुस्तकाध्यक्ष—श्री हरिराम, कोषाध्यक्ष—श्री सोरनलाल, लेखानिरीक्षक—श्री बुधराम।

आर्यसमाज सोलधा जि० रोहतक

प्रधान—श्री हजारीसिंह, मन्त्री—श्री रामानन्द, कोषाध्यक्ष—श्री नन्दराम, लेखानिरीक्षक—श्री हंसराज, अधिष्ठाता—श्री भीमसिंह, पुरोहित—श्री रिसालसिंह।

मेवात अल्प संख्यक रक्षा समिति का चुनाव

अध्यक्ष—श्री स्वामी अमरानन्द सरस्वती भादस, उपाध्यक्ष—स्वामी विजयानन्द सरस्वती आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर जिला फरीदाबाद, मन्त्री—श्री धर्मसिंह आर्य भादस, उपमन्त्री—बेधड़क धनीराम, प्रचारक—धर्मपाल आर्य।

आर्यसमाज नरवाना जि० जीन्द

प्रधान—श्री नरेशचन्द, उपप्रधान—श्री जितेन्द्रनाथ, श्री अनिल आर्य, मन्त्री—श्री राधाकृष्ण आर्य, उपमन्त्री—श्री अश्विनी कुमार, कोषाध्यक्ष—श्री रमेश कुमार।

आर्यसमाज अर्जुननगर गुड़गांव

प्रधान—श्री प्रभुदयाल स्वर्णकार, उपप्रधान—श्री किशनचन्द, श्री वासुदेव, मन्त्री—श्री मा० सोमनाथ, उपमन्त्री—श्री बलदेव कृष्ण, श्री ईश्वरचन्द, कोषाध्यक्ष—मा० श्यामसुन्दर आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री भारत रतन, भण्डारी—श्री ओमप्रकाश, लेखानिरीक्षक—श्री नत्थूराम, पुरोहित—श्री अमीलाल शास्त्री।

वेद भाषा—सत्य भाषा

आर्य नरेश शाहपुरा के राजाधिराज श्री सुदर्शनदेव जी के पावन संस्मरण

(डा० भवानीलाल भारतीय)

राजस्थान के राज्य शाहपुरा का राजघराना गत तीन पीढ़ियों से महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज के प्रति अनन्य आस्थावान रहा है। इस राज्य के शासक राजाधिराज सरनाहरसिंह जी स्वामी दयानन्द के अनन्य भक्त थे। उन्होंने अपने राज्य में स्वामी जी को आमन्त्रित किया तथा उनके उपदेशों को क्रियान्वित करने में गहरी रुचि ली। उनके पुत्र राजाधिराज उम्मेदसिंह जी ने तो राजगद्दी का त्याग कर वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा ली। श्रेयार्थी के नाम से कहलाना पसन्द करते थे। वे स्वाध्याय में गहरी रुचि रखते थे। उन्होंने अपने पुत्र सुदर्शनदेव जी को १९४६ में ही शासन भार सौंप दिया था। राजाधिराज सुदर्शनदेव जी ने भी युग की पुकार तथा प्रजातन्त्र के महत्त्व को स्वीकार करते हुए अपने राज्य में प्रतिनिधि शासन की स्थापना की और शासनाधिकार जनता के प्रतिनिधियों को सौंप दिये।

श्री सुदर्शनदेव जी की शिक्षा-दीक्षा राजगुरु सुरेन्द्र शास्त्री के द्वारा हुई थी। वे भी अपने पिता तथा पितामह की भांति आर्यसमाज के प्रति परम निष्ठावान् थे। वे ६ नवम्बर १९४२ को परोपकारिणी सभा के आजीवन सदस्य थे। १९५९ में दयानन्द दीक्षा शताब्दी समारोह की उन्होंने अध्यक्षता की। जब अजमेर में आर्यसमाज के प्रख्यात कवि, गायक और भजनोपदेशक प० प्रकाशचन्द्र कविरत्न का १९७१ में अभिनन्दन किया तो इस समारोह की अध्यक्षता भी उन्होंने की तथा वयोवृद्ध प्रकाश जी को ५०० रुपये अपनी ओर से भेंट किये। १९७२ में दिल्ली की आर्यसमाज दीवान हाल में सार्वदेशिक सभा तथा राजधानी की विभिन्न आर्य संस्थाओं द्वारा राजाधिराज तथा महारानी स्व० श्रीमती हर्षवन्तकुमारी का भव्य स्वागत किया गया था। उन्हें वेदभाष्य की प्रति भेंट की गई। इस अवसर पर बोलते हुए सुदर्शनदेव जी ने अपने पूर्वजों की आर्यसमाज के प्रति आस्था का विवरण देते हुए कहा था कि वे ऋषि दयानन्द को अपना गुरु मानते हैं तथा उनके उपदेशों को स्वीकार करना अपना पुनीत कर्त्तव्य समझते हैं।

मेरा स्वर्गीय राजाधिराज से अत्यन्त आत्मीय सम्बन्ध था। जब-जब मेरा शाहपुरा जाना होता मैं उनसे उनके रैतिया बाग राज-महल में भेंट करने अवश्य जाता। उन्होंने अपने पुराने राज महल का एक बहुत बड़ा भाग महर्षि दयानन्द महिला शिक्षण केन्द्र को दे दिया था, जहां एक महत्त्वपूर्ण शिक्षा संस्था सफलतापूर्वक चल रही है। राजाधिराज ने मुझे स्व० देवशर्मा अभय लिखित वैदिक विनय का प्रथम खण्ड भेंट रूप में दिया जो उनके पिता स्व० उम्मेदसिंह जी का निजी स्वाध्याय का ग्रन्थ था। भारत के गणराज्य में रियासतों के विलीनीकरण के पश्चात् यद्यपि राजाओं के शासनाधिकार समाप्त हो गये थे, किन्तु राजाधिराज सुदर्शनदेव जी ने प्रिविपर्स की कभी चिन्ता नहीं की और निजी तौर पर कृषि तथा बागवानी जैसे श्रम साध्य कार्यों में लगे रहे। वे आर्यसमाज शाहपुरा के प्रधान तथा संरक्षक रहे और प० वीरसेन वेदश्रमी तथा अन्य विद्वानों को आमन्त्रित कर समय-समय पर अनेक प्रकार के वैदिक यज्ञ कर्म कराते रहे। उन्होंने अपने पितामह राजाधिराज नाहरसिंह जी को लिखे स्वामी दयानन्द के मूल पत्र भी परोपकारिणी सभा को भेंट कर दिये थे।

वे विगत कुछ वर्षों से लगातार अस्वस्थ रहे तथा कुछ पारिवारिक कठिनाइयों का भी उन्हें सामना करना पड़ा, किन्तु बड़ी से बड़ी विपत्ति को भी धैर्यपूर्वक सहन करने की उनमें क्षमता थी। वे अत्यन्त सौम्य मृदु स्वभाव के व्यक्ति थे। गत ९ फरवरी को दिल्ली में उनका निधन हो गया। आशा है उनके पुत्र श्री इन्द्रजितदेव भी अपने स्वर्गीय पिता के चरण-चिह्नों पर चलेंगे तथा ऋषि दयानन्द एवं आर्यसमाज के प्रति उनकी भक्ति पूर्ववत् रहेगी। मैं स्व० राजाधिराज की परम पावन स्मृति में अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

—०—

आर्यसमाज नारनौल में रामनवमी पर्व

आर्यसमाज नारनौल (पुराना) जि० महेन्द्रगढ़ (हरयाणा) में दिनांक १४-३-९१ को आर्यावर्त के आदर्श-पुरुष, अलौकिक चरित्र सम्पन्न, योगेश्वर, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जन्म-दिवस सुन्दर और सुचितर विधि से मनाया। यह समारोह सुविख्यात, वयोवृद्ध कार्यकर्त्ता महाशय ताराचन्द जी आर्य प्रधान आर्यसमाज (पुराना) नारनौल की प्रधानता में आयोजित किया गया। श्री छोटेलाल जी आर्य (प्रधान मुण्डियां खेड़ा वाले के संचालन में इस कार्यक्रम की व्यवस्था बहुत ही सराहनीय थी। समारोह के प्रमुख वक्ता इस प्रकार थे—सर्वश्री स्वामी देवानन्द जी आर्य प्रतिनिधि सभा रोहतक (हरयाणा) ने मधुर भजनों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। वैद्य हरिश्चन्द्र जी आर्य ने अपने प्रवचनों द्वारा श्रद्धेय श्री रामचन्द्र के जीवन व आदर्शों पर प्रकाश डाला। श्री लालचन्द जी विद्या-वाचस्पति (श्री मंगलजयकौर आ० ज्ञान आश्रम खेड़की) ने बताया कि वैदिक धर्म, वैदिक-संस्कृति और आर्यसमाज श्री रामचन्द्र जी को मर्यादा पुरुषोत्तम और आदर्श-चरित्र सम्पन्न मानता है। हमारी वैदिक संस्कृति, हमारे वेदों और हमारे वेदों की वाणी में देखो कितनी महान् शक्ति थी कि हम "जगद्-गुरु" और हमारा आर्यावर्त "सोने की चिड़िया" कहलाता था। प्रस्तुत गाने में देखिये कि हमारे कितने ही महापुरुष और वीरांगनाएं हुई हैं जिनके कारण हम सारे विश्व में अपनी पहचान बना सकें।

गाना

जिस द्वारा गुरु कहलाते थे, हम वेद की वाणी भूल गए ॥टेक॥
कपिल कणादि जैमिनी योगी सुनो, उन कुटियों में आज भोगी सुनो।
थे महाप्राणी हम भूल गए ॥१॥ हम वेद की वाणी —····

रामायण गीता के थे पाठ यहां, आज चलचित्रों के ठाठ यहां॥
रामकृष्ण योगी ध्यानी को भूल गए ॥२॥ हम वेद की वाणी···—

अन्धकार का नाश किया, यहां वेदों का प्रकाश किया।
दयानन्द ब्रह्मज्ञानी को भूल गए ॥३॥ हम वेद की वाणी······

चित्तौड़ में चिता बनाई थी, स्वयं अपनी लाज बचाई थी।
पद्मनी क्षत्राणी को भूल गए ॥४॥ हम वेद की वाणी······

तिलक गोखले दुर्गादास सुनो, नेता श्री सुभाष सुनो।
उनकी कुर्बानी भूल गये ॥४॥ हम वेद की वाणी ·····

जा लन्दन में नहीं घबराया था, पूज्य पिता का बदला चुकाया था।
ऊधम लासानी को भूल गए ॥६॥ हम वेद की वाणी······

पीठ के ऊपर लाल लिया, लाल के ऊपर काल किया।
झांसी की रानी को भूल गए ॥ हम वेद की वाणी ·····

हो देश के लिए बलिदान सुनो, तो लोक परलोक में मान सुनो।
लालचन्द कर्ण से दानी को भूल गए ॥ हम वेद की वाणी······

सम्प्रेषक—महात्मा सुशीलदेव
श्री मंगल जयकौर आ० ज्ञान आश्रम खेड़की (महेन्द्रगढ़)

आवश्यक सूचना

हैदराबाद सत्याग्रह के उन ५८ सत्याग्रहियों को सूचित किया जाता है, जो सुप्रीमकोर्ट में दूसरे केस में सम्मिलित हैं। इस केस की पहली पेशी २१-१-९१ दूसरी पेशी २५-३-९१ और अब तीसरी पेशी ६-५-९१ की है। ऐसा विश्वास है कि अन्तिम तिथि पर निर्णय हो जाएगा। अगर किसी वजह से निर्णय न हो सका तो अगली तिथि जो लगेगी उसपर तो अवश्य निर्णय हो जायेगा। निर्णय होते ही सब सत्याग्रहियों को पत्र तथा सर्वहितकारी द्वारा सूचित कर दिया जायेगा।

भवदीय
महाशय भरतसिंह
संयोजक, हैदराबाद सत्याग्रह सम्मान पैन्शन समिति
दयानन्दमठ, रोहतक

दहेज की विनाश लीला

(लेखक—कविराज छाजूराम शर्मा शास्त्री)

नहीं अपना दुश्मन यवन नहीं कोई अंग्रेज ।
सब से बढ़कर देश का दुश्मन हुआ दहेज ॥
पापी दहेज ने लाखों ही घर घाले ॥

इस पापी पहेज की बाढ़ों से सारा हिन्दुस्तान ।
नष्ट होता जा रहा है मय तमाम मालो जान ॥
एक क्या कितनों की हुलिया तग होते आ रहे हैं ।
कितने जमींदारों के दिवाले पिटते जा रहे हैं ॥
इसी कुप्रथा से कितनी कन्याएं दुःख भरती हुई ।
और इसी कारण घृणा शादियों से करती हुई ॥
जो शादी विवाहों से अत्यन्त दुखी हो चुकी हैं ।
न जाने सदा के लिये कितनी कन्या सो चुकी हैं ॥
पी विष के प्याले ॥ दहेज ने ···· ॥१॥

ब्याह के बाजार में सब नरनारी बजाकर ढोल ।
पशुओं की तरह से अपने लड़कों का सुनाकर मोल ॥
कोई कहता मेरा लड़का अंग्रेजी पढ़ता है देख ।
दस हजार रुपयों से* कौडी कम न लूंगा एक ॥
दूसरा कहता है इसने मैट्रिक किया है अभी ।
और फस्ट डिवीजन का सर्टीफिकेट लिया अभी ॥
इसलिये हम तुमको सत्य बताते हैं भाई ।
बीस हजार से तो कभी कम न लेंगे एक पाई ॥
इस ऊंचे महल वाले ॥ दहेज ने ·····॥२॥

तीसरा कहता है मेरा बी० ए० पास कर चुका है ।
और अब देख लीजिये एल. एल. बी. में पढ चुका है ॥
शादी करनी हैं तो आप एक लाख लाइयेगा ।
साथ में सामान सारा कान न फड़काइयेगा ॥
क्योंकि आप दुनिया की हवा को नही देखते हैं ।
बीस हजार रुपये तो मैट्रिक वाले ले लेते हैं ॥
चौथे ने कहा जुबां इस शर्त पर देंगे हम ।
लडके को विलायत भेजने का खर्च लेंगे हम ॥
इसी तरह पांचवे ने मोटर साइकल के लिये ।
छठा माग करता एक बढ़िया कार के लिये ॥
'ये' पांसे डाले ॥ दहेज ने ···॥३॥

एक अंग्रेज लेख लिख चुका है अखबार को ।
लड़की के विवाह में एक राजपूत सरदार को ॥
इस पापी दहेज में ही सत्तरह लाख देना पडा ।
दूसरे को इससे भी ज्यादा भार सहना पड़ा ॥
लड़के वाले को तो चाहे भीख मांग कर लायें ।
चाहे दस्तखत से या निशानी अंगूठे पर आये ॥
बिना इसके कन्याओं का ब्याह नहीं होता कभी ।
जिस बुरे रिवाज को संसार भर के जाने सभी ॥
वृद्ध युवा वाले ॥ दहेज ने······॥४॥

जितनी इस प्रथा से हिंसा होती नजर आ रही है ।
और इसी कारण जाने कितनी जाने जा रही हैं ॥
बंगाल बिहार की तो हालत क्या ब्यान करें ।
बिन ब्याही कन्या जहां संख्या में हजारों फिरें ॥
बस इसी कारण आत्महत्या करती हुई जहां ।
ढाई दो हजार लड़की हर साल मरती हैं वहां ॥
बाकी सब विचारियों के पेट पालने के लिये ।
संसार के अन्दर जाने कौन से न काम किये ॥
बिन देखे भाले ॥ दहेज ने ···॥५॥

लड़की वाले से लड़के वाले की जो ठहरे है ठहर ।
कुछ भी कम दिया तो लड़की को न समझे खैर ॥
नयी वधू बन के नये परिवार में आती है वह ।
बड़े-बड़े अत्याचारों से सतायी जाती है वह ॥
रोवे और चिल्लावे तो खामोश कर देते हैं उसे ।
कहीं मारते-मारते बेहोश कर देते हैं उसे ॥
छत से गिरावें कोई पत्थर से सिर फोड देवे ।
कोई किसी नदी अन्दर गहरे जल में छोड देवे ॥
बीमारी की हालत में तो कहा तक बयान कर ।
स्वास्थ्य के बजाय सारे मरने के सामान करे ॥
फिर भी न मरे तो जालिम मुह में वस्त्र ठूस देवे ।
जल्दी से जल्दी जाकर वे जिन्दी को ही फूक देवे ॥
कर ऐसे चाले ॥ दहेज ने ··· ॥६॥

सब से अधिक जो पहले रोमांचकारी काण्ड हुआ ।
स्नेहलता देवी का बंगाल में बलिदान हुआ ॥
सब से पहले प्रकाश में आया हुआ हाल है जो ।
सन् उन्नीस सौ चौदह चार फरवरी की साल है वो ॥
स्नेहलता तेल और आग का सहारा ले कर ।
सामग्री की जगह अपने प्राणों की आहुति देकर ॥
कर गई उजियाले ॥ दहेज ने० ॥७॥

ऐसे ही लडकी वाले ये सब सत्यानाशी की बेल ।
अपने पुत्र की शादी में खुद औरों का निकालें तेल ॥
ऐसे ही तंग आकर मिल जाति की सब लड़कियों में ।
जो जाति बसती है सिन्धु प्रान्त की कुछ बस्तियों में ॥
सब ने एक बार सिन्ध भर में यह ऐलान किया ।
ऐलान करते समय इस तरह से बयान किया ॥
या तो इस दहेज की प्रथा को आप तोड़ दीजे ।
नही तोडते हो तो अब हमारी आशा छोड़ दीजे ॥
या तो "तेजसिंह" हम तमाम जहर खा मरेंगी ।
नही तो अपना घर छोड़ यवनों के घर जा पड़ेगी ॥
करके मुंह काले ॥ दहेज ने०······॥८॥

उन्नति के इच्छुक मानव को ब्रह्मचर्य का तेज चाहिये ।
अगर स्वस्थ रहना चाहे तो रोगी को परहेज चाहिये ॥
देश धर्म के रक्षक मानुष को कांटों की सेज चाहिये ।
"छाजूराम" शादी में लोभी गधे दूल्हे को दहेज चाहिये ॥

—०—

*आज तो बात लाखो पर पहुँच गई है।

पूर्णिमा यज्ञ सम्पन्न

दिनांक ३०-३-९१ को आर्यसमाज उमरा (हिसार) के मन्त्री श्री बलवन्तसिंह आर्य के घर में पूर्णिमा के उपलक्ष्य में सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी द्वारा हवन किया गया। क्रान्तिकारी जी ने पंच महायज्ञ एवं आर्यसमाज की गतिविधियों के बारे में विस्तार से विचार रखे। परिवार ने बड़ी श्रद्धा से यज्ञ में भाग लिया।

—सरदाराम आर्य

आवश्यक सूचना

समस्त आर्यबन्धुओ, आर्य संस्थाओं तथा परिचित मित्रों को सूचना दे रहा हूं कि ३० अप्रैल १९९१ को पंजाब विश्वविद्यालय से मेरे अवकाश ग्रहण कर लेनें के पश्चात् मेरा स्थायी निवास एवं डाक का पता निम्न रहेगा। सभी से निवेदन है कि मई १९९१ के आरम्भ से ही वे निम्न पते पर मुझ से पत्र-व्यवहार करे।

प्रो० भवानीलाल भारतीय, रत्नाकर, ८/३२३, नन्दनवन,
चौपासनी आवासन मण्डल, जोधपुर (राजस्थान)

आर्य लेखक कौन तैयार—मई में भेजा जायेगा

सब सम्बन्धित सज्जनों को सूचित किया जाता है कि आर्य लेखक का मुद्रण कार्य समाप्त हो चुका है। यह अग्रिम ग्राहकों को रजिस्टर्ड डाक द्वारा मई मास में भेजा जायेगा।

भवानीलाल भारतीय

आध्यात्मिक विकास और साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए धार्मिक शिक्षा अनिवार्य हो—इन्डोनेशियाई नेता का अभिकथन

हरिबाबू कंसल केन्द्रीय संयुक्त मंत्री (विदेश समन्वयन)

इन्डोनेशियाई नेता, बाली के ससद सदस्य और हिन्दू धर्म परिषद् के अध्यक्ष डा० आई० बी० ओ का पुण्य आत्मजा ने आज जारी अपने वक्तव्य में शैक्षिक पाठ्यक्रम में धार्मिक शिक्षा के महत्व पर बल दिया है। उनका कहना है कि किसी भी राष्ट्र के आध्यात्मिक विकास और विश्व की जनता में साम्प्रदायिक सद्भाव बढ़ाने के लिए धार्मिक शिक्षा देना जरूरी है। उन्होंने यह अपील भारत के लिए विशेष रूप से की है जहां मौजूदा परिस्थितियों के कारण इस देश के नेतागण चिंतित हैं।

डा० पुण्य आत्मजा ने अपने देश इन्डोनेशिया का उदाहरण देते हुए कहा है कि इन्डोनेशिया के स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों में धार्मिक शिक्षा अनिवार्य है। वहां मुस्लिम, हिन्दू, बौद्ध, ईसाई और अन्य धर्मावलम्बी छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने-अपने धर्म के सिद्धान्तों का अध्ययन कर अपना नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान करें।

डा० पुण्य आत्मजा ने आशंका व्यक्त की है इस प्रकार की शैक्षिक प्रणाली के अभाव में हमारी भावी पीढ़ी भौतिकता-वादी, नास्तिक और अज्ञेय-वादी बन सकती है। इसके अलावा, उनका कथन है, कि कलियुग की अर्वाचीन सभ्यता के दबाव में आकर वे अनैतिक, लम्पट, अनाचारी, व्यभिचारी और हिंसा-वादी भी बन सकते हैं।

डा० पुण्य आत्मजा ने राष्ट्रवाद, देशप्रेम, स्नेह और बलिदान की भावना को प्रोत्साहन देने के लिए राष्ट्रीयता के अध्ययन पर भी अधिक बल दिया जो धार्मिक भेद-भाव के बिना किया जाए। उनका कहना है कि समन्वित राष्ट्रीय जीवन के लिए धर्म और देश प्रेम को साथ-साथ चलना चाहिए।

मात्र अध्ययन, ज्ञान-प्राप्ति, बौद्धिक विकास और बौद्धिक व्यायाम ही शिक्षा नहीं है। डाक्टर ने कहा कि यह उच्च नैतिक सत्यनिष्ठा, सज्जनता, सच्चरित्र, सदाचार, साथी मानवों के साथ एकात्मकता की भावना आदि गुणों से युक्त व्यक्तित्व के निर्माण के लिए है। इसकी परम उपलब्धि आध्यात्मिक सिद्धि, ईश्वर बोध, शान्ति और परमानन्द की अनुभूति होती है जिसे हिन्दू धर्म में 'मोक्ष' का नाम दिया गया है।

जीवन से तात्पर्य केवल अर्थ और काम का उपभोग करना ही नहीं है यद्यपि इस ऐहिक ससार में इनका महत्व है। सच्चा आनन्द, शान्ति और मन की स्थिरता केवल अर्थ और काम की पूर्ति होने से प्राप्त नहीं होती। डा० पुण्य आत्मजा का अभिमत है कि धर्म के पथ पर चलने से ही इस जीवन में शान्ति, सुख समृद्धि और इसके बाद परमानन्द की प्राप्ति सम्भव है।

उच्च स्तर के सामाजिक जीवन के धर्म-ग्रन्थों में उल्लिखित नैतिक शिक्षा भी समान रूप से अनिवार्य है। समाज को स्वर्ग समान बनाने के लिए अहिंसा, ब्रह्मचर्य, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, मैत्री, करुणा, उपेक्षा, मुदिता आदि सद्गुणों का विधान हमारे धर्म-ग्रन्थों में है। वह राष्ट्र सचमुच धन्य होगा जिसके नागरिकों में ये सद्गुण विद्यमान होंगे। प्रत्येक राष्ट्र को अपनी युवा पीढ़ियों में इन सद्गुणों का विकास करने का प्रयास करते रहना चाहिए।

यदि शिक्षा मनुष्य के जीवित रहने के लिए आवश्यक विज्ञान और अर्थ-शास्त्र विषयों तक अथवा विश्व के गणमान्य महापुरुषों के जीवन चरित्र के अध्ययन तक सीमित रहे तो उतने ही से वह सम्पूर्ण और व्यापक नहीं हो जाती। अपने देश के इतिहास तथा पूर्वजों-ऋषियों के दिव्य सन्देश का अध्ययन राष्ट्र हित और भावी पीढ़ियों के कल्याण के लिए आवश्यक है।

डा० पुण्य आत्मजा इस समय भारत में तीर्थयात्रा पर आये हुए हैं। नेपाल में काठमांडु स्थित पशुपतिनाथ मन्दिर के दर्शन कर लेने के बाद उन्होंने हरिद्वार, ऋषिकेश, कुरुक्षेत्र, मथुरा, वृन्दावन, दक्षिणेश्वर (कलकत्ता) आदि स्थानों का भ्रमण किया है।

ब्रह्मचर्य शक्ति

जीवन सुखी बनाना है ब्रह्मचर्य अपनाओ।
सम्पर्क में जो भी आये रहस्य खोल बताओ॥
सभी साधनों का साधन, ब्रह्मचर्य ही पाया।
जितने भी महापुरुष हुये, सभी ने यह अपनाया॥
शर्त धनुष की रखी जनक ने कोई उठा न पाया।
ब्रह्मचर्य की शक्ति से, श्रीराम ने तोड़ दिखाया॥
हनुमान को शक्ति ने ही, सागर पार उतारा।
लक्ष्मण ने धारण करके, मेघनाथ को मारा॥
अंगद ने लंका में जाकर, अपना पैर जमाया।
जितने भी योधा वहां थे, कोई उठा न पाया॥
रामचन्द्र ने छोड़ा था, वह घोड़ा रोक दिखाया॥
लवकुश की शक्ति के आगे, हर योद्धा घबराया।
'महेश' ब्रह्मचर्य की शक्ति, वर्णन क्या कर सकता॥
धारण करने वाला ही शक्ति का अनुभव करता।

—महेश आर्य, ग्रा० पो०-पन्हैड़ा खुर्द, (बल्लभगढ़)

माता जी की स्मृति में दान

दिनांक १९-४-९१ को चौ० बलबीर सिंह गहलौत सपुत्र चौ० ओमप्रकाश गाव सलीम सर माजरा ने अपनी माता जी के देहावसान पर प० रतनसिंह आर्य उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से शान्ति यज्ञ करवाया यज्ञ पर काफी स्त्री-पुरुष उपस्थित थे जो कि आर्य जी के ज्ञान भरे उपदेश से बड़े प्रभावित हुए और चौ० बलबीर सिंह गहलौत ने सभा के लिए १०५ रु० दान दिया। चौ. रतनसिंह ने भी इसी भान्ति गहलोट ने अपनी माता जी की पुण्य तिथि पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भी १०५ रु० दान दिया।

(पृष्ठ २ का शेष)

गुरुकुल महाविद्यालय बैद्यनाथ धाम में आचार्य एवं अध्यापक के रूप में सात वर्ष तक कार्य करता रहा। इस बीच पंडित जी से मेरा सम्पर्क बना रहा। वेद में प्राकृतिक चिकित्सा और मानसिक चिकित्सा पर अनेक बार पत्र-व्यवहार हुआ। वे अपने स्वभाववश और सरलता से सदा लम्बे-लम्बे पत्र भेजते रहे। बीच में चालीस वर्ष तक उनसे संपर्क कम होगया और अब तो वे वहां चले गए जहां से न उनका वृद्ध शरीर, दुर्बल शरीर, पर अत्यन्त ऊंचे ज्ञान के सूर्य की तरह जगमगाता प्रकाश अब भी मिलता रहेगा।

आइए हम वेद की ओर लौटने की प्रेरणा लें। यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

१- दी वेदाज (अंग्रेजी भाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी १-००
२- दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज—पं० पशुपति एम०ए० १-५०
३- जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)— ,, ३-००
४- निहारिकावाद और उपनिषद् ,, ०-५०
५- आर्यसमाज की विचारधारा—पं० क्षितीशकुमार वेदालकार १-००
६- निजाम की जेल में ,, २०-००
७- स्मारिका(हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह) १०-००
८- आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह स्मारिका २०-००
९- आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण-पं० ओमप्रकाश त्यागी ०-५०
१०- बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य शहीदों का परिचय) ४-५०
११- ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह १-००
१२- हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह ५-००
१३- धर्म-प्रवेशिका—डा० रणजीतसिंह ३-००
१- धर्म-भूषण ,, ५-००
१५- पंजाब का आर्यसमाज—प्रि० रामचन्द्र जावेद २-००
१६- आदर्श धातु रूपावली—महावीर आजाद शास्त्री २-००
१७- वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचार्य ३-००
१८- मूर्तिपूजा—सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती ००-५०
१९- वेदस्वरूप निर्णय ,, ००-७५
२०- वेदाविर्भाव ,, १-००
२१- वेदभाष्य पद्धति ,, १-००
२२- वैदिक विवाह पद्धति ,, ६-००
२३- गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती ०-२०
२४- सत्यार्थप्रकाश ,, १०-००
२५- महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,, ०-५०
२६- हमारा फाजिल्का—योगेन्द्रपाल १-००
२७- बड़ स्वामी ओमानन्द सरस्वती १-५०
२८- वीर हेमू ,, ०-७५
२९- पीपल ,, १-५०
३०- मिर्च स्वामी ओमानन्द सरस्वती १-५०
३१- श्लीपद वा हाथीपांव की चिकित्सा ,, ०-२०
३२- बिच्छू विष चिकित्सा ,, ०-५०
३३- लवण ,, १-२५
३४- विदेशों में मैंने क्या देखा ,, २-५०
३५- नैरोबी यात्रा ,, १-५०
३६- ब्रह्मचर्य साधन १-११ ,, १०-००
३७- ,, १-२ ,, १-००
३८- ,, ३ ,, १-००
३९- ,, ४ ,, २-५०
४०- ,, ५ ,, २-००
४१- ,, ६ ,, ३-००
४२- ,, ७-८ ,, २-००
४३- ,, ९ ,, ०-३०
४४- ,, १० ,, १-५०
४५- ,, ११ ,, २-००
४६- हल्दी ,, १-५०
४७- नीम ,, १-२५
४८- कर्तव्य दर्पण—म० नारायण स्वामी ४-००
४९- विद्यार्थी जीवन रहस्य ,, २-५०
५०- योग रहस्य ,, ४-००
५१- आर्यसमाज क्या है ? ,, २-००
५२- कथा माला ,, १-२०
५३- संस्कारविधि ८-००
५४- वैदिकधर्म परिचय—पं० जगदेवसिंह सिद्धांती ३-५०
५५- वैदिक यज्ञ पद्धति—सार्वदेशिक सभा प्रकाशन ००-६०
५६- मृत्यु के पश्चात् जीव की गति—श्री जगदेवसिंह सिद्धांती १-५०
५७- नैतिक शिक्षा दसवा भाग—सत्यभूषण वेदालंकार एम.ए. ५-००
५८- पं० जगदेवसिंह सिद्धांती जीवन चरित—डा. सुदर्शनदेव १०-००
५९-हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान-डा.रणजीतसिंह ३०-००

प्राप्ति-स्थान : आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, सिद्धान्ती भवन, रोहतक

अपना धर्म निभाएं

सत्य-धर्म के दिव्य पथों पर,
मानव फिर से कदम बढाए।
प्रेम-दया का, सहानुभूति का,
समरसता का पथ अपनाए।
विश्वासों का दीप जले फिर,
मृदु सम्बन्ध पुन गहराए।
'सत्यमेवजयते' का गाना,
फिर समवेत स्वरों में गाए।
मिटे तिमिर सब अज्ञानों का,
ज्ञान प्रदीप प्रदीप्त कराए।

'धर्म' नाम पर आओ हम सब,
आपस का यह लड़ना छोड़।
अव्यवस्था का आओ हम,
निर्भय होकर गला मरोड़ें।
जाति-पाति का, छूआ-छूत का,
सारा बन्धन आओ तोड़ें।
टूटे हुए हृदय फिर से हम,
प्रेम तथा सहयोग से जोड़ें।
सर्वनाश से इस धरती को,
आओ ! आज बचाएं।

आज धरा पर वृत्ति आसुरी,
अपना कदम बढाती।
अपने खूनी पंजों से है,
मानवता दहलाती।
होता है अन्याय—अनय का,
भारत भू पर ताण्डव।
संकटग्रस्त हुआ भारत का,
सत्यव्रती है पाण्डव।
आओ ! आज जवानो आओ—
अपना धर्म निभाएं॥

(राधेश्याम आर्य, विद्यावाचस्पति)

वानप्रस्थी तथा संन्यासी महानुभावों से प्रार्थना

आर्यसमाज के वानप्रस्थी तथा संन्यासी महानुभावों से प्रार्थना है कि आर्यसमाज के प्रमुख वेदप्रचार कार्य हेतु सभा को सहयोग तथा समय प्रदान करने के लिए अपने नाम तथा डाक के पूरे पते लिखकर सूचित करें। हरयाणा के प्रत्येक जिले में वेदप्रचार तथा उसके प्रसार के लिए वेदप्रचार मण्डल की स्थापना की गई है। वेदप्रचार कार्य में वानप्रस्थी अथवा संन्यासी समय दे सकें तो प्रत्येक ग्राम तथा नगर में वेदप्रचार द्वारा आर्यसमाज की स्थापना हो सकती है। अतः इस पवित्र कार्य में सभा को सहयोग देने की कृपा करें।

निवेदक—सभा मन्त्री

आर्यत्व का आह्वान

महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने जब से मूर्ति पूजा के स्थान पर एकेश्वरवाद और निराकारोपासना का वेद मन्त्रों द्वारा निरूपण और साकारवाद का खण्डन किया तभी तो पौराणिक जन आर्यसमाज के आर्य शब्द का प्रछन्न विरोध करने के हेतु हिन्दू शब्द को आश्रय दे रहे हैं।

पौराणिक विद्वान् भलीभान्ति जानते हैं कि सृष्टि के आरम्भ से आज तक सारे आर्य साहित्य में हमारे महापुरुष आर्य कहलाते और आर्यत्व पर गर्व करते आये हैं किन्तु वर्तमान में पौराणिक विद्वानों के जन्मना वर्ण व्यवस्था सिद्धान्त से ही विदेशी हिन्दू शब्द को आश्रय दिया जा रहा है।

स्वर्गीय पं० गोपाल शास्त्री जी ने बड़े साहस के साथ आर्यशब्द का बलपूर्वक समर्थन किया। वह काशी विद्वत्परिषद् के प्रधान भी थे तो एक बहुत बड़े शास्त्रार्थ में मैंने उनका प्रमाण उपस्थित करके विधर्मियों द्वारा आर्य जाति में फूट डालने के कुचक्र का साम्मुख्य किया था। यह प्रयाग (इलाहाबाद) के पूज्य देहलवी जी के प्रधानत्व में पादरी अब्दुल्लक के साथ बड़े भारी शास्त्रार्थों का वर्णन है।

मैं पूज्य स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक का धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने आर्य जाति के चेताने के लिये प्रभावोत्पादक में आर्यत्व को निरूपित किया है।

प्रयाग शास्त्रार्थ में तो मैंने काशी विद्वत्परिषद् का निर्णय निरूपित कर दिया था कि—

हिन्दू शब्दो ही यवनेष्वर्मि जन बोधकः।
अतो नार्हति तच्छब्दों बोध्यतां सकलो जन.॥

परमात्मा की कृपा हो आर्य समझे, उठे, सोचे, समझे और सत्य के आवाहन के साथ उसका स्वयं स्वीकरण भी करे।

महर्षि दयानन्द जगा गये। जाग कर स्वयं सो कर अपने विनाश का आवाहन करना कदापि शोभनीय नहीं, किन्तु शोचनीय है।

भगवान् बल दे कि हम आर्यत्व का आवाहन करने को समुद्यत हों।

—शान्ति प्रकाश

शराब के ठेके से जनता में रोष

बल्लबगढ, २२ अप्रैल (निस)। फरीदाबाद के एक अस्पताल के निकट खुले शराब के ठेके को लेकर यहाँ जनता में काफी रोष फैला हुआ है। जबकि ऐसा कानून बनाया गया है कि किसी भी धार्मिक संस्था, स्कूल, कालेज या अस्पताल के निकट कोई भी शराब या अन्य नशीली वस्तु की दुकान नही खोली जा सकती।

यह ठेका बिल्कुल अस्पताल की दीवार के साथ एक टेन्ट लगाकर खोला गया है। जनता ने प्रशासन से माँग की है कि इस ठेके को तुरन्त हटाया जाए। (जन संदेश से)

कहीं और ले जाओ, इस शराबखाने को।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०/७३ / पंजि नं० B R\

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रधान सम्पादक सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक - प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८   अंक २३   ३ मई, १९९१   वार्षिक शुल्क ३०)   (आजीवन शुल्क ३०१)   विदेश में ८ पौंड   एक प्रति ७५ पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का महत्त्वपूर्ण निश्चय

शराबी, मांसाहारी तथा भ्रष्टाचारी प्रत्याशियों का चुनाव में समर्थन न किया जावे

रोहतक २८ अप्रैल—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक सिद्धान्ती भवन में सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में हरयाणा के कोने-कोने से आये सभा के अन्तरंग सदस्यों ने भाग लिया। इस अवसर पर निम्नलिखित निश्चय सर्वसम्मति से किये गये—

दिवंगत आर्य नेताओं को श्रद्धाञ्जलि

सर्वखाप पंचायत के महामन्त्री श्री कबूलसिंह आर्य (सोरम उ०प्र०) आर्यसमाज जींद शहर के पूर्व प्रधान श्री छबीलदास आर्य तथा आर्य समाज रेवाड़ी के मन्त्री वानप्रस्थी श्री लीलाधर आर्य के निधन पर सभा की ओर से दो मिनट का मौन रखकर खड़े होकर श्रद्धांजलि दी गई। उन द्वारा आर्यसमाज की की गई सेवाओं की सराहना भी की गई।

चुनाव में शराबी, मांसाहारी तथा भ्रष्टाचारी प्रत्याशियों का समर्थन न किया जावे

मई मास में लोक सभा तथा विधान सभाओं के चुनाव हो रहे हैं, इस सम्बन्ध में अन्तरंग सभा ने आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से अनुरोध किया है कि वे चुनावों में किसी ऐसे प्रत्याशी का समर्थन न करें जो स्वयं शराब पीता हो अथवा अपने समर्थकों को शराब पिलाता हो या मांसाहारी तथा भ्रष्टाचारी हो। इस प्रकार के प्रत्याशियों के सफल होने पर शराब की बुराई तथा भ्रष्टाचार का विस्तार होगा। अतः ऐसे प्रत्याशियों का तन मन धन से समर्थन किया जावे, जो शराब पीने तथा पिलाने तथा भ्रष्टाचार का व्यवहार न करने वाला हो और जिसकी सामाजिक सेवाओं में रुचि हो। यदि वह किसी कारणवश आर्यसमाज का सदस्य न हो तो उसे आर्यसमाज के नियम तथा साहित्य आदि भेंट करके सदस्य बनाया जावे। इस प्रकार जिस भी दल से ऐसे प्रत्याशी सफल होकर लोकसभा अथवा विधान सभा में पहुंचेंगे, वे आर्यसमाज के कार्य में सहायक रहेंगे।

स्वामी श्रद्धानन्द वैदिक पुस्तकालय भवन का निर्माण

सभा ने अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी की स्मृति में एक पुस्तकालय भवन का निर्माण शीघ्र ही पूरा करने का निश्चय किया है। इसका नकशा बन चुका है। आर्य प्रतिनिधि सभा की शताब्दी समारोह के अवसर पर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज द्वारा इसकी नींव रखवा दी थी और अनेक दानी महानुभावों ने इस भवन के निर्माण हेतु दान देने का संकल्प किया था। अतः उन सभी महानुभावों से सभा ने निवेदन किया है कि वे अपने वचन के अनुसार अपना योगदान सभा को नकद, धनादेश तथा बैंक ड्राफ्ट द्वारा शीघ्र भेजने की कृपा करें। सभा को दिये गये दान पर आयकर में छूट मिली हुई है।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र तथा इन्द्रप्रस्थ को आदर्श शिक्षण संस्था बनाने की योजना

सभा द्वारा संचालित गुरुकुल कुरुक्षेत्र तथा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को एक आदर्श शिक्षण संस्था बनाने की योजना बनाई गई है। इस कार्य हेतु सभा ने नवीन प्रबन्ध समितियों का गठन किया गया है। दोनों गुरुकुलों में प्रवेश आरम्भ हो चुका है।

जिला वेदप्रचार मण्डलों को प्रभावशाली बनाया जावेगा

हरयाणा में प्रत्येक जिले में वेदप्रचार मण्डलों का गठन पूरा करके वहां एक-एक उपदेशक तथा एक-एक भजन मण्डली नियुक्त की जा रही है। आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य सुदर्शनदेव जी वेद प्रचाराधिष्ठाता इन मण्डलों को प्रभावशाली बनाने का यत्न कर रहे हैं।

—केदारसिंह आर्य

मतदाताओं से अपील

प्रिय जनो ! आपको मालूम है कि मई में संसद के मध्यावधि चुनाव होने जा रहे हैं। सभी पार्टियां अर्थात् राजनीतिक दल सत्ता में आने के लिए हर प्रकार के फार्मूले अपना रहे हैं। सत्ता में आने के बाद फिर वही ढाक के तीन पात नजर आते हैं। घोषणा पत्र में किये वायदों को भूल जाते हैं। देश की हालत में कोई सुधार होता दिखाई नहीं देता।

सुधार आये कैसे ? सत्ता में आते ही पहले उन्हें उस धन को बटोरने की चिन्ता होती है जो चुनाव में दिल खोल कर खर्च किया था। फिर अपने और रिश्तेदारों की स्वार्थ सिद्धि में लग जाते हैं। देश में विनाश की अग्नि धधक रही है उसकी कोई चिन्ता नहीं है। गरीब महंगाई की चक्की में पिस रहा है। बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। भ्रष्टाचार और बेईमानी की कोई सीमा नहीं है। कुल मिलाकर चरित्र का जनाजा निकल रहा है।

जिस देश में चरित्र समाप्त हो जाता है वह देश पतन की ओर चला जाता है अर्थात् वहां शान्ति अमन नहीं रहेगा। चरित्रहीन व्यक्ति शासन में आकर भ्रष्टाचार की अग्नि को तीव्र कर देते हैं। आज मेरे देश की आबरू खतरे में है। मतदाताओं से अपील है इसे बचाना चाहो, बचालो। वोट देते समय चरित्रवान् व्यक्ति को अपना प्रतिनिधि (नेता) चुनो। चरित्रवान् व्यक्ति ही देश का हितैषी और शुभचिन्तक हो सकता है। चरित्रवान् व्यक्तियों द्वारा गई सरकार ही देश का कल्याण कर सकती है। चरित्रवान् कौन है ? यह उसका दैनिक जीवन स्पष्ट बता रहा है उसकी आदतें खानपान उसके चरित्र का परिचय दे रहे हैं।

—देवराज आर्य
प्रचार मन्त्री, आर्यसमाज बल्लभगढ़

नेताओं की फुलझड़ियों पर मुस्कराइये

१- चुनाव का एक उम्मीदवार अपने मित्र से कह रहा था—अब निराश हो चुका हूं। मुझे विश्वास होने लगा है कि लोग मुझे वोट नहीं देंगे और इसका कारण मेरी जवानी है।

मित्र ने जरा झिझकते हुए कहा—आपकी आयु तो पचास के लगभग होगी, जवानी तो बीत चुकी है।

यही तो मुसीबत है, उम्मीदवार सज्जन बोले—लोगों को मालूम हो गया है कि मेरी जवानी किस प्रकार बीती थी।

२- एक नेता जी भाषण देने के लिए मंच पर चढे और चारों ओर नजर दौड़ाकर कहने लगे, "भाइयो और बहनो, आजकल किसी पर विश्वास नहीं किया जा सकता, सब बेईमानी करते हैं। अब देखिये न, मैंने दस ट्रक आदमी (जनता) एकत्र करने के लिए पैसे दिए थे, जबकि यहां मुश्किल से तीन-चार ट्रक आदमी ही एकत्र हैं।

३- एक नेता जी चुनावी दौरे में विदेश यात्रा पर थे। विदेश में एक अधिकारी ने उसका पासपोर्ट देखकर कहा—पासपोर्ट का चित्र बताता है कि आपका सिर गंजा है पर आपके सिर पर तो बाल हैं। इसलिए आपका पासपोर्ट नकली है।

नेता जी—क्षमा करना, पासपोर्ट नहीं, मेरे बाल नकली हैं।

४- चुनाव में जीते हुए नेता जी को एक हारे हुए नेता जी बधाई देते हुए बोले, 'भई चुनाव भी क्या अभूतपूर्व है—कभी हम भूतपूर्व—कभी तुम भूतपूर्व'।

५- सभासद चुनाव के दौरान प्रत्याशी शिवचन्द्र साहू जी तथा उनके सहयोगी मुहल्ले-मुहल्ले प्रचार कर रहे थे। एक कार्यकर्ता ने हमारी लाटूश रोड निवासिनी चाची जी से वार्ड नं० ६ से शिवचन्द्र साहू जी को वोट देने को वचन ले लिया।

मतदान के समय चाची जी अपना वोट पेटी में न डालकर उसे अपने साथ लाने लगी तो वहां तैनात अधिकारियों ने उसे मतपत्र साथ ले जाने से रोका और उस पत्र को पेटी में डालने के लिये कहा। इस पर चाची ने कहा, "मैं तुम्हारे बहकावे में नहीं आऊंगी, अपना वोट तो शिवचन्द्र जी को ही दूंगी।"

६- एक वोटर का कथन, लड़ना महिलाओं की जागरूकता का प्रतीक है। जो महिलायें जागरूक होती हैं, वे अपने पतियों से लड़ती हैं, जो ज्यादा जागरूक होती हैं, वे अपने पड़ोसियों से लड़ती है, और जो बहुत ज्यादा जागरूक होती हैं, वे चुनाव लड़ती हैं।

७- एक नेता जी ने बड़े चाव से अपना फोटो खिंचवाया, जब फोटो तैयार होकर उनके सामने आया तो वे फोटोग्राफर पर बिगड़ पड़े। बोले—क्या वाहियात तस्वीर खींची है मालूम है इसमें मैं अपनी उम्र से दस साल बड़ा लगता हूं।

तो क्या बात हुई जनाब, फोटोग्राफर बोला, इसमें तो आपका ही फायदा है।

वो कैसे ? नेता जी झल्लाकर बोले।

आपको दस साल बाद फिर फोटो नहीं खिंचवाना पड़ेगा।

फोटोग्राफर ने मुस्कराकर जवाब दिया।

८- राजनीतिक बहस के दौरान दो नेताओं के मध्य हो गयी। पहले ने क्रोधित होकर कहा, "मैं जानता हूं कि तुम किसके इशारों पर नाचते हो ?"

"ठीक है, लेकिन राजनीतिक बहस में तुम मेरी पत्नी को क्यों घसीट रहे हो" दूसरे ने कहा।

९- सभासद के पिछले चुनावों में सआदतगंज वार्ड क्षेत्र से श्री राधेश्याम साहू (एडवोकेट) भा.ज.पा. के उम्मीदवार थे। अनेक समर्थकों ने दीवारों की पुताई करके नारे लिखे। एक दीवार पर इस प्रकार से लिखा नजर आया—

"सआदतगंज वार्ड क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार राधेश्याम साहू, एडवोकेट को वोट देकर सफल बनायें। और (एक हजार रुपये) १,०००/- रुपये का इनाम पायें"।

असल में हुआ यह कि इस दीवार पर स्वास्थ्य विभाग का यह विज्ञापन लिखा था "चेचक की सूचना किसी बड़े अस्पताल में द और (एक हजार रुपये) १०००/- इनाम पायें" पुताई के दौरान विज्ञापन के नीचे वाली पंक्ति छूट गयी जिससे नारे का नया रूप सामने आया।

१०- भाषण शुरू करने से पहले नेता जी ने कहा "भाइयो और बहनो ! मेरे भाषण में कोई गलती हो तो कृपया मेरे सेक्रेटरी को क्षमा करें।

—महेश साहू 'दद्दू', लखनऊ

वेद संगोष्ठी प्रयाग

पिछले वर्षों में हमारी वेद संगोष्ठियां सुविधानुसार दिल्ली, बम्बई, चण्डीगढ़, अजमेर एवं काशी आदि नगरों में होती रही हैं। उसी शृंखला में १९९१ में यह गोष्ठी प्रयाग इलाहाबाद में विज्ञान परिषद प्रयाग विश्वविद्यालय, गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ एवं चन्द्रशेखर आजाद पार्क में स्थित म्यूजियम, विभिन्न आर्यसमाज और आर्य संस्थाओं के सौजन्य से शुक्रवार १० मई एवं शनिवार ११ मई १९९१ को होगी।

गोष्ठी के आयोजन का भार हमारे आग्रह पर प्रयाग विश्व-विद्यालय की सेवानिवृत, प्रो० प्रीति अदावाल ने स्वीकार किया है। उनका पता पत्र व्यवहार के लिए निम्नलिखित है—३ बैंक रोड, इलाहाबाद-२११००२

इस वेद संगोष्ठी के संचालन के लिए एक कार्यकारिणी समिति का गठन किया गया है।

गोष्ठी का विषय है : वेद प्रतिपादित युद्ध और शान्ति

दिल्ली, हरिद्वार और उत्तर प्रदेश तथा बिहार के वैदिक विद्वानों को इस गोष्ठी में भाग लेने के लिए हमारा विशेष निमन्त्रण है। यदि वे किसी संस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं और उनकी संस्था उनका मार्ग व्यय वहन नहीं कर रही है तो हम लोग साधारणतः द्वितीय श्रेणी का मार्ग-व्यय इस संगोष्ठी में भाग लेने के लिए और समय से सूचना मिलने पर उनके आवास और भोजन का प्रबन्ध भी करेंगे और हम चाहेंगे कि हमारे अतिथियों को प्रयाग में किसी प्रकार की असुविधा न हो। गोष्ठी के अन्तर्गत अंग्रेजी और संस्कृत व हिन्दी इन तीन भाषाओं का प्रयोग हो सकता है। हम चाहेंगे कि हमारे इन भाषणों का स्तर दयानन्द वेद पीठ की प्रतिष्ठा के अनुरूप हो ये भाषण कालान्तर में संग्रह के रूप में वेद पीठ प्रकाशित भी करेगा और हो सकता है कि इनमें से कोई भाषण जनरल ऑव द इण्टरनेशनल दयानन्द वेद पीठ की पत्रिका में प्रकाशित हो। अच्छा हो कि भाषण की एक प्रति गोष्ठी संयोजिका के पते पर गोष्ठी के एक सप्ताहपूर्व तक भेज दी जाए।

—स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

शराब न पीने का संकल्प लिया

जयपुर, २४ अप्रेल (कास)। मालवीय नगर की कुछ हरिजन महिलाओं ने दो दर्जन हरिजनों से संकल्प कराया है कि वे भविष्य में शराब नहीं पीएंगे। इन हरिजनों ने यह संकल्प अणुव्रत आन्दोलन के प्रणेता आचार्य तुलसी के शिष्य मुनि लोकप्रकाश लोकेश और सुव्रत मुनि के समक्ष लिया। जिस समय इन हरिजनों से शराब न पीने का संकल्प लिया, उस समय भारी संख्या में उपस्थित महिलाओं ने करतल ध्वनि कर खुशी जाहिर की।

मुनि लोकप्रकाश लोकेश और मुनि सुव्रत ने मालवीय नगर की केलगिरी अस्पताल के आस-पास की हरिजन स्त्रियों के बीच २४ घण्टे बिताए और हरिजनों से ही भिक्षा ली। (नवभारत टाइम्स से)

आवश्यकता

वैदिक वीरांगना नारी

डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार, आर्यसमाज गोरखपुर

वेद में बहुत सी नारीवाचक देवियों का उल्लेख किया गया है। धन की देवी लक्ष्मी, शक्ति की दुर्गा और विद्या की सरस्वती है। इनके अतिरिक्त वेदों में अदिति, उषा, इन्द्राणी, इला, भारती, होत्रा, सिनीवाली, श्रद्धा, पृश्नी आदि देवियां अनेक वस्तुओं की अधिष्ठात्री हैं। उनको दिव्य गुणों की माता या कहीं कहीं पुत्री एवं कन्या के रूप में माना गया है। ऋग्वेद आप देखिये तो आपको पता चलेगा कि अदिति का ८० बार से भी अधिक बार वर्णन है। एक विद्वान् राम गोविन्द त्रिवेदी ने अदिति शब्द की चर्चा करते हुए लिखा है "जिस तरह मिश्र वाले 'मात' (Maat) को पूजते थे और जिस प्रकार यूनानी थेमिस (Themis) को पूजते थे और देवमाता मानते थे, वैसे ही आर्य लोग अदिति को मानते थे। वे अदिति को मित्र, वरुण, रुद्र, इन्द्र आदि की माता मानते थे। अदिति को सर्वशक्तिमती मानकर कहीं उन्हें आठ वसुओं की पुत्री और कहीं आदित्यों की भगिनी भी कहा गया है।" उन्होंने अदिति के विषय में लिखा है "अदिति शब्द से आदित्य बना है।

ऋग्वेद देखने से आपको पता चलेगा कि उसके मण्डल १० सूक्त १०० मन्त्र १ में अदिति को सर्वतातिम् (सर्वग्राहिणी) कहा गया है। अदिति शब्द का अर्थ है बन्धनमुक्त स्वाधीन। अदिति को विश्वजन्या (७-१०-४) अर्थात् सर्वहितषिणी कहा गया है। १-८९-१० में कहा गया है अदिति का अर्थ आकाश, अन्तरिक्ष, माता, पिता, पुत्र और समस्त देव है। १०-३६-३ मन्त्र में कहा गया है धनी मित्र और वरुण की माता अदिति हमें पापों से बचावें। एक दूसरे मन्त्र ७-८२-१० में यज्ञवर्धिका अदिति का तेज हमारे लिए सुखकर हो। उषा भी देवी है। इसका अर्थ प्रभातकालीन वेला है। ऋग्वेद में ३०० से अधिक बार उषा शब्द आया है। सूक्त के सूक्त उषा की स्तुति से भरे पड़े हैं। सूर्य की पुत्री सूर्या है। इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी है। वाक् को भी देवी माना गया है। ऋग्वेद के १० मण्डल १२५ सूक्त वाग्देवी का है। परन्तु हमारे मत से यह सब नित्य देवियां हैं। नित्यदेवी का मतलब है ऐतिहासिक नहीं है। इन सबका दैवी जगत् से सम्बन्ध है। मानव जगत् पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि आर्य लोग नारियों का बड़ा सम्मान करते थे। वे नारी को ही घर मानते। 'गृहिणी गृहमुच्यते' ३-५३-४ मानती थे। नारी के बिना वे घर का अस्तित्व ही नहीं मानते थे।

वेदों के अनुसार स्त्रियां शिक्षित होती थी, यज्ञ करती थी, वैदिक उपदेश देती थीं। वे मन्त्रद्रष्टा भी होती थीं। यम स्मृति में आया है—

पुराकल्पे कुमारीणां मौञ्जीबन्धनमिष्यते।
अध्यापनं च वेदानां सावित्रीवचनं तथा।
पिता पितृव्यो भ्राता वा नैनामध्यापयेत्परः॥

अर्थात् पुराने समय में कन्याओं का उपनयन होता था, वे वेद पढ़ती थी, गायत्री भी पढ़ती थी परन्तु उन्हें पिता, माता, चाचा, भाई के समान ही लोग विद्या पढाते थे। यह तो वेदों की नारियों के प्रति भावना का दिग्दर्शन कराया है। वेदों के मन्त्रों का देना सम्भव नहीं। परन्तु यहां वेदों में नारी को वीरांगना वीर कुल की जन्मदात्री बताया गया है।

भारत के इतिहास का वह एक दुर्दिन था जब उसे सबला के स्थान पर अबला माना गया। यह स्थिति यहां तक पहुंच गई कि कोष तक में नारी के पर्यायवाची शब्दों में 'अबला' शब्द का प्रयोग किया जाने लगा। परन्तु वेद नारी को अबला नहीं सबला बताता है और इसलिए विवाह समय वधू की माता या भाई दाहिने हाथ से वधू का दायां पैर एक शिला पर रखता है और कहता है:—

आरोहेमम् अश्मानमश्मेव त्वं स्थिरा भव।
अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः॥

—पारस्कर गृह सूत्र १-७-१

हे देवी! इस पत्थर पर अपने कमल जैसे कोमल चरणों को रख। जैसे यह शिला खण्ड स्थिर और सुदृढ है वैसे ही तू भी शात, स्थिर, सुदृढ़ तथा मजबूत बन। जो लोग हमें दबाना चाहे या आक्रमण करने वाले हों उन्हें तू इस पत्थर की भांति दबाकर रख और जो सेना और भारी झुड द्वारा आक्रमण करना चाहें उनकी कोशिशों को तू पत्थर बनकर कुचल डाल। उनको तू चकनाचूर करदे।

अथर्ववेद के १४-१-४७ मन्त्र में कहा गया है:—

स्योनं ध्रुवं प्रजायै धारयामि ते अश्मान देव्याः पृथिव्या उपस्थे।
तमातिष्ठानुमाद्या सुवर्चा दीर्घं त आयुः सविता कृणोतु॥

अर्थात् हे नारि! तू राष्ट्रभूमि की प्रजा है तेरे लिए इस दिव्य राष्ट्रभूमि के पृष्ठ पर मैं अचल सुखदायक शिलाखण्ड को रखता हूं। इस शिलाखण्ड पर तू खड़ी हो यह तुझे दृढता का पाठ पढाएगा। मन्त्र कहता है कि तू इस शिलाखण्ड के समान ही वर्चस्विनी, तेजस्विनी और बहादुर बन। सविता परमेश्वर और तेरे अन्दर तेज का आधान करके तेरी आयु को सुदीर्घ करे।

अथर्ववेद के १४/१/४३-४४ मन्त्र में कहा है

एवा त्वं साम्राज्ञ्येधि पत्युरस्तं परेत्य।
सम्राज्ञ्येधिश्वशुरेषु सम्राज्युत देवृषु।
ननान्दुः सम्राज्ञ्येधि सम्राज्युतश्वश्र्वाः॥

हे वधू! तुम अब पति के घर जाकर वहां (अबला नहीं) महारानी बनकर विराजो। पति के घर सास, ससुर, देवर, ननद आदि पर तुम महारानी जैसी बनकर रहो। क्या यह अबला के लिए संभव है? वेद अत्याचार का मुकाबला करने और अत्याचारी का सिर तोड़ डालने की आज्ञा देता है हिम्मत बधाता है। वेद की नारियां भी ऐसे ही वीर भावों से ओतप्रोत है। एक नारी की विचारधारा सुनिए:—

अवीरामिव मामयं शरारुरभिमन्यते।
उताहमस्मि वीरिणीन्द्रपत्नी मरुत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥

ऋ० १०-८६-८

वह स्पष्ट रूप में कहती है अरे, यह घातक मुझे अबला मानकर मेरी बेइज्जती करना चाहता है पर मैं अबला नहीं वीरांगना हूं। मौत की परवाह न करनेवाले वीर मेरे हैं। मेरा पति ससार में अपनी तुल्यता नहीं रखता। वह अपने सबल रूप को प्रदर्शित करते हुए कहती है:—

मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो मे दुहिता विराट्।
उताहमस्मि संजया, पत्यौ मे श्लोक उत्तमः। ऋ० १०-१५९-३

सबला नारी जोरदार शब्दों में कहती है मेरे पुत्र भी कम बहादुर नहीं, वे शत्रु के छक्के छुडा देनेवाले हैं, मेरी पुत्री भी अबला नहीं वह अद्वितीय तेजस्विनी है। मेरा पति विश्वविख्यात वीर है और मेरा परिचय सुनो, कोई मेरी तरफ कुदृष्टि से ताक नही सकता, मैं उसकी आख निकाल लूंगी, वह ऐसा परास्त होकर लौटेगा कि सदा याद रखेगा।

यह है वैदिक नारी। (क्रमशः)

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर यज्ञोपवीत संस्कार

सनौरी मण्डी जिला संगरूर (पजाब) के प्रतिष्ठित आर्यसमाजी श्री मामेराम जी, श्री प्रीतिलाल जी और श्री केवलकृष्ण जी के आर्य परिवार ने २१ मार्च आर्यसमाज स्थापना दिवस पर सम्मिलित बृहद् यज्ञ पं० धर्मदेव मनीषी वेदतीर्थ से कराया। इस शुभावसर पर श्री केवल कृष्ण जी ने अपने सुपुत्र महावीर का यज्ञोपवीत संस्कार भी कराया। इनका सारा परिवार अत्यन्त श्रद्धालु है। सब आर्यसज्जन इनसे शिक्षा लें।

नामकरण संस्कार सम्पन्न

२५ मार्च को ग्राम ढाणा रामबास (महेन्द्रगढ) में श्री महावीर जी मिस्त्री गोशाला उचाना खुर्द के परिवार में नामकरण संस्कार विधिविधान के अनुसार किया। बालक का नाम पवनकुमार रखा गया। बालक तथा परिवार वालों को श्रद्धेय स्वामी गोरक्षानन्द जी महाराज, स्वामी धर्मानन्द जी, पं० धर्मदेव मनीषी, प० देवदत्त जी शास्त्री आदि विद्वानों ने आशीर्वाद तथा शुभकामनायें व्यक्त की।

कैसा हिन्दुस्तान ?

(धीरज गावा, काठमण्डी, टोहाना)

हे भगवान् कैसा हो गया मेरा हिन्दुस्तान।
जिसमें अब नहीं रही कोई भी शान॥
नही गाते लोग अब यहां हिन्दी का गान।
हिन्दी और सस्कृत से घटता इनका मान॥
समझता नही कोई यहां वेद और पुराण।
पुस्तकों भर में रह गया सद्ग्रन्थों का ज्ञान॥
नही करते बच्चे देखो माता-पिता का सम्मान।
देते नहीं जरा भी शुभ वचनों पर ध्यान॥
विगड़ गया सबका यहां खान और पान।
पानी महंगा 'धीरज' यहां सस्ती यहां जान॥

गीत

ओ३म् का झण्डा लहराओ

लेखक—कवि हरेराम बैंसला रेडियो व टी०वी० सिंगर बड़ोली (फरीदाबाद)

जागो आज आर्यजाति समय नहीं है सोने का,
चला हुआ षड्यन्त्र, हमारा नाम जमी तें खोने का।
एक लुटेरा बाबर था जो इस भारत में आया था,
कितने कुकर्म किए यहां लाखों का खून बहाया था।
पुरुषोत्तम श्री राम का मन्दिर जिसने तोड़ गिराया था,
अपनी मस्जिद बना दई वो जरा नही दहलाया था।
क्या हमको अफसोस नहीं बदनामी सर पे ढोने का।१।
हिन्दू अगर अयोध्या में मन्दिर बनवाना चाहते हैं,
भ्रष्टाचारी नेता इसको देशद्रोह बतलाते हैं।
अगर कारसेवा करने को रामभक्त वहां जाते हैं,
जनता पर गोली बरसा लाखों का खून बहाते हैं।
ये मांग रहे प्रमाण अयोध्या में जन्म राम के होने का।२।
इन गद्दारों से पूछो क्यों इतना कत्लेआम हुआ,
अपनों को मरवाने से क्या जयचन्द का अजाम हुआ।
हिन्दू राष्ट्र खत्म होगा भारत में धर्म इस्लाम हुआ,
औरंगजेब हुमायू बाबर इनका, ये देश गुलाम हुआ।
इन नीचों ने ठेका ले राख्या म्हारा वंश डुबोने का।३।
ये मुल्लाओं की पीठ ठोकते ऋषियों को मरवाते हैं,
लाखों रुपये दान मस्जिद को पर मन्दिर को तुड़वाते हैं।
कश्मीर के मुस्लिम हिन्दुओं पर जुल्म रात-दिन ढाते हैं,
बहनों की इज्जत लुटती ये जरा ना कान हिलाते हैं।
आज तलक हम मजा चाख रहे बीज बदी के बोने का।४।
टी०वी० पर इस्लाम का झण्डा बार-बार फहराते हैं,
ऋषि दयानन्द का नाम नहीं टीपू सुलतान दिखाते हैं।
सस्कृत का श्लोक नही उर्दू की गजल सुनाते हैं,
ध्यान रखो ये पापी हिन्दुस्तान मिटाना चाहते हैं।
हिन्दू राष्ट्र खत्म होज्यागा टेम मिलै ना रोनें का।५।
हुआ बटवारा आजादी पाछै भारत देश महान् का,
हिन्दू का हिस्सा यहां रहा और मुस्लिम पाकिस्तान का।
फेर बताओ काम यहां के रहण्या मुसलमान का,
देख लिए फिर बटवारा कभी होगा हिन्दुस्तान का।
मुह पे कालिख पुते मिले ना मौका मुखडा धोने का।६।
बौद्ध जैन और सिख धर्म हिन्दू शाखा में आते हैं
अपने स्वार्थ के कारण कुछ इन्हें लड़ाना चाहते हैं।
अरबों से पैसा आता फिर दगे यहां कराते हैं,
इनके बहकावे में आ हम अपना ही खून बहाते हैं।
इसीलिए नक्शा बदला मेरे भारत देश सलोने का।७।
गुर्जर जाट अहीर ब्राह्मण राजपूत हरिजन आओ,
सारी जात इकट्ठी होके आपस में गले लग जाओ।
ऋषि दयानन्द को जय बोलो ओ३म् का झण्डा लहराओ,
धर्म की रक्षा करनी है अब हाथों में शस्त्र ठाओ।
नहीं समय 'हरेराम' आज आपस में झगड़े होने का।
चला हुआ षड्यन्त्र हमारा नाम जमीं तें खोने का।८।

सर्वखाप पंचायत सौरम के महामन्त्री, इतिहास के मूर्धन्य विद्वान् चौधरी कबूलसिंह जी चले गए

यह सार्वजनिक दुःखद सूचना देते में हमें बहुत हार्दिक दुःख हो रहा है कि प्राचीन विशाल हरयाणा को सर्वखाप पंचायत के महामंत्री चौधरी कबूलसिंह जी ९१-९२ वर्ष की अवस्था में ४ अप्रैल १९९१ को सायं सात बजे हमें छोड़ गए। आप गत ५-६ वर्ष से बुढाना कस्बे में रहते थे। १९२४ से इस पंचायत के प्रतिष्ठित मन्त्री थे। आपको उक्त हरयाणा का इतिहास कण्ठस्थ स्मरण था। आपने इतिहास के पांच शोधकर्ताओं को पी-एच.डी. की उपाधि दिलाई। सैकड़ों पचायतों में सत्य न्यायपूर्ण फैसले कराये थे। सैकड़ों आर्यसमाजों, गुरुकुलों में देश धर्म उपदेश दिया था। १९५१ ई० में आपको चित्तौड़गढ़ तथा मथुरा के किसान सम्मेलन में ५०० रुपये दुशाले से आपका अभिनन्दन किया १९४२ में आर्यसमाज हर्षोली में अंग्रेजी राज के विरुद्ध भाषण से ६ मास का निर्वासन दण्ड मिला था। आप देश धर्म, महर्षि दयानन्द, वेद के सुदृढ़ ईश्वर उपासक आर्य योगी थे। आपने स्वामी श्रद्धानन्द, दर्शनानन्द के दर्शन किये थे। आजीवन यज्ञोपवीत रखा।

आपके ग्राम सौरम में ६ अप्रैल को वैदिक पद्धति से आपका दाह संस्कार किया गया। कई हजार नर-नारी उपस्थित थे। १८ अप्रैल को उनके घर के सामने हजारों की जनसख्या में अठारह खापों के प्रधानों द्वारा यज्ञ करके आपके बड़े सुपुत्र फेरूसिंह को ६१ सम्मान पगडियां बांधी गई और शोक श्रद्धांजलि सभा में उनकी दिवंगत आत्मा की शान्ति की प्रार्थना की गई। उनके दो सुपुत्र तथा एक पुत्री, ६ पौत्र समर्थ हैं। अन्त्येष्टि में दस धडी घी, एक बोरी सामग्री का हवन किया।

विनीत शोकातुर—
निहालसिंह आर्य अध्यापक, चौ. फेरूसिंह बालियान
ग्राम सौरम, तहसील बुढाना, जिला मुजफ्फर नगर।

श्री रतीराम आर्य का निधन

आर्यसमाज के प्रसिद्ध कर्मठ कार्यकर्ता चौ० रतीराम आर्य ग्राम बालोट (रोहतक) का १६-१-९१ को ८० वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया। उसके उपलक्ष्य में दिनांक २९-१-९१ को उनके परिवार में एक शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें पारिवारिक सदस्यों के अतिरिक्त रिश्तेदारों व सभी जानने वालों ने भाग लिया। दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। शान्ति यज्ञ का उत्तम प्रभाव रहा। चोला छोडने से पहले ही परिवार को इकट्ठा करके यही कहा कि आर्यसमाज की सेवा मेरे से भी ज्यादा होती रहे।

—जयपालसिंह आर्य, सभा भजनोपदेशक

आवश्यक सूचना

स्वामी परमानन्द जी महाराज (छोटा बाजा वाले) को गुरुकुल कालवा के प्रधान श्री बिरखभान जी सिवाहा (जींद) वाले अत्यन्त आवश्यक कार्य से मिलना चाहते हैं। स्वामी परमानन्द जी इस सूचना को पढकर शीघ्रातिशीघ्र प्रधान बिरखभान जी सिवाहा वाले से मिल लें।

वीर्य रक्षा

देश की नाव मझधार पडी, आंखों ने नीर बहाया।
वीर्य नष्ट किया हुए खाली, नहीं समझ में आया॥
स्वप्नदोष मैथुन आदि से शक्ति नहीं बहाओ।
बूंद-बूंद है बहुत अमूल्य, देह में इसे रमाओ॥
वीर धीर गम्भीर हमेशा निर्भय बन जाओगे।
युवा अवस्था में ही बुड्ढे कभी न हो पाओगे॥
पितामह भीष्म की भांति, मृत्युंजय बन जाओ।
लगने वाले काम असम्भव, तुम करके दिखलाओ॥
सभी महापुरुषों ने शक्ति अपनी देह रमाई।
वीर्य स्थिरता का मूल्य समझो मेरे भाई॥
महेश आर्य व्रत धार ले सिद्ध होंय सब काज।
इससे बढ़कर नहीं तपस्या भूल गये क्यों आज॥

—महेश आर्य, पन्हैड़ा खुर्द, बल्लबगढ़ (फरीदाबाद)

एकता

राजेश प्रतापसिंह ग्राम हाटा, जिला देवरिया (यू०पी०)

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥
ऋग० १०-१९१-२

हे मनुष्यो मिलकर चलो। मिलकर बोलो। तुम्हारे मन एक प्रकार के विचार करें जिस प्रकार प्राचीन विद्वान् एकमत होकर अपना-अपना भाग ग्रहण करते थे (उसी प्रकार तुम भी एकमत होकर अपना भाग ग्रहण करो।)

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसका सम्बन्ध समाज से है। वह समाज का एक अंग है। व्यक्ति व्यष्टि है और समाज समष्टि। संगठन से समष्टि सुदृढ़ होती है। संगठन निर्बल को भी बलवान्, शक्तिहीन को शक्तिशाली बना देता है। अतः कहा गया है कि—"संघे शक्तिः कलौ युगे" कलियुग में संगठन में ही शक्ति है। नीति का श्लोक है कि—

संहतिः श्रेयसी पुंसां सुगुणेरल्पकैरपि।
तृणैर्गुणत्वमापन्नैः बध्यन्ते मत्तदन्तिनः॥

सद्गुणयुक्त थोड़े व्यक्ति भी हों, तो उनका संगठित होना कल्याणकारी है। तिनके से मिलकर रस्सा बनता है और उनसे मत्त हाथी भी बांधे जा सकते हैं। संगठन की महिमा अपार है। समाज में प्रतिष्ठित रूप से जीवित रहने के लिए संगठन अनिवार्य है। अतएव मन्त्र में कहा गया है कि प्राचीन ऋषि-मुनि एवं आर्यजन एकत्व के महत्त्व को समझकर सुसंगठित थे, उसी प्रकार हम भी सुसंगठित हों। इसके लिए आवश्यकता है कि सभी व्यक्ति साथ उठें बैठें। मिलकर विचारविनियम करें और सामूहिक निर्णय का पालन करें। जो साथ चलेंगे, मिलकर बोलेंगे और जिनमें संज्ञान (एकत्व बुद्धि) होगा, वे सदा उन्नति करेंगे। उनका समाज, देश तथा संसार में उत्थान करेगा।

एकता तथा संगठन के लिए विचारों की एकता तथा हृदय की एकता का होना नितान्त आवश्यक है। जब विचार और हृदय में एकता होगी तब हम इस एकता को सच्ची, शुद्ध तथा निर्मल-पवित्र एकता कहेंगे।

वेद का कथन है कि परमात्मा ने सभी को समान सुविधाएं दी हैं और समान उपकरण दिए हैं। मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह उनकी सुविधाओं को ठीक उपयोग करके अपनी और समाज की उन्नति करे। व्यक्तिगत और सामूहिक उन्नति का साधन है विचारों की एकता, भावनाओं का समन्वय और क्रियाकलापों में एकरूपता। इनके लिए ही सभा और समिति का गठन किया गया था। इनमें विचार विनियम के द्वारा समाज की एक निश्चित प्रक्रिया निर्धारित की जाती थी। इसका पालन करने से समाज सुसंगठित था। इसको ही मन्त्र में कहा गया है कि मन या विचार समान हों। समाज के सभी सदस्यों के विचारों में एकरूपता हो। सभी एक निर्णय करके उसका पालन करें। यह संगठन या एकता की भावना ही समाज को उन्नति प्रदान कर सकती है। समाज के सभी सदस्यों के विचार तथा हृदय में एकता हो। अतः इसका दृढ़तापूर्वक पालन करना चाहिए।

हृदय की एकता तथा मन की एकता के अतिरिक्त द्वेष का अभाव तथा प्रेम और सद्भाव भी आवश्यक है। यदि संगठित होने वाले समाज में पारस्परिक द्वेष है, कलह है, ईर्ष्या है और मनोमालिन्य है, तो वह समाज सुसंगठित नहीं हो सकता है। अतः आवश्यक है कि संगठन को सुदृढ़ बनाने के लिए पारस्परिक द्वेष मनोमालिन्य और ईर्ष्या को तिलाञ्जलि दी जाय। इसके अतिरिक्त अन्य आवश्यकता है— पारस्परिक प्रेम और सहानुभूति की। जैसे गाय अपने नष्ट बछड़े से घनिष्ट प्रेम करती है। इसके लिए वह प्राण देने को भी उद्यत रहती। इसी प्रकार यदि समाज में घनिष्ठ प्रेम का प्रवाह होगा, एक-दूसरे के लिए प्राण देने को उद्यत रहेंगे और यदि परस्पर हित-चिन्तन करेंगे, तो वह समाज अवश्यमेव सुसंगठित होगा।

इतिहास के पृष्ठ साक्षी हैं कि एकता के अभाव का दुष्परिणाम कितना भयानक होता रहा है। कौरव और पाण्डवों की आपसी फूट के कारण इतना बड़ा महाभारत हुआ जिसे सारा संसार जानता है। अनाचारी रावण भी शायद ही पराजित होता यदि अपने ही छोटे भाई विभीषण को लात मारकर वह अपने से विलग नहीं करता। पृथ्वीराज चौहान और जयचन्द की फूट ने हमें विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा गुलाम बनाया तथा मीरजाफर का हमसे छिटक जाना हमारी दासता का कारण बना। हम जब हिन्दू मुसलमान एक रहे तो हमने अंग्रेज जैसे राजनीतिक धुरन्धरों के छक्के छुड़ाये और जब आपस में लड़ने लगे तब हमने भारत माता की छाती के दो टुकड़े किये। मुट्ठी भर जापानियों और जर्मनी के सामने बड़ी-बड़ी शक्तियां साक्षात् दण्डवत् करती रहीं—इसका एक मात्र कारण है उन देशों के लोगों की दृढ़ एकता।

परन्तु बहुत दुःख से कहना पड़ता है कि आज हमारे राष्ट्र के सम्मुख सबसे बड़ी समस्या उनकी एकता को भंग करने के लिए अनेक चेष्टाएं हो रही हैं। राष्ट्र टुकड़े-टुकड़े होना चाहता है। पंजाब में आतंकवादी, सिक्ख पंजाबी सूबे के नाम पर सस्ती लीडरी रखने के लिए राष्ट्रीय एकता की पीठ में छुरा भोंकना चाहते हैं और असम, नागालैण्ड, केरल साम्प्रदायिकता फैला रहे हैं। एक ओर पाकिस्तान काश्मीर को हड़पने की घुड़कियां दे रहा है तो दूसरी ओर चीन भी सीमातिक्रमण कर रहा है। अतः आज राष्ट्र के सम्मुख समस्या एकता की है।

राष्ट्रीय एकता की रक्षा के लिए सर्वप्रथम राष्ट्र के महत्त्व को सर्वोपरि स्वीकार करना होगा। हमें समझना पड़ेगा कि राष्ट्र, जाति, धर्म, भाषा, दल प्रान्त, व्यक्तिगत स्वार्थ आदि के ऊपर है। राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यपालन का दृढ़ संकल्प करना होगा। राष्ट्र के लिए तन, मन, धन से त्यागपूर्वक सदैव प्रस्तुत रहना पड़ेगा। राष्ट्र की सम्पत्ति को, राष्ट्र की मर्यादा को अपनी सम्पत्ति और मर्यादा समझकर उसकी रक्षा के लिए उद्यत रहना पड़ेगा।

साम्प्रदायिकता का समूलोन्मूलन करना होगा। धर्म निरपेक्ष राज्य में साम्प्रदायिकता को राजनीति में कोई स्थान नहीं मिलना चाहिए। जो धर्म व सम्प्रदाय के नाम पर झगड़ा करने वाले हैं। उनको कठोर दण्ड देना होगा।

धर्म निरपेक्षता के आधार पर ही शिक्षा का संगठन होना चाहिए। सरकार को कानून द्वारा किसी विद्यालय का नाम साम्प्रदायिक जातीय या धार्मिक आधार पर न रखने देना चाहिए। हिन्दू विश्वविद्यालय, मुस्लिम विश्वविद्यालय, खालसा कालेज, सनातन धर्म कालेज, डी० ए० वी० कालेज, मुस्लिम कालेज आदि नामों पर प्रतिबन्ध लगा देना चाहिए।

भाषा के आधार पर झगड़ा या अपराध नहीं करना चाहिए। क्योंकि भाषा का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है। देवनगरी लिपि को ही देश की समस्त भाषाओं के लिए ग्रहण करना चाहिए। एक लिपि के कारण भाषा में एकता होगी जिससे राष्ट्रीय एकता को बल मिलेगा।

प्रान्तीयता का भेदभाव सर्वथा सामान्य होना चाहिए। हम सब भारतीय हैं। इन सबके लिए मन और विचार समान होने चाहिए ऋग्वेद के एक मन्त्र से—

समानी व आकूतिः, समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो, यथा वः सुसहासति॥

तुम्हारे संगठन समान हों। तुम्हारे हृदय समान हों। तुम्हारे मन समान हों, जिससे तुम्हारा संगठन हो।

इस मन्त्र में संगठन के तीन मूल तत्त्वों का निर्देश किया गया है वे निम्न हैं—

१) विचार साम्य।
२) हृदय साम्य।
३) मन साम्य।

(शेष पृष्ठ ६ पर

वेद में प्रश्नोत्तर विद्या

(प० धर्मदेव 'मनीषी' वेदतीर्थ', गुरुकुल कालवा)

यजुर्वेद के २३वें अध्याय में ४५वें मन्त्र से लेकर ६२वें मन्त्रों तक विद्वानों से जिज्ञासु बनकर कैसे प्रश्न करने चाहियें यह वर्णन किया है। पहला मन्त्र प्रश्नों का है अगला मन्त्र उत्तरों का है—

क: स्विदेकाकी चरति कऽउ स्विज्जायते पुन:।
कि ँ स्विद् हिमस्य भेषज किम्वावपनं महत्॥ यजु० २३।४५

अर्थ—हे विद्वान्! इस ससार में (क: स्वित्) कौन (एकाकी) अकेला (चरति) प्राप्त होता है एव भ्रमण करता है।? (क उ स्वित्) और कौन (पुन:) फिर (जायते) उत्पन्न होता है? (किं स्वित्) क्या (हिमस्य) शीत=ठंड की (भेषजम्) औषध है? (किमु) और कौन (महत्) महान् (आवपनम्) सर्वाधार है? यह बतलाइये।

भावार्थ—अकेला कौन भ्रमण करता है? शीत=ठंड का निवारण कौन है? बार-बार कौन उत्पन्न होता है? महान् उत्पत्ति-स्थान है? इन प्रश्नों के समाधान अगले मन्त्र में समझें।

पूर्वोक्त प्रश्नों के उत्तर—

सूर्यऽएकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुन:।
अग्निर्हिमस्य भेषज भूमिरावपन महत्॥ यजु० २३-४६

अर्थ—हे जिज्ञासु! (सूर्य:) सूर्यलोक (एकाकी) अकेला (चरति) भ्रमण करता है। (चन्द्रमा:) आह्लादकारी चन्द्र (पुन:) फिर (जायते) प्रकाशित होता है। (अग्नि:) अग्नि (हिमस्य) शीत=ठंड का (भेषजम्) औषध है। (महत्) विस्तृत (आवपनम्) बीज बोने का क्षेत्र (भूमि:) पृथिवी है, ऐसा समझ।

भावार्थ—हे विद्वानो! सूर्य अपनी ही परिधि में भ्रमण करता है, किसी लोक के चारों ओर नहीं घूमता। चन्द्र आदि लोक उसी से प्रकाशित हैं। अग्नि ही शीत=ठंड का निवारक है। सब बीज बोने के लिए महान् क्षेत्र भूमि ही है, ऐसा तुम समझो।

मन्त्रों के प्रश्न और उत्तर—

इस संसार में अकेला कौन भ्रमण करता है? तत्पश्चात् कौन उत्पन्न होता है? शीत का निवारक औषध क्या है? कौन सर्वाधार एवं महान् उत्पत्ति स्थान है? इन प्रश्नों का समाधान इस प्रकार किया है—

हे जिज्ञासु! सूर्य अपनी ही परिधि में अकेला ही भ्रमण करता है। वह किसी लोक के चारों ओर नहीं घूमता। तत्पश्चात् चन्द्रमा उत्पन्न होता है अर्थात् चन्द्र आदि लोक सूर्य से ही प्रकाशित होते हैं। अग्नि ही शीत का निवारक औषध है।' सब बीज बोने के लिए महान् क्षेत्र भूमि ही है।

विद्वानों से इस प्रकार प्रश्न करें—

किँस्वित्सूर्यसम ज्योति: किँसमुद्रसमं सर:।
किँस्वित्पृथिव्यै वर्षीय: कस्य मात्रा न विद्यते॥ यजु० २३।४७

अर्थ:—हे विद्वान्! (किंस्वित्) कौन (सूर्यसमम्) सूर्य के तुल्य (ज्योति:) प्रकाशस्वरूप है? (किम्) कौन (समुद्रसमम्) समुद्र के तुल्य (सर:) तालाब है? (किंस्वित्) और (पृथिव्यै) पृथिवी से (वर्षीय) अधिक है? (कस्य) किसका (मात्रा) परिमाण (न) नहीं (विद्यते) है। यह बतलाइये।

भावार्थ:—सूर्य के समान तेजस्वी, समुद्र के समान तालाब और भूमि से अधिक कौन है? और किसका परिमाण नहीं है। इन प्रश्नों के उत्तर अगले मन्त्र में समझें।

मन्त्रोक्त प्रश्नों के उत्तर—

ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्द्यौ: समुद्रसमँसर:।
इन्द्र: पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते॥ यजु० २३।४८

अर्थ:—हे जिज्ञासु! तू (सूर्यसमम्) सूर्य के तुल्य (ज्योति:) प्रकाशक (ब्रह्म) सब से महान् अनन्त ब्रह्म, (समुद्रसमम्) समुद्र के तुल्य (सर:) तालाब (द्यौ:) अन्तरिक्ष, (पृथिव्यै) पृथिवी से (वर्षीयान्) बड़ा (इन्द्र:) सूर्य, (गो:) वाणी की (तु) तो (मात्रा) मात्रा परिमाण (न) नहीं (विद्यते) है, ऐसा जान।

भावार्थ:—ब्रह्म के तुल्य अपने प्रकाश से प्रकाशमान ज्योति कोई नहीं है। सूर्य-प्रकाश से युक्त मेघ=बादल के तुल्य कोई जलाशय=तालाब नहीं है। सूर्य के तुल्य कोई लोकों का स्वामी नहीं है। वाणी के तुल्य व्यवहार-साधक कोई वस्तु नहीं है, ऐसा सब निश्चय करे।

विद्वानों से इस प्रकार प्रश्न करें—

सूर्य के समान प्रकाशस्वरूप एवं तेजस्वी कौन है? समुद्र के समान तालाब कौन है? पृथिवी से बड़ा एवं अधिक कौन है? किसकी मात्रा अर्थात् परिमाण नहीं है? वेद में इन प्रश्नों के उत्तर इन प्रकार हैं—

हे जिज्ञासु! अपने प्रकाश से प्रकाशमान, सब से महान्, अनन्त ब्रह्म के समान कोई ज्योति नहीं है। समुद्र अर्थात् सूर्य के प्रकाश से युक्त मेघ के समान कोई जलाशय=तालाब नहीं है। आकाश पृथिवी से बड़ा है और सूर्य सब लोकों का स्वामी है। वाणी की मात्रा=परिमाण नहीं है एवं वाणी के तुल्य व्यवहार-साधक कोई वस्तु नहीं है।

वेद के आदेशानुसार विद्वानों से सदा ज्ञानवर्द्धन करना चाहिये। इन मन्त्रों से यही शिक्षा प्राप्त होती है। यहां केवल चार ही प्रश्नोत्तर के मन्त्र प्रस्तुत किये हैं। आगे भी यथावसर प्रश्नोत्तर के मन्त्र प्रस्तुत किये जायेंगे।

भारतस्य दुर्दशा

रोचते गानं न मह्यम् रागयुक्तं साम्प्रतम्।
क्रन्दते चित्तं मदीयं वीक्ष्य देशं दुर्गतम्॥
एकत: उटजेषु श्रव्यं क्षुधया कोलाहलम्।
अन्यत: अट्टालिकायां कामिनी केलिकलम्॥
दीनजनताया नेता य: ऐश्वर्ये मत्त: सदा।
उद्धार कर्तुम् जनानाम् वर्तते समय: कदा॥
दीनाहीना: ग्रामीणास्ते कर्म कुर्वन्त: सदा।
नगरास्ते ये जीवन्ति शोषयन्त: तान् मुदा॥
संकटे प्राणा: जनानाम् कोऽपि नो संरक्षक:।
वस्तुत: ये रक्षका: वे ते भवन्ति भक्षका:॥
रोचते गानं न मह्यम् रागयुक्तं साम्प्रतम्।
क्रन्दते चित्तं मदीय वीक्ष्य देशं दुर्गतम्॥

पं० धर्मप्रकाश शास्त्री, हिसार।

(पृष्ठ ५ का शेष)

किसी भी संगठन के लिए सर्वप्रथम आवश्यकता है कि संगठित होने वाले समूह में विचारों की एकता हो। यदि विचारों में एकता नहीं है, विचारभेद हैं, मतभेद है, तो वह संगठन सुदृढ नहीं हो सकता है। जहां विचारों की एकता होगी वहां लक्ष्य एक होगा, साध्य एक होगा। वह एक लक्ष्य सबको संगठित रखेगा। दूसरी आवश्यकता है—हृदय की एकता। लक्ष्य भले ही एक हो, पर यदि हम उसमें हार्दिक सहयोग नहीं दे रहे हैं, हृदय के साथ नहीं हैं, वहां हार्दिक एकता नहीं है, लक्ष्य एक होने पर भी सफलता नहीं मिलेगी। अत: एक लक्ष्य की पूर्ति के लिए हृदय की एकता भी अनिवार्य है। तीसरी आवश्यकता है—मन की एकता। यदि लक्ष्य एक है और हृदय में सहानुभूति भी है, पर यदि क्रियाशीलता नहीं है, प्रेरणा और प्रबुद्धता नहीं है तो वह संगठन दृढ नहीं होगा। कठोपनिषद् के अनुसार—"मन: प्रग्रहमेव च" मन शरीर में लगाम का काम करता है। लगाम जिस ढंग से नियन्त्रित की जाएगी, उसी प्रकार घोड़े चलेंगे। यदि मनरूपी लगाम को ठीक नियन्त्रित रखेंगे, नियन्त्रितरूप से उस कार्य को गति देंगे और पूर्ण मनोयोग देंगे, तभी हमारा सगठन सुव्यवस्थित और सुदृढ होगा।

आर्यसमाज चित्रगुप्तगंज लश्कर का चुनाव

१- प्रधान-श्री मनाराम गुप्त, २- उपप्रधान-श्री भरोसीलाल आर्य, ३- मन्त्री-श्री प्रकाशचन्द्र अग्रवाल, ४- उपमन्त्री- श्री जगदीश प्रभाकर, ५- कोषाध्यक्ष-श्री नरेन्द्र गुप्त, ६- पुस्तकाध्यक्ष-श्री सुरेन्द्र भटनागर, ७- लेखानिरीक्षक-श्री प्रेम सतीजा, ८- पुरोहित एवं संरक्षक-श्री गोकुलप्रसाद शास्त्री।

आर्यसमाज घण्टाघर भिवानी का चुनाव

दिनांक १४ अप्रैल, को माननीय डा० अमीरसिंह जी की अध्यक्षता में आर्यसमाज घण्टाघर भिवानी के पदाधिकारियों का चुनाव सम्पन्न हुआ जो निम्न प्रकार से है—

१- प्रधान-डा० अमीरसिंह जी, २- उपप्रधान-श्री आनन्दस्वरूप जी, ३- मन्त्री-श्री विमलेश आर्य, ४- उपमन्त्री- श्री रामफल जी, ५- कोषाध्यक्ष-श्री रतनलाल जी पंसारी, ६- पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री ओमप्रकाश जी गोयल, ७- प्रचार मन्त्री-पं० रामरत्न जी 'भजनोपदेशक' ८- लेखानिरीक्षक-श्री राधेश्याम जी, ९-पुस्तक विक्रय विभागाध्यक्ष-श्री सोमपाल जी शास्त्री, १०- संरक्षक-पं० फूलचन्द जी शर्मा 'निडर'।

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदित्तामल, भिवानी स्टैंड रोहतक।
२. मैसर्ज फूलचन्द सीताराम, गांधी चौक, हिसार।
३. मैसर्ज सन-अप-ट्रेडर्ज, सारंग रोड, सोनीपत।
४. मैसर्ज हरीश एजेंसीस, ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५. मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन, सर्राफा बाजार, करनाल।
६. मैसर्ज घनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७. मैसर्ज कृपाराम गोयल, रुड़ी बाजार, सिरसा।
८. मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन०आई०टी०, फरीदाबाद।
९. मैसर्ज सिंगला एजेंसीज, सदर बाजार, गुड़गांव।

समस्त गुरुकुलों के पाठ्यक्रम के एकीकरण का प्रयास असफल

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार की ओर से समस्त गुरुकुलों को सूचित किया गया कि गुरुकुल कांगड़ी के ९१वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर ८-९-१० अप्रैल १९९१ को एक बैठक का आयोजन किया जाये और उसमें यह निश्चित किया जाये कि समस्त गुरुकुल एक ही पाठविधि से सम्बद्ध होकर एकजुट होकर रहें। तदनुसार इस बैठक में चार दिन लगाकर एक सर्वसम्मत पाठ्यक्रम तैयार किया गया। यह पाठ्यक्रम स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती आचार्य गुरुकुल झज्जर की देख-रेख में तैयार हुआ।

इस बैठक में गुरुकुल झज्जर, गुरुकुल भैंसवाल, गुरुकुल घासेड़ा, कन्या गुरुकुल नरेला, कन्या गुरुकुल दाधिया (राज०), कन्या गुरुकुल जसात, गुरुकुल वैद्यनाथधाम बिहार, गुरुकुल हरदुआगंज, गुरुकुल गौतमनगर (दिल्ली), गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ आदि १७ गुरुकुलों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

जब पाठ्यक्रम तैयार करने लगे तो कुलपति श्री सुभाष जी से निवेदन किया गया कि अनेक गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध हैं। वे आपके साथ तभी लग सकते हैं जब आप उनको विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से आर्थिक सहायता दिलवायें। उन्होंने मान्यता देने तथा आर्थिक अनुदान का आश्वासन दिया। इसके पश्चात् पाठ्यक्रम तैयार करके उनको दिखाया गया तो उन्होंने कहा कि अनुदान दिलाना और मान्यता देना मेरे अधिकार से बाहर है। आप लोग ऐसा करें कि इस पाठ विधि को हम गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में वैकल्पिक स्थान दे देते हैं। आप अपने यहां आठवीं तक छात्रों को रखकर नवम कक्षा (विद्याधिकारी) से गुरुकुल कांगड़ी में भेज दिया करें। जो छात्र निर्धन होंगे उनको हम छात्रवृत्ति दे दिया करेंगे। हमारे यहां छात्रों की कमी भी रहती है।

यह सुनकर सभी आचार्य लोगों को ठेस पहुंची और कुलपति के इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

हमने इसका सीधा-सा यह अभिप्राय निकाला कि जब तक महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय ने गुरुकुलों के पाठ्यक्रम को मान्यता नहीं दी थी, उस समय तक अनेक गुरुकुलों के छात्र गुरुकुल कांगड़ी से अलंकार एम.ए. आदि करते रहते थे। रोहतक से मान्यता मिलने पर गुरुकुल कांगड़ी में अन्य गुरुकुलों से जाने वाले छात्र नगण्य रह गये। उनको अपनी ओर आकृष्ट करने का कुलपति महोदय का यह कार्यक्रम था। इसे मानने पर सभी गुरुकुल गुरुकुल कांगड़ी की एक लघु शाखा मात्र बनकर रह जाते। आज जहां शास्त्री, आचार्य और एम.ए. कक्षायें चलती हैं उन संस्थाओं को अष्टम कक्षा तक ही सीमित करके रख देना किस को स्वीकार हो सकता था।

साथ ही इंगलिश की अनिवार्यता भी थोंपी जा रही थी। यह भी किसी को स्वीकार नहीं हो पाई। अतः उक्त बैठक का कोई परिणाम नहीं निकला और इतने लोगों के कई दिन व्यर्थ नष्ट हो गये।

—विरजानन्द गुरुकुल झज्जर

आर्यसमाज कुञ्जपुरा का उत्सव

२७, २८ अप्रैल १९९१ को बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ जिसमें प० ताराचन्द वैदिक तोप ने मूर्ति-पूजा का खण्डन किया एवं तीन नवयुवकों ने शराब न पीने की प्रतिज्ञा की जिसमें श्री मनीराम यादव, श्री सुरेशकुमार एवं श्री बस्तीराम हैं। ७ नवयुवकों ने यज्ञोपवीत धारण किए। अध्यक्ष पद से बोलते हुए श्री छोटेलाल प्रधान आर्य समाज नारनौल ने बताया कि आर्यसमाज के काम को हमें ज्यादा से ज्यादा आगे बढाने हेतु नवयुवकों का सहयोग लेना चाहिये। सभा की तरफ से पं० जयपालसिंह बेधड़क की भजन मण्डली के बड़े प्रभावकारी भजन हुए। वैद्य रोहतास ने भी उत्साह से कार्य सम्भाला। डा० विश्वम्भरदयाल बाछोद ने मादक वस्तुओं से बचने के लिए सुन्दर भजन गाए। म० सुबाराम ने भी दहेज से बचने के लिए मार्ग दर्शाया। सभा को ३०१ रु० दान दिया गया।

हिन्दी से वैर-भाव राजनीतिक—डॉ. विमल

विद्या प्रकाश प्रभाकर ट्रिब्यून न्यूज सर्विस

चण्डीगढ : भारत के गैर हिंदी भाषी राज्यों में हिन्दी के प्रति वैर-भाव राजनीतिक है अन्यथा इन राज्यों के लोग अपनी भाषा के माध्यम से हिन्दी पढने की इच्छा रखते हैं। गैर-हिन्दी विद्वानों ने भी हिन्दी को राष्ट्रीय मुख्यधारा की भाषा स्वीकार किया है।

ये विचार केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक डॉ० गंगाप्रसाद विमल ने एक विशेष भेंट में व्यक्त किए। डा० विमल किसी कार्य के सिलसिले में पंजाब विश्वविद्यालय में आये हुए थे। डा० विमल ने अपनी शोध उपाधि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निर्देशन में प्राप्त की। दिल्ली के जाकिर हुसैन कालेज में २५ वर्ष तक अध्यापन करने के बाद गत तीन वर्षों से वे हिन्दी निदेशालय में कार्यरत हैं। उन्होंने कहा कि निदेशालय इस बात की संवैधानिक गारंटी सुनिश्चित कराने के प्रयास कर रहा है कि सभी भारतीय भाषाओं की शब्दभण्डार-सम्पदा हिन्दी से सम्पृक्त हो। इससे न केवल हिन्दी समृद्ध होगी बल्कि भारतीय भाषाओं में भी परस्पर तालमेल पैदा होगा जिसकी आजकल बहुत जरूरत है।

डा० विमल का विचार है कि उत्तर तथा दक्षिण के लोग यात्राओं या व्यापार में आसानी से अपना काम चला रहे हैं। उन्होंने कोई भाषा विकसित कर ली है और वह हिन्दी ही है। उन्होंने कहा कि भाषा से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण संस्कृति ही है। देश में 'भारतीयता' का विचार ही स्थायी रहेगा। उन्होंने कहा कि हिन्दी के कई उन्नायक गैर-हिन्दी भाषी राज्यों से ही पैदा हुए हैं। इस सिलसिले में उन्होंने कृष्णचन्द्र सेन, स्वामी दयानन्द सरस्वती, सी. राजगोपालाचार्य, बाल गंगाधर तिलक, मोहन राकेश, उपेन्द्रनाथ अश्क आदि के नाम गिनाये।

भाषा की समस्या केवल १९४७ के बाद पैदा हुई। निदेशालय ने १५ भाषाओं का द्विभाषी तथा त्रिभाषी शब्दकोश तैयार किया है। निदेशालय ने 'दक्षेस' देशों का शब्दकोश तैयार करने का भी महत्त्वपूर्ण कार्य हाथ में लिया है। अन्य भाषाओं में शब्दकोश तैयार करने का काम भी निदेशालय कर रहा है। गैर-हिन्दी भाषी लेखकों को हिन्दी में लिखने के लिए उत्साहित करने के लिये भी निदेशालय ने पुरस्कार योजना शुरू की है।

भूल सुधार

सर्वहितकारी के २८ अप्रैल के अंक के पृ० ६ के समाचार में श्री रामचन्द्र आर्य के स्थान पर श्री रतनसिंह आर्य नाम भूलवश छप गया वास्तव में श्री रामचन्द्र आर्य सुपुत्र श्री रतनसिंह ने अपनी स्वर्गीय माता जी की स्मृति में १०५ रु० सभा को वेदप्रचारार्थ दान दिया था।

—रतनसिंह आर्य

शराब पीने में जो बुराई है।
उस से ग़ाफ़िल तू मेरे भाई है॥

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न० २३२०/७३ रजि. न० P/RTK-४१ फोन नं०

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक २४ १८ मई, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

संसद और विधानसभाओं में पहुँचने वाले राष्ट्र के प्रहरी सुनो !

विद्म ते सभे नाम नरिष्टा नाम वा असि ।
ये ते के च सभासदः ते मे सन्तु सवाचसः ॥ अथर्ववेद ७/१२/२

तुम्हारी लोकसभा/विधानसभा (न+रिष्टा) समय से पूर्व भंग न होने वाली होनी चाहिये तथा (नर्+इष्टा) राष्ट्र के लोगों का कल्याण करने वाली होनी चाहिये। लोकसभा/विधानसभा के सभी सभासद चाहे वे किसी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हों अथवा किसी भी विचारधारा के हों उन्हें मातृभूमि के प्रति परमभक्ति रखते हुए सदा सत्यभाषी होना चाहिये तभी राष्ट्र का कल्याण सम्भव है।

संसद और विधानसभाओं में पहुंचने वाले तुम, चाहे हिन्दू हो या मुसलमान, सिख हो या पारसी, ईसाई हो या बौद्ध, तुम्हारे ऊपर राष्ट्र की रक्षा का भार है। तुम इस महान् देश के महान् प्रहरी हो। भारत तुम्हारा देश है, इसकी उन्नति तुम्हारा लक्ष्य है, इस देश का हर नागरिक तुम्हारा भाई है। ऐसे भारत का निर्माण करना—

यस्यां समुद्रः उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः सम्बभूवुः ।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु ॥

जहां समुद्र और नदियां देश की धरती को हराभरा रखने वाली हों। जहां की धरती अन्न और फल-फूलों से लदी हुई हो। जहां के सभी नागरिक द्वेष तथा वैर भुलाकर प्रेम में आबद्ध होकर रहने वाले हों। जहां का प्रत्येक प्राणी अपने पूर्वजों से मिली हुई विरासत की रक्षा करने वाला हो।

आज से लाखों वर्ष पूर्व इस देश के सम्राट् अश्वपति ने संसद में ऐसी ही घोषणा की थी—

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः ।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः ॥

मेरे देश (राज्य) में कोई चोर नहीं है, कोई कंजूस नहीं है, कोई मद्यप नहीं है, कोई अयज्ञीय नहीं है, कोई मूर्ख नहीं है, कोई व्यभिचारी पुरुष नहीं है तो व्यभिचारिणी स्त्री कहां होगी।

आज भारत माता अपने सांसदों से, विधायकों से जन प्रतिनिधित्व करनेवाले सपूतों से ऐसे ही मंगलकारी राज्य का निर्माण चाहती हैं।

क्या मां की यह आकांक्षा पूर्ण नहीं करोगे ?

(आर्य मित्र)

राजनीति का भी धर्म है

जो लोग यह कहते हैं कि राजनीति का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है या राजनीति में धर्म का कोई स्थान नहीं है, उनका यह कहना सर्वथा अज्ञानता से भरपूर है। इन लोगों को यह पता नहीं है कि धर्म क्या है। वे केवल हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि होने को ही धर्म समझते हैं।

ऐसे लोगों को सीधे-सादे ढंग से समझाना चाहिये कि धर्म क्या है ? धर्म उसे कहते हैं जो धारण करने योग्य है, जैसे सच बोलना अच्छा काम है, इसे धारण करो। झूठ बोलना बुरी बात है, इसे छोड़ो। ऐसे ही अन्य बहुत सी बातें हैं जिन पर ध्यान देना चाहिये।

धर्म यह नहीं कहता कि तू हिन्दू बन या मुसलमां बन जा।
धर्म यह नहीं कहता कि तू सिक्ख बन या ईसाई बन जा।
धर्म कहता है कि तू इन्सान की औलाद है इन्सान बन जा।

हर वस्तु और विषय का अपना अपना धर्म है। जैसे सूर्य का धर्म है गर्मी देना, चन्द्रमा का धर्म है शीतलता देना, ऐसे आग हवा, पानी, वृक्ष, पशु पक्षी सब का अपना-अपना धर्म है। ऐसे ही मनुष्य का धर्म है मानवता (इन्सानियत) में रहना। जो मनुष्य हैवानों जैसे काम करता है उसे लोग जंगली असभ्य कहते हैं। उससे नफरत करते हैं।

अब आइये जरा राजनीति के धर्म पर विचार करें। राजनीति क्या है ? इसे कौन बनाता है, किस लिए बनाई जाती है ? इन प्रश्नों के उत्तर में यह सर्वमान्य है कि राज्य व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए जो नीति अपनाई जाती है वही राजनीति है। राज्य के सिंहासन पर विराजमान शासक राजनीति बनाते हैं ताकि उनके राज्य में या शासन काल में जनता सुख शान्ति से जीवन बसर कर सके। अब बताइये जो राजनीति मनुष्यों द्वारा मनुष्यों के लिए बनाई गई है उस राजनीति में मनुष्यता (इन्सानियत) का धर्म होना आवश्यक है या नहीं। जिस राजनीति में मानवता नहीं होगी वह कभी नहीं चलेगी। उस राज्य में दंगे झगड़े पनपते रहेंगे। न्यायप्रिय पक्षपातरहित राजनीति को चरित्रवान् शासक ही अपनाते हैं। जो व्यक्ति धर्मात्मा है वही चरित्रवान है।

इसलिये राजनीति को धर्म से अलग नहीं किया जा सकता। धर्म के बिना राजनीति पंगु (लंगडी) है। राज्य में सुख शान्ति बनाये रखना ही राजनीति का धर्म है।

—देवराज आर्य, प्रचार मन्त्री आर्यसमाज, बल्लभगढ़

शराबियों को अगर वोट तुम ने देना है।
समझ लो मुफ्त में आफ़त को मोल लेना है ॥

—नफरत हरयानवी

वैदिक वीरांगना नारी

डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम.ए., आर्यसमाज गोरखपुर

(गतांक से आगे)

स्त्रियों को स्थिति और वीरता का पता भी वेदों से चलता है। जो लोग वेद में इतिहास की कल्पना करते हैं उन्होंने अगस्त्य आदि ऋषियों को ऐतिहासिक पुरुष माना है। परन्तु महर्षि दयानन्द ने अनित्य व्यक्तियों का वर्णन नही माना। प्रकृति प्रत्यय के आधार पर चलने वाली यौगिक शैली हो सार्यसमाज में वदार्थ करने की ठीक शैली मानी जाती है। स्वामी जी वेदों में आए नामो को ऐतिहासिक और भौगोलिक न मानकर यौगिक अर्थों में लेते हैं। वे 'वसिष्ठ' को ऋषि नही मानते, 'वसिष्ठ' शब्द का अर्थ प्राण, भरद्वाज का मन और विश्वामित्र का अर्थ कान किया है। इस प्रकार वेदों में जितने भी ऐतिहासिक और भौगोलिक नाम आए हैं, आर्यसमाज और स्वामी जी ने भी यौगिक अर्थ किया है। यास्क का भी विचार है कि यौगिक अर्थ ही करना चाहिये। परन्तु सम्भतः कहीं कही उनका झुकाव ऐतिहासिक भी हो जाना है। सायण, महीधर, उव्वट आदि ने 'वेदो' को ईश्वरीय ज्ञान तो माना है, उन्हें ईश्वरीय गुणों की भाति नित्य भी माना है परन्तु उन्होने इतिहास और भूगोल को भी माना है। स्वामी दयानन्द वेदों में इतिहास नही मानते। वैदिक शब्दों को यौगिक और योगरूढ मानते हैं। रूढि नही मानते। इन्द्र शब्द के अर्थ कही ईश्वर, कही सूर्य, कही वायु, कही जीवात्मा और कही विद्वान् राजा करते हैं। योगो अरविन्द ने भी स्वामी जी की शैली का समर्थन किया है।

नारी को वेदो मे वीरागना के रूप में माना गया परतु वीरांगना के साथ साथ स्त्री शिक्षित होती थी, वे वेदाध्ययन करती थी, कविताए बनाती थीं, वे मन्त्रों के अर्थ निकालती थी। इला या इळा को घृतहस्ता, अन्नरूपिणी और हविर्लक्षणा माना गया है, सरस्वती के लिए पतितपावनी, धनदात्री, सत्यप्रेरिका, शिक्षिका तथा ज्ञानदात्री के रूप में माना गया है। भारती, सरण्यू, सिनीवाली, राका, पृश्नि आदि देवियां भी अबला नहीं प्रतीत होती। ऋग्वेद में 'गृहिणी गृहमुच्यते' नारी को ही घर मानते थे। अबला होने की बात कहां? ऋग्वेद के दशम मण्डल के ८५वे सूक्त में सूर्या का उल्लेख है। इस सूक्त में ४७ मन्त्र हैं जो अनेकानेक जानकारियों से भरे हैं। इन सब बातो के अतिरिक्त पतियों के साथ स्त्रियां भी युद्ध म जाती थीं। जो युवती पतितपावनी है, जो धनदात्री है, जो साक्षात् गृहरूपिणी है वह कैसे अबला मानी जा सकती है? सूर्या सूक्त में यह भी कहा गया है कि वृद्धावस्था तक पतिगृह में स्त्री स्वामित्व करने की अधिकारिणी है। स्त्री जाती की शक्ति, स्वामित्व आदि पर प्रकाश डालने वाला सूक्त यही है। बृहस्पति की पत्नी जुहू ब्रह्मवादिनी थी। यह दशम मण्डल के १०९वे सूक्त की द्रष्टा थी। दशम मण्डल का १५४वां सूक्त विवस्वान् की पुत्री यमी, दशम मण्डल का १५१वा सूक्त श्रद्धा द्वारा देखा गया है। मैं कहां तक गिनाऊं स्त्रियों द्वारा वेद विषय में किए गए कार्य।

दशम मण्डल, १०२ सूक्त २ मन्त्र में मुद्गलानी के विषय मे कहा गया है वह योद्धा थी और उसने १००० गायों को जीता। इसी तरह ५-३०-९ में स्त्री सेना के निर्माण की चर्चा है। इन्द्र और वृत्रासुर की माता 'दनु' पुत्र के साथ युद्ध में गई। यह ठीक है कि वृत्रासुर आदि नामों के अर्थ दूसरे हैं पर स्त्रियों की बहादुरी का तो वर्णन है ही।

यजुर्वेद ५/१० मन्त्र है—

सिंह्यसि सपत्नसाही देवेभ्यः कल्पस्व।
सिंह्यसि सपत्नसाही देवेभ्यः शुन्धस्व।
सिंह्यसि पत्नसाही देवेभ्यः शुम्भस्व॥

हे नारी, तू स्वयं को पहचान अर्थात् तू अपने को कमजोर मत समझ तुझ में बहुत शक्ति है बस आवश्यकता है, अपने को पहचानने की, तू यदि अपने को पहचान जाएगी तो तुझे पता चल जाएगा तू शेरनी है, तू शत्रु रूपी मृगों का मर्दन करने वाली है, देव जनों के कल्याण के लिए तू अपने में सामर्थ्य उत्पन्न कर। हे नारी, तू अज्ञान अविद्या दोषों पर शेरनी की तरह टूटने वाली है, तू शुद्ध गुणों के प्रचारार्थ स्वयं को शुद्ध कर। हे नारी! तू पापकर्मों एवं दुर्व्यसनों का शेरनी के समान टूटकर विध्वंस कर देती है, धार्मिक जनों के हितार्थ स्वयं को दिव्यगुणों से अलंकृत कर।

सिंह्यसि ब्रह्मवनिः क्षत्रवनिः स्वाहा, सिंह्यसि सुप्रजावनी रायस्पोषवनिः स्वाहा, सिंह्यस्यावह देवान् यजमानाय स्वाहा, भूतेभ्यस्त्वा। यजु० ५-१२

हे नारी तू अपने को पहचान कम शक्तिशालिनी नहीं, तू शेरनी है, तू आदित्य ब्रह्मचारियों की जन्मदात्री है, तू क्षत्रियों को, बहादुरों और शूरवीरों को जन्म देनेवाली है, तू शेरनी है और शेर के बच्चों से खेलनेवाले भरत जैसे बहादुर बच्चों को जन्म देनेवाली है, तू धनदात्री है, हम तेरी जयजयकार करते हैं, तू शेरनी है अपने पति को सिंह के समान पराक्रमी संतानों को दे, प्राणियों के हित के लिए तू अपने को समर्पित कर दे।

यजुर्वेद १४-१३ मन्त्र :—

राज्यसि प्राचीदिग्, विराडसि दक्षिणा दिक्, सम्राडसि प्रतीची दिक्, स्वराडस्युदीची दिक् अधिपत्न्यसि बृहती दिक्।

हे स्त्री, तू रानी है, पूर्वदिशा जिस तरह अपने तेज से अन्धकार को दूर कर तेज फैलाती है वैसे ही तू भी तेजोमयी है; तू विशाल शक्तिशाली है, दक्षिण दिशा के समान ऊर्जस्वती है, तू साम्राज्ञी है, पश्चिम दिशा के समान आभामयी है। तू अपनी विशेष कान्ति से भासमान है, उत्तर दिशा के समान प्राणवती है। तू अधिपत्नी, तू असीम गरिमाशाली है।

यजुर्वेद के १७-४४ मन्त्र में कहा गया :—

अमीषां चित्त प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गानि अप्वे परेहि।
अभिप्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम्।

अर्थात् बाणों की पंक्ति जिस प्रकार अव्याहत गति से तारतम्य के साथ प्रहार करती है वैसे ही प्रहार करने वाली वीर क्षत्रिय बनी तू शत्रु सेनाओं के चित्तों को विमूढ करती हुई सेनाओं के चारों अंगों को (हाथी, घोड़े, रथ एवं पैदल) अपने वश में कर ले। अधर्म से दूर रह, शत्रुओं पर (रानी झांसी की तरह) टूट पड़। शत्रुओं को अपनी शक्ति से वश में कर ले। शत्रु तेरी वीरता देखकर निराशा के घोर अन्धकार में पड जायें।

ऋग्वेद ८-७५-१५ मन्त्र में आया है :—

आलाक्ता या रुरुशीर्ष्ण्यो—अथो यस्या अयोमुखम्।
इदं पर्जन्यरेतसे—इष्वै देव्यै बृहन्नमः।

अर्थात् जो विष बुझे बाणों की तरह शत्रु सैन्य विनाशिनी वीरांगना है जो आत्मरक्षा के लिए मृगशिरों से बने शिरस्त्राण धारण करती है, जो लोह कवच पहनने वाली है, जो पर्जन्यवीर्या=बादल जिस प्रकार पानी की बूंदों की वर्षा करता है, उसी प्रकार जो बाणों को बरसाने वाली है उस बहादुर, गतिशील, वीरांगना को हम बार बार नमस्कार करते हैं।

ऋग्वेद ८-६७-१० में वीरांगना नारी के विशेषण देखने योग्य हैं। राष्ट्रभक्त ऐसी वीर नारी को पुकारता है :—

उपत्वामदिते यद्यह देव्युपब्रुवे।
मुमृडीकायाभिष्टये।

अर्थात् खडित न होनेवाली, सदा उदासीन बनी रहने वाली, पूजायोग्य—मैं राष्ट्र एव परिवार को सुखी करने के लिए पुकारता हूं, मैं तुझे अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पुकारता हूं। (क्रमशः)

सार्वजनिक सूचना

आप सभी आर्यजनों को सूचित किया जाता है कि मेरा छोटा भाई रणवीरसिंह कई वर्षों से घर से अलग रहता है। मेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं है। कई वर्षों से ईसाई मत में शामिल होकर शादी कर ली है और उसी का प्रचार करता है। काफी समझाने-बुझाने पर भी नही माना। इसलिए हमारे सारे परिवार ने उससे सम्बन्ध तोड़ लिया है। कई बार वह आर्यजनों, वैदिक आश्रमों व आर्यसमाजों में भी मेरे नाम से चला जाता है। अतः आप सभी को सूचित किया जाता है कि उसे वैदिक संस्थाओं में न घुसने दें और न ही कोई लेन-देन करें।

—सूर्यदेव आर्य, योग अध्यापक, ग्राम पो० रधाना (जींद)

वोट देने से पहले सोच तो लें

(चमन लाल)

भारत जैसे प्रजातन्त्र के निवासियों के व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय जीवन में मत का बड़ा महत्त्व होता है। लोकसभा, विधान सभाओं आदि के लिए विधायकों के निर्वाचन हेतु मतदान का काम भारी दायित्व का काम है। अपना मत न देने अथवा किसी अयोग्य आचरण-हीन व्यक्ति या पार्टी के पक्ष में मत देने से किसी भी राष्ट्र का कलेवर ही बदला जा सकता है। किसी अयोग्य प्रत्याशी या पार्टी को वोट देने से उनके बहुमत में आने से परिणामस्वरूप शक्तिशाली राष्ट्र भी भ्रष्ट हो जाया करते हैं। देश में अराजकता फैलने के कारण जनता का जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है और कोई कहीं सुरक्षित नहीं होता। दूसरी ओर योग्य आचारवान् लोकहित की भावना से भरे व्यक्तियों, पार्टी के पक्ष में वोट देकर और उनको सफल बनाकर सब प्रकार से गिरे देश को भी सबल, समृद्ध, सम्पन्न एवं खुशहाल बनाया जा सकता है।

वास्तव में योग्य, सदाचारी, नि:स्वार्थी लोगों को वोट देने से ही योग्य देशभक्त शासकों का उपलब्ध होना सम्भव होता है जो लोक सेवा की भावना से युक्त राष्ट्र में बल (भौतिक शक्ति, देश निवासियों का शारीरिक बल, पुलिस व सैन्य शक्ति, शासन चक्र का सामर्थ्य) और ओज (राष्ट्र के लोगों का मानसिक, बौद्धिक तथा आत्मिक बल, नैतिकता, ज्ञान-विज्ञान) को पैदा कर दिया करते हैं। ऐसे ही बलशाली और ओजस्वी राष्ट्र की नीतियों और राज्य व्यवस्था को देखकर देश-विदेशों के शासकगण उनके सामने नत-मस्तक होते हैं और सराहना करने लगते हैं। यही तो वेद में कहा गया है—

"भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु॥"

अथर्व १९।४१।१

बुलेट और बैलेट

भारत के बाद विश्व के दूसरे बड़े लोकतन्त्र अमेरिका के स्वर्गीय राष्ट्रपति अब्राहीम लिंकन ने वोट का महत्त्व बताते हुए एक प्रसंग में कहा था—"एक मत-पत्र एक गोली से कहीं अधिक बलशाली होता है, क्योंकि पिछले (गोली) से तो कुछ ही की हत्या होती है परन्तु पहले (मत) से तो समूचे राष्ट्र का सर्वनाश हो सकता है'—

("A ballet is most powerful then a bullet. The letter kills one or two where as the former destroys the whole nation")

हमारे देश में भी प्रजातन्त्र प्रणाली है। सौभाग्यवश यही शासक पद्धति प्राचीन वैदिक काल से मान्य रही है। लगभग एक सहस्र वर्षों (नन्द, मौर्य, गुप्त, मुस्लिम और अंग्रेजों के शासनकाल) को छोड़कर प्राचीन काल वैदिक से लेकर चौथी-पांचवीं शताब्दी तक इस देश में प्रचलित रही है। संभवतः इस तथ्य को दृष्टि में रखकर ही हमारे संविधान निर्माताओं ने इस प्रणाली को इस देश के लिए उपयोगी माना हो। परन्तु यह कटु सत्य है कि वर्तमान में यह प्रजातन्त्र प्रणाली जनमत का मजाक बनकर रह गई है। भ्रष्टाचार, जात-पात, भाई भतीजावाद, दल-बदल, आया राम-गया राम, सत्ता के लालच और पैसे के दुरुपयोग ने इस पवित्र शासन पद्धति को सारहीन करके रख दिया है। मतदाताओं और प्रत्याशियों की योग्यता का कोई विशेष स्तर भी तो निश्चित नहीं है। पैसे के प्रलोभन ने इसको बहुत दूषित कर दिया है। किन्हीं लोगों के लिए तो यह एक अच्छा लाभ-दायक व्यवसाय हो गया है। यद्यपि लगभग चार वर्ष पूर्व सरकार ने दल-बदल सम्बन्धी विधेयक पारित करके इस कुरीति पर कुछ अंकुश तो अवश्य लगाया है, परन्तु कुछ राजनीतिक दलों के नेतागण इस विधेयक के विरोध में खुले आम बोल रहे हैं। उनका यह भी कहना है कि इसी विधेयक के कारण जनता दल की सरकारें का पतन हुआ, लोक सभा भंग हुई। अतः इसको हटा दिया जाए।

अक्सर पिछले निर्वाचनों में यह देखने में आया है कि कुछ सत्ता के भूखे लोगों ने राजनीति को एक व्यावसायिक धन्धा बना लिया है। क्योंकि वे समझते हैं कि राजनीतिक सत्ता एक ऐसी कुंजी (मास्टर की) है जिसके द्वारा सब प्रकार की आमदनी के ताले खुल जाते हैं। इस स्वार्थपूर्ति के लिए जाति-बिरादरी, मजहबी-मिल्लत, लोभ-लालच, झूठे काल्पनिक आकर्षक वायदे और कहीं-कहीं तो तरह-तरह की धमकियों से अधिकतर बेचारे अशिक्षित, अभावग्रस्त ग्रामीण तथा झुग्गी-झोंपड़ी वालों से वोट लेना एक साधारण सी बात बन गई है। पिछड़े वर्ग के मतदाताओं को मूक पशुओं की तरह वोट देने पर बाध्य किया जाता है। इस प्रकार तथाकथित जनता द्वारा चुने गए विधायक रुपये-पैसे और कुर्सी-पदों के लालच में अपनी स्वार्थसिद्धि के वास्ते राष्ट्र हितों को एक ओर रख देते हैं और कुछ भी अनुचित करने से लेशमात्र भी नहीं डरते। जनता के पास कोई ऐसा कारगर साधन भी नहीं है कि वह ऐसे आचारहीन विधायकों को अपना पद छोड़ने पर बाधित कर सके। ऐसी दूषित परिस्थिति में कोई भी विचारशील आत्मसम्मान रखने वाला व्यक्ति अपने आपको सुरक्षित अनुभव नहीं करता। बेचारा पंख कटे पक्षी की तरह अन्दर ही अन्दर घुट रहा है। निस्सन्देह राजनीति को जन-उपयोगी, स्वस्थ बनाने के लिए इसमें सुधार लाने की नितान्त आवश्यकता है।

कुछ तो जरूरी हो

सर्वप्रथम मतदाताओं और प्रत्याशी के लिए कुछ योग्यता का स्तर निश्चित होना चाहिए ताकि सही आचारवान् योग्य व्यक्ति ही चुने जा सकें। रुपया-पैसा लेन-देन वालों को दोषी घोषित करने वाले विधान को पूरी तरह लागू किया जावे। समाज ऐसे लोगों को किसी प्रकार का सम्मान न दे; इनका सामाजिक बहिष्कार भी किया जावे, प्रचलित और सरकारी नियमों के अनुसार जब कोई व्यक्ति सरकारी नौकरी में नियुक्त किया जाता है तो उसकी स्वास्थ्य परीक्षा और आचरण सम्बन्धी पुलिस जांच रिपोर्ट आवश्यक होती है। इसके नियमानुसार सन्तोषजनक न होने पर कोई भी नियुक्ति सम्भव नहीं होती। परन्तु खेद का विषय है कि हमारे चुने जाने वाले विधायकों और मिनिस्टरों के लिए इस प्रकार की जांच को कोई व्यवस्था नहीं है। इसलिए इसके अभाव में अस्वस्थ और संदिग्ध आचार वाले व्यक्ति भी चुने जाते हैं जो बाद में बड़े हानिकारक सिद्ध होते हैं। आज की राजनीति इसलिए एक तमाशा सी हो गई है। यूं कह सकते हैं कि आज की राजनीति और भ्रष्टाचार पर्याय बन गए हैं।

भ्रष्टाचार ने अंगड़ाई ली और १८ मास की अल्प अवधि में जनता दल की दो सरकारें नाना विधि उचित-अनुचित गठबन्धन करके टूटी और पांच वर्ष की पूरी अवधि समाप्त होने से पूर्व ही लोकसभा भंग हुई। देश का शासन चलाने के निमित्त और कोई संवैधानिक विकल्प न होने के कारण बड़े सोच विचार के पश्चात् लोकसभा के चुनाव की घोषणा कर दी गई। इस मध्यावधि चुनाव में अरबों रुपये के खर्च का भार जनता पर इस विकट समय में पड़ा जबकि देश की आर्थिक स्थिति डांवाडोल है। कमरतोड़ महंगाई ने साधारण मध्यम श्रेणी के लोगों के जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया, तो बेचारे अभाव-ग्रस्त लोगों की तो बात ही क्या? परन्तु तथाकथित देश के कर्णधारों के तो वही ठाठ-बाट और वैभव का जीवन चल रहा है। "कोई मरे कोई जिए, सुथरा घोल पताशे पीए"

तरह-तरह के राग

मई माह में होने वाले चुनाव में सभी राजनीतिक दल अपने-अपने तौर पर सत्ता को हस्तगत करने की दौड़ में लगे हैं। कोई स्थायित्व का राग अलापने और देश की अखण्डता और एकजुटता का ढोल पीटकर नानाविध तालमेल करके अपना वोट-बैंक तैयार करने में तल्लीन है, तो कोई पद-दलितों पिछड़े वर्गों के लोगों को सामाजिक

(शेष पृष्ठ ६ पर)

कल्याण-मार्ग के पथिक बनें

हरिदत्त वि० प्र०

मानव जीवन के बहुत से मार्ग हैं। 'बहव: पन्था विततो देवयाना:।' वेद मन्त्र के इस प्रतीक से स्पष्ट है कि देवों अर्थात् विद्वानों के चलने के बहुत से मार्ग हैं। मनुष्यों के दो प्रकार मुख्य हैं—एक आर्य अर्थात् श्रेष्ठ यानी जो धर्म रास्ते पर चलते हैं, जो धर्मात्मा सदाचारी, परोपकारी आदि होते हैं और अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए किसी दूसरे को हानि, कष्ट-दु:ख और क्लेश नहीं पहुंचाते हैं और परोपकार के लिए स्वयं हानि उठा लेते हैं और दु:ख सहन कर लेते हैं। ऐसे व्यक्ति दूसरों के लिए ही जीते हैं 'परोपकाराय सतां विभूतय:' में नीतिकार ने उनके जीवन का सुन्दर चित्रण किया है। यही मर्यादाओं का पालन कर मर्यादा पुरुषोत्तम बन जाते हैं। ये 'अयं निज: परो वेति गणना लघुचेतसाम् । उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।' को साकार करने वाले होते है। 'ये 'सप्त मर्यादा: कवय: ततक्षु:' मे निर्धारित मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करते। यही कारण होता है कि इनकी वाणी बलवती होती है और जो कहते हैं वही करते भी हैं चाहे उसे पूर्ण करने के लिए उन्हें प्राण भी न्यौछावर क्यों न करने पड़ें। इसलिए तुलसीदास ने लिखा है कि 'प्राण जाहि पर वचन न जाहि। ऐसे महापुरुषों के उदाहरणों से हमारा इतिहास भरा पड़ा है। सत्यवादी हरीश्चन्द्र की गाथा लाखों वर्ष व्यतीत होने पर भी घर-घर में गायी जाती है। वर्तमान समय में भी जो व्यक्ति अपने वचन पर दृढ रहता है उसे सत्यवादी हरिश्चन्द्र कहा जाता है। इन्ही राजा हरिश्चन्द्र के वश में मर्यादा-पालन में एक से एक बढ़कर राजा हुए यहां तक कि श्री रामचन्द्र जी महाराज के नाम के साथ तो मर्यादा पुरुषोत्तम विशेषण 'यावच्चन्द्रदिवाकरौ' तक के लिए जुड़ गया। धन्य हैं श्रीराम, जिनके बारे में महर्षि वाल्मीकि को लिखते हुए परम सुखद अनुभूति हुई कि 'रामो द्विर्न भाषते'। ऐसे आर्य पुरुष ही कल्याण मार्ग के पथिक बना करते हैं। कल्याण मार्ग को ही श्रेयोमार्ग कहा जाता है। यही श्रेय पन्था जन्म-मरण के बन्धन से छूटने का एकमात्र उपाय है दूसरा कोई और नहीं है। इसलिए वेद ने बड़े जोरदार शब्दों में कहा कि 'तमेव विदित्वातिमृत्युमति नान्य: पन्था विद्यतेऽयनाय'। इस श्रेय मार्ग पर चलना आसान काम नहीं है। इसमें नाना प्रकार के प्रलोभन एवं विघ्न-बाधायें आती हैं जिनकी धीर पुरुष परवाह नहीं करते क्योंकि 'न्याय्यात् पथ: प्रविचलन्ति पदं न धीरा:'। महाराज भर्तृहरि के ये शब्द बहुत ही उपयोगी दिशा-निर्देश करते हैं।

आर्य पुरुषों के लिए वेद का आदेश है कि 'स्वस्ति पंथामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव। पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि ॥' अर्थात् श्रेष्ठ पुरुस सर्वदा कल्याण के मार्ग पर सूर्य और चन्द्रमा के अनुगामी बनें और बार-बार दान देने वाले, हिंसा न करने वाले और ज्ञानी विद्वानों के साथ मिलकर चलें।

यही है वह श्रेय मार्ग जिस पर चलने के लिए आर्य परमात्मा से प्रतिदिन दोनों समय प्रार्थना करते हैं कि—'ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम: उक्ति विधेम।' पूर्व मन्त्र में कहे 'जानता' शब्द के अनुसार 'विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्' अर्थात् जो परमात्मा सम्पूर्ण विद्यायुक्त और सम्पूर्ण प्रज्ञाता है, वह हमें राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए सुपथ (आप्त पुरुषों—'जानता' के मार्ग) से ले चले और इस मार्ग में आनेवाले 'जुहुराण और एन' अर्थात् कुटिलतायुक्त पापरूप कर्म से पृथक् रखे। यही जुहुराण और एन श्रेय मार्ग में सबसे बड़े बाधक हैं। इनसे बचने के लिए ही तो 'स्वस्ति पंथामनु चरेम' मन्त्र में कहा गया था कि 'पुनर्ददताघ्नता' अर्थात् बार-बार देते रहने और हिंसा न करने का स्वभाव बना लें अन्यथा राक्षस (जो हमेशा लेते ही लेते हैं और कभी देते नही) बन जायेंगे और स्वस्ति के मार्ग से भ्रष्ट हो जायेंगे। राक्षस वही तो होते हैं जो दूसरों को हानि, दु:ख कष्ट और क्लेश पहुंचाकर 'केवलाघ' बन जाते हैं। इसीलिए वेद ने मानव को सावधान करते हुए कहा कि 'केवलाघो भवति केवलादी' अर्थात् बांट कर न खाने वाला केवल पाप खाता है। अतएव ऋषियों ने 'बलिवैश्वदेव महायज्ञ' प्रतिदिन करने का विधान कल्याण मार्ग के लिए किया है। जिसे सम्पन्न कर 'सर्वभूतेषु चात्मानं' की अनुभूति कर सकता है।

ये आर्य पुरुष 'आर्य: ईश्वरपुत्र:' के अनुसार अपने को ईश्वर का पुत्र मानते हैं और ईश्वर को पिता और माता मानकर उसकी कृपा का वरदान मांगते हैं कि 'त्व हि न: पिता वसो: त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे।' और उनका उपस्थान पाकर निर्भय हो जाते हैं तथा अन्यायी शक्तिशाली से भी नहीं डरते। क्योंकि इन्हें विश्वास होता है कि 'सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते। त्वामभि प्रणोनुमो जेतारमपराजितम् ।।' और इसी विश्वास के कारण यह घोषणा करते हैं कि 'अहमिन्द्रो न पराजिग्ये न अवतस्थे कदाचन।' अर्थात् मैं इन्द्र इन्द्रियों का स्वामी हूं। मैं कभी पराजित नहीं होता और न कोई मुझे दबा सकता हं क्योंकि परमात्मा इन्हें उपदेश देता है कि 'मा भे: मा वृथा:', 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।' इसीलिए ये गतिशील पुरुष हमेशा इसी प्रयत्न में लगे रहते हैं कि सारे संसार को आर्य बनायें और घर-घर में वेद का पठन-पाठन और श्रवण-श्रावण आरम्भ हो सके और इनकी इच्छा 'सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभाग्भवेत् ।।' अर्थात् 'सुखी बसे संसार सब दुखिया रहे न कोय। यह अभिलाषा हम सब को भगवन् पूरी होय ।। दिल दया उदारता मन में प्रेम अपार। दूध, पूत, धन धान्य से वंचित रहे न कोय ।। इस प्रकार पहली तरह के मनुष्य श्रेष्ठ होते हैं और इस प्रकार हम देखते हैं कि दो प्रकार के मनुष्यों में से पहली तरह के व्यक्ति ही श्रेष्ठ बनकर श्रेय मार्ग के पथिक बन जाते हैं। इस लिए हमें भी कल्याण मार्ग का पथिक बनने के लिए निरन्तर 'चरैवेति चरैवेति' को ध्यान में रखते हुए आगे ही आगे बढ़ते जाना चाहिये।

आइये, अब दूसरी तरह के मनुष्यों—जिनकी संज्ञा 'दस्यु' होती है, क्योंकि वे हर समय हिंसक कार्यों में लगे रहते हैं, के सम्बन्ध में भी कुछ विचार कर लें। ये लोग प्रेय मार्ग को अपनाते हैं, क्योंकि यह मार्ग प्रिय और सरल लगता है तथा इस पर चलने के लिए विशेष परिश्रम नहीं करना पड़ता। इसीलिए ये लोग अपने जीवन का उद्देश्य —यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत्। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुत:।' अर्थात् जब तक जीओ सुख से जीओ और उधार लेकर घी पीओ। भस्म हुए शरीर का पुन: आना संभव नहीं होता है। ये लोग अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए दूसरों को हानि पहुंचाने में भी संकोच नहीं करते। शायद अतएव भर्तृहरि भी इनको उपयुक्त संज्ञा देने में 'ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितम् ते के न जानीमहे' असमर्थ रहे हैं। ऐसे लोगों को चावलों की तरह रांध देने की आज्ञा वेद में परमात्मा ने 'विजानीह्यार्यान् ये च दस्यवो बर्हिष्मते रंधया शासदव्रतान्।' आदि मन्त्र में राजा को दी है। मन्त्र में कहा गया है कि 'हे राजन्! तुम आर्यों और दस्युओं को भली प्रकार जान लो। और जो अव्रती— —अर्थात् जो किसी प्रकार के नियम का पालन नहीं करते—ऐसे दस्युओं को रांध दो। जब तक दस्युओं का बल बढ़ा रहता है ये श्रेष्ठ मानवों को पीड़ा, दु:ख और हानि पहुंचाते रहते हैं। इन्हीं को राक्षस भी कहा जाता है। ये दोनों श्रेणियो के मनुष्य हमेशा रहते हैं और इनमें देवासुर संग्राम चलता रहता है। जब असुरों का प्राबल्य बढ़ जाता है और जनता त्राहि त्राहि करने लगती है तब किसी योग्य व्यक्ति को, जिसकी इच्छा इनको समाप्त करने 'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय' की होती है, तो ऋषि मुनि उसे प्रोत्साहित करते हैं और उसे सब प्रकार का सहयोग देते हैं जैसा कि त्रेता युग में महर्षि विश्वामित्र ने श्री रामचन्द्र जी और उनके भ्राता श्री लक्ष्मण को दिया। परिणामस्वरूप दोनों भाइयों ने हनुमान आदि की सहायता से राक्षसराज रावण का वध कर पुन: राम-राज्य की स्थापना की। जिस के कारण बहुत समय तक यहां के राजा गर्व के साथ घोषणा करते रहे—'न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यप:। नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुत:।' अर्थात् मेरे राज्य में

(पृष्ठ शेष ५ पर)

संसद के निर्वाचन के लिए आर्यों का आह्वान

हे वेद धर्म के अनुयायी हे राम-कृष्ण की सन्तानो।
संसद् के इस निर्वाचन में क्या करना है उसकी ठानो॥
भारत की अखण्डता, सभ्यता के रक्षक हैं कौन उनको जानो।
हैं धर्म देश के भक्त कौन असली नकली को पहचानो॥
सत्यार्थ प्रकाश में दयानन्द ने आर्य राज्य था बतलाया।
पर खेद है कि यह राज्य विधर्मी और अनार्यों ने पाया॥
जिस वेद धर्म के लिए दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम।
कर गए समर्पित प्राणों को त्यागे सुख सम्पत्ति और धाम॥
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का वेदों का मन्त्र था बतलाया।
विश्व तो क्या यह आर्यावर्त भी आर्य नहीं बनने पाया॥
संसार में मुस्लिम, ईसाई व कम्युनिस्टों के राज्य बहुत।
है महा शोक यह आर्य राष्ट्र बन सका न अपना ही भारत॥
जग जननी जन्मभूमि भारत माता को खुद ही काट दिया।
सत्ता की भूख मिटाने को टुकड़े-टुकड़े कर बांट लिया॥
यह आर्यावर्त महान् देश भारत से हिन्दुस्तान बना।
इण्डिया बना फिर बंगलादेश इस्लामी पाकिस्तान बना॥
फिर ऐसे षड्यन्त्र हैं कि इस देश का पुनः विभाजन हो।
आरक्षण, जाति, सम्प्रदाय पर आर्य जाति का विघटन हो॥
मुस्लिम राष्ट्र बनाने को मुस्लिम देशों से धन आता।
जो हिन्दू धर्म का परिवर्तन व देश में दगे करवाता॥
पंजाब, असम, कश्मीर प्रान्त में नित हत्यायें होती हैं।
बालक, बूढ़े, माता-बहनें बिलख-बिलख कर रोती हैं॥
कश्मीर के लाखों हिन्दू जन शरणार्थी बनकर भटक रहे।
अपने ही देश में धर्म—देश भक्तों ने भारी कष्ट सहे॥
नियम तीन सौ सत्तर ने यह सारा कष्ट बढ़ा डाला।
भारत के शीश इस काश्मीर को पाकिस्तान बना डाला॥
वोटों के लिए इन्हीं तत्त्वों को बढ़ा रहे हैं नेतागण?
शासन की भूख मिटे इनकी चाहे भारत का हो विघटन॥
जनता दल के व कांग्रेस के पथ दर्शक शाही इमाम।
इनके घोषणा पत्रों में है इमाम का ही यह पैगाम॥
बाबर की मस्जिद हटे नहीं, मन्दिर न राम का बनवाना।
पुलिस, फौज व शासन में मुस्लिम आरक्षण करवाना॥
जनता दलों व कांग्रेस ने यह सुझाव सब मान लिए।
इस भांति देश विभाजन के षड्यन्त्र पुनः यह ठान लिए॥
इनके शासन के द्वारा ही जो कांड हुआ अयोध्या में।
ऐसी निर्मम भीषण हत्या शायद ही हुई हों दुनियां में॥
श्रीराम जन्म भूमि विवाद इन लोगों ने ही बढ़ाया है।
मुस्लिम वोटों के लिए खून हिन्दू जनता का बहाया है॥
इसलिए संभल जाओ चेतो यह अन्याय मिटाने को।
इस निर्वाचन में देश-धर्म भक्तों की जीत कराने को॥
पहले तो राज बदलते थे तलवार तीर व तोपों से।
बिन युद्ध राज्य बदलते हैं अब तो केवल मतपत्रों से॥
इस अवसर पर यदि चूक गये तो फिर भारी पछताओगे।
स्वधर्म-स्वदेश बचाने का 'भास्कर' अवसर नहीं पावोगे॥

—भगवती प्रसाद सिद्धान्त भास्कर
१४३०, पं० शिवदीन मार्ग, कृष्णपोल, जयपुर।

यज्ञशाला के लिए दान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रांगण में पं० रघुवीरसिंह जी शास्त्री की स्मृति में यज्ञशाला का निर्माण किया जा रहा है। श्री सोमपाल जी सदस्य राज्य सभा तथा रोहतक वासी श्रीमती सुरक्षादेवी आर्या इस पवित्र कार्य हेतु सभा को धनसंग्रह में सहयोग दे रहे हैं। उन्होंने स्वयं दान देकर अन्य दानियों से दान प्राप्त किया है। सभा की ओर से दान दाताओं का धन्यवाद।

—रामानन्द सिहल,
सभा कोषाध्यक्ष

आदर्श देवी आर्या सीता

(वेदोपदेशक ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति
शास्त्री सदन-११/१२४ पश्चिम आजादनगर दिल्ली-११००५१)

जिस भांति गीता है हमारी सब जगत् की पाठिका।
उस भांति सीता भी बनो नारी जगत् अध्यापिका॥
भारत की प्यारी देवियो! सीता का क्या आदर्श था।
कौन सा वह धर्म था जिसमें छिपा उत्कर्ष था॥
मिथिलेश राजा की सुता भय कष्ट कुछ नहीं जानती।
कटक भरे वन में फिरी कुछ भी न संकट मानती॥
रावण ने कारागार में जो त्रास तुझको था दिया।
तेरे अतुल बल तेज से कुछ ह्रास तेरा ना किया॥
हनुमान तुझको खोजते लंकापुरी में जब गये।
तू वाटिका में नहीं मिली पपा सरोवर धागये॥
देखा वहां हनुमान ने संध्या भजन में मग्न थी।
प्रभु जानने में जानकी ने थी लगाई लग्न थी॥
वनवास भोगा राम ने पितुमात के आदेश से।
सीता चली वनवास को दोबारा पति आदेश से॥
वनवास के इतिहास में सीता ही बाजी ले चली।
आदर्श पतिव्रत धर्म का इतिहास में लिखवा चली॥
ऐसा अनूठा खेल क्या इतिहास ने खेला कहीं।
जिसकी न सानी आज तक कोई बनी जग में कहीं॥
सीता समान न आज तक कोई भी उपमा है हुई।
सीता की गाथा आज भी सिरमौर बनकर रह गई॥
पथ-प्रदर्शक मानकर सीता को तुम चलती चलो।
आर्य मर्यादा यही इस मान पर मरती चलो॥
सन्तान के निर्माण से बढ़कर न कोई कार्य है।
कर्तव्य पथ पर बढ चलो बनना बनाना आर्य है॥
भगवान् भारतवर्ष को सीता सी देवी दीजिए।
इस राष्ट्र की सब नारियों में आत्मबल भर दीजिए॥

(पृष्ठ ४ का शेष)

न तो कोई चोर है, न ही कजूस है और शराबी भी नहीं है। यज्ञ न करने वाला, बांट कर न खाने वाला और कोई मूर्ख नहीं है। कोई व्यभिचारी नहीं है तो व्यभिचारिणी कहां हो सकती है।

आर्यों का यह उत्कर्ष स्थायी न रह सका और द्वापर युग के अन्त में पुनः जरासन्ध, कंस और दुर्योधन जैसे पापियों का जोर हो गया। अन्ततः इन सब को समाप्त करने और पुनः धर्म की स्थापना के लिए योगिराज श्री कृष्णचन्द्र जी को आगे आना पड़ा। जिसमें वे पूर्ण सफल हुए।

दोनों मार्गों—श्रेय और प्रेय पर चलने वालों में अन्तर स्पष्ट हो गया है। अतः 'जीओ और जीने दो' को सार्थक बनाने के लिए एक ही रास्ता है श्रेय का। आओ हम सब कल्याण मार्ग के पथिक बनें और भव-सागर से पार हो जावें। ओम् शम्।

जिला महेन्द्रगढ़ में आर्यसमाज के प्रचार मे जागृति

(लालचन्द विद्यावाचस्पति श्री मंगल जयकोर आध्यात्मिक ज्ञान आश्रम खेडकी पत्रा० बैरावास जि० महेन्द्रगढ)

आर्यसमाज ग्राम कुन्जपुरा जि० महेन्द्रगढ़ में दिनांक २६ व २८ अप्रैल १९९१ को वार्षिक उत्सव श्री छोटेलाल जी प्रधान आर्यसमाज (पुराना) नारनौल की अध्यक्षता में बहुत ही आकर्षक और सुन्दर विधि से मनाया गया। दिनाक २६-४-९१ को प्रातः यज्ञ से उत्सव प्रारम्भ हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा (हरयाणा) के प० ईश्वरसिंह तूफान की भजन मण्डली ने बहुत ही मनोहर कायक्रम प्रस्तुत किया। प्रद्युम्न जी 'आचार्य' गुरुकुल खानपुर (म० गढ) ने अपने पीयूष-प्रवचनों से श्रोताओं को मन्त्र-मुग्ध किया।

दिनांक २८-४-९१ को प्रात.कालीन कायक्रम के बाद मध्यकाल में शराबबन्दी और कुरीतियो का खण्डन विषय पर सम्मेलन में शराब-बन्दी और कुरीतियों का खण्डन विषय पर सम्मेलन हुआ। आज के मंच-संयोजक डा० विश्वम्भर दयाल जी मन्त्री आर्यसमाज बाछोद थे। इस कार्यक्रम में मच-संयोजक महोदय के आदेशानुसार थोड़े ही समय में श्री लालचन्द 'विद्यावाचस्पति' (मंगल जयकोर आध्यात्मिक ज्ञान आश्रम खेडकी) ने शराबबन्दी और कुरीतियों के खण्डन विषय पर अपना गाना प्रस्तुत किया।

गाना

तर्ज—हरयाणवी (भाषा हरयाणा)

बेकार खर्च सब बन्द करो, कहती तेरी नार तनै।
तेरी एक समझ में आवै कोन्या मैं समझाती हर बार तनै ॥टेक॥

दारू हूके सुलफे गांजा बुरे-बुरे ऐब कमावै सै।
म्हारी खून पसीने की कष्ट कमाई को मिट्टी बीच मिलावै सै।
शादी और काजों में पीया पाणी ज्यू रकम बहावै सै।
लड़ाई झगडे कर भाइयों से क्यू अपना घर लुटवावै सै।
आधी उमर फंस बुरे ऐबों में कर दई सै बेकार तनै ॥१॥

तू मैंने तो समझावण लागी तू के मेरे से घाट दिखै।
कडी-तोडिए झांझड पाती के जमा रही सै ठाठ दिखै।
तगडी कर्णफूल बाजूबन्द कितने ही आटपार दिखै।
तेरी नई टूमों का नाम न जाणूं उठ रहा झरनार दिखै।
मैंने तो समझावण लागी अपना किया न विचार तनै ॥२॥

यह रोला करो बन्द पीया मेरी एक समझ में आवै सै।
आर्यसमाज शिक्षा दे अच्छी स्कीम बतावै सै।
बचत योजना करो पति नित्य उपदेशों में समझावै सै।
आये बुढापे में काम ये वेसे सबको यों फरमावै सै।
इन बातों पर गौर किया ना बैठ कभी भरतार तनै ॥३॥

पीछे की सब जाणे दे प्यारी अब नहीं समय बितायेंगे।
बेकार खर्च और बुरे ऐबों से अपने दाम बचायेंगे।
गुरुकुलों में भेज सन्तान को वैदिक शिक्षा दिलायेंगे।
विद्या पढ़ के सुन प्यारी अब घर को स्वर्ग बनायेंगे।
ना सुना लालचन्द खेड़की वाले का, बैठ वैदिक प्रचार तनै ॥४॥

इस कार्यक्रम से श्रोताओं पर बहुत प्रभाव पडा तथा छः व्यक्तियों ने मंच पर आकर प्रतिज्ञा की कि हम जीवन भर शराब नहीं पीयेंगे। इन छः व्यक्तियों के नाम इस प्रकार हैं—श्री मनीराम, श्री बस्तीराम, श्री जगदीशप्रसाद, श्री सुरेशचन्द्र, श्री जगतसिंह तथा श्री रामौतार। दिनांक २९-४-९१ को इन छः व्यक्तियों ने यज्ञ करवाया तथा यज्ञोपवीत लेकर पुनः प्रतिज्ञा की। यज्ञ के पुरोहित श्री महावीर आर्य तथा श्री जगमालसिंह जी बेघड़क थे। श्री छोटेलाल जी प्रधान ने अपने प्रवचनों में यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला। श्री लालचन्द 'विद्यावाचस्पति' ने यज्ञोपवीत का महत्त्व समझाया तथा देवऋण, पितृऋण तथा ऋषि ऋण के विषय में बताया।

श्री छोटेलाल जी प्रधान आर्यसमाज (पुराना) नारनौल ने बहुत उत्साहपूर्वक इस कार्यक्रम में भाग लिया तथा नारनौल से कुन्जपुरा तक अपनी निजी बस में उत्सव में भाग लेने वाले सभी सज्जनों को नि शुल्क पहुंचाया तथा वापिस नारनौल लाया गया। वैदिक नारों, ऋषि जयगान इत्यादि के गुंजार से यह कार्यक्रम सुसम्पन्न हुआ।

सकलनकर्ता—महात्मा सुशीलदेव श्री मंगलभवन, खेड़की पत्रालय-बैरावास जि० महेन्द्रगढ़

पियक्कड़ों की बीवियों को पेंशन

विभिन्न दलों के समर्थक इन दिनों घर-घर जाकर चुनाव प्रचार कर रहे हैं। पिछले दिनों जब अम्बाला छावनी में एक दल के समर्थक अपने प्रत्याशी की हिमायत में घर-घर जा रहे थे तो एक महिला अपने शराबी पति का दुखडा ही रोने बैठ गयी। उसका कहना था, "मेरा आदमी शराबी है, मुझे मारता-पीटता है, पैसे भी नहीं देता। मैं कैसे गुजारा करूं? जब सरकार बूढों और विधवाओं को पेंशन दे सकती है तो उन औरतों को भी पेंशन मिलनी चाहिये जिनके आदमी पियक्कड़ हों।"

उसकी बात सुनकर कार्यकर्ता सकते में आगये, परन्तु महिला कहने लगी कि यदि आपकी पार्टी ऐसा कुछ कर सके तो राम-कसम वोट-ही-वोट पड जायेंगे आपको।

शोक समाचार

महाशय जगमालसिंह बेघड़क के फूफा जी श्री माड़ूराम जी डेरोली जाट निवासी का स्वर्गवास २२-४-९१ को ७५ वर्ष की आयु में हो गया। आर्यसमाज सिलारपुर तोताहेडी शोक प्रकट करता है।

मामचन्द आर्य नम्बरदार

(पृष्ठ ३ का शेष)

न्याय दिलाने हेतु मण्डल आयोग की सिफारिशों के आधार पर आरक्षण का डमरू बजाकर वोट बटोरने में लगा है; तो अन्य कोई ग्रामीण-किसानों के हितों की डफली बजाकर वोट जुटाने में व्यस्त है, तो अन्य राजनीति में नैतिकता लाने और शुद्ध राष्ट्रीयता के मधुर गीत गाने वाले राम नाम की बांसुरी बजाकर मतदाताओं को मोह रहा है।

याद रहे ये सब राजनीतिक मदारी हैं, इन सब के वाद्य यन्त्रों की ध्वनि में कोई सार नही है। इन सभी के घोषणा-पत्र भले ही आकर्षक हों परन्तु ये सब देश में विघटन की आग और सम्प्रदाय का विष फैला रहे हैं। देश की अखण्डता की दुहाई देने वाले ही देश को अपनी गलत नीतियों के खण्डित करने वाले भिन्न-भिन्न वर्ग के लोगों में वैमस्य की भावना और मतभेद व घृणा की खाई पैदा करते हैं जो पहले कभी देखने में नहीं आई थी। शहरी और देहाती आदमी का चोली-दामन का सा सम्बन्ध रहा है। एक दूसरे के पूरक हैं। आज तक ये दोनों प्रकार के लोग अपने सद्भाव व प्रेम से रहते रहे परन्तु तथाकथित कुर्सी के भूखे नेताओं ने इन दोनों में भी ऐसी खाई पैदा कर दी है कि जिस कारण एक दूसरे से कटने लगे हैं।

यह सब देश की अखण्डता व स्वतन्त्रता के घातक और विनाश-कारी चिन्ह है। देश की ऐसी भयंकर स्थिति में सब देशभक्तों, विचार-शील लोगों विशेषकर युवावर्ग का एक भारी उत्तरदायित्व है कि इन सबके आकर्षक परन्तु विनाशकारी हथकंडों से सावधान होकर अपने मत का प्रयोग करें और देश को अराष्ट्रीय तत्वों के हाथों में जाने से बचाने का पूर्ण प्रयत्न करें।

अतः इस मास में लोक सभा तथा तथा कुछ विधान सभाओं के चुनावों में उम्मीदवारों को मत देते समय बड़े सतर्क और सावधान होने की नितान्त आवश्यकता है। उन्हें गम्भीरतापूर्वक प्राचीन मूल्यों को ध्यान में रखते हुए किसी प्रकार के प्रलोभन में आये बिना स्वतन्त्रतापूर्वक अपने बहुमूल्य मत का सही उपयोग करना चाहिए। देश के गौरव को बढ़ाने वाली नीतियों और जनता के हितों के कार्यक्रमों को दृष्टि में रखकर काम करने वाले आधारवान् योग्य व्यक्ति को वोट देना ही सच्ची देशभक्ति है।

पता—H-६४, अशोक विहार-I, दिल्ली-५२

वेद में ईश्वर-विषयक प्रश्नोत्तर

(पं० धर्मदेव "मनीषी" वेदतीर्थ, गुरुकुल कालवा)

यजुर्वेद २३ अध्याय के ५१-५२ वे इन दो मन्त्रों में ईश्वर विषय में प्रश्नोत्तर किये हैं। ५१वें मन्त्र में प्रश्न किये हैं और ५२वें मन्त्र में उसके उत्तर दिये हैं। ईश्वर-विषय में दो प्रश्न—

केष्वन्त: पुरुषऽआ विवेश कान्यन्त: पुरुषेऽअर्पितानि।
एतद् ब्रह्मन्नुप वल्हामसि त्वा कि ँ स्विन्न: प्रति वोचास्यत्र॥

अर्थ—हे (ब्रह्मन्) ब्रह्म के ज्ञाता विद्वान्! (केषु) किनके (अन्त:) मध्य में (पुरुष:) सर्वत्र पूर्ण परमेश्वर (आ+विवेश) प्रविष्ट हो रहा है? (कानि) कौन (पुरुषे) परमेश्वर के (अन्त:) मध्य में (अर्पितानि) स्थापित हैं? जिससे हम (उपवल्हामसि) प्रधान पुरुष बनें। (एतत्) यह (त्वा) तुझसे पूछते हैं, वह (किंस्वित्) क्या है? (अत्र) इस विषय में (न:, प्रति) हमें (वोचासि) बतलाइये।

भावार्थ—चारों वेदों के ज्ञाता विद्वान् (ब्रह्मा) से अन्य जन इस प्रकार पूछें—हे वेदों के ज्ञाता विद्वान्! पूर्ण परमेश्वर किनमें प्रविष्ट है? और कौन उसके अन्तर्गत है? यह बात आपसे पूछी है, सो यथार्थता से बतलाइये, जिससे हम प्रधान पुरुष बन।

ऊपर कहे मन्त्र दो प्रश्नों के उत्तर—

पञ्चस्वन्त: पुरुषऽआ विवेश तान्यन्त: पुरुषऽअर्पितानि।
एतत्त्वात्र प्रतिमन्वानोऽअस्मि न मायया भवस्युत्तरो मत्॥

अर्थ—हे जिज्ञासु! (पञ्चसु) पांच भूतों वा तन्मात्राओं के (अन्त:) मध्य में (पुरुष:) पूर्ण परमात्मा (आ+विवेश) अपनी व्याप्ति से प्रविष्ट हो रहा है, (तानि) वे पांच भूत वा तन्मात्राये (पुरुषे) पूर्ण परमात्मा के (अन्त:) मध्य में (अर्पितानि) स्थापित हैं (एतत्) यह (अत्र) इस विषय में (त्वा) तुझे (प्रतिमन्वान:) समझाने वाला मैं समाधाता=शंका का समाधान करनेवाला हूं। यदि (मायया) प्रज्ञा=बुद्धि से युक्त तू है, तो (मत्) मुझसे (उत्तर:) उत्कृष्ट समाधान करनेवाला कोई नही है, ऐसा जान।

भावार्थ—परमेश्वर उपदेश करता है—हे मनुष्यो! मुझसे बढ़कर कोई नहीं है। मैं सबका आधार हूं और सबको व्याप्त करके धारण करता हूं। मेरे व्याप्त होने से सब वस्तुये अपने-अपने नियम में स्थित हैं। हे सर्वोत्तम योगी विद्वानो! आप मेरे इस विज्ञान को सब मनुष्यों को बतलाओ।

पूर्व मन्त्र में जिज्ञासु के विद्वान् से प्रश्न थे—

हे चतुर्वेदविद् विद्वान् हमें उपदेश कीजिये कि पूर्ण परमेश्वर किन में प्रविष्ट है? और उस पूर्ण पुरुष प्रभु में कौन-कौन स्थित है? कृपया यह हमें यथार्थ रूप से बतलाइये। जिससे इसे जानकर हम समर्थ प्रधान पुरुष बनें।

दूसरे मन्त्र में उक्त प्रश्नों के उत्तर—

परमेश्वर उपदेश करता है कि हे मनुष्यो! पांच भूतों एवं तन्मात्राओं में मैं अपनी व्याप्ति से प्रविष्ट हूं। पांच भूत एव तन्मात्राय मुझमें स्थापित हैं। तात्पर्य यह है कि मैं सबका आधार हूं। मेरी व्याप्ति से ही सब वस्तुये अपने-अपने नियम में स्थित हैं। इस लोक में तुम्हें प्रत्यक्ष समझाने वाला एव शका का समाधान करनेवाला मैं हूं। यदि जिज्ञासु बुद्धि से युक्त होकर मुझसे समाधान चाहता है तो मुझसे उत्तम समाधान करनेवाला कोई नही। सब योगी विद्वान् लोग परमेश्वर के इस विज्ञान का सब मनुष्यों को उपदेश करें।

महर्षि दयानन्द महाराज ने "आर्योद्देश्य रत्नमाला" ग्रन्थ में ईश्वर का लक्षण इस प्रकार किया है—

"जिसके गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप सत्य ही हैं जो केवल चेतन मात्र वस्तु है तथा जो एक अद्वितीय सर्वशक्तिमान् निराकार, सर्वत्र व्यापक अनादि और अनन्त आदि सत्य गुणवाला है और जिसका स्वभाव अविनाशी, ज्ञानी, अनादि, शुद्ध, न्यायकारी दयालु और अजन्मादि है। जिसका कर्म जगत् की उत्पत्ति पालन और विनाश करना तथा सर्वजीवों को पाप, पुण्य के फल ठीक-ठीक पहुंचाना है, उसको ईश्वर कहते हैं।"

आर्यसमाज के दूसरे नियम में भी ऋषि दयानन्द जी ने कहा—

"ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

चण्डीगढ़ में पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य, विख्यात वैदिक विद्वान् तथा ऋषि मिशन के लिये समर्पित युवा मनीषी पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का निर्वाण शताब्दी समारोह दिनांक २९, ३० जून को चण्डीगढ़ को समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं की ओर से डी.ए.वी. कालेज, सैक्टर १०, के परिसर में विशाल स्तर पर केन्द्रीय आर्य सभा चण्डीगढ़ के तत्त्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर देश के सर्वमान्य नेता, आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी, विद्वान् वक्ता तथा गायक पधारेंगे और प० गुरुदत्त के जीवन एव व्यक्तित्व को उजागर करने वाले अनेक कार्यक्रम रक्खे जायेंगे। इस अवसर पर विद्वानों के भाषण, विचार गोष्ठिया, कवि सम्मेलन, भाषण प्रतियोगिताय भी आयोजित की जायेंगी।

निवेदक :
किशनलाल आर्य
कार्यकारी अध्यक्ष, स्वागत समिति शताब्दी समारोह, चण्डीगढ़
प्रधान केन्द्रीय आर्यसभा, चण्डीगढ़

एक शराबी पति से पत्नी का अनुरोध

(रचियता—वैद्य मगलदेव जी)

मान जा हो पिया पीना छोड दे शराब,
नशा करे नाश यह तो होता है खराब।

खेत में कमावो करो कार घर की।
बैठकर कुसग में किस की बजा फरकी।
नारी और नर की हो से मोती केसी आब॥१॥

करके ने बरबाद छोड़े बालक याणा ने।
सब तरया से खो दे तेरे पीने खाने ने।
मैं फिरू दो दो दाणा ने तू बना फिरे नवाब॥२॥

छोड़ दे शराब ना मैं खो दूंगी कूवां।
कई बार कह लिया तने नशे में डूबां।
बेइज्जती के सिवा इसमें कौन से लाभ॥३॥

चौबीस घन्टे रखै सै तू बोतल आंट में।
पैसा धेला जो था खोया तेरो गाठ में।
कई बार खाट में करे टट्टी और पेशाब॥४॥

आज तलक तो मैं बोली कोन्या देख तेरी स्याहमी।
आंख हो गई नीची तेरी सुनकर बदनामी।
सह तरियां से जामी मेरी छाती कै मां डाब॥५॥

बसना बसाना है तो अयोगता करो दूर।
एक बार मगवा करके पढो तो जरूर।
शिक्षा में भरपूर मगल की किताब॥६॥

प्रस्तुतकर्ता—जयपालसिंह आर्य सभा भजनोपदेशक

ग्राम पंचायत रानीला (भिवानी) का प्रेरणाप्रद एवं सराहनीय पग

ग्राम रानीला जिला भिवानी में कई वर्षों से शराब का ठेका था जो प्रतिवर्ष लाखों रुपयों की बोली पर छूटता था। इससे गांव का भाईचारा एवं शान्त वातावरण खराब होता था। सज्जन मनुष्य एवं महिलाएं विशेष रूप से शराबियों से तंग रहते थे। मजदूर किसान अपने गाढे पसीने की कमाई को बुरी तरह लुटा रहे थे।

गांव के बहादुर एवं न्यायकारी सरपंच चौ० बलवन्तसिंह पूर्व सैनिक ने सन् १९९० में समय पर सितम्बर मास से पहले पंचायत का रेजूलेसन पास कर भेज दिया। ठेकेदार को चेतावनी दे दी कि अगले वर्ष गांव में शराब का ठेका नहीं खुलने देंगे। चाहे हमें कुछ भी कुर्बानी करनी पड़े। दो तीन बार सरपंच साहब अपने सहयोगी पंचों को लेकर चण्डीगढ़ एक्साईज कमिश्नर के सामने पेश हुए। अन्त में सरकार को भी चेतावनी देनी पड़ी कि अगर जबरन इस बार गांव में ठेका खोला तो हम धरना देने पर बाध्य होंगे।

पंचायत के संघर्ष के परिणाम स्वरूप १-४-९१ से ठेका बन्द हो गया। श्री देशराम पंच, सत्यबीर पंच आदि एवं उत्साही नवयुवक महावीरसिंह एम. ए. का विशेष योगदान रहा। सारे गांव के नर-नारियों ने पंचायत का धन्यवाद किया। वास्तव में रानीला गांव की पंचायत का यह प्रेरणाप्रद एवं सराहनीय कार्य रहा। अन्य गांव की पंचायतों ने भी उपरोक्त कार्य से प्रेरणा लेकर जिस भी गांव में यह पाप का अड्डा है उसे बन्द करवायें। शराब सब पापों की जड़ है। शराब से सर्वनाश हो रहा है। शराब से कर लो किनारा वरना जीवन है अंधियारा।

—अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

आवश्यक सूचना

हमने ९८ सत्याग्रहियों की ओर से जो दूसरा दावा सुप्रीम कोर्ट में किया था उसकी पेशी ६-५-९१ थी। इस पेशी पर भारत सरकार ने जवाब दावा पेश कर दिया जो कि २८ पृष्ठ का है। भारत सरकार के जवाब दावे का जवाब हमारा वकील तैयार कर रहा है। १०-५-९१ से सुप्रीम कोर्ट के दो मास के गर्मी के अवकाश हो गये हैं। अब तो छुट्टियों के बाद ही एक पेशी जुलाई के अन्त में लगेगी। इस पेशी पर हमारे वकील और सरकारी वकील के बीच बहस होगी। दोनों तरफ को बहस सुनने के पश्चात् जो निर्णय होगा सुप्रीम कोर्ट सुना देगा। एक मोटे अनुमान के अनुसार अगस्त के अन्तिम सप्ताह या सितम्बर में निर्णय अवश्य हो जाएगा। —म० भरतसिंह

संयोजक, हैदराबाद सत्याग्रह सम्मान पैन्शन समिति।

अरे ये आग है और शक्ल इसकी पानी है।
शराब नाम की इस शै ने जान खानी है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न० २३२०/७३ रजि. न० P/RTK-४० ७२२ सृष्टिसवत् १,९६, ०८, ५३, ०९१

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक २५ २१ मई, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन की अपील

आज (२८-४-९१) यहां आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन द्वारा आयोजित एक सभा स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में आर्यसमाज, हनुमान रोड में सम्पन्न हुई। इस सभा में दिल्ली के सभी आर्यसमाजों के प्रतिनिधि बुलाये गये थे। सभा का विषय था "मई १९९१ के लोकसभा के चुनाव में आर्यसमाज की भूमिका।"

इस सभा में बुद्धिजीवी सम्मेलन के संयोजक डा० प्रशान्त वेदालंकार ने प्रमुख वक्ता के रूप में देश की वर्तमान राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश डाला और देश के समस्त आर्यसमाजों से अपील की कि वे मई १९९१ के लोकसभा चुनाव में अपने मत का अत्यन्त विवेकपूर्ण ढंग से उपयोग करें। डा० प्रशान्त वेदालंकार ने उस दल को अपना मत देने के लिए कहा—

(१) जो भारत की एक ही संस्कृति मानता हो। संविधान में उल्लिखित सामाजिक संस्कृति का विरोध करता हो।

(२) जो सम्प्रदाय, धर्म या जाति के आधार पर तुष्टीकरण की नीति का विरोधी हो। अल्पसंख्यकों के व्यक्तिगत कानूनों तथा शिक्षा संस्थाओं में विशेषाधिकारों को समाप्त करने का वचन दे।

(३) जो अल्पसंख्यक आयोग के स्थान पर मानवाधिकार आयोग की स्थापना करे।

(४) जो राष्ट्र एवं समाज के निर्माण, विकास तथा कल्याण के लिए सब नागरिकों के लिए समान आचार संहिता का पक्षधर हो।

(५) जो जाति, सम्प्रदाय या पंथ निरपेक्ष रहकर आर्थिक तथा शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े व्यक्तियों के विकास की घोषणा करे।

(६) जो कश्मीर आदि राज्यों का विशेष दर्जा समाप्त कर उसे अन्य राज्यों के समकक्ष समानता का दर्जा प्रदान करने का वचन दे।

(७) जो भारतीय संस्कृति तथा ऐतिहासिक महापुरुषों के गौरव को अक्षुण्ण रखने का व्रत ले।

(८) क- जो हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षा तथा प्रशासन-कार्य का माध्यम बनाने पर बल दे।

ख- संस्कृत की शिक्षा को अनिवार्य घोषित करे।

(९) जो गोरक्षा हेतु गोवध पर वैधानिक प्रतिबन्ध लगाने पर बल दे।

(१०) क- जो जाति, सम्प्रदाय या पंथ के आधार पर किसी का मत न मांगे।

ख- जो धन और हिंसक शक्ति के बल पर चुनाव न लड़े।

(११) जिसके प्रत्याशी सच्चरित्र, धार्मिक, समाजहितैषी व प्रखर राष्ट्रवादी हों।

सभा में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के महामन्त्री स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती तथा आर्य वीर दल के भूतपूर्व अधिकारी श्री जगदेव तथा अन्य अनेक सभासदों ने भाग लिया। इस विषय में सभी का एक मत था कि उसी दल को विजयी बनाना चाहिए जिसने उक्त ११ सूत्रों को अपने घोषणा-पत्र में स्थान दिया हो।

स्वामी विद्यानन्द जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में अब तक आर्यसमाज की राजनीति के क्षेत्र में रही भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला और ११ सूत्रों का समर्थन करते हुए आर्यसमाजों से अपील की कि वे उनका प्रचार और प्रसार करें।

डा० प्रशान्त वेदालंकार
संयोजक-आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन, ७१२, रूपनगर, दिल्ली-११०००७

भारत का गौरवपूर्ण आदर्श राजा

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥
(छा०उ० ५।११।५)

अर्थात् 'राजा कालस्य कारणम्' इस उक्ति के अनुसार राजा अच्छे या बुरे समय का बनाने वाला होता है वैसी ही प्रजा होती है। वर्तमान काल में जो जनता में असन्तोष, अशांति व अराजकता दिखाई देती है, उस सब का मुख्य कारण देश का अदूरदर्शी प्रशासक वर्ग है। भारत के एक प्राचीन राजा अश्वपति की घोषणा पढ़िये, जिसने बड़े गौरव के साथ यह कहा था—"मेरे राज्य में एक भी चोर नहीं है, कोई कायर कंजूस नहीं है, कोई भी शराब पीनेवाला नहीं है, एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है कि जो प्रतिदिन यज्ञ करता हो कोई भी व्यक्ति अनपढ़ नहीं है, राज्यभर में कोई व्यभिचारी पुरुष तथा एक भी व्यभिचारिणी स्त्री नहीं है।" --दयानन्द सन्देश

महर्षि की अनुपम देशभक्ति

(क) यह आर्यावर्त्त देश ऐसा है, जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसलिए इस भूमि का नाम स्वर्णभूमि है।

(ख) जितने भूगोल में देश हैं, वे सब इसी देश की प्रशंसा करते हैं। ·· ···पारसमणि पत्थर सुना जाता है, वह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूप-दरिद्र विदेशी छूने के साथ ही स्वर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।
(सत्यार्थप्रकाश)

जो अपने कुल की उत्तमता, उत्तम सन्तान, दीर्घायु, सुशील, बुद्धि, बल-पराक्रमयुक्त विद्वान् और श्रीमान् करना चाहे वे सोलहवें वर्ष से पूर्व कन्या और २५वें वर्ष से पूर्व पुत्र का विवाह कभी न करें। यही सब सुधार का सुधार सब सौभाग्यों का सौभाग्य और सब उन्नतियों की उन्नति करने वाला कर्म है। (स० वि०)

वेद विषयक एक आक्षेप युक्त लेख का उत्तर–

क्या धर्मग्रन्थ होना अपराध है ?

डा० भवानीलाल भारतीय

दैनिक नवभारत टाइम्स के ६ मार्च १९९१ के बम्बई संस्करण में श्री सूर्यकान्त बाली का एक लेख "धर्म ग्रन्थ हो जाने की सजा" शीर्षक प्रकाशित हुआ है। इसमे वेदों को हिन्दुओं का मान्य धर्म ग्रन्थ कहने या प्रतिपादित करने को आपत्तिजनक बताया गया है और इसी सदर्भ में कुछ अनर्गल, अप्रासगिक तथा तथ्यहीन बात लिखी गई हैं। वेदों के बारे में भ्रान्तिपूर्ण तथा अलोक बाते बहुत पहले से कही और लिखी जाती रही हैं। यास्क ने अपने निरुक्त ग्रन्थ मे कौत्स नामक एक आचार्य का उल्लेख किया है जो वेदो के मंत्रो को अर्थहीन (निरर्थक) मानता था। स्वय आचार्य यास्क को उस आचार्य कौत्स की एतद्विषयक धारणाओ का निराकरण करने का श्रम करना पडा था। ऐसा ही प्रयास वेदो के प्रसिद्ध भाष्यकार आचार्य सायण ने स्वरचित ऋग्वेद भाष्य भूमिका मे भी किया है जहां उन्होंने वेदों पर लगाये जानेवाले कतिपय आक्षेपोंको पूर्वपक्ष मे प्रस्तुत कर उनका समाधान किया है।

वेदों के बारे मे निन्दात्मक प्रवाह मुख्यतः उस समय प्रचलित हुए जब चार्वाक, जैन तथा बौद्ध आदि अवैदिक मतों का इस देश में बोलबाला रहा। चार्वाक नाम से लोक मे प्रसिद्ध बृहस्पति नामक एक आचार्य ने तो अग्निहोत्र, वेदत्रयी, दण्डधारण तथा भस्मलेपन को बुद्धि एव पौरुषहीन लोगों के जीविकायापन का मार्ग बताया—

अग्निहोत्रस्त्रयोवेदास्त्रिदण्डभस्मगुण्ठनम्।
बुद्धिपौरुषहीनानां जीविकेति बृहस्पतिः॥

उधर बौद्ध दार्शनिक चन्द्रकीर्ति ने वेदों के प्रामाण्यवाद, किसी रचयिता (परमात्मा) द्वारा सृष्टि को रचित मानना, तीर्थ विशेष में जाकर स्नान करने से पुण्यार्जन तथा जाति के अभिमान तथा शरीर को तपाने से पापों को दूर करने को बुद्धिहीन (ध्वस्तप्रज्ञ) तथा जड़ लोगों का चिन्ह बताया।

ये सब तो पुरानी बाते हैं, किन्तु जब से वेदों के अध्ययन को पाश्चात्य विद्वानों ने अपनाया, ससार के इन सर्वाधिक प्राचीन धर्म ग्रन्थों के बारे में नाना प्रकार के मत, विचार एवं धारणायें विभिन्न लोगों के द्वारा व्यक्त की जाती रही हैं। किन्तु आलोच्य लेख कुछ भिन्न प्रकार का है। लेखक का यह विचार है कि इस्लाम और ईसाइयत की तरह भारतीय धर्मों में भी किसी ग्रन्थ को धर्म ग्रन्थ मानने का चलन नया है। बालीजी का भाव शायद यह है कि जिस प्रकार मुसलमान कुरान को अपना एक मात्र धर्म ग्रन्थ मानते हैं और ईसाइयों में धर्म ग्रन्थ के रूप मे बाइबिल की मान्यता है उसी प्रकार हिन्दू धर्म में वेदों को धर्म ग्रन्थ की सज्ञा दो गई है और हिन्दुओं ने यह काय मुसलमानों तथा ईसाइयों के अनुकरण पर ही किया है। यहां हम प्रथम तो "धर्म ग्रन्थ" शब्द के मूल अभिप्राय को स्पष्ट करना चाहेगे और तब बालीजी से यह पूछेंगे कि उन्हें धर्मग्रन्थ की मान्यता, अवधारणा तथा किसी वर्ग या समाज द्वारा किसी विशिष्ट पुस्तक को धर्मग्रन्थ के रूप मे मान्यता देने पर आपत्ति क्यो है? वस्तुतः धर्म शब्द को उसके वास्तविक व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ के आधार पर कभी समझने का प्रयास ही नही किया गया। इसी का परिणाम यह रहा कि उसे कभी मत, पन्थ, सम्प्रदाय, फिर्के या अंग्रेजी के Religion-Sect आदि शब्दों के पर्याय के रूप में मान लिया गया। किन्तु "धर्म" का भारतीय वाङ्मय में जो अर्थ ग्रहण किया गया है वह कितना उदात्त, सारगर्भित तथा तात्विक है, उसे यहा विस्तार से लिखना अनावश्यक है। सांसारिक मनीषियों ने कही वस्तु के स्वभाव को धर्म कहा तो अन्यत्र मानव के अभ्युदय (सासारिक उन्नति) तथा निःश्रेयस (पारलौकिक कल्याण) की सिद्धि को धर्म की सज्ञा प्रदान की।

महाभारत ने धारण किये जाने से "धर्म" की व्युत्पत्ति की और धर्म को ही प्रजा का धारक-पालक कहा। स्मृतिकार मनु ने आचार को ही परम धर्म कहा और इस आचार की शिक्षा के लिये श्रुतियों और स्मृतियों को प्रमाण मानने का संकेत किया। अन्यत्र उसी स्मृतिकार ने वेदों को अखिल धर्मों का मूल कहा और तर्क के द्वारा इस धर्म का अनुसंधान करने की प्रेरणा दी। इसी स्मृति में श्रुति, स्मृति, सदाचार (सत्पुरुषों का आचरण) और आत्मा को प्रिय लगने को धर्म का साक्षात् लक्षण वर्णित किया और दश लक्षणात्मक धर्म को मनुष्य मात्र के लिये आचरणीय बताया। यदि हम "धर्म" को आर्य ग्रन्थों में निरूपित इस इस व्यापक परिप्रेक्ष्य मे स्वीकार करे तो "धर्मग्रन्थ" सज्ञा उन ग्रन्थों को दी जा सकती है जिनमें उपरि वर्णित धर्म का निरूपण, विवेचन तथा ऊहापोह किया गया है। इस्लाम या ईसाइयत ने कुरान और बाइबिल को अपना धर्मग्रन्थ क्यों और कैसे स्वीकार किया, यह बताना हमारा उद्देश्य नहीं है, हम तो यह कहना चाहते हैं कि भारतीय धर्म (जिसे व्यापक रूप में आर्य या हिन्दू धर्म कहा जा सकता है) में धर्म ग्रन्थ की अवधारणा सदा से रही और उसे इस्लाम या ईसाईयत से अनुप्राणित बताना दुस्साहस मात्र है। यह कोई नया चलन भी नहीं है।

केवल आर्य धर्म में ही नही, आर्येतर तथा वैदिकेतर किन्तु भारत मूल के जैन, बौद्ध आदि धर्मों में भी धर्म ग्रन्थ की अवधारणा नितान्त स्पष्ट है। बौद्धों के त्रिपिटक और जैनों के सूत्र ग्रन्थ क्या तत् तत् मतों के धर्म ग्रन्थ और उनके अनुयायियों को उसी प्रकार मान्य नही हैं, जैसे कुरान इस्लाम के अनुयायियों को और बाइबिल ईसाई मतवालों को मान्य है। किसी पुस्तक को मान्य धर्मग्रथ के रूप में स्वीकार करने का विचार तो शास्त्रीय परम्पराओं से आबद्ध हिन्दू समाज में ही नहीं अपितु निर्गुण पन्थी सन्तों के अनुयायियों में भी प्रचलित रहा। इसी कारण कबीर पथियों में "कबीर बीजक" की मान्यता रही तो दादू तथा रैदास की कोटि के अन्य सन्तों के भक्तगण अपने गुरुओं के सबद और बाणी को वैसी ही मान्यता और आदर देते रहे जैसी मान्यता आम हिन्दू वेदों, उपनिषदों तथा गीता आदि शास्त्र ग्रन्थो को देता रहा है।

सूर्यकान्त बाली के सामने एक दुविधा है। वे वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत तथा गीता आदि को मजबूरी में धार्मिक ग्रन्थ इसलिए कह देते हैं, क्योंकि उनके अनुसार इन्हें कविता, नाटक, कहानी या उपन्यास जैसी विधाओं में नहीं रक्खा जा सकता। मैं उनसे विनम्रतापूर्वक पूछना चाहता हूं कि क्या किसी साहित्यिक कृति को नाटक, कहानी, उपन्यास आदि वाङ्मय की आज स्वीकृत विधाओ से भिन्न किसी अन्य वर्ग में नहीं रक्खा जा सकता? हमारे यहां तो शास्त्रीय साहित्य का एक भिन्न वर्ग सदा से ही रहा है और यही शास्त्रीय साहित्य धर्मशास्त्र या धर्मग्रन्थों की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। बाली जी की स्थापना तो यह है कि प्रारम्भ में वेद, उपनिषद्, गीता, रामायण आदि को भारतीय समाज में बाइबिल, कुरान तथा गुरु ग्रन्थ साहब जैसा दर्जा प्राप्त नहीं रहा। किन्तु वे यह समानता या तुलना करते ही क्यों हैं? यह तो सत्य है कि सैमेटिक मतों में एक पैगम्बर और एक मान्य धर्मग्रन्थ की अवधारणा को स्थान मिला है, किन्तु आर्य, धर्म, उसका शास्त्र समुदाय तथा वहां मान्य ग्रन्थों की परम्परा सैमेटिक मतों के उद्भवकाल से भी शताब्दियों पुरानी है। अतः यह मानना कि हिंदुओं (या आर्यसमाजियों) ने इस्लाम या ईसाइयत के अनुकरण पर ही वेदों को एकमात्र मान्य व स्वीकार्य धर्मग्रन्थ का पद दे दिया, वेद और अवान्तर कालीन आर्य शास्त्रों की मान्यता तथा प्रामाण्य विषयक प्रचलित भारतीय धारणाओं से अपनी अनभिज्ञता दर्शाना है।

बाली जी उन न्यायाधीशों तथा धर्माधीशों को भोंदू की संज्ञा देते हैं जो अदालतों में किसी हिन्दू गवाह को गीता पर हाथ रखकर कसम खाने के लिए कहते हैं। उनकी दृष्टि में ऐसा करना अनुचित है। उनका तर्क यह है कि जैसे एक मुसलमान के लिए कुरान पवित्र ग्रन्थ (Holy Book) है वैसा ग्रन्थ एक हिंदू के लिए गीता नही है। बालीजी शायद यह भूल जाते हैं कि कसम दिलवाने में न्यायाधीश का अभिप्राय तो इतना ही है कि इस साक्ष्य की दृष्टि में गीता एक पवित्र ग्रन्थ है, वह आम हिन्दू के लिए भगवत् प्रोक्त (भगवान् कृष्ण के मुख से निकला) है इसलिए उस ग्रन्थ पर हाथ रखकर कम से कम वह झूठ तो कदापि नही कहेगा। लेखक इस बात को नजर अदाज कर जाता है कि सैमेटिक मतों में मान्य धर्मग्रन्थ की अवधारणा और आर्यपरम्परा में मान्य धर्मग्रन्थों के पवित्र या प्रामाण्य होने की धारणा में कुछ मौलिक अन्तर तो है हो। किन्तु लौकिक व्यवहार के लिए यदि न्यायालय ने उपर्युक्त व्यवस्था कर ली है तो इसमें अनुचित क्या है?

क्रमशः

राजनैतिक नेता एवं राजनैतिक पार्टियों की समीक्षा

देश के लिए आजादी की लड़ाई आर्यसमाज और कांग्रेस द्वारा लड़ी गई थी। सन् ५२ में जब मन्त्रीमण्डल बना उसमे अधिकांश मन्त्री आर्यसमाजी थे। जब तक वे रहे शासन जनहित में चलता रहा। तत्पश्चात् अवसरवादियों की घुसपैठ के कारण सेवा का स्थान स्वार्थ ने ले लिया। नेताओं का नैतिक पतन होने के कारण शासकीय मशीनरी भी कर्तव्यनिष्ठ नहीं रही। चारों ओर अराजकता व भ्रष्टाचार फैल गया। विदेशों से ऋण लाकर योजना में लगाने के प्लान बने। मगर योजना में सब धन नहीं लगा। स्वयं राजीव गांधी ने कहा है कि १५ प्रतिशत योजना में लगते हैं और बाकी सब बिचौलिये खा जाते हैं। अब कांग्रेस का एक ही लक्ष्य रह गया है येन केन वोट प्राप्त करना और सत्ता में बने रहना। जातिवाद फैलाकर वर्ग संघर्ष की स्थिति पैदा कर दी है। अपराधवृत्ति वालों को कांग्रेस नेताओं की ओर से आरक्षण मिलता रहा। कहीं कहीं तो इन अपराधी प्रवृत्ति वालों एवं असामाजिक तत्वों के बल पर भय फैलाकर कांग्रेस जीतती रही। आज भी बिहार, उत्तरप्रदेश, हरयाणा आदि इसके लिए अपवाद हैं। यही स्थिति है जनता त्रस्त हो चुकी है जिन लोगों को कांग्रेस में कुर्सी नहीं मिली उन छुटभैयों ने बाहर निकल कर अनेक पार्टियां बना डालीं और जनता को किंकर्तव्यविमूढ़ सा बना दिया है। कोई विकल्प सामने नहीं होने से जनता ने कांग्रेस को ही सत्तारूढ़ बनाये रखा इससे इनको अभिमान हो गया कि हमको हराने वाला कोई नही। हमारी जड़े बहुत गहरी हैं इस अभिमान से भ्रष्टाचार और भी अधिक करने लगे। कांग्रेस नेताओं का नैतिक पतन अंतिम पराकाष्ठा पर पहुंच गया तानाशाही कायम हो गई। शासन का मुख्य कर्तव्य जनता को जानमाल की सुरक्षा की गारंटी देना है। इस कर्तव्य को भूल गये चारों तरफ हाहाकार मच गया। अपराधिकवृत्ति वाले स्वच्छन्द विचरने लगे कोई भय नहीं रहा पक्षपातपूर्ण शासन बन गया। सन् ७७ में सब पार्टियों ने मिल कर सरकार बनाई, कांग्रेस शासन से जनता घबराई हुई थी हार ही गई मगर वह नारंगी की तरह थी अत: आपस में धन व कुर्सी के झगड़े होने लगे यह साझा सरकार और भी भयंकर सिद्ध हुई। इसने ८४ क्विन्टल सोना शासकीय खजाने का बेच दिया। सरकार को आर्थिक संकट में फंसा दिया इनके आपसी झगडों से सरकार दो वर्ष में ही टूट गई फिर चुनाव हुए फिर भी विकल्प रूप से कोई पार्टी सामने नहीं थी जनता ने फिर कांग्रेस को ही सत्तारूढ़ बनाया। मगर ईर्ष्या व द्वेष वालों ने विश्वासघात का प्रयोग कर इन्दिरा जी की हत्या करवा दी फिर चुनाव हुए। कांग्रेस के विकल्प के रूप में फिर भी कोई पार्टी नहीं थी व इन्दिरा जी के बलिदान के कारण उनके पुत्र को प्रधानमन्त्री बनाने की प्रक्रिया से भारी बहुमत से राजीव जी को प्रधानमन्त्री बना दिया मगर इसके साथी गलत थे अत: प्रशासन नहीं सुधर नही सका उल्टा और अधिक बिगड़ गया। मगर एक ही पार्टी का केन्द्र में शासन होने से आपस में कोई झगड़ा नही हुआ। पांच वर्ष तक सरकार चलती रही फिर भी मैं राजीव गांधी को सत्यवादी हरिश्चन्द्र इस युग का मानता हूं उसने देश व जन हित में शासन की सही तस्वीर जनता के सामने रख दी अब जनता को इस पर गहराई से सोचना व देखना है सन् ८९ में चुनाव का समय आया।

वी०पी० सिंह व उनके साथी कांग्रेस से बाहर निकले राष्ट्रीय मोर्चा बनाया व भ्रष्टाचार मिटाने व स्वच्छ प्रशासन देने का घोषणा पत्र निकाला अनेक सुन्दर लुभावने आश्वासन देकर चुनाव लड़े जनता कांग्रेस शासन से घबराई हुई तो थी ही राष्ट्रीय मोर्चे की जीत हो गई वी० पी० सिंह प्रधानमन्त्री बन गये। वी० पी० सिंह भी कांग्रेस के छुटभैया तो हैं ही फिर वही जातिवाद वर्ग संगठन की प्रक्रिया अपनाई। अनीतिपूर्ण जातिवाद का सहारा लेकर स्थायी बनाने का प्रपञ्च चालू कर दिया। राम जन्मभूमि के विषय में भी अनीतिपूर्ण व्यवहार अपनाया। इस प्रकार का अनीतिपूर्ण व्यवहार भाजपा को सहन नहीं हुआ। अपना समर्थन वापिस ले लिया फिर भी वी०पी० सिंह जी ने कुर्सी पर बने रहने के लिए अनेक हथकण्डे अपनाये। मगर आखिर अनीति की हार हुई। वी० पी० सिंह अपदस्थ हो गए मगर लोकसभा भंग नहीं की। दूसरे व्यक्ति की तलाश हुई।

चन्द्रशेखर जी कई वर्षों से प्रधानमन्त्री बनने के लिए लालायित थे। इसीलिए उन्होंने कई बार दल बदले। इस बार भी जिस पार्टी का सारी उमर विरोध करते रहे उसी पार्टी से जा मिले और कांग्रेस का समर्थन लेकर प्रधानमन्त्री बन गये। मगर यह भी तो कांग्रेस के छुटभैया थे। वही जातिवाद पक्षपातपूर्ण आरक्षण व वर्गसगठन की ओर बढ़ गये और जिनके बल पर प्रधानमन्त्री बने थे उन्हीं की निन्दा करना व विरोध चालू कर दिया। इनका तो कर्तव्य था कि राजीव के लिए प्रधानमन्त्री का प्रस्ताव करते और खुद समर्थक बनकर मिलजुलकर सरकार को चलने देते मगर इन्होंने तो त्याग पत्र देकर लोकसभा को भंग करवा दिया और मध्यावधि चुनाव की स्थिति ला दी। देश पर चुनाव का भार लाद दिया।

चन्द्रशेखर जी ने अपने काल में अस्पष्ट नीति को अधिक अपनाया फिर भी राजीव जी ने समर्थन वापिस नही लिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार नहीं चला सके इस कारण त्याग पत्र दिया यह जनता को धोखा हुआ। अल्पमत वाले को पहले ही प्रधानमन्त्री बनने के लिए तैयार नही होना था जैसे राजीव जी को कई बार कहा मगर वे तैयार नहीं हुए। यह तो बच्चों जैसा खेल हो गया। ये समतावादी, समाजवादी सरकार की बात करते हैं लेकिन इनका स्वरूप स्पष्ट करना चाहिये।

मेरे मत से तो समाजवाद का स्वरूप ऐसा होता है कि योग्यता के अनुसार काम देना व समाज व्यवस्था के अनुसार अनुशासनात्मक जीवन यात्रा चलाना और यही सही समाजवाद का अर्थ है। मगर, ये तो अन्य काम करना चाहते हैं अयोग्य को आगे बढाना, यह नीति देश व समाज के लिए घातक सिद्ध होगी। जनता ऐसे अवसरवादी सिद्धान्तहीन व्यक्ति से सावधान रहे और लच्छेदार भाषण व प्रलोभन से बचकर रहे।

वर्तमान में राष्ट्रीय स्तर की चार पार्टियां चुनाव के मैदान में हैं इनमें तीन पार्टियों के काम को जनता ने देख लिया है फिर भी समीक्षा निम्न प्रकार प्रस्तुत है।

१- कांग्रेस का नैतिक पतन हो गया है अत: इसको तो प्रत्येक मोर्चे पर हरा कर ज्ञान सिखाना है। पांच वर्ष के बाद फिर इनको सेवा को जनता देखेगी।

२- जनता दल के नेता वी०पी० सिंह जी को व इनकी सरकार को देख लिया है। इन्होंने वर्गसंघर्ष की स्थिति पैदा कर दी थी। पक्षपातपूर्ण अनीति पर चलने वाली सरकार थी। इनके समय में बहुत ही जन-धन की हानि हुई। जनता से छिपा नही है।

३- साझा सरकार दो बार फेल हुई अब फिर कहीं ऐसा न हो कि साझा सरकार बने व फिर फेल होवे अत: किसी एक पार्टी की सरकार बनानी है जो कि न्यायप्रिय हो और न्यायायुक्त शासन करे जिसमें अनुशासन हो दल बदले न हों ईमानदार हों।

४- वामपंथी मोर्चा भी समान स्वरूप ही है। इनमें अनेक घटक शामिल हैं और इनकी नीति राष्ट्रीयकरण की है जो चिरकाल तक नहीं टिक सकती। रूस में फेल होने जा रही है। ये विदेशों की ओर देखते हैं और भारत भूमि पर चलते हैं। यह भी सफल नही होगी।

५- आजकल धन कमाने व सम्मान पाने के लिए राजनैतिक नेता अनेक पार्टियां बनाकर जनता को गुमराह करते रहते हैं। बड़े-बड़े लुभावने व सुन्दर नारे लगाते रहते हैं। जैसे काशीराम जी ने बहुजन जातीय पार्टी बनाई है। टिकैत जी ने किसान यूनियन बनाई है। ये लोग वर्ग संघर्ष की स्थिति पैदा करने में लगे हुए हैं। इनका देशहित से कोई सम्बन्ध नही है। ऐसे और भी दर्जनों लोगों से भी सावधान रहें। ये सभी लोग वर्ग संघर्ष कराकर देश को बर्बाद कर देंगे। संघर्ष विनाश का कारण होता है और प्रेम शान्ति व उन्नति का प्रतीक होता है।

लोक सभा के लिए वोट उसी पार्टी को देना चाहिये जिसने दो तिहाई से अधिक सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े किये हों। क्षेत्रीय व स्वतन्त्र को भी वोट नहीं देना चाहिये। नहीं तो लोकसभा में रंगबिरंगे लोग पहुंचेंगे फिर साझा सरकार बनेगी और फिर फेल होगी। इस प्रकार ये नेता लोग यदि प्रतिवर्ष चुनाव कराते रहेंगे तो देश की हालत कैसी होगी जनता विचार करे।

७- आजकल बन व कुर्सी के लिए नेता लोग दल बदल करके इधर-उधर जा रहे हैं। ऐसे सिद्धान्तहीन नेता लोगों से भी जनता सावधान रहे। ऐसे नेताओं को तो एक ने भी वोट नहीं देना चाहिए।

८- बहुत से नेताओं ने क्षेत्रीय पार्टियां बनाई हैं। उन प्रान्तीय पार्टियों ने भी केन्द्र के लिए उम्मीदवार खड़े किये हैं। उन पार्टियों के उम्मीदवारों को भी वोट नहीं देना चाहिये क्योंकि ऐसा होने से लोकसभा में रंगबिरंगे लोग पहुँचेंगे और स्थायी सरकार नहीं बन सकेगी। जिससे देश व समाज का अहित होगा।

९- बहुत से व्यक्ति स्वतन्त्रता का अनुचित लाभ उठाकर स्वतन्त्र रूप से खड़े होते हैं इनको तो एक भी वोट नहीं देना चाहिये। ये न तो सरकार बना सकते हैं और न ही कोई कार्य कर सकते हैं। इन लोगों की लोकसभा में कौन सुनेगा ये व्यर्थ की भीड़ खड़ी हो रही है। राष्ट्रपति महोदय या शासन को (लोकसभा) में स्वतन्त्र व्यक्ति के खड़े होने पर रोक लगा देनी चाहिये। यदि ऐसे व्यक्ति देशभक्त हैं तो शासन को सुझाव देते रहना चाहिये। लोकसभा में जाकर भी यही कर सकते हैं। सन् ५२ में चुनाव लड़ा था तत्पश्चात् सुझाव देने का कार्य निरन्तर कर रहा हूं। ऐसा करते रहना चाहिये। मगर यह कार्य भी अनुभवशील व्यक्ति ही कर सकते हैं साधारण व्यक्ति का व संकीर्ण विचारधारा वाले का काम नहीं है।

निर्णय

इसबार लोकसभा के चुनाव के लिये चार पार्टियां मैदान में हैं इनमे से जिनको जनता ने देख लिया है। एक पार्टी नई इस वर्ष लोकसभा के लिये विकल्प के रूप में उभर कर सामने है—इस भा.ज.पा. को जनता ने एकबार अवसर प्रदान करना चाहिये। इस पार्टी में दलबदी नही है। अनुशासनात्मक व्यक्तियों का संगठन है वर्तमान में सब पार्टियों मे टिकटों के लिये झगड़े हुए हैं इस पार्टी में नहीं हुए हैं। इसमें देशभक्त ईमानदार व्यक्ति ही को आगे बढ़ाने की प्रक्रिया चलती है। ईमानदारी की कसौटी भी है इसके विरुद्ध साम्प्रदायी होने का प्रचार किया जा रहा है अब यह व्यर्थ है पहले यह जनसंघ के रूप में खड़ी थी उस वक्त संकीर्ण विचारधारा थी। अब इसने भा.ज.पा. ने अपने विचार को महान् बना लिया है। हमारे देश की वैदिक संस्कृति को अपना लिया है जिसका नारा है "वसुधैव कुटुम्बकम्"। न्यायानुकूल पक्षपात रहित शासन करने का संकल्प लेकर सामने खड़ी है। सबकी शारीरिक मानसिक व आर्थिक उन्नति चाहती है इस पार्टी का मध्यप्रदेश में शासन चल रहा है। एक आदर्श कायम किया है। आजादी के पूर्व सहकारी बैंकों मे ६ रु० सैंकड़ा वार्षिक ब्याज यह कांग्रेस के शासन मे दुगुना कर दिया है। किसानों की आर्थिक हालत सुधारी है। यही नहीं इसमें असामाजिक तत्वों को दबाकर अपराधी वृत्ति कम की है। इसका नमूना इन्दौर शहर देखा जा सकता है. शासकीय मशीनरी को भी कर्त्तव्यनिष्ठ बनाने के लिये प्रक्रिया जारी है। इस पार्टी के मध्यप्रदेश के नमूने को देखते हुए यदि केन्द्र में आगई तो अच्छा शासन करेगी ऐसी आशा है अतः जनता जर्नादन के सम्मुख यह सुझाव के रूप मे निवेदन है कि इस भा. ज. पा. को भारी बहुमत से विजयी बनाकर केन्द्र में सत्तारूढ करने की कृपा करें एकबार परीक्षण देखिये अवश्य अवसर प्रदान करें।

महर्षि भवानीशंकर 'वानप्रस्थ'
स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी हासपुर-मनासा
मंदसौर, मध्यप्रदेश

पंचकूला में वेद-कथा

इस आर्यसमाज मे २३ अप्रेल से २८ अप्रेल तक प्रो० उत्तमचन्द शरर द्वारा वेद कथा का आयोजन किया गया। सायंकाल के समय वेद कथा से पहले भक्ति-गीत होते रहे और उसके पश्चात् वेद कथा। इसमें प्रो० शरर ने जो कि आर्यजगत् के ओजस्वी वक्ता हैं, वेद मन्त्रों के आधार पर प्रवचन दिये। इसी प्रकार दैनिक सत्संग में भी अनेक प्रातःकालीन प्रवचन हुए। इन प्रवचनों में उन्होंने सामयिक विषयों पर हृदय-स्पर्शी विचार दिये। इन प्रवचनों में पंचकूला को जनता बड़े उत्साह के साथ सम्मिलित हुई। २८ अप्रेल रविवार के साप्ताहिक सत्संग में भी शरर साहब का बड़ा ओजस्वी प्रवचन हुआ जिसमें उन्होंने आर्यजनों का आह्वान किया और उन्हें आर्य संगठन के लिये और सेवा के लिए जुट जाने की प्रेरणा दी।

कु० रत्नकौर आर्या का संस्कृत में प्रथम स्थान

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरद्वार की एम. ए. संस्कृत की परीक्षा में कु० रतनकौर आर्या सुपुत्री श्री सूबेसिंह आर्य ग्राम करसिन्धु खेड़ा जि० जीन्द निवासी ने ८०० में से ६६६ अंक प्राप्त करके सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह पर इन्हें स्वर्णपदक से सम्मानित किया गया।

गतांक से आगे—

वैदिक वीरांगना नारी

(डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार, एम० ए०, आर्यसमाज गोरखपुर)

भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।
पृथिवीं यच्छ, पृथिवीं दृंह, पृथिवीं मा हिंसीः॥ यजु० १३/१८

हे नारी, तेरी शासन की सत्ता अपूर्व है, तू भूमि के समान दृढ है, तेरा आत्मा अच्छेद्य, अभेद्य, अखण्डनीय है, तू सबको वीरता रूपी दूध का पान करानेवाली है, तू सपूर्ण संसार का धारण-पोषण करनेवाली है, तू ही राष्ट्रभूमि को अनाचार और भ्रष्टाचार से बचाती है, तू इस राष्ट्र को शक्तिशाली और दृढ बनाती है।

यजुर्वेद के १०/२६ मंत्र में कहा गया है—

स्योनासि सुषदासि, क्षत्रस्य योनिरसि। स्योनामासीद सुषदामासीद क्षत्रस्य योनिमासीद।

हे नारी तू सुखों की दात्री है, तेरा आधार बहुत मजबूत और दृढ है, तू क्षात्रबल की भण्डार है, तू राष्ट्रभूमि में स्थित रह।

ऋग्वेद १/१८/१५ मन्त्र बतलाता है—

ते हि पुत्रासो अदितेर् विदुर्द्वेषांसि यातवे।
अंहोश्चिदुरुचक्रयोऽनेहसः॥

अर्थात् तू (नारी) शत्रु से कम्पित होनेवाली नहीं है, तू किसी के सामने दीन बनकर रहनेवाली नहीं है तेरे पुत्र भी अद्वितीय वीर हैं, तेरे पुत्र महान् का बीड़ा उठानेवाले हैं, वे कभी पाप का मन विचार में नहीं लाते, वे बड़े-बड़े शक्तिशाली द्वेषी शत्रुओं के भी छक्के छुडाने वाले हैं।

अहं केतुरहं मूर्धा अहम् उग्रा विवाचनी।
ममेदनु क्रतुं पतिः सेहानाय उपाचरेत्॥ ऋ० १०/१५९/२

मैं राष्ट्र की उड़ती हुई पताका हूं, मैं राष्ट्र के शरीर की शिरोमणि हूं, मैं उग्र हूं और मैं राजनैतिक विषयों में निपुण तथा वाक्शक्ति सम्पन्न हूं। मैं शत्रु सेना के छक्के छुडानेवाली वीरांगना हूं। मेरी बहादुरी के कारण ही मेरा पति मुझसे प्रसन्न रहता है। अभी यहूदियों के राष्ट्र इजराइल की वीर युवतियों और महिलाओं के विषय में जानकारी मिली उससे पता लगता है कि वे प्रत्येक क्षण राष्ट्र के लिए मरने मिटने को तैयार रहती हैं, खेत में काम करते हुए खाना बनाते समय कहा तो यहां तक जाता है कि प्रसवकाल और उसके बाद भी वे शत्रुओं को नष्ट करने के लिए उद्यत रहती हैं। वेद की वीरांगना ऋग्वेद के १०/१५९/५ मंत्र में कहती है—

असपत्ना सपत्नीघ्नी जयन्त्यभिभूवरी।
आवृक्षमन्यासां वर्चो राधो अस्थेयसामिव॥

मैंने शत्रुओं का नाश कर दिया है अतः मैं शत्रु रहित होगई हूं। मैंने उन शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर ली है और शत्रुओं को परास्त कर दिया है। मैंने अस्थिर लोगों की संपत्ति की तरह शत्रुओं को विनष्ट भी कर दिया है।

ऋग्वेद के १०/१५९/४ मन्त्र में वह वीरांगना कहती है—

येनेन्द्रो हविषा कृत्वी अभवद् द्युम्न्युत्तमः।
इदं तद् अक्रि देवा असपत्ना किलाभुवम्॥

अर्थात् मेरे वीर पति की प्रसिद्धि का कारण राष्ट्र के लिए अपने को न्यौछावर करने का विचार है, अपने को बलिदान करने के कारण ही वह यशस्वी और सर्वोत्तम सिद्ध हुआ है। उसकी छवि का कारण मैं ही हूं। अब मैं शत्रु रहित होगई हूं।

यजुर्वेद के २१५/५ मन्त्र में बतलाया गया है कि नारी शक्तिमती, राष्ट्र का व्रत धारण करनेवाले पुत्रों की माता है, वीर जननी है, वीर पत्नी है, क्षात्रबल परिपूर्ण है, अतिशय कर्मण्य और अपनी सारी शक्ति जनता के हित के लिए लगानेवाली है और राष्ट्रवासी रक्षा के लिए उसे पुकारते हैं।

ऋग्वेद १०/८६/१० में कहा है—

स होत्रस्य पुरा नारी समनं वावगच्छति।
वेधा ऋतस्य वीरिणी इन्द्रपत्नी महीयते।
विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः।

यहां स्पष्ट रूप से कहा गया है कि आवश्यकता पडने पर स्त्रियों को युद्ध से विमुख न होकर लडाई में जूझना चाहिए। जो नारी सत्य की अधिष्ठात्री, वीर की पत्नी और वीरांगना है वह युद्ध से अवश्य महिमा प्राप्त करेगी। उस स्त्री के कारण उसका पति भी कीर्ति प्राप्त करेगा।

यजुर्वेद १७/४५ मन्त्र में नारी को शत्रुओं का सामना करने और उन पर टूट पड़ने का विधान किया गया है।

यजुर्वेद के १३/१६ मन्त्र में कहा गया है कि नारी ध्रुव है, अटल है और उसे कहा गया है कि ध्यान रख विश्वकर्मा परमेश्वर ने तुझे विद्या, वीरता आदि गुण दिए हैं अतः तू अपने को ज्ञान में शक्ति में कम न समझ, समुद्र की उमडती लहरों के समान फैला हुआ शत्रु दल तुझे किसी तरह की हानि न पहुंचा सके, गरुड के समान आक्रमण करने वाला शत्रु दल तुझे पराजित न कर सके। इस प्रकार स्त्रियों को अबला के रूप में वेद नहीं स्वीकार करता है।

उत त्वा स्त्री शशीयसी पुंसो भवति वस्यसी।
अदेवत्रादराधसः॥

ऋ० ५/६१६ में कहा गया है कि बहुत सी पतिव्रता स्त्रियां उस पुरुष से अधिक धर्म में दृढतरा और प्रशंसनीया होती हैं जो पुरुष देवार्चन आदि सुकर्म से रहित है और ईश्वर की आराधना, पूजा पाठ आदि क्रिया से हीन है, उस पुरुष से स्त्रियां ही अच्छी हैं जो पतिव्रता और धर्म कर्म निष्ठा है।

ऋ० ५/६१/७ मन्त्र में कहा गया है—

वि या जानाति जसुरिं वितृष्यन्तं विकामिनम्।
देवत्रा कृणुते मनः॥

अर्थात् जो स्त्री दरिद्रता पीड़ित की आवश्यकता को समझकर उसके मनोरथ को पूर्ण करती है, जो तृषार्त की प्यास मिटाती है, जो यज्ञादि करने में मन लगाती है, जो माता-पिता आचार्य की सेवा करती है वह स्त्री श्रेष्ठ है। उत्तम है। यह स्त्रियों का माहात्म्य है। अतः स्त्रियों को भी वीरांगना बनना चाहिए।

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य बधुओं, आर्य संस्थाओं तथा परिचित मित्रों को सूचना दे रहा हूं कि ३० अप्रैल, १९९१ को पंजाब विश्वविद्यालय से मेरे अवकाश ग्रहण कर लेने के पश्चात् मेरा स्थायी निवास एवं डाक का पता निम्न रहेगा। सभी से निवेदन है कि मई १९९१ के आरम्भ से ही वे निम्न पते पर मुझसे पत्र व्यवहार करें।

निवेदक—
प्रो० भवानीलाल भारतीय
रत्नाकर, ८/४२३, नन्दन वन,
चौपासनी आवासन मण्डल,
जोधपुर (राजस्थान)

आर्यलेखक कोश तैयार-मई में भेजा जायेगा—

सब सज्जनों को सूचित किया जाता है कि आर्य लेखक कोश का मुद्रण कार्य समाप्त होचुका है। वह अग्रिम ग्राहकों को रजिस्टड डाक द्वारा मई मास में भेजा जायेगा।

भवानीलाल भारतीय

बैंक कर्मियों को अपना काम हिन्दी में करने का आग्रह

नारनौल, ६ मई (शोला)। न्यू बैंक आफ इण्डिया रोहतक के प्रादेशिक प्रबन्धक श्री एम. एल. शर्मा ने गत दिवस नारनौल स्थित अग्रणी बैंक कार्यालय परिसर में आयोजित रेवाडी और महेन्द्रगढ जिले की ११ बैंक शाखाओं तथा दो अग्रणी बैंक कार्यालय में कार्यरत बैंक अधिकारियों व प्रबन्धकों की "हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर श्री शर्मा ने बैंक के अधिकारियों से आग्रह किया कि वे १ जनवरी ९१ से हिन्दी जिला घोषित इन जिलों में वे अपना शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में करें क्योंकि जनता की सेवा जनता की भाषा में करना ही हमारे बैंक का ध्येय है।

उन्होंने बताया कि प्रादेशिक कार्यालय रोहतक के अन्तर्गत कार्यरत ५५ शाखाओं, दो विस्तार काउंटरों, दो अग्रणी बैंक कार्यालयों तथा प्रादेशिक कार्यालयों में अधिकांश कार्य हिन्दी में किया जा रहा है। इसके अलावा बैंक द्वारा पत्राचार में भी हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है।

प्रधान कार्यालय द्वारा गत १ जनवरी ९१ से हिन्दी जिला घोषित होने के बाद महेन्द्रगढ और रेवाडी जिले में हिन्दी कार्य को मिश्नरी की भावना से लिया जा रहा है। इसी क्रम से प्रादेशिक कार्यालय रोहतक द्वारा अग्रणी बैंक कार्यालय नारनौल व रेवाडी के सौजन्य से मई मास के प्रथम पखवाडे में अधिकारियों और लिपिकवर्ग की हिन्दी कार्यशालाए रखी गई हैं।

इस अवसर पर अग्रणी बैंक अधिकारी श्री बी. के. मेहता ने प्रादेशिक प्रबन्धक श्री शर्मा एवं अन्य सम्भागियों का स्वागत करते हुए आश्वासन दिया कि महेन्द्रगढ़ व रेवाड़ी जिलों में राजभाषा के क्षेत्र में भी हमारी अग्रणी भूमिका रहेगी। जन सन्देश

जिला वेदप्रचार मण्डल पानीपत की गतिविधियां

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा गठित जिला वेदप्रचार मण्डल पानीपत के संयोजक एवं सभा के कोषाध्यक्ष ला० रामानन्द सिंहल के निर्देशन में पं० रामकुमार आर्य की भजन मण्डली ने २१ दिसम्बर से ३० अप्रैल ९१ तक निम्नलिखित ग्रामों में वेदप्रचार किया है तथा कुछ शिथिल आर्यसमाजों में जागृति उत्पन्न की है एवं कुछ ग्रामों में नवीन आर्यसमाज की स्थापना भी की है—

जाटल, लुहारी, कावरवा, जोन्धन, जोन्धनकलां, इसराना, परढाणा, खलीला रोडान, पाथरी, छिछडाना, गगसीना, गुरुकुल धीरणवास, सींक, महुर, कुराना, शाहपुर, कैत, बल्ली कुतुबपुरा, छतेहरा, चमराडा, आहूलाना, ढेर, मुरथल (सोनीपत) ब्राह्मणमाजरा, छिडवाडी, सालवन, पलड़ी, बलाना।

अप्रैल में प्रचार कार्य

१ से ३ अप्रैल तक श्री चेतराम जी के सहयोग से ग्राम बान्ध खुर्द में वेदप्रचार किया। ४, ५ अप्रैल को बान्धकलां में श्री बलवानसिंह जी के सहयोग से प्रचार द्वारा अवैदिक मतों का खण्डन किया। प्रचार को शान्तिपूर्वक सुना। ६ से १० अप्रैल को ग्राम पूठर में आर्यसमाज को पुनर्जीवित किया और आर्यसमाज का नया चुनाव कराया गया। ११ से १३ अप्रैल तक ग्राम बुवाना लाखू में प्रचार किया। १४ से १८ अप्रैल तक ग्राम बिजावा में वेद प्रचार द्वारा आर्यसमाज का सन्देश भजनों द्वारा दिया। श्री जोतसिंह तथा श्री सूबेसिंह ने प्रचार को सफल करने में सहयोग दिया। १९, २० अप्रैल को ग्राम इसराना की हरिजनों को चौपाल में छुआछात तथा जात पात के विरुद्ध प्रचार किया। २१ से २४ अप्रैल तक ग्राम कारद में श्री हरमेश तथा श्री प्रभुदयाल जी के सहयोग से ग्राम में समाज की बुराइयों के विरुद्ध प्रचार किया। २६, २७ अप्रैल को ग्राम बुडशाम में श्री लालचन्द जी के सहयोग से आर्यसमाज का प्रचार किया। २८, २९ अप्रैल को ग्राम नोलथा में श्री कर्मसिंह जी सरपंच के सहयोग से प्रचार किया। हरिजन भाइयों ने भी प्रचार में सहयोग दिया।

—केदारसिंह आर्य

दर्द

दर्द-ए-गम अब सहा नहीं जाता।
और देखा-सुना नहीं जाता॥

चल बसेंगे तो दर्द जाएगा।
दर्द ऐसे चला नहीं जाता॥

मौत जालिम है और जाबिर भी।
तीर जिसका खता नहीं जाता॥

बैठ जाए अगर यह दिल अपना।
बैठकर फिर उठा नहीं जाता॥

मुंह को आता है खुद कलेजा भी।
मुंह से कुछ भी कहा नहीं जाता॥

लाख पर्दों में हम छुपें, लेकिन।
मौत से तो बचा नहीं जाता॥

जिन्दगी भर ऐ 'नाज़' दुनिया में।
सांस सुख का लिया नहीं जाता॥

—'नाज़' सोनोपती

तीन का ध्यान रखो

(ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, दिल्ली)

१—माता पिता और गुरु की सेवा कर चित लाय।
पण्डित, ज्ञानी, सन्त को, मस्तक रखो नवाय॥

२—तीन कार्य करते रहो, सुबह सैर, स्नान।
नित्य नियम में करो तुम, जगदीश्वर का ध्यान॥

३—जीवन में अपनाइये, क्षमा, दया, उपकार।
लाज, विनम्रता, शीलता, आभूषण उर धार॥

४—पर निन्दा निज प्रशंसा, दो हिंसा को छोड़।
मद्य मांस धूम्रपान से, रखो सदा मुख मोड़॥

५—कामी, ज्वारी, चोर के नहीं बैठिये पास।
वेद, शास्त्र, सत्य वचन पर, पूर्ण करो विश्वास॥

६—राग द्वेष और ईर्ष्या, इन्हें त्याग दो आज।
रोगी, पागल, वैद्य से, कभी न हो नाराज॥

७—नीयत, वाणी, जीभ को, वश में रखिये खींच।
झूठ, लोभ, अभिमान का, गला पकड कर भींच॥

८—निष्ठा रखिये तीन पर, देश धर्म कर्तव्य।
रहो निभाते प्रेम से, ठीक बने भवितव्य॥

९—तीन चीज न त्यागिये, सत्संग और स्वाध्याय।
ओम् नाम सुमरन करो, जीवन सफल बनाय॥

शोक समाचार

वानप्रस्थी श्री लीलाधर आर्य का दिनांक २१-४-९१ को अकस्मात् निधन हो गया। वे कन्या गुरुकुल जसात से ट्रेन द्वारा दि० २८-४-९१ को लौट रहे थे। मार्ग में हृदय गति रुक जाने से उनका प्राणान्त हो गया। रेलवे स्टेशन रेवाड़ी से उनका शव आर्यसमाज मन्दिर में लाया गया जहां से वानप्रस्थी जी के पारिवारिक सदस्य शव को ग्राम मीरपुर में ले गए।

दि० २२-४-९१ को आर्यसमाज रेवाड़ी के सदस्यों ने ग्राम मीरपुर में वानप्रस्थी जी का अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न कराया। उक्त समय पर ग्राम के बहुत से सम्भ्रान्त व्यक्ति एवं कन्या गुरुकुल जसात की आचार्या जी व कन्यायें उपस्थित थीं।

दिनांक २८-४-९१ को प्रातःकाल आर्यसमाज रेवाड़ी के भवन में स्व० वानप्रस्थी जी के सम्मान में एक शोक सभा हुई। सभा में कई सदस्यों ने स्व० वानप्रस्थी जी के जीवन एवं कार्य पर प्रकाश डालते हुए अपनी-अपनी श्रद्धांजलियां प्रस्तुत कीं। अन्त में शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

स्वामी दयानन्द की राजनैतिक विचारधारा

अरविन्द कुमार 'कमल', आर्यसमाज मन्दिर, टोहाना (हरयाणा)

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्व स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमान्वाः ॥

अर्थात् इस देश में उत्पन्न ब्राह्मण से पृथ्वी के सम्पूर्ण मानव अपने-अपने कर्मों की शिक्षा पावे। यह घोषणा आदि ऋषि तथा मनुस्मृति के रचयिता मनु महाराज की है। उन्होंने ऐसी घोषणा भारत के लिए ही क्यों की? स्पष्ट है कि विश्व के सम्पूर्ण देशों में भारत की विशिष्टता रही है। इसी देश में प्रभु का वेदरूपी ज्ञान अवतीर्ण हुआ। इस भारत भूमि में अनेक महर्षि, ऋषि, मुनि, परम-योगी, मार्गदर्शक साधु, सन्त, महात्माओं व अनेक सुधारकों का प्रसव किया। सौम्य, मर्यादित राम, कर्मशील कृष्ण, अर्जुन भीम जैसे वीर, राजा हरिश्चन्द्र से सत्यवादी, कर्ण से दानी तथा अनेक लक्ष्मी के पुत्र व्यापारी, उद्योगपति आदि ने संसार के इतिहास रूपी पटल पृष्ठों में न मिटने वाली अमिट छाप छोड़ी है। लोग भारत मा के चरणों में बैठ कर उत्तम शिक्षा व विद्या ग्रहण करते थे और यह विश्व गुरु कहलाती थी।

किन्तु सब दिन जात न एक समान के अनुसार काल चक्र ने भारत की स्थिति को बदला और महाभारत के युद्ध के पश्चात् भारत का पतन शुरू हो गया। आलस्य, प्रमाद के साथ साथ आन्तरिक झगड़ों व कुपरम्पराओं का जन्म हुआ। भारत पर बाहरी आक्रमण होने लगे तथा भारत की सम्पत्ति नष्ट होने लगी। अन्त में भारत को पराधीन होना पड़ा। भारत की स्थिति डावाडोल थी और उसे चतुर व कुशल वैद्य की जरूरत थी। ऐसे में ऋषि दयानन्द का जन्म हुआ जिन्होंने देश, धर्म व जाति के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया तथा विष पीकर अमृत पान कराया।

स्वामी दयानन्द जी ने अनेक ग्रन्थों का निर्माण किया। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वैदिक संस्कार विधि, गोकरुणानिधि, असत्य से हटा कर सत्य की ओर ले जाने वाला तथा वेदमार्ग बतलाने वाला अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश'। इस ग्रन्थ में सभी शंकाओं का समाधान है तथा जीवन जीने की नई प्रेरणा देता है। इस ग्रन्थ को पढ़कर कितनों का हृदय परिवर्तन हो गया। इसी अमर ग्रन्थ के विषय में गुरुदत्त जी ने कहा कि 'यदि मुझे इस पुस्तक के खरीदने के लिए सारी सम्पत्ति बेचनी पड़े तो मैं सहर्ष तैयार हूं।' महर्षि दयानन्द जी ने अपने पवित्र भाव को अपनी कृति सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में स्पष्ट लिखा है कि 'मेरा तात्पर्य किसी को हानि पहुंचाने का अथवा विरोध करने का नहीं है। किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने कराने का है। ऋषि ने ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त ऋषियों का जो मन्तव्य था उसी का प्रचार प्रसार किया है। वे बार-बार कहते हैं कि मेरा मन्तव्य सत्यासत्य का निर्णय है। ऋषि ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' के छठे सम्मुल्लास के अन्दर राजधर्म का वर्णन किया है। इस समुल्लास का भाव यह है कि—

१. राजा और प्रजा के पुरुष मिल के तीन सभा अर्थात् विद्यार्य सभा, धर्मार्यसभा तथा राजार्यसभा नियत करें। जिससे समग्र प्रजा सम्बन्धी मनुष्यादि प्राणियों को सब ओर से विद्या, स्वातन्त्र्य, धर्म सुशिक्षा और धनादि से अलंकृत करें।

२. किसी एक को स्वतन्त्र अधिकार न देना चाहिये किन्तु सभापति के आधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राजसभा के आधीन रहे। यदि ऐसा न करोगे तो जो प्रजा से स्वतन्त्र स्वाधीन राजवर्ग रहे तो राज्य में प्रवेश करके प्रजा का नाश किया करें। अकेला राजा स्वाधीन वा उन्मत्त होके प्रजा का नाशक होता है इसलिए किसी एक को राज्य में स्वाधीन न करना चाहिये। इससे स्पष्ट है कि ऋषि दयानन्द प्रजातन्त्र के पोषक हैं।

३. जो इस मनुष्य के समुदाय में परम ऐश्वर्य का कर्त्ता, शत्रुओं को जीत सके, जो शत्रुओं से पराजित न हो। राजाओं में सर्वोपरि विराजमान प्रकाशमान हो, सभापति होने के योग्य प्रशंसनीय गुण कर्म स्वभाव युक्त, सत्करणीय, समीप जाने योग्य और शरण लेने योग्य सबका माननीय होवे उसी को सभापति राजा करे।

४. महाविद्वानों को विद्यासभाधिकारी, धार्मिक विद्वानों को धर्मसभाधिकारी, प्रशंसनीय धार्मिक पुरुषों को राजसभा के सभासद और जो उन सब में सर्वोत्तम गुण, कर्म स्वभावयुक्त महान् पुरुष हो उसको सभा का पति मानकर सब प्रकार से उन्नति करें। तीनों सभाओं की सम्मति से राजनीति के उत्तम नियम और नियमों के आधीन सब लोग वर्तें। सबके हितकारी कामों में सम्मति करें। सर्वहित करने के लिए परतन्त्र और जो-जो निज काम हैं उन-उन में स्वतन्त्र रहें।

५. जो दण्ड अच्छे प्रकार विचार से धारण किया जाय तो वह सब प्रजा को आनन्दित कर देता है और जो बिना विचारे चलाया जाये तो सब ओर से राजा का विनाश कर देता है।

६. तीनों सभाओं में मूर्खों को भरती कभी न करे किन्तु सदा विद्वान् और धार्मिक पुरुषों का स्थापन करे।

७. स्वराज्य स्वदेश में उत्पन्न हुए, वेदादि शास्त्रों को जानने वाले, शूरवीर जिनका लक्षण निष्फल न हो और अच्छे, कुलीन, सुपरीक्षित मन्त्री नियुक्त करे।

८. न्यायाधीश कभी किसी का पक्षपात न करे। सभा में हमेशा सत्य बोले।

९. प्रजा को उचित है कि राष्ट्र की उन्नति के लिए कर देवे। कभी कर की चोरी न करे।

१०. जिस राजा के राज में न चोर, न परस्त्रीगामी, न दुष्ट वचन बोलने वाला, न डाकू और न राजा की आज्ञा भंग करने वाला है वह राजा श्रेष्ठ है।

११. महर्षि दयानन्द जी ने अष्टम समुल्लास में लिखा है कि 'विदेशी राज्य अच्छा नहीं मत मतान्तर के आग्रह से रहित अपने और पराये के पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता और माता के सदृश्य न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।

लगभग सभी बुद्धिजीवी व्यक्तियों के द्वारा ऊपर लिखी महर्षि दयानन्द की बातें स्वीकारणीय होंगी। किन्तु खेद है कि कुछ सिरफिरे लोगों को आर्यसमाज एक सम्प्रदाय तथा सत्यार्थप्रकाश व्यर्थ पुस्तक नजर आती है। २० फरवरी को मेरठ नगर में पत्रकारों से बात करते हुए विश्व हिन्दू परिषद् के महामन्त्री श्री अशोक सिंघल ने कहा कि "अगर कोई कहे कि कुरान बाइबिल और दयानन्द की पुस्तक के आधार पर सरकार चलाओ तो यह नहीं हो सकता।" मैं श्री अशोक जी को बतलाना चाहता हू कि यदि कुरान और बाइबिल के आधार पर सरकार चली तो भारत का सर्वनाश होगा किन्तु कुन्दन की तरह सत्य बात यह भी है कि दयानन्द की पुस्तक (सत्यार्थ प्रकाश) के आधार पर सरकार न चली तो आनेवाले वर्षों में भारत का नामोनिशान संसार के नक्शे से मिट जायेगा। क्योंकि उसके अन्दर सारी वेदोक्त बात हैं। मैं श्री अशोक जी से पूछना चाहता हूं कि—

- क्या वे राजतन्त्र चाहते हैं? क्या वे राष्ट्र को एक के आधीन करना चाहते हैं?
- क्या वे दुराचारी, व्यभिचारी, अत्याचारी, पैसों के लिए देश बेचने वाले, सत्ता के लोलुप, मुसलमानों का पक्षपाती व्यक्ति को राष्ट्र का शासन सम्भालना चाहते हैं?
- क्या वे सभा के अन्दर मूर्ख सभासद् चाहते है?
- क्या वे जनता का खून चूसने वाले मन्त्री चाहते है?
- क्या वे पक्षपाती न्यायाधीश और कर चुराने वाली जनता चाहते हैं।
- क्या वे राष्ट्र में चोर, डाकू, बलात्कारी व दुष्ट व्यक्ति चाहते हैं?

यदि नहीं तो उन्हें महर्षि दयानन्द की बात स्वीकार होंगी। क्योंकि महर्षि की सारी बातें ईश्वराज्ञा वेदानुसार हैं। श्री अशोक जी

(चालू)

को सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी होगी कि उन्होंने कुरान और बाइबिल के साथ दयानन्द की पुस्तक ऐसा कथन गलत कहा है। कुरान और बाइबिल की तरह दयानन्द की पुस्तक (सत्यार्थ प्रकाश) साम्प्रदायिक पुस्तक नही है। यदि उन्हें अपना कथन उचित व अच्छा लगता है तो उन्हें शास्त्रार्थ के लिए खुली चुनौती है। वे भूल कर रहे हैं उन्हे नही मालूम हसकर फांसी का फन्दा चूमने वाले भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, अपने लहू से आजादी का इतिहास लिखने वाले लाखों वीर आर्यसमाजी थे। स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने वाले अस्सी प्रतिशत आर्यसमाजी थे। आर्यसमाज रामजन्म भूमि आन्दोलन में सहयोग दे रहा है और देना भी चाहिये। क्योंकि श्रीराम हमारी संस्कृति के उज्ज्वल रत्न हैं।

आगामी प्रधानमन्त्री का स्वप्न लेने वाले लालकृष्ण अडवानी जोकि भाजपा के नेता हैं वे कहते हैं कि "राम कृष्ण मांस खाते थे मैं शास्त्रों से सिद्ध कर सकता हूं।" लगता है उन्होंने कभी रामायण तथा महाभारत नही पढ़ी। सुनो अडवानी जी —

पशुओं को मार यदि राम कृष्ण खाते मांस,
तो फिर क्यों मन्दिर-मन्दिर चिल्लाते हो।
रावण और राम कंस बन श्याम में सुनो,
क्या अन्तर रहा चाहे मांस कैसा भी खाते हों।
सुनो अडवानी पढो रामायण महाभारत तुम,
जो मांस भक्षियों को धरा से मिटाते हो।
कैसे खायेंगे वो मांस जरा तो विचार करो,
जीवन जो 'कमल' अपना वेद से चलाते हों।

दयानन्द की पुस्तक अर्थात् एक आर्य की पुस्तक वो भी जो वेदानुसार हो अशोक जी को कुरान और बाइबिल के समान साम्प्रदायिक लगती है तो वे क्यों लडते हैं आर्य राम की जन्म भूमि के लिए? क्यों खून बहाते हैं आर्य कृष्ण के लिए? क्यों आर्यों के सेनापति शंकर के लिये जान देते हो। कहीं वह कथन सत्य न हो जाये कि भाजपा यदि सत्ता में आयी तो सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध लग जाएगा। अशोक जी को जरा अपने दोषों पर पहले नजर डालनी चाहिये, अपने दिल को टटोलना चाहिये कि कौन सही हैं आर्य (श्रेष्ठ, उत्तम) जैसे शब्दों के प्रयोग करने वाले या हिन्दू (काफिर, लुटेरा, बदमाश) जैसे शब्दों के प्रयोग करने वाले। अन्त में मैं यही कहूंगा—

गाहे बगाहे खुद को परखा कीजिए।
यानि अपने दिल में झांका कीजिये॥

रहबरों में हुई लड़ाई है।
रहजनों ने निजात पाई है॥
सब ने डाला है तेल जलती पर।
आग किसने भला बुझाई है॥

—नाज़ सोनपती

'प्रकर'—वैशाख'२०४८

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० २३२०/७३ रजि. न० P/RTK-४९

दयानन्दाब्द ... सम्वत् १,६६, ...

ओ३म्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक २६ २८ मई, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।
वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। (महर्षि दयानन्द)

वेदोपदेश

कैसा राजा प्रजा की रक्षा कर सकता है ?

भारद्वाज: ऋषि.। महावीर. (सेनापति) देवता। त्रिष्टुप् छन्द:। धैवत· स्वर। पुनस्तमेव विषयमाह।

फिर उसी राजधर्म का उपदेश करते हैं।

ओ३म्—अहिरिव भोगै: पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमान:।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमांस परिपातु विश्वत:॥
(यजु० २९।५१)

पदार्थ—(अहि:, इव) मेघ इव गजन्। अहिरिति मेघनाम। निघं. १।१०॥ (भोगै·) (परि) सर्वत: (एति) प्राप्नोति (बाहुम्) बाधक शत्रुम् (ज्याया:) प्रत्यञ्चाया: (हेतिम्) बाणम् (परिबाधमान.) सर्वतो निवारयन् (हस्तघ्न:) यो हस्ताभ्यां हन्ति स: (विश्वा) सर्वाणि (वयुनानि) विज्ञानानि (विद्वान्) (पुमान्) पुरुषार्थी (पुमांसम्) पुरुषार्थिनम् (परि) सर्वथा (पातु) रक्षतु (विश्वत:) ससारे भवाद् विघ्नात्॥

अन्वय:—हे मनुष्य ! यो हस्तघ्नो विद्वान् (पुमान् भवान् ज्याया हेतिं प्रक्षिप्य बाहुं परिबाधमान: पुमांस विश्वत परिपातु सोऽहिरिव भोगैर्विश्वा वयुनानि पर्येति॥

सपदार्थान्वय:—हे मनुष्य ! य: (हस्तघ्न) यो हस्ताभ्यां हन्ति स: (विद्वान्) पुमान् पुरुषार्थी भवान् (ज्याया:) प्रत्यञ्चाया. (हेतिम्) बाणं प्रक्षिप्य (बाहुम्) बाधकं शत्रुम् (परिबाधमान:) सर्वतो निवारयन् (पुमांसम्) पुरुषार्थिनम् (विश्वत:) संसारे भवाद् विघ्नात् (परिपातु), सर्वथा रक्षतु, स: (अहि:, इव) मेघ इव गर्जन् (भोगै.) (विश्वा) सर्वाणि (वयुनानि) विज्ञानानि (परि+एति) सर्वत. प्राप्नोति॥

भावार्थ:—हे मनुष्य ! जो (हस्तघ्न) हाथों से मारनेवाले (विद्वान्) विद्वान् (पुमान्) पुरुषार्थी आप (ज्याया:) प्रत्यञ्चा=धनुष की डोरी से (हेतिम्) बाण को फेंककर (बाहुम्) बाधक शत्रु को (परिबाधमान:) सब ओर से निवारण करते हुए (पुमांसम्) पुरुषार्थी मनुष्य की (विश्वत:) सांसारिक विघ्न से (परि+पातु) सर्वथा रक्षा करते हो, सो (अहि:, इव) मेघ के समान गर्जते हुए (भोगै:) सुखद भोगों से (विश्वा) सम्पूर्ण (वयुनानि) विज्ञानों को (परि+एति) सब ओर से प्राप्त करते हो।

भावार्थ—अत्रोपमालङ्कार:। यो विद्वान् बाहुबल: शस्त्रास्त्रप्रक्षेपणवित् शत्रून् निवारयन् पुरुषार्थेन सर्वान् सर्वस्माद् रक्षन् मेघवत् सुखभोगवर्धक: स्यात्, स सर्वान् विद्या: प्रापयितुं समर्थो भवेत्।

भावार्थ—इस मन्त्र में उपमा अलङ्कार है। जो विद्वान् बाहुबल वाला, शस्त्र-अस्त्रों को चलाने वाला, शत्रुओं का निवारण करता हुआ पुरुषार्थ से सब की सब से रक्षा करता हुआ, मेघ के समान सुख भोगों को बढ़ाने वाला होता है, वह सब मनुष्यों को विद्या प्राप्त कराने में समर्थ होता है।

भाष्यसार—राजधर्म का उपदेश—राजा कैसा होना चाहिये ? पुमान्=परम पुरुषार्थी, विद्वान्=राजनीति में निष्णात, हस्तघ्न=वीर योद्धा, शस्त्रास्त्र विद्या को जानने वाला और राज्य के आन्तरिक तथा बाह्य शत्रुओं को वश में करनेवाला होना चाहिये। जैसे मेघ वर्षा करके ससार के भोग्य पदार्थों को उत्पन्न कराता है, वैसे अपनी प्रजा के सुखों व भोगो को बढ़ानेवाला हो और ज्ञान-विज्ञान की उन्नति में सतत जागरूक होकर समस्त प्रजा को सुशिक्षित कराने का सदा प्रयत्न किया करे।

["दयानन्द-यजुर्वेद-भाष्य-भास्कर" से उद्धृत, व्याख्याता—आचार्य सुदर्शनदेव]

आर्यवीर दल हरयाणा के तत्वावधान में विशाल आर्य वीर निर्माण शिविरों का आयोजन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य वीर दल हरयाणा ने ग्रीष्म अवकाश में कई शिविरों की योजना बनाई है। इन शिविरों के माध्यम से युवकों में चरित्र निर्माण, राष्ट्र निर्माण तथा वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान दिया जाता है। इसके अतिरिक्त युवकों को योग साधना के साथ-साथ आसन, प्राणायाम, लाठी, भाला, जुडो कराटे, कुंगफू, तलवार, छुरी, स्तूप तथा मलखम आदि का प्रशिक्षण दिया जायेगा। आप भी अपने युवकों को इन शिविरो में भेजकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस वर्ष निम्नलिखित शिविर लगाए जा रहे है।

२५ मई से २ जून—आर्यसमाज मकड़ौली (रोहतक), संयोजक श्री सत्यव्रत शास्त्री।

२६ मई से २ जून—दयानन्द महिला विद्यालय, सेक्टर-१, फरीदाबाद, संयोजक श्री कन्हैयालाल जी महता व होतीराम जी।

२६ मई से २ जून—डी० ए० वी० स्कूल करनाल, सयोजक जगदीश मधोक।

२ जून से ९ जून—आर्यसमाज वाछौद (नारनौल), सयोजक वैद्य हरीशचन्द्र जी व रामलाल आर्य।

२ जून से ९ जून—आर्यसमाज नरवाना, संयोजक राधाकृष्ण जी।

२ जून से ९ जून—आर्यसमाज नीमड़ीवाली (भिवानी), संयोजक शेरसिंह आर्य।

१ जून से १० जून—आर्यसमाज सांघी जि० रोहतक, सयोजक विमलेश जी।

९ जून से २३ जून तक (सार्वदेशिक शिविर)—वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार), संयोजक डा० आचार्य देवव्रत।

२४ जून से ३० जून—कैथल, सयोजक श्री जगदीशचन्द्र।

२३ जून से ४ जुलाई—जीन्द, संयोजक कर्णसिंह।

अपील—आप जानते ही हैं कि इन शिविरों पर प्रातराश, भोजन प्रबन्ध तथा अन्य व्यवस्थाओं पर हजारों रुपये खर्च होते हैं।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

वेदविषयक एक आक्षेपयुक्त लेख का उत्तर—

क्या धर्मग्रन्थ होना अपराध है ?

डा० भवानीलाल भारतीय

गतांक से आगे

अब मैं लेखक द्वारा प्रस्तुत किये गये मुख्य विवाद पर आता हूं। वह आर्यसमाज पर यह आरोप लगाता है कि उसने आधुनिक समय मे वेदो को बाइबिल और कुरान के समकक्ष धमग्रन्थ मानने का खासा अभियान चलाया। उसका सीधासा आरोप है कि आर्यसमाज के प्रवर्तक दयानन्द सरस्वती ने ईसाई और मुसलमानो की नकल पर ही वेदों को भारतवासी हिन्दुओं का एकमेव धर्म ग्रन्थ घोषित कर दिया। यह आरोप लगाकर वे दयानन्द के वेदाध्ययन, वेदविषयक उनके विचार और उसकी पृष्ठभूमि, भारतीय परम्परा (आर्यों की शास्त्रीय परम्परा) में वेदों की सर्वमान्य स्थिति, प्रत्येक शास्त्र अथवा आचार्य द्वारा वेद प्रामाण्य को स्वीकार करने, उसके आगे नतमस्तक होने, वेद विरुद्ध बात को नकारने अथवा स्वयं के मत और सिद्धान्त को भी युक्ति अथवा तर्क का आश्रय लेकर वेदानुकूल सिद्ध करने के प्रयास से अपनी अनभिज्ञता प्रकट करते हैं। स्वामी दयानन्द द्वारा वेदों को धर्म ग्रन्थ घोषित करने का विचार यदि ईसाइयत या इस्लाम के अनुप्राणित माना जायगा तब तो यह भी मानना पड़ेगा कि उन्होने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा वेदभाष्य आदि ग्रन्थो को लिखने के पहले बाइबिल और कुरान का गम्भीर अध्ययन किया था और कुरान के इल्हामी किताब होने की मुस्लिम अवधारणा को भलीभांति समझ लिया था। तथ्य इसके सर्वथा विपरीत है। दयानन्द या आर्यसमाज ने यदि वेदों को धर्मग्रन्थ कहा है तो उसके पीछे भारत के आर्य मनीषियों, दार्शनिकों, धर्मचिन्तकों तथा धर्माचार्यों की ही वह परम्परा रही है जिसमें वेदों को सर्वमान्य प्रामाणिक ग्रन्थ के रूप में मान्यता प्राप्त रही है। दयानन्द ने तो वेदो को धर्मग्रन्थ के रूप में प्रामाणिकता तथा मान्यता के लिए पतञ्जलि, व्यास, जैमिनि, कणाद, कपिल, गोतम यहां तक कि शंकराचार्य रचित वेदान्त भाष्य तक के प्रमाण दिये हैं। दयानन्द की दृष्टि में वेद न केवल हिन्दुओं का अपितु मानवमात्र का धर्म ग्रन्थ है क्योंकि वह अनेक विद्याओं का उद्गम स्थान तथा परम आप्त परमात्मा का वचन है।

दयानन्द ने शंकर के शारीरक भाष्य को उद्धृत करते हुए लिखा है कि "ऋग्वेदादि जो चारों वेद हैं वे अनेक विद्याओं से युक्त हैं, सूर्य के समान सब सत्य अर्थों के प्रकाश करने वाले हैं। उनका बनाने वाला सर्वज्ञादि गुणों से युक्त परब्रह्म है।" यदि वे वेदों को प्रामाणिक धर्म ग्रन्थ घोषित करने में सैमिटिक युक्तियों का आश्रय लेते तो शायद इस प्रकार कहते—"वेद परमात्मा की पवित्र वाणी इसलिए हैं क्योंकि वे हमें उसके किसी पैगम्बर या सदेशवाहक के माध्यम से प्राप्त हुए हैं। उस पैगम्बर या सदेशवाहक को वेदों की ये ऋचायें किसी फरिश्ते या देवदूत के माध्यम से प्राप्त हुई थीं आदि।" किन्तु स्वामी दयानन्द का तर्क तो इस प्रकार—"नहीदृशस्य शास्त्रस्यर्ग्वेदादि-लक्षणस्य सर्वगुणान्वितस्य सर्वज्ञादन्यतः संभवोस्ति।" सर्वज्ञ और सर्वगुणान्वित परमात्मा से भिन्न कोई अन्य इन ऋग्वेदादि शास्त्रों का कर्ता नहीं हो सकता। अब बाली जी को यह कौन समझावे कि आर्य मनीषा और भारतीय वैदिक दर्शन में वेदों की प्रामाणिकता (इसीलिये उन्हें धर्मशास्त्र का धर्म ग्रन्थ की संज्ञा दी गई है) को लेकर जो ऊहापोह हुआ है उसका तो काल ही इतना पुराना है कि जिसके समक्ष सैमेटिक मतो को तो अत्यन्त आधुनिक ही मानना होगा। बादरायण और जैमिनि, मनु और याज्ञवल्क्य, पराशर और वसिष्ठ यहां तक कि राममोहन राय विवेकानन्द और अरविन्द भी वेदों को धर्म ग्रन्थ ही कहते है और उनका एतद् विषयक दृष्टिकोण दयानन्द से कथमपि भिन्न नहीं है। सूर्यकान्त बाली ने एक और मनघडन्त बात लिखी है। वे कहते हैं कि आर्यसमाज ने ईसाइयो और मुसलमानों के समकक्ष आर्य नामक नसल जाति, या समुदाय की कल्पना और बाइबिल, कुरान के समकक्ष आर्यो के धर्मग्रन्थ के रूप में वेदों को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया।" उनकी ये दोनो ही उपपत्तियां नितान्त अलीक और मिथ्या हैं। स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज ने "आर्य को जिस अवधारणा को प्रस्तुत किया है वह किसी नस्ल जाति या समुदाय की वाचक नहीं है। इस सम्बन्ध में स्वामी दयानन्द का मन्तव्य ही प्रमाण माना जायेगा न कि बालीजी का कथन। स्वामी दयानन्द सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं—"श्रेष्ठों का नाम आर्य, विद्वान् देव और दुष्टों का दस्यु अर्थात् डाकू, मूख नाम होने से आर्य और दस्यु दो नाम हुए। आर्य नाम धार्मिक, विद्वान् आप्त पुरुषों का।" पुनः स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में वे लिखते हैं—"आर्य श्रेष्ठ स्वभाव, धर्मात्मा, परोपकारी, सत्य विद्यादि गुण युक्त हैं उनको आर्य कहते हैं।" अतः बालीजी का यह आरोप नितान्त मिथ्या और आपत्तिजनक है कि आर्यसमाज ने आर्य नाम से किसी नस्ल या सम्प्रदाय की कल्पना की। यदि स्वामी दयानन्द किसी समुदाय विशेष को ही "आर्य" नाम से पुकारते तो आर्येतर वर्गों को आर्यसमाज में प्रविष्ट होने की स्वीकृति ही क्यों देते और क्यों वे आर्यसमाज के द्वार मनुष्य मात्र के लिये खुले रखते।

बाली जी के विचार में आर्यसमाज ने बाइबिल और कुरान के समकक्ष आर्यो के धम ग्रन्थ के रूप में वेदों को प्रतिष्ठित करने का कार्य किया। इसके वे कुछ कारण भी बताते हैं। किन्तु इन कारणों की समीक्षा करने के पहले लेखक की इस भ्रान्ति को दूर किया जाना आवश्यक है कि आर्यसमाज ने ही वेदो को धम ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया। वे यह भूल जाते हैं कि वेद तो भारतवर्षीय आर्य (हिन्दू) समाज मे अनादि काल से ही धर्मग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित चले आये हैं। वेदो को सर्वोपरि धर्मग्रन्थ मानने में हिन्दुओं के किसी भी मत सम्प्रदाय आचार्य, सम्प्रदाय प्रवर्तक के मन में कभी कोई विप्रतिपत्ति रही नहीं। समस्त उपनिषद्, स्मृति इतिहास ग्रन्थ, पुराण, उपपुराण यहां तक कि तन्त्र ग्रन्थों ने भी वेदों को आर्यों का एक मात्र तथा सर्वप्रधान धर्म ग्रन्थ स्वीकार किया। यदि इन ग्रन्थों के वेद को प्रामाणिक धम ग्रन्थ मानने विषयक उद्धरण ही दिये जायें तो लेख का आकार बहुत बढ जायेगा। वेदों को धर्मग्रन्थ के रूप में मान्यता और स्वीकृति तो तब से अद्यावधि प्रचलित है, जब इस धरती पर न तो बाइबिल और कुरान का ही अस्तित्व था और न कोई सैमेटिक मत ही उत्पन्न हुआ था।

अब श्री सूर्यकान्त बाली द्वारा निर्दिष्ट उन कारणो की समीक्षा करें जो वे वेदों को धर्म ग्रन्थ बताये जाने के हेतु रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुसार 1 आर्यसमाज ने वेदो को इसलिये स्वीकार किया क्योंकि उसने पुराणों को गप्प कहकर ठुकरा दिया था। बाली जी की यह दलील सर्वथा लचर और हास्यास्पद है। आर्यसमाज ने पुराणों को गप्प कहा, यह दूसरी बात है, किन्तु वेदों को सर्वमान्य धर्म ग्रन्थ कहना और मानना तो हिन्दू मात्र को ही अभीष्ट है। जो पुराणों को मान्यता देते हैं वे भी वेदों को ही सर्वाधिक शक्तिशाली और प्रमाण भूत धर्म ग्रन्थ स्वीकार करते हैं। धर्म विचार के प्रसंग में यह एक स्वीकृत मान्यता है कि जब वेदों का अन्य किसी धर्म ग्रन्थ के कथन से विरोध होता हो तो वहां वेद के कथन को ही मान्यता दी जायेगी, किसी अन्य सूत्र स्मृति या पुराण आदि का वचन उसके सामने मान्य नहीं होगा। भागवत पुराण में यही बात इस प्रकार कही गई है।

वेदप्रणिहितो धर्मो ह्यधर्मस्तद्विपर्ययः।

वेद प्रतिपादित धर्म ही धर्म है, उसके विपरीत अधर्म है।

2. बाली जी पुनः कहते हैं—

आर्यसमाज ने रामायण और महाभारत को उनके संशोधित रूप मे ही स्वीकार किया था, इससे देश के सामने कहीं पहचान का संकट खड़ा न हो जाये, इसलिये वेदों को प्रकाशस्तम्भ के रूप में खड़ा किया गया और उन्हें ईश्वरीय रचना कहकर धर्म ग्रन्थ का रुतबा दे दिया गया।" बाली जी का यह कथन तो और भी आपत्तिजनक है। इन श्रीमानजी को यह बता देना आवश्यक है कि वेदेतर धर्म ग्रन्थों में समय समय पर विभिन्न लोगों द्वारा पृथक् पृथक् उद्देश्यों से कितनी ही बार मिलावटें होती रही हैं। अतः किसी ग्रन्थ को संशोधित (प्रक्षिप्त अंशों को छोड़कर अथवा उन्हें अमान्य कर) रूप में मानना कोई अपराध नहीं है।

गुस्सा न कीजिए

(मुकेशकुमार, ग्राम हाटा, पत्रालय नदौली देवरिया)

क्रोध मनुष्य के मन का ऐसा भाव है, जिसके हृदय में आने पर उसके चेहरे पर उसको छाया, उसका स्वरूप झलकने लगता है। वह अपनी सुन्दरता खो देता है, अपना सौमनस्य नष्ट कर देता है और उसकी शान्ति और सुख नष्ट हो जाते हैं। वह दुःख की स्थिति में आ जाता है और उसका सम्पूर्ण वातावरण उसके शरीर, उसके मन और उसकी आत्मा को विचलित कर देता है। इसलिए कहा गया है:—

मा क्रुधः। (अथर्व ११-२-२०) क्रोध मत करो।

जब हमें क्रोध आता है उस समय हमारे मन के भाव ऐसे हो जाते हैं कि हम उस समय दूसरे के अनिष्ट की कामना करने लगते हैं, दूसरे को दुखी देखना और उसको हानि पहुंचाना हमारा उद्देश्य हो जाता है। क्रोध दूसरे को तो हानि पहुंचाने की चेष्टा करता ही है वह जिसमें उत्पन्न होता है उसे भी जलाता रहता है, इसको हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि यह आत्मपीडाजनक भाव है।

मनुष्य क्यों क्रोध करता है ? क्यों उसमें क्रोध उत्पन्न होता है ? मनुष्य के हृदय में कुछ स्थायीभाव हमेशा विद्यमान रहते हैं इन स्थायी भावों में क्रोध भी एक स्थायी भाव है। इससे उत्पन्न होनेवाला रस रौद्र रस कहलाता है। रौद्र का अर्थ है भयकर। अत. क्रोध में मनुष्य की आकृति भयकर, मन भयंकर और आत्मा भी विकृत हो जाता है। अतिरिक्त कामना से क्रोध उत्पन्न होता है, अर्थात् काम से क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध के कारण ही मनुष्य एक-दूसरे से लडते रहते हैं, झगडते हैं, कठोर वाणी से एक-दूसरे को बोलते हैं, और कामना के कारण ही वर्ग संघर्ष होता है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से लड़ता है। एक देश दूसरे देश से संघर्ष करता है। इन सब बातों से मनुष्य न केवल दूसरे का नाश करता है, अपितु उसको भी हानि पहुंचाती हैं।

क्रोध को दूर करने के लिए हमें अपने अन्दर शान्ति की भावना लानी होगी, हमें अपने अन्दर के विचारों को सन्तुलित करना होगा दर्शन के शब्दों में अपने अन्दर सम की भावना लानी होगी तभी हम क्रोध से बच सकते हैं।

एक बार की बात है कि भगवान् बुद्ध का एक शिष्य जिसका नाम तिष्य था वह बुद्ध भगवान् के पास गया। उसका चेहरा उतरा हुआ था। वह अत्यन्त उदास दिखायी दे रहा था। बेमन भाव से बैठ गया। उसे उदास और चिन्तित देखकर बुद्ध भगवान् ने पूछा "वत्स तिष्य ! तुम इतने उदास चिन्तित और बेमन क्यों हो ?" शिष्य ने कहा "भन्ते मेरे साथी भिक्षुक मेरे साथ कड़ी वाणी का प्रयोग करते हैं। मेरे साथ ठीक व्यवहार नही करते हैं ?"

भगवान् बुद्ध मुस्कराये वे जानते थे कि तिष्य की वा ी भी बहुत ही कठोर है। वह दूसरों से मधुर व्यवहार करना नही जानता है। उसमें भी विष है। बुद्ध ने कहा "तेरे साथी भिक्षु तुझे पीडित करते हैं इसका कारण यह जीभ है, और तू दूसरों की जीभ को सहन नही कर सकता है। जब तेरी जबान तेज है तो तेरे लिए यह उचित है कि दूसरों की जबान को तू सहन करे। जिस किसी की तेरे समान जीभ है उसे दूसरे की जीभ को सहन करने को तैयार रहना चाहिए। तेरे लिए नम्र होना ही उत्तम है। क्रोध रोकना ठीक है इसके लिए तुझे साधना का जीवन बिताना पड़ेगा।"

स्वामी श्रद्धानन्द कहा करते थे साधना के लिए हमें प्रयत्न पूर्वक विचार करना होगा। कड़ी से कड़ी परिस्थिति में अपने को रोकना पड़ेगा। वे कहते थे "लोग हम पर झूठ अपवाद लगा सकते हैं हम पर मिथ्या अभियोग चला सकते हैं, हमारी झूठी निन्दा कर सकते हैं" हमारी साधना होगी कि दूसरे के प्रति अपने मन में विकार न आने दूगा। मैं दूसरे के प्रति कभी दुर्वचन अपने मुह से नही निकालूगा मुझे सबके साथ आत्मीयता विश्व के प्रति मित्रता दीन दुखियों के प्रति करुणा और नासमझो के प्रति उपेक्षा का भाव रखना होगा। मैं सम्पूर्ण विश्व को मित्रता से देखूगा। सबको मित्रता की दृष्टि से देखूगा इस प्रकार हम क्रोध को शान्त कर सकते हैं।

क्रोध हमारा शत्रु है क्रोध रूपी जो आग आप अपने शत्रु के लि अपने हृदय में जलाते हैं वह शत्रु से अधिक आपको जलाती है। हमा मन मे जब क्रोध आवे तो हमें यह करना चाहिए कि हम एक से द तक गिनती गिनें और तब भी यदि क्रोध दूर नही होता है तो एक सौ तक गिनती तक गिनते चले जायें। क्रोध बस में न आने पर अने कठिनाइया और परेशानिया पैदा कर देता है। यह दु.ख और दरिद्रत को जन्म देता है। क्रोध मनुष्य मे घृणा का भाव उत्पन्न कर देता है जो कभी-कभी मनुष्य को नेस्त नाबद कर देता है। इसलिए क्रोध आ पर हमको उसके विषय मे तर्क करना चाहिए और उसे धक्का देक निकाल देना चाहिए। शत्रुता, बुरा वर्ताव, जलन, घबराहट, भा बैठना, घृणा, कठोरता, परेशानी, उद्वेग ये क्रोध के पर्याय या भाईबन्ध हैं, क्रोध इनके साथ आता है।

एकबार एक व्यापारी बड़ा क्रोधी था और इस क्रोध ने उसके व्यापार को नष्ट होने की सीमा तक पहुंचा दिया। उसने क्रोध पर विजय प्राप्त करने की कहानी इस प्रकार लिखी है—

"मैं अपनी इच्छा से अधिक ईश्वर के आदेशों से प्रीति करने लग और अपने कार्यों को शान्ति पूर्वक धैर्य पूर्वक करने लगा, बुरे विचार आलोचना, घृणा, स्वार्थ बदले की भावना घमण्ड और कठोरता क दूर भगा दिया। मैं क्रोध की भट्ठी से निकाल कर शान्ति के झरने निकाल कर आ गया।"

अब वह आदमी मानवता का नमूना है उसके रोग दूर हो गये और वह सशक्त और बलवान् होगया है। आइए हम भी क्रोध दूर करने का निश्चय करें अपने जीवन को शान्त और सुमधुर बना हुए आगे बढें। वेद के क्रोध न करो इस आदेश के पालन से ही ह जीवन में आगे बढ सकते है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का चुना

दिनांक १४-४-९९ को आर्य प्रतिनिधि सभा भवन, राजापा जयपुर में चुनाव अधिकारी श्री सत्यव्रत सामवेदी की देखरेख में प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें नि अधिकारी चुने गये।

प्रधान : श्री विद्यासागर शास्त्री, मन्त्री : श्री स्वामी सुमेधान वेदप्रचार अधिष्ठाता : श्री डॉ० सुभाष वेदालकार, कोषाध्यक्ष : सत्यनारायण शाह, कार्यालयमन्त्री : श्री ओमप्रकाश, पुस्तकालयाध्य श्री धर्मवीरसिंह, आर्यवीर अधिष्ठाता : श्री सुखदेव गोयल।

शोक सन्देश एवं श्रद्धांजलि

२५ अप्रैल को ग्राम खेडा (भिवानी) में आर्य भजनोपदेशक महा दीपचन्द आर्य की माता जो श्री मनभरी देवी का देहान्त हो गय उनकी आयु ८५ वर्ष की थी। उनमें अतिथि सेवा एवं आर्यसमाज अटूट श्रद्धा थी। श्रद्धांजलि के अवसर पर स्वामी सर्वदानन्द जी आध्यात्मिक प्रवचन दिया। उन्होंने बताया शरीर नश्वर है, आत्मा अ है। इसके अतिरिक्त श्री हनुमान आर्य, डा० सरजीत आर्य, उमरावसिंह आर्य आदि ने भी पुण्य आत्मा को श्रद्धांजलि दी साथ भगवान् से प्रार्थना की उसकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे। अवसर पर महाशय प्रेमी जी, इन्द्राज आर्य, दीपचन्द आर्य गुरुकुल धीरणवास के दो छात्र महावीर आर्य, राजेन्द्र आर्य एवं गुरुकुल पचगावा की दो छात्रा सुनीति व निर्मला आर्या द्वारा आध्याि एव ईश्वर भक्ति के भजन हुवे। प्रात.काल शान्ति यज्ञ किया ग श्री दीपचन्द आर्य ने ५१ रु० आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, ५१ गुरुकुल धीरणवास, ५१ रु० गुरुकुल पचगावा को दान दिया।

अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी सभा उपदेश

सोचो, समझो और निंदियारी आंखें खोलो

पांच हजार वर्षों से सोने वालो अब निंदियारी आंख खोलो और अपने स्वाभिमान, स्वावलम्बन, प्रतिष्ठा एवं आबरू को बचाओ। पांच हजार वर्षों के बाद अज्ञान अन्धकार की छायी अंधेरी घटाओं से घिरे लोगों के बीच ऐसे सूर्य का उदय हुआ जिसने आज खड़ी हुई इन नाना प्रकार की समस्याओं को दूर करने का प्रयास करते-करते अपने आपको न्यौछावर कर दिया था। परन्तु ऐ लोगो ! तुमने दर्द सुधा देश धर्म के हितैषी स्वामी दयानन्द जी की नहीं मानी। जिसका परिणाम यह हुआ कि आज दर-दर की ठोकरें खानी पड रही हैं, पिटना पड़ रहा है।

याद रखो ! हम हिन्दू नहीं हैं सच्चे अर्थों में देखा जाय तो हम आर्य ही हैं। एक बार स्वामी जी के मुखारविन्द से हिन्दू शब्द धोखे से निकल गया था तो स्वामी जी महाराज ने तुरन्त उस गल्ती को महसूस कर कहा, ऐ लोगो ! मैंने यह शब्द "हिन्दू" गल्ती से कह दिया है, हम हिन्दू नहीं ! आर्य हैं और राम भी आर्य थे जिस महा-पुरुष की जन्मभूमि में मन्दिर बनाने में होनेवाले व्यवधानों के कारण आज देशव्यापी संघर्ष छिड़ा हुआ है। उन्हीं राम और कृष्ण की मान्य-ताओं को कायम रखने के लिए ही तो स्वराज्य का नारा लगाया था। वह उस तरह का स्वराज्य जैसा राम राज्य था—

दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज्य नहिं काहुहि व्यापा॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीति। चलहिं स्वधर्म वेद श्रुति नीति॥

जिस रामराज्य में किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होता था। क्योंकि सभी लोग ऊंच-नीच का भेदभाव हटाकर आपस में परस्पर प्रेम से रहकर स्वधर्म अर्थात् वैदिक धर्म जो मानव धर्म है, मानव मात्र को एक समान शिक्षा देता है उस वेदोक्त मार्ग पर लोग चलते थे।

इस देश का दुर्भाग्य कहां तक बताऊं, बाबू जगजीवनराम एक बार मन्दिर पर प्रविष्ट होगये तो उस मन्दिर को अपवित्र समझकर पानी से धोया गया था और उनको तो मन्दिर में जाने भी न दिया जाता, किन्तु उनको इसलिए नहीं रोका गया कि वे उस समय केन्द्र शासित राज्य के रक्षा मन्त्री पद पर थे। अब तो कुछ लोगों में चेतना आई है जब भीषण नर संहार होना शुरु हुआ है, जब मारे खदेड़े और पीटे जाने लगे हैं।

साध्वी ऋतम्भरा ने अपने भाषण में ८ दिसम्बर १९९० को रामलीला मैदान (कटरा) हिसार में कहा था कि ओ हिन्दुओ ! न तुम पंजाबी न कश्मीरी, और न ब्राह्मण, क्षत्रिय, बनिया, यादव हो, तुम सब एक हो। केवल मनुष्य में दो नस्लें हैं एक रामजादे और दूसरे हरामजादे और वैदिक धर्म भी इसी बात को मानता है कि मनुष्य के दो वर्ग हैं एक आर्य और दूसरे दस्यु। ये सब बातें कहां से मिलीं ? ये सब बातें वेद की ही तो हैं। इन्हीं सब बातों के लिए ही तो स्वामी दयानन्द जी ने अपना जीवन खपाया था। किन्तु ऐ अभागे लोगो ! महर्षि की बातों को ठुकराया तो क्या पाया ? याद रखो जब हम राम की संतान हैं तो आर्य ही हैं। राम आर्य थे, ऐसा एक भी प्रमाण नहीं है कि राम हिन्दू थे। यदि हम अपने को हिन्दू कहेंगे तो सिद्ध किए जा सकते हैं कि राम की सन्तान नहीं हैं। क्योंकि पुत्रों को पिता की वसीयत मिलती है। इसलिए राम आर्य थे और हम भी आर्य हैं। मैं विश्व हिन्दू परिषद् से निवेदन करना चाहूंगा कि वे निन्दियारी आंखें खोलें और अपने को हिन्दू न समझकर आर्य समझें तथा अपने को आर्य विश्व परिषद् के नाम से परिचय देने में गौरवान्वित समझें।

याद रहे जिस दिन हिन्दू आर्य विचारों से ओतप्रोत होकर आप में हिन्दू न रहकर आर्य मान्यताओं से सुशोभित हो जायेंगे उस दिन दुनिया की कोई शक्ति हम आर्यों को झुका नहीं सकेगी। हमें अपने स्वाभिमान और पूर्ण आजादी के महाराणा प्रताप और वीर शिवाजी जैसे स्वाभिमानी वीरों के पदचिन्हों पर चलना होगा और कहना होगा कि—

खाऊं न परतन्त्रता की स्वर्ण की इन थालियों में,
भले हैं स्वतन्त्रता के दोने ढाक पात के।
मुझपे लंगोटी फटी रानी पे हो धोती फटी,
और बच्चे मांगे रोटी-रोटी शीश न झुकाऊंगा॥

लेकिन यह सब कब होगा जब हम कमर कसकर तैयार हो जायेंगे और राम की ही भांति राक्षसों का संहार करने के लिए मैदान में आयेंगे तथा स्वाभिमान से सिर उठाकर प्रत्येक भारत मां का सपूत कहेगा कि— हाथ में कटार मेरे रक्षा के वास्ते होगी,

वर्ना न परतन्त्र हो, जीयेंगे स्वाभिमान से।
चाहे सौ बार मुझे जीवन को खपाना पड़े,
फिर भी रण में जाके कभी पीठ न दिखाऊंगा॥

ले० जीवनार्य पुरोहित आर्यसमाज हांसी

दुःखी करो मत जन-जन को

नभ की ऊंचाई में चढ़कर, मत भूलो गहराई को।
जिस सागर से मोती मिलते, मत भूलो उस खाई को॥

बनकर नेता चढ जाते हो, तुम नभ के तारों जैसे।
हुए उतावले इतने मे ही, ध्यान नहीं अरुणाई को॥

वोट मांगते समय बड़े, निर्मल पवित्र तुम लगते हो।
जीते चुनाव मिली जब कुर्सी, दिखलाते तरुणाई को॥

आरक्षण से जाति-पाति को, मत फैलाओ नेताओ।
हिन्दू को तुम अलग करो मत, ना तोड़ो भाई-भाई को॥

राजनीति की रणनीति से दुःखी करो मत जन-जन को।
बजती रहने दो तुम लोगो, प्रेम भरी शहनाई को॥

—"जीवनार्य" आर्यसमाज हांसी

जग से तिमिर हटायें

वैदिक धर्म महान् हमारा कभी नहीं बिसराओ।
देश धर्म जाति के हित में अमर सपूतो आओ॥

दानव बने हुए हैं मानव भ्रष्टाचार बढ़ाया,
काम क्रोध मद लोभ मोह ने, अपने बीच फंसाया।
देवर ने भाभी के मुख पर रंग की छाप लगाई,
नहीं है सीता नहीं लक्ष्मण, नहीं भरत-सा भाई।
मर्याद कैसे बिसराई, श्री राम बन जाओ। देश धर्म······

महाराणा प्रताप भूल गये, उधमसिंह अब कौन कहे,
मोहनलाल, गोपाल शिवाजी, राममूर्ति नहीं रहे।
वीरों के हुए बन्द अखाड़े, शक्ति नित्य बहाते,
गुरुकुल में सन्तान पढ़ाओ, बल बुद्धि आ जाते।
जीवन में नहीं धोखा खाते, जल्दी प्रवेश दिलाओ। देश धर्म

नेता जो की बातों को हम जीवन में दोहराये,
रहे सगठन एक हमारा जो चाहें सो पायें।
बिस्मिल भगत चन्द्रशेखर हमें जाते-जाते बोल गये,
सच्चे पथ पर कदम बढ़ाना, मार्ग दयानन्द खोल गये।
भू मण्डल पर डोल गये तुम, जीवन को पढ़ जाओ। देश धर्म

सच्चे पथिक बनें जीवन में पास पड़ौस बनायें,
गांव शहर तहसील जिले में, देश के सम्मुख आयें।
भूले बिछड़े दीन जनों की सेवा में जुट जाओ,
महेश आर्य मर्यादा का सबको पाठ पढ़ाओ।
घर-घर दयानन्द बन जाओ जग से तिमिर हटाओ। देश धर्म

श्री राजीव गांधी की जघन्य हत्या पर सर्वत्र शोक

भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी का मद्रास के निकट २१ मई की रात्रि को एक भयकर बम विस्फोट में निधन हो गया। उनकी आयु ४७ वर्ष की थी। इस दुःखद समाचार को सुनकर सारा राष्ट्र स्तब्ध रह गया। आतकवादियो की गतिविधियों से प्रत्येक नरनारी चिंतित है। बड़े से बड़े नेता भी जब सुरक्षित नही है तो साधारण व्यक्ति अपनी रक्षा कैसे कर सकता है।

२४ मई को दिल्ली में वैदिक रीति के अनुसार उनका दाह सस्कार किया गया। इस अवसर पर देश तथा विदेश के भारी संख्या में नर-नारी उपस्थित थे। उनकी जघन्य हत्या की सर्वत्र निन्दा की गई।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने श्री राजीव गांधी की निर्मम हत्या पर गहरा दुःख प्रकट किया और शोक सतप्त परिवार से सहानुभूति प्रकट की है। —केदारसिंह आर्य

धर्म बनाम राजनीति

आचार्य प्रेमभिक्षु एम०ए०

हमारे देश के कुछ राजनेता ऊँचे स्वर से चिल्ला रहे हैं—'धर्म को राजनीति में न लाओ।' इनसे पूछिये कि तब क्या 'अधर्म' को राजनीति में लावे?

महात्मा गांधी भारत में जब राम राज्य लाने की बात कहते थे तो क्या वे 'धर्मराज्य' की ही बात नहीं कहते थे? सन्त तुलसीदास ने राम राज्य का वर्णन करते हुए लिखा है—

बरनाश्रम निज-निज धरम, निरत वेद-पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं, नहिं भय-शोक न रोग॥

महर्षि वाल्मीकि के शब्दों में श्री राम स्वयं (रामो विग्रहवान् धर्मः) धर्म या मानवता की साक्षात् प्रतिमूर्ति हैं और ऐसा है श्रीराम का 'धर्म राज्य' जिसमें सभी प्रजाजन (वेदोऽखिलो धर्ममूलम्) धर्म या मानवता के मूल स्रोत वेदों के मार्ग पर चलकर सदैव सुख-शान्ति एवं निर्भयता लाभ करते हैं। श्रीराम के धर्म राज्य में—

दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज्य काहुहिं नहिं व्यापा।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती, चलहिं स्वधर्म निरतश्रुति नीती॥

आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैविक कष्ट न था, जिसमें सभी वर्ण स्वधर्म पालन करते हुए भी सर्वथा समान थे (क्योंकि वर्ण-व्यवस्था जन्म मूलक न थी) सभी को उन्नति का समान अवसर था। प्रकट है कि राम राज्य का आधार धर्म—वैदिक (मानव) धर्म है।

कैसी विडम्बना है कि गान्धी जी का सारा पुरुषार्थ इस धर्म-मूलक 'राम राज्य' को लाने के लिए था, जबकि गान्धी का नाम लेकर अपनी राजनैतिक मौत से बचने का प्रयास करने वाले, गान्धी जी के तथाकथित चेले 'धर्म-विहीन' राज्य का ढोल पीटते हैं, और तुर्रा यह कि इस भयङ्कर पाप को भी वे (आत्महनन करते हुए) सबसे बड़ी विशेषता बताते हैं। गान्धी जी 'धर्म-विहीन' राजनीति को वेश्या बताते हैं और उनके चेले इसी वेश्या पर फिदा हैं। सचाई यह है कि राजनीति के ये पण्डे न धर्म का अर्थ जानते हैं, न राजनीति का। किमाश्चर्यमतः परम्। वस्तुतः धर्म और राजनीति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश के छठे समुल्लास को 'राज धर्म' की सज्ञा दी है। महर्षि कणाद के अनुसार (यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः) धर्म लौकिक (भौतिक) और पारलौकिक (आध्यात्मिक) उन्नति के समन्वय का नाम है। मानव धर्मशास्त्र प्रणेता मनु द्वारा प्रस्तुत धर्म के धर्म लक्षण (धृति क्षमा…) सार्वभौम धर्म के दस स्वर्णिम सूत्र हैं। धर्म की परिभाषा ही है—'धर्मो धारयते प्रजा' प्रजा को धारण करने वाले नियमों का नाम ही 'धर्म' है। अतः धर्म ही राष्ट्रियता है और राष्ट्रियता ही धर्म है। दूसरे शब्दों में धर्म का द्रोही राष्ट्र और राष्ट्रियता का शत्रु है। और चूंकि श्रीराम धर्म के मूर्तिमान् स्वरूप थे, अतः धर्म का द्रोही राम का द्रोही और राष्ट्र का द्रोही है।

हम भूले नही कि जैसे धर्म और विज्ञान परस्पर विरोधी नही, एक-दूसरे के पूरक हैं, वैसे ही धर्म और राजनीति (राष्ट्रियता) भी एक-दूसरे के पूरक हैं। धर्म बिना राजनीति या राष्ट्र चिंतन के अधूरा, पगु और लंगड़ा है तथा राजनीति बिना धर्म के अधी है। भारत को राम राज्य (धर्म सापेक्ष राज्य) चाहिये।

हां, यदि धर्म को कोई सकुचित अर्थों में विभिन्न सम्प्रदायों के रूप में लेता है तो प्रथम तो यह अनुचित है, फिर जो अपनी शासन-नीति के मूल में इसी साम्प्रदायिक भेद-भाव के चिन्तन के आधार पर अल्पसंख्यक और बहुसख्यक जैसा वर्गीकरण करते हैं और उसी के आधार पर चुनाव, शिक्षा, नौकरी आदि का बटवारा करते और इसी प्रकार मानव-मानव के बीच भेदक रेखा खीच जन्म के आधार पर जातिवाद को स्वीकार कर शासन की नीतियां चलाना चाहते हैं, वही सबसे बड़े साम्प्रदायिक हैं वही सबसे बड़े धर्म द्रोही एव राष्ट्र-द्रोही हैं। भारतीय प्रजा को इन धर्म द्रोही अथवा राष्ट्र द्रोहियों को मई में होने वाले निर्वाचनों में सबक सिखाना है कि भारत की राजनीति धर्ममूलक ही रही है, और रहेगी तथा धर्म की भावना है—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥

ग्राम सांघी मे वेद प्रचार

सांघी जि० रोहतक में श्री सूबेदार श्री रणवीरसिंह के सुपुत्र हर्षवीर के जन्म-दिवस के उपलक्ष में दिनांक ११, १२ मई १९९१ को सभा की ओर से वेद-प्रचार का कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर प० ईश्वरसिंह की भजन मण्डली तथा जगवीरसिंह जो के ११ मई रात्रि को भजन तथा सुदर्शनदेव आचार्य का उपदेश हुआ। दिनांक १२ मई को प्रातःकाल महायज्ञ तथा स्वा० योगानन्द तथा मेजर आर्यवीर का भाषण तथा प० ईश्वरसिंह के भक्तिपूर्ण भजन हुए। भक्त प्यारेलाल जी ने गृह प्रवेश के लिए मालार्पण पूर्वक सूबे० रणवीरसिंह जी को आशीर्वाद दिया। आर्यसमाज सांघी को २१) रु० योगाश्रम लिड़वाली को ११) रु० तथा २००) रु० आर्य प्रतिनिधि सभा को दान दिया गया। यह कार्यक्रम बहुत अच्छा एव प्रभावशाली रहा। १ से १० जून तक ब्रह्मचर्य शिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। ओमप्रकाश आर्य, मन्त्री-आर्यसमाज सांघी (रोहतक)

वेद प्रचार मंडल जिला जोन्द के निर्णय

वेद प्रचार मण्डल जिला जीन्द की मई मास की बैठक आर्य समाज मन्दिर जीन्द शहर में हुई जिसमें ११ सदस्य उपस्थित थे। बैठक की अध्यक्षता मण्डल के संयोजक स्वामी श्री रत्नदेव जी ने की। सर्वसम्मति से निर्णय किया गया कि:—

१—चुनावी माहौल को देखते हुए १६ मई से जून १, १९९१ तक प्रचार कार्य स्थगित किया जाये तथा भजन मण्डली को उक्त अवधि के लिये अवैतनिक अवकाश दे दिया जाये।

२—चुनाव प्रचार हेतु मण्डली किसी भी राजनैतिक पार्टी या किसी भी प्रत्याशी के लिए प्रचार हेतु न जाये, क्योंकि वेद प्रचार मण्डल सब का है और इस नाते हम नहीं चाहते कि किसी दल या व्यक्ति विशेष का प्रचार करें। हमारी व्यक्तिगत रुचि चाहे जिसमें हो पर मण्डल के नाते हम सबको समान मानकर चलते हैं।

३—जून के प्रथम सप्ताह से प्रचार कार्य पुन प्रारम्भ कर दिया जायेगा।

बैठक के अध्यक्ष स्वामी रत्नदेव जी ने मण्डल की ओर से आर्य समाज जीन्द शहर के सुयोग्य प्रधान श्री जयकिशन जी आर्य और उत्साही युवा मन्त्री श्री राजवीर जी आर्य और समस्त समाज का धन्यवाद किया कि उन्होंने बैठक के लिए सारी व्यवस्था अत्यन्त सुचारू एव उत्तम प्रकार से की। प्रो० ओमप्रकाश आर्य

वेद में प्रकृति विषयक प्रश्नोत्तर

(पं० धर्मदेव 'मनोषी' वेदतीर्थ, गुरुकुल कालवा)

जिज्ञासु मनुष्य विद्वानों से इस प्रकार प्रश्न करें:—

का स्विदासीत्पूर्वचित्तिः किँ स्विदासीद्बृहद्वयः।
का स्विदासीत्पिलिप्पिला का स्विदासीत्पिशङ्गिला॥
(यजु० २३।५३)

अर्थ—हे विद्वान्! इस जगत् में (का स्वित्) कौन (पूर्वचित्तिः) अनादि समय में संचित होने वाली (आसीत्) है? (किं स्वित्) कौन (बृहत्) महान् (वयः) प्रजनन रूप वस्तु (आसीत्) है? (का स्वित्) कौन वस्तु (पिलिप्पिला) आर्द्र=पिलपिली (आसीत्) है? (का स्वित्) कौन (पिशङ्गिला) अवयवों को अन्दर करनेवाली वस्तु (आसीत्) है? यह आप से पूछता हूं।

भावार्थ—यहां चार प्रश्न हैं, उनके समाधान=उत्तर अगले मन्त्र में देखें।

पूर्व मन्त्र के प्रश्नों के उत्तर:—

द्यौरासीत्पूर्वचित्तिरश्वआसीत् बृहद्वयः।
अविरासीत्पिलिप्पिला रात्रिरासीत्पिशङ्गिला॥ (यजु० २३।५४)

अर्थ—हे जिज्ञासु (द्यौ) विद्युत् (पूर्वचित्ति) प्रथम संचित वस्तु है (अश्व) महत् तत्त्व (बृहत्) महान् (वयः) प्रजनन आत्मक (आसीत्) है, (अविः) रक्षक प्रकृति (पिलिप्पिला) आर्द्रभूत वस्तु (आसीत्) है, (रात्रि.) रात्रि के समान प्रलय (पिशङ्गिला) सब अवयवों को निगलने वाली (आसीत्) है, ऐसा तू जान।

भावार्थ—हे मनुष्यो! जो अति सूक्ष्म विद्युत् है वह प्रथम परिणाम है। महत् नामक द्वितीय परिणाम है। प्रकृति मूल कारण रूप परिणाम है, और प्रलय सब स्थूल पदार्थों का विनाशक है, ऐसा समझो।

चार प्रश्न इस प्रकार थे—हे विद्वान् इस जगत् में प्रथम=अनादि संचित वस्तु क्या है? महान् प्रजननात्मक वस्तु क्या है? आर्द्र अर्थात् पिलपिली वस्तु क्या है? अवयवों को अन्दर करने वाली अर्थात् निगलने वाली वस्तु क्या है? इनका समाधान इस प्रकार किया है—

विद्वान् उत्तर देता है कि हे जिज्ञासु! विद्युत् प्रथम संचित वस्तु है, अर्थात् अति सूक्ष्म विद्युत् प्रकृति का पहला परिणाम है। महत्-तत्त्व महान् प्रजनन आत्मक वस्तु है जो प्रकृति का दूसरा परिणाम है। रक्षक-प्रकृति आर्द्रभूत=पिलपिली वस्तु है जो मूल कारण रूप परिणाम है। रात्रि के समान प्रलय सबके अवयवों को निगलने वाला है अर्थात् सब स्थूल पदार्थों का विनाशक है।

आगे मन्त्र में पुनः प्रश्न किये हैं—

काईमरे पिशङ्गिला काईं कुरु पिशङ्गिला।
कईमास्कन्दमर्षति कईं पन्था वि सर्पति॥ यजु० २३।५५)

अर्थ—(अरे) अरे मित्र! (ईम्) (का) कौन (पिशङ्गिला) रूप को आवृत करने वाली है? (ईम्) और (का) कौन (कुरुपिशङ्गिला) कृषि आदि के अवयवों को नष्ट करने वाली है? (ईम्) और (कः) कौन (आस्कन्दम्) शीघ्र (अर्षति) पहुंचता है? (कः) कौन (ईम्) जल के (पन्थाम्) मार्ग में (विसर्पति) गति करता है? इन प्रश्नों का समाधान कर।

भावार्थ—कौन रूप को आवृत करता है? कौन कृषि आदि को नष्ट करता है? कौन शीघ्र दौड़ता है? कौन मार्ग में चलता है? ये चार प्रश्न हैं। इनके उत्तर अगले मन्त्र में—

अजारे पिशङ्गिला श्वावित्कुरुपिशङ्गिला।
शश आस्कन्दमर्षत्यहि पन्थां वि सर्पति॥ (यजु० २३।५६)

अर्थ—(अरे) अरे मनुष्यो! (अजा) जन्मरहित प्रकृति (पिशङ्गिला) रूप को आवृत्त करनेवाली है एवं (श्वावित्) सेंह (पशु विशेष) के समान कृषि आदि के अंगों को नष्ट करने वाली है। (शश.) खरगोश के समान वायु (आस्कन्दम्) सब ओर उछलकर (अर्षति) पहुंचता है। (अहिः) मेघ=बादल (पन्थाम्) मार्ग में (वि+सर्पति) विविध गति करता है, ऐसा जानो।

भावार्थ—हे मनुष्यो! जो अज=अजन्मा प्रकृति है वह सब कार्य जगत् का प्रलय करनेवाली, कार्य कारण रूप अपने कार्य को अपने में लीन कर लेती है, जो सेंह कृषि आदि का विनाश करती है, जो वायु शश=खरगोश के समान चलता हुआ सबको सुखाता है, जो बादल सर्प के समान गति करता है, उन्हें जानो।

जिज्ञासु प्रश्न करे अरे विदुषी स्त्री रूप को आवृत करनेवाली क्या वस्तु है? कृषि आदि का विनाश करने वाली क्या वस्तु है? शीघ्र कौन दौड़ता है? जल के मार्ग में कौन-कौन गति करता है? इस प्रकार चार प्रश्न थे उनके उत्तर भी प्रस्तुत किये हैं।

विद्वान् उत्तर देता है कि हे मनुष्यो! जो अज=अजन्मा प्रकृति है वह सब कार्य जगत् का प्रलय करने वाली कार्य-कारण आत्मक, और अपने कार्य को अपने में लीन करने वाली है। जो सेधा=सेह (पशु विशेष) है वह कृषि आदि का विनाश करने वाली है। जो वायु है वह शशक=खरगोश के समान सब ओर उछलकर पहुँचता है एवं सब को सुखाता है। जो मेघ=बादल है वह जल मार्ग में विविध गति करता है एवं सर्प के समान चलता है। तुम लोग इन प्रकृति आदि पदार्थों को जानो।

आर्यसमाज नारग का वार्षिकोत्सव

२६, २७, २८ मई को आर्यसमाज के प्रांगण में बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। जिसमें स्वामी ब्रह्मानन्द जी राजगढ़ व स्वामी धर्मानन्द जी पानीपत वालों के ओजस्वी प्रवचन हुए और पं० चिरंजीलाल जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के ओजस्वी भजन हुए और पं० हरिचन्द जी प्रतिनिधि सभा हिमाचल, योगेन्द्र जी सिरमौर सभी के सुन्दर कार्यक्रम हुए। श्री देवेन्द्र जी शास्त्री द्वारा मंच सचालन हुआ। उत्सव में स्त्रियों की संख्या लगभग ५०० एवं एक हजार पुरुष कुल लगभग डेढ़ हजार लोग उत्सव में प्रतिदिन भाग लेते रहे। उत्सव सफल रहा।

—प्यारसिंह, मंत्री नारग (हि.प्र.)

(पृष्ठ १ का शेष)

यह सभी आपके प्रेम और सहयोग से ही पूरा करना है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि आप अपने बच्चों को अवश्य इन शिविरों में भेजें तथा आप स्वयं भी कार्यक्रम देखें। अतः आप अपनी ओर से अपनी प्रिय आर्यसमाज/संस्था की ओर से अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग दें। कम से कम १०१ रुपये का सहयोग आप अवश्य ही भिजवाएं। समस्त क्रास चैक, ड्राफ्ट, मनी आर्डर मन्त्री आर्य वीर दल हरयाणा, आर्यसमाज शिवाजी कालोनी रोहतक के पते पर भेजें। आप शिविर के लिए शुद्ध घी, आटा, दाल, दलिया, चावल, चीनी आदि सामान भिजवाकर भी सहयोग कर सकते हैं।

हमें विश्वास है कि आप इसे अपनी अन्तरंग सभा में रखकर अधिक से अधिक सहयोग भिजवाने की कृपा करेंगे।

आपके सहयोग के आकांक्षी :

उमेदसिंह शर्मा	वेदप्रकाश आर्य	स्वामी रत्नदेव
संचालक	प्रान्तीय मन्त्री	अधिष्ठाता

संरक्षक :

स्वामी ओमानन्द,	प्रो० उत्तमचन्द शरर	डा० लक्ष्मणदास

आर्य वीर दल हरयाणा

पुलिस की घाघरियों से शराबियों के हौसले पस्त

बहादुरगढ—यहां अपराधों में कमी लाने के लिए शहर थाना प्रभारी चौ० इन्द्रसिंह कुंडू तथा उप-पुलिस अधीक्षक सरदार दर्शनसिंह नहले पर दहला सिद्ध होते जा रहे हैं। हालांकि शहर थाना प्रभारी चौ० इन्द्रसिंह ओर उप-पुलिस अधीक्षक श्री दर्शनसिंह को यहा कार्यभार सम्भाले अभी एक माह भी नहीं हुआ है कि शहर मे चर्चा का विषय बने हुए हैं।

यहां होटलों में बैठकर जो लोग खुले धड़ल्ले से शराब पीते थे अब उनकी शामत आगई है। शहर थाना प्रभारी को किसी होटल मे कोई व्यक्ति शराब पीता हुआ मिल जाए या शराब पीकर किसी चौराहे व सार्वजनिक स्थान पर मटरगश्ती करता मिल जाए तो शहर थाना प्रभारी महोदय बाकायदा उसको घाघरी पहनाकर और मुंह काला करके जुलूस निकालते हैं।

शहर थाना प्रभारी चौ० इन्द्रसिंह का कहना है कि उन्हे जिला पुलिस अधीक्षक श्री एस० एस० देशवाल व उपपुलिस अधीक्षक श्री दर्शनसिंह के नेतृत्व व मार्गदर्शन में अपना कर्त्तव्य पूरा करने मे किसी प्रकार की हिचकिचाहट नही हो रही है।

चौ० इन्द्रसिंह ने दावा किया है कि उन्हे यहा आए अभी एक माह भी नही हुआ है कि चोरी हुई एक कार, एक स्कूटर व एक रिक्शा बरामद की है। उन्होंने बताया कि इसी एक माह के दौरान दस लोग होटलो में शराब पीते हुए पाए गए जिनका चालान किया गया है। कुछ जुआरी पकडे गए हैं जिनके पास से ६०२ रुपए नकद बरामद किये हैं। उन्होंने बताया कि इसी दौरान आठ अग्रेजी शराब की १६ देसी शराब की और २४ बीयर का अवैध बोतलें बरामद की हैं। उन्होने यह भी बताया कि एक कत्ल केस मे सम्बन्धित दो अपराधी जगदीश व आजादसिंह को भी गिरफ्तार किया गया है।

(दैनिक वीर अर्जुन से साभार)

यमुनानगर में चतुर्थ वेदप्रचार समारोह

१० से १२ ज्येष्ठ २०४८ (२४ से २६ मई, १९९१) तक

वैदिक वृद्ध सन्यास आश्रम, अशोक नगर, रेलवे वर्कशाप रोड, यमुनानगर में केन्द्रीय आर्य सभा यमुनानगर के तत्वावधान मे १० से १२ ज्येष्ठ, २०४८ (२४ से २६ मई, १९९१) तक चतुर्थ वेदप्रचार समारोह धूमधाम से मनाया जा रहा है जिसमे उच्चकोटि के विद्वान् स्वामी सदानन्द जी, आचार्य वागीश्वर जी, आचार्य रामकिशोर जी शर्मा श्री सतीश जी मित्तल, मा० लक्ष्मणसिंह जी बेमोल, श्री रुबेल सिंह जी, प० जयदेव जी जतोईवाले, श्रीमती स्वर्ण जी भाटिया, श्रीमती सुन्दर रानी जी, श्रीमती शशी जी, श्रीमती उर्मिला जी, सुश्री सुशीला जी इत्यादि पधार रहे हैं।

अध्यक्ष : स्वामी सच्चिदानन्द

मतदान अब १२ और १५ जून को होगा : शेषन

नई दिल्ली—भूतपूर्व प्रधानमन्त्री और कांग्रेस (इ) के अध्यक्ष श्री राजीव गांधी की हत्या के कारण उत्पन्न स्थिति को देखते हुए लोक-सभा तथा कुछ राज्यों की विधानसभाओं के लिए २३ और २६ मई को होनेवाला मतदान स्थगित कर दिया गया है। दूसरे और तीसरे चरण का मतदान अब क्रमश: १२ और १५ जून को होगा। पहले चरण का मतदान २० मई को हो चुका है।

मतदान स्थगित करने के फैसले की घोषणा मुख्य चुनाव आयुक्त श्री टी० एन० शेषन ने की। इस बारे में उन्होंने राष्ट्रपति श्री आर० वेंकटरामन और प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर से परामर्श किया। लोक-सभा और विधानसभाओं के चुनाव की प्रक्रिया पूरी होने की तिथि भी अब ३१ मई के बढ़ाकर १८ जून करदी गई है। इस प्रकार दसवी लोकसभा और नई सरकार का गठन अब जून के पहले सप्ताह की बजाए जून के चौथे सप्ताह तक हो पाएगा।

श्री शेषन ने बताया कि २० मई को मतदान मे धांधली के कारण जिन मतदान केन्द्रो पर २२ मई को दोबारा चुनाव कराने की घोषणा की गई थी उनमें पुनर्मतदान भी अब स्थगित कर दिया गया है। इन क्षेत्रों में अब मतदान १२ जून को होगा। २० मई को पडे मतो की गणना भी १५ जून के बाद होगी।

श्री शेषन ने कहा कि जहां तक अमेठी संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का सवाल है जहां से श्री राजीव गांधी उम्मीदवार थे, वहा अगर वह (स्व० गांधी) जीत जाते हैं तो उपचुनाव कराया जाएगा।

नये कार्यक्रम के अनुसार, जून में अब लगभग ३३७ निर्वाचन क्षेत्रो में मतदान होगा। पहले दौर में २० मई को २०४ संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों मे मतदान हो चुका है।

(दैनिक हिंदुस्तान से साभार)

आर्यवीर दल, रोहतक के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में भाषण प्रतियोगिता

प्रत्येक राष्ट्र एव जाति का उत्थान, उसके बच्चों एव युवक-युवतियो के बौद्धिक, नैतिक एव चारित्रिक निर्माण पर निर्भर करता है। इसी भावना के दृष्टिगत एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन रविवार दिनाक २ जून १९९१ को साय ४-०० वजे से वैदिक भक्ति साधनाश्रम, आर्यनगर रोहतक मे किया जा रहा है जिसमें आप, अपने विद्यालय/महाविद्यालय के छात्र, छात्राओं एव परिवार सहित सादर आमन्त्रित हैं।

विद्यालय स्तर के विषय

१—मानव शांति का स्थाई स्रोत—अध्यात्मवाद।
२—विद्यालयों मे नैतिक शिक्षा का अभाव क्यों ?
३—वेदो मे ईश्वरीय ज्ञान है।
४—प० गुरुदत्त जी विद्यार्थी का संक्षिप्त जीवन-चरित्र
५—यथा राजा तथा प्रजा।
६—धर्मनिरपेक्षता के आंचल मे पनपता उग्रवाद।
७—आरक्षण नीति पर आर्यसमाज का दृष्टिकोण।

महाविद्यालय स्तर के विषय

१—मानव अशांति का मुख्य कारण—भौतिकवाद।
२—महाविद्यालयो मे मादक पदार्थों के प्रयोग मे वृद्धि क्यों ?
३—वेद में विज्ञान एव गणित।
४—प० लेखराम जी का बलिदान किस लिए ?
५—प्रजातन्त्र मे जनमत का दुरुपयोग क्यो ?
६—देश की वर्तमान राजनैतिक परिस्थिति।
७—भारत के नव-निर्माण मे आर्यसमाज की भूमिका।

"भारत माता"

प्रणाम करें करते आये भारत मां शीश झुकाते हैं
बेशक छोटे बालक हैं मां सच्चा प्रण उठाते हैं
वीर हकीकत की भांति धर्म पर मर मिट जायेंगे
जोरावर और फतेसिंह हैं अपना धर्म बचायेंगे
इतिहास हमारा गौरवशाली बार-बार दोहरायेंगे
सच्चे वीर भगतसिंह हैं हंसते-हंसते मर जायेंगे
प्रथम तो हम क्षमा करें बाज नहीं जो आते हैं
ऐसे अधर्म के राही का जड़ से नाम मिटाते हैं
दुष्ट पूतना मारेंगे कृष्ण की भांति बनकर आज
कंस मार विध्वंस करें यहां उग्रसेन का होगा राज
राम कसम अपने हृदय में जरा न दहशत लायेंगे
त्रेता के हनुमान हैं हम रावण की लंक जलायेंगे
अश्वथामा बनकर मां जो तेरा वंश मिटायेगा
कृष्ण घायल करे उसे तेरी रक्षा में आयेगा
वीरों के हैं लाल अनोखे कभी नहीं होती है हार
शत्रु को दहलाने वाले भारत मां से सच्चा प्यार
सिंह नाद कर 'महेश आर्य' धर्म ध्वज फहरायेंगे
भारत माता अमर रहे हम वैदिक धर्म बढ़ायेंगे

—महेश आर्य, ग्राम—पन्हैड़ा खुर्द
जिला—फरीदाबाद (हरयाणा)

गायत्री महामंत्र महिमा

लेखक—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

गायत्री महामन्त्र यह, चारों वेदों का सार है।
जिसने सुमरन किया, उसी का भव से बेड़ा पार है॥
ऋषिमुनि ज्ञानी जन ध्याते होती है बुद्धि निर्मल।
हृदय ईश विश्वास जगे, मिट जाते संशय शूल सकल
सत्य ज्ञान की ज्योति जागे होते दूर विकार हैं।
गायत्री महामंत्र यह चारों वेदों का सार है।
जैमिनि कपिल कणाद पतञ्जलि सुमरन इसका करते थे।
राम कृष्ण शिवा ब्रह्मा विष्णु ध्यान इसी का धरते थे।
जीवन रूपी नैया का गायत्री ही पतवार है।
गायत्री महामन्त्र यह चारों वेदों का सार है॥
होकर अतिशय श्रद्धाविभोर जो प्रतिदिन ध्यान लगाये।
लोक और परलोक सुधारे मन इच्छा फल पाये।
अनुकूल आचरण करने से बन जाते शुद्ध विचार हैं।
गायत्री महामन्त्र यह चारों वेदों का सार है॥
पावन गुरुमन्त्र गायत्री निज जीवन में करिये धारण।
कहे स्वरूपानन्द उसी के हो जाते सब कष्ट निवारण॥
ताप मोचनी सत्य ज्ञान की ज्योति का भण्डार है।
गायत्री महामन्त्र यह चारों वेदों का सार है॥

'प्रखर'—वैशाख'२०४८

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० २३२०/७३ रजि नं० P/RTK-८६

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक २७ ७ जून, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

वेद में यज्ञ और ब्रह्म विषयक प्रश्नोत्तर

(पं० धर्मदेव "मनीषी" वेदतीर्थ, गुरुकुल कालवा)

विद्वानों से इस प्रकार प्रश्न करे—

कत्यस्य विष्ठाः कत्यक्षराणि कति होमासः कतिधा समिद्धः।
यज्ञस्य त्वा विदथा पृच्छमत्र कति होतारऽऋतुशो यजन्ति ॥

यजु० २३।५७

अर्थः—हे विद्वान्! इस (यज्ञस्य) संयोग से उत्पन्न जगत् के (कति) कितने (विष्ठाः) विशिष्ट स्थिति के आधार हैं? (कति) कितने (अक्षराणि) जल आदि निर्माण के साधन हैं? (कति) कितने (होमासः) देन-लेन अर्थात् व्यापार हैं? (कतिधा) कितने प्रकार के (समिद्धः) समिधा के तुल्य ज्ञान आदि के प्रकाशक हैं? (कति) कितने (होतारः) व्यवहार करनेवाले (ऋतुशः) प्रत्येक ऋतु में (यजन्ति) संग करते हैं? यह (अत्र) इस विषय में (विदथा) विज्ञान को (त्वा) तुझ से मैं (पृच्छम) पूछता हूं।

भावार्थः—यह जगत् किसमें स्थित है? कितने इसके निर्माण के साधन हैं? कितने व्यापार के योग्य वस्तु हैं? कितने ज्ञान आदि के प्रकाशक हैं? और कितने व्यवहार करनेवाले हैं? ये पांच प्रश्न हैं इनके उत्तर अगले मन्त्र में समझें।

षडस्य विष्ठाः शतमक्षराण्यशीतिर्होमाः समिधो ह तिस्रः।
यज्ञस्य ते विदथा प्रब्रवीमि सप्तहोतारऽऋतुशो यजन्ति ॥

यजु० २३।५८

अर्थः—हे जिज्ञासु लोगो! (अस्य) इस (यज्ञस्य) जगत् की (षट्) छः ऋतुयें (विष्ठाः) स्थिति का आधार हैं, (शतम्) असंख्य (अक्षराणि) जल आदि वस्तुयें हैं, (अशीतिः) अस्सी अर्थात् उपलक्षण से असंख्य (होमाः) देन-लेन के व्यवहार हैं, (तिस्रः) तीन विद्यायें (ह) निश्चय से (समिधः) ज्ञान आदि की प्रकाशक हैं (सप्त) पांच प्राण, मन और आत्मा ये सात (होतारः) देने-लेने वाले होता लोग (ऋतुशः) प्रत्येक ऋतु में (यजन्ते) संग करते हैं, उस यज्ञ=जगत् के (विदथा) विज्ञानों का (ते) तेरे लिए मैं (प्र+ब्रवीमि) उपदेश करता हूं।

भावार्थः—हे जिज्ञासु लोगो! जिस यज्ञ में छः ऋतुयें स्थिति की साधक हैं असंख्य जल आदि वस्तुएं व्यवहार की साधक हैं, बहुत से व्यवहार के योग्य पदार्थ हैं, सब प्राणी और अप्राणी एवं होता आदि लोग संग करते हैं और जहां ज्ञान आदि की प्रकाशक तीन प्रकार की विद्यायें हैं, उस यज्ञ को तुम जानो।

आगे भी वेद में चार प्रश्न किये हैं—

कोऽस्य वेद भुवनस्य नाभिं को द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षम्।
कः सूर्यस्य वेद बृहतो जनित्रं को वेद चन्द्रमसं यतोजाः ॥

यजु० २३।५९

अर्थः—हे विद्वान्! (अस्य) इस (भुवनस्य) सबके आधार संसार की (नाभिम्) नाभि अर्थात् मध्यम अंग एवं बन्धन-स्थान को (कः) कौन (द्यावापृथिवी) सूर्य, भूमि और (अन्तरिक्षम्) आकाश को (वेद) जानता है? (कः) कौन (बृहतः) महान् (सूर्यस्य) सूर्य मण्डल के (जनित्रम्) कारण या जनक को (वेद) जानता है? और (यतोजाः) जिससे उत्पन्न होनेवाले उस (चन्द्रमसम्) चन्द्रलोक को (कः) कौन (वेद) जानता है? इसका समाधान कर।

भावार्थः—इस जगत् का धारण करनेवाले बन्धन, भूमि, सूर्य, अन्तरिक्ष, महान् सूर्य के कारण और उससे उत्पन्न चन्द्र को कौन जानता है? इन चार प्रश्नों के उत्तर अगले मन्त्र में है, ऐसा समझें।

वेदाहमस्य भुवनस्य नाभिं वेद द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षम्।
वेदसूर्यस्य बृहतो जनित्रमथो वेद चन्द्रमसं यतोजाः ॥

यजु० २३।६०

अर्थः—हे जिज्ञासु! (अस्य) इस (भुवनस्य) संसार की (नाभिम्) नाभि अर्थात् बन्धन को (अहम्) मैं (वेद) जानता हूं, (द्यावापृथिवी) प्रकाश और अप्रकाश रूप लोकों तथा (अन्तरिक्षम्) आकाश को और (बृहतः) महत् परिमाण वाले (सूर्यस्य) सूर्य के (जनित्रम्) कारण या जनक को (वेद) जानता हूं (अथो) और (यतोजाः) जिस सूर्य से उत्पन्न होनेवाले उस (चन्द्रमसम्) चन्द्र को (अहम्) मैं (वेद) जानता हूं।

भावार्थः—विद्वान् उत्तर देवे—हे जिज्ञासु! इस जगत् के बन्धन एवं स्थिति के कारण, तीनों लोकों के कारण, सूर्य और चन्द्रमा के उपादान कारण, इन सबको मैं जानता हूं।

ब्रह्म ही इस यज्ञ का निमित्त कारण है और प्रकृति उपादान कारण है, ऐसा समझें।

वेद ने जिज्ञासु मनुष्यों को प्रेरणा दी है कि तुम्हें ऋषि मुनि और विद्वानों से सदैव ज्ञान बढ़ाकर आगे बढ़ने का प्रयत्न करना चाहिये। हमें वेदादि सद्ग्रन्थों के स्वाध्याय से कभी विमुख नहीं होना चाहिये। इस प्रकार इन मन्त्रों से शिक्षा प्राप्त होती है।

जन्म-उत्सव

दिनांक २८-५-९१ को मा० नवलकिशोर जी बोडिया (झज्जर) के सुपुत्र प्रवीन्द्रकुमार का जन्म उत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया। जिसमें पं० अर्जुनदेव अग्निहोत्री ने प्रातःकाल यज्ञ कराया तथा अनेक नर-नारियों को यज्ञोपवीत दिए। डा० सुदर्शनदेव आचार्य का प्रभावशाली प्रवचन हुआ। तत्पश्चात् प्रीतिभोज का आयोजन किया गया। सभा को १०१) रु० दान दिया।

यह आयोजन श्री सूर्यप्रकाश आर्य तथा ओंकुमार आर्य झज्जर की सत्प्रेरणा से किया गया।

दरियावसिंह आर्य
झज्जर (रोहतक)

वेदविषयक एक आक्षेपयुक्त लेख का उत्तर–

क्या धर्मग्रन्थ होना अपराध है ?

डा० भवानीलाल भारतीय

गतांक से आगे

धर्म ग्रन्थों का एक सतर्क अध्येता यह भली प्रकार जानता है कि आज उपलब्ध मनुस्मृति में और वर्तमान प्रचलित महाभारत में सैकड़ों हजारों श्लोक ऐसे हैं जो कालान्तर में प्रक्षिप्त किये गये हैं। ये न तो मनुप्रोक्त हैं और न कृष्ण द्वैपायन व्यास की लेखनी से ही लिखे गये हैं। यदि रामायण, महाभारत को कोई वर्ग संशोधित रूप में स्वीकार करता है तो उसके लिये पहचान का सकट तो उस ब्रह्मसमाज के लिये उत्पन्न हुआ था। जिसने वेद प्रमाण को सर्वथा ठुकरा दिया और हिन्दुओं की मान्य शास्त्रप्रमाणवाद की धारणा के मूल पर ही कुठाराघात करते हुए यह कहा कि इसके लिये वेद, कुरान बाइबिल आदि सभी ग्रन्थ समान हैं।

भारत का जो समाज या वर्ग वेदों से अपने को जोड़े रखेगा उसके लिये तो पहचान के संकट का कोई सवाल ही नहीं उठता और आर्यसमाज ने यदि वेदों को विद्या या ज्ञान के प्रकाश स्तम्भ के रूप में व्याख्यात किया और उन्हें ईश्वरीय रचना कहा तो इसमें उसने कोई नई बात नहीं कही। भारतीय मनीषा और चिन्तनधारा तो सहस्राब्दियों से वेदों को ज्ञान का आदि उत्स, सब विद्याओं का भण्डार तथा परमात्मा की कृति मानती आई है। यदि यह धारणा वस्तुतः दोषपूर्ण या अशुद्ध है तो इसके लिये आर्यसमाज को दोषी न ठहरा कर भारत के पुरातन आर्य दार्शनिक चिन्तकों, धर्माचार्यों तथा सम्प्रदाय प्रवर्तकों को ही दोष देना होगा। अधिक प्रमाण न देकर मैं एक दो कथन ही अपनी बात के समर्थन में देना चाहता हूं। जैसा कि पूर्व उद्धृत किया जा चुका है। दयानन्द से सैकड़ों वर्ष पूर्व शंकराचार्य ने वेदों को अनेक विद्याओं का आकार, प्रदीपवत् सर्वार्थ द्योतक कहा था। वैयासिक सूत्रों के भाष्य में शंकर के इस कथन को 'शास्त्र योनित्वात्' इस सूत्र की व्याख्या में देखा जा सकता है। अतः वेदों को प्रकाशस्तम्भ कहना ही यदि दोषावह है तो शंकराचार्य को इसके लिये पहले दोष देना होगा, आर्यसमाज या दयानन्द को बाद में। वेदों को ईश्वरीय रचना कहने के लिये यदि आर्यसमाज दोषी है, तो उससे पहले महर्षि कणाद दोषी हैं—क्योंकि उन्होंने तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम् यह वैशेषिक सूत्र बनाकर वेदों को ईश्वर का वचन कहा। महर्षि गोतम भी दोषी हैं क्योंकि उन्होंने न्यायदर्शन में वेदों को ईश्वर प्रणीत घोषित किया। बालीजी महर्षि पतंजलि को दोषी क्यों नही ठहराते जिन्होंने वेदों के रचयिता परमात्मा को पूर्वेषांपति गुरु (पूर्व पूर्व ऋषियों का आदि गुरु और वेद ज्ञान का प्रदाता) कहा वेदों को ईश्वर से उत्पन्न मानने वाले वेदान्त सूत्रो के रचयिता भगवान् बादरायण भी इस न्याय से दोषी ठहराये जायेंगे क्योंकि इन्होने ऋग्वेदादि शास्त्रों का रचयिता योनि कारण ब्रह्म (ईश्वर) को ही बताया है। प्रासंगिक सूत्र है—

शास्त्र योनित्वात् वेदान्त अ० । पाद । सूत्र ३

इस सूत्र की व्याख्या में शकर, रामानुज, निम्बार्क मध्व, और वल्लभ आदि सभी आचार्य एक स्वर से परमात्मा को ही वेदों का रचयिता कह रहे हैं। किन्तु बालीजी की दृष्टि में इस विचार का जन्मदाता आर्यसमाज ही है।

यह सब मिलकर शायद बालीजी को अपनी भूल का अहसास भी हुआ और उन्होंने यहां वेदों के प्रसिद्ध भाष्यकार सायण को भी इस विवाद में लपेट लिया। सायण बेचारे को दोष देना तो व्यर्थ ही है क्योंकि उसका भी वेद विषयक दृष्टिकोण वैसा ही जो पूर्व से ही भारतीय समाज में शताब्दियों से मान्य रहा है। जब सायण वेदों को ईश्वर से निःश्वसित कहता है तो वह एक प्राचीन शास्त्रकार के निम्न अभिप्राय को ही व्यक्त करता है जिसमें चारों वेदों का उस महत् ब्रह्म का प्रच्छ्वास या निःश्वास कहा गया है—"अस्य महतो भूतस्य निःश्वसितम् एतद् यद् ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरसः" (बृहदारण्यकोपनिषद् ४. ४. १०)

बालीजी को इस बात पर आपत्ति है कि सायण अपने पारम्परिक परम्परा प्राप्त मीमांसा मत के अनुसार वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानता है जिसमें यज्ञादि कर्मों को स्वर्ग प्राप्ति का साधन माना गया है तथा ये यज्ञादि कर्म वेदों पर आधारित बताये गये हैं। बालीजी के इस कथन में एक त्रुटि तो यह है कि वे मीमांसकों द्वारा वेदों को ईश्वरीय ज्ञान कहने की बात लिखते हैं जब कि कुमारिल भट्ट आदि मीमांसक वेदों को अपौरुषेय तो कहते हैं किन्तु नैयायिकों या वेदान्तियों की भांति उन्हें ईश्वर प्रणीत नहीं मानते। इस बात को यदि हम छोड़ भी दे तो हम उनसे पूछना चाहते हैं कि क्या सायण या किसी भी वेदभाष्यकार के लिये मीमांसा के मत को स्वीकार करना दोषावह या अपराध है। प्रत्येक धर्म ग्रन्थ या शास्त्र ग्रन्थ के अध्ययन तथा व्याख्या करने की कोई न कोई लोक या शास्त्र स्वीकृत परिपाटी होती है भारतीय परम्परा में भी मीमांसकों, नैयायिकों, वेदान्तवादियों आदि ने अपनी-अपनी दृष्टि से वेदों का अध्ययन एवं अर्थ विवेचन किया है। यदि पाश्चात्य वेदज्ञ भाषा विज्ञान, तुलनात्मक देवगाथावाद तथा विकासवाद जैसी आधुनिक विचार विधाओं का आश्रय लेकर वेदाध्ययन तथा वेदार्थ चिन्तन में प्रवृत्त होते हैं, और उनमें एतावद्‌ अध्ययन पर कोई टीका या आक्षेप नहीं किया जाता तो सायण या दयानन्द के वेदार्थवाद तथा वेदार्थ प्रणाली पर अपना आक्रोश प्रकट करना मात्र बुद्धि का दिवालियापन ही है। यदि आर्यसमाज या दयानन्द वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मान लेने के लिये दोषी हैं, तो उनसे पहले तो गौतम, कपिल कणाद व्यास, जैमिनि याज्ञवल्क्य तथा मनु आदि को दोषा मानना पड़ेगा जो चिरन्तन काल से वेदों को ईश्वरीय ग्रन्थ मानते आये हैं।

बालीजी, यह तो ठीक है कि भारतीय मानस धर्म और सम्प्रदाय में भेद करता है, किन्तु आपको यह किसने कह दिया कि वेद धर्म ग्रन्थ नहीं हैं। तथ्य तो यह है कि आपके दिमाग में धर्म ग्रन्थ की वही अवधारणा है तो सेमेटिक मतानुयायी कुरान और बाइबिल के प्रति रखते हैं। वेदों को धर्म ग्रन्थ, ईश्वर वाक्य, अपौरुषेय ज्ञान किस अर्थ में और किन युक्ति प्रमाणों तथा परम्परा स्वीकृत शैली में कहा जाता है, यदि आपको इसका ज्ञान होता तो आप न तो वेदों को सेमेटिक मजहबों की इल्हामी किताबों की पंक्ति में रखते और न वेदों को ईश्वरीय ज्ञान या अपौरुषेय धर्म ग्रन्थ घोषित करने के लिये आर्यसमाज या स्वामी दयानन्द को कोसते।

अब बालीजी वेदो के कथ्य की ओर आते हैं। वेद संहितायें तो हैं वे सूक्तों के संकलन भी हैं परन्तु यह संकलन तो शाकल, वाष्कल, वाजसनेय शौनक तितिरि आदि ऋषियों द्वारा किये गये हैं। बालीजी वेदों के कतिपय सूक्तों का नामोल्लेख भी करते हैं और कहते हैं कि इन सूक्तों का किसी साम्प्रदायिक धर्म से क्या वास्ता और एक कदम आगे बढ़कर यह भी कहते हैं कि इन वैदिक सूक्तों का विषय भी धर्म नहीं है। हम उनकी प्रथम धारणा से तो सहमत है कि वेदो में जिस धर्म का प्रतिपादन किया गया है वह कोई साम्प्रदायिक मत या धर्म नहीं है। वह विशुद्ध मानव धर्म है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह कहना चाहेंगे कि कि वेदों में जिन बातों का उपदेश दिया गया है वे मनुष्य मात्र के लिये कर्त्तव्य के रूप में मानने योग्य जन सामान्य के लिये आचरणीय हैं। इसलिये स्वामी दयानन्द ने वेद की शिक्षाओं को सार्वजनिक धर्म कहा है। साम्प्रदायिक मतों का प्रादुर्भाव तो बहुत बाद में हुआ है किन्तु बालीजी का यह कहना तो दुस्साहस मात्र ही है कि वैदिक सूक्तों का विषय धर्म भी नहीं है। बालीजी जरा बतायें—वे धर्म किसे मानते हैं ? सामान्यतया मनुष्य के लिये आचरण योग्य कर्त्तव्य बोध को ही धर्म कहा जाता है। किसी पार लौकिक या अदृश्य परात्पर सत्ता की पूजा उपासना भी धर्म के अन्तर्गत आती है। धर्म का सर्वजनस्वीकृत तो यही अर्थ है और इसी का उपदेश वेदों में भी है। क्रमशः

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ

"उपह्वरे गिरीणां संगथे च नदीनाम्" ऋग्वेद (८.६.२८) के आदर्श को समक्ष रखकर अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अरावली पर्वतश्रृंखला की उपत्यका में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की स्थापना की थी उनके जीवनकाल में यह गुरुकुल बहुत ही अच्छी अवस्था में चलता रहा। एक हजार एक सौ बीघा भूमि के मध्य ऊंचे पर्वत पर बनी विशाल भवन श्रृंखला आज भी इसके अतीत की गौरव-गाथा सुना रही है।

देशभक्त क्रान्तिकारियों और तपस्वी ब्रह्मचारियों की यह तपोभूमि कालान्तर में स्वार्थी लोगों की गिरफ्त में आगई और जिसको भी अवसर मिला उसने इस संस्था की प्राकृतिक सम्पदा के दोहन में किसी प्रकार की कमी नहीं छोडी।

१९७५ में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का त्रिशासन होकर पजाब देहली और हरयाणा की पृथक्-पृथक् तीन आर्य प्रतिनिधि सभायें बन गईं। अम्बाला में हुए सर्वसम्मत निर्णयानुसार हरयाणा राजकीय सीमा में होने के कारण गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकार में आगया किन्तु इस अपार सम्पदा के रसास्वादक स्वार्थी लोगों ने इस संस्था तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को नही पहुंचने दिया।

विगत १५ वर्षों से सभा अधिकारी अपनी इस संस्था को प्राप्त करने के लिए निरन्तर वैधानिक उपाय करते रहे और विभिन्न अदालतों में सभा के लाखों रुपये व्यय होते रहे।

अन्याय अन्धकार की लम्बी अवधि के पश्चात् २ जून १९९१ ई० रविवार का वह शुभ दिन भी आया जब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रमुख सदस्य और अधिकारी गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के प्रांगण में पहुंचे। वहां पर डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट फरीदाबाद के आदेश क्रमांक-९९/ST dt १-६-९१ के अनुसार हरयाणा पुलिस भी सब जज अम्बाला सिटी की डिग्री को क्रियान्वित करवाने के लिए तैयार मिली। गुरुकुल भवन-प्रांगण एवं चल-अचल सम्पत्ति का कार्यभार सभा ने एकदम शान्त वातावरण में सम्भाल लिया और जो भी सामान एवं रिकार्ड चार्ज लेते समय मिला उसकी सूची बनाकर उपस्थित सज्जनों के हस्ताक्षर करवाए गए।

हरयाणा प्रशासन के सभी बड़े छोटे अधिकारी तथा कर्मचारी धन्यवाद के पात्र हैं जिनके आदेश और उपस्थिति में यह शुभ कार्य शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुआ।

सूबेसिंह सभामन्त्री

मातृ वन्दना

सौ बार जन्म लेकर, हर बार फना होंगे।
ऐ मां तेरे एहसान, फिर भी न अदा होंगे॥
तू ने जन्म दिया हमको, और पाल पोषती है।
सुःख हमको देती है, स्वयं कष्ट उठाती है।
जो भूल जाये तुमको, वो बुद्धिहीन होंगे॥
ऐ मां तेरे······

तुम अपने बच्चों की रक्षा करती हरदम
चाहे कितने ही संकट हों तुम उन्हें बचाती हो
हम दास तेरे माता तुमसे न जुदा होंगे
ऐ मां तेरे······

अपराध यदि कोई हमसे हो जाता है।
तू इतनी कोमल है, नाराज नहीं होती।
हम वचन देते हैं मां कभी पाप नहीं होंगे॥
ऐ मां तेरे······

हम क्षमा चाहते हैं और शीश झुकाते हैं।
वरदान हमें दो मां, आज्ञा में रहें तेरी
हम बाल तेरे माता आज्ञाकारी होंगे।
ऐ मां तेरे एहसान······

देवराज आर्य
प्रचार मन्त्री
आर्यसमाज बल्लभगढ़

विवाह संस्कार सम्पन्न

आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक के मालिक श्री वेदव्रत शास्त्री के ज्येष्ठ पुत्र चिरंजीव विनोदकुमार का शुभविवाह संस्कार चौ० रघुवीर सिंह जी असौरखेड़ी (जिला रोहतक) निवासी की सुपुत्री आयुष्मती सुनील देवी के साथ २८ मई १९९१ ई०, वैशाख पूर्णिमा २०४८ वि० मंगलवार के दिन वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। पुरोहित डा० राजकुमार आचार्य ने विवाह की विशिष्ट विधियों पर प्रकाश डाला जिससे उपस्थित जनसमूह बहुत प्रभावित हुआ।

इस अवसर पर वर तथा वधू पक्ष की ओर से गोशाला डीघल (रोहतक) को दो सौ दो रुपये दान दिया गया और वर पक्ष की ओर से १०१) रु० गुरुकुल झज्जर, १०१) रु० दयानन्दमठ रोहतक तथा १०१) रु० आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को दान दिया गया।

केदारसिंह आर्य

आर्यसमाज रेवाड़ी का चुनाव

प्रधान : म० रामचन्द्र आर्य, उप-प्रधान : मा० श्रीराम सैनी, श्री ओमप्रकाश ग्रोवर, मन्त्री : श्री रामकुमार शर्मा, सहमन्त्री : श्री मातूराम शर्मा, उप-मन्त्री श्री लक्ष्मीनारायण, प्रचारमन्त्री : श्री सुखदेव सैनी, कोषाध्यक्ष : श्री सुखराम आर्य, पुस्तकाध्यक्ष : श्री जसवन्त सिंह यादव।

गऊ माता का करुण क्रन्दन

रचियता—मा० रामचन्द्र आर्य, आर्य निवास नलवा (हिसार)

बिकी कसाई हाथ मेरी कोण्या पार बसाई।
करके मैं परोपकार घणी दुख पाई ॥टेक॥
मां कैसा दर्जा मेरा वेद शास्त्र बतावें सैं।
घी दूध खा लोग शरीर पुष्ट बनावें सै।
मेरे बछड़े का कमाया सारा जग खावे सै।
हरे की के आश मनै सूखा ना पावै सै।
याणे बछडे की मनै देखणी पड़े जुदाई ॥१॥
जुदा बछड़े तै कर मेने गाड़ी मैं बैठावे।
मेरी आत्मा न्यू रोती क्यू पापी मैंने सतावे।
कै पावेंगे सुख जो मैंने हत्थे में चढ़ावें।
देख के हाल आगे का गात बणा धर्राबै।
आर्यावर्त में हत्थे लगा बैठे क्यों कसाई ॥२॥
दिलीप दधीचि कृष्ण राज में सुख पाया।
आर्य वीरों ने मेरे खातिर कष्ट उठाया।
गौदान या जिक्र ऋषि ग्रन्थों में आया।
गऊशाला खोल मेरा आश्रय स्थल बनाया।
क्यूकर होगा भला देश का होती रोज तबाही ॥३॥
'रामचन्द्र' कह गऊ रोती सुनता आवाज नहीं।
हत्थे लगण का भारत मे तोड़ रिवाज नहीं।
ऋषि दयानन्द सा गौभक्त पैदा हो आज नहीं।
कितनी दो दुहाई पर आता कोई बाज नहीं।
घर-घर में पहुंचावे कौन मेरी करुण कविताई ॥४॥

देवयज्ञ

पं० धर्मप्रकाश विद्यावाचस्पति, आर्यसमाज (टोहाना)

वैदिक धर्म और आर्य संस्कृति में यज्ञ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यज्ञ समस्त उत्तम कर्मों का प्रतीक है। शास्त्रों के अन्दर यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म कहा गया है—यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म। मनुष्य द्वारा जो भी कर्म निःस्वार्थ भाव से समर्पित भावना से सबके हित एवं कल्याण के लिए किया जाये उसे यज्ञ कहते हैं।

यज्ञ शब्द यज धातु से—"यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ्" इस पाणिनि के सूत्र से नङ्—न को ञ पञ्चम अक्षर यज्+ञ=यज्ञ शब्द बनता है। इसके तीन अर्थ हैं—

१) देवपूजा   २) संगतिकरण   ३) दान

वेदों में प्रश्नोत्तर के रूप में मन्त्र आये हैं, उनमें कहा गया है—"यज्ञो भुवनस्य नाभिः"। सारे संसार का केन्द्र यह यज्ञ ही है। यज्ञ विष्णु का स्वरूप है। परमात्मा भी यज्ञरूप है। सारे संसार में परमात्मा की देखरेख में यज्ञ चल रहा है। यज्ञ का बहुत व्यापक अर्थ है। हमें यहां केवल देवयज्ञ पर विचार करना है।

देवता दो प्रकार के होते हैं—

एक जड देवता दूसरा चैतन्य देवता। "विद्वांसो हि देवा" शतपथ ॥ अर्थात् विद्वान् लोग देव कहलाते हैं। ये चैतन्य देव हैं।

"देवो दानाद्वा, दीपनाद्वा, द्योतनाद्वा, द्युस्थानो भवतीति वा।"
निरुक्त अ०—७, खण्ड—१५

दान से, दीपन से और द्योतन दर्शाने से देव कहलाते हैं। यजु०—१४-२० में देवताओं का वर्णन है—

अग्निर्देवता वातो देवता, सूर्यो देवता
चन्द्रमा देवता वरुणो देवता रुद्रो देवता।

इस प्रकार से बहुत सारे देवताओं के नाम गिनाये गये हैं। ये सब जड देवता हैं।

देवता का मोटा अर्थ है—जो 'दे' सो देवता और जो 'ले' वो लेवता कहलाता है। यह लक्षण जड़ और चेतन दोनों में घटता है। ऐसे तो यज्ञ शब्द का विस्तृत अर्थ है। वेदादि शास्त्रों में विस्तार से वर्णन है।

गीता में कृष्ण भगवान् ने एक पूरा प्रकरण ही यज्ञ के विषय में लिख दिया। महर्षि दयानन्द आर्योद्देश्यरत्नमाला में लिखते हैं—

"जो अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेधपर्यन्त वा जो शिल्प व्यवहार और जो पदार्थविज्ञान है, जो कि जगत् के उपकार के लिए किया जाता है उसको यज्ञ कहते हैं। देवयज्ञ के तीन नाम हैं—अग्निहोत्र, होम तथा हवन। महर्षि ने यज्ञ के विषय में कहा है—

"अग्नये परमेश्वराय, जलवायुशुद्धिकरणाय च होत्र,
हवनं दानं यस्मिन् कर्मणि क्रियते तदग्निहोत्रम्"।

जिसमें वेदमन्त्रों द्वारा ईश्वराधना तथा जलवायु शुद्धि हो उसे अग्निहोत्र कहते हैं।

यज्ञोपवीत में तीन सूत्र होते हैं। ये तीनों सूत्र तीन ऋण के प्रतीक हैं। इसमें से प्रथम सूत्र देवऋण का प्रतीक है। देवऋण यज्ञ से उतरता है।

ऋण—कर्जा, जो हमने देवताओं से लिया है। यदि अग्नि, वायु, जल, अन्न आदि देवता न हो तो हम एकपल भी जी नहीं सकते। इन सबको हम ग्रहण करते हैं और पुनः त्याग देते हैं। परन्तु हम मलिन गन्दा, बदबूदार करके त्यागते हैं। अतः हमारा धर्म होता है कि हम इसको पुनः शुद्ध करदें। इसका उपाय वेद ने बताया है कि—

सायं सायं गृहपतिर्नो अग्निः,
प्रातः प्रातः सौमनसस्य दाता।

अर्थात् गृहरक्षक प्रतिदिन प्रातः सायं यज्ञ करे। ये यज्ञ आरोग्य-दाता होवे, निवास स्थान को शुद्धि करनेवाला होवे।

मनु महाराज कहते हैं—

अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते।
आदित्याज्जायते वृष्टिः वृष्टेरन्नं ततः प्रजा॥

अर्थात् अग्नि में डाली हुई आहुति सूर्य रश्मियों में रहती है, वहां से वृष्टि होती है। वृष्टि से अन्न होता है, अन्न से प्रजा। सूर्य, विद्युत् और अग्नि इन तीन से वृष्टि होती है और इन तीनों को यज्ञ द्वारा शुद्ध किया जाता है।

शतपथ ब्राह्मण में कहा है—

सर्वेषां वै एष भूतानां सर्वेषां देवानां आत्मा यद् यज्ञः
तस्य समृद्धिमनु यजमानः प्रजया पशुभिः ऋध्यते॥

निश्चय करके यह यज्ञ सब प्राणियों का सब देवताओं का जीवन है, इसकी समृद्धि से यजमान प्रजा और पशुओं से समृद्धि को प्राप्त होता है। एक जगह और कहा है—

"नौ हि एषा वा स्वर्ग्या यदग्निहोत्रम्"। शतपथ २/३/३

यह अग्निहोत्र निश्चय करके स्वर्ग को प्राप्त करानेवाली नौका है। श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है—

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥

अन्न से सब प्राणी उत्पन्न होते हैं। अन्न मेघ से बनता है। मेघ यज्ञ से बनता है। यज्ञ कर्म से पैदा होता है। फ्रांस के विज्ञानवेत्ता प्रो० गिलवर्ट कहते हैं कि जलती हुई खांड के धुयें में वायु शुद्ध करने की बड़ी शक्ति है। इससे हैजा, तपेदिक, चेचक इत्यादि का विष शीघ्र नष्ट हो जाता है। फ्रांस के ही डा० हेफकिन जिन्होंने चेचक के टीके का आविष्कार किया, कहते हैं घी जलाने से रोगकृमि मर जाते हैं। आज वैज्ञानिक एक-एक वस्तु का परीक्षण करके बताते हैं कि इससे अनेक रोग अच्छे होते हैं। हमारे ऋषि महर्षि ने सबका परीक्षण करके "सब सामग्री एक जगह इकट्ठी करके कूट-छान दी है। जो रोग विशेष हुआ उसके औषध विशेष डाल दिये। यह भी सिद्ध होता है कि वैदिक वाङ्मय के वेत्ता 'विज्ञान' की अन्तिम सीमा तक पहुंचे हुए थे। सूर्यास्त एवं सूर्योदय के समय अग्नि को प्रज्वलित करके उसमें घृत और सुगन्धित मधुर पौष्टिक पदार्थों को स्वाहा उच्चारण के साथ हविअर्पण करने से वायु तो शुद्ध होती ही है तथा ईश्वर में आस्था बढ़ती है और वैदिक मन्त्रों की रक्षा होती है और उनमें श्रद्धा बनी रहती है। मनुष्यों को चाहिए कि देवों के ऋण से उऋण होने के लिए इस यज्ञ को प्रातः सायं करें। यज्ञ के द्वारा मनुष्य योगक्षेम संवारता हुआ अपने अभ्युदय को प्राप्त करके निःश्रेयस प्राप्ति की ओर अग्रसर होकर जीवन सार्थक करता है।

निःशुल्क संस्कृत प्रशिक्षण शिविर

राष्ट्र, धर्म व मानवता के सबल रक्षक आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ के तत्वावधान में २० जून से ३० जून १९९१ तक निःशुल्क संस्कृत प्रशिक्षण शिविर का आयोजन श्री आचार्य सूर्य नारायण जी की अध्यक्षता में किया जा रहा है। शिविर मध्य संस्कृत में वार्तालाप करना एवं संस्कृत अध्ययन को सरल विधियां समझाने के साथ मन्त्रों श्लोकों का शुद्ध उच्चारण करना सिखाया जायेगा। अतः इस सुअवसर से आप स्वयं लाभ उठाएं तथा संस्कृतप्रेमी विद्यार्थियों एवं सज्जनों को सूचना देकर पुण्य के भागी बनें।

भोजन-निवास की व्यवस्था आश्रम में रहेगी, ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लाए।

स्वामी धर्ममुनि (सरस्वती) मुख्याधिष्ठाता — डा० शिवकुमार शास्त्री संयोजक (शिविर)

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़
जिला—रोहतक (हरयाणा)—१२४५०७

संसार से आतंकवाद, अलगाववाद का अंत—सम्भव उपाय

(कुलभूषण आर्य, एम.काम. वैदिक प्रवक्ता)

आज संसार में आतंकवाद और अलगाववाद को बड़ा बल मिल रहा है। परन्तु क्या अलगाववाद और आतंकवाद मानव जाति की समस्या हल कर सकता है। क्या मनुष्य जाति को मारने और अपने को छोटी-छोटी इकाइयों में बांट कर रहने से मनुष्य अपने को समुचित तौर पर विकसित कर पायेगा। धर्म के नाम पर अलगाव पैदा करना और भिन्न धर्म के मानने वालों का नामोनिशान मिटा देना, संसार की समस्या का कोई उचित समाधान नहीं है। धर्म में कट्टरवादिता और अपने धर्म पक्ष को उचित समझना मानव की भूल है और इसके फलस्वरूप संसार में मानव जाति की पहचान समाप्त हो रही है। मनुष्य धर्म के स्वरूप को ठीक प्रकार से नहीं समझ पा रहा है। संसार में आतंकवाद और अलगाववाद के मूल में भिन्न-भिन्न धार्मिक विश्वास, विश्वास के नाम पर कट्टरवादिता और भिन्न-भिन्न देशों की मानव जाति को धर्म के नाम पर लड़ाना, हथियारों का व्यापार या फिर आज की राजनीति इसके लिए दोषी है।

मानव जाति की सुरक्षा के लिए जरूरी है कि आतंकवाद और अलगाववाद समाप्त हो। जिन कारणों से यह वाद पनप रहे हैं उनके कारण को समझने की जरूरत है। यह मानव जाति का निजी मामला है और यह मामला टकराव, हथियार या शासकों के कुचलने से समाप्त नहीं हो सकता।

मानव जाति मूलत: एक है और कार्य कारण जाने बिना भाषा, स्थान और पहरावा, रंग रूप हमें प्राय: एक दूसरे से अलग करता है। आज संसार में इस बात को समझने की जरूरत है कि मनुष्य का संसार में मुख्य उद्देश्य क्या है, मनुष्य आतंकवादी क्यों बनता है क्या यह मनुष्य को जरूरत है या फिर मनुष्य को अपनों से भिन्न समझने की कोशिश करना ही मनुष्य में भिन्न भाव पैदा करता है।

आज संसार में मनुष्य को धर्म और राजनीति संचालित कर रही है। आज धर्म के अर्थ मत मतान्तर, सम्प्रदाय से लिये जाते हैं, परन्तु यह धर्म का सच्चा स्वरूप नहीं है। आदि मानव से लेकर आज तक जो बातें मनुष्य में समान रूप से रही हैं वही धर्म है। धर्म के पीछे दो सत्तायें काम कर रही हैं। शरीर और आत्मा। शरीर प्रकृति के कारण आत्मा को आत्म विकास के लिए मिलता है। जिस काम से आत्मविकास हो वही धर्म है। शरीर में एक चेतन सत्ता है जिसे हम आत्मा कहते हैं और आत्मा को विद्या ज्ञान द्वारा जाना जाता है। बिना जानी गई आत्मा आतंकवादी और अलगाववादी बनती है और जानी गई आत्मा मनुष्य में मानव गुणों का विकास करती है और मनुष्य सुख शान्ति समृद्धि और प्रेम को प्राप्त करता है यही आत्मा का निजी स्वरूप है।

आत्मा का स्वरूप और आत्मा के कर्तव्य—आज संसार में जितने भी मनुष्य हैं वह हर शरीर में एक आत्मा होने के कारण हैं। आत्मा और शरीर का सम्बन्ध अकारण नहीं है। संसार में एक संचालक आत्मा है जो शरीर का आत्मा से संयोग कराता है न कि आत्मा एव शरीर में प्रवेश करता है। यह एक भिन्न विषय है परन्तु आज संसार में आतंकवाद और अलगाववाद के परिप्रेक्ष्य में आत्मा को समझना जरूरी है और यही मानव धर्म विश्वास की बुनियाद है। आज मनुष्य को समझना चाहिये कि हम सब प्रेम बन्धन में बन्धे हैं। जैसे हम अपने बच्चों, भाइयों बहिनों और माता पिता को प्यार करते हैं उसी प्रकार का व्यवहार हमें दूसरों के साथ भी करना चाहिये, जिससे आतंकवाद समाप्त हो जाएगा या आतंकवाद की जड़ें पैदा ही न होंगी। मनुष्य स्वयं में अनेकता में एकता का स्वरूप है और संसार की व्यवस्था में हमें अपने कारण कुछ नहीं करना है। शरीर प्रकृति है और मैं पिंजरे में पक्षी के समान हूं। प्रकृति ने मेरे लिए सुख साधनों का सृजन किया है मुझे संसार में सुख शान्ति का सृजन करना है।

आज परिवारों में भी अलगाववाद आगया है और यह अलगाववाद मौन रूप से आतंकवाद, दु:ख को जन्म दे रहा है। पश्चिम में पारिवारिक अलगाववाद सब के लिए दु:ख का कारण है और मानव दु:ख ही संसार का बन्धन है, जिससे हमें बचना चाहिये अ[illegible] अपनी आत्मा के समान सबकी आत्मा को समझना चाहिये। सस[illegible] में अशान्ति का मूल कारण हम स्वयं हैं। शान्ति धन दौलत क[illegible] मकान होने से नहीं आती, शान्ति आत्मा के कारण आती है।

उपसंहार—मनुष्यों को यह समझ लेना चाहिये कि आतंकव[illegible] और अलगाववाद मानव जाति के लिए हितकर नहीं है क्योंकि इ[illegible] पीछे निहित स्वार्थ काम कर रहा है। यह संसार प्रभु द्वारा निर्मित [illegible] यह संसार एक इकाई है जिसको बांटा नहीं जा सकता। प्रेम [illegible] सद्भाव से देखें तो संसार ही हमारी उन्नति का कारण है। [illegible] संसार को देखने से पता चलता है कि धनी व्यक्ति संसार को [illegible] इकाई मान कर ही धन कमा पाए हैं। प्रत्येक व्यक्ति इस संसार [illegible] बराबर का हकदार है। प्राणी मात्र की उन्नति इस संसार रूपी इ[illegible] से सम्भव है। अलगाववाद कभी संसार में टिक नहीं नहीं पाय[illegible] क्योंकि मनुष्य को मिलजुल कर संसार का संचालन करना है। सं[illegible] के कारणों पर नजर डालें तो अलगाववाद का प्रश्न ही पैदा नहीं हो[illegible] मानव जाति एक है और जाति को जाति से अलग करना यह मनु[illegible] मात्र के अधिकार से बाहर की चीज है। आतंकवाद और अलगाव[illegible] घृणा पैदा करता है और मानव जाति की उन्नति में बाधक बनता [illegible] संसार का बहुमूल्य समय और सम्पत्ति नष्ट होती है। आतंकवाद [illegible] अलगाववाद का परिणाम निराशाजनक है और संसार में [illegible] सत्य-न्याय का मार्ग मानव को कल्याणकर है। संसार से अलगाव[illegible] और आतंकवाद समाप्त होना चाहिये जिसके कारण समाज राष्ट्[illegible] उन्नति के मार्ग पर ले जाया जा सके। प्रत्येक मनुष्य को [illegible] अनित्य जीवन में नित्य आत्मा उन्नत करना चाहिये ताकि संसार निज की उन्नति में सबकी उन्नति समझ सकें।

शोक प्रस्ताव

स्त्री आर्यसमाज मौह० डोगरान हिसार पूर्व प्रधान मन्त्री [illegible] कांग्रेस आई के प्रधान स्व० श्री राजीव गांधी की मृत्यु का समाच[illegible] सुनकर सबका मन रो उठा इस असामयिक मृत्यु ने विश्व को हि[illegible] दिया है। अत: राष्ट्र ने एक बुद्धिमान् नेता एवं भारत मां ने मह[illegible] महिला के महान् सपूत देश ने एक युवा चाणक्य खो दिया है जिस[illegible] क्षति पूर्ति कर पाना असम्भव है।

स्त्री आर्यसमाज की बहनें उन कातिलों के इस जघन्य अप[illegible] करने की घोर निन्दा करती हैं, जिन्होंने राक्षस वृत्ति को अपनाया। देश को महान् हीरे से वंचित कर दिया। हम दिवंगत आत्मा [illegible] सद्गति और परिवार की शान्ति की ईश्वर से प्रार्थना करती हैं।

(राजकुमारी आ[illegible]
प्रधान, स्त्री आर्य समाज दयानन्दभ[illegible]
मौह० डोगरान हिसा[illegible]

श्री धर्मचन्द जी गांधी का निधन

आर्यसमाज प्रधाना मुहल्ला रोहतक के मन्त्री तथा डा० वि[illegible] सागर स्मारक समिति के कोषाध्यक्ष श्री नन्दलाल जी आर्य के पि[illegible] श्री धर्मचन्द गांधी का ९६ वर्ष की आयु में २५-४-९१ को देहान्त [illegible] गया। स्वामी अमरानन्द जी (रोहतक) और स्वामी धर्ममुनि [illegible] (बहादुरगढ़) का प्रभावशाली प्रवचन हुआ और श्री वीरभान [illegible] वीर (दिल्ली) श्री सुभाष जी बतरा, श्री सुन्दरलाल जी, सेठ [illegible] किशनदास जी, बहिन सुदेश जी ने उस दिवंगत आर्य बुजुर्ग [illegible] श्रद्धाञ्जलियां अर्पित कीं। परिवार की ओर से ५१००/- रुपये की रा[illegible] भिन्न-भिन्न संस्थाओं को दान में दी गई।

गुरुदत्त आर्य
प्रधान आर्यसमाज प्रधाना मुहल्ला रोहत[illegible]

तीन प्रेरक जीवनियां

संकलन कर्ता—हरिराम आर्य

सामान्य मनुष्य अपना अमूल्य समय बात बातों या मानसिक धेड बुन में बिताकर अभाव आदि की दुहाई दिया करते हैं किन्तु इतने ही कर्मवीर अभाव में ही भाव का उद्रेक करके स्वजीवन को सार्थक ही नहीं दूसरों के लिए मार्गदर्शक बन जाते है। ऐसे तीन व्यक्तियों के जीवन एक मिसाल है, नवयुवकों के लिए—

श्री लक्ष्मणसिंह अग्रवाल

हरयाणा राज्य में वल्लबगढ़ नगर के निकट दिल्ली-मथुरा मार्ग पर भाड सेतली नाम का एक छोटासा गाव है। श्री लक्ष्मणसिंह अग्रवाल उसी गांव के निवासी हैं। संस्कृत साहित्य के उत्कृष्ट विद्वान् होने के साथ कवि भी हैं। अंग्रेजी भाषा के एम० ए० हैं। उल्लेखनीय है कि विद्वान् अग्रवाल नेत्रहीन हैं। इन सरस्वती पुत्र में दृष्टिहीनता के अभाव का जीवन पलायन का बहाना नहीं बनने दिया अपितु साहित्य जगत् में अपना चमत्कारक योगदान देकर मां भारती का नाद गु जाया। श्री अग्रवाल अब तक संस्कृत भाषा की ग्यारह पुस्तकों का प्रणयन कर चुके हैं। उनकी चार रचनाओं, कुटुम्बिनी, कुसुम वाटिका, विज्ञान गोतम तथा राम रसायन को हरयाणा साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है।

सौरभ मोहाल

चार वर्ष की अल्पायु का बालक सौरभ मोहाल अपनी विलक्षण स्मरण शक्ति के लिए विश्व विलक्षण कार्य पंजिका (वर्ल्ड गिनीज बुक) आकर्षित करने लगा है। सौरभ अपने माता पिता के साथ दिल्ली नोयडा मे रहता है। उसके स्कूल के अध्यापक सौरभ की स्मरण शक्ति की तारीफ करते हैं। माता पिता जहां एक ओर अपने बच्चे की सादगी तथा सरलता पर मुग्ध है वहां उसकी बुद्धि की विलक्षणता से चकित हैं, उन्हें विश्वास है कि उनका पुत्र गिनीज बुक में नाम लिखा लेगा।

चार वर्ष का सौरभ विश्व मानचित्र पर देशों तथा उनकी राजधानियों को बता सकता है। विश्व खेल प्रतियोगिताओं, उनके आयोजन के स्थान तथा तारीखें बता सकता है। समाचारपत्रों में चर्चित व्यक्तियों के बारे में जानकारी रखता है। उदाहरणार्थ इराक के राष्ट्रपति श्री सद्दाम हुसैन और अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज बुश का चरित्र चित्रण कर सकता है। भारतीय राजनीति की गतिविधियां और भारतीय चर्चित नेताओं के बारे में उसकी जानकारी है। सौरभ प्रश्नों के उत्तर हिंदी में देता है।

आशीष पंवार

गांव की धरती पर जन्मे सोलहवर्षीय आशीष पंवार अपनी लगन तथा घोर परिश्रम के बलबूते पर ग्लासगो में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय रोबोट प्रतियोगिता में भारत के प्रतिभाशाली छात्रों का नाम ऊंचा करके आया है। यद्यपि उसके द्वारा निर्मित रोबट पर उसे प्रतियोगिता में कांस्य पदक मिला, परन्तु उसकी आयु, सीमित साधनों को देखते हुए आशीष के साहस का लोहा मानना पड़ेगा।

आशीष के पिता श्री ब्रजराजसिंह पंवार जिला मेरठ के ककडीपुर गांव के निवासी हैं। आशीष का जन्मस्थान भी ककड़ीपुर है। जिन दिनों आशीष ने अपना रोबोट बनाया वह लखनऊ के एक स्कूल में ग्यारहवीं कक्षा में पढता था उसे जो जेब खर्च मिलता था, अपने प्रयोगों पर खर्च कर देता था। उसे एक ही धुन थी कि वह रोबोट बनाये। सायस नाम का अपना रोबोट बनाने के लिए उसने छोटे मोटे अनेक प्रयोग किये। विज्ञान की सैकडों पुस्तकें पढ़ी। रात दिन दिमागी तथा शारीरिक परिश्रम किया। तीस हजार रुपए खर्च करके उसने आठ किलो भार वाला अपना रोबोट बनाया।

उसका सायस रोबोट, सतर्क पहरा दे सकता है। स्प्रे पेंटिग, सफाई गणना और ड्रीलिंग कार्य के अतिरिक्त रेन अलार्म तथा रेडियो सर्किट एक्सपरिमेंट भी करता है। अन्तर्राष्ट्रीय रोबोट ओलम्पिक प्रतियोगिता १९९० ग्लासगो (इग्लैण्ड) में अपने रोबोट को शामिल कराने के लिए आशोष ने अपने स्कूल के अध्यापक से लगाकर भारत के राष्ट्रपति श्री आर० वेंकटरमण तक सम्पर्क किया। कितने ही देशों के आए कुशल प्रतियोगियों में आशोष का कांस्य पदक प्राप्त करना राष्ट्रीय प्रगति तथा कर्मवीर छात्रों की विलक्षण बुद्धि का अनुकरणीय उदाहरण है। (मनोहर कहानियां)

धर्मनिरपेक्षता बनाम साम्प्रदायिकता

'सेक्यूलर स्टेट' का अनुवाद 'धर्म निरपेक्ष राज्य' करना बड़ा ही अशुद्ध है, यह एक भ्रान्त और 'दुष्ट' अनुवाद है। 'धर्म निरपेक्ष' का सीधा-सीधा अर्थ है—'अधर्म सापेक्ष' और यही कारण है कि आज जीवन के हर क्षेत्र में अधर्म-सापेक्षता का बोलबाला है। हां, इसका अनुवाद मत-पन्थ-निरपेक्ष या सम्प्रदाय निरपेक्ष किया जा सकता है।

निश्चय ही धर्म और मत-मजहब या सम्प्रदाय एक ही वस्तु नहीं है। धर्म मानव मात्र का एक है और मत-सम्प्रदाय अनेक। धर्म (मानवधर्म) सबका सांझा है, अविभक्त है, सम्प्रदाय विभक्त हैं, विश्व मानवता को बांटते हैं। धर्म तत्त्व की प्रेरणा का आधार है—एक ईश्वर, सम्प्रदाय मनुष्यों के मस्तिष्क की उपज हैं, उनका आधार हैं विभिन्न कालखण्डों के विभिन्न मनुष्य। धर्म-तर्क और विज्ञान का, बुद्धिवाद का स्वागत करता है जबकि सम्प्रदायों में अक्ल का दखल नही, विज्ञान और बुद्धिवाद से वह कांपते हैं। 'आचारः परमो धर्मः' धर्म आचरण पर बल देता है जबकि सम्प्रदाय मात्र ईमान लाने पर। धर्म का सम्बन्ध आत्मा से है, तभी धर्म-पालक को 'धर्मात्मा' कहते हैं, कोई सम्प्रदायात्मा या पन्थात्मा नही कहता। यों धर्म और सम्प्रदाय में अनेकविध अन्तर्विरोध है। यहां इस लेख में इस विषयक विशेष चर्चा सम्भव नहीं है। प्रकट है कि सेक्यूलर स्टेट का अनुवाद 'धर्म निरपेक्ष' सर्वथा ही भ्रान्तिकारक और अशुद्ध है।

यहां हम दुर्जन-तोष-न्याय से इसी अशुद्ध अनुवाद को मान लेते हैं। पर प्रश्न तो यह है कि तब धर्म निरपेक्षता का व्यावहारिक अर्थ क्या है? यही न कि भारत में रहनेवाले जितने भी मत-पंथ और सम्प्रदायों के माननेवाले हैं उनके साथ सम्प्रदाय को आधार मानकर कोई भेदभाव नहीं होगा, सबके साथ समान व्यवहार होगा, सबको समान सुविधाएं होंगी। शिक्षा-नौकरी अथवा किसी भी विषय में सम्प्रदाय के आधार पर कोई निर्णय, कोई विचार और व्यवहार नहीं होगा। धर्मनिरपेक्षता का आशय है—सब धर्म समभाव, जिसका तकाजा है कि कानून की दृष्टि में भारत के सभी निवासी भारतीय हैं, कोई हिन्दू-मुसलमान, सिख, ईसाई आदि नहीं। फिर अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग ही क्यों? यह साम्प्रदायिक चिन्तन ही क्यों? यह दुश्चिन्तन ही सारी समस्याओं का मूल है।

क्या यह धर्मनिरपेक्षता है?

क्या भारत के हो एक भाग काश्मीर के लिए अलग संविधान होना धर्म-निरपेक्षता है? क्या काश्मीर में धारा 370 का होना धर्म निरपेक्षता है? क्या शिक्षा के क्षेत्र में मुसलमानों ईसाइयों को मजहबी शिक्षा देने की विशेष सुविधा और हिन्दुओं को यह सुविधा न होना धर्मनिरपेक्षता है? कोई भी मुसलमान चार-चार विवाह कर सकता है, किन्तु हिन्दू एक ही। क्या यह धर्म निरपेक्षता है?

क्या दिल्ली की जामा मस्जिद के लिए ५० लाख का अनुदान और अयोध्या के राम मन्दिर के जीर्णोद्धार में बाधा डालते हुए खून की नदियां बहा देना, यह धर्मनिरपेक्षता है? मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ को विशेष सुविधाएं और विशेष अनुदान क्या यह धर्म निरपेक्षता है? प्रश्न है कि पदे-पदे अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक, इस साम्प्रदायिक चिन्तन के आधार पर ही सभी निर्णय क्यों? धर्म-निरपेक्ष शासन में धर्म (सम्प्रदाय) का आधार क्यों?

स्पष्ट है कि धर्मनिरपेक्षता और जातिवाद-विनाश का नारा देनेवाली आज की सरकार और राजनैतिक दल ही सबसे बड़े सांप्रदायिक और जातिवाद की जडों को सींचने वाले हैं। प्रकट है कि राष्ट्रीय एकता और अखंडता की दुहाई देनेवाले राजनैतिक दल ही 'फूट डालो और राज्य करो' की दुर्नीति अपनाने से इसके सबसे बड़े शत्रु हैं। आयें, हम इस पाप का पर्दाफाश करें और इस राज को उजागर करें। कैसा अन्धेर है, सबसे बड़े सांप्रदायिक अपने को धर्म-निरपेक्ष और राष्ट्रवादियों को सांप्रदायिक बताने का दुस्साहस कर रहे हैं। पाप शान्त हो।

आचार्य प्रेमभिक्षु: (वेद मन्दिर, मथुरा)

कहां हमारा भारतवर्ष

रामेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

ऋषि मुनियों की धरती वाला,
कहां गया वह अपना देश ?
सत्य-अहिंसा-सुख-समृद्धि से—
था आपूरित जो परिवेश।
रहता रहा जहां मनुजों में,
सदा मनुजता का उत्कर्ष।
देवों की वह पुण्य भूमि सा,
कहां हमारा भारतवर्ष ?

कहां गया आदर्श राम का,
कहाँ गयी कर्णार्जुन शक्ति ?
कहां गयी सभ्यता सुपावन,
कहां गयी भारत की भक्ति ?
नैतिकता का पतन हुआ क्यों—
फैला दानवता साम्राज्य ?
काम-क्रोध-मद-मत्सर बढ़ते—
बनते नहीं आज हैं त्याज्य।

बढ़ती है भुखमरी-गरीबी,
प्रतिपल बढ़ती है मंहगाई।
बाज रही है भूमण्डल पर,
दनुज वृत्तियों की शहनाई।
शक्तिहीन, विभ्रमित प्रशासन,
नहीं कहीं कुछ कर पाता।
पूंजीपतियों की पूंजी का,
धन प्रतिपल बढ़ता जाता।

वेद विमण्डित संस्कृति पावन,
क्योंकर आज विनष्ट हुई ?
प्रेम-दया की दिव्य भावना,
जग में कैसे नष्ट हुई ?
कब तक जाने बनी रहेगी—
धरती पर यह निर्मम स्थिति ?
कैसे, किस क्षण परिणत होगी—
आज हमारी विषम परिस्थिति ?

शोक समाचार

श्री साधुराम आर्य स्वतन्त्रता सेनानी जमालपुर कालोनी लुधियाना (पंजाब) का स्वर्गवास २४-५-९१ को एक लम्बी बीमारी के बाद हो गया है। वे अपने पीछे भरा परिवार जिसमें तीन लडके और तीन लड़कियां तथा पत्नी छोड़ गये हैं। श्री साधुराम जी का जन्म १४ अक्तूबर सन् १९१९ में ग्राम बनोरी जि० जींद (हरयाणा) में हुआ था। इनके पिता जी का नाम श्री सुखराम था। इनके अन्दर आर्यसमाज की शिक्षा शुरू से ही कूट-कूट कर भरी हुई थी क्योंकि बचपन से ही इन्हें स्व० श्री महाशय कृष्ण जी की संगति मिल गई थी। १९३८ में कैथल (हरयाणा) से काकूराम के जत्थे में शामिल हुए तथा बाद में महाशय कृष्ण के बड़े जत्थे में शामिल हुए। वहां पर इनको भूखा रक्खा गया तथा तरह-तरह की यातनाएं दी गई, फिर भी टस से मस नहीं हुए। हैदराबाद जेल में इन्हें डेढ़ साल की सजा हुई तथा अढ़ाई महीने जेल के अन्दर रहे।

शोक सन्देश

२३ मई सन् १९९१ को ग्राम सुनारी कलां (रोहतक) में श्री राजेन्द्र कुमार शास्त्री व डा० राज कुमार एम०ए० के चाचा श्री अतरसिंह आर्य का हृदयगति रुक जाने के कारण देहान्त हो गया। उनकी आयु ६८ वर्ष की थी। वे बड़े समाज सेवक तथा ऋषि दयानन्द के परम भक्त थे। इस आकस्मिक निधन पर सभा शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करती है।

—केदारसिंह आर्य
सभा कार्यालयाध्यक्ष

स्वर्गीय पं० तालेराम आर्य का दसवा स्मृति दिवस सम्पन्न

आर्यसमाज कंवारी (हिसार) की ओर से गत वर्ष की भांति दिनांक २८-२९ मई १९९१ को पण्डित जी का स्मृति दिवस बड़ी श्रद्धा से मनाया गया। प्रतिदिन प्रातः चौपाल में यज्ञ तथा रात्रि को वेद प्रचार हुआ। इस अवसर पर प्रधान श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी ने पं० तालेराम आर्य के कार्यों एवं गुणों की विस्तार से चर्चा की। लोगों को उनके बताए हुए रास्ते पर चलने का आह्वान किया। स्वामी जगतमुनि जी, स्वामी सर्वदानन्द जी, वानप्रस्थ महावीर जी तथा महात्मा ताराचन्द जी ने प० जी को श्रद्धाञ्जलि के अतिरिक्त आर्यसमाज का संगठन, बुद्ध पूर्णिमा का महत्त्व, ईश्वर की सत्ता, मनुष्य के कर्त्तव्य, पत्थर पूजा व्यर्थ तथा शराब से होने वाले नुकसान पर विस्तार से विचार रखे।

पं० ईश्वरसिंह तूफान ने शराबबन्दी, दहेज बन्दी एवं समाज में फैले मत मतान्तरों बारे समाज सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुए। लोगों ने बड़ी श्रद्धा से प्रचार को सुना। सभा को २३२ रुपये दान दिया गया।

सूबेदार रामेश्वरदास आर्य, मन्त्री आर्यसमाज कंवारी

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदित्तामल, भिवानी स्टैंड रोहतक।
२. मैसज फूलचन्द सीताराम, गांधी चौक, हिसार।
३. मैसर्ज सन-अप-ट्रेडर्ज, सारंग रोड, सोनीपत।
४. मैसर्ज हरीश एजेंसीस, ४६९/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५. मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन, सर्राफा बाजार, करनाल।
६. मैसर्ज घनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७. मैसर्ज कृपाराम गोयल, रुड़ी बाजार, सिरसा।
८. मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप न० ११५, मार्किट नं० १, एन०आई०टी०, फरीदाबाद।
९. मैसर्ज सिंगला एजेंसीज, सदर बाजार, गुड़गांव।

आर्यसमाजों के चुनाव

आर्यसमाज कुन्जपुरा जि० महेन्द्रगढ़

प्रधान—वैद्य रोहिताश आर्य, उपप्रधान—राजबीर आर्य, मन्त्री—राधेश्याम आर्य, उपमन्त्री—उदयसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—शिवकुमार आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—वेदप्रकाश आर्य, प्रचारमन्त्री—धजराजसिंह आर्य, संयोजक—सुरेशकुमार आर्य, सहसंयोजक—ब्र० मुरारीलाल आर्य।

आर्यसमाज सैक्टर १४ सोनीपत

प्रधान—श्रीमती दमयन्ती तनेजा, उपप्रधान—१. देवप्रिय आर्य २. डा० जगदीशमित्र धवन, मन्त्री—ईश्वरदयाल आर्य, उपमन्त्री—श्रीमती कौशल्या जी, कोषाध्यक्ष—मा० छाजूराम मलिक, पुस्तकाध्यक्ष—१. श्रीमती वृषा जी २. श्रीमती सन्तोष मदान, लेखा निरीक्षक—सुभाष गिरधर।

आर्यसमाज सालवन जि० पानीपत

प्रधान—लक्ष्मणसिंह, उपप्रधान—धर्मसिंह, मन्त्री—राजबीरसिंह, उपमन्त्री—मोहनलाल, पुस्तकाध्यक्ष—विरेन्द्रकुमार।

आर्यसमाज नीलोखेड़ी जि० करनाल

प्रधान—श्री एच. डी. तुली, उपप्रधान—१. ईश्वरसिंह, २. ओमप्रकाश, मन्त्री—सुभाषचन्द्र सिंह, उपमन्त्री—देवेन्द्रकुमार, कोषाध्यक्ष—प्रतापचन्द, पुस्तकाध्यक्ष—तीर्थदास, लेखा निरीक्षक—कृष्णलाल वर्मा।

आर्यसमाज नारनौल जि० महेन्द्रगढ़

प्रधान—श्री छोटेलाल आर्य, उपप्रधान—प्रभुदयाल, मन्त्री—वैद्य ओमप्रकाश, उपमन्त्री—महाशय टेकचन्द, कोषाध्यक्ष—महावीर प्रसाद, पुस्तकाध्यक्ष—द्वारिकाप्रसाद।

आर्यसमाज बाघड़ूकलां जि० जीन्द

प्रधान—मा० बारासिंह, उपप्रधान—बलराजसिंह, मन्त्री—सुरेश कुमार, उपमन्त्री एवं पुस्तकाध्यक्ष—अजमेरसिंह, कोषाध्यक्ष—फतेसिंह प्रचारमन्त्री—रामदिया।

आर्यसमाज सरफाबाद जि० जीन्द

प्रधान—चौ० बिजेसिंह, मन्त्री—चौ० प्रेमसिंह, कोषाध्यक्ष—चौ० शमशेरसिंह।

आर्यसमाज आदर्शनगर जयपुर

प्रधान—श्री रामलाल गुलाटी, उपप्रधान—१. बाबूलाल शर्मा २. हरीबक्श जांगोड़, मन्त्री—सुनीलकुमार भादू, उपमन्त्री—१. तेजप्रकाश कल्या २. चक्रकीर्ति सामवेदी, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्रीमती मृदुला सामवेदी, कोषाध्यक्ष—नाथूलाल शर्मा।

वेदप्रचार मण्डल उत्तरी-पश्चिमी दिल्ली

कार्यालय—आर्यसमाज मन्दिर पुष्पान्जलि इन्कलेव दिल्ली-३४

प्रधान—श्री प्रभुदयाल भाटिया, उपप्रधान—१. भारत भूषण २. गिरधरलाल घई, मन्त्री—लाजपतराय आहूजा, उपमन्त्री—जयपाल सिंह आय, कोषाध्यक्ष—नरेश आर्य, लेखा निरीक्षक—श्यामलाल आर्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० २३२०/७३ रजि नं० P/KIK-८९ फोन नं० ७८३९२ मूल्टिमजन् १,९६ ०८, १२, ०९-

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक २८ १४ जून, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नियन्त्रण में

हरयाणा प्रदेश में स्थित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने २ जून को अपने नियन्त्रण में ले लिया है। यह ऐतिहासिक गुरुकुल दिल्ली सीमा के साथ अरावली पर्वत पर जिला फरीदाबाद में आर्यसमाज के विख्यात संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द ने १९०६ में स्थापित किया था। उन दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का कार्य क्षेत्र पंजाब के अतिरिक्त हरयाणा तथा दिल्ली तक था। इसी कारण गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की समस्त सम्पत्ति की रजिस्ट्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जिसका कार्यालय उन दिनों लाहौर में था, उसी के नाम करवाई गई थी।

पंजाब का विभाजन होने के पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का राजकीय सीमाओं के अनुसार विभाजन हो गया और पंजाब सभा ने प्रस्ताव पास करके निर्णय किया कि पंजाब सभा के नाम की जो सम्पत्ति जिस भी राज्य में स्थित है वह उसी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की सम्पत्ति बन गई है। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि० फरीदाबाद में स्थित होने के कारण आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकार में आ गया परन्तु कुछ स्वार्थी व्यक्तियों ने पंजाब सभा के नाम पर इस पर अपना अवैध कब्जा बनाये रखा। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से न्यायालय में अपनी सम्पत्ति की सुरक्षा तथा अपने नियन्त्रण में लेने की कानूनी कार्यवाही की। कई वर्षों के प्रयत्न से न्यायालय ने निर्णय दिया कि जो सम्पत्ति पंजाब सभा के नाम की हरयाणा राज्य में स्थित है, अब उसकी स्वामी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा बन गई है। इस अदालती निर्णय के अनुसार हरयाणा सभा ने सराय ख्वाजा ग्राम में स्थित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की समस्त सम्पत्ति का इन्तकाल पंजाब सभा से अपने नाम करवा लिया और जिला फरीदाबाद के उपायुक्त महोदय को अदालती निर्णय तथा इन्तकाल आदि के प्रमाण प्रस्तुत कर दिये। उन्होंने भली-भांति सभी तथ्यों की जांच करके २ जून १९९१ को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का कब्जा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को पुलिस की सहायता देकर दे दिया। श्री महेन्द्र शास्त्री जोकि पंजाब सभा का नाम लेकर अवैध रूप में गुरुकुल में बैठा था, उसे निकाल दिया परन्तु वह हरयाणा सभा को आय व्यय का हिसाब आदि देकर नहीं गया। हिसाब देखने पर ज्ञात हुआ कि वह गुरुकुल के छात्रों से भोजनादि के शुल्क की राशि का गबन कर गया है। हरयाणा सभा ने गुरुकुल का नियन्त्रण अपने हाथ में ले लिया है और स्थानीय आर्य कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से गुरुकुल को सुचारु रूप से चलाने का प्रयत्न कर रही है।

—केदारसिंह आर्य

प्रार्थना

मुझे मनुष्य की जिन्दगी देनेवाले,
कभी गम न देना खुशी देनेवाले।
मुझे आपने यूं तो सबकुछ दिया है।
हवा और पानी मोहिया किया है॥
सेवन जिन्हें हर समय कर रहा हूं।
मुझे मनुष्य की·····॥१॥
वनस्पतियां मेरा भोजन बनाया।
रहने को मेरे जमीं आसमां बनाया॥
तुम्हे एक दफा देखना चाहता हूं।
मुझे मनुष्य की······॥२॥
श्रेष्ठ कर्म करने की मुझे प्रेरणा दो।
नेकी के रस्ते पर चलना सिखा दो॥
यही भीख मैं आपसे मांगता हूं।
मुझे मनुष्य की·····॥३॥
किसी की खुशी देखकर न जलूं मैं।
स्वस्ति के पथ पर चलूं मैं॥
तेरे प्यार के गीत गाता रहूं मैं।
मुझे मनुष्य की······॥

देवराज आर्य प्रचार मन्त्री आर्यसमाज
(बल्लभगढ)

आर्य पति का सुख

रचयिता—मा० रामचन्द्र आर्य, आर्य निवास नलवा (हिसार)

मिल्या आर्य परिवार, पाया सुख बेसुमार।
जीवन सफल होया मेरा मिल्या ऐसा भरतार॥टेक॥
पंच महायज्ञ का प्रतिदिन हो करना।
वेद ज्ञान की जोत से उजाला भरना॥
करते सच्च से प्यार, उठे यज्ञ महकार।
खुशियों से नित भरा रहे मेरा परिवार॥१॥
आर्य ग्रन्थ का घर में होता है पढना।
सत्य सात्विक बात का होता है मढना॥
करते धर्म विचार, ऋषियों से प्यार।
भय का भूत है ना होता कभी सवार॥२॥
नशे विषय का काम नहीं सात्विक खाना।
अश्लील साहित्य दूर करें धर्म का गाना॥
पढ़े आर्य संस्कार, दिया पाखण्ड मार।
सत्संग नित करके हम करते शुद्ध विचार॥३॥
गौ दूध और घृत से शरीर बलशाली है।
ब्रह्मचर्य का तेज बुद्धि भी प्रतिभाशाली है॥
आर्य कविता धार, करते सोच विचार।
'रामचन्द्र' मान ऋषि की करता धर्म प्रचार॥४॥

वेदविषयक एक आक्षेपयुक्त लेख का उत्तर—

क्या धर्मग्रन्थ होना अपराध है ?

डा० भवानीलाल भारतीय

गतांक से आगे

वहां सर्वोच्च चेतन सत्ता को ही इन्द्र, अग्नि, वायु, मित्र, वरुण आदि नाना नामों से पुकारा गया है और उसी सत्ता के आगे अपनी श्रद्धा एवं भक्ति को प्रस्तुत करने की बात कही गई है। वेदों में विभिन्न देवताओं की स्तुति (गुण कथन), प्रार्थना (सहायता की याचना) उस शक्ति के निकट स्वय को ले जाना तथा उसका सान्निध्य प्राप्त करने का जो वर्णन मिलता है क्या वह धर्माचरण की शिक्षा नहीं है ? और क्या ये देवता एक ही परमात्मा के भिन्न-भिन्न नाम नही हैं ?

वेदो में ही लौकिक धर्म का उपदेश भी सहस्राधिक सूक्तों में उल्लिखित हुआ है। यहां पारिवारिक जनों में परस्पर सहृदयता, सौमनस्य, द्वेष रहित आचरण आदि को विधाओं का वर्णन है तो भूत मात्र में आत्मभाव को देखने तथा समस्त प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखने के उदात्त विचार भी उपलब्ध होते हैं। वेदों में वह संज्ञानसूक्त भी है जिसमे मनुष्य मात्र को साथ-साथ चलने, एक सी बात बोलने तथा अपने विचारों, भावों तथा संकल्पों में एकता रखने की बात कही गई है। वेद में परमात्मा से उस मेधा की याचना की गई है जो हमारे पूर्व पुरुषाओ देवताओं, ऋषियों तथा पितरों को प्राप्त थी तथा दिव्य गुण युक्त, "देवता" शब्द से अभिहित लोगों के सख्य को प्राप्त करने की कामना की गई है। यदि इस प्रकार की सब जनोपयोगी तथा मानव समाज में प्रेम, भ्रातृत्व तथा सामंजस्य के भाव को विकसित करने वाली शिक्षा को धर्म नही कहा जायेगा तो क्या इससे विपरित बातों को धर्म की संज्ञा दी जायेगी।

बालीजी वेदो को "श्रेष्ठ कविता" तो मानते हैं किन्तु उन्हें धर्मग्रन्थ कहे जाने पर आपत्ति करते हैं। वे भूल जाते हैं कि रामायण और महाभारत श्रेष्ठ महाकाव्य है तो वे हमारे धर्मग्रन्थ भी हैं। यदि गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस को हिन्दी का श्रेष्ठ काव्य ग्रन्थ माना जाता है तो क्या करोड़ों हिन्दू उसे अपना धर्म ग्रन्थ नही मानते। यदि भगवद्गोता के विश्वरूप दर्शन जैसे अध्यायों में उत्कृष्ट काव्य तत्व के दर्शन होते हैं तो क्या इसी तर्क के आधार पर उसे धर्म ग्रन्थ कहना अपराध हो जाएगा ? वेद भी अपनी रचना शैली अभिव्यंजना कौशल तथा अन्य काव्य तत्वों की विद्यमानता के कारण श्रेष्ठ काव्य हैं, स्वयं वेद उन्हें "देवस्य काव्य" देवी कविता कहता है किन्तु कविता होने से ही उसे धर्म ग्रन्थ के गौरवास्पद स्थान से कसे च्युत किया जा सकता है।

शायद बालीजी वैदिक सूक्तों के कथ्य को श्रेष्ठ काव्य का विषय या उपादान भी नहीं मानते। इसके लिये वे कभी नासदीय सूक्त का उल्लेख करते हैं और कहते हैं कि इस सूक्त के रचयिता को खुद को ही यह पता नहीं कि सृष्टि के आरम्भ में क्या था, किस तत्व की प्रधानता थी, इस दृश्यात्मक जगत् की उपादान सामग्री क्या थी, यह संसार क्यों, कब कैसे और किसके द्वारा बनाया गया, आदि। अन्यत्र वे लिखते हैं कि वेदों में सूर्या विवाह का सूक्त है जो आगे चलकर विवाह संस्कार में प्रयुक्त होने लगा। इसी प्रकार वे वेदों में आये अक्ष सूक्त, दुन्दुभि सूक्त, मण्डूक सूक्त आदि में वर्णित बातों का उल्लेख कर वेदों के विषय विवेचन को नितान्त हेय, तुच्छ तथा अपदार्थ सिद्ध करते हैं। यद्यपि इन सूक्तों के कथ्य का भी उन्होंने गम्भीरता से से विचार नहीं किया, किन्तु हमारी मुख्य शिकायत तो यह है कि वेदों में आये सैकडों अन्य आध्यात्मिक भाव पत्र मनुष्य के जीवन को उन्नत बनाने वाली शिक्षाओं से भरपूर तथा मानवी चिन्तन को उदात्तता एवं प्रखरता की ओर उन्मुख करने वाले भावों से युक्त सूक्तों की ओर उनकी दृष्टि क्यों नहीं गई। उनके विचार में कितव सूक्त एक जुवारी को इसके परिजनों द्वारा दण्डित किये जाने की कथा है। ऐसा कहते समय वे यह भूल जाते हैं कि जुवारी के पश्चात्ताप को आत्मकथात्मक ढग से व्यक्त करना तो वेद की एक शैली मात्र है। उसका हार्द तो उस मंत्र में निहित है जिसमें मनुष्य को अक्ष क्रीडा से दूर रहने (अक्षैः मा दीव्यः) तथा कृषि जैसे श्रम युक्त किन्तु बहुपरिणामदायी कार्य को करने की प्रेरणा दी गई है।

बालीजी ने एक सांस में ही वेदों के उन विभिन्न सूक्तों की विषय वस्तु का व्यंग्यात्मक ढग से संकेत तो किया और यह कहने से भी नहीं चूके कि नगाड़े की आवाज का वर्णन करने वाले दुन्दुभि सूक्त, शराब पीकर मतवाले हुए इन्द्र के सूक्त, मेंढकों की तरह टर-टर करनेवाले वेदपाठी ब्राह्मणो के उल्लेख वाले मण्डूक सूक्त को किस पैमाने से धर्म ग्रन्थ माना जायेगा ? किन्तु उन्हीं के कथनानुसार वेदों में भूमि और राष्ट्र की वंदना वाले सूक्त भी हैं, समाज के विभिन्न वर्गों के कर्तव्यों का निर्देश करने वाले मंत्र समूह भी हैं, इन्हीं वेदों में विराट् (वृहत् मानव समुदाय तथा उसके सामाजिक विकास) के द्वारा सृष्टि रचना प्रक्रिया का दार्शनिक उल्लेख वाला पुरुष सूक्त भी है, वहीं सभा (जनता की प्रतिनिधि सभा) के कर्तव्यसूचक सूत्र भी मिलते हैं और सत्य की महिमा का उद्घोष करने वाले सूक्त भी हैं। मैं बालीजी से पूछना चाहता हू कि क्या उक्त विषयों का वर्णन करने वाले सूक्तो का समूह धर्म ग्रन्थ कहलाने का अधिकारी नही है ? क्या मनुष्यों के वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक तथा सार्वजनीक कर्तव्यों के विधायक उपदेशो को धर्म से भिन्न कोई अन्य संज्ञा भी दी जा सकती है। यह तो हो सकता है कि बालाजी को धर्म या धर्मग्रन्थ शब्द से ही चिढ़ हो, किन्तु उनकी अपनी कोई पूर्वाग्रह युक्त धारणा या कोई पूर्व निर्धारित विचार सभी विचारशील लोगों के लिये भी स्वीकार्य हो, यह कैसे सम्भव है ?

रही बात शराब पीकर उन्मत्त हुए इन्द्र के वर्णन की या मेंढकों की भांति टर टर कर वेदपाठ करने वाले ब्रह्मचारियों की। तो यह सारा विषय तो उसी व्यक्ति को स्पष्ट और सुबोध हो सकता है जो बिना किसी पूर्वाग्रह के वेद प्रतिपादित "इन्द्र" तत्त्व को समझने का प्रयास करे। तभी वह जान सकेगा कि इन्द्र का सोमपान और तज्जन्य आनन्दानुभूति क्या है ? जो लोग सोम को सुरा या शराब का वाचक मानते हैं उन्हे तो वैदिक सोम के मौलिक अभिप्राय को समझने के लिये एक अन्य जन्म ही लेना पड़ेगा। सोम को अलौकिक और दिव्य आध्यात्मिक अनुभूति बताते हुए वेद ने स्वय कहा—'अपाम सोमं अमृताऽभूम' मैंने सोम पिया और मैं अमर हो गया, मैने देवताओं को जान लिया।

सत्य बात तो यह है कि वैदिक सूक्तों मे वर्णित अनेकानेक रहस्यात्मक अनुभूतियों तथा उसके गूढ़ अभिप्राय को समझने के लिये पर्याप्त श्रम, धैर्य अध्यवसाय और संकल्प की आवश्यकता है। ऐसे ही रस्ते चलते, वैदिक सूक्तों तथा उनके कथ्य पर फिकराकशी करने से न तो वेदों का ही कुछ बनता बिगडता है और न उन शतशः पौरस्त्य व पाश्चात्य वेदाभ्यासियों के वर्षों के श्रम पर ही कोई पानी फेर सकता है जिन्होंने निरन्तर, दीर्घकाल तक वेदों के अभिप्रेतार्थ को समझने में ही अपने जीवन को लगाया तथा इसे ही अपनी सारस्वत साधना का चरम लक्ष्य माना। रही बात मण्डूक सूक्त का मजाक बनाने की। तो बात सीधी सादी है। अलकारों को एक साधारण विद्यार्थी भी जानता है कि कहीं कहीं हीनोपमा भी दी जाती है, वहां उपमेय के लिये किसी हीन उपमान को भी प्रयुक्त किया जाता है। तुलसीदास ने जब

दादुर धुनि चहुं ओर सुहाई।
वेद पढ़हि मनु बटु समुदाई॥

की चौपाई लिखी थी तो उसने वेद के उस मण्डूक सूक्त के अभिप्राय को ही अपने ढग से कहा था। अतः वेदपाठी ब्राह्मणों के मन्त्रोच्चारण को यदि मण्डूक ध्वनि से उपमित किया गया है तो यह

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वाध्यायान्मा प्रमद

(सावित्री शास्त्री, एम०ए०, जनता कालोनी, रोहतक)

उपनिषद् आध्यात्मिक विद्या के भण्डार हैं। ईश, केन, कठादि ग्यारह उपनिषदों में सर्वप्रथम ईशोपनिषद् तो यजुर्वेद का ४०वां अध्याय ही है। इन उपनिषदों में तैत्तिरीयोपनिषद् में स्वाध्याय के लिए विशेष निर्देश देखने को मिलता है। क्योंकि इस कथन में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि स्वाध्याय ही आध्यात्मिक उन्नति का प्रथम सोपान एवं रहस्य है। तैत्तिरीयोपनिषद् के प्रपा० ७/अनु० ९ में स्वाध्याय का निर्देश इन शब्दों में मिलता है—

ऋतं च स्वाध्यायप्रवचने च। सत्यं च स्वाध्यायप्रवचने च। तपश्च स्वाध्यायप्रवचने च। दमश्च स्वाध्यायप्रवचने च। शमश्च स्वाध्यायप्रवचने च। अग्नयश्च स्वाध्यायप्रवचने च। अग्निहोत्रञ्च स्वाध्यायप्रवचने च। अतिथयश्च स्वाध्यायप्रवचने च। मानुषं च स्वाध्यायप्रवचने च। प्रजा च स्वाध्यायप्रवचने च प्रजातिश्च स्वाध्यायप्रवचने च ॥

इस सम्पूर्ण प्रकरण में पढने वाले शिष्य तथा पढ़ाने वाले आचार्य के लिए निर्देश किया गया है। ऋत अर्थात् यथार्थ आचरण, सत्य अर्थात् सत्याचरण, तप, दम शमादि प्रत्येक नियम का पालन करते हुए स्वाध्याय एवं प्रवचन को आवश्यक एवं अत्याज्य बतलाया है। क्योंकि "स्वाध्यायप्रवचने" पद में व्याकरण की दृष्टि से द्वन्द्व समास है। स्वाध्यायश्च प्रवचनं च ते। अत: संक्षेप से मनुष्यमात्र के प्रति ऋषियों का यह सन्देश है कि संसार में रहते हुए, सांसारिक नियमों एवं मानमर्यादाओं का पालन करते हुए अपनी उन्नति करने की सद्भावना से सब प्रकार की विद्याओं को पढते-पढाते चले जाये।

स्वाध्याय मनुष्य के लिए आत्यावश्यक है इसका निर्देश केवल यहीं पर ही नहीं मिलता वरन् इसी उपनिषद् के इसी प्रपाठक के अनुवाक ११ में आचार्य अपने शिष्य को इस भान्ति उपदेश देता है—

"वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति। सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान् मा प्रमद। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तु मा व्यवच्छेत्सोः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम् ....। स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् ॥

अर्थात् हे शिष्य, तू सदा सत्य बोल, धर्माचरण कर, प्रमादरहित होके पढ पढ़ा तथा प्रमाद के वशीभूत होकर पढने एवं पढ़ाने के कार्य को कभी मत छोड़ आदि।

उपनिषद् के अतिरिक्त धर्मशास्त्र मनुस्मृति में भी ब्राह्म शरीर के लिए स्वाध्याय को आवश्यक बतलाया है—

"स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः ॥
मनु० अ० २/२८

स्वाध्याय अर्थात् सकल विद्या पढ़ने पढाने, ब्रह्मचर्य सत्यभाषणादि व्रत पालने, अग्निहोत्रादि तथा सत्य का पालनादि, त्रैविद्येन-वेदस्थ ज्ञान, कर्म, उपासनादि के द्वारा तथा पक्षेज्यादि एवं पंचमहायज्ञों के पालन से इस शरीर को ब्राह्मी अर्थात् वेद और परमेश्वर की भक्ति का आधाररूप ब्राह्मण का शरीर किया जाता है। इस प्रकार से मनुस्मृति का भी यह प्रमाण है कि स्वाध्याय के बिना यह शरीर ब्राह्मण शरीर नहीं बन सकता।

मानव जीवन का परम लक्ष्य परमेश्वर प्राप्ति है। इस परम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भी स्वाध्याय की परम आवश्यकता है। योगदर्शन में उपासना के स्वरूप का प्रतिवादक सूत्र है—तज्जपस्तदर्थभावनम्" (स० पा० २८)

इस सूत्र की व्याख्या में व्यास भाष्य में स्वाध्याय का महत्त्व इन शब्दों में दिग्दर्शित किया गया है—

"स्वाध्यायाद्योगमासीत योगात् स्वाध्यायमासते।
स्वाध्याययोगसम्पत्त्या परमात्मा प्रकाशते ॥

इसका भाव है कि स्वाध्याय से योग में और योग से स्वाध्याय में स्थिर भाव को प्राप्त करे। स्वाध्याय और योग इन दो सम्पत्तियों से परमात्मा प्रकाशित होता है।

महर्षि पतञ्जलि जी ने योग के लिए आवश्यक जिन क्रियाओं का उल्लेख किया है उनमें भी स्वाध्याय का ग्रहण किया है—

तपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः।
(साध० पा० १)

अर्थात् तपः, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान—ईश्वर के प्रति विशेष भक्तिपूर्वक अनुराग योग की क्रिया है। स्वाध्यायशील मुमुक्षु पुरुष को स्वाध्याय से फल प्राप्ति का वर्णन इस प्रकार किया है—

स्वाध्यायादिष्टदेवतासम्प्रयोगः। (साधना पा० ४४)

स्वाध्याय के सिद्ध हो जाने पर इष्टदेव परमात्मा के साथ योग होता है। इस प्रकार से योगदर्शन भी स्वाध्याय की परमावश्यकता मनुष्यमात्र के लिए दर्शाता है एवं परम कर्त्तव्यता स्वाध्याय की बताता है।

योगांगानुष्ठानादशुद्धिक्षये ज्ञानदीप्तिराविवेकख्यातेः।
(साध० पा० २८)

महर्षि पतञ्जलि ने विवेकख्याति प्राप्त होने तक योग के अंगों का अनुष्ठान आवश्यक बतलाया है। योग का दूसरा अंग है नियम। इस नियम रूप योगांग में भी स्वाध्याय के पालन का वर्णन है।

शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः ॥
(साध० पा० ३२)

शौच से अभिप्राय है आभ्यन्तर एवं बाह्य पवित्रता, सन्तोष, तपः, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान ये पांच नियम हैं। जब तक विवेक अर्थात् ज्ञान की प्राप्ति नही हो जाती तब तक इन नियमों का पालन करना चाहिए।

इस प्रकार से स्वाध्याय जहां परम लक्ष्य परमपिता परमात्मा की प्राप्ति के लिए आवश्यक है। इस शरीर को ब्राह्मण शरीर बनाने के लिए आवश्यक है। सच्चे अर्थों में मनुष्यता प्राप्ति के लिए जरूरी है। वहां इतिहास में ऐसे भी अनेक उदाहरण मिलते हैं जिन्होंने स्वाध्याय से प्रेरणा पाकर ही अपने जीवन को पतनोन्मुख होने से बचाया। अधोगति को प्राप्त होने से अपनी रक्षा की। इसके साथ ही स्वाध्याय किसी एक विषय का गम्भीरता से अध्ययन करने पर तद् विषय में पारंगतता एवं मर्मज्ञता प्राप्ति में भी सहायक होता है।

महर्षि पाणिनि प्रणीत अष्टाध्यायी व्याकरण शास्त्र का मूलग्रन्थ है। उसकी व्याख्या आज काशिका नाम से उपलब्ध है। परन्तु उस काशिका पर भी जिनेन्द्र बुद्धि ने न्यास नाम की व्याख्या लिखी है। न्यासकार ने स्वाध्याय द्वारा कितना ज्ञान प्राप्त किया था इस प्रसंग में एक किंवदन्ती इस प्रकार है।

अष्टाध्यायी के सूत्र—"णेरणौ यत्कर्म णौ चेत् स कर्ताऽनाध्याने" की व्याख्या करते हुए सूत्र के भाव की जटिलता को देखते हुए इन शब्दों में वर्णन करते हैं—

णेरणाविति सूत्रस्यार्थं जानाति पाणिनिः।
अहं वा भाष्यकारो वा चतुर्थो नैव विद्यते ॥

अर्थात् "णेरणौ यत्कर्म णौ०" इस सूत्र का अर्थ या तो सूत्र रचयिता पाणिनि मुनि जानते हैं अथवा महाभाष्यकार पतञ्जलि मुनि जानते हैं और तीसरा मैं न्यासकार जिनेन्द्र बुद्धि इस सूत्र के गहन अर्थ को जानता हूं। हम से अतिरिक्त चौथा व्यक्ति इस सूत्र के वास्तविक अर्थ को भलीभांति सम्यक् रूपेण नहीं जानता, यह है स्वाध्याय की महिमा। स्वाध्याय के द्वारा न्यासकार को अपने ज्ञान पर कितना विश्वास है यह उनके शब्दों से ज्ञात होता है।

इस प्रकार से उपनिषद्, धर्मग्रन्थ, मनुस्मृति तथा योगदर्शन के आधार पर स्वाध्याय मानव की उन्नति एवं चहुमुखी विकास के लिए परम आवश्यक है तथा परम सहायक है। अतः ऋषियों के आदेश एवं उपदेश के अनुसार हमें भी इस दुर्लभ मानव देह को पाकर स्वाध्याय में प्रमाद नहीं करना चाहिए। अपितु स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए।

विज्ञान बनाम धर्म

श्री इन्द्रजित् 'देव' पुरानी सब्जी मण्डी मार्ग, यमुनानगर-१३५००१

'दैनिक ट्रिब्यून' के दिनांक २८ जुलाई, १९९० के अंक में "विज्ञान सीमाएं पार करेगा तो विनाश होगा" शीर्षक से मजीठा जिला अमृतसर में ज्योतिर्मठ शाखा काशीपीठाधीश्वर के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी ओमप्रकाशनन्द सरस्वती के द्वारा एक भाषण के कुछ अंश प्रकाशित हैं। पढ़कर ऐसा लगा कि इनके लिए तर्क व बुद्धि से बहुत परे की बातें मानना, मनवाना ही धर्म की परिधि है। मर्यादापुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी को ईश्वर मानना ही धर्म है तो प्रश्न उत्पन्न होता है कि उनसे पूर्वकाल में धर्म कहां था? दशरथ दिलीप व रघु जैसे रामचन्द्र जी के पूर्वज किसकी पूजा करते थे? रामजी व शिवजी स्वयं किसे ईश्वर मानते थे? किसी पुरुष–महापुरुष को ईश्वर मानना हीं यदि धर्म है तो यह धर्म के साथ घोर अन्याय है। कोई भी पुरुष सिद्धांतों की उच्चता, तप, त्याग, संयम, इन्द्रियनिग्रह, अपरिग्रह, बलिदान, क्षमा, दया वीरता न्यायकारिता, निष्पक्षता, धैर्य, संघर्ष व परोपकार जैसे गुणों को अपने जीवन में क्रियात्मक रूप देने से महापुरुष बनता है। यही धर्म के मूल तत्त्व हैं। धर्म क्या है, यह समझ में आ जाए तो संसार के बहुत से विषय अपने वास्तविक स्वरूप में समझ आ जाते हैं। धर्म शब्द "धृञ् धारणे" धातु से बना है जिसके अर्थ हैं "धारण करना" या "थामना।" वे सत्य व अटल सिद्धान्त या ईश्वरीय नियम जिनके धारण करने से यह सम्पूर्ण जगत् थमा हुआ है तथा ईश्वर की रची सृष्टि के कार्य में जो सत्य रूपी नियम पूर्ण रूपेण प्रत्येक वस्तु में रमा हुआ है, वही धर्म है। जैसे ईश्वर ने अग्नि में प्रकाश व गर्मी का गुण स्वाभाविक बनाया है तथा इसका स्वाभाविक गुण एक सत्य नियम या धर्म ठहराया है, चाहे आर्यावर्त हो या पाकिस्तान हो, चीन हो या जापान, अमरीका हो या फिर रूस हो, अग्नि में यह गुण सर्वत्र व्यापक है। यह गुण अर्थात् विशेषता अग्नि में है तभी वह अग्नि कहाती है। इसी प्रकार मनुष्य में यदि सद्गुण विद्यमान हैं, तभी वह मनुष्य है अन्यथा दो हाथों व दो पैरों वाला एक निश्चित रूप व आकृति वाला एक प्राणी है। श्री रामचन्द्र से बहुत पहले मनु महाराज ने मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण वर्णित करते हुए कहा है :—

> धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
> धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

धर्म एक पुरुष—महापुरुष को ईश्वर मानना नहीं है, अपितु उसके गुणों को अपने जीवन में उतारना है। धर्म व्यक्ति नहीं, कुछ सिद्धांतों का नाम है।

विज्ञान की भी जानकारी न होने के कारण हमने इसके साथ घोर अन्याय किया है। वि एक उपसर्ग है जो किसी शब्द के पूर्व जोड़ने पर वह विहीन, अनेकरूपता, निषेध, विपरीतता व विशेष जैसे अर्थ अपने में समाहित करता है। "ज्ञान" शब्द से पूर्व "वि" जोड़ने का अर्थ हुआ—किसी विषय की अनुभवजन्य पूर्ण व अच्छी-सच्ची जानकारी, निश्चयात्मक ज्ञान। खेद है, मशीन बनाना, यन्त्रों का निर्माण व अणु-परमाणु पर आधारित पदार्थों की रचना करना भी यदि विज्ञान मान लिया जाए तो भी कुछ सीमा तक सही है। जगद्गुरु ओम्प्रकाशानन्द के भाषण से ऐसा आभास होता है कि वे विज्ञान के बढ़ने को हानिकारक मानते हैं। यह विचार ही हानिकारक है कि विज्ञान मनुष्य का विरोधी है, इसकी उन्नति में बाधक है या धर्म का शत्रु है। जगद्गुरु जी ने कहा है कि रावण के समय में विज्ञान अपनी सीमाएं पार कर चुका था पर यह स्पष्ट नहीं किया कि विज्ञान की सीमा क्या है? विज्ञान का दोष क्या है? प्रकृति के रहस्यों को खोलना विज्ञान का काम है व मनुष्य के सुख के लिए साधन तैयार कराने की अन्तिम क्रिया ही विज्ञान की सीमा है। यदि वैज्ञानिक यन्त्रों व उपकरणों से मनुष्य दुःखी होता है तो यह उसके ज्ञान, कर्म व धर्मपूर्वक आचरण न करने के कारणवश होता है। उदाहरणतः दूरदर्शन पर अश्लील, असत्य व अविवेकपूर्ण कार्यक्रम दिखाए जाते हैं तो इसमें दूरदर्शनी यन्त्र का क्या दोष है? दोष वैज्ञानिक यन्त्रों व उपकरणों के प्रयोग करने वालों की सोच में है। इसी सोच को स्वस्थ व सन्तुलित दिशा प्रदान करना धर्म का कार्य है। आवश्यकता धर्म व विज्ञान के पारस्परिक सन्तुलित रिश्ते को स्थापित करने की है।

उपरोक्त कार्य अन्धविश्वासों पर टिकी मान्यताओं व तर्क रहित भावनाओं के द्वारा निष्पादित नहीं किया जा सकता। जगद्गुरु ओम्प्रकाशानन्द के भाषण से ऐसा ही हुआ, इसका खेद है। यदि लंका में विज्ञान था तो अयोध्या में भी कम न था। "उच्चाट्टालध्वजवतीं शतघ्नीशतसंकुलाम्"—वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड (५/११ श्लोक) में वर्णित है कि अयोध्या में ऊंची-ऊंची अट्टालिकाएं थीं जिन पर ध्वज फहरा रहे थे तथा वे बहुत सी तोपों से व्याप्त थीं। अर्थात् अयोध्या के परकोटे पर स्थान-स्थान पर तोपें रखी हुई थी। अयोध्यावासियों का चरित्र व आचरण की उच्चता को समझना हो तो वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड के ६/६–१०, १२, १५ व १८ श्लोकों को देखा जा सकता है। राम की विजय उनकी धर्मपरायण शक्ति के कारण हुई थी जो राम के पास अतुलनीय थी, रावण के पास कम थी। रामेश्वरम् में शिव की मूर्ति स्थापित करना, वहां पर रावण द्वारा सीता जी को राम की पूजा पूर्ण करने के लिए लंका से लेकर आना, रावण द्वारा राम से दक्षिणा मांगना आदि किस्से सुनाकर ऐसे कथित जगद्गुरु वर्तमान में किसी का भी कल्याण नहीं करते। वाल्मीकि रामायण उस काल की रचना है। यही प्रमाण मानी जा सकती है। उक्त घटना वाल्मीकि रामायण में कहां वर्णित है, यह ओम्प्रकाशानन्द जी को सिद्ध करना चाहिए। पर नारी का अपहरण करके उसे अपनी राजधानी में बन्दी बनाकर रखनेवाले रावण को भी मुक्ति मिली, यह माना जाएगा तो सच्चरित्रता का पाठ कौन पढ़ेगा? "परदारेषु मातृवत्" के वैदिक सिद्धान्त को क्यों नहीं मानेगा? श्रीराम को ईश्वर मानकर 'राम-राम रटना धर्म है या राम के वेदानुकूल आदर्शों पर अमल करना धर्म है? विज्ञानसम्मत व तर्क-प्रमाण पर आधारित सत्य की खोजकर्त्ता आधुनिक पीढ़ी इन कथित जगद्गुरुओं से यह पूछती है।

ठेके बंद लेकिन शराब की बिक्री जारी है

सोनीपत—जिला प्रशासन ने विगत १८ तारीख से शराब के ठेके बंद कर रखे हैं, परन्तु शराबियों को मायूस होने की जरूरत नहीं। शराब मिलेगी, क्योंकि प्रतिबन्ध के बावजूद बिक्री धड़ल्ले से जारी है, चाहे ठेकों के चोर दरवाजों से ही सही। इसलिए आगामी २८ तारीख तक ठेके बंद रखने के आदेश बेमायने हैं।

शाम होते ही बंद ठेकों के आस-पास शराबियों का जमघट शुरू हो जाता है। बन्द रखने के आदेशों के दृष्टिगत कई ठेका मालिकों ने शहर में खिड़की सी बनवा ली है और कई अपने पीछे के दरवाजे से शराब बेच रहे हैं। ठेकों के बाहर खड़े एजेन्ट पैसा लेकर एक-एक उपभोक्ता को बारी-बारी से शराब लेकर दे देते हैं।

मजेदार बात तो यह है कि जिन पुलिसकर्मियों पर जिला प्रशासन के आदेश लागू करने की जिम्मेदारी है उन्हीं को इस संवाददाता ने ठेकों से शराब लाते देखा। शायद ठेकों से बिक्री जारी रखकर कानून की धज्जियां उड़वाने का इनाम, शराब के रूप में मिलता है पुलिस कर्मियों को।

ठेकों के मालिक कई दिन दुकानें बंद रहने से होनेवाला घाटा चंद उपभोक्ताओं से पूरा करने में जुटे हैं, इसलिए आम दिनों से महंगी बेची जा रही है और वह भी मिलावटी लगती है। जिला प्रशासन का काम केवल ठेके बंद रखने के आदेश जारी करने से ही पूरा होगया, आदेशों पर अमल शायद इनके बस के बाहर है।

—

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

नव-युवक आर्यसमाज की बागडोर संभालें संसद में आर्यसमाज की दुंदुभि बजे

नई दिल्ली २६ मई को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष बाबू दरबारी लाल ने सभा के वार्षिक अधिवेशन में देशभर से समागत प्रतिनिधियों का स्वागत एवं अभिनन्दन करते हुए कहा कि उनके सतत सहयोग से सभा का कार्य निरन्तर प्रगति कर रहा है और इस प्रकार समस्त विश्व में आर्यसमाजों की स्थापना के साथ-साथ स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों का भी प्रचार प्रसार हो रहा है। संसार चक्र परिवर्तनशील है, समय की गति के साथ न चलनेवाला समाज एवं जाति कभी उन्नति नहीं कर सकती, किन्तु आर्यसमाज सदा ही जागरूक समाज के रूप में कार्य करता रहा है। यही कारण है कि अपने आरम्भ काल से आरम्भ कर आज तक वह निरन्तर प्रगति कर रहा है।

सभा में समुपस्थित देशभर के प्रतिनिधियों ने अपनी-अपनी समस्यायें प्रस्तुत की और परस्पर के विचार विनिमय से उनका समाधान भी प्रस्तुत होता गया। कुछ सदस्यों का कहना था कि हमें युवा वर्ग को आर्यसमाज की ओर आकृष्ट करने के लिये विशेष प्रयत्न करना चाहिये। आर्यसमाज को संस्था के रूप में भारत की संसद में अपने प्रतिनिधियों को भेजना चाहिये। अब तक जो आर्यसमाजी संसद सदस्य के रूप में संसद में रहे हैं, वे आर्यसमाज के अंग के रूप में नहीं अपितु उस राजनीतिक दल के सदस्य के रूप में वहां कार्य करते है जिस दल के प्रत्याशी के रूप में वे निर्वाचित होकर संसद में पहुंचते हैं। अतः वे संसद में पहुंचकर अपने दल का दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं, आर्यसमाज का नहीं।

अधिवेशन में लगभग ३०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सभा मन्त्री ने सभा की गत वर्ष की रिपोर्ट सुनाई, आय व्यय का विवरण पेश किया और आगामी वर्ष के लिये बजट पास हुआ।

प्रतिनिधि सभा ने सर्वसम्मति से प्रो० वेदव्यास जी को सभा का संरक्षक तथा श्री दरबारीलाल जी को अध्यक्ष मनोनीत किया तथा उन्हें कार्यकारिणी के गठन का अधिकार दिया।

आर्य वीरदल रोहतक नगर का ३८वां वार्षिकोत्सव सोत्साह सम्पन्न

आर्य वीर दल रोहतक नगर का ३८वां वार्षिकोत्सव २ जून ९१ से ९ जून तक वैदिक भक्ति साधन आश्रम में सम्पन्न हुआ। इस उत्सव का श्रीगणेश २ जून को छात्र-छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता से प्रारम्भ हुआ।

प्रातःकाल यज्ञ का कार्यक्रम महात्मा सत्यपति जी ने बहुत ही सुन्दर एवं प्रभावशाली ढंग से सम्पन्न कराया।

३ जून से ६ जून तक रात्रि को वेदकथा का आयोजन किया गया जिसमें प्रो० रतनसिंह ने वेद मन्त्रों के आधार पर बहुत ही प्रभावशाली ढंग से वेद मन्त्रों की व्याख्या की तथा पं० वीरपाल तथा पं० श्यामवीर राघव ने प्रेरणा दायक गीतों द्वारा जनता को आनन्दित किया। ७, ८ व ९ जून को वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ जिसमें आर्य वीर सम्मेलन, महिला सम्मेलन, राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन तथा अध्यात्मसम्मेलनों का आयोजन किया गया जिसमें प. जयदेव जतोई वाले एव पं. प्रेमप्रकाश तथा पं० वीरपाल, श्यामवीर राघव के मनोहर भजन हुए तथा प्रो० उत्तमचन्द शरर तथा बहिन आशा देवी के ओजस्वी व्याख्यान हुए। अन्तिम दिन पं० जयदेव जतोई वाले ने आर्य धमार्थ अस्पताल गान्धी नगर जोकि आर्य वीरदल के सहयोग से चल रहा है इस अस्पताल की सहायतार्थ दस हजार रुपये की अपील की। इस अपील पर जनता ने तुरन्त ही इसको पूरा कर दिया तथा ऋषि लगर का भी आयोजन किया गया था जिसकी ऋषि भक्त लोगों ने भूरि-भूरि प्रशसा की। इसके साथ उत्सव सम्पन्न हुआ।

—मेघराज आर्य

पति ने कमेटी को शराब न पीने का आश्वासन दिया

अम्बाला, (निस) जिला अम्बाला में मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा० अमृत सिंगल की अध्यक्षता में गठित विवाह विवाद निपटान सम्मिति द्वारा सिविल अस्पताल अम्बाला छावनी में बुलाई गयी एक सभा में १३ मामलों का निपटान किया गया।

श्रीमती अचला देवी के पति को रजिस्टर्ड नोटिस भेजे जाने के बावजूद वे मीटिंग में नहीं आये। कमेटी द्वारा अचला देवी को उसके पति के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करने व खर्चा दिलवाने हेतु कार्यवाही करने का आश्वासन दिया गया।

विकास कुमार ने कमेटी के सामने पेश होकर अपने विरुद्ध सत्र तथा मुख्य दण्डाधिकारी के न्यायालय में पत्नी द्वारा दायर मुकदमे की पैरवी हेतु कानूनी सहायता उपलब्ध करवाने की मांग की। उसकी पत्नी कमेटी द्वारा रजिस्टर्ड नोटिस देने के बावजूद कमेटी के सामने पेश नहीं हुई।

श्रीमती उर्मिला तथा उसके पति अपने माता-पिता के साथ कमेटी के सामने उपस्थित हुए। उर्मिला के पति व सास-ससुर इस बात पर जोर दे रहे थे कि वह नौकरी छोड़कर आये और साथ रहे जबकि उर्मिला द्वारा ऐसा न करने पर कमेटी के सदस्यों ने उन्हें न्यायालय द्वारा मामला निपटाने को कहा।

कमेटी में श्रीमती बलजीत कौर ने बताया कि उसका पति शराब पीकर उससे मारपीट करता था, जिसके विरुद्ध न्यायालय में केस चल रहा है। पति द्वारा यह आश्वासन देने पर कि वह भविष्य में कभी शराब नही पियेगा, कमेटी के सदस्यों ने एक मास तक उसका चाल-चलन देखने के बाद उन्हें दुबारा आने को कहा।

कमेटी के उप जिला अटार्नी श्री कृष्णलाल दुआ व डाक्टर साधना गुप्ता ने भी भाग लिया। डा० सिंगल के अनुसार कमेटी में काफी लोग रजिस्टर्ड नोटिस देने के बावजूद भी नहीं आते, इसलिए ऐसे लोगों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही के अलावा कोई चारा नही रह जाता।

दैनिक वीर अर्जुन से साभार

शोक समाचार

आर्यसमाज जगाधरी के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री यशपाल चड्डा जोकि श्रीमती शाम देवी धर्मार्थ ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष भी थे, का २२-४-९१ को निधन हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से श्री इन्द्रजित् देव, व मन्त्री आर्यसमाज ने कराया। उनकी आत्मा की शान्ति और श्रद्धांजलि सभा दिनांक ४-५-९१ को सम्पन्न हुई जिसमें लेफ्टीनेंट श्री करनैलसिंह, डा० कमला वर्मा, भूतपूर्व विधायक यमुनानगर श्री राजेश शर्मा ने भी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। आर्यसमाज के सत्सगों, वार्षिक उत्सव में वह स्वयं और उनका सारा परिवार तन, मन और धन से सेवा किया करते थे। उनके निधन से जो आर्यसमाज और ट्रस्ट को हानि हुई है, उसकी क्षति पूर्ति होना असम्भव है।

—केशवदास आर्य

शोक समाचार

श्री मोहब्बतसिंह जी आर्य, आर्य नगर (बाढ़डा) जिला भिवानी निवासी की धर्मपत्नी का स्वर्गवास ११ मई १९९१ को हो गया। आप बड़ी धर्मात्मा महिला थी। श्री मोहबत जी आर्य को आर्यसमाज के कार्य के लिये पूर्ण अवकाश देती थी। गृह का सब कार्य स्वयं देखती थी।

आपका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से भरतसिंह शास्त्री ने कराया। पुनः गृह पर यज्ञ किया। प्रतिदिन गृह पर १० दिन यज्ञ होता रहेगा तथा श्रद्धाञ्जलि अर्पित की जावेगी।

प्रभु से प्रार्थना है कि दिवङ्गत आत्मा को शान्ति सद्‌गति प्रदान करे तथा परिवार को वियोग दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

—भरतसिंह शास्त्री

वेद में तीन सभाओं का वर्णन

(पं० धर्मदेव "मनीषी" वेदतीर्थ गुरुकुल कालवा

सत्र जगत् का राजा एक परमेश्वर ही है और सब संसार उसकी प्रजा है। इसमें यह यजुर्वेद के अठारहवें अध्याय के २९वें मन्त्र के वचन का प्रमाण है—"वयं प्रजापतेः प्रजा अभूम" अर्थात् सब मनुष्य लोगों को निश्चय करके जानना चाहिये कि हम लोग परमेश्वर की प्रजा हैं, और वही एक हमारा राजा है।

वेद में तीन सभाओं का वर्णन—

त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परिविश्वानि भूषथः सदांसि।
अपश्यमत्र मनसा जगन्वान् व्रते गन्धर्वां अपि वायुकेशान्॥
(ऋग्वेद म० ३। अ० २। व० २४। मं० १)

(त्रीणि राजाना) तीन प्रकार की सभा ही को राजा मानना चाहिये एक मनुष्य को कभी नहीं। वे तीनों ये हैं—प्रथम राज्य प्रबन्ध के लिये एक 'आर्यराज सभा' कि जिससे विशेष करके सब राजकार्य की ही सिद्ध किये जावें, दूसरी 'आर्य विद्यासभा' कि जिससे सब प्रकार की विद्याओं का प्रचार होता जावे, तीसरी 'आर्य धर्म सभा' कि जिससे धर्म का प्रचार और अधर्म की हानि होती रहे। इन तीन सभाओं से (विदथे) अर्थात् युद्ध में (पुरूणि परिविश्वानि भूषथः) सब शत्रुओं को जीत के नाना प्रकार के सुखों से विश्व को परिपूर्ण करना चाहिये।

क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि।
मा त्वा हिँ सीन्मा मा हिँ सीः॥ (यजु० २०। म० १)

(क्षत्रस्य योनिरसि) हे राज्य के देनेवाले परमेश्वर! आप ही राज्य सुख के परम कारण हैं। (क्षत्रस्य नाभिरसि) आप ही राज्य के जीवन हेतु हैं तथा क्षत्रियवर्ण के राज्य का कारण और जीवन सभा ही हैं। (मा त्वा हिँ सीन्मा मा हिँ सीः) हे जगदीश्वर! सब प्रजा आपको छोड़के किसी दूसरे को अपना राजा कभी न माने, और आप भी हम लोगों को कभी मत छोड़िये। किन्तु आप और हम लोग परस्पर सदा अनुकूल वर्तें॥

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना॥
(यजु० २०।२५)

(यत्र ब्रह्म च०) जिस देश में उत्तम विद्वान् ब्राह्मण, विद्या सभा विद्वान् शूरवीर क्षत्रिय लोग ये सब मिलके राजकार्यों को सिद्ध करते हैं, वही धर्म और शुभ क्रियाओं से संयुक्त होके सुख को प्राप्त होता है। (यत्र देवाः सहाग्निना) जिस देश में परमेश्वर की आज्ञा पालन और अग्निहोत्रादि सत्क्रियाओं से वर्तमान विद्वान् होते हैं, वही देश सब उपद्रवों से रहित होके अखण्ड राज को नित्य भोगता है॥

तं सभा च समितिश्च सेना च॥
(अथर्व० का० १५। अनु० २। सू० ९। म० २)

(तं सभा च) प्रजा तथा सब सभासद सब राजाओं के राजा परमेश्वर को जानके, सब सभाओं में सभाध्यक्ष का अभिषेक करें। (समितिश्च) सब मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर और सर्वोपकारक धर्म का ही आश्रय करके युद्ध करें। तथा (सेना च) जो सेना, सेनापति और सभाध्यक्ष हैं, वे सभा के आश्रय से विचारपूर्वक उत्तम सेना को बनाके सदैव प्रजापालन और युद्ध करें॥

सभ्य सभां मे पाहि ये च सभ्याः सभासदः।
त्वयेद्गाः पुरुहूत विश्वमायुर्व्यश्नवम्॥
(अथर्व० का० १९। अनु० ७। सू० ५५। मं० ६)

(सभ्य सभां मे पाहि) हे सभा के योग्य परमेश्वर! आप हम लोगों की राजसभा की रक्षा कीजिये। (ये च सभ्याः सभासदः) हम लोग जो सभा के सभासद हैं, सो आपकी कृपा से सभ्यतायुक्त होकर अच्छी प्रकार से सत्य न्याय की रक्षा करें। (त्वयेद्गाः पुरुहूत) हे सबके उपास्यदेव! (विश्वमायुर्व्यश्नवम्) हम लोग आप ही के सहाय से आपकी आज्ञा पालन करते रहें, जिससे सम्पूर्ण आयु को सुख से भोगें।

इसी प्रकार सभा करके राज्य का प्रबन्ध आर्यों में श्रीमन्महाराज युधिष्ठिर पर्यन्त चला आया है कि जिसकी साक्षी महाभारत के राजधर्म आदि ग्रन्थ तथा मनुस्मृत्यादि धर्मशास्त्रों में यथावत् लिखी है। इस प्रकार महर्षि दयानन्द जी महाराज ने अपने ग्रन्थों में लिखा है।

बालू का महल

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली)

बालू का यह महल है, जिसमें तेरा निवास।
बैठा मस्त निशंक तू कर पूरण विश्वास॥
कर पूरण विश्वास, उठे आंधी अलबेली।
पलक मारते काया की, ढह जाय हवेली॥
जिस दिन फेरा लगे, काल काले बालूका।
हो जायेगा नष्ट महल, पल में बालूका॥

ढाई पल

ढाई पल की जिन्दगी, तुझको हुई प्राप्त।
धुना धुनी में कर दिया, जीवन सकल समाप्त॥
जीवन सकल समाप्त, हुई पूरण आशा।
क्षण में होगा खत्म, ज्यों पानी बीच बताशा॥
सौ वर्षों की सीमा, खबर नहीं है कल की।
बिजली की सी चमक, जिन्दगी ढाई पल की॥

पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना को पूरे समय के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। निवास सुविधा के साथ वेतन योग्यता अनुसार। संगीतज्ञ या हारमोनियम जानने वाले को प्राथमिकता दी जायेगी। सम्पर्क करें या स्वयं मिलें।

महेन्द्र प्रताप आर्य
महामन्त्री

(पृष्ठ २ का शेष)

वेद की अलंकार योजना ही है, इसे उपहास की कोटि में लाना अन्याय है।

अन्तिम बात, बालोजी को इस बात का बड़ा गिला है कि वेदों जैसी स्फूर्त, जीवित और भव्य रचनाओं को ईश्वरीयवाणी क्यों कहा जाता है? गनीमत है कि उन्होंने वैदिक सूक्तों को स्फूर्त, जीवित और भव्य तो कहा और जहां तक उन्हें ईश्वरीयवाणी कहने का सवाल है, इसे समझने के लिये वैदिक चिन्तन धारा के सातत्य, आर्य धर्म में स्वीकार शब्द प्रमाणवाद वेदों के स्वतः प्रमाणत्व और अन्य ग्रन्थों के परतः प्रमाणत्व जैसे शास्त्रीय सिद्धान्तों को समझना होगा। हमारा बालीजी से यह आग्रह तो कदापि नहीं है कि वे भारत के शास्त्रीय विचारों की इस सुविचारित परम्परा को यथावत् मान ही लें, किन्तु जब वे वेदों को धर्म ग्रन्थ कहने पर कोई आपत्ति प्रकट करें अथवा सैमेटिक मतों में मान्य धर्म ग्रन्थों की रूढ़ि के अनुकरण पर ही वेदों के प्रामाण्य के सिद्धान्त को आर्यसमाज द्वारा गढ़ा हुआ मानें तो कम से कम एतद्विषयक प्राचीन मतों का ऊहापोह अवश्य करें और यह सस्ता फैसला देकर आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द के प्रति अन्याय न करें कि उन्होंने इस्लाम या ईसाइयत की नकल पर वेदों को ईश्वरीय ज्ञान या धर्म ग्रन्थ घोषित किया। स्वामी दयानन्द का एतद्विषयक समस्त लेखन और चिन्तन भारत के शास्त्रीय वैचारिक पक्ष का ही आधार लेकर चलता है। कोई उससे सहमत हो या न हो यह भिन्न बात है।

व्योम ने है गीत गाया

अब धरा प गूंजता है,
ओम का जय नाद।
दनुज तत्वों का मिटेगा,
धरणि पर उन्माद।
जयति वैदिक धर्म, जय,
जय हो रहा ऋषिराज।
ऋषिराज दयानन्द के सुनहले'
स्वप्न सजना आज।
दिव्य करने जन मनों को,
हैं खिलाती रश्मियां।
सत्यकर्मों की बनाती,
स्वर्ण सी शुचि अस्मियां।
ऋषि चरण पथ पर चलो,
आना तुम्हें है जागरण।
हट रहा भयभीत होकर,
दनुजता का आवरण।
तुम जगो हे आर्य पुत्रो !
भरतभू उद्धार होना।
विकल हैं जो, जन दुःखी हैं,
उनका तुम्हें उपकार करना।
जल रही है आज धरती,
द्वेष-ईर्ष्या की अनल में।
भुखमरी बढ़ रही बड़वाग्नि जल में
बढ़ रही बड़वाग्नि जल में।
जल रहा मानव हृदय है,
जल रहा आकाश जल-थल।
बढ़ रहा उन्माद कुत्सित,
बढ़ रहा अभिशाप प्रतिपल।
भोगवादी फैलती है—
दुर्विचारों की कुसंस्कृति।
घेरती है मनुज उर को,
आज दानवता प्रवृत्ति।
त्रस्त है जनगण यहां का,
त्रस्त है कण-कण यहां।
त्रस्त हैं सब व्यवस्थाएं,
त्रस्त है प्रतिकण यहां।
प्रति चरण पर कर रहा,
संत्रस्त हमको यह कुशासन।
देखकर सब दुर्व्यवस्था,
अब यही लगता—न शासन।
सब भटकते हैं स्वपथ पर,
पा न पाते मार्ग हैं।
दिग्भ्रमित से, घोर तम में,
ढूंढते सन्मार्ग हैं।
यदि हमें सत्पथ अपेक्षित,
वेद-पथ पर ही चलें।
दुर्विकारों को स्वमन से,
दूर कर, उसको दलें।
रो रहा मनुजत्व देखो।
हो रहा नैतिक पतन।
सत्व भावों का हुआ है,
भूमि पर अतिशय हनन।
पर, तुम्हें उठना पड़ेगा,
यह अचल अनिवार्य है।
सत्य पथ के शुभ गुणों को,
देख लो ! अवधार्य है।
ऋषि दयानन्द ने सुपथ जो—
अवनि-जन को है दिखाया।
हम बढ़ उस पर अभय हो—
व्योम ने है गीत गाया।

—राधेश्याम 'आर्य' वाचस्पति

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ

कोई मासिक शुल्क नहीं

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर, जिला जालन्धर पंजाब में नए छात्रों का प्रवेश १५ जून—९१ से ३० जून-९१ तक होगा। आधुनिक विषयों के साथ-साथ संस्कृत तथा धर्मशिक्षा की पढ़ाई समुचित व्यवस्था। नि.शुल्क शिक्षा, हिन्दी माध्यम, योग्य परिश्रमी शिक्षक, स्वच्छ वातावरण। सात्विक भोजन, दूध तथा आवास आदि की सर्वथा निःशुल्क सुविधा। छात्रों की प्रवेश योग्यता कम से कम कक्षा ६ उत्तीर्ण हो। प्रवेश हेतु शीघ्र मिले अथवा पत्राचार करें।

आचार्य—
श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल,
करतारपुर—१४४८०१ (जिला जालधर)

वेद प्रचार

दिनांक ५-६-९१ को ढाणी (आर्यनिवास नलवा) में स्वामी परमानन्द जी छोटे बाजे वाले द्वारा भजनों के माध्यम से वेद प्रचार किया गया। प्रातः हवन किया गया। प्रचार में ढाणी के नर-नारियों के अतिरिक्त स्कूली बच्चों ने भाग लिया। क्रांतिकारी जी ने स्वामी जी का धन्यवाद किया।

—राजवीर आर्य,
ढाणी निवासी

शोक सभा

आर्यसमाज सान्ताक्रुज की यह महती शोकसभा भारत के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री एवं कांग्रेस अध्यक्ष स्वर्गीय श्री राजीव गांधी जी की जघन्य हत्या पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। इस अवसर पर आर्यसमाज सान्ताक्रुज ने अपने साप्ताहिक सत्संग के समस्त कार्यक्रम स्थगित कर स्वर्गीय श्री राजीव गांधी जी को श्रद्धांजलि दी। आर्य-समाज सान्ताक्रुज के उपप्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य, महामन्त्री श्री नरेन्द्र कुमार पटेल ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा—श्री राजीव गांधी भारत देश के ही नहीं अपितु विश्व के माननीय नेताओं में से एक थे। देश को उनसे बड़ी आशाएं थी। उनके नेतृत्व में भारत की जो चहुंमुखी उन्नति हुई वह सदा स्मरणीय रहेगी। उनके देहावसान के समाचार से सारा देश स्तब्ध रह गया, ऐसा लगा जैसे सब कुछ रुक गया है। उनका अभाव सदा अनुभव किया जाएगा।

शोकसभा में इस हत्या की कड़े शब्दों में निन्दा की गई और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि उनकी आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करें। सभा में प्रसिद्ध गायिका श्रीमती शान्ता मलिक द्वारा भक्ति संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

—नरेन्द्र कुमार पटेल, महामन्त्री

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में प्रवेश आरम्भ

निम्नांकित पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु, निर्धारित फार्म पर प्रार्थना-पत्र आमन्त्रित किये जाते हैं—

१- विद्याविनोद (इण्टर), २- अलंकार/वेदालंकार/विद्यालंकार (बी० ए०), ३- बी० एस० सी० (गणित), बायो तथा कम्प्यूटर ग्रुप, ४- एम०ए० (वेद, संस्कृत, दर्शन, हिन्दी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान, प्रा०भा० इति०, संस्कृति एवं पुरातत्व, ५- एम०ए०/एम०एस०सी० (गणित, माइक्रोबायोलोजी, मनोविज्ञान), ६- पी०एच०डी (वेद, संस्कृत, दर्शन, हिन्दी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान, प्रा०भा० इति०, संस्कृति एवं पुरातत्व, गणित, वनस्पति तथा जीवविज्ञान), ७- स्नातकोत्तर डिप्लोमा एक वर्षीय (कमशियल मेथडस आफ केमिकल अनालाइसिस तथा कम्प्यूटर साइंस एण्ड एप्लीकेशन्स), ८- योग डिप्लोमा (एक वर्षीय), ९- वैदिक यज्ञ विधान (एक वर्षीय डिप्लोमा), १०- संस्कृत प्रवेश तथा संस्कृत "प्रवीण" एक वर्षीय डिप्लोमा, ११- अंग्रेजी दक्षता प्रमाण-पत्र ३ मास।

नोट :—इस सत्र से निम्नांकित पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ किये जाने की सम्भावना है—

एम०एस०सी० (रसायन, भौतिक), हिन्दी पत्रकारिता डिप्लोमा (एक वर्षीय)। कन्या महाविद्यालय, देहरादून (द्वितीय परिसर) में चित्रकला, संगीत, हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत में स्नातकोत्तर कक्षायें।

सामान्य सूचना

१- अलंकार पाठ्यक्रम में प्रवेशार्थी छात्राएं प्रिंसिपल, कन्या गुरुकुल महाविद्यालय ६० राजपुर रोड देहरादून (द्वितीय परिसर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय) से सम्पर्क करें।

२- अनुसूचित जाति/जनजाति के छात्रों के लिये भारत सरकार के नियमानुसार आरक्षण।

३- अध्ययन व्यवस्था, अध्ययनपयोगी सुविधाएं, छात्रवृत्तियां प्रवेश प्रक्रिया, संक्षिप्त पाठ्यक्रम तथा शुल्क आदि की जानकारी के लिये विवरण पत्रिका (प्रास्पेक्टस) तथा आवेदन-पत्र १०/- रु० नकद मूल्य पर प्राचार्य, विज्ञान-महाविद्यालय (विज्ञान विषयों के लिए) तथा आचार्य एवं उपकुलपति वेद/मानविकी महाविद्यालय (कला विषयों के लिये) के कार्यालय से उपलब्ध होंगे। डाक से मंगवाने पर कुलसचिव गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पक्ष में देय १५/- रु० का बैंक ड्राफ्ट भेजें।

४- महिलाओं के लिये नियमित प्रवेश की सुविधा नहीं है। व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में महिलायें एम०ए० (मनोविज्ञान को छोड़कर सभी विषय) एम० एस० सी० (गणित) तथा पी०एच०डी० (मनोविज्ञान, वनस्पति तथा जीवविज्ञान के अतिरिक्त सभी विषयों) के लिए आवेदन-पत्र दे सकती हैं।

५- जो छात्र बी०ए०/बी०एस०सी० अन्तिम वर्ष की परीक्षा दे रहे हैं वे भी आवेदन-पत्र भेज सकते हैं। ऐसे छात्रों को नियमित प्रवेश उनके परीक्षा परिणाम आने पर दिया जायेगा।

आवेदन प्राप्त होने की अन्तिम तिथि—२० जुलाई १९९१
पी०एच०डी०—१ जुलाई से ३० सितम्बर तक
व्यक्तिगत परीक्षार्थी—१ सितम्बर से ३१ अक्तूबर

—डा० वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलसचिव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में

भारत सरकार द्वारा रजि नं० २३२०/७३   रजि नं० P/RTK६१   ७२२   मुद्रितसवन् १,९६ ०८,५३,०९८

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८   अंक २६   २१ जून, १९९१   वार्षिक शुल्क ३०)   (आजीवन शुल्क ३०१)   विदेश में ८ पौंड   एक प्रति ७५ पैसे

सत्यार्थप्रकाश में ईश्वर के सौ नाम

(श्रीवास्तव जी के लेख का उत्तर)

आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली की मासिक पत्रिका दयानन्द सन्देश में 'महर्षि का ईश्वर-दर्शन' नामक मेरा लेख प्रकाशित हुआ था। जिसमें सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समूल्लास में महर्षि दयानन्द द्वारा व्याख्यात ईश्वर के सौ नामों का भी उल्लेख किया गया था। मेरे उसी लेख को आधार मानकर माननीय श्री बी. के. श्रीवास्तव सम्भागीय लेखाधिकारी, २२ स्टेट बैंक कालोनी, सुन्दरनगर, महादेवघाट रोड रायपुर (म०प्र०) का लेख बहालगढ़ (सोनीपत) से प्रकाशित वेद-वाणी तथा ४५५ खारीबावली दिल्ली से प्रकाशित दयानन्द-सन्देश नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। श्री वास्तव जी ने ईश्वर के सौ नामों को पूरा करने का प्रयास किया है, तदर्थ उनका धन्यवाद है, परन्तु उनके इस लेख से नई भ्रान्ति उत्पन्न होगई है कि महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण में ईश्वर के सौ नाम लिखे थे और प्रचलित द्वितीय संस्करण में कुछ नाम बढ़ा दिए गए हैं। किन्तु "ये सौ नाम परमेश्वर के लिखे हैं" यह प्रथम संस्करण का मूल वाक्य बिना किसी परिवर्तन के उसी प्रकार पूर्व की भांति छपता चला आ रहा है।

इस कथन का अर्थ यह हुआ कि द्वितीय संस्करण में उपलब्ध "ये सौ नाम परमेश्वर के लिखे हैं" इस वाक्यांश का संशोधन किया जाए और इसके स्थान पर श्री वास्तव जी के अनुसार जितने नाम बनते हैं, उनकी ठीक संख्या लिखी जाए। ऐसा करना कदापि उचित नहीं क्योंकि इससे महर्षि के ग्रन्थों में संशोधन करने की दुष्प्रवृत्ति चालू हो जाएगी।

जहां ऋषि-ग्रन्थों में सन्देह हो वहां ऋषियों ने एक ही मार्ग बतलाया है कि "व्याख्यानतो विशेष-प्रतिपत्तिर्नहि सन्देहादलक्षणम्" अर्थात् ऋषिग्रन्थ के सन्दिग्ध स्थल की व्याख्यान से विशेष जानकारी प्राप्त करनी चाहिए, सन्देह करके उसे अलक्षण अर्थात् अशुद्ध नहीं मानना चाहिए, इसी मार्ग पर चलते हुए मैंने अपने पूर्व प्रकाशित लेख में ईश्वर के सौ नामों का विवरण प्रस्तुत किया था जिससे आर्यजगत् में चला आ रहा पुराना सन्देह निरस्त हो जाए। पाठकजनों के लाभार्थ सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में लिखे ईश्वर के सौ नामों की सूची यहां दी जा रही है।

१. ओम् २. खम् ३. ब्रह्म ४. अग्नि ५. मनु ६. प्रजापति ७. इन्द्र ८. प्राण ९. ब्रह्मा १० विष्णु ११. रुद्र १२ शिव १३. अक्षर १४. स्वराट् १५. कालाग्नि १६. दिव्य १७. सुपर्ण १८. गरुत्मान् १९. मातरिश्वा २०. भूमि २१. विराट् २२. विश्व २३ हिरण्यगर्भ २४. वायु २५. तैजस २६. ईश्वर २७. आदित्य २८. प्राज्ञ २९. मित्र ३०. वरुण ३१. अर्यमा ३२. बृहस्पति ३३. उरुक्रम ३४. सूर्य ३५. आत्मा ३६. परमात्मा ३७. परमेश्वर ३८. सविता ३९. देव ४०. कुबेर ४१. पृथिवी ४२. जल ४३. आकाश ४४. अन्न ४५ वसु ४६. नारायण ४७ चन्द्र ४८. मंगल ४९. बुध ५०. शुक्र ५१. शनिश्चर ५२. राहु ५३. केतु ५४. यज्ञ ५५. होता ५६. बन्धु ५७. पिता ५८. पितामह ५९. प्रपितामह ६०. माता ६१ आचार्य ६२. गुरु. ६३. अज ६४. सत्य ६५. ज्ञान ६६. अनन्त ६७. अनादि ६८. सच्चिदानन्द ६९. नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभाव, ७०. निराकार ७१. निरञ्जन ७२. गणेश ७३. गणपति ७४. विश्वेश्वर ७५. कूटस्थ ७६. देवी ७७. शक्ति ७८. श्री ७९. लक्ष्मी ८०. सरस्वती ८१. सर्वशक्तिमान् ८२. ८३. दयालु ८४. अद्वैत ८५. निर्गुण ८६. सगुण ८७. अन्तर्यामी ८८. धर्मराज ८९. यम ९०. भगवान् ९१. पुरुष ९२. विश्वम्भर ९३. काल ९४. शेष ९५. आप्त ९६. शंकर ९७. महादेव ९८. प्रिय ९९. स्वयम्भू १०० कवि।

सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय संस्करण में ईश्वर के संख्या में १२० नाम उपलब्ध होते हैं निम्नलिखित १२ नामों की पुनरावृत्ति हुई है— ब्रह्म (२) अग्नि (१) मनु (१) इन्द्र (२) प्राण (१) ब्रह्मा (१) विष्णु (१) रुद्र (१) शिव (१) बृहस्पति (१) अतः १२०-१२ अर्थात् १०८ नाम शेष रहते हैं। विवादास्पद ८ नामों पर यहां अपना मत प्रकट किया जाता है—

(१) प्राज्ञ (प्रज्ञ)—इस नाम की व्याख्या में महर्षि लिखते हैं कि "ज्ञा अवबोधने" प्र पूर्वक इस धातु से प्रज्ञ और इससे तद्धित प्रत्यय करने से प्राज्ञ शब्द सिद्ध होता है यः प्रकृष्टतया चराचरस्य जगतो व्यवहारं जानाति सः प्रज्ञः, प्रज्ञ एव प्राज्ञः। जो निर्भ्रान्त ज्ञानयुक्त चराचर जगत् के व्यवहार को जानता है, इससे ईश्वर का नाम प्राज्ञ है (स० प्र० प्रथम समु०) महर्षि की इस व्याख्या से स्पष्ट है कि वे ईश्वर के 'प्राज्ञ' नाम को ही सिद्ध कर रहे हैं। 'प्रज्ञ' शब्द तो प्राज्ञ नाम की सिद्धि में लिखा गया है। अतः 'प्राज्ञ' नाम का ही ग्रहण करना चाहिए। प्रज्ञ नहीं (१०८-१=१०७)।

(२) सच्चिदान्नदस्वरूप—सत्, चित् और आनन्द शब्दों की व्याख्या करके महर्षि ने स्वयं लिख दिया है कि "इन तीनों शब्दों के विशेषण होने से परमेश्वर को सच्चिदानन्दस्वरूप कहते हैं (स० प्र० प्रथम समु०) अतः यहां तीन नामों का ग्रहण न करके एक सच्चिदानन्द-स्वरूप नाम का ही ग्रहण करना चाहिए। महर्षि ने इस नाम का आर्यसमाज के द्वितीय नियम में तथा अन्यत्र भी अनेक बार प्रयोग किया है। (१०७=२=१०५)।

(३) नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभाव—नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त इन चार शब्दों की व्याख्या करके महर्षि ने स्वयं लिखा है अत एव नित्यशुद्ध-बुद्धमुक्तस्वभावो जगदीश्वरः। इसी कारए से परमेश्वर का स्वभाव नित्य शुद्ध बुध मुक्त है (स० प्र० प्रथम समु०) महर्षि ने अपने आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों में इस नाम का अनेक बार प्रयोग किया है। अतः यहां चार नामों के स्थान पर एक नाम का ही ग्रहए करना चाहिए। (१०५-३=१०२)

(शेष पृष्ठ ६ पर)

'अपने संकल्प को पूरा करने में मौत से भी न डरो'

(अमित प्रताप नारायणसिंह, ग्राम—हाटा, डा० नदौली जनपद, देवरिया, उ०प्र०)

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवेति।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥

हे प्रभो! आपकी कृपा से (यत्)—जो यह मेरा मन (जाग्रतः) जाग्रत अवस्था में (दूरं) दूर दूर तक (उदैति) जाता है। (दैवं)—दिव्य गुण युक्त रहता है। (तद्) वह मेरा मन (सुप्तस्य—) सोते हुए का (दूरंगमं) दूर दूर जानेवाले के समान व्यवहार करता है जो ज्योतियों का (एकम् ज्योतिः) एकमात्र ज्योति है। (तन्मे मनः) वह मेरा मन (शिवसंकल्पमस्तु) कल्याणमय संकल्पोंवाला होवे।

आपका मन संकल्प करता है और यह मन बड़ा ही चञ्चल है। इसकी चञ्चलता का कोई ठिकाना नहीं। यह वायु से भी अधिक गतिशील है। यह क्षणभर में अरबों खरबों मील की यात्रा करके लौट आता है। कभी यह करोड़ों मील दूर तारों और ग्रहों में पहुंच जाता है तो कभी राजदरबारों में। कभी यह दलितों दीन दुखियों की झोपड़ियों में पहुंचकर उनके दीनावस्था के चित्र बनाने लगता है तो यह कभी पर्वतों की गगनचुम्बी चोटियों को चूमता है। कभी यह समुद्र की उत्ताल तरंगों से अठखेलियां करने लगता है तो कभी वेद की गहन ऋचाओं के चिन्तन में लग जाता है। इसकी चञ्चलता देखकर आश्चर्य होता है। बिजली की चंचलता इसके सामने कुछ नहीं है। इसको समझना बड़ा कठिन है।

श्रीमद्भगवद्गीता में अर्जुन ने भी कृष्णभगवान् से कहा कि मन की गति अति चञ्चल है—

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्॥६।३४॥

हे कृष्ण! मन बड़ा ही चञ्चल प्रमथन शील, जिद्दी और बलवान् है। उसका निग्रह करना मैं वायु की तरह अति कठिन मानता हूं। चञ्चलता के साथ-साथ यह प्रमाथी भी है। अर्थात् यह साधक को अपनी स्थिति से विचलित कर देता है। यह बड़ा जिद्दी और बलवान् भी है। इसीलिए मन को 'बलवत्' कहा गया है। इसका तात्पर्य यह है कि मन बड़ा बलवान् है जो कि साधक को जबरदस्ती से विषयों में ले जाता है। शास्त्रों ने तो यहां तक कह दिया कि मन ही मनुष्यों के मोक्ष और बन्धन का कारण है—"मन एवं मनुष्याणां कारण बन्धमोक्षयोः" इस चञ्चल, प्रमाथी दृढ़ और बलवान् मन का निग्रह करना बड़ा कठिन है। जैसे आकाश में विचरण करने वाली वायु को कोई मुट्ठी में नहीं पकड़ सकता वैसे ही इस मन को कोई वश में नहीं कर सकता अतः अर्जुन ने कहा, कि मैं इसका निग्रह करना महान् दुष्कर मानता हूं। परन्तु भगवान् कृष्ण ने गीता के अगले श्लोक में अर्जुन को बताया कि अभ्यास और वैराग्य के द्वारा इसका निग्रह किया जा सकता है—

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते॥

अभ्यास का अर्थ है—अपना जो लक्ष्य, ध्येय है उसमें मनोवृत्ति को लगाया जाय और यदि दूसरी वृत्ति आजाय या दूसरा कुछ भी चिन्तन आजाय उसकी उपेक्षा की जाय। उससे उदासीन हो जाया जाये। अभ्यास का दूसरा अर्थ है—जहां-जहां मन चला जाय, वहीं वहां ही अपने लक्ष्य को, इष्ट को देखें। अभ्यास को सहायता हेतु वैराग्य की आवश्यकता है। इससे संसार से राग हटेगा और मन में संसार का रागपूर्वक चिन्तन नहीं होगा। महर्षि वशिष्ठ जी ने कहा है—

'मन एव समर्थः वो मनसो दृढ़निग्रहं।' मन को वश में करने में मन ही समर्थ है। योग दर्शन में कहा गया है, 'वितर्कबाधने प्रतिपक्ष-भावनं' वितर्क जब आक्रमण करे तब प्रतिपक्ष की भावना करनी चाहिए। अर्थात् जब हिंसा चोरी, झूठ, विषयासक्ति की भावना आक्रमण करें तब सद्गुणों का चिन्तन करना चाहिए। जब हमारे ऊपर काम की आंधी उठे तब उस आंधी में भी दृढ़ संकल्प द्वारा विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

भारतीय दर्शन में मन की विशद व्याख्या की गयी है। पाश्चात्य दर्शन में ऐसी व्याख्या नहीं मिलती है। योग दर्शन में मन की परिभाषा करते हुए ऋषि ने कहा है—

'युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसो लिङ्गम्'

एक साथ दो ज्ञानों का उत्पन्न न होना मन का चिह्न है। अर्थात् मन में एक देश और काल में एक ही प्रकार के ज्ञान उत्पन्न होते हैं जब मन में कामवासना प्रबल होती है तो मात्र वही भावना प्रबल रहती है। दूसरी नहीं। चरक संहिता में शरीर स्थान प्रकरण में मन का लक्षण लिखते हुए संहिताकार कहता है—

"लक्षणं मनसो ज्ञानस्याभावो भाव एव वा"

ज्ञान का भाव और ज्ञान का अभाव मन का लक्षण है। अर्थात् दो ज्ञानों का एक समय में उत्पन्न न होना मन का लक्षण है। यह मन नाना प्रकार के विचारों से युक्त रहता है। इसलिए इस मन्त्र में कहा है कि मन जागते हुए का दूर दूर तक जाता है उसी तरह यह का भी दूर दूर तक जाता है। हम सोते हुए अनेक प्रकार के स्वप्न देखते हैं। जब मैं पढ़ता था, होस्टल में था तो मेरा एक मित्र सोते हुए पेड़ पर चढ़ जाता था कुएं से पानी भर लाता था और अपने होस्टल के चारों ओर चक्कर काट आता था। इतना ही नहीं सोते हुए मनुष्य यह समझकर कि वह नाली पर बैठा है बिस्तर में पेशाब कर देता है।

यह मन एक है और असीमित शक्ति वाला है। जब हम इस मन को शिवसंकल्पोंवाला बना लेते हैं तो दुनिया में इसकी विजय होती है और कोई चीज असम्भव नहीं रह जाती है। कहा गया है—

क्रियासिद्धिः सत्वे भवति महतां नोपकरणे'

महान् व्यक्तियों की सफलता उनके दृढ़ संकल्पों द्वारा होती है। आपने चाणक्य का नाम सुना है वे बड़े दृढ़निश्चयी थे। एक दिन मगध साम्राज्य के निष्कासित महामन्त्री ने चाणक्य को बड़े परिश्रम से कुश नष्ट करते हुए देखा क्योंकि ये उनके पैरों में चुभ गये थे। शकटार ने उन्हें नष्ट करने में चाणक्य की सहायता की और सोचा कि यह व्यक्ति नन्द साम्राज्य को नष्ट करने में बड़ा उपयोगी सिद्ध हो सकता है। शकटार उन्हें अपने साथ लेगया सो योगवश नन्द साम्राज्य में एक विशाल यज्ञ का आयोजन था। शकटार ने चाणक्य को पुरोहित के आसन पर बिठा दिया और स्वयं किनारे हो लिया। जब सम्राट् अपने महल से बाहर निकला तो एक काले कुरूप व्यक्ति को मुख्य पुरोहित के आसन पर बैठा देखकर उनके क्रोध की सीमा न रही। वह क्रोध भरे स्वर में गरजा 'दुष्ट! इस आसन पर कैसे बैठ गया। भागो यहां से।" अब क्या था, शकटार का प्रयोजन सिद्ध हो गया। चाणक्य ने तिरछे सम्राट् को और देखा, चोटी खोली और जल छिड़का तथा चिल्लाया, सम्राट् तुमने मुझे बहुत अपमानित किया मैं इस अपमान का बदला अवश्य लूंगा। भरी सभा में मैं यह प्रतिज्ञा करता हूं कि जब तक मैं नन्द साम्राज्य का अन्त नहीं कर दूंगा तब तक अपनी चोटी नहीं बांधूंगा।' अब चाणक्य गांव-गांव जंगल-जंगल घाटी-घाटी, पर्वत-पर्वत अपने लक्ष्य की पूर्ति हेतु घूमता रहा। उसे भूख प्यास नहीं सताती थी। अब तो वह दीवाना हो गया। अब उसे नींद और आराम कहां। अन्त में उसने नन्द वंश का नाश करके ही दम लिया।

नेपोलियन को अपनी सेना के साथ आगे जाना था। सामने, आल्पस पर्वत, अपनी दुर्गम घाटियों, ऊंचे विकट शिखरों के साथ खड़ा था। नेपोलियन ने सेना को आगे बढ़ने का आदेश दिया। मुख्य सेनापति ने कहा कि आल्पस को पार करना असम्भव है। नेपोलियन ने मुस्कुराते हुए कहा, 'असम्भव शब्द मेरे कोष में नहीं है।' कहते हैं सेना के बढ़ते ही नेपोलियन के आगे आल्पस पर्वत हाथ जोड़े खड़ा हो गया। और उसने गिड़गिड़ाते हुए क्षमा मांगी। सेनाएं उस पार गयीं और विजय करती हुई बढ़ गयी। दृढ़ निश्चयी व्यक्ति को लक्ष्य बेध करने से कोई शक्ति रोक नहीं सकती है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

उद्योग एवं व्यापार में हिन्दी का महत्त्व

लेखक : श्री जगन्नाथ संयोजक राजभाषा कार्य,
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्,
सरोजनी नगर, नई दिल्ली-११००२३

अब जबकि हिन्दी भाषी राज्यों और केन्द्रीय सरकार के काम-काज में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाए जाने के लिए गम्भीर प्रयत्न किए जा रहे हैं, यह आवश्यक है कि साथ ही साथ निजी क्षेत्र के उद्योगपतियों और व्यापारियों द्वारा भी हिन्दी का प्रयोग बढाया जाय। इस दिशा में राजधानी दिल्ली के गांधी नगर के सिले सिलाए वस्त्र विक्रेताओं के संघ ने सदस्यों को एक परिपत्र भेजकर प्रेरित किया है कि वे अपने कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करे। यह संघ भारत में थोक वस्त्र निर्माताओं और विक्रेताओं का कदाचित् सबसे बड़ा संघ है। संघ ने सदस्यों से कहा है कि—

"......प्रत्येक राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक अपनी राष्ट्रभाषा का प्रयोग कर अपने को गौरवान्वित अनुभव करता है। अपनी मातृभाषा की अवमानना एवं अपमान किसी भी अवस्था मे सहन नही कर सकता और अपने राष्ट्र के अस्तित्व के लिए निरन्तर संघर्षरत रहता है।

अंग्रेजी के अवांछित प्रयोग का अर्थ है अंग्रेजियत के संस्कारों को अंगीकार करना। दूसरे शब्दों मे भारतीयता का उपहास और अपने कर्मों के द्वारा अपनी राष्ट्रभाषा और संस्कृति को नष्ट करना।

आप आज से ही अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करना प्रारम्भ कर दें। अपने व्यवसाय के नाम-पट्ट और अभिलेख, पत्र व्यवहार, निमन्त्रण पत्र, शुभकामना संदेश, संवेष्टनों (लिफाफों और पैकिंग) पर हिन्दी का ही यथा-सम्भव प्रयोग करें। यथासम्भव उधार/नकद पर्चियों और दूरभाष पर बातचीत में हिन्दी का ही प्रयोग करें। केवल अंग्रेजी में छपी प्रचारात्मक सामग्री जैसे कलेण्डर, डायरी आदि को कदापि स्वीकार न करें और न ही छपवाकर वितरण करें।"।

२. इसी प्रकार गाजियाबाद (उ०प्र०) के लोहा व्यापारियों की समिति ने भी अपने सदस्यों को हिन्दी में काम करने के लिए प्रेरणा देने के लिए एक परिपत्र प्रचारित किया। परिपत्र का आशातीत प्रभाव हुआ। अधिकांश व्यापारियों ने अपने नामपट्ट हिन्दी में बदल दिए। लेखा-जोखा, चिट्ठी-पत्री, नकद-उधार की पर्चियां, बैंक में हस्ताक्षर आदि ऐसे दैनंदिन कार्य हिन्दी मे करने प्रारम्भ कर दिए। Telephone की जगह दूरभाष, Unloading की जगह उतराई, Loading लदान और ऐसे ही Average की जगह औसत, Confirm पुष्टि, Cancel निरस्त, Amount राशि, Signature हस्ताक्षर, Sheet चादर, Tax paid कर-प्रदत्त, Shortage घटत, Payment भुगतान, अदायगी आदि हिन्दी शब्दों को खुलकर, धड़ल्ले से प्रयोग करने लगे। हिन्दी का एक अच्छा वातावरण बना। लोगों ने अनुभव किया कि अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा का प्रयोग करके हम विदेशीयता एव अंग्रेजियत का बहिष्कार करने में समर्थ होंगे।

इस हिन्दीमय वातावरण से उत्साहित होकर, 'लोहा व्यापारी समिति' ने अपनी एक बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया कि व्यापारियों को हिन्दी अपनाने के लिए प्रोत्साहनस्वरूप प्रतिवर्ष एक "राष्ट्रभाषा हिन्दी पुरस्कार योजना" प्रारम्भ की जाए।

हिन्दी में नामपट्ट, हिन्दी में उधार-नकद पर्चियों बहियों/बही खातों, हिन्दी में ही पत्राचार एवं परस्पर वार्तालाप में अंग्रेजी शब्दों का बहिष्कार आदि के आधार पर एक निर्णायक मण्डल द्वारा १९९० में प्रथम द्वितीय तृतीय एवं अनेक प्रोत्साहन पुरस्कार एक भव्य समारोह में प्रदान किये गए। पुरस्कार आकर्षक एवं स्थायी महत्त्व के थे।

३. केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् ने भी उद्योगपतियों और व्यापारियों को पत्र भेजे हैं और उन्हें हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए कुछ व्यावहारिक सुझाव निम्न प्रकार से दिए हैं—

(क) सामान्य जनता हिन्दी को भलीभांति समझती है। दक्षिण और पूर्व के राज्यों में भी अब काफी अधिक संख्या अंग्रेजी जानने वालों की अपेक्षा हिन्दी जानने वालों की है। अतः अपने माल को लोकप्रिय बनाने के लिए यह जरूरी है कि आप अपने विज्ञापन हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं और हिन्दी स्मारिकाओं आदि में भी दें और वे हिन्दी में ही दिए जाएं। हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं आदि में अंग्रेजी में विज्ञापन छपवाने से उसका पूरा लाभ नहीं हो पाता, क्योंकि हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं आदि के पाठकों में ऐसे कम ही व्यक्ति होते हैं जो अंग्रेजी के माध्यम से विज्ञापन को पूरा समझ सकें।

(ख) आप यह भी चाहेंगे कि आपकी फर्म/कम्पनी का नाम तथा आपके उत्पाद (प्रोडक्ट्स) अधिक से अधिक लोकप्रिय हों। इस दृष्टि से यह भी उचित होगा कि आप अपने समस्त उत्पादों पर और उनके पैकिटों बंडलों पर उनका नाम, प्रयोग करने का तरीका, कम्पनी/फर्म का नाम आदि हिन्दी में भी छपवाए। इसी सच्चाई को मानते हुए अब भारत सरकार ने अपने सभी उत्पादों के विवरण उन पर हिन्दी में भी दिए जाने अनिवार्य कर दिए हैं। अपने नाम के बोर्ड, अपनी लिखन सामग्री तथा प्रचार सामग्री को हिन्दी में भी बनवाएं क्योंकि अंग्रेजी को समझ सकने वाले मात्र दो-तीन प्रतिशत ही लोग हैं। चाहें तो साथ में अंग्रेजी अथवा अन्य भाषा का भी प्रयोग कर सकते हैं।

(ग) सम्भवतः आपको विदित होगा कि हिन्दी में भेजे जानेवाले तार अंग्रेजी के मुकाबले सस्ते पड़ते हैं और लिखने में आसान भी हैं। अतः निवेदन है कि अपने तार भी हिन्दी में ही भेजे। इससे पैसों की भी बचत होगी।

(घ) अपने चैक हिन्दी में बनाए। बैंक खाते हिन्दी में खोलें इत्यादि

४. कई प्रसिद्ध कम्पनियाँ और फर्में अपने कामकाज में हिन्दी का प्रयोग कर भी रही हैं। ताप नियंत्रण यंत्र बनानेवाली प्रसिद्ध सवी कम्पनी न केवल अपना सारा कामकाज हिन्दी में करती है अपि भारत सरकार को अपने टेण्डर भी हिन्दी में ही भेजती है। इस कम्पन के मालिक श्री नेत्रपाल सूदन (जो विज्ञान-स्नातक हैं) ने बताया कि उनके उपकरण दक्षिण ध्रुव में अपने परीक्षण के लिए रक्षा मंत्रालय काफी संख्या में खरीदे हैं और उसके लिए उन्होंने अपना टेण्डर केव हिन्दी में भरा था। स्वास्तिक फ्रेब्रिसिंग, नोएडा के साझीदार श्री राजे नारायण गोयल का अपना अधिकांश कामकाज पहले केवल अंग्रेजी होता था। वे विद्युत विषय में इन्जीनियर हैं और इंस्टिट्यूशन आ इन्जीनियर्स के फैलो भी हैं। पहले वे डी सी एम लिमिटेड में बड़े ऊं पद पर अधिकारी थे और उनका अंग्रेजी में ही काम करने का अभ्या था। किन्तु मेरी प्रेरणा पर उन्होने अपना काम हिन्दी में कर आरम्भ कर दिया। श्री गोयल जी और भी कई कम्पनियों में साझीद हैं। अब उनका कहना है कि उनकी कम्पनियों का लगभग 80 प्रति कार्य हिन्दी में होने लगा है और इससे उनके ग्राहकों और उत्पादन विक्रेताओं को काफी सुविधा हुई है। इसी प्रकार दिल्ली की शिव नामक एक फर्म कापियों और रजिस्टरों का उत्पादन करती है उन्होंने भी अपने अनुभव के आधार पर बताया कि भारतीय भाषा के प्रयोग से, विशेष रूप से हिन्दी के प्रयोग से व्यापारियों के उत्पाद की बिक्री अधिक हो होगी। और भी बहुत से उदाहरण दिए जा स हैं। पुराने ढग की थोक मंडियों में तो अधिकांश व्यापारी अपना सा कामकाज हिन्दी में ही करते हैं।

५. गाजियाबाद के लोहा व्यापारियों और दिल्ली के व विक्रेता समिति के सदस्यों से हिन्दी अपनाने के लिए निरन्तर सम्प बनाकर प्रेरित करने वाले गाजियाबाद के श्री ओमप्रकाश अग्रव रक्षा मंत्रालय में प्रथम श्रेणी के राजपत्रित अधिकारी रह चुके अन्य नगरों में भी और अन्य वस्तुओं के विक्रेताओं/निर्माताओं से वे सम्पर्क बनाए हुए हैं जिससे हिन्दी का व्यवहार पक्ष सबल सके। कानपुर में केन्द्रीय तार घर के श्री मैयादीन सराफ ने रो क्लबों के माध्यम से हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए वर्षों से स अभियान छेड़ा हुआ है। वाराणसी के श्री जगदीश नारायण रा जीवन बीमा निगम आदि के अधिकारियों और कर्मचारियों से स बढ़ाकर हिन्दी का व्यवहार बढ़ाया है। हैदराबाद में श्री गज

(शेष पृष्ठ ४ पर)

प्रवेश सूचना

"कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून" गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय संस्था है। प्रथम कक्षा से लेकर विद्यालंकार (बी० ए०) तक शिक्षा देने का प्रबन्ध है। विद्यालंकार में प्रवेश के लिये रजिस्ट्रार गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से सम्पर्क स्थापित करे तथा शेष १२वीं कक्षा तक आचार्या कन्या गुरुकुल देहरादून।

उच्च प्रशिक्षण शिक्षिका वर्ग, पुस्तकालय, नैतिक शिक्षा, साईस संगीत गृहविज्ञान, सांस्कृतिक गतिविधि संस्था की आधारभूत विशेषताय हैं। विस्तृत खेल के मैदान आधुनिक सुविधाओं सहित बड़े छात्रावास तीसरी कक्षा से संस्कृत एवं अंग्रेजी प्रारम्भ। निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओं के लिये छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है। मैट्रिक एव इण्टर उत्तीर्ण कन्यायें भी प्रथम तथा तृतीय वर्ष में दाखिला ले सकती हैं। शिक्षा निःशुल्क दी जाती है। १५ जुलाई से नवीन कन्याओं का दाखिला। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव १०/- भेजकर नियमावली मगा सकते हैं।

दमयन्ती कपूर
आचार्या

आर्ययुवक चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर

आर्यसमाज रेवाड़ी ने वेद एवं वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार हेतु दिनांक २१ जून १९९१ से दिनांक ३० जून १९९१ तक आर्य युवक चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर के आयोजन का निश्चय किया है। शिविर के अन्तिम तीन दिनों में आर्यसमाज का उत्सव धूमधाम से आर्यसमाज रेवाड़ी के परिसर में मनाया जाएगा।

इस अवसर पर आर्यजगत् के प्रसिद्ध एवं विद्वान् उपदेशकों सन्यासियों एव भजनोपदेशकों और व्यायाम आचार्यों को आमन्त्रित किया गया है।

इन सभी कार्यक्रमों में युवकों को विशेष रूप से चरित्र निर्माण, देश भक्ति की भावना, वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति की रक्षा, ब्रह्मचर्य, सन्ध्या, हवन, प्राणायाम आदि की यथार्थ विधि, योगासन, दण्ड, बैठक, लाठी, कराटे, जूडो आदि का प्रशिक्षण दिया जाएगा। आठवीं और उसके ऊपर की कक्षाओं के योग्य एवं स्वस्थ छात्र शिविर में प्रवेश पा सकेंगे। शिविर में भोजन, आवास, अध्यापन आदि सभी निःशुल्क होंगे।

शिविर में विद्यार्थियों को अधिक से अधिक भाग लेकर और सभी धर्मप्रेमी आर्य जनों को तन, मन, धन से सहयोग कर आयोजन को सफल बनाना उचित है।

मन्त्री
आर्यसमाज रेवाड़ी

प्रवेश सूचना गुरुकुल कुरुक्षेत्र

९वीं तथा १०+१ (कामर्स एव आर्टस) कक्षा हेतु—

श्रेणी	रिक्त स्थान	प्रवेश की अन्तिम तिथि
नवम	१५	२४-६-१९९१
१०+१	३०	२९-६-१९९१

अष्टम तथा दशम श्रेणी का हरियाणा शिक्षा बोर्ड का परिणाम शत-प्रतिशत रहा है। अष्टम में कुल ३१ छात्रों में से २० प्रथम, १० द्वितीय तथा एक तृतीय श्रेणी में पास हुआ है। ब्रह्मचारी सुरेन्द्रकुमार ने ८३.३% अक प्राप्त किये हैं। दशम् श्रेणी में कुल १३ छात्रों में से ३ प्रथम तथा १० द्वितीय श्रेणी मे उत्तीर्ण हुये हैं।

-आचार्य,
गुरुकुल कुरुक्षेत्र

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में स्वाध्याय शिविर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का नियंत्रण सम्भालने पर 2 जून से गुरुकुल परिसर में स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया गया है। प्रतिदिन यज्ञ होता है और उसके पश्चात् स्वाध्याय तथा शंका समाधान आरम्भ हो जाता है। इस शिविर में आचार्य सत्यप्रिय जी वैदिक आश्रम तिजारा, सभा के उपदेशक पं० चन्द्रपाल शास्त्री, पं० हरिश्चन्द्र शास्त्री, सभा उपमन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री, वेद विद्यालय गुरुकुल के आचार्य हरिदेव आदि विद्वानों के प्रवचन तथा सभा के भजनोपदेशकों श्री खेमसिंह, स्वामी देवानन्द, पं० मुरारीलाल बेचैन के भजन होते हैं। म० दरयावसिंह आर्य, म० सूरजमल आर्यसमाज रोहणा (सोनीपत), मा० हेतराम आर्यसमाज मानपुर (फरीदाबाद) आदि स्वाध्यायशील आर्य भाई वैदिक सिद्धान्तों पर चर्चा तथा शंका समाधान करते हैं। गुरुकुल अरावली पर्वत पर स्थित है और अब दो तीन बार यहां वर्षा हो चुकी है। अतः स्वाध्याय करने के लिए अनुकूल शान्त वातावरण बन गया है। चारों ओर हरियाली दृष्टिगोचर हो रही है। भोजन तथा आवास की व्यवस्था है। स्वाध्याय के लिए गुरुकुल के पुस्तकालय में बहुमूल्य प्राचीन तथा नवीन पुस्तकें विद्यमान हैं। दैनिक समाचार पत्र भी वाचनालय में मंगवाये जाते हैं।

सभा की भजन मण्डलियां पं० मुरारीलाल बेचैन, स्वामी देवानन्द तथा पं० खेमचन्द गुरुकुल के चारों ओर के ग्रामों में रात्रि को आर्यसमाज का प्रचार कर रहे हैं। स्थानीय आर्य कार्यकर्त्ता भी इस शुभ कार्य में तन, मन तथा धन से सहयोग कर रहे हैं। इन दिनों में जो आर्य भाई स्वाध्याय करने के इच्छुक हो वे गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में पहुंचकर स्वाध्याय शिविर में भाग लेवें। समय समय पर वैदिक विद्वान् भी पधारते रहते हैं।

—सभा मन्त्री

आर्यसमाज प्रेमनगर करनाल

प्रधान—श्री ओमप्रकाश बधू एडवोकेट
उप प्रधान—रणजीत कुमार सोनी
मन्त्री- प्रेमकुमार दुग्गल
उप मन्त्री—प्रतापचन्द आर्य
कोषाध्यक्ष—दीपराज काठपालिया
लेखा निरीक्षक—विद्युत कुमार
पुस्तकाध्यक्ष—हरीश खुराना

(शेष पृष्ठ ४ पर)

गुप्त भी इसी प्रकार से प्रयत्न कर रहे हैं। आगरा में श्री जगदीश प्रसाद बंसल भी अपने ढंग से व्यापारियों से हिन्दी में काम करने के लिए सम्पर्क बनाए हुए हैं। उधर भारत सरकार ने भी अपने सभी कारखानों को आदेश दिए हैं कि वे अपने उत्पादनों पर माल के विवरण हिन्दी में भी अनिवार्य रूप से लिखाए और हिन्दी भाषी राज्यों की सरकारों तथा जनता के साथ अपना पत्राचार हिन्दी में ही करें। भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित सरकारी सुपर बाजार (जिसकी १०० से अधिक शाखाएं हैं) की सामान ले जानेवाली थैलियां अब केवल हिन्दी में छपने लगी हैं। इसी प्रकार दिल्ली उपभोक्ता सहकारी थोक भण्डार (जो दिल्ली प्रशासन के अन्तर्गत है) की थैलियां भी हिन्दी में ही छप रही हैं। दिल्ली में सरकारी दूध की दुकानों पर जिन टोकनों की सहायता से दूध मिलता है वे भी केवल हिन्दी में बने हुए हैं। इस प्रकार कुछ वर्षों में जहां सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है वहां उद्योगपतियों और व्यापारियो द्वारा भी इसका अधिकाधिक प्रयोग होने लगा है।

६. अतः पाठकों से अनुरोध है कि वे भी अपना अधिकांश कार्य हिन्दी मे करना आरम्भ करें तथा अपने-अपने क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए अभियान चलाए जिससे कि जनता और शासन के आपसी सहयोग से हिन्दी का व्यवहार बढ सके।

वैदिक साम्यवाद

—अरविन्द कुमार कमल, टोहाना (हिसार)

वेद हमारी संस्कृति के आधार स्तम्भ हैं। ये ज्ञान विज्ञान के मूल स्रोत हैं। इनमें दिव्य तथा आदर्श विचार पाये जाते हैं। इनमें सारी सत्य विद्याओं का वर्णन है। इसलिये तो युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने कहा "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।" धर्म ही नही अपितु परम-धर्म है। झूठी, बेकार की बात सारी मानव की स्वय की कल्पना है। वेद उच्च घोषणा के साथ साम्यवाद का प्रतिपादन करता है। वेद में अनेकों मन्त्र हैं जो साम्यवाद का पाठ सिखलाते हैं। कार्लमार्क्स ने अपने साम्यवाद की विचारधारा प्राचीन ग्रन्थ वेद से ली थी, किन्तु जब उसने स्वय की बातें उसमें मिला दी तो उस विचारधारा का स्वरूप दूषित हो गया। आइये देखते हैं कि वेद के साम्यवाद का स्वरूप क्या है?

सं गच्छध्वं सं वदध्वं स वो मनांसि जानताम्।
देवा भाग यथा पूर्वे सजानाना उपासते॥

—ऋग्वेद १०-१९१-२

अर्थात् हे मनुष्यो! तुम लोग मिलकर चलो। प्रेम पूर्वक आपस में बात करो। तुम्हारे मन मिलकर सत्यासत्य निर्णय के लिये सदा विचार करें जैसे प्राचीनकाल के लोग, विद्वान् परस्पर विचार करके सत्यासत्य का निर्णय करके अपने-अपने उपभोग के भाग को प्राप्त करते आये हैं। उसी प्रकार तुम लोग भी प्राप्त करो।

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः।
अन्योऽअन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान् वः समनसस्कृणोमि॥

—अथर्व० ३।३०।५

अर्थात् हे मनुष्यो! तुम लोग एक-दूसरे से बडे और उत्तम गुण युक्त होकर भी समान चित्त वाले होकर भी, समान कार्य के साधन को करते हुये, कभी एक-दूसरे से अलग मत होओ। आपस मे मीठा तथा मधुर बोलते हुये परस्पर मिलो। समान रूप से एक ही स्थान पर इकट्ठे तुम लोगों को मैं (ईश्वर) समान मन वाला करता हू।

नमो जेष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमः।
मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च॥

—यजु० १६।३२

अपने से बड़े, अपने से आयु व पद में छोटे, पूर्व उत्पन्न तथा पीछे उत्पन्न, मध्यम, धृष्टता रहित, नीचे कम में लगे अर्थात् छोटे पद पर स्थित और सबके आश्रित पुरुष को इन सबको यथायोग्य सत्कार तथा पद प्राप्त हो। यह वैदिक साम्यवाद की उदात्त भावना है।

साम्यवाद का मूल मन्त्र—

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।
सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः॥ अथर्व० ३।३०।६

अर्थात् तुम लोगों के जल पीने का स्थान एक हो, तुम्हारी भोजन-शाला एक हो। मैं तुम्हे एक स्नेह बन्धन में बांधता हू। तुम सब मिलकर उसी प्रकार परमात्मा की उपासना करो जैसे रथ के पहिये के चारों ओर आरे लगे होते हैं। मन्त्र में निम्न उपदेश हैं—'समानी प्रपा' हे मनुष्यो! तुम्हारे जलाशय, प्याऊ, कुएं आदि जल पीने के स्थान एक हों। जहां से समान रूप से प्रत्येक मनुष्य जल पी सके। इससे छुआछूत और हीनता की भावना दूर होगी।

'सह वोऽन्नभागः' तुम सबकी भोजनशाला एक हो अर्थात् तुम लोग मिलकर अन्न का सेवन करो। क्योंकि अकेला खानेवाला पाप कमाता है। परमपिता परमात्मा का आदेश है कि मिल बांटकर खाना चाहिये।

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी॥

—ऋ० १०।११७।६

अर्थात् जो व्यक्ति बिना कमाया हुआ भोजन प्राप्त करना चाहता है, जो अपने किसी हितैषी का पोषण नही करता और न अपने साथी का पालन करता है। उसका ऐसा व्यापार उसके नाश का कारण होता है। मैं सत्य कहता हूं जो अकेला खानेवाला है वह केवल पाप का भागी है।

"इष्ट च वा एष पूर्तं च गृहाणामश्नाति य पूर्वोऽतिथेरश्नाति।"

—अथर्व ९-६-१

अर्थात् जो गृहस्थ अतिथि को बिना खिलाये स्वय खा लेता है वह घरों की श्री को खा जाता है अर्थात् नष्ट कर देता है।

यावद् भ्रियेत् जठर तावत् स्वत्व हि देहिनाम्।
अधिकं योऽभिमन्येत स स्तेनो दण्डमर्हति॥

—श्रीमद् भागवत ७।१४।८

जितने से मनुष्य का पेट भर जाय उतने पर उसका अधिकार है। जो अधिक की इच्छा करता है वह चोर है, दण्ड के योग्य है। महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं—

"सबको तुल्य भोजन, वस्त्र तथा आसन दिये जाय चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हो चाहे दरिद्र की सन्तान हों।"

—सत्यार्थ प्रकाश ३ समु०

'समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि'—तुम्हें एक ही प्रेम-बन्धन में बांधता हूं। तुम लोग द्वेष रहित होकर 'अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्स जातमिवाघ्न्या' वाला आचरण करो तथा सदा प्रेम पूर्वक आनन्दित रहो। 'मा अभिद्रुहः' किसी से ईर्ष्या, द्रोह और वैर मत करो क्योंकि 'मिथो विघ्नाना उप यन्तु मृत्युम्' परस्पर वैर विरोध करनेवाले आपस में लडते वाले मृत्यु के ग्रास बन जाते हैं। प्रतिज्ञा करें 'अब प्रिया अधूषत' हम प्रेममय होकर सबके दुख दूर करें। विक्टर ह्यूगो ने लिखा है—Life is a flower of which love is the honey अर्थात् जीवन एक पुष्प है और प्यार उसका मधु है।

रूस आदि देशो में धर्म प्रचार नहीं हो सकता क्योंकि वे धर्म और ईश्वर को नही मानते। उडने की स्वतन्त्रता बराबर होने पर क्या मक्खी किसी पक्षी के बराबर उड़ सकती है? खाने की स्वतन्त्रता होने पर क्या बकरी हाथी के बराबर खा सकती है? नही तो फिर ससार के लोग बराबर कैसे हो सकते हैं जैसा कि रूस आदि साम्यवादी चाहते हैं। वेद कहता है—

अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोजवेष्वसमा बभूवुः।
आदघ्नास उपकक्षास उ त्वे ह्रदा इव स्नात्वा उ त्वे ददृश्रे॥

ऋ० १०।७१।७

अर्थात् सब मनुष्य एक सी इन्द्रियों से पूर्ण, एक सी समान शिक्षा को लेते हुये भी विचारों व बुद्धि की विविधता से एक जैसे नही होते इस कारण बुद्धि भेद को नही मिटाया जा सकता।

देश व विश्व का कल्याण तभी होगा जब लोग वैदिक साम्यवाद को ग्रहण करेंगे तथा स्वेच्छा से अधिक सामग्री का वितरण जरूरतमन्दो में करेंगे। मेरे से छीनकर कोई वस्तु दूसरे को दे दी जाये तो मुझे दुःख होगा किन्तु मैं उसी वस्तु को स्वेच्छा से दे दू तो मुझे दुःख की अनुभूति नही होगी। वेद जैसी उदार भावनाये कही और न मिलेंगी। अन्त मे—

आदमी-आदमी जो बन जाए।
कष्ट सारे जहा का मिट जाए॥

योगिराज श्री कृष्ण की इच्छा

(रचयिता—मा० रामचन्द्र आर्य, आर्य निवास नलवा (हिसार)

जब जब होगा नाश धर्म का मैं जन्म धारके आऊंगा॥
इच्छा से खास मेरी जन्म भूमि का कष्ट मिटाऊगा॥टेक॥

जब कोए जुल्मी जोर जबर ते अधर्म को फैलावेगा।
धर्म छोड कर अधर्म पर कोए पापी नीत डिगावेगा।
यज्ञ हवन तप दान छुडा कोए पाखण्ड घणा फैलावेगा।
कोए निराकार ईश्वर छोड़ भेंट बलि जीव चढ़ावेगा।
आके धर्म कायम कर दूं जब पाप को परे हटाऊगा॥१॥

कोई बलशाली राजा बनके जो प्रजा पर जुल्म ढावेगा।
पड़े अकाल भूखमरी में अपनी प्रजा को घणी सतावेगा।
अन्याय का पक्ष लेके धम न्याय को नीचे दबावेगा।
चोरी डाके लूटपाट पाप जब घणा बढता आवेगा।
मैं ऐसे राजा को अपने बल से मार गिराऊगा॥२॥

नशे विषय में फंस प्राणी जीव को घणा सतावेगा।
दूध दही घी मक्खन छोड़ मांस पै नीत डिगावेगा।
जगपालक गऊ माता को हत्ये में नीच चढावेगा।
गऊशाला बन्द करवा मद्यशाला घणी खुलावेगा।
मैं ऐसे नीच कुकर्मी को तड़फा तड़फा मरवाऊ गा॥३॥

मात पिता और गुरुओं के जो फर्ज नही निभावेगा।
बेटा और चेला बनके जो बड़ो तै दगा कमावेगा।
विद्या बिन जो मूर्ख पाखण्डी पण्डित खुद कहावेगा।
जात पात का जहर फैला जो वर्ण कर्म मिटावेगा।
आके दूं पटकनी ऐसी पापो को सबक सिखाऊंगा॥४॥

ये आर्य मर्यादा सै कदे जुल्म सहन करे कोन्या।
फर्ज निभाते शरीर खत्म हो आत्मा कदे मरे कोन्या।
महापुरुषा बिन इस दुनिया का दुख कोए हरे कोन्या।
क्षत्री बिना धर्म की रक्षा कोए आदमी करे कोन्या।
लेऊं जन्म सौ बार मरके मैं अपना फर्ज निभाऊगा॥५॥

'रामचन्द्र' कह इच्छा सं ये पूरी करे भगवान् मेरी।
पाप मिटावण धर्म बचावण हाजिर करदूं जान मेरी।
इसी मिशाल कायम करदू याद करे जहान मेरी।
धर्म की खातिर हाजिर करदूं उम्र वड़ी जवान मेरी।
नलवे आले मास्टर को धर्म का गान सिखाऊगा।

(पृष्ठ १ का शेष)

(४) अन्न (अन्नाद, अत्ता)—महर्षि इन शब्दों की व्याख्या में लिखते हैं—"अद् भक्षणे" इस धातु से अन्न शब्द सिद्ध होता है।
अद्यतेऽत्ति यो भूतानि तस्मादन्न तदुच्यते।
अहमन्नमहमन्नमहमन्नम्। अहमन्नादोऽहमन्नादोऽहमन्नादः।
(तैत्ति० उपनिषद्) अत्ता चराचरग्रहणात्

यह व्यासमुनिकृत शारीरिक सूत्र है। जो सबको भीतर रखने सबको ग्रहण करने योग्य, चराचर जगत् का ग्रहण करने वाला है। इससे ईश्वर के अन्न, अन्नाद और अत्ता नाम हैं। जैसे गूलर के फल में कृमि उत्पन्न हो के उसी में रहते हैं और नष्ट हो जाते हैं वैसे परमेश्वर के बीच में सब जगत् की अवस्था है।

(स० प्र० प्रथम समुल्लास)

यहां महर्षि ने प्रधान रूप से अन्न नाम की व्याख्या की है, अन्नाद और अत्ता तो अन्न शब्द की व्याख्या में प्रस्तुत किए गए हैं। अतः यहां एक अन्न नाम का ही ग्रहण करना (१०२-२=१००)

भ्रान्ति निवारण (१) श्रीवास्तव जी का मत है कि ईश्वर के १०० नामों की गणना में केवल ईश्वर के गौणिक नामों का ही ग्रहण करना चाहिए। ईश्वर के मुख्य निज नाम 'ओम्' का नहीं। यह महर्षि के तात्पर्य से विरुद्ध है। महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में ईश्वर के मुख्य नाम ओम् की तथा अन्य गौणिक मुख्य नामों की भी व्याख्या की है। अतः ईश्वर के सौ नामों की गणना में मुख्य और गौणिक दोनों प्रकार के नामों की गणना करना उचित है। मुख्य को छोड़कर गौणिक को ग्रहण करना कदापि उचित नहीं—"गौणमुख्ययोर्मुख्ये कार्यसम्प्रत्ययः। महर्षि के सिद्धान्त के अनुसार 'ओम्' नाम ईश्वर के सभी नामों का वाचक और ग्राहक है। इसमें ईश्वर के सभी नामों का अन्तर्भाव हो जाता है। फिर ईश्वर के नामों की गणना में सबसे महत्त्वपूर्ण 'ओम्' नाम को छोडना कदापि वांछनीय नहीं हो सकता।

(२) श्रीवास्तव जी ने 'प्रज्ञ और प्राज्ञ' के अनुसार अर्थ में कोई अन्तर न होने के आधार पर आत्मा-परमात्मा ईश्वर-परमेश्वर क्रमशः पिता-पितामह-प्रपितामह नामों में से एक-एक तथा दो नामों को कम करने की बात कही है, जो ठीक नहीं है। क्योंकि महर्षि ने इन शब्दों के पृथक्-पृथक् अर्थ लिखे हैं, जो निम्नलिखित हैं—

आत्मा—जो सब जीव आदि जगत् में व्यापक हो रहा है।

परमात्मा—जो सब जीव आदि से उत्कृष्ट और जीव प्रकृति तथा आकाश से भी अतिसूक्ष्म और सब जीवों का अन्तर्यामी आत्मा है। जिससे ईश्वर का नाम परमात्मा है।

ईश्वर—जिसका सत्य, विचार, शील, ज्ञान और अनन्त ऐश्वर्य है, इस उस परमात्मा का नाम ईश्वर है।

परमेश्वर—जो ईश्वर अर्थात् समर्थों में समर्थ जिसके तुल्य कोई भी न हो उसका नाम परमेश्वर है।

पिता—जो सबका रक्षक जैसे पिता अपनी सन्तानों पर सदा कृपालु होकर उनकी उन्नति चाहता है वैसे परमेश्वर सब जीवों की उन्नति चाहता है इससे उसका नाम पिता है।

पितामह—जो पिताओं का भी पिता है, इससे उस परमेश्वर का नाम पितामह है।

प्रपितामह—जो पिताओं के पितरों का पिता है, इससे उस परमेश्वर का नाम प्रपितामह है। अतः स्पष्ट है कि श्रीवास्तव जी का आत्मा परमात्मा ईश्वर-परमेश्वर, पिता-पितामह-प्रपितामह, इन नामों में से अर्थ के आधार पर क्रमशः एक-एक तथा दो नामों को कम करने की बात कहना अज्ञानपूर्ण ही है। पुनः कृपया महर्षिकृत प्राज्ञ (प्रज्ञ) शब्द का अर्थ पढ़िए 'ज्ञाऽवबोधने' प्रपूर्वक इस धातु से प्रज्ञ और इससे तद्धित प्रत्यय करने से प्राज्ञ शब्द सिद्ध होता है। यः प्रकृष्टतया चराचरस्य जगतो व्यवहारं जानाति सः प्रज्ञः। प्रज्ञ एव प्राज्ञः। जो निर्भ्रान्ति ज्ञानयुक्त चराचर सब व्यवहार को जानता। इससे ईश्वर का नाम 'प्राज्ञ' है। (स० प्र० प्रथम समु०)

महर्षि ने यहां प्राज्ञ तथा प्रज्ञ शब्दों के पृथक्-पृथक् अर्थ नहीं किए हैं। उन्होंने यहां प्राज्ञ शब्द की सिद्धि में प्रज्ञ शब्द का उल्लेख किया है आत्मा परमात्मा आदि शब्दों की प्राज्ञ-प्रज्ञ शब्द की तुलना करके ईश्वर नामों को कम करने का सुझाव देना दुःसाहस मात्र ही कहा जा सकता।

सारांश—इस लेख का सार यह है कि सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में ईश्वर के गणना में १२० नामों का वर्णन किया है। उनमें १२ नामों की पुनरावृत्ति की गई है। अतः १२०-१२=१०८ नाम शेष रहते हैं। आठ नामों का उपरिलिखित विधि से समाधान करने पर १०० नाम ही शेष रहते हैं।

मुझे आशा है कि माननीय श्रीवास्तव जी अपने मन्तव्य पर पुनर्विचार करेंगे। ईश्वर के १०० नामों पर पुनः यह लेख लिखने के लिए मैं श्रीवास्तव जी का हार्दिक धन्यवाद करता हूं।

— सुदर्शनदेव आचार्य
हरिसिंह कालोनी, रोहतक

सुख, शान्ति और आनन्द

सुख, शान्ति और आनन्द इन तीनों में से सबसे महत्त्वपूर्ण तो आनन्द है जो मनुष्य जीवन का उद्देश्य होता है। परन्तु इससे पूर्व शारीरिक सुख व मानसिक शान्ति भी साधन रूप में आवश्यक है। इन तीनों में से सर्वप्रथम है सुख।

सुख—सुख शरीर के लिए होता है और बिना अर्थ के शारीरिक सुख हो नहीं सकता। क्योंकि शरीर के लिए जिन-जिन उपभोग पदार्थों की आवश्यकता होती है उनके बिना सुख नही मिल सकता तभी कहा गया है—

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।
।ऋ०।१०।१२१।१०।।

(यत्कामाः) जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले होकर हम लोग भक्ति करें (ते) आपका (जुहुमः) आश्रय लेवें और वाञ्छा करें (तत्) उस-उस की कामना (नः) हमारी (अस्तु) सिद्ध होवे, जिससे (वयम्) हम लोग (रयीणाम्) धनैश्वर्यों के (पतयः) स्वामी होवें। विवाह संस्कार की सप्तपदी विधि में भी कहा गया है कि—रायस्पोषाय त्रिपदी भव। शुद्ध साधनों से हम खूब धनोपार्जन करें। हम बिना धन के निर्धन, दीन होकर कभी सुखी रह ही नहीं सकते। इसीलिए तो हम परमपिता परमात्मा से नित्य प्रति संध्या के माध्यम से प्रार्थना किया करते हैं कि हे प्रभो! अदीनाः स्याम शरदः शतम्—हम अदीन होकर सौ वर्षों तक जीवें। वेद में जगह-जगह पर धन की मांग की गयी है। क्योंकि भौतिक शरीर के लिए भौतिक साधन अनिवार्य हैं। अतः बिना अर्थ के सुख नहीं मिलता लेकिन याद रहे कि—

धन खूब कमा, सुख चैन मना, पर ऐसा कोई अपराध न कर।
अपना घरबार बनाने को औरों का घर बरबाद न कर॥

अब है शान्ति—शान्ति मन के लिए होती है मन की इच्छाओं (कामनाओं) की पूर्ति न होने से व्यक्ति के मन में अशान्ति हो जाती है, बेचैनी हो जाती है। भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में कहा है कि—

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः—रजोगुण से उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है और क्रोध का ही दूसरा नाम अशान्ति है। कहने का तात्पर्य यह है कि काम की पूर्ति न होने से क्रोध उत्पन्न होता है। इसलिए "सन्तोषामृततृप्तानाम्" जब हम सन्तोष रूपी अमृत से तृप्त होकर अपनी आकांक्षाओं, कामनाओं पर (सन्तुष्टि) सन्तोष कर लेते हैं तब सभी धन, शान्ति रूपी धन के सामने धूमिल हो जाते हैं। कहा गया है कि—

गोधन, गजधन, वाजिधन, और रतनधन खान।
जब आवे सन्तोष धन सब धन धूलि समान॥

अब अन्तिम है आनन्द—आनन्द आत्मा के लिए होता है, और आनन्द केवल परमात्मा में है तथा परमात्मा केवल आत्मा का विषय है न कि इन्द्रियों का। अतः हम परमात्मा के सांनिध्य में जाकर ही आनन्द प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि जो जिस वस्तु को देने में समर्थ हो और उससे वह वस्तु मांगी जाय तो तभी मिल सकती है। वह परमपिता परमात्मा ही एक आनन्दस्वरूप है जिसके पास आनन्द का भण्डार है। अतः हम उस प्रभु के चरणों में समर्पित होकर उस प्रभु के गुणों को अपने में धारण करें। आनन्द आन्तरिक है जो अवर्णनीय है, किन्तु फिर भी समझाने के लिए कहना पड़ता है। वास्तव में आनन्द एक वह ऊँची स्थिति है जिसको प्राप्त करने के बाद सांसारिक वस्तुओं की जिज्ञासा समाप्त हो जाती है इसलिए तो हम परमात्मा से प्रार्थना किया करते हैं कि हे प्रभो! मृत्योर्मा अमृतं गमयेति—हमें मृत्यु रूपी दुःख से हटाकर अमृत रूपी मोक्ष की ओर ले चलिये। हम नित्य प्रति योगाभ्यास के माध्यम से परमानन्द की प्राप्ति करें। परम+आनन्द जिससे बढ़कर आगे आनन्द की सीमा न हो, अर्थात् जिसको प्राप्त कर जीवात्मा की आकांक्षायें समाप्त हो जाती हैं उसे परमानन्द कहते हैं। इसलिए यह कहते हुए कि—

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव-देव॥

अर्थात् आप ही हमारे माता, पिता, बन्धु, सखा, विद्या, धन तथा सर्वस्व उपास्य देव हैं अपने आपको अर्पण कर दें। तभी हम सुख शान्ति से जीवन व्यतीत कर सकते हैं। प्रभु हमें शक्ति व सामर्थ्य दें जिससे कि सबके शरीर के लिए सुख, मन के लिए शान्ति और आत्मा के लिए आनन्द की प्राप्ति हो सके।

लेखक—जीवनार्य वाचस्पति पुरोहित आर्यसमाज हांसी
स्नातक—दयानन्द ब्राह्ममहाविद्यालय हिसार

(पृष्ठ ३ का शेष)

दिल्ली में विदेशी सरकार के रौलट एक्ट के विरोध में जलूस निकल रहा था। लाखों नर नारी उसमें सम्मिलित थे। घातक शस्त्र से सज्जित सैनिकों ने जुलूस को आगे जाने से रोक दिया। दिल्ली की निहत्थी जनता शस्त्र सज्जित गोरों को सेना के सामने खड़ी हो गयी पर यह क्या? एक ऊंचे कद का संन्यासी जलूस के सामने कहां से आकर खड़ा हो गया। दूसरों को पीछे धकेला और अपनी छाती सामने करते हुए कहा "इन लोगों को बाद में पहले मुझे गोली से उड़ाओ।" यह क्या? संगीने झुक गयीं। दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द के जय जयकार के साथ जलूस शान के साथ निकला।

आप भी अपने मन को शिवसंकल्पवाला तथा दृढ़ निश्चय बनाइए और धन विद्या ऊंचे पद तथा सद्गुण प्राप्त करने में इस संकल्पशक्ति का उपयोग करें तथा अपने संकल्प को पूरा करने में मौत से भी न डरें।

उनको कोटिक नमन हमारा

मातृभूमि की रक्षा के हित,
करते प्राणों का उत्सर्ग।
स्वतंत्रता की वेदी पर जो,
करते बलियों का संसर्ग।
सारी धरती के सम्मुख जो,
रखते देश-धर्म का मान।
मातृभूमि का कण-कण जिन पर,
करता रहता है अभिमान।
जिनके सम्मुख नतमस्तक हो जाता महिमण्डल सारा।
उनको कोटिक नमन हमारा॥

निज प्राणों का मोह छोड़कर,
रण में कदम बढ़ाते जो।
कर सर्वस्व निछावर अपना,
मां हित शीश चढ़ाते जो।
जिनको देख प्रकम्पित होते,
सूरज-चांद सितारे हैं।
जिनकी गरिमा के सम्मुख,
नत होते मस्तक सारे हैं।
निज वीरत्व प्रदर्शित करके, तोड़ डालते बन्धन कारा।
उनको कोटिक नमन हमारा॥

सिंह-गर्जना करते भीषण,
रण-कौशल दिखलाते हैं।
सीमाओं से मातृभूमि की,
दुश्मन मार भगाते हैं।
जो अजेय सा युद्ध किया,
करते रहते तूफानों से।
गोद सजाते मातृभूमि की,
त्यागों से, बलिदानों से।
मोड़ दिया करते हैं निर्मम, प्रबल प्रवाहित जल-धारा।
उनको कोटिक नमन हमारा॥

राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

भजन

तर्ज—चल हर कदम सम्भल कर………।

एहसानमन्द बन्दे ऐ प्रभु गुण न गाया।
दिये उसने सकल पदार्थ तेरे समक्ष न आया॥
घर में लगी है बिजली दस रोज बल्ब जलते।
पल-पल का बिल है बनकर सरकार से है आया॥१॥
पर देखो परमपिता ने दिया बल्ब सूर्य जैसा।
नैसर्गिक जीवमात्र ने है यूंही लाभ उठाया॥२॥
वायु व जल भी देकर कितनी कृपा करी है।
फल अन्न आदि देकर कुछ टैक्स न लगाया॥३॥
धन धान्य धाम धरती प्रकृति ये अजब निराली।
तनिक मन में जरा विचारो ये किसके लिए बनाया॥४॥
अन्याय घोर है अगर उसको याद किया ना।
"जीवन" सुनहरा देकर जीना भी हमें सिखाया॥५॥
ले०—जीवनार्य पुरोहित आर्यसमाज हांसी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०/७३   रजि नं० P RTK-६१   लाइसेंस नं० १,१६ ०८ ०२ ७६

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८   अंक ३०   २८ जून, १९८१   वार्षिक शुल्क २०)   (आजीवन शुल्क २०१)   विदेश में ८ पौंड   एक प्रति ४५ पैसे

महापुरुषों की विशेषता

(प० बलदेव "मनीषी" वेदतीर्थ गुरुकुल कालवा)

१—युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी महाराज इस आर्यावर्त देश में पैदा हुये। नैष्ठिक ब्रह्मचर्यव्रत लेकर, गुजरात से गंगोत्री अलखनन्दा तक, जेहलम से कलकत्ता तक पैदल घूम-घूमकर सत्य सनातन आर्य संस्कृति का पुनरुद्धार किया। वेदों के भाष्य करके आर्यों के हाथों में दिये। उन्हीं की उज्ज्वल बुद्धि ने देश की कुरीतियों पर कुठाराघात किया और स्वदेश प्रेम व स्वराज्य का सुन्दर सन्देश आर्यों को देकर मुर्दा सी जाति में जान डालदी। अपने कार्य को चलाने के लिए एक क्रान्तिकारी पवित्र संस्था आर्यसमाज बनादी। आधुनिक भारत के पथ-प्रदर्शक बने और सबसे पहले स्वदेशी राज्य का घोष उन्होंने किया जबकि यह कांग्रेस पैदा भी नहीं हुई थी। महर्षि दयानन्द जी महाराज आप्तकाम परमविरक्त ऋषि थे, परन्तु आर्यों के लिये चक्रवर्ती राज्य की जगह-जगह पर प्रार्थना की है। स्वदेश और स्वदेशी के प्रबल प्रवर्तक थे। वेदज्ञान मनुष्यमात्र को पहुंचाना चाहते थे। इन सब में उनके व्यक्तिगत जीवन की कोई चाह नहीं थी इसलिये महर्षि आप्तकाम थे। प्रभुभक्त राष्ट्रभक्त थे।

२—इस राष्ट्र में अनेक बार दुर्दिन आये। इसने कंस का राज्य देखा। जिसने पिता, बहन, बहनोई और ३० राजाओं को कैद कर रखा था। दुर्योधन का राज्य भी देखा, जो बिना युद्ध के भाइयों को सूई की नोक भर स्थान नहीं देना चाहता था। उसने कृष्ण को कहा—"जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः, जानामि अधर्मं न च मे निवृत्तिः।" धर्म को जानता हूं, परन्तु उसमें रुचि नहीं, अधर्म को जानता हूं उसे छोड़ने की इच्छा नहीं। आर्यो आज राष्ट्र को भीम अर्जुन की अपेक्षा कृष्ण की बहुत अधिक आवश्यकता है। जो केवल शक्ति ही नहीं परन्तु नीतिनिपुण हों और बुद्धियुक्त रणकौशल से रणक्षेत्र कुरुक्षेत्र में विजय प्राप्त करें।

३—मर्यादा पुरुषोत्तम राम चौदह वर्ष वनवास में रहे तो भरत ने वनवासी बनकर अयोध्या में १४ वर्ष गुजारे। १४ वर्षों के उपरान्त जब श्रीराम अयोध्या आये तो बड़ा उल्लास था। भरत से पूछा राज्य में वर्षा होती रही, अन्न की कमी तो नहीं हुई और फिर दूसरों से बड़े प्रेम से घुल-मिलकर बातें करते रहे। भरत जी को रंज हुआ कि मैंने चौदह वर्ष गद्दी पर खड़ाऊं रखे, जमीन पर नीचे सोया फिर भी मुझसे कोई बात ही नहीं की। जब सब चले गये तो भरत ने चरण छुये पूछा कि मुझसे आप नाराज क्यों हैं, राज्य की कोई बात ही नहीं पूछी। श्रीराम जी ने उत्तर दिया भरत संसार में तुम जैसा अनुज भाई मिलना कठिन है। तेरे प्रति कितना स्नेह मेरे हृदय में है वह अवर्णनीय है। मैंने सबसे पहले आपसे पूछा कि समय पर वर्षा होती रही। राज्य में अन्न की कमी नहीं हुई। इसमें तुम्हारी सारी कार्य-कुशलता निहित थी। बोलो कैसे तुझसे कुछ नहीं पूछा, भरत जी शान्त होगये।

४—समर्थगुरु रामदास जी के उपदेशों ने शिवाजी के अन्दर वह सामर्थ्य भरदी कि जिसने आसफजाहियों की जड़ें हिलादी। औरंगजेब के आतंककाल के शासन में एक आर्यराष्ट्र की स्थापना करवा दी। मुसलमान आततायी आर्यदेवियों पर अत्याचार करते थे परन्तु मरहठा सम्राट् शिवाजी ने मुसलमान औरतों को सम्मान के साथ उनके घरों को वापिस किया, बुराई की नकल नहीं की, बुरों के सामने एक श्रेष्ठ चरित्र की उपमा रखी।

५—जलियांवाले बाग अमृतसर के जनसंहार का काण्ड होचुका था। चान्दनी चौक दिल्ली में जलूस का नेतृत्व कर रहे स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जब गोरी फोज की संगीनें तनी देखी तो अपनी छाती आगे तानदी। यह हिम्मत केवल वीरभक्त में ही होती है। आत्महुत, आत्मबलिदानी ही इस प्रकार की क्रान्ति ला पावेंगे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आत्महुत आहुति देकर राष्ट्र को कितने बहुमूल्य रत्न दिये। ऐसे ही वे होंगे जिनके अन्दर स्वार्थ नहीं, जिन्हें किसी के साथ व्यक्तिगत द्वेष नहीं, वही महान् विभूतियां ही राष्ट्र को जगा सकेंगी।

६—राजर्षि चाणक्य के सादा जीवन ऊंचे विचार ने राष्ट्र को सम्मानयुक्त बना दिया। पराजित देश को विजयी बना दिया। किस तरह चन्द्रगुप्त को चक्रवर्ती सम्राट् बनाया। जबकि स्वयं कौपीन-धारी कुटिया में निवास करते थे।

७—हकीकतराय छोटे से बालक के सामने जल्लाद तलवार लेकर खड़ा है। काजी निर्णय देता है कि या तो इस्लाम कबूल करो वरना मृत्युदण्ड भोगना होगा। माता पत्नी सामने खड़ी हैं चाहती हैं कि किसी तरह हकीकत का जीवन बचाया जाये। वीर आर्य पर न प्राणों के, न परिवार के मोह ने प्रभाव डाला, वह सिद्धान्त और धर्म पर अडिग रहा। संसार को संस्कृति की भक्ति का पाठ पढ़ा अपने यश को अमर कर गया।

८—शहीद-ए-आजम भगतसिंह जो लाहौर पुलिस हैडक्वार्टर पुलिस अधिकारी सांडर्स को गोली मारकर भाग सका था, वही भगतसिंह दिल्ली के एसेम्बली हाल में बम्ब फेंककर भाग सकता था। उसने स्वयं अपने आपको पकड़वाया। हाईकोर्ट के जज ने अपना फैसला बहुत बाद में सुनाया। शहीद-ए-आजम ने तो उसी समय अपने जीवन का फैसला कर लिया होगा जब बम्ब फेंकने की योजना स्वीकार की होगी। कितनी निर्ममता, निर्भीकता है। यह है राष्ट्रभक्ति जो कि इतना महान् व अदम्य बल प्रदान करती है। इन्हीं राष्ट्रवीरों का फांसी की सजा सुनकर खून बढ़ता है, चेहरा चमक उठता है। गाते-गाते फांसी के तख्ते की ओर कदम बढाते हैं। वे प्रसन्न होते हैं कि जीवन की जो योजना बनाई थी वह सफलता के अन्तिम चरण में

(शेष पृष्ठ ७ पर)

जीवन संगीत

(चमनलाल एम. ए. H-६४ अशोक विहार दिल्ली-५२)

परमात्मा ने सृष्टि की कुछ ऐसी अद्भुत रचना की है कि अरबों वर्ष बीतने पर आज भी बड़े-बड़े वैज्ञानिक, विचारक, आचार्य (साधारण लोगों की तो बात ही क्या) इस रचना को देखकर चकित हैं और इसको अपनी समझ के बाहर की बात कहकर अचम्भे में पड़े हैं। वेद में ठीक ही कहा है :—

"पश्य देवस्य काव्यम् न ममार न जीर्यति"

यह संसार अपनी निराली छवि लिए उस महान् शिल्पी की सत्ता और कार्यकुशलता की याद दिला रहा है। यह सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र और पृथ्वी तथा अनेक ग्रह-उपग्रह उस जगत् नियन्ता के विधि-विधान में बन्धे हुए परस्परोपकारिता से कार्य करते हुए अपनी-अपनी नैसर्गिक गति से एक दूसरे के पीछे भ्रमण करते हुए दिन-रात और षड्ऋतुओं आदि जैसी अद्भुत चमत्कारी वस्तुओं का मानस प्रसाद के निर्माण करते हुए सचमुच उस महान् नियन्ता की कारिगरी को दर्शा रहे हैं। किसी कवि ने इस सुन्दर विचित्रता को देखकर इन दो पंक्तियों में अपने भाव इस प्रकार मार्मिक शब्दों में व्यक्त किए हैं :—

"रचना इस संसार की, तेरी याद दिला रही,
जिस वस्तु को देखिए, तेरे ही गुण गा रही।"

अद्भुतता में अद्भुतता

परन्तु इस अद्भुतता में भी एक और अद्भुतता यह है कि इस अद्भुत रचना (सृष्टि) में मानवदेह को ही उस महान् कर्त्ता की सर्वश्रेष्ठ, आश्चर्यजनक कृति कहा गया है।

वेदों, शास्त्रों, उपनिषदों और अन्य धर्मग्रन्थों में इस मानव काया की सर्वश्रेष्ठता के सम्बन्ध में बड़े काव्यपूर्ण ढंग से वर्णन किया गया है :—

(क) इदं वपु निर्वचनम् जनासश्चरिन्त —ऋग्वेद ५।४७।४

(ख) अयं लोकः प्रियतमो देवानामपराजितः—अथर्ववेद ५।३०।१७

(ग) ताभ्यः पुरुषमानयत् ता अब्रुवन्,
सुकृतं बतेति पुरुषो वाव सुकृतम् —ऐतरेयोपनिषद्

(घ) न हि मनुष्यात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्
गुह्यं ब्रवीमि: प्रकाश —शान्तिपर्व—महाभारत

परन्तु प्रभु की महान् कृति यह मानवदेह सर्वश्रेष्ठ होते हुए भी परिवर्तनशील, नाशवान् है, अन्य पदार्थों की न्याईं क्षणभंगुर है। इसकी स्थिरता का कोई विश्वास नहीं है। वेद में ठीक ही तो आया है :—

(क) अश्वत्थे वो निषदनम् पर्णे वो वसतिष्कृता—
ऋग्वेद—१०।९७।५, यजुर्वेद—३५।४

(ख) तव शरीरं पतयिष्ण्वर्वन् तव चित्तं वात इव ध्रजीमान्
यजुर्वेद—२९।२२

(ग) यह तन है कच्चा घड़ा, लिए फिरे है साथ
धक्का लागा फुटिया, कुछ न आवे हाथ —सन्त कबीर

(घ) भस्मान्तम् शरीरम् यजुर्वेद—४०।१५

ऐसी अस्थाई और क्षणभंगुर होने के बावजूद भी यह कृति एक चमत्कारी वस्तु बनकर रह गई है। जिसका पराग और कोई नहीं दीख पडता। जन्म से लेकर मरण पर्यन्त इस शरीर में स्वतः ही तीन चार प्रकार के परिवर्तन होते हैं। अर्थात् यह चार प्रकार की अवस्थाओं को प्राप्त होता है। इस अद्भुतता को देखकर बड़े-बड़े वैज्ञानिक चकित हैं। योगिराज कृष्ण महाराज ने इन अवस्थाओं का गीता में अर्जुन को इसकी नश्वरता का उपदेश देते हुए इस प्रकार वर्णन किया है :—

देहिनो अस्मिन् यथा देहे कौमार यौवन जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति॥ —गीता २।१३

इस बात को वेद में बड़े काव्यपूर्ण ढंग से बड़े मार्मिक शब्दों में यूं वर्णन किया है :—

विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार,
देवस्य पश्य काव्यं महित्वा अद्या ममार स ह्यः समान
—ऋग्वेद १०।५५।५, सामवेद ३२५।१७८२

सब जानिए कि जीवन की ये चार अवस्थाएं शिशुत्व, कुमार, यौवन और जरा ही जीवन-संगीत है। इसी को उर्दू भाषा में "तरानाए जिन्दगी" और बाइबिल में "Psalm of Life" नामों से पुकारा गया है। सारा संसार हो इन चार अवस्थाओं और अन्त में मृत्यु का ही खेल है।

परन्तु इस विस्मय संसार में एक विचित्र सी बात यह है कि चहुँ ओर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि साधारणतः इन संगीतमय चार अवस्थाओं वाली मानवदेह से मिलती-जुलती और कोई अन्य वस्तु दिखाई नहीं देती अर्थात् ऐसी और कोई वस्तु नहीं है जो अपनी पैदाइश से लेकर अन्त तक इन चार अवस्थाओं की द्योतक हो। परन्तु निराशा की कोई बात नहीं, यहां क्या कुछ नही मिलता है। जैसे महाकाव्य महाभारत ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही इसके निर्माता स्वयं वेदव्यास जी ने लिखा है कि इसमें धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र और मोक्ष सम्बन्धी सब कुछ आगया है और यहां तक लिख दिया है कि जो कुछ इसमें है वह और किसी भी स्थान में नहीं है :—

यदिहास्ति तदन्यत्र, यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्

वैसे ही खोज करने पर मानवदेह से मिलती जुलती चार अवस्थाओं वाली आखिर मिल ही गई—"दरिया" के रूप में। लगभग ८० वर्ष हुए (जब मैं दूसरी कक्षा का विद्यार्थी था) मुझे एक नज्म (कविता) एक उर्दू की छोटी-सी पुस्तिका में "दरिया सम्बन्धी" पढ़ने को मिली, वह कविता मुझे बहुत प्यारी लगी, उसके सम्बन्ध में उस समय मेरे विचार कुछ और थे, परन्तु कालान्तर में उसे समय-समय पर गुनगुनाते रहकर उसके रहस्य का चिन्तन कर और ऊपर लिखे वेदमन्त्र (विधुं दद्राणं......) में मानवदेह की चार अवस्थाओं से इस दरिया की रवानगी से उसकी चार अवस्थाओं का मिलान करने पर अब मैं इस पुरानी कविता को "जीवन-संगीत" के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूं। यह नज्म (कविता) एक प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रशंसक और दरिया के बीच वार्तालाप को लेकर लिखी गई है। दरिया की मस्ती भरी रवानगी को देखकर, प्रशंसक दरिया से कुछ पूछ ही बैठा, परन्तु (दरिया, जड़ पदार्थ होने के कारण बोलने में असमर्थ) कवि ने दरिया के अन्तर की कल्पना करके, उस भाव को अपने शब्दों में व्यक्त किया, वह दरिया के अपने स्रोत से निकलने के समय से लेकर अन्त में समुद्र में लय होने तक की मस्ती भरी जीवन गाथा है जो मानवदेह की शैशवत्व, कौमारम् यौवनम्, जरा और अन्त में मृत्यु तक की गाथा उसका सही पर्याय है। यही वह जीवन-संगीत है, जिसमें सारा संसार समाया है।

अतः पाठकगण इसको पढ़ें, इसके गूढ़ रहस्य को समझें, विचार-मग्न हो जीवन की शेष यात्रा में इन पंक्तियों को गुनगुनाते हुए बढ़ते चलें :—

तुलसी जब मैं आया जगत् में, लोग हंसे मैं रोया,
ऐसी करनी कर चलूं, मैं हंसूं जग रोए।
वह काम करूं जिन्दगी आराम से कटे यह मेरी,
वो चाल चलूं कि लोग याद मुझे किया करें।
गर कहीं जिकर हो मेरा, तो जिकरे खैर हो,
और नाम लें लोग, तो अदब से लिया करें।

दरिया की कहानी

सुना प्यारे दरिया कुछ अपनी कहानी,
कहां से तेरा बहता आता है पानी।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्यवीर दल : एक संक्षिप्त परिचय

—हरिश्चन्द्र स्नेही, एम. ए., बी एड.

भारतवर्ष ऋषियों, मुनियों सन्तों, महात्माओं की पुण्य भूमि है। उन्नीसवीं शताब्दी में इसी पुण्य भूमि पर जब अन्धविश्वास, रूढ़िवादिता, सामाजिक बुराइयों और अत्याचारों का बोलबाला था उस समय टंकारा में एक बालक का जन्म १८२४ ई० में हुआ जिसका नाम मूलशंकर रखा गया। सच्चे शिव की खोज में भटक रहे इस बालक मूलशंकर को महागुरु स्वामी विरजानन्द ने वैदिक ज्ञान देकर सच्चा महर्षि स्वामी दयानन्द बनाया और आदेश दिया कि जग से अज्ञानरूपी अन्धकार दूर करके वेदवाणी के प्रकाश से ही प्रकाशित करो। गुरु आज्ञा शिरोधार्य करके वेदवाणी के प्रचार प्रसार तथा प्राणी मात्र के कल्याणार्थ महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने १८७५ ई० में बम्बई में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना की थी और संसार में फैले पाखण्डों का विरोध करना आरम्भ कर दिया। इससे साम्प्रदायिकता से परिपूर्ण विधर्मियों के पांव उखड़ने लगे। जब स्वामी जी के सम्मुख पाखण्डियों की दाल नहीं गली तो उन्होंने स्वामी जी को मरवाने के लिए अनेक षड्यन्त्र किए। उन्हीं के षड्यन्त्रों का स्वामी जी शिकार हुए। स्वामी जी का १८८३ ई० में दीपावली के दिन निर्वाण हुआ। इस प्रकार वेद निधि का एक प्रकाश स्तम्भ गिरने से एक सूर्य का अस्त हुआ। स्वामी जी के निर्वाण प्राप्ति के पश्चात् विधर्मियों ने पुनः अपने पाव फैलाने का असफल प्रयास किया जिसका दयानन्द के भक्तों ने मुह तोड़ जवाब दिया। इस समय साम्प्रदायिकतावादी तत्त्वों एवम् अन्य विधर्मियों ने जब आर्यसमाज के सगठन को नष्ट करना चाहा तो भारतीय संस्कृति, आर्यसमाज एवम् वेदनिधि को रक्षा के लिए एक ऐसे संगठन को आवश्यकता अनुभव की गई। उत्साही आर्यनेताओं के प्रयत्नों से चरित्रवान् एवम् बलशाली युवकों को एक सेना तैयार की गई जिसका नाम "आर्यवीर दल" रखा गया।

इसमें कोई सन्देह नही आर्यसमाज रूपी इस पौधे को सीचकर वट वृक्ष बनाने के लिए कुछ आर्यवीरों को अपना बलिदान देने का श्रेय प्राप्त हुआ। इनमें अमर शहीद पं० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द एवम् महाशय राजपाल जी का नाम सर्वोपरि है। जब तक सूर्य और चाँद रहेंगे तब तक ये दिव्य सितारे भी अपनी शक्ति के फलस्वरूप चमकते रहेंगे और हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

आर्यवीर दल :—

- आर्य—आर्य शब्द का सीधा सादा अर्थ श्रेष्ठ व्यक्ति है। महाभारत एवम् गीता के आधार पर वह व्यक्ति जिसमें आस्तिकता, ज्ञान, सन्तोष, मन पर नियन्त्रण, सत्य भाषण, उत्साह, कर्तव्यनिष्ठा, विद्वत्ता, दया, नम्रता और जितेन्द्रियता आदि गुण हों आर्य कहलाता है।
- वीर—जिस व्यक्ति में उत्साह का संचार हो, शारीरिक दृष्टि से बलिष्ठ और पराक्रमी हो, जिसे देखने मात्र से शत्रु के होश उड़ जायें वह वास्तव में वीर कहलाता है।
- दल—ऐसे युवकों के संगठन को जिनमें श्रेष्ठ बुद्धि, श्रेष्ठ चरित्र, तार्किक शक्ति, पराक्रम, प्राणिमात्र के कल्याण की भावना, शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक एवम् अन्य गुणों का समावेश हो दल कहलाता है।

आर्यवीर दल के उद्देश्य :-

१ वैदिक धर्म, सभ्यता एवम् सस्कृति को रक्षा तथा इसके प्रचार और प्रसार में सहयोग प्रदान करना।

२ आर्यसमाज एवम् महर्षि स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तो का प्रचार तथा प्रसार करना।

३ मानव जाति का शारीरिक, आत्मिक एवम् सामाजिक दृष्टि से उत्थान करके उनमें वैचारिक क्रांति लाना।

४ प्राणिमात्र को सेवा करना।

५ देश की एकता, अखण्डता तथा इसकी रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना।

६ स्वयं आर्यवीर बनकर विश्व को आर्यवीर बनाना।

आर्यवीर दल की स्थापना :—

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के क्रान्तिकारी अभियान तथा उनके निर्वाण के पश्चात् उनके अमर वीर सैनिकों ने धर्मान्धता के कुचक्र को ध्वस्त करना आरम्भ किया तो स्वार्थी तत्त्वों ने षड्यन्त्र रचाकर कई महापुरुषों के प्राण ले लिए। षड्यन्त्रकारियों के अपवित्र इरादों को विफल करने के लिए त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी की अध्यक्षता में १९२७ ई० में दिल्ली में एक विराट् सम्मेलन आयोजित किया गया और इसके परिणामस्वरूप २६ जनवरी १९२९ को "आर्यवीर दल" की स्थापना की गई। महात्मा नारायण स्वामी जी को इसका अध्यक्ष बनाया गया। आर्यवीर दल के नियमित सचालन हेतु महात्मा नारायण स्वामी जी की अध्यक्षता में सन् १९३१ ई० में द्वितीय महासम्मेलन का आयोजन किया गया और इसमें यह निर्णय लिया गया कि आर्यवीर दल की शाखा प्रत्येक आर्यसमाज, नगर एवम् प्रान्त में लगाई जाएगी जिसमें अधिक से अधिक नवयुवको को प्रशिक्षित किया जावेगा आर्यवीर दल के नवयुवकों के प्रशिक्षण से विधर्मी एवम् साम्प्रदायिक लोगों में खलबली मच गई। उनके स्वप्न चूर-चूर होने से उनके आक्रमण रुक गये। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने सन् १९३६ ई० में आर्यवीर दल के नियमों में संशोधन किया। आर्यवीर दल की बागडोर उत्साही, कर्तव्यनिष्ठ, पराक्रमी, विवेकी, शूरवीर, ईमानदार एवम् कुशल युवक श्री ओम्प्रकाश त्यागी को सौंपी गई। उनके गतिशील एवम् कुशल नेतृत्व में सन् १९४२ ई० में पहली बार ४०० आर्यवीरों का शिविर दिल्ली में बदरपुर नामक स्थान पर आयोजित किया गया।

इतिहास बात का साक्षी है कि आर्यवीर दल नामक इस संगठन ने समय पर अपने साहसिक एवम् शौर्यपूर्ण कार्यों द्वारा विश्व में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है।

आदर्श आर्यवीर —

एक आदर्श आर्यवीर मे उपरोक्त वर्णित गुणों के अतिरिक्त निम्नलिखित गुणों का समावेश होना भी अत्यन्त आवश्यक है :—

१ राम जैसा आज्ञापालक एवम् मर्यादा पुरुष।
२ लक्ष्मण जैसी वीरता और तप।
३ हनुमान जैसी स्वामी भक्ति।
४ श्री कृष्ण जैसी निर्भीमानता, नीति एवम् योग विज्ञान।
५ बालक भरत के समान निर्भीकता।
६ वीर शिवाजी जैसी नीतिनिपुणता एवम् साहस।
७ महाराणा प्रताप जैसा स्वाभिमान।
८ भामाशाह जैसी उदारता।
९ कर्ण जैसा दानवीर।
१० हरिश्चन्द्र जैसा सत्यवादी।
११ चाणक्य के समान राजनीति का ज्ञान।
१२ जयमल फत्ता जैसा युद्ध प्रयाण।
१३ वीर बालक हकीकत जैसा धर्म प्रेम।
१४ श्रवणकुमार जैसी पितृभक्ति।
१५ बन्दा बैरागी और तेगबहादुर जैसा बलिदान।
१६ गुरु गोविन्दसिंह के बच्चों जैसी वीरता व धर्मनिष्ठा।
१७ स्वामी दयानन्द जैसा अखण्ड ब्रह्मचर्य और वेदज्ञान।
१८ रानी झांसी जैसा संग्राम और पन्नाधाय सा बलिदान।
१९ एकलव्य के समान गुरुभक्ति।
२० विक्रमादित्य के समान न्यायप्रियता।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

केन्द्रीय मंत्रिमंडल किसको क्या मिला

नई दिल्ली, २२ जून (वार्ता), मंत्रिपरिषद् के सदस्यों की विभागों सहित सूची इस प्रकार है—

श्री पी.वी. नरसिंह राव —कार्मिक लोकशिकायतें, पेंशन विज्ञान और टेक्नालाजी, समुद्र विकास, इलेक्ट्रानिक्स परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष, रसायन और उर्वरक, ग्रामीण विकास नागरिक पूर्ति और सार्वजनिक वितरण, रक्षा और उद्योग विभाग फिलहाल प्रधानमंत्री ने अपने पास रखे हैं।

श्री अर्जुनसिंह —मानव संसाधन विकास
श्री बलराम जाखड़ —कृषि
श्री शंकरराव चव्हाण —गृह
श्री माखनलाल फोतेदार —स्वास्थ्य व परिवार कल्याण
श्री गुलाम नबी आजाद —संसद कार्य
श्री सी.के. जाफर शरीफ —रेल
श्रीमती शीला कौल —शहरी विकास
श्री सीताराम केसरी —कल्याण
श्री के. विजय भास्कर रेड्डी —कानून न्याय और कंपनी मामले
श्री माधवराव सिंधिया —नागरिक उड्डयन और पर्यटन
श्री बी. शंकरानंद —पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस
श्री विद्याचरण शुक्ल —जल संसाधन
श्री मनमोहन सिंह —वित्त
श्री माधवसिंह सोलंकी —विदेश

राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार

श्री गिरधर गोमांगो —खाद्य प्रसंस्करण उद्योग
श्री हंसराज भारद्वाज —योजना एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन
श्री पी. चिदम्बरम —वाणिज्य
श्री संतोष मोहन देव —इस्पात
श्री अशोक गहलोत —कपड़ा
श्री तरुण गोगोई —खाद्य
श्री कमल नाथ —वन एवं पर्यावरण
श्री अजीत कुमार पांजा —सूचना एवं प्रसारण
श्री राजेश पायलट —संचार
श्री कल्पनाथ राय —ऊर्जा और गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत
श्री के. राममूर्ति —श्रम
श्री पी.ए. संगमा —कोयला
श्री जगदीश टाईटलर —भूतल परिवहन
श्री बलरामसिंह यादव —खान

राज्यमंत्री

श्री कमालुद्दीन अहमद —नागरिक आपूर्ति एवं सार्वजनिक वितरण
श्री एम. अरुणाचलम —शहरी विकास
कुमारी ममता बनर्जी —मानव संसाधन विकास मंत्रालय में युवा मामले और खेल
श्री एदुआर्डो फलेरियो —विदेश
श्री एम. आ. एच. फारुक —नागरिक उड्डयन और पर्यटन
श्री एम.एम. जेकब —संसदीय कार्य और गृह
श्री रंगराजन कुमारमंगलम —संसदीय कार्य और कानून, न्याय एवं कम्पनी मामले
श्री एस कृष्णकुमार —पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस
श्री पी.जे. कुरियन —उद्योग
श्री कामाख्याचरण लेका —कृषि
श्री एम. मल्लिकार्जुन —रेल
श्री चिंतामोहन —रसायन और उर्वरक
श्री उत्तम भाई एच. पटेल —ग्रामीण विकास
श्रीमती मार्गरेट अल्वा —कार्मिक लोक शिकायतें और पेंशन
श्री शांताराम पोटदुखे —वित्त
श्री मुल्लापल्ली रामचंद्रन —कृषि
श्री दलबीरसिंह —वित्त
श्री जी. वेंकटस्वामी —ग्रामीण विकास
श्री पी. के. थुंगन —उद्योग

उपमंत्री

श्री पवनसिंह घटोवार —श्रम
श्रीमती के. कमलाकुमारी —कल्याण
श्री सलमान खुर्शीद —वाणिज्य
श्री पी. वी. रंगय्या नायडु —संचार
श्री रामलाल राही —गृह
कुमारी गिरिजा व्यास —सूचना और प्रसारण

आर्य वीर दल नरवाना की ओर से विशाल शिविर का आयोजन

नरवाना में २-६-९१ से ९-६-९१ तक आर्यवीर दल नरवाना ने एक ग्रीष्मकालीन शिविर लगाया। जिसमें हरयाणा, पजाब व उत्तर-प्रदेश से ९० आर्य वीरों ने तथा केवल नरवाना शहर से ४८ आर्य वीरों ने भाग लिया।

जिसका उद्घाटन श्री धर्मपाल जी आर्य पूर्व प्रधान आर्यसमाज नरवाना में विधिवत् २-६-९१ को किया तथा पूज्यपाद स्वामी रत्नदेव जी, अधिष्ठाता आर्य वीरदल हरयाणा, कुलपति गुरुकुल कुम्भाखेड़ा व कन्या गुरुकुल खरल ने ओ३म् का झण्डा फहरा कर शुभारम्भ किया।

इसमें [८ दिन तक आर्यवीरों को शारीरिक, सामाजिक व आत्मिक उन्नति के मार्ग का उपदेश दिया गया, तथा श्री चन्द्रभान जी भजनोपदेशक (जीन्द) ने अपने शिक्षाप्रद भजनों के द्वारा बच्चों को आत्मा उन्नति का मार्ग बताया।

इसी के सन्दर्भ में ८-६-९१ को नरवाना में एक विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता श्री रायसिंह जी आर्य ८४ वर्ष ने अपने हाथ में ओ३म् का झण्डा उठाकर की, उनके पीछे सभी आर्य वीर बैण्ड बाजे समेत ऋषि दयानन्द की जय हो, आर्यसमाज अमर रहे, के नारे लगाते तथा श्री वेदप्रकाश जी आर्य मन्त्री आर्यवीर दल हरयाणा की अध्यक्षता में प्रदर्शन दिखाते हुए जोशीले गीत गाते हुए शोभायात्रा की शोभा बढ़ाते रहे। इस शोभा यात्रा के समय श्री राजबीर जी (जीन्द) व्यायाम शिक्षक ने तथा श्री ब्रह्मचारी बलजीत जी कावला ने लाठी के अनेक करतब दिखाए।

इस शिविर के मध्य-मध्य में श्री ओमकुमार जी आर्य (जीन्द) आकर के मानव को अपने जीवन को उन्नत बनाने का उपदेश देते रहे। तथा श्री उमेदसिंह जी संचालक आर्य वीर दल हरयाणा ने आर्य वीरों को आर्य वीर दल का महत्त्व बताया।

अन्त में ९-६-९१ को मुख्य अतिथि श्री बाबूराम जी धनौरीवाले नगरपालिका प्रधान नरवाना ने समापन करते हुए आर्यवीरों के उत्साह के लिए ५१०० रुपये का दान देते हुए आगे भी इसी प्रकार से सहायता देने का वचन दिया, सभी ने तालियां बजाकर धन्यवाद किया।

श्री नरेशकुमार आर्य प्रधान आर्यसमाज नरवाना ने आर्यवीरों का उत्साह बढ़ाते हुए हर सम्भव सहायता करने का आश्वासन दिया।

अन्त में श्री राधाकृष्ण जी आर्य प्रधान आर्य वीरदल नरवाना ने सभी का धन्यवाद करते हुए, सभी आर्य वीरों को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा की, आर्य राष्ट्र का निर्माण करने के लिए इस प्रकार के शिविरों के आयोजन की आवश्यकता बताई।

अश्वनीकुमार आर्य
मन्त्री
आर्य वीरदल नरवाना (जीन्द)

बहुभाषी राव एक तपे तपाये नेता हैं

(दैनिक वीर अर्जुन से साभार)

नई दिल्ली, २० जून (वार्ता), कांग्रेस (इ) संसदीय दल के नेता चुने जानेवाले पी. वी. नरसिम्हा राव पांच दशक के राजनीतिक उतार चढ़ाव से तपकर निकले हुए एक कुशल और अनुभवी प्रशासक हैं।

वह देश के नौवें प्रधानमन्त्री हैं और इस पद पर पहुंचने वाले दक्षिण भारत के पहले नेता भी। पण्डित जवाहरलाल नेहरू से लेकर श्री चन्द्रशेखर तक, केवल श्री मोरारजी देसाई को छोड़कर सभी प्रधानमन्त्री उत्तरप्रदेश के रहे हैं।

२८ जून, १९२१ में आंध्र प्रदेश के करीमनगर में जन्मे श्री राव के लिए यह पद जन्मदिन का उपहार भी माना जा सकता है। सत्तर वर्षीय श्री राव की आंध्र प्रदेश के मुख्यमन्त्री से केन्द्रीय राजनीति के शीर्ष की यात्रा में अनेक पड़ाव आये। वह राज्य के मन्त्री से लेकर केन्द्र में अनेक महत्वपूर्ण विभागों के मन्त्री रह चुके हैं।

श्री राव ने गत माह बहुत ही दुखद परिस्थितियों में पार्टी का अध्यक्ष पद सम्भाला जब पूर्व प्रधानमन्त्री और कांग्रेस (इ) अध्यक्ष राजीव गांधी की हत्या के बाद पार्टी के साथ देश के सामने भी संकट आगया। अपने साथियों में पीवी के नाम से लोकप्रिय श्री राव केन्द्र में रक्षा, विदेश, मानव संसाधन, विधि, स्वास्थ्य एव शिक्षा विभाग के मन्त्री रहे। वह पहली बार १९६२ में आंध्र में मन्त्री और बाद में मुख्यमन्त्री बने।

वह स्वभाव से कवि हैं। उनकी शिक्षा-दीक्षा उस्मानिया, बम्बई और नागपुर विश्वविद्यालयों में हुई। वह हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, तेलगू, कन्नड़, मराठी, फारसी, अरबी, स्पेनिश और फ्रेंच भाषाओं के ज्ञाता हैं। बहुभाषी होने के नाते उन्हें देश का सबसे सफल विदेश मन्त्री माना गया। उनकी साहित्यिक उपलब्धियों में साहित्य अकादमी का सम्मान भी है जो उन्हें विश्वनाथ सत्यनारायण की कृति 'वेई पडागलू' के हिन्दी अनुवाद पर मिला।

श्री राव छ: वर्ष तक ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रवर समिति के अध्यक्ष रहे। उनके राजनीतिक जीवन की शुरुआत छात्र जीवन में हुई जब निजाम सरकार ने 'वंदे मातरम्' गाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। १९३८ में शुरु हुआ यह आन्दोलन लम्बे समय तक चला जिससे उनका अध्ययन भी प्रभावित हुआ। राज्य में ब्रिटिश दमनचक्र के समय उन्होंने वकालत छोड़ दी और १९४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया, आजादी के बाद श्री राव १९५७ से २० वर्ष तक आंध्र प्रदेश विधान सभा के सदस्य रहे और मन्त्री से मुख्यमन्त्री तक का पद सम्भाला। वह पहली बार करीमनगर जिले के मथानी विधानसभा से चुने गए। बाद में भी वहीं से चुनाव जीतते रहे।

श्री राव पहली बार १९६२ में संजीव रेड्डी मन्त्रिमण्डल में मन्त्री बने और के ब्रह्मानन्द रेड्डी तक के मन्त्रिमण्डल में रहे। वह तीन वर्ष तक राज्य के मुख्यमन्त्री रहे।

उन्होंने राज्य में अनेक महत्त्वपूर्ण काम किए जिनमें तेलगू को सरकारी भाषा बनाना प्रमुख है। श्रीमती इन्दिरा गांधी उन्हें राजनीति में लाईं और १९७५ में पार्टी के महासचिव बनाये गये। वह १९८० में विदेशमन्त्री बने। चार वर्ष तक इस पद पर रहे और १९८८ में पुन: यही मन्त्रालय सम्भाला। इस दौरान वह गृह, रक्षा, मानव संसाधन विभाग के मन्त्री रहे।

श्री राजीव गांधी ने श्री राव को भरपूर सम्मान दिया और १९८४ में पार्टी की शानदार जीत के बाद उन्हें रक्षामन्त्री बनाया। बाद में वह मानव संसाधन विकास मन्त्री बने।

उनके पिछले माह पार्टी अध्यक्ष चुने जाने पर किसी को हैरानी नहीं हुई क्योंकि पार्टी में श्री राजीव गांधी के बाद उनका स्थान था। श्री राव को उनके गुणों और सार्वजनिक जीवन में उनकी भूमिका के कारण सभी लोगों ने सम्मान दिया। उनके पार्टी अध्यक्ष चुने जाने पर विपक्षी दलों की प्रतिक्रिया भी बहुत अनुकूल रही। श्री राव विधुर हैं। उनके तीन पुत्र और पांच पुत्रियां हैं।

छात्रवृत्तियां

(नव सत्र : जुलाई १९९१ से अप्रैल १९९२)

श्री वजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से नये सत्र के लिए गुरुकुलों, स्कूलों, महाविद्यालयों, व्यावसायिक प्रशिक्षणालयों और अनुसन्धान संस्थानों के सुयोग्य और सुपात्र छात्र/छात्राओं और स्पर्धात्मक परीक्षाओं के परीक्षार्थियों और परीक्षार्थिनियों की छात्रवृत्तियां देने का कार्यक्रम शुरु हो गया है।

इन छात्रवृत्तियों से लाभ उठाने के इच्छुकों को चाहिए कि ट्रस्ट द्वारा नियत आवेदन पत्र मंगवाकर शीघ्र ही ट्रस्ट के आदरी सचिव के नाम पर निम्नलिखित पते पर भेजें।

गत सत्र में इस कार्यक्रम पर २६००० व्यय किये गये हैं। इस सत्र के लिये यह राशि बढ़ाकर रुपये ३५००० कर दी गई है।

सत्यदेव आदरी सचिव
श्री वजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट सी-३२ अमर कालोनी,
लाजपत नगर नई दिल्ली-११००२४

हरयाणा आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

आर्यसमाज बरोदा जिला रोहतक	२४ से ३० जून
आर्यसमाज लाम्बा जिला भिवानी	२८ से २९ जून
आर्यसमाज प्रेमनगर करनाल	८ से १४ जुलाई
आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार	८ से १४ जुलाई

—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य महिला का देहान्त

औरंगाबाद मितरौल जिला फरीदाबाद के प्रमुख आर्यसमाजी महाशय किशोरसिंह आर्य सरपंच की धर्मपत्नी का देहान्त १९ जून १९९१ ई० को होगया। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा परिवार-जनों को धैर्य प्रदान करे।

—सभा मन्त्री

आर्यसमाजों के चुनाव

वैदिक प्रचार मण्डल अम्बाला छावनी

संरक्षक—पं० देवदत्त, प्रधान—दानवीर वेदप्रकाश शर्मा, उप-प्रधान—१. सोमदत्त आर्य, २. खैरातीलाल, मन्त्री—वेदमित्र हापुड़वाले, उपमन्त्री—१. सुदेश गुप्ता, २. ओ. पी. सिंगला, कोषाध्यक्ष—कृष्ण-कुमार, पुस्तकाध्यक्ष—देशराज।

आर्यसमाज चरखी दादरी जि० भिवानी

प्रधान—श्री सत्यनारायण शर्मा, उप-प्रधान—मनुदेव शास्त्री, मन्त्री—हुकमचन्द आर्य, प्रचार मन्त्री—राजेन्द्रकुमार, उपमन्त्री—हरिश्चन्द्र लाम्बा, कोषाध्यक्ष—रिफूराम, सह-कोषाध्यक्ष—महावीर शास्त्री, लेखानिरीक्षक—हरिश्चन्द्र गौड, संरक्षक—डा० रामनारायण बावला।

आर्यसमाज के अधिकारी ध्यान दें

मैं अपने कटु अनुभव के आधार पर यह लिख रहा हूं। मैंने अनेक आर्यसमाजों में जाकर देखा है, उनके साप्ताहिक सत्संग में भी गया हूं। मैं निराशावादी तो नहीं हूं परन्तु आर्यसमाजों में मैंने जो निम्न त्रुटियां देखी हैं उनसे ऐसा लगता है कि आर्यसमाज में नीरसता आगई है। यही कारण है कि उपस्थिति कम रहती है। मेरी प्रार्थना है कि आर्यसमाज की उन्नति के लिए अधिकारी ध्यान दें। यदि उनके यहां कोई त्रुटि है तो शीघ्र दूर करने की चेष्टा करें—

१ आर्यसमाज में एक सेवक और पुरोहित अवश्य होना चाहिए। यदि योग्य पुरोहित न मिले या रखने में समाज समर्थ न हो, सेवक तो होना चाहिए ताकि आर्यसमाज में आनेवाला अतिथि परेशान न हो। सेवक सदाचारी व व्यवहारकुशल होना चाहिये। प्रायः देखने में आया है कई सेवक आर्यसमाज में आनेवाले अतिथि से दुर्व्यवहार करते हैं और धूम्रपान करते हैं। यदि आर्यसमाज सेवक भी नहीं रख सकता तो आर्यसमाज मन्दिर के द्वार पर मन्त्री या प्रधान का नाम और पता लिखा होना चाहिये।

२ आर्यसमाज के सत्संग में आनेवाले हर नये आदमी से उसका परिचय पूछना चाहिये और स्वागत सहित भविष्य में आते रहने का निवेदन करना चाहिये। मैंने यह त्रुटि कई आर्यसमाजों में देखी है। मैं उनके सत्संग में समाप्ति तक बैठा रहा, किसी ने मुझसे कुछ नहीं पूछा।

३ प्रत्येक आर्यसमाज में साप्ताहिक सत्संग की उपस्थिति का एक रजिस्टर होना चाहिए जिसमें उपस्थिति के हस्ताक्षर होने चाहिये। अधिकारियों का कर्त्तव्य है कि रजिस्टर को देखकर मालूम करते रहना चाहिये कि कौनसा सदस्य लगातार दो तीन सप्ताहों से सत्संग में नहीं आरहा है। उसके घर जाकर न आने का कारण मालूम करना चाहिये। यदि वह किसी संकट में है उसकी सहायता करना परमावश्यक है।

४ आर्यसमाज के छठे नियम के अनुसार प्रत्येक आर्यसमाज को जनता की भलाई के लिये कोई परोपकार का कार्य करना चाहिये। जैसे औषधालय, पुस्तकालय, विद्यालय आदि खोलने चाहिये।

५ आर्यसमाज के पर्व सभी समाजों को एकत्र होकर मनाने चाहियें और उनमें कभी-कभी सहभोज भी रखना चाहिये।

देवराज आर्य
प्रचार मन्त्री, आर्यसमाज
बल्लभगढ, जि० फरीदाबाद

चतुर्वेद शतकम् यज्ञ सम्पन्न

जाखल मण्डी (हिसार) दिनांक ८ व ९ जून को श्री प्रकाशचन्द जी गुप्ता प्रधान आर्यसमाज जाखल मण्डी के घर चतुर्वेद शतकम् यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसका ब्रह्मत्व श्री पं० कर्मवीर जी शास्त्री (हिसार) ने किया। इन दो दिनों में वेदप्रचार भी हुआ। जिसमें श्री प० धर्म प्रकाश जी विद्यावाचस्पति (टोहाना) ने भजनों के माध्यम से विभिन्न विषयों पर प्रकाश डाला, साथ ही पं० कर्मवीर जी के मौलिक तथा सुमधुर भाषण हुये। इस यज्ञ में परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त अन्य लोगों ने धर्म लाभ उठाया।

अरविन्दकुमार 'कमल'
आर्यसमाज टोहाना

बालको !

बालको तुम देश की तकदीर हो।
भारत मां के सपनों की तसवीर हो॥

(१) विद्या पढ़कर सबके सब विद्वान् हो।
ब्रह्मचर्य का पालन कर बलवान हो।
धर्म के अनुसार चलो धर्मवीर हो।
बालको तुम······

(२) मानव हो मानवता से तुम्हें प्यार हो।
जीवन का उद्देश्य पर उपकार हो।
संकट में पड़कर कभी न अधीर हो।
बालको तुम ······

(३) भगतसिंह, सुखदेव, दत्त तुम्हीं तो हो।
बिस्मिल, ऊधम, धींगड़ा तुम हो तो हो।
शिवाजी, प्रताप की शमशीर हो।
बालको तुम······

(४) भीम अर्जुन जैसे योद्धा तुम बनो।
भीष्म से ब्रह्मचारी सरीखे तुम बनो।
अभिमन्यु हकीकत जैसे वीर हो।
बालको तुम ······

(५) देश अपने पर न्योछावर तन करो।
दीन दुःखियों के दुःखों को तुम हरो।
प्रभाकर तुम देश के रणधीर हो।

बालको तुम ······

सू० मेजर मातुराम शर्मा

वेदप्रचार करायें

वेद कथा, संस्कार, शंका समाधान यज्ञ, विचार गोष्ठियां, संगठनात्मक रूप सेवा आदि के लिए सम्पूर्ण भारत में वेदप्रचार का तूफानी दौरा करनेवाले उत्साही क्रान्तिकारी, ओजस्वी, हृदयग्राही विचार सुनने के लिए अविलम्ब सम्पर्क करें।

पं० ब्रह्मप्रकाश शर्मा वागीश
क्रान्तिकारी वैदिक प्रवक्ता
आर्यसमाज, करोलबाग,
दिल्ली ११०००५

(पृष्ठ ३ का शेष)

भगतसिंह, राजगुरु सुखदेव, चन्द्रशेखर, रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला खां, रोशनसिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी, ऊधमसिंह, सुभाषचन्द्र बोस, ला० लाजपतराय, मंगल पाण्डे, वीर सावरकर एवम् अन्य क्रान्तिकारी वीरों जैसा स्वदेश प्रेम एवम् स्वतन्त्रता अभियान।

स्मरण रखो! आर्यसमाज एवं आर्यवीर दल के संगठन से ही अज्ञान, अन्याय, अभाव, जातिपांति, अस्पृश्यता, नारी उत्पीड़न, मादक द्रव्यों का सेवन, निम्न वर्ग का शोषण एवं अन्य बुराइयों को दूर किया जा सकता है। आर्यवीर दल के संगठन से ही राष्ट्रीयता, सभ्यता और संस्कृति की रक्षा, शक्ति संचय और प्राणिमात्र की सेवा हो सकती है। आर्यवीर दल से ही चरित्रवान्, उत्साही, बलिष्ठ, सुसंस्कृत और अनुशासित युवकों का निर्माण हो सकता है। इन्हीं के कन्धों पर ही आर्यसमाज का उज्ज्वल भविष्य निर्भर करता है।

हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने अपने स्वार्थों को तिलाञ्जलि देकर भावी पीढ़ी का निर्माण करने का संकल्प लें। ऋषि दयानन्द तथा वेदवाणी के अनुसार कार्य करें। इन कार्यों को करके ही "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" "अस्माकम् वीरा उत्तरे भवन्तु" जैसे उद्घोषों को पूरा कर सकेंगे और तभी वास्तव में आर्यराष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।

हरयाणा में आठ सदस्यीय भजन सरकार पदारूढ

चंडीगढ़, २३ जून (एजेंसियां) हरयाणा में कांग्रेस (आई) के मुख्यमंत्री भजनलाल के नेतृत्व में आठ सदस्यीय मंत्रिमंडल पदारूढ हो गया। इसी के साथ ही राज्य में पिछले ढाई माह में लगा राष्ट्रपति शासन समाप्त हो गया। मंत्रियों के विभागों का बटवारा कल होगा।

राज्यपाल धनिकलाल मंडल ने राजभवन में आयोजित एक भव्य समारोह में श्री भजनलाल और उनके मंत्रिमंडल सहयोगियों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। श्री भजनलाल ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली जबकि सात अन्य को कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ दिलवाई गई। भजनलाल मंत्रीमंडल के सदस्य हैं सर्वश्री शमशेरसिंह सुरजेवाला, वीरेन्द्रसिंह, मांगेराम, एस. चौधरी कर्तारदेवी, राव बंसीसिंह और महेन्द्रप्रतापसिंह। श्री भजनलाल पांच वर्ष के अंतराल के बाद तीसरी बार राज्य के मुख्यमंत्री बने हैं।

श्री भजनलाल १९७९ में पहली बार मुख्यमंत्री बने थे। १९८२ में विधानसभा चुनाव के बाद वह फिर मुख्यमंत्री बने और १९८६ तक इस पद पर बने रहे। चार जून १९८६ को उन्होंने श्री बंसीलाल की खातिर इस्तीफा दे दिया। इस घटनाक्रम को पंजाब समझौते के शीघ्र क्रियान्वयन के लिए उठाया गया कदम बताया गया था।

शपथ ग्रहण के बाद में श्री भजनलाल ने संवाददाताओं को बताया कि सातों मंत्रियों के विभागों की घोषणा कल कर दी जायेगी। उन्होंने बताया कि विधानसभा का सत्र समाप्त हो जाने के बाद वे मंत्रिमंडल का विस्तर करेंगे। यह सत्र दस जुलाई से होगा। उन्होंने यह भी बताया कि श्री धनिन्न कुमार उनके मुख्य सचिव होंगे। श्री कुमार फिलहाल केन्द्र में पदस्थ हैं। उन्हें वापस राज्य में बुलाने का अनुरोध किया जा रहा है। नये मुख्यमंत्री ने राज्य प्रशासन और पुलीस में भी फेरबदल के संकेत दिये हैं।

जब उनसे केन्द्रीय मंत्रिमंडल में हरयाणा के प्रतिनिधित्व न दिये जाने के बारे में पूछा गया तो उन्होंने बताया कि यह प्रधानमंत्री का विशेषाधिकार है। फिर भी वह प्रधानमंत्री से राज्य के किसी व्यक्ति को मंत्रीमंडल में प्रतिनिधित्व देने का अनुरोध करेंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि श्री देवीलाल सरकार के कार्यकाल में देश दिवालियापन के कगार पर पहुँच गया। इसकी बजाए वह किफायत पर जोर देंगे।

श्री भजनलाल ने कहा कि उनकी सरकार का पहला काम राज्य में कानून और व्यवस्था की स्थिति में सुधार लाना होगा। उन्होंने कहा कि सरकार सतलुज यमुना लिंक नहर के पंजाब के हिस्से को शीघ्र पूरा करवाने और हरयाणा को रावी व्यास पानी का हिस्सा दिलाने की कोशिश करेगी।

उन्होंने कहा कि उनकी सरकार केन्द्र से आग्रह करेगी कि वह पंजाब सरकार से नहर निर्माण का काम अपने हाथ में ले ले और अगर जरूरत पड़े तो सेना तैनात करके नहर निर्माण का काम पूरा करवाये। पंजाब में उग्रवादियों द्वारा नहर परियोजना के अधिकारियों की हत्या के बाद निर्माण कार्य रुक गया था।

श्री भजनलाल ने कहा कि राज्य के बिजली ग्रिड में अगले तीन महीने के अंदर २५ प्रतिशत क्षमता और जोड़ने की कोशिश की जायेगी।

इस सवाल पर कि क्या वह पूर्व उपप्रधानमंत्री देवीलाल और उनके पुत्र ओमप्रकाश चौटाला द्वारा अपने शासनकाल के दौरान कथित भ्रष्टाचार और अनियमितताओं की जांच के लिए आयोग का गठन करेंगे। श्री भजनलाल ने कहा कि वह पूरे मामले पर बारीकी से गौर करने के बाद फैसला करेंगे।

श्री भजनलाल ने आरोप लगाया कि श्री देवीलाल और उनके परिवार ने हरयाणा को बर्बाद कर दिया। उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने अनियमितताए की उन्हें बख्शा नही जायेगा। लेकिन सरकार बदले की भावना से कोई काम नहीं करेगी और सब कुछ कानून के तहत किया जायेगा।

डिजनीलैंड परियोजना का विरोध करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि इस परियोजना को लागू नही किया जायेगा तथा सरकार द्वारा अर्जित भूमि लौटा दी जायेगी। उन्होंने कहा कि देवीलाल और चौटाला शासन के दौरान पत्रकारों के खिलाफ बदले की भावना से दायर सभी मामलों को वापस ले लिया जायेगा।

(पृष्ठ १ का शेष)

जारही है।

"इस दुनिया में जो आता है उद्देश्य साथ कुछ लाता है।
जो पूर्ण उसे कर जाता है वही सफल जन्म कहलाता है॥"

६—क्रान्तिवीर श्री हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी पार्टी के अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर आजाद थे, वे अपने साथियों को प्रत्येक दिन दो आने भोजन के लिए भेजते थे, परन्तु स्वयं भोजन पर केवल एक आना व्यय करते कभी-कभी तो सूखी रोटी गुड के साथ चबा-चबाकर खा लेते, पानी पी जाते। यह है तप त्याग की पराकाष्ठा।

१०—श्री नेताजी सुभाषचन्द्र से एक मित्र ने पूछा बाबूजी आप विवाह क्यों नहीं करते हो? थोड़ा विचारकर नेताजी ने उत्तर दिया कि राष्ट्र सेवा में इतना व्यस्त हूं कि विवाह के सम्बन्ध में विचारने का समय ही मेरे पास नहीं है। अकेले सुभाष बाबू ने एक विशाल आजाद हिन्द फौज इकट्ठी करली थी।

भगवान् से प्रार्थना है राष्ट्र में फिर हकीकतराय, रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह, पं० लेखराम पैदा हों, शिवाजी सुभाष सरीखे साहसी आवें। राष्ट्र में कभी भी तपस्वी वीरों का अभाव न हो, राष्ट्र कमजोर न पड़े। राष्ट्रजन राष्ट्रभूमि को उपजाऊ, सीमा को सुरक्षित, आन्तरिक सुव्यवस्था, मातृभूमि को निष्कंटक बनायें। बाहर भीतर से कोई राष्ट्र को भूमि का अपमान करे न सहें। देश को सुन्दर निरापद बनाकर बेवल, वीर्य, पराक्रम, पुरुषार्थ, चरित्र, शक्तिशाली, समृद्ध बनाकर आदर्श सुराज्य बनावें। राष्ट्र की भूमि का सम्मान बढाने के लिये इस भूमि को मातृभूमि कहें।

(पृष्ठ २ का शेष)

किधर जारहा है टहलता-टहलता,
कदम तोल-तोल और बल-बल है चलता।
पहाडी है अपनी जन्मभूमि प्यारी,
झड़ी पै थी बर्खा की हस्ती हमारी।
था ऊँचे पै सूत के इक अपना झूला,
चमन चार सू जिसके था एक फूला।
निकल आया एक दिन मैं दीवाना बनकर,
मचाता चला शोर खा-खाकर चक्कर।
कहीं फूल थे मुझ पै झुक-झुक के आते,
लजाकर के होठों पै कुछ मुस्कराते।
पहाडी के नीचे मैं बहुत उछला-कूदा,
किनारों के अन्दर चला मैं मटकता।
मगर अब गया वह खुशी का जमाना,
वो जाता रहा मौजों का सब तराना।
अब तो आता है कानों में शोरे समन्दर,
गढा कोई दम में पिटारों के अन्दर।

यह जीवन-संगीत बड़ा ही शिक्षाप्रद है। वास्तव में जिस किसी देव दयानन्द जी जैसे महान् आत्मा ने इस जीवन के रहस्य को समझा, सचमुच वही सफल मनोरथ हुए और भवसागर से तर गए, अन्य तो जन्म-मरण की दलदल में नीचे ही धंसते जाते हैं :—

ईर्मेव ते न्यविशन्त केपयः। —ऋग्वेद १०।४४।६

अतः मनुष्य को चाहिए कि जैसे दरिया (नदी) किनारों के अन्दर बहता हुआ, आसपास की भूमि को उपजाऊ और हरी-भरी करता हुआ सहस्रों के जीवन का आधार बनता है, परन्तु यही दरिया जरा मस्ती में आकर ज्योंही किनारे से बाहर बहने लगता है तो सबके विनाश का कारण बन जाता है, वैसे हो मानव को चाहिए कि वह मस्ती हर्षोल्लास का जीवन तो बिताए परन्तु सावधान होकर वैदिक मर्यादाओं का पालन करता हुआ लोकहित-समाजहित की भावना से भरपूर सरल गति से चले और इसके परिणामस्वरूप विद्वानों और परमात्मा के प्रेम का पात्र बनकर जीवनलीला समाप्त करें। इति।

"आर्यवीर प्रशिक्षण एवं स्वास्थ्य शिविर"

आर्य वीर प्रशिक्षण एवं स्वास्थ्य शिविर का आयोजन आर्य वीर दल, भिवानी द्वारा ३ जून से ९ जून तक गांव नीमड़ीवाली में युवकों का एक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें जिला भिवानी के लगभग ८० युवकों ने भाग लिया। युवकों को इस शिविर में चरित्र, अनुशासन एव वैदिक विचारधारा के साथ-साथ योगासन, व्यायाम इत्यादि का प्रशिक्षण दिया गया।

इस अवसर पर ८ व ९ जून को महर्षि दयानन्द विद्यालय नीमड़ीवाली में संस्था द्वारा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें डा० जे. एस. सोही सिविल सर्जन भिवानी के निर्देशन में विभिन्न रोगविशेषज्ञों के द्वारा अनेकों बिमारियों का उपचार किया गया एवं गर्भवती महिलाओं व शिशुओं को रोगनिरोधक टीके लगाए गए। इस अवसर पर एक लघु प्रदर्शनी लगाई गई व स्वास्थ्य अधिकारी ने गांव के लोगों एवं युवकों को सम्बोधित करते हुए बताया कि शिशु व गर्भवती महिलाओं को रोग बचाव के टीके समय पर अवश्य लगवाने चाहिएं व स्वास्थ्य शिक्षा तथा चरित्र निर्माण पर अधिक बल दिया। शिविर के समापन समारोह के अवसर पर संस्था की ओर से चिकित्सकों को आर्ष साहित्य भेंट किया गया।

इस शिविर से करीब ५०० लोगों ने लाभ उठाया।

भवदीय
विमलेश आर्य मण्डल पति आर्य वीरदल, भिवानी

तुम हिला सकते हिमालय

तुम मनुज हो, शक्ति तुममें है अपरिमित,
काश ! तुम होते अगर अपने से परिचित,
पतझरों में तुम लगा मधुमास देते,
कोटि दलितों के अटल विश्वास बनते,
शंखध्वनि कर निज भुजाओं से किया करते प्रलय।
वीरता की शक्ति बनकर, तुम हिला सकते हिमालय।।
चाह होती यदि हृदय में, राह बन जाती स्वयं।
कर रही श्रृंगार वीरों का सदा अक्षय जय,
पत्थरों को तोड़कर, सरिता बहाते,
विघ्न सारे पन्थ के तुम हो हटाते,
शक्ति संचित कर बढ़ो, तुम नष्ट कर दो आपदाएं।
देखकर बढ़ते चरण को, कांप जायेंगी दिशाएं।।
वज्र सा उर है तुम्हारा, तुम बढ़ो,
लक्ष्य पर अपने सुपावन, तुम चढ़ो,
सूर्य बनकर रश्मि पावन तुम उगाओ,
प्रखर किरणों से तिमिर जग का भगाओ,
सूर्य-शशि के औ सितारों के बनो तुम अब प्रणेता।
चक्रवर्ती सम्राट् हो तुम, विश्व के अनुपम विजेता।।

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

'प्रखर'—वैशाख'२०४८

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० २३[illegible] [illegible] इजि नं० १ १८७२२ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,०९२

ओ३म् [illegible] विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८   अंक ३१   - जुलाई, १९९१   वार्षिक शुल्क ३०)   (आजीवन शुल्क ३०१)   विदेश में ८ पौंड   एक प्रति ७५ पैसे

प्राकृतिक पर्व परिचय

(प० धर्मदेव "मनीषी" वेदतीर्थ गुरुकुल कालवा)

१. नवसंवत्सरोत्सव: (संवत्सरेष्टि:)

समय—चैत्र शुक्ला प्रतिपदा अथवा मेष संक्रान्ति।

परिचय—करुणाकर भगवान् ने सृष्टि रचना को पूर्ण कर उसको वसन्त का रूप दे दिया था। वसन्त का अर्थ है वसनीय। सृष्टि को वसनीय बनाने के लिए उसके समस्त ओषधिवनस्पत्यादि वस्तुओं का पूर्ण विकास होना आवश्यक था। अत: सृष्टि का आरम्भ पूर्ण विकसित रूप में हुआ। अत: निश्चित है कि सृष्टि का आरम्भ वसन्त में हुआ। चैत्र और वैसाख वसन्त के दो मास हैं। अत: सृष्टि का प्रारम्भ चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को हुआ। इस पर्व को मनाते रहने के कारण ही आर्य लोग सृष्टि संवत् को स्मरण रख सके हैं, तथा इसी वर्ष से ब्रह्मदिन, वैवस्वतादि, मन्वन्तर, सतयुगादि युग, कलिसंवत्, विक्रम संवत् प्रारम्भ होते हैं। आज सृष्टि उत्पन्न हुये १,९६,०८,५३,०९१ वर्ष व्यतीत होचुके हैं। आर्यों [illegible] अभिनन्दन का दिवस यही है।

२. हरि तृतीया (हरियाली तीजो)

समय—श्रावण शुक्ला तृतीया।

परिचय—वर्षा की झड़ी लग जाती है। चारों ओर हरियाली ही हरियाली दृष्टिगोचर होने लगती है। ऐसे समय भारत के कृषक ज्ञानी जन व महिलाओं ने नाना रूपों में प्रकृति के मधुमय आनन्द को स्वीकार करने के लिये इस पर्व की योजना की। इसमें सब मिलकर गान, संगीत, कविता, कथा या झूला झूलने में भाग लेकर आनन्द उठाते हैं। आर्यों को भी प्रकृति के आनन्दमय स्वर में स्वर मिलाकर मधुर गान, कविताओं व अन्य आनन्दमय सात्विक वस्तुओं से अपने को आनन्दित करना चाहिए।

३. श्रावणी उपाकर्म (ऋषि तर्पण)

समय—श्रावण शुक्ला पूर्णिमा।

परिचय—यह पर्व ऋषि ऋण से अनृण होने के लिये समस्त आर्यों को स्वाध्याय की प्रेरणा देनेवाला पर्व है। वेदों की रक्षा प्राचीन ऋषि मुनियों के समान वेद व वैदिक सिद्धान्तों के स्वाध्याय व उनके क्रियात्मक प्रचार से ही सम्भव है। यह बहुत प्राचीनकाल से उपाकर्म (स्वाध्याय प्रारम्भ) के दिन के रूप में मनाया चला आरहा है। ऋषियों की तृप्ति स्वाध्याय से ही संभव है। अत: समस्त आर्य इस दिन अपने जीवन में स्वाध्याय करने का दृढ़ संकल्प करें। इस पर्व की सुरसरित् में बाद में जाकर भाई और बहिन की पवित्र स्नेह सरित् का भी संमिश्रण होगया। अत: इसका परिरक्षण भी परमावश्यक है।

४. विजयादशमी

समय—आश्विन शुक्ला दशमी

परिचय—वर्षा के समाप्त होने से समाज के सभी वर्ग अपने अपने जीवन में नूतन विजय के लाभ के लिये फिर से तैयार होकर निकल पड़ते हैं। प्राचीन वैदिक युग में व्यापारी अपने व्यापार लाभ के लिये, क्षत्रिय अपनी दिग्विजय के लिये तथा ब्राह्मण साधना व सद्धर्म विस्तार के लिए आज ही के दिन दीर्घयात्रा पर निकलते थे। श्री रामचन्द्र जी ने भी इसी दिन लंका विजय व राक्षसराज रावण को उसके कर्मों का उचित दण्ड देने के लिये पम्पापुर से अभियान किया था। वस्तुत: रामचन्द्र जी ने चैत्र कृष्णा अमावस्या को रावण वध किया था, परन्तु अब भ्रान्ति से विजयादशमी को ही रावण वध का दिन मान लिया गया है और उस दिन रावण वध भी किया जाता है जो इतिहास के विरुद्ध है।

५. शारदीय नवसस्येष्टि (दीपावली)

श्रीमद्दयानन्द निर्वाण

समय—कार्तिक कृष्णा अमावस्या।

परिचय—शरद ऋतु की समाप्ति में केवल १५ दिन शेष रहते हैं। हेमन्त का शीघ्र ही आरम्भ हो जाएगा। किसान का घर अन्न धान, माष, मूंग, बाजरा, तिल और कपास से भरपूर होने को है। किसान उल्लसित है, परन्तु ऋषियों की बात का वह अनुगमन करेगा। खेत में नवीन अन्न का स्वयं भोग करने से पूर्व परमात्मा का धन्यवाद व दिव्य शक्तियों की तृप्ति भी यथासामर्थ्य करेगा क्योंकि योगिराज श्रीकृष्ण की यह आज्ञा है—

"देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु व: ।"

संसार की दिव्य शक्तियां हमें सहारा देती हैं। हम इस उत्सव में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश की क्षीण हुई शक्ति को फिर पूर्ण करेंगे। इस निस्वार्थ भावना को स्थिर रखने व कृतज्ञ बने रहने के लिए इस दिन यज्ञ किया जाता है। वैदिक ऋषियों ने भी यही विधान किया है। इस मानव संस्कृति के अतिरिक्त एक और भी इस पर्व का महत्त्व है और वह है अमावस्या की अन्ध तमसी व वर्षा के द्वारा दूषित वातावरण को दूर करने के लिए जगमगाते दीप। इस दिन प्रत्येक व्यक्ति चाहे निर्धन हो या धनिक, अपने घर सरसों के तेल के दीपक जलाता है। इसके साथ ही यही अमा थी जिसमें एक ओर नानादीप जलाये जारहे हैं और दूसरी ओर एक अलौकिक ज्योति बुझ चली थी। प्रत्येक आर्य को मौन होकर महर्षि दयानन्द के इस निर्वाण दिवस के अवसर पर उनके उपकारों को स्मरण कर आर्यसमाज के उत्थान में अपने सहयोग व सेवाओं का मूल्यांकन करना चाहिये तथा महर्षि का कृतज्ञ बनने का दृढ़ संकल्प करना चाहिये।

६. मकर सौर संक्रान्ति

समय—सूर्य का मकर राशि में आने का दिन।

परिचय—इस दिन सूर्यदेव दक्षिणायन की गति छोड उत्तरायण पथ का आश्रय ले लेते हैं। यह अभ्युदय का प्रारम्भ व अयन का परिवर्तन समय है अत: बहुत प्राचीनकाल से इस दिन महायज्ञ होता चला आता है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

आर्य संस्कृति के विद्वान् नवयुवक नेता— पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

जो महर्षि दयानन्द सरस्वती की मृत्यु के दृश्य को देखकर नास्तिक से आस्तिक होगये, जिनका निर्वाण शताब्दी समारोह सारे देश में मनाया जारहा है।

डा० शान्तिस्वरूप शर्मा, पत्रकार, कुरुक्षेत्र

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य विख्यात वैदिक विद्वान् तथा ऋषि मिशन के लिए समर्पित युवा मनीषी पं० गुरुदत्त विद्यार्थी पहले नास्तिक थे।

वह अजमेर ३० नवम्बर सन् १८८३ को महर्षि दयानन्द की मृत्यु का दृश्य देखने गए। लाहौर में इस नवयुवक ने महर्षि से भगवान् क्या कोई शक्ति है के बारे में वार्तालाप को थी उस पर गुरुदत्त ने उत्तर दिया था कि "स्वामी जो आपने जो मेरे प्रश्नों का उत्तर दिया उसका मेरे पास उत्तर नहीं परन्तु मेरी आत्मा नहीं मान रही है कि ईश्वर कोई शक्ति है।

गुरुदत्त उस समय १९ वर्ष के थे। उस पर स्वामी दयानन्द सरस्वती का बड़ा प्रभाव था इसीलिए वह अजमेर पहुच गया यह देखने के लिए कि वह कैसा महापुरुष है जिसने अपने शरीर छोड़ने की तारीख और समय को १५ दिन पहले घोषणा कर दी थी।

गुरुदत्त बड़े गौर से महर्षि की सहनशक्ति को देखकर चकित था कि महर्षि का सारा शरीर फूट रहा है और वह बड़े प्रसन्न दिखाई पड़ रहे थे। उनके शरीर में से विष फूटकर निकल रहा था परन्तु वह प्रसन्न थे। उन्होंने हजारों नर-नारियों जो सारे देश से पहुँचे थे को सम्बोधित करते हुए कहा कि "प्रभु तूने बड़ी लीला की है भगवान् ने जितना काम मेरे से लेना था वह मैंने किया। अब आप उचित समझे तो उसे आगे बढाना यह कहकर वह बैठकर समाधि में चले गए और तीन बार कहा प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो। यह कहकर उन्होंने प्राण त्याग दिए।

नास्तिक गुरुदत्त ने महर्षि के निर्वाण होने पर चिल्लाकर कहा, मैं आस्तिक बन गया हू। उसने कहा कि अजमेर आने से पहले मैं नास्तिक था नास्तिकता और आस्तिकता के विचारों में डूबा हुआ था। मैं एक भटका हुआ राही था। महर्षि दयानन्द सरस्वती की मृत्यु ने मुझे आस्तिक बना दिया। मेरी आत्मा में प्रकाश आगया प्रकट होगया और मैं आस्तिक बन गया। पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का जीवन ही बदल गया।

एम. ए. की परीक्षा फर्स्ट क्लास नम्बरों में पास की। १८८६ में आपको राजकीय महाविद्यालय में नौकरी मिल गई परन्तु कुछ समय के पश्चात् कालेज की नौकरी छोड़ दी और महर्षि के लिखे हुए सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका और दूसरे धार्मिक ग्रन्थ पढ़े। उसने भारतवर्ष के कोने-कोने में जाकर अन्धकार में फंसे लोगों को वेदों के ज्ञान का प्रकाश दिया। आप सारे देश में प्रसिद्ध होगए। इस नवयुवक ने १७ पुस्तकें तीन वर्ष के थोड़े समय में इतना काम किया कि उसका स्वास्थ्य बिगड़ता चला गया। उसने सन् १८८७ से १८९० तक कार्य किया। आर्य संस्कृति के प्रचार के लिए इतना काम किया कि लोग हैरान होगए।

महापुरुष गुरुदत्त विद्यार्थी का स्वास्थ्य खराब होता चला गया और उसे टी. बी. (तपेदिक) होगया। आपके दोस्तों और रिश्तेदारों ने विद्यार्थी जी को पहाड़ों में इलाज के लिए ले जाने का प्रोग्राम बनाया था। परन्तु पहाडों में भी जाकर ठीक न हो सके। १० मार्च, सन् १८९० को मृत्यु होगई। सारे देश में इस नवयुवक का शोक मनाया गया। २६ वर्ष के इस आर्य संस्कृति के विद्वान् नेता को केवल तीन वर्ष ही काम करने का अवसर मिला। हम इस आर्यनेता को श्रद्धांजलि भेंट करते हैं। इस बारे में उत्तर भारतीय सम्मेलन चंडीगढ में डी. ए. वी. कालेज में २९-३० जून को होरहा है।

—:o:—

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल सोनीपत १९९१ का परीक्षा परिणाम

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल सोनीपत का मिडल तथा मैट्रिक का परीक्षा परिणाम पिछले वर्षों को भांति इस वर्ष भी उत्तम रहा।

मिडल परीक्षा परिणाम—

कु० रुचि ६४३ अंक (हरयाणा में प्रथम स्थान लडकियों में)
कु० पुनम ६३६ अंक (हरयाणा में चतुर्थ स्थान)
कु० रजनी ६३५ अक (हरयाणा में पंचम स्थान)

मैट्रिक परीक्षा परिणाम—

कु० गीता ५३१ अक लेकर विद्यालय में प्रथम
कु० शीतल ५३० अक लेकर विद्यालय में द्वितीय
कु० अन्जु खण्डेलवाल ५२७ अक लेकर विद्यालय में तृतीय
कु० प्रभा गोयल ५२६ अक लेकर विद्यालय में चतुथ

एस० प्रभाकर, मुख्याध्यापिका

पुराणों के देवता और उनके वाहन

लेखक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

भोले बाबा चल दिये, बैठ बैल की पीठ।
क्या इनके मन में बसी, ऐसी उत्तम सोट ॥१॥
बाबा तो पीछे रहे, श्री गणेश सरताज।
मूषक पर बैठा फिरे, समझ हवाई जहाज ॥२॥
दुर्गा बैठी शेर पर, वायें पैर पसार।
इसने भूरे शेर को, समझा मोटर कार ॥३॥
सरस्वती जी मोर पर, बैठी लखे हमेश।
समझ रखा है मोर को, गाड़ी एक्सप्रेस ॥४॥
सुनो शनीचर बनाया, काला रंग कलूट।
भैंसा ही को मानता, राजस्थानी ऊट ॥५॥
भैरो ने कुत्ता लिया, मन में भरी उमंग।
कुत्ते पर बैठा फिरे, समझा इसे तुरंग ॥६॥
चढी शीतला गधा पर, लेकर गर्म मिजाज।
ऐसा प्रिय वाहन चुना, समझ रही गजराज ॥७॥
लक्ष्मी को उल्लू मिला, ऊपर हुई सवार।
समझ स्कूटर उसी पर, करती प्यार दुलार ॥७॥
ब्रह्मा जी ने हंस पर, आसन रखा जमाय।
रेल राजधानी समझ, मन में रहे सिहाय ॥९॥
विष्णु बैठे गरुड़ पर, है अचरज की बात।
मोटरसाइकिल जानकर, घूम रहे दिन रात ॥१०॥

(पृष्ठ १ का शेष)

७. वसन्त पञ्चमी।

समय—माघ शुक्ला पञ्चमी।

परिचय—शिशिर के गर्भ में वसन्त का विकास हो चला है। चालीस दिन के बाद वसन्त अपने पूर्ण यौवन में होगा। उसका स्वागत आवश्यक है। प्रकृति ऊपर से निराश दिखाई देती हुई भी अपने अन्तर में भविष्य की मधुरता व स्वर्णिम आशा लिये हुये है। प्रकृति का अनुकरण करने के लिये हमें भी अपने मानस में मधुरता का संचार करना चाहिए।

८. वासन्ती नवसस्येष्टि (होलिका)

समय—फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा।

परिचय—यह जहां सामान्य जन के लिये वसन्त के यौवन का आनन्दोत्सव है वहां किसानों के लिए अधिक हर्ष इसलिये है कि उनके खेतों में अन्न परिपक्व होचुका है। शारदीय नवसस्येष्टि के समान ही इसमें भी ऋषियों के द्वारा नवान्न की आहुति देते हुवे विशेष एवं बृहद् यज्ञ करने का विधान विहित है। प्रत्येक आर्य गुलाल फेंकना, कीचड़ उछालना, गाली गलौच देना आदि कुप्रथाओं का त्याग करें। पूर्वकाल के अनुसार केवल गले मिलना, इत्र छिड़कना और बड़े लोगों के जीवन को स्मरण करना इतने तक ही सीमित रहना चाहिये।

इन प्राकृतिक पर्वों पर पहले दिन ही घर की शुद्धि कर लेनी चाहिये। अगले दिन प्रातः स्नान संध्यादि से निवृत होकर बृहद् यज्ञ व पर्व की आहुतियां देनी चाहियें। पर्वों की विधि के लिए "आर्य पर्व पद्धति" पुस्तक अवश्य आर्य परिवारों में होनी चाहिए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा यह पुस्तक प्रकाशित होती है।

चुनौतियां और नई सरकार

—अक्षय कुमार जैन

भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू कहा करते थे कि भारत की जितनी जनसंख्या है, उतनी ही समस्यायें हैं, जिनका समाधान समय-समय पर बननेवाली सरकारों को करना पड़ेगा। उनका यह वाक्य आज तक सत्य सिद्ध होरहा है।

सबसे प्रमुख और भीषण समस्या जो नई सरकार के सामने है वह है देश की वित्तीय और आर्थिक स्थिति की बिगड़ती हुई दशा।

पिछली कामचलाऊ सरकार को देश में पहली बार कोष से सोना निकालना पडा जो कि विदेशी देनदारी पूरी करने के लिए बनाया गया है। उसके सिवाय कोई उपाय नहीं था कि रिजर्व बैंक से विदेशी मुद्रा अर्जन के लिए बीस टन सोना गिरवी रखने को कहा जाये। यह ठीक है कि यह सोना वह है जो समय-समय पर तस्करी के रूप में जब्त किया गया था पर इसे राष्ट्र के खजाने में से उठाना पडा है। अभी विदेशी मुद्रा की स्थिति बहुत अनुकूल नही है। इसलिए सरकार को सभी दलों का सहयोग इस सम्बन्ध में प्राप्त करना होगा। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष तथा बैंक से उधार लेना उतना सरल नही होता।

कभी-कभी यह देखा गया है कि उनकी शर्तें बहुत अनुकूल नही होतीं। यह समस्या देश के लिए जीवन मरण का प्रश्न लेकर सामने खड़ी है। देखना यह है कि अनुभवी और कुशल प्रशासक के रूप मे विख्यात प्रधानमन्त्री नरसिंह राव इसका समाधान कितनी योग्यता से निकालते हैं। जन मानस को पेट पर पट्टी कसने के लिए तयार किए बिना काम चलता नहीं दिखता। इस अलोकप्रिय काम को राष्ट्रीय और राजनैतिक समर्थन बिना पूरा नहीं किया जा सकेगा।

हिंसा और आतंकवाद

इस बार चुनाव में हिंसा के जो दृश्य उपस्थित हुए वे चौकानेवाले और चुनौतीपूर्ण हैं। बिहार, उत्तरप्रदेश, आंध्रप्रदेश तथा कुछ अन्य राज्यों में स्वतंत्र और शांतिपूर्ण चुनाव कराना ही बड़ा भारी काम होगया था। देश में हिंसा का जो वातावरण बना है वह नई सरकार के लिए कम गंभीर चुनौती नहीं है। कश्मीर, पंजाब, असम और आंध्रप्रदेश में आतंकवादी गतिविधियां बहुत बढ़ गई हैं।

असम में चुनाव सम्पन्न होगये, वहां पर शीघ्र ही लोकतंत्रीय सरकार भी गठित हो जायेगी। फिर उसका काम होगा कि वह वहां विद्रोही तत्वों और आतंकवादी प्रवृत्तियों से निपटे और पुराने समझौते के अन्तर्गत वहां के सभी तत्वों को मुख्यधारा में लाये। केन्द्रीय सरकार का सीधा सम्बन्ध न होते हुए भी उसे राज्य की कानून और व्यवस्था की स्थिति ठीक से चलाने की व्यवस्था सुनिश्चित करनी होगी। तेल, चाय और लकड़ी के उद्योगों को आगे बढाना होगा क्योंकि इन्हें पहले हो बहुत हानि होचुकी है।

महंगाई

नई सरकार के सामने महंगाई एक बड़ी भारी समस्या है। पिछले एक वर्ष में रोजाना काम आनेवाली वस्तुओं के दामों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। गेहूं, चना, चावल तथा अन्य अनाजों के मूल्यों में २५ से ३० प्रतिशत वृद्धि होचुकी है, खाने के तेल तो पचास प्रतिशत से भी अधिक महंगे होगये हैं। देशी घी के भाव तो आसमान छू रहे हैं। वह एक सौ रुपया किलो तक मिलता है और इसमें भी यह भरोसा नहीं कि वह शुद्ध कितना है। दूध, डबलरोटी, मिर्च मसाले भी उसी अनुपात में महंगे होगए हैं। शाकाहारियों का मुख्य आहार दालें और सब्जियां हैं पर उनके भाव भी बहुत अधिक होगए हैं। पिछड़े और आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के लिए पेट भरना कठिन होरहा है। खाने पीने की वस्तुओं के दामों पर सरकार को तुरन्त कठोर नियन्त्रण करना पड़ेगा।

महंगाई ने बेरोजगारी की समस्या को और भी विकराल बना दिया है। आबादी में वृद्धि के साथ यह समस्या ऐसा रूप धारण कर रही है कि युवा वर्ग निराशा में कुछ भी करने को तैयार होजाता है। इसलिए हिंसक वृत्तियों को रोकने के लिए बेकारी और बेरोजगारी पर काबू पाना ही होगा।

इन समस्याओं के अलावा साम्प्रदायिकता, जातिवाद की प्रवृत्ति निरन्तर बढ़ रही है। इस पर भी प्रभावी अंकुश लगाना होगा। विदेशों में भारत की छवि को भी फिर सुधारना होगा।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के समाचार

१—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने जब से गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का नियन्त्रण अपने हाथ में लिया है, तब से यह गुरुकुल आर्यसमाज का प्रचार केन्द्र बन गया है। सभा उपमन्त्री श्री सत्यवीरसिंह शास्त्री, गुरुकुल झज्जर के लगनशील स्नातक श्री रणवीर शास्त्री, श्री चन्द्रपाल सिंह राणा, आचार्य हरिदेव जी आचार्य वेदपाल जी, ब० ओमप्रकाश जी यजुर्वेदी, पं० ओमप्रकाश जी सिद्धान्तशिरोमणि तथा सभा के उपदेशक पं० चन्द्रपाल शास्त्री, पं० हरिश्चन्द्र शास्त्री, पं० भजनलाल आर्य, पं० धर्मवीर आर्य एवं सभा के भजनोपदेशक पं० खेमसिंह जी, पं० मुरारीलाल बेचैन, स्वामी देवानन्द, स्वामी ओमानन्द आदि विद्वानों का यहा प्रचार केन्द्र बन गया है। यहां दैनिक यज्ञ, स्वाध्याय तथा रात्रि को प्रचार कार्यक्रम चल रहा है। गुरुकुल के चारों तरफ के ग्रामों में भी यहां से सभा के प्रचारक प्रचारार्थ जारहे हैं

२—चौ० धर्मचन्द जी मुख्य अधिष्ठाता के निर्देशन में गुरुकुल में छात्रों का नया प्रवेश तथा शिक्षण कार्य प्रारम्भ होगया है। आचार्य हरिदेव जी गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली की भांति इस गुरुकुल को एक आदर्श गुरुकुल बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

३—गुरुकुल में एक धर्मार्थ औषधालय चलाने के लिए डा० सुरेन्द्र जी को कार्यभार सौंपा गया है जिससे छात्रों तथा गुरुकुलवासियों की चिकित्सा समय पर की जा सके। बादशाह खां हस्पताल फरीदाबाद के डा० अरविन्द लोहान भी समय-समय पर इस शुभ कार्य में सहयोग देते रहते हैं।

४. सभा के अधिकारी तथा स्थानीय प्रबन्ध समिति के सदस्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को सुचारु रूप से चलाने तथा इसकी सम्पत्ति की सुरक्षा के लिए यत्नशील हैं। आशा है दानी महानुभावों तथा आर्य जनता के सहयोग से गुरुकुल की वर्तमान समस्याओं का शीघ्र समाधान हो जावेगा।

ग्राम जुगलान (हिसार) में शराब का ठेका बन्द

ग्राम जुगलान की पंचायत ने श्री दलीपसिंह सरपंच के नेतृत्व में समय से पहले पंचायत का रेजुलेसन पास करके गांव से इस वर्ष शराब का ठेका बन्द करवाकर बहुत ही सराहनीय कार्य किया है। अन्य ग्रामों की पंचायतों ने जहां ठेका है, उपरोक्त पंचायत से प्रेरणा लेकर ३० सितम्बर १९९१ से पहले पंचायत का रेजुलेशन भेजकर यह पाप के अड्डे ग्रामों से बन्द करवाने चाहिए। जिससे गावों में लोग सुख का जीवन जी सकें।

अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
सभा उपदेशक

अपील

जैसे किसी भी अंग पर चोट आते ही सारा शरीर तड़प उठता है वैसे ही गुजरात से आसाम और कश्मीर से कन्याकुमारी तक हमारा एक राष्ट्र है। इसमें हमारे गरीब भाइयों को सेवा और लोभ की आड में जो हमसे बिछुरे, बिछड़े और पिछड़े हुए हैं उनको साथ मिलाने के लिए दस वर्ष से कम से कम ७०-८० हजार कपड़ा मध्यप्रदेश में नंगी औरतों, बच्चों व बडों को दिया जारहा है। यह सभी कपड़े दान-दाताओं की भावनाओं से एकत्रित करके शुद्धि का कार्य चल रहा है। सीतापुर जिला सरगुजा और पत्थल गांव जिला रायगढ़ आदि क्षेत्र शुद्धि का प्रचार चल रहा है और गुरुकुलों में बच्चों को पढ़ाया जारहा है। जिन बन्धुओं को शुद्धि यज्ञ पर बिठाया जाता है उनको नया कपड़ा दिया जाता है।

नोट—जो व्यक्ति एक सूती साडी, एक बलाऊज और एक धोती एक कुर्ता बिल्कुल नई देंगे जो कि दोनों नग २२० रुपये के होते हैं मानो कि वे एक मनुष्य को वैदिक धर्म में प्रवेश करायेंगे।

निवेदक—

श्री वेदप्रकाश गुप्ता, प्रधान — सेवानन्द सरस्वती, महामन्त्री

भारतीय हिन्दू शुद्धि संरक्षिणी सभा
आर्यसमाज मन्दिर समालखा (पानीपत)

आर्यजगत् के नक्षत्र थे गुरुदत्त विद्यार्थी

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म सुविख्यात सरदाना वंश के राजा गदीश के कुल में २६ अप्रैल, १८६४ ई० में मुलतान नामक स्थान जाब (आधुनिक पाकिस्तान) में हुआ था। इनके पिता का नाम लाला रामकृष्ण था। इनकी माता जो यद्यपि अनपढ़ थी, परन्तु यालु एवं परम साध्वी थी। 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' की इस उक्ति को गुरुदत्त बचपन से ही पूर्णतया सत्य साबित करते हुए तिभाशाली एवं दृढ़-प्रतिज्ञ थे। इनका बचपन का नाम मूला था।

परन्तु बाद में इनका नाम बदल कर गुरुदत्त रखा गया, क्योंकि बहुत समय बाद गुरु की कृपा से लाला रामकृष्ण के घर पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई थी। भारत में उन दिनों ईसाई धर्म का प्रचार जोरों पर था। अनीश्वरवाद की खूब आंधियां चल रही थी। बड़े-बड़े विद्वान् एव आस्तिक व्यक्ति भी नास्तिकता की लपेट में आगये थे। अतः गुरुदत्त विद्यार्थी भी नास्तिक बन गये। उन्हें ईश्वर की सत्ता में शक होने लगा। उस समय हिन्दू लोग ईसाई और मुसलमानों के आगे हाथ फैलाकर अपनी मुक्ति की भीख मांग रहे थे। तभी 'आर्यसमाज रूपी भट्टी' में एक प्रचण्ड अग्नि धधक उठी। यह अग्नि की ज्वाला भारत में ईश्वर के प्रेरित पुत्र स्वामी दयानन्द के हृदय में उत्पन्न होकर प्रज्वलित हुई थी। स्वामी दयानन्द के विचार पूरे पंजाब भर में फैलने लगे। उन्होंने लुप्त हो रहे हिन्दू धर्म की रक्षा की और लोगों में धर्म के प्रति पुनः नव-जीवन का संचार किया और भारत में निरंतर बढ़ रही ईसाइयत एव अनीश्वरता की बाढ़ को रोक दिया। गुरुदत्त विद्यार्थी भी स्वामी जी के इन तर्कपूर्ण वेदानुकूल विचारों से प्रभावित हुए। तब तक वे पजाबी, फारसी, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त इतिहास तथा गणित का ज्ञान अर्जित कर चुके थे। दसवीं की परीक्षा में राज्यभर में पांचवें स्थान पर आकर पास करने तक वेदों के बारे में भी वे काफी पढ व सुन चुके थे। चूंकि विज्ञान में उनकी बचपन से ही काफी रुचि थी इसीलिए उन्होंने विषयातिरिक्त अन्य विज्ञान के कई ग्रंथ पढ़ डाले थे।

उन्होंने २० जून, १८८० को मुलतान में आर्यसमाज की सदस्यता का प्रार्थनापत्र भरा और सदस्य बन गए। अब वे आर्यसमाज के कार्यों में बढ़चढ़ कर भाग लेने लगे थे। जब अक्तूबर, १८८३ में अजमेर (राजस्थान) में स्वामी दयानन्द जी की भयानक बीमारी का समाचार जगल में आग की भांति सारे देश में फैल गया तो आर्यसमाज लाहौर की तरफ से स्वामी जी की रुग्णावस्था में सेवा करने के लिए गुरुदत्त जी तथा आर्यसमाज के तत्कालीन उपप्रधान लाला जीवनदास जी को नियुक्त किया गया। स्वामी जी के जीवन की अंतिम घड़ी में गुरुदत्त जी ने पुत्र की तरह प्रेमपूर्वक, निस्वार्थ भाव से सेवा की। जब स्वामी जी का अंतिम समय आया तो वे बोले, 'हे प्रभो ! तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो, कैसो अद्भुत लीला है तुम्हारी। इस प्रकार परमात्मा के प्रति अपनी दृढ़ आस्था प्रकट करते हुए गायत्री मंत्र का उच्चारण करने लगे और उच्चारण करते-करते शरीर त्याग दिया। इस अंतिम दृश्य ने गुरुदत्त जी के जीवन में एक नया संचार कर दिया। यहीं पर वे आत्मा और परमात्मा के रहस्य को जान गए।

स्वामी जी की मृत्यु के पश्चात् लाहौर में आर्यसमाज के प्रमुख व्यक्तियों की एक विशाल बैठक बुलायी गया थी। इस बैठक में यह निर्णय किया गया कि स्वामी दयानन्द जी की पवित्र स्मृति को चिरस्थाई बनाने के लिए उनके नाम पर एक ऐसी शिक्षण संस्था की स्थापना की जाए जिसके द्वारा संचालित स्कूलों व कालेजों में वैदिक ढंग के पठन-पाठन के साथ-साथ अंग्रेजी व विज्ञान के विषय पढ़ाने की सुविधा हो। इस प्रकार 'दयानन्द एंग्लो वैदिक' (डी. ए. वी.) संस्था की स्थापना हुई। इसके बाद डी. ए. वी. स्कूल व कालेज लाहौर के लिए चन्दा एकत्रित किया जाने लगा। इस शुभ कार्य के लिए सबसे पहले गुरुदत्त विद्यार्थी जी ने अपनी मासिक छात्रवृत्ति से २५ रु० दान दिया। इसी दिन गुरुदत्त विद्यार्थी जी ने एक भारी जनसभा में डी. ए. वी. कालेज की उपयोगिता पर ओजपूर्ण भाषण दिया। लोग उनके इस भाषण से अधिक प्रभावित हुए और उन्होंने खुश होकर यथाशक्ति कालेज के लिए चन्दा दिया। उनके प्रचार कार्यों से पहली जून, १८८६ को डी. ए. वी. स्कूल लाहौर की स्थापना हुई। डी०ए०वी० के इस आन्दोलन को उन्होंने अब और भी अधिक व्यापक बना दिया। १ अक्तूबर, १८८६ को उन्होंने आर्यसमाज अमृतसर के वार्षिकोत्सव पर एक प्रभावशाली भाषण दिया। इस भाषण ने लोगों के हृदयों को हिलाकर रख दिया। उनके भाषण में अलौकिक ओजस्विता थी। उनके इस प्रभावोत्पूर्ण भाषण को सुनकर श्रोताओं ने उन्हें पंडित कहना शुरू कर दिया। तब से उनके नाम के आगे पंडित शब्द जुड़ गया। आज जो डी०ए०वी० संस्थाओं का जाल पूरे भारत एव विदेशों में फैला हुआ है, यह सब पं० गुरुदत्त विद्यार्थी के अथक परिश्रम एव त्याग का फल है। इसलिए तत्कालीन पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों ने पं० गुरुदत्त विद्यार्थी को डी०ए०वी० आंदोलनों का जन्मदाता, डी०ए०वी० स्कूलों व कालेजों का संस्थापक एवं इस आंदोलन का सर्वश्रेष्ठ वक्ता बताया।

बाद में सरकारी नौकरी छोड़कर वह डी०ए०वी० कालेज में आकर जी-जान से कालेज को आगे बढ़ाने में लग गये। अत्यधिक व्यस्त रहने के कारण उनका स्वास्थ्य खराब होता गया, क्षय रोग ने उन्हें आ घेरा और विधि के क्रूर हाथों में केवलमात्र २५-२६ साल की आयु में १९ मार्च, १८९० को यह अमर सेनानी परलोक सिधार गया। उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर सारा देश शोकनिमग्न होगया।

उनकी निम्नलिखित रचनाएं हैं : (१) वैदिक संज्ञा विज्ञान (२) ईशोपनिषद् की अंग्रेजी व्याख्या (३) वैदिक टैक्स्ट भाग १, २, ३, (४) जीवात्मा के अस्तित्व के प्रमाण। —प्रकाश चन्द्र शर्मा

'हरो अंधेरा'

राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

हे दीपक !
स्वयं जलकर
तुम हरा करते अंधेरा
दे रहे हो तुम जगत को
प्रकाश-प्रभा
अपनी टिमटिमाती ज्योति से
नष्ट करते तुम अवनी के
तिमिर का घनघोर घेरा।
प्राण की बाती जलाते
जग, जगाकर
इस जगत से
कूच कर जाते स्वयं ही।
तन तुम्हारा-मन तुम्हारा
है सदा संलग्न रहता
दूसरों के हित सर्हषित,
हे मनुज।
तुम भी बनो, पावन सुदीपक
और अपने को जलाकर
ज्ञान का बन पुञ्ज अनुपम
हरो अवनि का
तुम अंधेरा।

सरकार की शराब नीति पर बरसे उपायुक्त

पानीपत, २८ जून (ससे)। यहां 'नशा मुक्ति दिवस' पर जिला उपायुक्त सरकार की शराब नीति पर जमकर बरसे। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार एक ओर तो नशाबन्दी का प्रचार कर रही है, दूसरी ओर गांव व शहर में शराब के ठेकों के साथ 'अहाते' खोल रही है। शराब के ठेकों के साथ अहातों का होना किसी भी सरकार की नीतियों में विरोधाभास को प्रकट करता है।

'नशा मुक्ति दिवस' यहां रेडक्रास सोसाइटी द्वारा आयोजित किया गया था। इस अवसर पर जिला पानीपत के गांवों के सरपंच, पंच व अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। नशा मुक्ति केन्द्र द्वारा जिले के उन गांवों के लोगों को विशेषरूप से आमन्त्रित किया गया था, जहां अवैध रूप से देशी शराब बनाई व पिलाई जाती है। पानीपत जिले में गांव बोहली, राक्सहेड़ा, महमूदपुर व सरफली आदि गांव अवैध शराब के लिए चर्चित हैं। नशा मुक्ति दिवस के अवसर पर पिछड़ी बस्तियों के लोगों को भी शराब के अवगुणों के बारे में बताया गया।

गांवों से आए लोगों को संबोधित करते हुए जिला उपायुक्त विजयकुमार ने कहा कि ठेकों पर बेची जानेवाली शराब को जायज कहना और लोगों द्वारा खुद बनाई जानेवाली शराब को अवैध शराब की संज्ञा देना कहां तक युक्तिसंगत है। उन्होंने कहा कि हमारे आस-पास का वातावरण ही ऐसा हो, तो भोले-भाले लोगों का क्या कसूर है। उपायुक्त ने कहा कि संविधान में भी मद्य-निषेध का उल्लेख किया गया है। परन्तु केन्द्र में बननेवाली सरकारों ने अभी तक इस ओर ठोस कदम नहीं उठाया है।

नशा मुक्ति दिवस के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि वास्तव में इस दिन का ध्येय यह होना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति यह आत्मविश्लेषण करे कि उसने अभी तक जीवन में क्या पाया है। उन्होंने कहा कि मानवता अगर इसी प्रकार नशे में डूबी रही, तो उसका अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा।

उन्होंने बताया कि नशा मुक्ति केन्द्र से मिलनेवाली दवाइयां व परामर्श तो सहारा मात्र है। असली इलाज तो दिल व दिमाग से किया जानेवाला दृढ़ निश्चय है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वह इस केन्द्र का लाभ उठाएं। नशा मुक्ति दिवस के अवसर पर उपायुक्त द्वारा १२ विकलांगों को तिपहिया साइकिल तथा व्हील-चेयर भी दो गई। नशा मुक्ति पर एक प्रदर्शनी भी लगाई गई। इस अवसर पर लोगों को नशाबन्दी पर विशेष तौर से तैयार किया गया नाटक 'जहर की घूंट' दिखाया गया।

जहरीली गैस : जिला प्रशासन ने मानसून शुरू होने से पहले ही नलकूपों की जहरीली गैस से सावधानी बरतने का अभियान शुरू करने के निर्देश दिए हैं। स्मरण रहे कि पिछले दो-तीन वर्षों से पानीपत व करनाल जिले में मानसून समाप्त होते ही नलकूपों के कुओं में बननेवाली जहरीली गैस से अनेक किसान मौत का शिकार हो चुके हैं।

जिला प्रशासन ने सभी खंड विकास एवं पंचायत अधिकारियों को आदेश दिए हैं कि वह सरपंचों व पंचों के माध्यम से लोगों को इस सम्बन्ध में जरूरी हिदायत दें। नलकूपों के कुओं में उतरने से पहले एक जलती हुई लालटेन कुएं में लटकाकर देखें कि वहां जहरीली गैस तो नहीं है। यह आदेश प्रशासन की तरफ से यहां कष्ट निवारण समिति की बैठक में दिए गए। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला उपायुक्त ने की।

(नवभारत टाइम्स)

—::०::—

गर्मियों में लू से बचाव

सूर्य के बिना धरती की कल्पना भी नहीं की जा सकती क्योंकि सूर्य जीवनदायी ऊर्जा का सबसे बड़ा स्रोत है लेकिन गर्मियों में यह सूर्य जानलेवा बन जाता है। हमारे देश में हर साल गर्मी में सैंकड़ों लोग काल के गाल में समा जाते हैं, जिनमें से अधिकांश की मृत्यु लू लगने की वजह से होती है।

लू लगने का पहला लक्षण यह है कि शरीर में जलन शुरू होजाती है। गला और मुंह सूखने लगते हैं। सिर में भयंकर पीड़ा होती है। कभी-कभी रोगी का जी मिचलाता है और वह उल्टियां करता है। उल्टियों से शरीर में जल का संतुलन और भी बिगड़ जाता है। रोगी बेहोश भी हो सकता है। यदि समय पर इलाज न किया जाए तो रोगी की मौत भी हो सकती है।

प्रकृति हर मौसम में उस मौसम की व्याधियों से बचने के लिए ढेर सारे साधन जुटाती है। इसलिए गर्मी में अपना खान-पान संतुलित करके हम लू से बच सकते हैं। आजकल अपने दैनिक खान-पान में मौसम के फलों और हरी सब्जियों पर ध्यान देना चाहिए। खरबूजा, तरबूज, फालसा खाइए। भोजन के साथ हरी सब्जियां लीजिए खास कर खीरा, ककड़ी और प्याज। पुदीने की चटनी और इमली भी लाभदायक है। नीबू का प्रयोग विशेषकर फायदेमंद है। नीबू आप किसी भी रूप में ले सकते हैं शिकंजवी बनाकर अथवा भोजन के साथ खाए जानेवाले सलाद में निचोड़कर। यदि दही की लस्सी में काला नमक, जरासी काली मिर्च और भुना पीसा जीरा डालकर पिया जाए तो वह आपका पेट साफ रखेगा। यानि कब्ज नहीं होगी।

गर्मी के मौसम में गर्म चीजों का सेवन या तो न करें या फिर बहुत कम करदें। मिर्च-मसाले, चाय, काफी, शराब, अण्डा, मांस-मछली, उड़द की दाल, सभी शरीर की गर्मी को बढ़ाते हैं। चिकनाई का सेवन भी कम कीजिए।

हल्के-फुल्के कपड़े पहनिए। गहरे रंग के कपड़े बिल्कुल नहीं। सबसे अच्छे रंग हैं—सफेद, पीला, हरा और नीला। महानगरों में गर्मी में रात को खुले में सोने का रिवाज खत्म होरहा है। खुले में सोने से शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है। सूरज निकलने से पहले तीन से पांच किलोमीटर पैदल चलना चाहिए। इससे दिन भर चुस्ती और फुर्ती बनी रहेगी। धूप में जाना पड़े और धूप बहुत ज्यादा तेज हो और पैदल चलना पड़े तो रूमाल को पानी में भिगोकर गर्दन के पीछे रख लीजिए।

धूप में बाहर निकलने से पहले पानी पीकर निकलें। पानी कई बीमारियों को दूर रखता है। गर्मी के दिनों में पानी की मात्रा बढ़ा देनी चाहिए, दिन में कम से कम १२ गिलास पानी पीजिए। भोजन के साथ बहुत कम पानी पीना चाहिए। बेहतर रहेगा कि भोजन के एकाध घण्टे पहले एक गिलास पानी पीजिए। इसके अलावा सुबह उठकर कुल्ला आदि करने के बाद कम से कम दो गिलास पानी पीजिए। यदि नींबू पानी में निचोड़कर पिया जाए तो ज्यादा फायदेमंद रहता है। गर्मी में नमक की मात्रा कुछ बढ़ा देनी चाहिए लेकिन जिन लोगों को उच्च रक्तचाप हो, उन्हें नमक से परहेज करना चाहिए।

यदि फिर भी किसी को लू लग जाए तो क्या करें? पहला काम यह कीजिए कि उसके जूते, चप्पल उतारकर ठंडी जगह में लिटा दीजिए। पखा-कूलर हो तो और भी अच्छा होगा। उसके कपड़े ढीले कर दीजिए। एक गिलास पानी में चौथाई चम्मच नमक, तीन चार चम्मच ग्लूकोज, चुटकी मीठा सोडा मिलादें और आधा नीबू निचोड़ दें। रोगी को यह घोल पिलाते रहिए। बुखार तेज हो तो चादर को पानी में भिगोकर रोगी के शरीर पर लपेट दें। सिर और गर्दन के पीछे बर्फ के पानी की पट्टी रखते जाइए। फिर अगर रोगी को आराम नहीं मिले तो फौरन किसी डाक्टर की सलाह लीजिए।

दैनिक पंजाब केसरी

—::०::—

यह कैसी विडम्बना है

शराब सब पापों की जननी है, इतिहास साक्षी है कि शराब से कितने राज्य नष्ट हुए कितने खानदान बर्बाद हुए और अब भी शराबी परिवार बुरी तरह तबाह होरहे हैं। सभी वेद-शास्त्र तथा महापुरुषों एवं धर्माचार्यों ने इसका सेवन सभी दृष्टि से वर्जित माना है। मनु महाराज ने तो शराब को अन्न का मल कहा है, मल (टट्टी) को कहते है। मल-मूत्र मनुष्य की खाने-पीने को वस्तु नहीं फिर भी अज्ञानी व स्वार्थी लोग शराब पीए जारहे है।

भारतवर्ष ऋषि-मुनियों की भूमि थी। बीच में यहां विदेशियों का शासन रहा, उन्होंने सब प्रकार से नष्ट करने की सोची लेकिन हमारी संस्कृति को नहीं मिटा सके। लेकिन अब भारतवर्ष आजाद है, तो भी एक गुजरात प्रान्त को छोड़कर सारे देश में शराब की नदियां बहाई जारही हैं। हरयाणा प्रान्त इस शराब बढ़ावा नीति में सबसे आगे है। कहां तो यह कहावत प्रसिद्ध थी कि देशों में देश हरयाणा जहां दूध-दही का खाना। अब स्वार्थी एवं घटिया राजनेताओं ने इसको बुरी तरह कलंकित कर दिया।

ज्यादातर नरनारी विवाह शादी में ज्यादा बराती ले जाना, कपड़े पहनकर बाजे में नाचना, हिजड़े बनकर नवयुवकों का नाचना, शराब पीना, शराब बेचना, गावों में शराब का ठेका खोलना, अध्यापक वर्ग का शराब पीना, परीक्षाओं में नकल करना करवाना, पनघट एवं शिक्षण संस्थाओं के पास ठेका खोलना, शराब पीकर आए दिन कतल झगड़े करना, किसी बहन-बेटी को बुरा ताकना या बोलना, पंचायत, विधानसभा एवं लोकसभा में बुरे शराबी व्यक्तियों का जाना आदि बातों को बहुत ही बुरा समझते हैं।

लेकिन यह कैसी विडम्बना है कि समय पर ज्यादातर नरनारी उपरोक्त बुराइयों का विरोध करने या कम करने की बजाय स्वयं भी ज्यादा बढ़ावा दे रहे हैं। इसी में अपनी शान समझते हैं, सारे परिवार सहित इन कुकर्मों को देखते एवं करते हैं। बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है कि कई गांवों में तो सरपंच नाम से आर्य कहाते हैं, गले में जनेऊ है और अपनी कलम से रेजुलेशन पास करके गांव में शराब का ठेका खुलवाते हैं। कई जगह गांव में आर्यसमाज एवं आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की प्रेरणा से महिलाएं एवं आर्य कार्यकर्ता गांव में शराब के ठेके धरने देकर बन्द करवाते हैं तथा गांव में अवैध शराब की बिक्री को रोकते हैं, शराबियों को शराब न पीने के लिए समझाते एवं बाध्य करते हैं लोग फिर भी बाज नहीं आते।

ज्ञातव्य है कि चार मास से आर्यसमाज कंवारी के अधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा विरोध करने, ठेकेदार की जीप में बोतल फोड़ने तथा चेतावनी देने पर जीप गांव में नही आती फिर भी मूर्ख एवं गन्दे लोग गांव से बाहर खेतों में सड़क पर जीप रुकवाकर शराब लाकर बेचते हैं। इसी तरह ग्राम बालावास में दो महिनों से अोड जाति की महिलाओं ने संगठित होकर विरोध करने तथा संघर्ष के बाद चेतावनी देने पर न गांव में जीप आती है, न कोई शराब बेचता है, लेकिन फिर भी शराबी बड़ी बेशर्मी के साथ एक किलोमीटर पैदल जाकर नलवा गांव के ठेके पर लाईन में खड़े तथा नशे में इधर उधर पड़े देखे जा सकते हैं। नलवा में भी पंचायत ने रेजुलेशन देकर शिक्षण संस्थाओं के साथ बस अड्डा पर मिनी ठेका खुलवा रखा है।

कई लोग दुःखी होकर हमसे सवाल पूछते हैं कि शराबियों से छुटकारा कब मिलेगा, महिलाओं की इज्जत कैसे बचेगी, कई लड़कियां शराबियों से तंग आकर अपने बच्चों को लेकर अपने माता-पिता के घर चली आती हैं उनका क्या होगा। शराब कैसे बन्द होगी। हमें निराश नहीं होना चाहिए। मेरा सुझाव है हम स्वयं शराब छोड़ें अन्य को छुड़वाये, आर्यसमाज के सदस्य बनें, संगठित होकर शराबियों का मुकाबला करें, शराबियों से रिश्ता न करें, महिलायें अपने आपको कमजोर न समझें हिम्मत से संघर्ष करें, ज्यादा बाराती न ले जावें, विवाह में बाजा को जगह आर्य भजनी बुलायें, वैदिक संस्कार करवायें, चुनाव में शराबी को वोट न दें। तभी हम इन बुराइयों से बच सकते हैं। संघर्ष ही जीवन है।

अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी
सभा उपदेशक

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में प्रवेश

सर्वसाधारण आर्यजनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ पूर्णरूपेण आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकार में है। यहां पर हरयाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की ८-वीं कक्षा तक तथा श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर की पाठविधि (जो महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध है) के अनुसार मध्यमा (१०+२) और शास्त्री (बी.ए.) कक्षा तक के अध्यापन का प्रबन्ध है। ३१ जुलाई तक प्रवेश चालू रहेगा। अतः प्रवेशार्थी अवसर का लाभ उठावें। योग्य आचार्य एवं अध्यापकों का समुचित प्रबन्ध है। पूर्ण जानकारी के लिए गुरुकुल कार्यालय में पधारकर अथवा फोन नं० २७५३१८ से सम्पर्क करें।

धर्मचन्द
मुख्य अधिष्ठाता
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ डा० नई दिल्ली-४४
जिला फरीदाबाद

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के मुख्याधिष्ठाता

आर्यजनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी की गुरुकुल-इन्द्रप्रस्थ के मुख्याधिष्ठाता पद पर चौ० धर्मचन्द जी पूर्व प्रबन्धकनिदेशक सहकारी बेंक एवं अतिरिक्त आर. सी. एस. हरयाणा को आदरी रूप में नियुक्त किया गया है। आप एक अनुभवी, ईमानदार तथा स्वच्छ छवि के अधिकारी रहे हैं। आर्यसमाज के कार्यों में रुचि रखते रहे हैं तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं को सहायता करते रहे हैं।

एक जुलाई को आपने प्रो० शेरसिंह जी सभा प्रधान के आदेशानुसार मुख्याधिष्ठाता का कार्यभार सम्भाल लिया है। इस अवसर पर सभामन्त्री श्री सूबेसिंह जी, पूर्व सभामन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री तथा प्रबन्ध समिति के सदस्य महाशय श्रीचन्द जी आदि उपस्थित थे।

आशा है इनके कार्यकाल में गुरुकुल निरन्तर उन्नति करता रहेगा।

सभामन्त्री

सदाचार

सदाचार से ही मानव दुनियां में इज्जत पाता है।
सदाचार से हीन मनुष्य दुनियां में ठोकर खाता है॥
माता-पिता की सेवा करना सज्जनों का आदर सत्कार।
दीन दुःखी को गले लगाकर छोटों से करना तुम प्यार॥
दुष्ट जनों से रहो परे ना उनसे कोई नाता है।
सदाचार से ही मानव दुनियां में इज्जत पाता है॥१॥
मातृवत् परदोष, परधन मिट्टी सम तू जान।
अपने जैसा दुःख-सुख सबका जो जाने सो ही विद्वान्॥
निज स्वार्थ हित किसी जीव को जो कभी नहीं सताता है।
सदाचार से ही मानव दुनियां में इज्जत पाता है॥२॥
कौन हूं मैं कहां से आया और मुझे कहां जाना है।
इन बातों का करके चिन्तन तत्त्वज्ञान को पाना है॥
मन को बस में करके निरन्तर आगे बढ़ता जाता है।
सदाचार से ही मानव दुनियां में इज्जत पाता है॥३॥
ऐसे सदाचारी मानव दुनियां को स्वर्ग बनाते हैं।
मुक्ति प्राप्त करके जीवन में दिव्य लोक में जाते हैं।
प्रभाकर सदाचारी का जीवन सफल हो जाता है।
सदाचार से ही मानव दुनियां में इज्जत पाता है॥४॥

सू० मेजर (धर्म शिक्षक)
पंडित मातूराम शर्मा प्रभाकर

सत्यार्थप्रकाश प्रेमी चले गये

चौ० मुन्शीराम विश्नोल वेदप्रचार ट्रस्ट के संस्थापक लम्बी बीमारी के पश्चात् २४ जून को शरीर त्याग कर गये। हजारों सत्यार्थ प्रकाश अपने जीवन में उन्होंने मुफ्त बांटे और छात्रवृत्तियां देते रहे। गुरुकुल बरौंडा और गुरुकुल डिकाडला के प्रधान रहे। एक लाख रुपये का ट्रस्ट छोड़कर गये हैं जिसके ब्याज से वेदप्रचार का कार्यक्रम निरन्तर चलता रहेगा।

ब्र० ओमस्वरूप, ट्रस्ट अध्यक्ष
गुरुकुल डिकाडला (पानीपत)

धर्महीन राजनीति ने क्या-क्या अपराध किए?

यह राजनीति इस भारत में क्या-क्या विपदा लाई है।
दया धर्म नैतिकता की सब मर्यादा बिसराई है॥
शासन सत्ता व स्वार्थ हेतु जो विधि अपनाई जाती है।
छल कपट पाप अन्याय भरी वह राजनीति कहलाती है॥
इस राजनीति के रूप अनेकों नहीं समझ में आते हैं।
विश्वास नहीं होता उन पर जो भी इसको अपनाते हैं॥

राज्य हेतु इस कुटिल राजनीति ने क्या-क्या करवाया।
कैकेई ने वर माग राम को चौदह वर्ष वन भिजवाया॥
बाली सुग्रीव भाई-भाई को इसी नीति ने लड़वाया।
सीता हरण लंका दहन रावण का मरण भी करवाया॥
राम के हाथों राजतिलक लंका का विभीषण ने पाया।
अपनी बहन की सन्तानों को कंस के हाथों मरवाया॥

कौरव-पाण्डव महायुद्ध इस नीति ने फैलाया था।
गुरु-शिष्य भाई-भाई ने लड़कर प्राण गवाया था॥
पृथ्वीराज चौहान को जयचन्द ने ही बन्दी बनवाया।
राणा प्रताप को मानसिंह ने ही रण में था हरवाया॥
इस नीति के कारण ही भारत गुलाम हो पाया था।
मुस्लिम व ईसाई राज इसके कारण ही आया था॥
देशद्रोहियों ने इनसे मिल अपनों को ही मरवाया।
राजनीति ने भारत मा का टुकड़ा-टुकड़ा करवाया॥
वोटों के लिए विघटनकारी तत्त्वों को फिर पनपाया है।
राजनीति ने अब हिंसा का भीषण चक्र चलाया है॥

पंजाब में भिण्डरावाला को ही कांग्रेस ने उकसाया।
अमृतसर के गुरुद्वारे को युद्धस्थल था बनवाया॥
भारत की सेना पर उसने गोली-गोला बरसाया।
खालिस्तानी मांग ने नरसंहार भयंकर करवाया॥
हत्याकांड इन्दिरा गांधी का इस कारण ही हो पाया।
काश्मीर में इस नीति ने सहस्र जनों को मरवाया॥
शरणार्थी लाखों हिन्दू को दर-दर पर भटकाया।
लंका में तमिलों का वध भारत द्वारा करवाया॥
रामजन्म भूमि विवाद इस नीति ने ही उलझाये।
नगर अयोध्या में इसने ही रामभक्त को मरवाये॥
इसके कारण निर्वाचन की दुखद अवस्था आई है।
राजीव सहित निर्वाचन में सैकड़ों ने जान गंवाई है॥
धर्महीन इस राजनीति को जब से देश ने अपनाया।
तब से भ्रष्टाचार अनीति, हिंसाचार यह बढ़ पाया॥

धर्महीन राजनेताओं के यह धर्म समझ नहीं आया।
भगवान् मनु ने मनुस्मृति में मनुष्य धर्म जो बतलाया॥
धृतिः क्षमाः दमो अस्तेय, शौचम्, इन्द्रिय का निग्रह।
धीर्विद्या सत्यम् अक्रोध दस लक्षण का यह संग्रह॥
सत्यार्थप्रकाश में स्वामी दयानन्द ने भी यही है दर्शाया।
सत्य सनातन सुख शान्तिमय वेद धर्म ही बतलाया॥
सकल विश्व का हितकारी यह धर्म परम सुखदाई है।
इसके त्याग से ही भारत में यह हिंसा बढ पाई है॥

सोचो समझो इस भारत का यह दुखद हाल क्यों हो पाया।
पिच्यासी प्रतिशत यह हिन्दू क्यों स्वाभिमान को खो पाया॥
इस्लामी राष्ट्र बन गये बहुत क्यों आर्यराष्ट्र न बन पाया।
क्योंकि आर्य व हिन्दू ने संगठन बल को न पनपाया॥
घोर अन्धविश्वास, जाति सम्प्रदाय ने इसको बिखराया।
एक धर्म वैदिक व ईश्वर एक ने इसने अपनाया॥
दयानन्द के वैदिक पथ पर जब तक देश न आवेगा।
तब तक जग का यह मानव सुख शान्ति न पावेगा॥
धर्म, देश व राजनीति की दुखद दशा जो हो पाई।
सरकार और हिन्दू ही नहीं आर्यसमाज भी है उत्तरदाई॥
ऋषि दयानन्द का सन्देशा उसने जग में फैलाया नहीं।
उसने वैदिक राजनीति का संगठन कोई बनाया नहीं॥
श्रमिक, छात्र पिछड़ी जनता में यह प्रचार न कर पाया।
दीन-दुखी भारत की जनता का संकट न हर पाया॥
इस कारण जन शक्ति समर्थन वाला आर्यसमाज नहीं।
इस ही कारण देश में इसकी शक्तिशाली आवाज नहीं॥
इस कारण मुस्लिम-ईसाई की शक्ति बढ़ती जाती है।
आर्य हिन्दुओं की संख्या व शक्ति घटती जाती है॥
यह हाल रहा तो भारत में फिर भारी संकट आवेगा।
यह अखण्ड व स्वतन्त्र फिर किस भांति रह पावेगा॥
इसलिए उठो निज देश धर्म की रक्षा का अवसर आया।
मानव कर्त्तव्य निभाने को ही यह मानव का तन पाया॥
'भास्कर' ऋषिवर का बतलाया ही वेद मार्ग सुखदाई है।
धर्महीन यह राजनीति भारत के लिए दुखदाई है॥
हे राजनीति के नेताओ यह नीति क्यों अपनाई है।
सत्ता की रोटी सेकने क्यों हिंसा की आग जलाई है॥
पर याद रहे जिसने जनघातक यह हिंसा फैलाई है।
यह उनको भी न छोड़ेगी जिसने इसको पनपाई है॥
दो त्याग इसे निज जीवन में जो सुख चाहो निज जीवन का
यह राजनीति सुखदाई बने दुख मिटे 'भास्कर' जन-जन का

भगवतीप्रसाद सिद्धान्त भास्कर
प्रधान नगर आर्यसमाज,
१४३०, प० शिवदीन माग, कृष्णपोल, जयपुर।
दि० १५-६-१९९१

शास्त्री + आर्योपदेशक पाठ्यक्रम में प्रवेश आरम्भ

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर जिला जालन्धर में शास्त्री आर्योपदेशक उपाधि हेतु पंचवर्षीय पाठ्यक्रम जो कि सभी विश्वविद्यालयों द्वारा बी. ए. के समकक्ष मान्य है, के लिये १ जुलाई ९१ से २४ जुलाई ९१ तक प्रवेश होगा।

प्रवेश योग्यता मान्यता प्राप्त किसी शिक्षा बोर्ड या विश्व-विद्यालय से मैट्रिक उत्तीर्ण। शिक्षा, भोजन, दूध, आवास, बिजली, पानी आदि की सर्वथा निःशुल्क व्यवस्था तथा पुस्तकालय की सुविधा। योग्य छात्रों को (५० रुपये से १०० रुपये मासिक) की विशेष छात्रवृत्ति। प्रमाण-पत्रों सहित मिलें अथवा पत्राचार करें।

आचार्य
श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय
करतारपुर–१४४८०१ (जिला–जालन्धर) पंजाब

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य कुमार सभा रादौर का वार्षिक उत्सव दिनांक १ व २ जून को बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस उत्सव में स्वामी सद. . . जी, महाशय गुरुदत्त मुनि जी व पं० अर्जुनदेव जी, श्री अखिलेश कुमार भारती दिल्ली, महाशय रामकिशन, चौ० लहरीसिंह पूर्व वि. यक ने भाग लिया। पं० विद्याभूषण आर्य, पं० शेरसिंह आर्य, महाशय हरलाल जी व स्वामी रुद्रवेश जी के मधुर भजन हुए। आर्य प्रति. . . सभा हरयाणा को ५०० रु० दान दिये गए।

स्वामी सेवकानन्द सरस्वती
आर्यसमाज रादौर

शास्त्री पत्नी का देहान्त

पूर्व सांसद श्री कपिलदेव जी शास्त्री की धर्मपत्नी का देहान्त २८ जून १९९१ को दोपहर पश्चात् मैडिकल कालेज रोहतक में होगया। विगत कुछ महिनों से उसके गुर्दों की चिकित्सा चल रही थी। २९ जून को ग्राम बडवाल (गोहाना) में वैदिक रीति से अन्त्येष्टि संस्कार किया गया और शोकसभा ९ जुलाई को प्रातःकाल ८ बजे गोहाना में शास्त्री जी के निवास पर होगी।

—सम्पादक

शोक समाचार

आर्यसमाज सालवन जि० पानीपत के कर्मठ कार्यकर्ता श्री ब्रह्मदत्त जी सुपुत्र स्व० श्री शृंगारसिंह जी का १५-६-९१ को निधन होगया। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति सद्गति प्रदान करे तथा परिवारजनों को धैर्य प्रदान करे।

—सभामन्त्री

'प्रकर'—वैशाख'२०४८

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० २३२०/७३ रजि न० P RTK-६१ [illegible]

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक ३२ १४ जुलाई, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

वेद में पांच अग्नियां

(पं० धर्मदेव "मनीषी" वेदतीर्थ गुरुकुल कालवा)

वेद में अग्नि-विद्या का वर्णन है। यजुर्वेद ५।९ में पांच अग्नियां बतलाई हैं। पहली-विद्युत्, दूसरी-जाठर अग्नि, तीसरी यज्ञिय, अग्नि, चौथी-प्रसिद्ध अग्नि और पांचवीं-सूर्य अग्नि। मन्त्र है—

तप्तायनी मेऽसि वित्तायनी मेऽस्यवतान्मा नाथितादवतान्मा व्यथितात्। विदेदग्निर्नभो नामाग्नेऽअङ्गिरऽआयुना नाम्नेहि योऽस्यां पृथिव्यामसि यत्तेऽनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे विदेदग्निर्नभो नामाग्नेऽअङ्गिरऽआयुना नाम्नेहि यो द्वितीयस्यां पृथिव्यामसि यत्तेऽनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे विदेदग्निर्नभो नामाग्नेऽअङ्गिरऽआयुना नाम्नेहि यस्तृतीयस्यां पृथिव्यामसि यत्तेऽनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे। अनु त्वा देववीतये ॥यजु० ५।९॥

अर्थ—हे विद्या को ग्रहण करने के इच्छुक! जैसे मैं जो (तप्तायनी) स्थापन करने योग्य वस्तुओं का स्थान विद्युत् (असि) है और जो (वित्तायनी) भोग और प्रसिद्ध पदार्थों को प्राप्त करानेवाली विद्युत् (असि) है (त्वा) उसे जानता हूं, वैसे तू इसलिये इस विद्या को (मे) मुझसे (एहि) प्राप्त कर। जैसे यह अच्छे प्रकार से सेवन किया हुआ (अग्नि) सूर्य वा प्रसिद्ध अग्नि (नभः) जल और प्रकाश को देता हुआ (मा) मेरी (व्यथितात्) भय और विचलित होने से (अवतात्) रक्षा करती है और (नाथितात्) ऐश्वर्य प्रदान से (अवतात्) रक्षा करती है वैसे तुझसे सेवन किया हुआ अग्नि तेरी भी रक्षा करे।

जाठर अग्नि—जैसे मैं, जो (अग्ने) जाठराग्नि (अगिरः) अंगों को रस पहुंचाने वाला (अग्निः) है वह (आयुना) जीवन का सुख-प्रापक (नाम्ना) नाम की प्रसिद्धि से (अस्याम्) इस (पृथिव्याम्) भूमि पर (नाम) प्रसिद्ध है, (त्वा) उस अग्नि को (देववीतये) दिव्यगुणों वा दिव्य भोगों की प्राप्ति के लिये मैं जानता हूं, वैसे इसीलिये इस अग्नि को तू भी (मे) मुझसे (एहि) जान एवं प्राप्त कर।

यज्ञिय अग्नि—जैसे मैं, उस (नाम्ना) प्रसिद्धि से (यत्) जिस (अनाधृष्टम्) किसी ओर से न दबाये जाने वाले (यज्ञियम्) यज्ञाङ्गों के साधक (नाम) उक्त-प्रसिद्ध तेज को (आदधे) सब ओर से धारण करता हूं वैसे (त्वा) उसे तू इसको हमारे पीछे (अन्वेहि) प्राप्त कर और सब लोग उसको (अनुविदेत्) जानें।

प्रसिद्ध अग्नि—जैसे मैं, (तेन) उस अग्नि को जो अग्नि (द्वितीयस्याम्) इससे भिन्न (पृथिव्याम्) विशाल भूमि पर (अग्ने) प्रसिद्ध अग्नि है और जो (अङ्गिरः) अङ्गारस्थ (आयुना) जीवन वा सुख प्रापक (नाम्ना) प्रसिद्धि से (नाम) प्रसिद्ध (असि) है। और (यः) जो अग्नि (नभः) सुख एवं अवकाश प्रदान करती है अतः (त्वा) उसे प्रयोग में लाता हूं वैसे इसलिए (त्वा) इस अग्नि को तू (एहि) प्राप्त कर और भी सब लोग (अनुविदेत्) अनुकूलता से प्राप्त करें। जैसे मैं जो (अनाधृष्टम्) बड़ा (यज्ञियम्) यज्ञ विद्या सम्बन्धी (नाम) प्रसिद्ध तेज है (त्वा) उसे (आदधे) सब ओर से स्वीकार करता हूं, वैसे तू इसी (नाम्ना) प्रसिद्धि से (एहि) उसे प्राप्त कर और सब लोग उसे (अनुविदेत्) प्राप्त करें।

सूर्य अग्नि—जैसे मैं जो (अग्निः) सूर्य में स्थित अग्नि है, वह (आयुना) जीवन वा सुख-प्रापक (नाम्ना) नाम से (तृतीयस्याम्) तृतीय कक्षा में विद्यमान (पृथिव्याम्) भूमि पर (अग्ने) सूर्य रूप (अङ्गिरः) गमनशील सूर्य रूप से (नाम) प्रसिद्ध (असि) है और (यः) जो अग्नि (नभः) आकाश को चमकाती है (त्वा) उसे जानता हूं, वैसे इसको इसलिए तू (एहि) प्राप्त कर और सब लोग भी (विदेत्) प्राप्त करें।

मन्त्र में पांच अग्नियां—

१- विद्युत्—अग्नि अर्थात् विद्युत् सब वस्तुओं का आधार है, सब भोगों और पदार्थों का प्रापक है, इसका विधिपूर्वक सेवन जल और प्रकाश प्रदान करता है, यह सब भय से रक्षा करती है, ऐश्वर्य प्रदान करके रक्षा करती है। अतः विद्युत्-विद्या के पठन-पाठन रूप यज्ञ का अनुष्ठान अवश्य करते रहें।

२- जाठर अग्नि—अग्नि अर्थात् जाठर-अग्नि शरीर के अंगों का रस है, अंगों में रस पहुंचाता है, रसों का परिपाक करता है, आयु और सुखों का प्रापक है। दिव्य गुणों और दिव्य भोगों की प्राप्ति का साधन है। अतः इस जाठर-अग्नि का शिक्षण रूप यज्ञ का अनुष्ठान अवश्य करते रहें।

३- यज्ञिय अग्नि—अग्नि अर्थात् यज्ञिय अग्नि अत्यन्त तेजस्वी है। इसके तेज को कोई दबा नहीं सकता। यह दुर्गन्ध को दूर करने वाला और सुगन्धि रूप तेज को फैलाने वाला है। इस अनाधृष्ट यज्ञिय तेज स्वरूप अग्नि का यज्ञ वेदि में आधान करें। सब मनुष्य यज्ञ विद्या को सीखें।

४- प्रसिद्ध अग्नि—अग्नि अर्थात् भौतिक स्थूल सर्व प्रसिद्ध अग्नि अंगारों में स्थित है। जीवन तथा अन्य लौकिक सुखों का साधक प्रापक है। इसका विधिपूर्वक प्रयोग करें। इस स्थूल प्रसिद्ध अग्नि के प्रयोग शिल्प विद्या को भी सीखें।

५- सूर्य अग्नि—अग्नि अर्थात् सूर्य आयु का हेतु है। आयु का परिमाण यही है। स्वयं गतिशील तथा सब जगत् को गति देने वाला है। सम्पूर्ण आकाश को प्रकाशित करता है। सब मनुष्य सूर्य-विद्या को सीखें।

इस मन्त्र में प्रतिपादित अग्नि की विद्या को सीखना यज्ञानुष्ठान है। इस यज्ञानुष्ठान से मनुष्य सब कार्यों की सिद्धि करें।

भावार्थ—इस मन्त्र में वाचक लुप्तोपमा अलङ्कार है। जो प्रसिद्ध, सूर्य और विद्युत् रूप में तीन प्रकार का अग्नि सब लोकों में बाहर और अन्दर विद्यमान है उसे जानकर सब मनुष्य सब कार्यों की सिद्धि करें।

समीक्षा—इस पृथिवी पर स्थूल रूप प्रसिद्ध अग्नि है, अन्तरिक्ष में विद्युत् रूप अग्नि है और द्युलोक में सूर्य रूप अग्नि है। मन्त्र में प्रतिपादित जाठराग्नि का विद्युत् रूप अग्नि में तथा यज्ञिय अग्नि का स्थूल प्रसिद्ध अग्नि में अन्तर्भाव है। मन्त्र में उपमावाचक शब्द लुप्त है इसलिए वाचक लुप्तोपमा अलङ्कार है। उपमा यह है कि विद्वानों के समान अन्य जन भी अग्नि-विद्या को सीखें।

कितनी जागरूक है आज की नारी

डा० सरोज अग्रवाल

आज हमारे देश में नारी उत्थान, नारी की स्वतन्त्रता आदि को लेकर जो आन्दोलन चल रहे हैं, उनसे नारी के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आये हैं। प्रारम्भ से ही पुरुष अपने अहम् की तुष्टि के लिए अपने को नारी से श्रेष्ठ मानता आया है। नारी पुरुष की जन्मदात्री होते हुए भी पुरुषों से तुच्छ समझी जाती रही है।

महाकवि कबीर ने नारी को "महाविकार" कहा। तुलसी ने उसे शूद्र, पशु तथा ढोर की श्रेणी में रखकर ताड़ना का अधिकारी बतलाया। ऐसी स्थिति में आधुनिक पीढ़ी के राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त को करुणा आई और उनकी लेखनी से फूट पड़ा।

अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी,
आंचल में है दूध और आंखों में पानी।

उस समय नारी दुत्कार सहते हुए मात्र पुरुष की यौन तृप्ति का साधन बनकर रह गई। प्रारम्भ से यदि नारी कि स्थिति पर दृष्टिपात करें तो उसकी स्थिति श्रेष्ठ थी। किन्तु जहां एक ओर उसे सम्मान प्राप्त था, वहीं दूसरी ओर वह त्याग की मूर्ति बनी हुई थी। यवनों के आगमन के पश्चात् उनकी काम लोलुप निगाहों से बचाने के लिए ही भारतीय नारी को पर्दे में रखा जाने लगा और उसे हेय दृष्टि से देखा जाने लगा। आज भारतीय नारी स्वतन्त्रता के वातावरण में अपने उत्थान हेतु संघर्षरत है। वह पुराने सभी रूढ़िवादी बन्धन तोड़कर पुरुष के समान जीना चाहती है। स्वास्थ्य, बौद्धिक, सामाजिक तथा राजनीतिक जागृति के प्रकाश से युगों-युगों की पीड़ित नारी को प्रकाश मिला है।

वह सास-श्वसुर, पति तथा सन्तान की सेवा करने के साथ-साथ पुरुष के समान चलकर दिखाना चाहती है कि वह अबला नहीं सबला है। वह रूढ़िवादी नारी की विचारधारा को त्याग अधिक और अधिकार कुछ भी नहीं, का विरोध करती है। सौभाग्य की बात है कि अब नवयुवक भी नारियों के अधिकार की मांग करते हैं तथा कुछ सीमा तक नारी का साथ दे रहे हैं।

आज नारी को संविधान के अन्तर्गत पुरुष के समान अधिकार प्राप्त हैं। वर्तमान पीढ़ी की नारी सभी रूढ़िवादी बन्धनों को तोड़कर घर की चारदीवारी से बाहर आने की इच्छुक हैं तथा अपने अधिकारों के प्रति सजग है।

वह सास-ससुर, पति तथा सन्तान की सेवा करने के साथ-साथ पुरुष के समान चलकर दिखाना चाहती है कि वह अबला नहीं सबला है। वह रूढ़िवादी नारी की विचारधारा को कि त्याग अधिक और अधिकार कुछ भी नहीं, का विरोध करती है। सौभाग्य की बात है कि अब नवयुवक भी नारियों के अधिकार की मांग करते हैं तथा कुछ सीमा तक नारी का साथ दे रहे हैं। यद्यपि यह देखा जाता है कि बड़े-बड़े समाजसेवी, समाजसुधारक, महापुरुष होने का दावा करने वाले, मंचों पर नारी की प्रगति की बात करेंगे। नारी जागरण हेतु उन्ही के घरों में जाकर देखा जाये तो ज्ञात होगा कि कथनी और करनी में कितना अन्तर है। वे कभी इन सामाजिक गोष्ठियों में अपने परिवार की महिलाओं को नहीं ले जाते। यदि पुरुष ऐसा न करे तो महान् समाज सुधारक का ताज, बड़े-बड़े खिताब पुरस्कार इन्हे कैसे प्राप्त होंगे? यहां तक कि महिला सगठनों को भी पुरुष ही चलाना चाहते हैं। यदि नारी साहस जुटाकर इस कार्य को करना चाहे तो उसे हतोत्साहित करते हैं। प्रायः देखा जाता है कि पुरुष अपने नाम से महिला संगठन चला नहीं सकते। अतः घर की पत्नि, बहन, बहू-बेटी आदि को अध्यक्ष या मंत्री बनाकर, पर्दे के पीछे वही वही करते हैं जो वे चाहते हैं। उन महिलाओं को तो केवल मंच पर बोलने के लिए कागज के पुर्जे पकड़ा दिये जाते हैं। वह नारी देखने में तो बहुत भाग्यशाली लगती है कि उसका पति उसे सहयोग करता है, वह यह भी किसी से नहीं कह सकती कि उसके घर में उसे मानसिक रूप से कैद रखा जाता है। हाथी के दांत खाने के और दिखाने के कुछ और। अतः यही कहा जा सकता है कि यदि स्वतन्त्र भारत की नारी का सही रूप देखना चाहें तो बड़े-बड़े महिला संगठनों को चलाने वाले समाज सुधारकों की महिलाओं से गुप्त रूप से साक्षात्कार लिये जायें। उन्हीं महानुभावों को यदि किसी भाई या पुत्र का विवाह करना हो तो कभी भी स्वतन्त्र विचारक, समाजसेवी महिला से नहीं करेंगे। कहेंगे कि हमें तो ऐसी लड़की चाहिए जो घर में ही रहे। इसी से ऐसे लोगों की मानसिकता का पता चलता है। अतः देश के कल्याण हेतु नारी उत्थान का हमें सही प्रयास करना आवश्यक है। वर्ना सही चित्रण तो नारी का यही है और इससे पता लगता है कि आज की नारी कितनी जागरूक हो पाई है।

(दैनिक जनसन्देश से साभार)

नशा परोपकार का

दुनिया में ऐसे बहुत लोग हैं जो अपने स्वार्थों की खातिर किसी की भी जिन्दगी छीनने में पल की भी देरी नहीं करते लेकिन ऐसे लोगों की भी इस दुनिया में कोई कमी नहीं है जो निस्वार्थ रूप से किसी की टूटती सांसों को जीवनदान देने को हर पल तैयार रहते हैं। व्यर्थ में खून बहाने वाले भी बहुत हैं और अपना खून दान करके किसी को नये सिरे से जीने का सहारा देने वाले भी बहुतेरे हैं।

ऐसा ही एक व्यक्तित्व है गबरुद्दीन। सोनीपत के गांव कबीरपुर में रहने वाला 45 वर्षीय गबरुद्दीन 105 बार रक्तदान कर चुका है। जबकि उसका संकल्प 101 बार रक्तदान करने का था। वह अपनी आंखें भी दान कर चुका है। गुर्दे भी देने के फिराक में है।

हालांकि गबरुद्दीन निर्धन है और अपने परिवार का भरण पोषण भैंसा-बुग्गी चलाकर करता है। मगर दूसरों के काम आने का ही उसने जीवन का लक्ष्य साध रखा है। वह अनेक बार सम्मानित भी किया जा चुका है। राजनेताओं ने भी उसे सम्मानित किया है।

गबरुद्दीन के अनुसार उसने पहली बार रक्तदान लाल बहादुर शास्त्री के आह्वान पर किया। श्री शास्त्री ने १९६५ में भारत-पाक युद्ध के दौरान प्रधानमन्त्री के नाते घायल सैनिकों की प्राण रक्षा के लिये रक्तदान की देशवासियों से अपील की थी। इस अपील से गबरुद्दीन काफी प्रभावित हुआ और उसने बिना देरी किये दूसरे ही दिन देहली के इरविन अस्पताल में आकर रक्तदान किया।

और गबरुद्दीन का रक्तदान का सिलसिला तब से लगातार जारी है। उत्साह और हिम्मत बरकरार है। उसने एक दिन में दो-दो बार और सप्ताह में कई-कई बार रक्तदान किया है।

गबरुद्दीन को बस इस बात का गर्व है कि उससे जितना भी बन सका, रक्तदान किया और कइयों का जीवन बचाया। वास्तव में ही परोपकार का नशा भी अजीब होता है।

चौ० नत्थासिंह का देहान्त

बड़े दुःख के साथ लिखा जाता है कि हमारे पूज्य पिताजी श्री नत्थासिंह आर्य भजनोपदेशक का स्वर्गवास दिनांक ३-७-९१ को हो गया। रस्म पगड़ी दिनांक १९-७-९१ वार शुक्रवार को है।

हरपाल आर्य सुपुत्र स्व० नत्थासिंह आर्य
भजनोपदेशक
पो० ब्याना, गांव बदरपुर, जिला करनाल

विदेश में प्रचार

सेवा में, २२-६-९१

श्री वेदव्रत जी शास्त्री,

सादर नमस्ते !

आशा करता हूं कि आप सब अच्छी प्रकार से होंगे। मैं भी यहां पर अच्छी प्रकार से पहुंच गया हूं। यहा पर एमस्तरडेम के एयरपोट पर प्रभाकर आर्यसमाज रोटरडेम के सभापति प० जीवन गणेश, मन्त्री पं० विश्वेश्वर, डा० आनन्द कुमार विरजा, पं० ग्रेईसन स्वयवर, श्री विश्वानि, वैदिक ज्योति संगठन आर्यसमाज रोटरडेम के उप-सभापति श्री नारायणदत्त दोदाह इत्यादि अनेक भाई-बहन स्वागत के लिए आये थे। श्री पं० विश्वेश्वर जी ने अपने जीवन के पचास वर्ष पूरे होने पर त्रिदिवसीय सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन २९, ३०, ३१ जून प्रभाकर आर्यसमाज रोटरडेम के सहयोग सम्पन्न किया। इस यज्ञ को डा० आनन्दकुमार विरजा, श्री पं० ओमप्रकाश शास्त्री सामवेदी व मेरे (रामपाल शास्त्री योगाचार्य) द्वारा सम्पादित किया गया। होलैण्ड में इस प्रकार के यज्ञ का आयोजन करना एक महत्त्पूर्ण एवं प्रथम प्रयास था, जो कि अत्यन्त सफल रहा है। तीन दिवसीय इस महायज्ञ में जहां जनता को प्रतिदिन एक विद्वान् द्वारा वेद प्रवचन सुनने को मिला, वहां पर अनेक समाजों के अधिकारियों ने भी इस यज्ञ के लिए पं० विश्वेश्वर व प्रभाकर आर्यसमाज का धन्यवाद किया। इस यज्ञ की सफलता के पश्चात् अन्य समाजें भी इस प्रकार के वेद पारायण यज्ञ के आयोजन का कार्यक्रम बना रही हैं। प्रचार का कार्य अच्छी प्रकार से चल रहा है। योग शिविर व शक्ति-प्रदर्शन के कार्यक्रम भी हो रहे हैं। यद्यपि यहां का मौसम भारत की अपेक्षा अच्छा नहीं है, फिर भी किसी प्रकार की कठिनाई नहीं है। सभी आर्य भाई-बहनों व समस्त समाजों का भरपूर सहयोग मिल रहा है। शेष समाचार अच्छे हैं। सभी को मेरा सादर नमस्ते कहना न भूलें।

भवदीय—रामपाल शास्त्री

हाईफा वेख नं० 81 बी, होऊख प्लित, रोटरडेम, हालैण्ड।

शास्त्रियों के लिए शुभ अवसर

बहिनो और भाइयो! यदि आपने पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ से या कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से अथवा श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर से शास्त्री की है और आप चाहते हैं कि महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की शास्त्री के समकक्ष हमको सुविधाएं प्राप्त हों तो आप शीघ्र ही शास्त्री प्रथम और द्वितीय खण्ड के अंग्रेजी और एक अतिरिक्त विषय के फार्म भर दीजिये सितम्बर में परीक्षा होगी। विशेष जानकारी हेतु तुरन्त लिखिए—

—जीवानन्द

कुल सचिव, श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ, गुरुकुल झज्जर, रोहतक (हरयाणा)

गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) में

दो अध्यापक तथा एक ड्राईवर की आवश्यकता

गुरुकुल आर्यनगर हिसार (हरयाणा) में एक आचार्य अथवा शास्त्री उत्तीर्ण ऐसे अध्यापक की आवश्यकता है जो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की नवमी तथा दशमी कक्षाओं को संस्कृत साहित्य तथा व्याकरण पढाने में समर्थ हो। तथा एक ऐसे विज्ञान अध्यापक की आवश्यकता है जो इन कक्षाओं को सामान्य विज्ञान तथा गणित पढ़ा सके। इसके अतिरिक्त एक ड्राईवर की भी आवश्यकता है। आर्य विचार धारा के व्यक्ति को प्राथमिकता दी जाएगी। वेतन आदि का निर्णय साक्षात्कार के समय किया जाएगा। गुरुकुल हिसार से ५ कि०मी० की दूरी पर बालसमन्द रोड के निकट स्थित है। गुरुकुल में आने के लिए लोकल बस द्वारा बड़ी नहर के पुल पर उतरें। प्रार्थी महानुभाव निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें अथवा मिलें —

आचार्य, गुरुकुल आर्यनगर,

पो० आर्यनगर, जिला हिसार-१२५००१ (हरयाणा)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रवेश सूचना

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार में ६ वर्ष से १० वर्ष की आयु के बालक १ जुलाई से ३१ जुलाई तक विभिन्न श्रेणियो में योग्यतानुसार प्रविष्ट किए जाएगे।

शहर के वातावरण से दूर गंगा तट पर स्थित विश्वविद्यालय के विशाल प्रांगणों में बालकों के खेलकूद आदि की आदर्श सुविधाएं हैं। केन्द्रीय विद्यालय के पाठ्यक्रम के साथ साथ संस्कृत, धर्मशिक्षा का अध्ययन अनिवार्य है। भोजन, निवास, शुल्क तथा अन्य सम्बद्ध सूचनाओं के लिए १० रु० का मनीआर्डर अधोहस्ताक्षरी को भेजकर नियमावली प्राप्त करें।

पंजाब, कश्मीर तथा देश के अन्य भागों में उग्रवादियों की हिंसा के कारण जो बालक निराश्रित होगए हैं उन्हे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में निःशुल्क शिक्षा, निवास और भोजन देने की व्यवस्था की गई है।

—सहायक मुख्याधिष्ठाता

बालिगड़ा 'फुलवाणी' में ६१ परिवारों के २५० से अधिक ईसाई वैदिक धर्म में

गत ११, १२ जून को ग्राम बालिगड़ा 'फुलवाणी' में एक विशेष समारोह में श्री स्वामी धर्मानन्द जी की अध्यक्षता में २५० से अधिक ईसाइयों ने श्रद्धा एवं उत्साह पूर्वक वैदिक धर्म में प्रवेश किया।

यह ग्राम चारों ओर पवत जगलों से घिरा हुआ है वहां जीप तो क्या साईकिल भी नहीं जाती, ८ कि.मी. पैदल पहाड चढकर पहुंचा जा सकता है। यद्यपि ग्राम के उत्साही नवयुवक श्री स्वामी जी एवं श्री शास्त्री जी को कांवर में ले जाना चाहते थे परन्तु उन्होंने पैदल जाना ही स्वीकार किया। २ कि.मी. इधर से ही ग्रामवासी स्वागत के लिए उपस्थित थे उन्हें देखकर सारी थकावट दूर हो गई।

सभा मन्त्री श्री विशिकेसन शास्त्री ने कार्यक्रम का संचालन किया। पूज्य स्वामी जी ने जनता को विदेशी षडयन्त्रों से सावधान रहने की सलाह दी। दिन भर का कार्यक्रम अत्यन्त आकर्षक रहा। इस समारोह को देखने लोगों की भीड लगी हुई थी। इस आयोजन में श्री नारायण शास्त्री एवं श्री देवेन्द्र जी नायक का विशेष योगदान रहा।

—विशिकेसन शास्त्री

मन्त्री, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

गांव खाचरोली जिला रोहतक में आर्यसमाज की स्थापना

दिनांक २६, २७ जून को गांव खाचरोली जिला रोहतक में सभा के भजनोपदेशक श्री पं० जयपालसिंह आर्य ने वेदप्रचार किया। जिसमें शराब, दहेज, पाखण्ड और गांव में बढती हुई सामाजिक कुरीतियों का पुरजोर खण्डन किया। श्री ताराचन्द वानप्रस्थी ने भी अपने विचार रखे। श्री धर्मपाल शास्त्री, मानपाल व हवासिंह आर्य ने प्रचार कार्य में पूरा सहयोग दिया। सभा को २०५ रु० दान दिया गया। २७ जून को सुबह यज्ञ हुआ जिसमें श्री जगदीश आर्य के ईश्वर भक्ति के भजन हुए। गांव के नर नारी प्रचार से बहुत प्रभावित हुए।

शराब का ठेका उठवा दिया गया

मई मास से ग्राम हलदाना जिला पानीपत में गांव वासियों की तरफ से शराब का ठेका उठवाने के लिए निरन्तर धरना चल रहा था। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की तरफ से प० सीताराम आर्य भजनोपदेशक श्री रामकुमार आर्य, पं० चिरजीलाल आर्य भजनोपदेशक ईश्वरसिंह तूफान की भजनमण्डलियों ने शराब के विरुद्ध प्रचार किया। २७ जून को जिलाधीश महोदय ने शराब का ठेका उठवा दिया।

भारत में नये गुरुओं तथा भगवानों का अप्रत्याशित आविर्भाव

(डॉ० भवानीलाल भारतीय)

भारत भूमि सन्तों, महात्माओं तथा भगवदीय तत्त्व से समन्वित महापुरुषों की धरती रही है। यहां वसिष्ठ, विश्वामित्र, गोतम, कपिल, कणाद, व्यास, जैमिनि की परम्परा के हजारों तत्त्वद्रष्टा ऋषि मुनि हुए। चाणक्य, शंकर, रामानुज, वाचस्पतिमिश्र, उदयन जैसे विचक्षण शास्त्रज्ञ पण्डित तथा आचार्य भी हुए। दयानन्द, रामकृष्ण, विवेकानन्द तथा अरविंद जैसे आध्यात्मिक शक्तियों के पुंज महात्मागण भी हुए किन्तु किसी ने स्वयं को साक्षात् परमात्मा या अवतार पुरुष कभी घोषित नहीं किया। भक्तों ने अवश्य शंकराचार्य को साक्षात् शिव का अवतार कहा तथा परमहंस रामकृष्ण के प्रमुख शिष्य स्वामी विवेकानन्द ने स्वगुरु को राम तथा कृष्ण दोनों का ही इस युग में हुआ अवतार घोषित किया।

अब बीसवीं सदी में कुछ ऐसे तथाकथित गुरुओं तथा तांत्रिक साधकों का आविर्भाव हुआ है जिनमें सत्वगुण का अंश तो अल्प ही है, किन्तु जो अपनी प्रखर राजसी तथा तामसी प्रवृत्तियों के कारण जनमानस को आन्दोलित, प्रभावित तथा आतंकित करते रहते हैं। हम यहां कुछ ऐसे ही तथाकथित गुरुओं तथा स्वयंभू भगवानों का कच्चा चिट्ठा पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं।

सत्य सांई बाबा

सांई बाबा के नाम से जाने गये व्यक्ति का वास्तविक नाम सत्यनारायण पेट्टी वेंकप्पा राजू है। यह आंध्रप्रदेश के अनन्तपुर जिले के पुट्टपारथी ग्राम में २३ नवम्बर १९२६ को जन्मा। इसकी शिक्षा न किसी स्कूल में हुई और न कालेज में। यह अपने द्वारा प्रदर्शित चमत्कारों के कारण ही प्रसिद्ध हो गया। बेंगलोर विश्वविद्यालय के विज्ञान के एक प्रोफेसर ने इसे अपने चमत्कारों को विज्ञान से सिद्ध करने की चुनौती दी किन्तु इस अहंकारी व्यक्ति ने उत्तर दिया चीटी की क्या मजाल जो वह हाथी की गुरुता की थाह पाना चाहती है। हजारों शिक्षित और अशिक्षित लोग जटाजूट धारी सांई बाबा की ओर आकर्षित हुए। वे इसे ईश्वर का साक्षात् प्रतिरूप ही मानते हैं। स्वयं अशिक्षित होते हुए भी यह पढ़े-लिखे भक्तों को अपनी ही लाठी से हांकता है। इसके अनुयायियो ने शिक्षण सस्थायें चला रखी हैं तथा अन्य सेवाकार्य भी करते हैं। देश के अनेक नगरों में सांई बाबा के भक्तों के संगठन हैं जो साप्ताहिक पूजा पाठ करते है। इनमें इसी व्यक्ति का गुणगान होता है। इसके भक्त इसे शीरडी (महराष्ट्र) के एक मुस्लिम फकीर का अवतार मानते हैं।

स्वामी चिन्मयानन्द

इनका मूल नाम बालकृष्ण मेनन है। ये एम.ए., एल-एल.बी. तक शिक्षित हैं तथा इनकी आयु ७४ वर्ष की है। स्वामी जी हिन्दू धर्म के उदार रूप के प्रचारक हैं। वे स्वयं को कोई चमत्कारी पुरुष नही मानते। वे अविवाहित हैं और १९५२ से भगवद्गीता तथा वेदान्त का प्रचार कर रहे हैं। इनके आश्रम का मुख्यालय बम्बई में है। ये राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ तथा विश्व हिन्दू परिषद् के कट्टर समर्थक हैं तथा राम जन्मभूमि विवाद में परिषद् के पक्ष का समर्थन करते रहे हैं।

चन्द्रा स्वामी

राजनीति और कूटनीति की अन्धी गलियों में लगातार चक्कर लगाने वाले स्वयं में विवादास्पद किन्तु हथियारों के धनी व्यापारी अदनान खशोगी से निकट का सम्पर्क रखने वाले और न जाने किन किन विदेशी राष्ट्रनेताओं को अपनी जेब में रखने का अहकार वाले तांत्रिक साधु चन्द्रा स्वामी का वास्तविक नाम नेमीचन्द गांधी है। यह अलवर (राजस्थान) का निवासी है। स्कूल की शिक्षा को अधूरी छोड़कर तांत्रिक बाबा का जामा पहन लेने वाला चन्द्रा स्वामी भारत का रासपुटिन तथा हमारे राष्ट्रीय क्षितिज पर उदय होने वाला अशुभ धूमकेतु है। वह यदि भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री चन्द्रशेखर का यार होने का दम भरता है तो कुख्यात वेश्या पामेला बोर्डस से भी अपनी निकटता बताने में इसे लज्जा नहीं आती।

१९५० में जन्मा चन्द्रा स्वामी कुछ वर्ष पहले तक नई दिल्ली के राजनैतिक गलियारों में चक्कर काटता रहा। उसका सितारा भूतपूर्व केन्द्रीय रेलमन्त्री ललित नारायण मिश्र के निकट आने पर बुलन्द हुआ। मिश्र जी तांत्रिक साधना में पूर्ण विश्वास रखते थे। श्री मिश्र के माध्यम से ही यह व्यक्ति स्व० राजनारायण के सम्पर्क में आया। दिल्ली की राजनीति में उसका दखल और प्रभाव उस समय बढ़ गया जब संजय गांधी ने उसे अपनी कूटनीति का मोहरा बनाकर उसे चरणसिंह और राजनारायण का विश्वासभाजन बनाया और इनके द्वारा मोरारजी देसाई की सरकार को पटखनी दिलवाई। अब उसने अपने राजनैतिक सम्पर्कों का प्रयोग उन धनी पूजीपतियों की हितरक्षा के लिए करना आरम्भ किया जो अपने व्यावसायिक लाभ के लि राजनीतिज्ञों से सम्पर्क साधना चाहते थे।

स्वदेश में किये जाने वाले अपने अच्छे बुरे कारनामों से ही सतुष्ट न रहकर वह अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच पर आया। उसने हालिउड की फिल्म अभिनेत्री एलिजाबेथ टेलर से सम्पर्क साधा। कहते हैं कि उसने उक्त सिनेमा तारिका को अपनी तांत्रिक शक्ति के द्वारा एक गम्भीर रोग से मुक्त कर दिया। यह कितने ही अन्तर्राष्ट्रीय विवादों और घोटालों में आकण्ठ मग्न है तथापि हैरानी की बात है कि भारत के कुछ राजनीतिज्ञ उससे प्रत्यक्ष सम्पर्क ही नही रखते, मंच पर उसके निकट बैठने में भी गौरव अनुभव करते हैं। आश्चर्य है कि हिन्दू धर्म, दर्शन, शास्त्र और परम्पराओं का क-ख भी न जानने वाला यह तांत्रिक आज हिन्दू धर्म के आचार्यों, मठाधीशों और महामण्डलेश्वरों की नाकों में नकेल डालने में सकोच नही करता।

महर्षि महेश योगी

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ध्यान योग की शिक्षाओं का प्रसार करने वाला महेश योगी (मूल नाम महेशप्रसाद वर्मा) ७८ वर्ष की आयु का है। साठ के दशक के बीटल गायकों ने महेश योगी को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति दिलवाई। उसके भावातीत ध्यान का विश्वव्यापी प्रचार हुआ और देश विदेश में उसके भक्त और अनुयायी असाधारण रूप से बढ़ने लगे। इसका जन्म जबलपुर (मध्यप्रदेश) के एक दरिद्र कायस्थ परिवार में हुआ। स्कूली शिक्षा तो नाम मात्र की ही हुई किन्तु आज महेश योगी द्वारा सचालित सहस्रों वेद विद्यालयों में वेदाभ्यासी बटुगण लाखों की सख्या में वेद, सस्कृत तथा पुरातन शास्त्रों का अध्ययन करते हैं। संसार भर में फैले इसके आध्यात्मिक साम्राज्य का वित्तीय मूल्य ४००० करोड़ आंका गया है। इसका दावा है कि ससार की जटिल राजनैतिक समस्याओं का समाधान उसके पास है किन्तु कोई भी बुश, गोर्बाचोव, जानमेजर अथवा मितरां जैसा शासक उसे घास नहीं डालता। इसके व्यक्तित्व का एक शुक्ल पक्ष भी है। यह वेदादि शास्त्रों के प्रचार प्रसार में पर्याप्त द्रव्य व्यय करता है। इसके तथाकथित अलौकिक योगिक चमत्कारों की कलई खुल चुकी है। इसने एक बार पानी पर चलने का दावा किया, किन्तु असफल रहा।

स्वामी नित्यानन्द

महाराष्ट्र के थाणे जिले के गणेशपुरी नामक स्थान पर गुरुदेव सिद्ध पीठ के संस्थापक स्वामी मुक्तानन्द का शिष्य स्वामी नित्यानन्द २८ वर्षीय युवक है। इसका वास्तविक नाम सुभाष शेट्टी है और यह एस.एस.सी. तक शिक्षित है। इसने अपनी बहिन (मालटी शेट्टी) के साथ स्वामी मुक्तानन्द का शिष्यत्व ग्रहण किया। परिणामस्वरूप उक्त स्वामी के मरने पर ये दोनों भाई बहिन मुक्तानन्द की सम्पत्ति और वैभव के सम्मिलित वारिस बन गये। स्वामी मुक्तानन्द का स्वर्गवास अक्टूबर १९८२ में हुआ और इसके तीन वर्ष पश्चात् ही

सिद्ध पीठ की गद्दी और अधिकारों को लेकर भाई बहिन के बीच विवाद उठ खड़ा हुआ। अन्तत: ये दोनों अलग हो गए। अब स्वामी नित्यानन्द प्राय: यूरोप और अमेरिका में रहकर वहां के गौरांग शिष्यों को ही अनुगृहीत करते हैं। भारत की पवित्र धरती उनकी उपस्थिति से प्राय: वंचित ही रहती है।

गुरु माई चिद्विलासानन्द

स्वामी नित्यानन्द की बड़ी बहिन मालती शेट्टी (आयु ३५ वर्ष) ने अपने भाई सुभाष के साथ ही स्वामी मुक्तानन्द का शिष्यत्व ग्रहण किया था। सिद्ध पीठ की सम्पत्ति और स्वामित्व को लेकर उसका अपने भाई स्वामी नित्यानन्द से झगड़ा हो गया और गणेशपुरी की सिद्ध पीठ पर उसने अपनी चतुराई और असंख्य शिष्य वर्ग की सहायता से कब्जा जमा लिया। इस महिला संन्यासिनी का प्रमुख परामर्शदाता तथा दाहिना हाथ जार्ज एपिस नाम का एक लेबनानी है। इसी विदेशी की सहायता और साहस से गुरु माई सिद्ध पीठ पर अपना अधिकार रख पाई। गुरु माई के अनेक धनाढ्य अमरीकी पूंजीपति हैं और पैंतीस वर्षीया यह संन्यासिनी विदेशों के नियमित दौरे करती रहती है।

मुरारी बापू

मुरारी बापू के नाम से प्रसिद्ध ८८ वर्षीय मुरारीदास प्रभुदास हरियानी भावनगर (गुजरात) का निवासी है। इसकी शिक्षा एस.एस.सी. तक की है और यह प्राइमरी स्कूल के अध्यापक के रूप में जीविकोपार्जन करता था। शीघ्र ही इसकी तुलसीदास रचित रामचरितमानस की कथाओं से लोग बड़ी संख्या में उसकी ओर आकृष्ट होने लगे। प्रारम्भ में उसके श्रोता मात्र १०-२० ही होते थे किन्तु आज मुरारी बापू के मानस प्रवचनों में २ लाख तक की भीड़ होती है। इसके अनुयायियों का विस्तार संसार भर के देशों में है और उनकी धारणा है कि मुरारी बापू के प्रवचनों से ही उनका काया पलट हुआ है। यह किसी चमत्कार या अलौकिक शक्ति सम्पन्न होने का दावा नहीं करता, किन्तु थोड़े ही समय में इतनी ख्याति और प्रसिद्धि अर्जित कर लेना भी चमत्कार से कम नहीं है।

माता अमृतानन्दमयी

केरल के क्विलोन जिले में सैंतीस वर्ष पूर्व एक मछुवारे के घर में सुधामणि का जन्म हुआ। इसकी शिक्षा मात्र चौथे दर्जे तक हुई किन्तु प्रारम्भ से ही इसने आध्यात्मिक विषयों में रुचि दिखाई। अपनी किसी अन्त:प्रेरणा से ही उसने एक धार्मिक आन्दोलन चलाया जिसका केन्द्र बिन्दु भक्ति था। आज यह महिला माता अमृतानन्दमयी के नाम से जानी जाती है। उसकी शाखायें और अनुयायी संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, स्विट्जरलैंड तथा मारिशस में फैले हैं। इसके शिष्यों का दावा है कि यह अपनी अलौकिक शक्तियों से लोगों के शारीरिक और मानसिक कष्टों को दूर कर देती है। लोग इसे प्यार से अम्मा कहते हैं।

ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि

दादी के नाम से चर्चित प्रकाशमणि ब्रह्माकुमारी मत के प्रवर्तक दादा लेखराज (लेखराज खूबचन्द कृपालानी) की शिष्या है। दादा लेखराज और उसकी ओ३म् मण्डली देश विभाजन के पूर्व सिंध में चर्चित तथा विवादास्पद रही। साधु टी.एल. वास्वानी ने उसके खिलाफ आवाज उठाई। जनवरी १९६९ में दादा लेखराज की मृत्यु के पश्चात् प्रकाशमणि इस सम्प्रदाय की प्रमुख बनी। हैदराबाद (सिंध) में १९३७ में स्थापित ब्रह्माकुमारी संस्था की २००० शाखायें संसार के ६४ देशों में स्थापित हैं। मैट्रिक तक शिक्षित प्रकाशमणि का प्रधान कार्यालय आबू पर्वत पर है जहां से यह विश्वभर में फैले अपने धर्म-साम्राज्य का संचालन करती है।

हैरानी की बात है कि अपनी सभाओं और सम्मेलनों में देशी विदेशी राजनीतिज्ञों, शासकों, न्यायाधीशों, पत्रकारों, शिक्षाविदों तक को आमन्त्रित करनेवाली ब्रह्माकुमारी संस्था के मूलसिद्धान्तों, कार्यकलाप तथा दर्शन को ये अभ्यागत लोग भी नहीं जानते। आज तक कोई यह भी नहीं बता सका कि इस संस्था के करोड़ों अरबों के बजट की पूर्ति कैसे होती है और यह अपार धनराशि कहां से आती है। कुछ स्वकल्पित चित्रों और चार्टों तथा रटीरटाई शब्दावली में अपने मन्तव्यों का परिचय देने वाली ये ब्रह्माकुमारियां और ब्रह्माकुमारी राजयोग, शिव, ब्रह्मा, कृष्ण, गीता आदि की बातें तो करते हैं किन्तु महर्षि पतंजलि प्रोक्त राजयोग तथा व्यासरचित एवं कृष्ण प्रोक्त भगवद्गीता का क ख भी इन्हें नहीं आता। ये विश्वशान्ति और चरित्र निर्माण के लिए आडम्बरपूर्ण आयोजन करते हैं, शिविर चलाते हैं, कार्यशालायें संचालित करते हैं किन्तु विश्व के किसी भी कोने में न तो शान्ति स्थापित होती दिखाई देती है और न देशवासियों का चरित्र निर्माण ही हो रहा है।

सरदार गुरिन्दरसिंह ढिल्लो

अमृतसर जिले के डेरा बाबा जयमलसिंह (व्यास) को राधास्वामी सम्प्रदाय की गद्दी के वर्तमान गुरु ३६ वर्षीय गुरिन्दरसिंह पंजाब विश्वविद्यालय के स्नातक हैं। ये सरदार चरणसिंह (भूतपूर्व गुरु) के निधन पर जून १९९० में उक्त सम्प्रदाय के आचार्य बने। व्यास का राधास्वामी सम्प्रदाय आगरा में १९वीं शताब्दी में शिवदयालसिंह खत्री द्वारा प्रवर्तित इसी मत की एक शाखा है। व्यास की इस गद्दी के लाखों अनुयायी देश-विदेश में फैले हैं। व्यास में राधास्वामी मत का यह सम्प्रदाय एक बड़े अस्पताल का संचालन करता है। इस मत के अनुयायी पूर्ण अनुशासित रूप में सम्प्रदाय के वार्षिक सत्संग में उपस्थित होते हैं और अपने गुरु के उपदेशों को सुनते हैं।

आचार्य श्रद्धानन्द अवधूत

आनन्दमार्ग के संस्थापक आनन्दमूर्ति (मूल नाम प्रभातरंजन सरकार नामक पूर्वी रेलवे का एक कर्मचारी) के निधन के पश्चात् इस मार्ग का नेतृत्व ७२ वर्षीय श्रद्धानन्द अवधूत को मिला। एम. ए. तक शिक्षित अवधूत महाशय का वास्तविक नाम एस. राय है। इसका जन्म उत्तरप्रदेश के बलिया नगर में हुआ था। यह मार्ग के संस्थापक आनन्दमूर्ति की भांति चमत्कार दिखाने का दावा नहीं करता, जबकि प्रभात रंजन सरकार के कलुषित कारनामों ने आनन्दमार्ग को विगत दो दशकों में विवादास्पद बना दिया है। बंगाल की मार्क्सवादी सरकार से आनन्द मार्ग की टक्कर का राजनैतिक चरित्र स्पष्ट उजागर हो चुका है। इसके अनेक अवधूत अनुयायियों को आनन्दमूर्ति द्वारा गुप्त रूप से मृत्यु दण्ड दिये जाने तथा मानव मुण्डों को हाथ में लेकर अवधूतों के नृत्य जैसे कृत्यों की कठोर आलोचना हुई है। भारत के विगत प्रधानमन्त्री श्री मोरार जी देसाई पर आस्ट्रेलिया में एक विदेशी आनन्दमार्गी ने प्राणघाती प्रहार किया था। इसके ४५ लाख अनुयायी अनेक देशों में फैले हुए हैं। आनन्दमूर्ति की पत्नी ने उसके जीवनकाल में अनेक आरोप लगाये थे तथा बिहार सरकार ने अनेक अपराधों में आनन्दमूर्ति की भूमिका को देखते हुए उन्हें वर्षों तक नजरबन्द रखकर उस पर मुकद्दमा भी चलाया था।

स्वामी ओम सदाचारी

नाम के सदाचारी किन्तु हद दर्जे के लम्पट और दुराचारी इस बाबा का वास्तविक नाम विनोदानन्द झा है। इसने समय-समय पर सदाचारी सांई बाबा, ओमजी तथा रामकुमार शर्मा नाम भी प्रयुक्त किये हैं। बिहार के मधुबनी क्षेत्र का चौंतीस वर्षीय विनोदानन्द झा १९८०-८४ के श्रीमती इन्दिरा गान्धी के शासनकाल में अनेक राज-नीतिज्ञों के सम्पर्क में आया। उसके बाद प्रभावशाली लोगों, नौकरशाहों तथा राजनीति के हथकण्डेबाजों के साथ खिंचे चित्रों का एक मोटा एलबम साथ में रखने वाला यह बाबा जरूरतमंदों को इन चित्रों से प्रवंचित करता रहा। कई लोग इसकी धोखाधड़ी के शिकार हुए। बम्बई में इसने आध्यात्मिक साधना का एक केन्द्र स्थापित किया किन्तु पुलिस ने इसे लोगों को धोखा देने और चारसौबीसी के अपराध में गिरफ्तार कर लिया। दुराचारी बाबा ने अपने निवास के सोफों में बिजली के तारों की फिटिंग करा रक्खी है। वह अपने भक्तों को इन पर बिठाकर उन्हें बिजली के झटके लगवाता और इस प्रकार उनको यह कहकर प्रभावित करता कि यह उसकी दैव शक्ति का

चमत्कार है। उस पर अनेक अबोध युवतियों से बलात्कार करने के आरोप भी लगाये गये। वह पुलिस की गिरफ्त में अनेक बार आया। अभी कुछ मास पूर्व ही नगी फिल्मों तथा अश्लील चित्रों के एलबम उसके नि[illegible]स की तलाशी लेने पर बरामद हुए थे।

बाल[illegible]ेश्वर और उसका भाई सतपाल महाराज

हंसा मत के प्रवर्तक देहरादून निवासी किसी रावत का पुत्र अपनी किशोरावस्था में ही बालयोगेश्वर के नाम से लाखों देशी-विदेशी अनुयायियों का गुरु बन बैठा। चार्टर्ड वायुयान में सैकडों विदेशी भक्तों के साथ यदा-कदा भारत आकर अपने चेले चांटों को अध्यात्म की घुट्टी पिलाने वाला प्रेमपाल रावत उर्फ बालयोगेश्वर अन्ततः आयु में अपने से बडी अपनी अमेरिकन सचिव के प्रेमजाल में फस गया और ईसाई पद्धति से उससे विवाह तो किया ही उसने हंसामत के गुरु का चोला भी उतार फेंका। अब उसका बड़ा भाई सतपाल महाराज साक्षात् भगवान् रूप में अपने अनुयायियों की श्रद्धा और विश्वास का भाजन बना हुआ है। साथ ही उसकी माता जगज्जननी बनी हुई भक्तजनों को आशीर्वाद प्रदान करती है। लगभग दस वर्ष पूर्व ये संसारी भगवान् विवाह बन्धन में बंधे तो इनके निम्न और मध्यम वर्ग के लाखों अनुयायी हरिद्वार स्थित प्रेमनगर (हंसा मत का प्रधान कार्यालय) में एकत्र हुए और उन्होंने इस देवीदाम्पत्य बन्धन के अवसर पर आयोजित गहमागहमी का आनन्द लिया। अब तो सतपाल महाराज कांग्रेस (आई०) के सदस्य हैं और मई के चुनावों में इसी दल के प्रत्याशी भी थे। चुनाव तो उन्होंने १९८९ में भी लडा था और पराजित हुए थे।

इन और ऐसे स्वयंभू भगवानों और गुरुओं की कथा को आगे बढ़ाने से कोई विशेष लाभ नहीं है। अतः इस गुरु-कथा को यहीं समाप्त करने से पूर्व यह लिख देना आवश्यक है कि उपर्युक्त वर्णित गुरुओं में स्वामी चिन्मयानन्द, महेश योगी और मुरारी बापू ऐसे धर्माचार्य हैं जिनकी गतिविधियां प्रायः निर्दोष तथा विवाद से परे हैं। राधास्वामी मत के गुरु गुरिन्द्रसिंह सन्त मत के सिद्धान्तों के व्याख्याता कहे जा सकते हैं। इन गुरुओं में से अधिकांश का शास्त्रीय ज्ञान तो बहुत सीमित है, किन्तु इनमें से कुछ की लोकप्रियता तथा अनुयायियों की बहुत अधिक संख्या का एक कारण उनके द्वारा प्रचारित शिक्षाओं का प्रायः निर्विवाद तथा सर्वजन स्वीकृत होना भी है। ये गुरु विवादास्पद विषयों से दूर रहकर जन-सामान्य को नैतिक दृष्टि से उन्नत होने की शिक्षा देते हैं। इनके अधिकांश अनुयायी भी दार्शनिक और धार्मिक गूढ सिद्धान्तों को समझने की क्षमता नहीं रखते और स्वगुरुओं के प्रति अनन्य निष्ठावान् रहकर उनके उपदेशों को श्रद्धापूर्वक सुनते हैं। किन्तु सांई बाबा, चन्द्रास्वामी, ब्रह्माकुमारी, आनन्दमार्गी, अवधूत सदाचारी बाबा तथा बाल योगेश्वर जैसे गुरु तो देश और धरती के लिए भाररूप ही हैं। इन्होंने धर्म, समाज और देश में गुरुडम, पाखण्ड, आडम्बर और धूर्तता को ही बढाया है।

उठो साथियो आंखें खोलो

इस समाज पर चित्रहार ने सीधा किया प्रहार।
क्या अनपढ़ क्या पढ़े लिखे हुये सभी बेकार॥

बरबाद हुआ है मनुष्य व्यर्थ में लुटा रहा दाम।
खर्चीले और दिखावटी फैशन का बना गुलाम॥

बीच कुटेवों में फसकर होगी तेरी अवनति।
हे मूर्ख मनुष्य ब्रह्मचारी बन निश्चय तेरी उन्नति॥

ब्रह्मचर्य के पालन से बन जाते हृष्ट-पुष्ट।
भोग विलासी शीघ्र ही होते नष्ट-भ्रष्ट॥

ले०—ब्रह्मचारी राजू व नन्दकिशोर शर्मा
ग्रा० पो०–पन्हैड़ा खुर्द, बल्लबगढ़
जि० फरीदाबाद (हरयाणा)

जिला वेदप्रचार मण्डल पानीपत की गतिविधियां

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा गठित जिला वेद प्रचार मण्डल पानीपत के संयोजक एवं सभा के कोषाध्यक्ष ला० रामानन्द जी सिंगला के निर्देशन में पं० रामकुमार जी आर्य भजनोपदेशक की भजन मण्डली ने दिनांक १६ मई, १९९१ से ३० जून ९१ तक निम्नलिखित ग्रामों में वेदप्रचार किया तथा कुछ शिथिल आर्यसमाजों में जागृति उत्पन्न की है एवं कुछ ग्रामों में नवीन आर्यसमाजों की स्थापना भी की है।

ग्राम बागडू खुर्द (जीन्द) के प्रिय भ्राता सुन्दरसिंह जी के सुपुत्र के जन्मदिन के उपलक्ष्य में वैदिक प्रचार किया। नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया गया।

ग्राम बागडू कलां में नवीन आर्यसमाज की स्थापना करके लगभग दर्जनों युवकों को आर्यसमाज में दीक्षित किया। सामाजिक बुराइयों के खिलाफ प्रचार करके आर्यसमाज का सन्देश घर-घर भजनों द्वारा पहुंचाया गया।

ग्राम सरफाबाद (जीन्द) में वैदिक प्रचार करके पुरानी आर्यसमाज को पुनर्जीवित किया और आर्यसमाज का नया चुनाव कराया गया।

ग्राम पात्थरी (पानीपत) में दो दिन प्रचार करके शिथिल आर्यसमाज पात्थरी में नई जान डाली गई, लोग बड़े प्रभावित हुए। वैदिक प्रचार को शान्तिपूर्वक सुना।

ग्राम हलदाना (पानीपत) में शराब के ठेके को हटाने हेतु वैदिक प्रचार करके लोग उत्साहित किये। नवीन आर्यसमाज की स्थापना की। भजनों के माध्यम से आर्यसमाज का सन्देश घर-घर पहुंचाया। कई नवयुवकों ने यज्ञ पर जनेऊ लिये।

ग्राम पट्टी कल्याणा में दो दिन वैदिकप्रचार किया। शान्तिपूर्वक लोगों ने प्रचार सुना, बुराइयों से दूर रहने का व्रत लिया और प्रधान मुख्त्यारसिंह जी ने प्रचार में विशेष सहयोग दिया।

ग्राम बिजावा में वैदिक प्रचार से प्रभावित करके नवीन आर्यसमाज की स्थापना की गई। राजवीरसिंह जी आर्य एवं जगवीरसिंह जी आर्य ने प्रचार को सफल करने में विशेष सहयोग दिया।

ग्राम खलीला रोडान में छह दिन तक वैदिक प्रचार किया। नवयुवकों ने प्रभावित होकर सामाजिक बुराइयों से दूर रहने का व्रत लिया। प्रचार शान्तचित्त होकर सुना। पुरानी शिथिल आर्यसमाज में चेतना पैदा करके नया आर्यसमाज खलीला रोडान का चुनाव कराया गया। प्रधान चौ० दयासिंह जी आर्य ने विशेष सहयोग दिया।

ग्राम भाऊपुर में तीन दिन तक भजनों द्वारा आर्यसमाज का प्रचार किया गया। नवीन आर्यसमाज की स्थापना की गई। श्री रमेशकुमार जी सुपुत्र श्री हरिसिंह जी ने प्रचार को सफल बनाने में विशेष सहयोग दिया। सर्वसम्मति से आर्यसमाज भाऊपुर का चुनाव किया गया।

नामकरण संस्कार

दिनांक १६ जून, १९९१ वार रविवार को चौ० हकीकतराय जी (उपप्रधान आर्यसमाज टोहाना, हिसार) के पौत्र का नामकरण संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। बालक का नाम प्रतीक रखा गया। इस अवसर पर पं० विश्वामित्र जी (हिसार) ने नामकरण संस्कार के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा पं० धर्मप्रकाश जी (पुरोहित आर्यसमाज टोहाना) के सुमधुर भजन हुये। उपस्थित जन-समूह ने बालक के दीर्घायु की कामना की तथा आशीर्वाद दिया। अन्त में चौ० हकीकतराय जी ने सब का धन्यवाद किया। इस अवसर पर स्त्री आर्यसमाज को १४० रुपये दान दिया गया।

अरविन्दकुमार 'कमल' (टोहाना)

श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार से प्रोफेसर राजेन्द्र जिज्ञासु जी का सम्मान

आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई ने अपनी पुरस्कारों की श्रृंखला में एक नया पुरस्कार आरम्भ करके आयजगत् के लेखकों का सम्मान करने का जो निश्चय किया गया है उस सन्दर्भ में रविवार ३० जून १९९१ को एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इससे पूर्व आर्यसमाज सान्ताक्रुज आजीवन वेद वेदांगों का अनुसधान करने वाले तथा आजीवन आर्यसमाज के प्रचार प्रसार के कार्यों में सलग्न वेदोपदेशकों को वेद वेदांग एवं वेदोपदेशक पुरस्कार से सम्मानित करता रहा है। इस शृंखला को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष १९९१ में श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया है। यह प्रथम पुरस्कार आर्यजगत् के जाने-माने लेखक श्री प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु को देकर सम्मानित किया गया। पुरस्कार स्वरूप ११०००/- ग्यारह हजार की थैली, रजत ट्राफी, शाल तथा अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया। महामन्त्री श्री नरेन्द्र कुमार पटेल ने अभिनन्दन पत्र पढ़ा। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूजनीय स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने ११०००/- की थैली भेंट की तथा सुप्रसिद्ध ...कार तथा लेखक श्री धर्मवीर जी भारती ने अभिनन्दन पत्र भेंट किया।

इस अवसर पर बोलते हुए प्रोफेसर राजेन्द्र जिज्ञासु ने कहा आपने जो मेरा सत्कार किया है यह मेरा सत्कार ही नही अपितु आर्यजगत् के उन मूर्धन्य त्यागी तपस्वी प्रचारकों लेखकों का है जिन्होंने अपना सर्वस्व आर्यसमाज के लिए समर्पण कर दिया है। यह सम्मान पं० रामचन्द्र जी देहलवी, पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, प० शान्तिप्रकाश जी, पं० लेखराम जी, महात्मा हसराज जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, स्वामी सर्वानन्द जी आदि का सम्मान है। जिनकी प्रेरणा से मैंने यह सब लेखन कार्य किया है। आपने जो सम्मान मुझे दिया उसके लिए मैं आपका आभारी हू।

इस अवसर पर बोलते हुए पूर्व सम्पादक श्री धर्मवीर जी भारती ने कहा मेरे जीवन का स्रोत महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र है। आपने कहा पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय मेरे गुरु थे मैंने बचपन में उनके चरणों में बैठकर शिक्षा प्राप्त की है। मैं स्वय आर्यसमाजी परिवार से हू। स्वामी दयानन्द ने जिस समय पाखण्ड खण्डनी पताका हरिद्वार में फहराई थी उस समय उनका उद्देश्य कुरीतियों का नाश करना था। आर्यसमाज सान्ताक्रुज ने विद्वानों का सम्मान करने की श्रृखला को आरम्भ करके आदर्श स्थापित किया है। श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी जैसे लेखक के सम्मान समारोह में उपस्थित होकर मुझे प्रसन्नता हो रही है।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज के वरिष्ठ उपप्रधान कैप्टिन देवरत्न आर्य ने आर्यसमाज द्वारा प्रारम्भ किये गये समस्त पुरस्कारों का परिचय देते हुए कहा कि श्री मेघजी भाई के सुपुत्र श्री कनकसिंह जी के सहयोग से हमने यह पुरस्कार आरम्भ किया है आपने प्रतिवर्ष ५० हजार रुपये आर्यसमाज को इस पुरस्कार के लिए देने का निश्चय किया है। इस आर्थिक सहयोग से आर्यसमाज श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार को सदा चलाता रहेगा। श्री मेघजी भाई को इच्छा थी कि १००० आर्यसमाजों की स्थापना की जाए। उनके जीवन काल में यह कार्य पूरा नहीं हो सका तो भी हमने उनकी इच्छानुसार आर्यसमाज फार्ट में एक नयी एम्बूलेन्स लेने का निश्चय किया है। जैसी श्री मेघजी भाई की इच्छा थी कि यदि मैं एक हजार आर्यसमाजों की स्थापना नहीं कर सका तो कम से कम एक हजार घरों में वैदिक साहित्य अवश्य पहुचाया जाए। उनकी भावनाओं के अनुरूप हम एम्बुलेन्स में अधिक से अधिक वैदिक साहित्य रखकर स्थान-स्थान पर बिक्री करेंगे। ताकि उनकी इच्छा को हम पूरा कर सके। कैप्टिन आर्य ने मेघजी भाई के छोटे भ्राता का भी धन्यवाद किया।

आज बम्बई की समस्त आर्यसमाजों ने अपने साप्ताहिक सत्सगों को स्थगित करके आर्यसमाज सान्ताक्रुज में सम्मिलित रूप से प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु जी का स्वागत किया। श्री जिज्ञासु जी को चन्दन की तथा पुष्पों की मालाओं से लाद दिया गया। इससे समारोह का वातावरण और भी सुहावना हो गया था।

समारोह में बोलते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने कहा श्री जिज्ञासु जी का कार्य आर्यजगत् के लिए अनुकरणीय है। इन्होंने जो साहित्य सृजन में परिश्रम किया है वह अद्वितीय कार्य है। यह मनस्वी लेखक ही नहीं अपितु निर्भीक वक्ता भी है। आपने कहा श्री राजेन्द्र जी ने अपने साहित्य के द्वारा जो प्रेरणा दी है बहुत ही प्रशंसनीय है।

आर्यसमाज अपने कार्य को सदा आगे बढ़ाता रहा है और बढ़ाता रहेगा। स्वामी जी ने कहा हम महर्षि दयानन्द के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जीवन भर संघर्ष करते रहे हैं और करते रहेंगे। आर्य समाज की शिरोमणि सभा अब एक विशाल गऊशाला दिल्ली में प्रारम्भ करने जा रही है, जिसका लक्ष्य श्वेतक्रान्ति है। स्वामी जी ने श्री जिज्ञासु जी को उत्साही कार्यकर्ता बताते हुए कहा हमें ऐसे व्यक्तियों का सम्मान सदा करना चाहिये ताकि आने वाली पीढ़ी इनका अनुकरण करती रहे। मैं आर्यसमाज का धन्यवाद करता हूं कि इसने यह सराहनीय कार्य किया।

इस समारोह में श्री पण्डित राजगुरु शर्मा, डा० सोमदेव जी शास्त्री आदि के भी भाषण हुए। डा० सोमदेव शास्त्री ने प्रो० जिज्ञासु जी का परिचय कराया। श्री संदीपदत्त आर्य ने आर्यसमाज की गतिविधियों का उल्लेख किया तथा आर्यसाज के प्रधान महाशय चमनलाल जी ने समस्त उपस्थित जनसमुदाय का धन्यवाद किया।

इस संदर्भ में रविवार २३ से ३० जून तक यजुर्वेद महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस महायज्ञ का संचालन पण्डित राजगुरु जी शर्मा ने किया। दिनांक २७ २८, २९ जून की नित्य रात्रि ८-३० से १० बजे तक श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी के तथा पण्डित राजगुरु जी के मधुर प्रवचनों का भी जनसाधारण ने लाभ प्राप्त किया। समारोह का सम्पूर्ण वातावरण बहुत ही सौहार्दपूर्ण था।

यह समारोह कप्टिन देवरत्न आर्य के कुशल संयोजन तथा अथक परिश्रम के फलस्वरूप पूर्णरूपेण सफल रहा। आर्य साहित्य पुरस्कार समारोह की समाप्ति पर प्रीतिभोज का आयोजन हुआ।

भवदीय—नरेन्द्र प० पटेल
कृते महामन्त्री

डा० भवानीलाल भारतीय
श्री घूड़मल आर्य साहित्य पुरस्कार से सम्मनित

आर्यजगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज के जाने-माने लेखक और विद्वान् डा० भवानीलाल भारतीय को हिण्डौन में आगामी २ सितम्बर को श्री घूड़मल आर्य साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। यह पुरस्कार उनकी विख्यात कृति नव-जागरण के पुरोधा : दयानन्द सरस्वती तथा उनके द्वारा सम्पादित श्रद्धानन्द ग्रन्थावली के ६ खण्डो पर दिया जा रहा है। इस अवसर पर आर्यसमाज हिण्डौन में भारतीय जी की ऋषि जीवन पर कथा भी होगी।

आर्यसमाजों के चुनाव

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली

प्रधान—श्री सरदारी लाल वर्मा, उपप्रधान—श्री राममूर्ति कंसा, श्री रतनलाल सहदेव, प्रहलादराय गुप्त, डा० अमरजीवन, मन्त्री—श्री त्रिलोकीनारायण मिश्र, उपमन्त्री—श्री एन० सत्यनारायण आर्य; श्री वीरेशकुमार बुग्गा, श्रीमती सुमेधा शर्मा, कोषाध्यक्ष—ओम्प्रकाश आहूजा, पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, अधिष्ठाता आर्य वीरदल—अरुण प्रकाश वर्मा।

आर्यसमाज माऊपुर, जिला पानीपत

प्रधान—श्री सुरेशकुमार, उपप्रधान—श्री सुरेशकुमार, मन्त्री-श्री ओम्प्रकाश, उपमन्त्री—श्री रोशनलाल, प्रचारमन्त्री—श्री दिलबाग, कोषाध्यक्ष—श्री रमेशकुमार, पुस्तकाध्यक्ष—श्री सुखबीरसिंह।

आर्यसमाज बिजावा जिला पानीपत

प्रधान—श्री दिलबाग सिंह आर्य, मन्त्री—राजबीर सिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री हवासिंह आर्य।

आर्यसमाज सलीला रोडान, जिला करनाल

प्रधान—श्री दयासिंह आर्य, मन्त्री—श्री चन्द्रपाल आर्य, कोषाध्यक्ष—जयदेव शास्त्री।

आर्यसमाज [illegible] मिन्डोर्ल, जिला फरीदाबाद

प्रधान—श्री बहालसिंह भारद्वाज, उपप्रधान—श्री लेखराम आर्य, महामन्त्री—श्री डालचन्द आर्य प्रभाकर, उपमन्त्री—श्री वीरेन्द्रसिंह आर्य, प्रचारमन्त्री—श्री सोहनलाल आर्य, कोषाध्यक्ष—मा० नत्थीराम, व्यवस्थापक—श्री किशोरसिंह सरपंच।

आर्यसमाज बल्लबगढ़, जिला फरीदाबाद

प्रधान—श्री राधेश्याम गुप्ता, उपप्रधान—श्री महेन्द्रसिंह बोहरा, श्री सुरेशकुमार मडाना, मन्त्री—श्री योगेन्द्रपाल, उपमन्त्री—श्री रामकिशन मित्तल, श्री सुभाषचन्द्र गुप्ता, कोषाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्रकुमार गुप्ता, पुस्तकालयाध्यक्ष—ब्रजभूषण मित्तल।

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बरोदा जिला रोहतक का वार्षिक उत्सव २४ से ३० जून तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें पं० चिरन्जीलाल आर्य भजनोपदेशक के द्वारा क्रान्तिकारी प्रचार होता रहा। श्री चन्द्रपाल शास्त्री के प्रवचन तथा पं० नन्दुराम जी के भी भजन हुए। आखरी दिन स्वामी ब्रह्मानन्द द्वारा योग आसन प्रदर्शन किया गया। गांव की जनता प्रचार से बहुत प्रभावित हुई। सभा को 1200 रु० दान दिया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० २३२०/७३ रजि नं० P/RTK [illegible] नं० ७८३१२

प्रधान सम्पादक—सूबेसिह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक ३३ २१ जुलाई, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

वेद में अग्नि और सूर्य

(पं० धर्मदेव "मनोज्ञो" वेदतीर्थ गुरुकुल कालवा)

'अग्नि' शब्द निघण्टु ५।४ में पद नामों में पढा गया है। इसलिए अग्नि शब्द गत्यार्थक होने से ज्ञानस्वरूप ईश्वर और प्राप्त्यर्थक भौतिक अग्नि का ग्रहण होता है "सूर्य" शब्द निघण्टु ५।६ में पद नामों में पढा है। यजुर्वेद ३।९ में अग्नि और सूर्य कैसे हैं यह उपदेश किया है :—

अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहाः, सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा, सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। ज्योति सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।

अर्थ—(अग्नि) जगत् का स्वामी परमेश्वर (स्वाहा) सत्य भाषण करनेवाली वाणी रूप (ज्योतिः) सर्वप्रकाशक ज्योति सबको प्रदान करता है। इसी प्रकार [अग्निः] भौतिक अग्नि भी [ज्योतिः] सर्व-प्रकाशक ज्योति प्रदान करता है। (सूर्यः) चराचर का आत्मा एवं चराचर को जाननेवाला जगदीश्वर (स्वाहा) हृदयस्थ सत्य वाणी द्वारा (ज्योतिः) सब आत्माओं को प्रकाश देनेवाला, सकल विद्याओं का उपदेश करनेवाला जगदीश्वर सबकी आत्माओं में ज्ञान प्रदान करता है। [सूर्यः] अपने प्रकाश से सबको प्रेरणा देनेवाला सूर्य [ज्योतिः] ज्योति प्रदान एवं पृथिवी आदि मूर्त द्रव्यों को प्रकाशित करता है। [अग्निः] सब विद्याओं का उपदेशक एव प्रकाशक जगदीश्वर मनुष्यों के लिए सब विद्याओं का आधार (वर्च्चः) सब विद्याओं के प्राप्ति साधन चारों वेदों को ऋषियों के हृदय में प्रकाशित करता है। इसी प्रकार (ज्योति) शरीर और ब्रह्माण्ड में स्थित सकल पदार्थों को प्रकाशित करनेवाला विद्युत् नामक यह अग्नि (वर्चः) विद्या और वृष्टि का निमित्त एवं विद्या और व्यवहार का साधक है। (सूर्यः) सकल विद्या प्रकाशक, सर्वव्यापक जगदीश्वर ने सब मनुष्यों के लिए (स्वाहा) यह उपदेश किया है कि हे मनुष्यो! तुम अपने पदार्थों को ही 'मेरा' कहो अन्यों के पदार्थों को नहीं (ज्योतिः) सत्य प्रकाशक परमेश्वर (वर्चः) प्रकाश करनेवाले विद्युत्, सूर्य और प्रसिद्ध अग्नि नामक तेज को बनाता है। तथा (ज्योतिः) सब व्यवहारों का प्रकाशक सूर्यलोक भी (वर्चः) शरीर और आत्मा के बल को प्रकाशित करता है। (सूर्यः) सकल विद्यादि व्यवहारों का प्रापक प्राणादि समूह (ज्योतिः) सकल विद्याओं के प्रकाशक ज्ञान के साधक हैं। तथा यह ज्योतिर्मय (सूर्यः) जगदीश्वर (स्वाहा) वेदवाणी एवं यज्ञादि शुभ कर्मों का उपदेश करता है तथा (ज्योतिः) उत्तम रीति से आहुत की हुई हवि को अपने रचे पदार्थों में अपनी शक्ति से सर्वत्र फैलाता है॥

महर्षि दयानन्द जी ने इस मन्त्र का उल्लेख पञ्च महायज्ञ विधि (देवयज्ञविधि) में सायंकाल तथा प्रातःकाल के होम मन्त्रों में किया है और इस प्रकार व्याख्या की है :—

(अग्निर्ज्यो) अग्नि जो परमेश्वर ज्योतिः स्वरूप है उसकी आज्ञा से हम परोपकार के लिए होम करते हैं और उसका रचा हुआ जो यह भौतिकाग्नि है, जिसमें द्रव्य डालते हैं सो इसीलिए है कि उन द्रव्यों के परमाणु करके जल और वायु, वृष्टि के साथ मिला के उनको शुद्ध करदे। जिससे सब ससार सुखी होके पुरुषार्थी हो॥

(अग्निर्वर्चो०) अग्नि जो परमेश्वर वर्च अर्थात् सब विद्याओं का देनेवाला तथा अग्नि आरोग्य और बुद्धि बढाने का हेतु है। इसलिए हम लोग होम करके परमेश्वर की प्रार्थना करते हैं। यह दूसरी आहुति हुई। तीसरी आहुति प्रथम [अग्निर्ज्यो०] मन्त्र से मौन करके करनी चाहिए॥

(सूर्यो ज्यो०) जो चराचर का आत्मा प्रकाशस्वरूप और सूर्यादि प्रकाशक लोकों का भी प्रकाशक है, उसकी प्रसन्नता के लिए हम लोग होम करते हैं॥

(सूर्यो व०) जो सूर्य परमेश्वर हमको सब विद्याओं का देनेवाला, और हम लोगों से उनका प्रचार करानेवाला है, उसी के अनुग्रह के लिए हम लोग अग्निहोत्र करते हैं।,

(ज्योतिः सूर्य०) जो आप प्रकाशमान और जगत् का प्रकाश करने वाला, सूर्य अर्थात् सब संसार का ईश्वर है उसकी प्रसन्नता के अर्थ हम लोग होम करते हैं॥

महर्षि ने इस मन्त्र की व्याख्या ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (पञ्च-महायज्ञ विषय) में इस प्रकार की है :—

(सूर्यो ज्यो०) जो चराचर का आत्मा प्रकाश स्वरूप और सूर्यादि प्रकाशक लोकों का भी प्रकाश करनेवाला है उसकी प्रसन्नता के लिए हम लोग होम करते हैं॥

(सूर्यो वर्चो०) सूर्य जो परमेश्वर है वह हम लोगों को सब विद्याओं का देनेवाला और हमसे उनका प्रचार करानेवाला उसी के अनुग्रह से हम लोग अग्निहोत्र करते हैं॥

(ज्योतिः सू०) जो आप प्रकाशमान और जगत् का प्रकाश करने वाला सूर्य अर्थात् संसार का ईश्वर है उसकी प्रसन्नता के अर्थ हम लोग होम करते हैं॥

(अग्निज्यो०) अग्नि जो ज्योति परमेश्वर है उसकी आज्ञा से हम लोग परोपकार के लिए होम करते हैं और उसका रचा हुआ यह भौतिक अग्नि इसलिए है कि वह उन द्रव्यों को परमाणु रूप करके वायु और वर्षा जल के साथ मिलाके शुद्ध करदे। जिससे सब ससार को सुख और आरोग्यता की वृद्धि हो॥

(अग्निर्वर्चो०) अग्नि परमेश्वर वर्च अर्थात् सब विद्याओं का देने वाला और भौतिक अग्नि आरोग्यता और बुद्धि का बढ़ानेवाला है इसलिए हम लोग होम से परमेश्वर की प्रार्थना करते हैं। यह दूसरी आहुति है। तीसरी मौन होके (अग्निर्ज्यो०) मन्त्र से करनी॥

महर्षि ने इस मन्त्र का विनियोग संस्कारविधि (गृहाश्रम प्रकरण) अग्निहोत्र में सायं तथा प्रातःकाल की आहुतियों में किया है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रयोग और प्रसार में

महिलाओं का मौलिक योगदान

डा० सरोज अग्रवाल

अपने देश के लोग कहा सबसे ज्यादा एकत्र होते हैं और उनकी सम्पर्क की भाषा क्या है ? तो उत्तर एक ही मिलता है कि हिन्दुस्तान में एकत्र होते हैं और हिन्दी ही उनकी सम्पर्क भाषा है। लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति ने यह कूट-कूटकर भर दिया था कि अंग्रेजी के बिना ऊंची शिक्षा और ऊंचे ओहदे तक नहीं पहुंच सकते। लेकिन आज भी हिन्दुस्तान में हिन्दी ही सर्वाधिक प्रयोग की भाषा है उसका स्पष्ट उदाहरण आज भी गाव के बिना पढे-लिखे लोग चारों धाम की यात्रा बिना अंग्रेजी के इस्तेमाल के कर आते हैं। बड़े-बड़े शिक्षाविद् धार्मिक व अन्य विद्वान् बिना अंग्रेजी के विदेशी यात्रा कर आते हैं। हिन्दी केवल भारत ही राष्ट्रभाषा नहीं है बल्कि विदेशो में भी इसका चलन है बल्कि मारीशस फिजी, सूरीनाम तथा अनेकों देश हिन्दी को संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषाओं में सम्मिलित करने के इच्छुक हैं। श्री विशन चन्द्र सेठ ने नेहरू जी को सत्रह जून सन् बासठ को लिखे पत्र मे कहा था कि हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में शामिल कराये जाने का प्रयास क्यों नहीं किया जारहा है।

भाषा मानव की अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है। मानवमन का अकेलापन भाषा और साहित्य के द्वारा ही दूर किया जा सकता है। प्रत्येक देशभक्त को राष्ट्रभाषा भक्त भी होना चाहिए। क्योंकि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है अतः अंग्रेजी का प्रयोग हमारी जीभ कटने के समान है। हिन्दी के प्रयोग से हिन्दुस्तान के बाहर भी विद्वानों को खूब प्रसिद्धि मिली है। जैसे—डा० विवेकानन्द शर्मा (फिजी), डा० दयानन्दलाल, बसन्तराय, (मारीशस), श्रीमती इन्द्रा देस्स नायके (लंका)।

राष्ट्रभाषा का प्रयोग न करने से सबसे बड़ा प्रत्यक्ष प्रमाण डाक्टरी पेशा में नजर आता है। प्रायः सभी डाक्टर और सभी स्थानों पर मरीज का नाम, बीमारी का नाम, दवा का नाम व दवा खाने की खुराक कि कौन-सी दवा कब और कितनी बार लेनी है अंग्रेजी में ही लिखते हैं। कभी-कभी एक ही परिवार के कई मरीज होते हैं साथ दवा खाने पर किसी की कोई खा जाता है और उसका परिणाम आप स्वयं समझ सकते हैं। मान लिया जाये कि दवाओं के नाम अंग्रेजी में ही होते हैं पर मरीज का नाम व अन्य बातें तो हिन्दी में लिखी ही जा सकती हैं।

सौभाग्य से जहां बड़े-बड़े राजनेता सांसद अपना भाषण अंग्रेजी में देना पसन्द करते हैं वहीं अधिकतर महिला नेत्रियां हिन्दी में भाषण देना अधिक पसन्द करती हैं। राष्ट्रभाषा का प्रयोग करके सर्वाधिक प्रसार एवं प्रचार नारियों के द्वारा ही हुआ है। किसी भी भाषा के प्रचार एवं प्रसार के लिए सशक्त माध्यम लेखनी ही होती है। महान् लेखिकाओं ने हिन्दी भाषा का ही प्रयोग किया है। भारत कोकिला सरोजिनी नायडू, श्रीमती महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, मृणाल पाण्डे, सरोजिनी प्रीतम, शिवानी श्रीमती शामली (हरयाणा) आदि। तथा कवयित्रियों में सुमित्रा कुमारी सिन्हा, सस्नेहलता स्नेह' पुष्पाभारती, ज्ञानवती सक्सेना, चन्द्रवती ओझा, प्रभा ठाकुर एवं ममता खरे आदि। हमारे देश में तो आदिकाल से ही नारी प्रेरणा व शक्ति का प्रतीक मानी जाती रही हैं। यदि शिव (भगवान् शंकर) जो लय, ताल और जीवन की लय के प्रतीक हैं, उनके नाम से स्त्रीलिंग 'इ' मात्रा हटा दी जाए तो शिव का शव हो जायेगा। परन्तु आर्थिक सत्ता पुरुषों के हक मे होने के कारण प्रधानता पुरुषों की ही रही है। और इस पुरुषप्रधान समाज में स्त्रियों की प्रतिभा सदैव से ही कुंठित होती आई है। अब आपके समक्ष कुछ ऐसे तथ्य पेश हैं जिनके आधार पर कह सकते हैं कि हिन्दी के प्रयोग और प्रसार में महिलाओं का ही मौलिक योगदान रहा है।

जिन महान् लेखिकाओं के नाम ऊपर दिए हैं, यह बात नहीं कि उनमें अंग्रेजी किसी को न आती हो। भारत कोकिला सरोजिनी नायडू का अंग्रेजी पर भी उतना ही अधिकार था जितना हिन्दी पर और अंग्रेजी की भी बहुत अच्छी लेखिका रही हैं, लेकिन प्राथमिकता उन्होंने हिन्दी को ही दी व दैनिक जीवन में हिन्दी का ही सर्वाधिक प्रयोग किया।

श्रीमती महादेवी वर्मा ने लिखा है "सचमुच उस समय मेरी आंखें भर आती हैं जब मेरे पास लोगों के पत्र अंग्रेजी में आते हैं।"

विदेशी महिला इन्द्रा देस्स नायके (लंका) ने हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार अपनी लेखनी के माध्यम से किया।

राष्ट्र की प्रमुख हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में ही महिलाओं के लेख अधिक आते हैं अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाओं में नहीं। कारण यह नहीं कि उन्हें अंग्रेजी लिखनी ही नहीं आती।

कई स्थानों पर अंग्रेजी प्रवक्ता दैनिक कामकाज जैसे बैंक या अन्य सरकारी कार्यालय के हिन्दी में ही करते हैं। उनका कहना है कि राष्ट्रभाषा का आनन्द ही कुछ ओर है।

प्रायः देखा गया है कि बैंक या सरकारी कार्यालयों में महिलायें हिन्दी में काम करती हैं तो पुरुष खिल्ली उडाते हैं।

साक्षरता मिशन के अन्तर्गत ४५ करोड की निरक्षर जनता में से महिलाओं का ही प्रतिशत अधिक है और यह कार्य हिन्दी में ही हो रहा है। अर्थात् महिलाओं को अहिन्दी व हिन्दी क्षेत्रों दोनों में हिन्दी में ही हस्ताक्षर करना व लिखना-पढना सिखाया जारहा है।

सर्वेक्षण के दौरान मैंने पाया कि अंग्रेजी की अध्यापिकायें व प्रवक्तायें हिन्दी के प्रयोग से उपहास की पात्र बनती हैं, मेरा अपना भी अनुभव है क्योंकि विगत सत्रह वर्षों से मैं जानकी बाई बालिका इन्टर कॉलेज में अंग्रेजी की उच्च कक्षाओं को पढ़ाने वाली अध्यापिका के रूप में कायरत हूं परन्तु दैनिक जीवन के सभी कार्य मुझे हिन्दी में करने में जो सुख का आत्मसंतोष का अनुभव होता है वह अन्य भाषाओं में नहीं। अतः उपरोक्त तथ्यों के आधार पर मैं कह सकती हूं कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रयोग और प्रसार में महिलाओं का मौलिक योगदान सराहनीय रहा है।

(पृष्ठ १ का शेष)

मन्त्र में ज्योति शब्द के अर्थ—१. सर्व प्रकाशक जगदीश्वर, २. सब आत्माओं का प्रकाशक एवं वेद द्वारा सकल विद्या का उपदेशक ईश्वर, ३. पृथिवी आदि मूर्त द्रव्यों का प्रकाशक सूर्य, ४. शरीर और ब्रह्माण्ड में स्थित विद्युत् नामक अग्नि, ५. सत्य का प्रकाशक ईश्वर, ६. सब व्यवहारों का प्रकाशक सूर्य, ७. सकल विद्याओं का प्रकाशक ज्ञान, ८. अच्छी प्रकार आहुत की हुई हवि।

मन्त्र में वर्चः शब्द के अर्थ—वेद चतुष्टय (चारों वेद) विद्या को प्राप्त करने के साधन, शिल्प विद्या और वर्षा का निमित्त, विद्युत्, सूर्य और भौतिक अग्नि का तेज, शारीरिक और आत्मिक बल।

मन्त्र में स्वाहा शब्द के अर्थ—सत्य भाषणयुक्त वाणी, अपने पदार्थों को ही अपना कहना, दूसरों के पदार्थों को नहीं, वेदवाणी के द्वारा यज्ञ क्रिया का उपदेश।

भावार्थ—यहां 'स्वाहा' शब्द का अर्थ निरुक्तकार की रीति से ग्रहण किया गया है। ईश्वर कारण रूप अग्नि से स्थूल अग्नि जगत् को प्रकाशित करता है, जगत् में अग्नि अपने प्रकाश से स्वयं को और अपने से भिन्न विश्व को प्रकाशित करता है। परमेश्वर वेदों के द्वारा सब विद्याओं को प्रकाशित करता है। इसी प्रकार अग्नि और सूर्य भी शिल्प विद्याओं को प्रकाशित करते हैं।

रोगों की जड़–धूम्रपान (तम्बाकू)

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली)

आज भारत देश में तम्बाकू (धूम्रपान) के कारण अनेकों रोगों का घर बनता जारहा है लाखों प्रकार की नई-नई बीमारियों का अड्डा बन चुका है। जब तक धूम्रपान का घोर बहिष्कार नहीं होगा एवं जहां देश के अन्दर यज्ञ-हवन की धूम मची रहती थी और सुगन्धित धुएं से शुद्ध वायु रहती थी वातावरण सात्त्विक पवित्र होता था और लाखों बीमारियां आप से आप दूर भाग जाती थी, आज इस तम्बाकू के कारण देश में गुण्डापन, लुच्चापन फैल रहा है वायु दूषित हो रही है। इस भयंकर जहरीले धुंए के कारण हजारों बीमारियों ने डेरा आ जमाया है। तम्बाकू कूटने के समय बनाने के कारण लाखों ततैया, मक्खी, झींगर चिपटकर मर जाते हैं। वहां लाखों मक्खी, ततैया को तम्बाकू में कूटकर पीने से हमारा घोर नर्क का मार्ग भी खुल जाता है। तम्बाकू के विषैले जहरीले धुवें को हम स्वयं उड़ा-उड़ाकर अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ा मार रहे हैं।

आज प्रत्येक व्यक्ति क्या बच्चा क्या बूढ़ा, क्या स्त्री क्या पुरुष, क्या गरीब क्या अमीर, क्या गृहस्थी क्या साधु, क्या पुजारी क्या पण्डा, क्या मूर्ख क्या विद्वान् सभी तम्बाकू खाकर, पीकर, सूंघकर पागल बन रहे हैं और अपना स्वास्थ्य बिगाड़ रहे हैं। अपने घरों को देश को विषैले बदबूदार धुवें से खराब कर रहे हैं। इस प्रकार देश को रसातल में ले जारहे हैं। करोड़ों रुपया बीड़ी सिगरेट की आग से दुकान मकान को आग लगाकर अग्नि की भेंट कर रहे हैं और खांसी, दमा आदि बीमारियों को अपने पीछे लगा रहे। सबकी जूठी बीड़ी, सिगरेट, चिलम पीकर धर्म-कर्म को भी समाप्त कर रहे हैं।

गुरु गोविन्दसिंह ने लिखा है कि—

हे मनुष्य ! तू यदि जंगल में है और तेरे सामने से तुझे शेर खाने को आरहा है और तेरे पीछे तम्बाकू का खेत है तू भले ही शेर से मारा जाए पर तू भूलकर भी तम्बाकू के खेत में पैर न रखना।

हाय, मेरी ऋषियों की सन्तान को क्या पागलपन सवार हो गया है। आज कैसे निर्लज्ज होते जारहे हैं। जो कि रामनवमी, जन्माष्टमी, एकादशी का व्रत करने पर भी तम्बाकू नहीं छोड़ते हैं। साथ ही टट्टी जैसी गन्दी जगह में भी बीड़ी पीने से बाज नहीं आते हैं। राम, कृष्ण, शंकर, हनुमान के पवित्र मन्दिरों में पीने से नहीं चूकते हैं। विवाह जैसे पवित्र यज्ञ में धूआंधार कर देते हैं। मुर्दा फुक रहा है और सब छाती पीट-पीटकर रो रहे हैं फिर भी यह बीड़ी सिगरेट पीने से बाज नहीं आते हैं। अरे जो टट्टी जाते भी बीड़ी पी रहा है वह नारकीय क्रीड़ा नहीं तो क्या है। इस घोर पतन का भी कोई ठिकाना है।

साधु सन्तों के हाथ में लम्बी-लम्बी चिलम और सुलफा गांजे के दम लगाते देखते हैं और ऊटपटांग शब्द बोलते सुनते हैं जैसे कि— 'चिलम चमेली-फूंक दे लाला की हवेली'। हाय हमने इस पापी हुक्का सिगरेट धूम्रपान के पीछे धन, धर्म, नियम, मान, मर्यादा, वेद, शास्त्र सबको ठुकरा दिया और सीधा नर्क का मार्ग मोल ले लिया। यदि आज सभी महात्मा स्वयं तम्बाकू सुलफा छोड़कर गांव-गांव में जाकर सबसे तम्बाकू नशीली चीज छुड़वायें तो देश का कल्याण ही हो जाये। पर देश का दुर्भाग्य है कि साधु महात्मा अब स्वयं इसके शिकार हो रहे हैं, फिर भला वह इधर ध्यान क्यों देंगे।

हैदराबाद सत्याग्रहियों को सूचना

हैदराबाद के उन ५८ सत्याग्रहियों को सूचित किया जाता है जो दूसरे केस में शामिल थे कि सुप्रीम कोर्ट में इस केस की पेशी ५-८-१९९१ लगी है और ऐसी उम्मीद की जाती है कि जो भी फैसला होना है वह इसी पेशी पर बहस के बाद सुना दिया जायेगा।

इसके साथ-साथ ही ये उम्मीद भी है कि जो २६ सत्याग्रही तीसरे केस में शामिल हुए थे शायद उनका फैसला भी इसी तारीख यानि ५-८-९१ को बहस सुनकर सुना दिया जाए। ५-८-९१ को जो भी फैसला होगा वह पुनः सर्वहितकारी के १४-८-९१ के अंक में प्रकाशित कर दिया जाएगा। —महाशय भरतसिंह, संयोजक

आर्यवीर श्री शेरसिंह एम.ए. का अथक परिश्रम रंग लाया

ग्राम निमड़ीवाली जि० भिवानी में महर्षि दयानन्द जी के सच्चे सैनिक आर्य वीर श्री शेरसिंह जी एम०ए० ने अपने गांव को शराब रहित गांव बनाने का अभियान चलाया हुआ है। क्योंकि सरकार की शराब बढ़ावा नीति के कारण गांव में कुछ व्यक्ति अवैध तरीके से शराब बेचते थे, तथा शराब पीकर गलियों में हुल्लड़बाजी करते थे। गत १४ जनवरी १९९१ मकर संक्रांति पर्व पर प्रातः अपना निजी माईक लेकर बच्चों के साथ मुनादी दी तथा शराब बन्दी नारे एवं भजन गाए। तत्पश्चात् ८ बजे महर्षि दयानन्द विद्यालय नीमड़ीवाली में यज्ञ किया। उसके तुरन्त बाद सारे गांव की पंचायत हुई। आर्य जी ने सुझाव रखा कि शराब सब पापों की जड़ है। अतः गांव में शराब बन्दी होनी चाहिए। सभी ने सर्वसम्मति से शराब बन्दी प्रस्ताव पास किया, तथा सम्बन्धित अधिकारियों, उपायुक्त महोदय, पुलिस अधीक्षक, ब्लाक आफिसर, थाना इन्चार्ज आदि को प्रस्ताव की एक प्रति भेज दी गई।

पंचायत के निर्णय अनुसार शराब बेचनेवाले को ५००) रु० दण्ड, शराब पीकर हुल्लड़बाजी गलियों में करनेवाले को १००) रु० दण्ड तथा केवल बेचनेवाले की सूचना देनेवाले को १००) रु० इनाम। आरम्भ में दो-चार को जुर्माना लगा। लेकिन आज तक गांव में शराब बन्दी कार्यक्रम कुछ अच्छे ढंग से चल रहा है। श्री शेरसिंह जी के प्रयत्न से ३५ पूर्व फौजियों ने अपने कार्ड की शराब लानी बन्द कर दी है।

ज्ञातव्य है कि आर्य जी गांव में प्रतिवर्ष नवयुवकों का शिविर एवं समय-समय पर वेद-प्रचार करवाते रहते हैं। गत छः महीनों से गांव में साप्ताहिक पारिवारिक यज्ञ करते हैं। जिससे गांव में मेलजोल एवं सामाजिक शक्ति बढ़ी है। सुबह शाम घर पर माईक द्वारा सन्ध्या के मन्त्र तथा ईश्वर भक्ति के भजन गाए जाते हैं। उपरोक्त कार्यों में उनकी विदूषी धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तला आर्या एम०ए० का भी विशेष योगदान रहा है। इसके अतिरिक्त स्कूली बच्चों, माता, बहिनों तथा बुजुर्गों का विशेष सहयोग मिल रहा है।

इस प्रकार अन्य गांव की पचायत एव नवयुवक भी इस गांव से प्रेरणा लेकर अपने-अपने गांव में शराब बन्दी लागू कर सकते हैं।

अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
सभा उपदेशक

प्रगति के पांच मन्त्र

सेवा के बिना—विद्या बेकार।

परहेज के बिना—औषधि बेकार।

आचरण के बिना—सत्संग बेकार।

सात्त्विक भोजन के बिना—योग साधना बेकार।

प्रचण्डक सुधारक के बिना—प्रभु भक्ति बेकार।

आर्यो ! सुभाषचन्द्र, श्याम जी कृष्ण वर्मा, मदनलाल ढींगड़ा, पं० रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, लाला लाजपतराय, सरदार भगतसिंह, स्वा० श्रद्धानन्द, भक्त अमीचन्द, योगेश्वर कृष्ण, बन्दा वैरागी, समर्थ गुरु रामदास, गुरु गोविन्दसिंह, शिवाजी, महाराणा प्रताप, चाणक्य एवं महर्षि दयानन्द के पद-चिन्हों पर संगठित होकर राष्ट्र को बचाओ।

आइये हम चिन्तन कर अपना आचरण सुधारें।

(आर्य सन्देश साभार)

देश का सच्चा रक्षक : आर्यसमाज

आर्यसमाज के छठे नियम में युग-प्रवर्त्तक, अद्वितीय शक्तिपुंज, पूज्य महर्षि दयानन्द जी सरस्वती महाराज ने बताया कि संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। इसी नियमानुसार दिनांक २४ जून से ३० जून १९९१ तक आर्यसमाज ग्राम दौंगड़ा अहीर जि० महेन्द्रगढ़ (हरयाणा) में सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरयाणा के तत्त्वावधान में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर लगाया गया। यह शिविर श्री छोटेलाल जी मुण्डियां खेड़ा वाले (प्रधान आर्यसमाज नारनौल) के संचालन में विधिवत् प्रारम्भ हुआ। दि० २६-६-९१ को प्रातः गांव की चौपाल (परस) में यज्ञ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री महावीर आर्य (पुरोहित) थे। ग्रामवासियों व विद्यार्थियों ने यज्ञोपवीत धारण कर दुर्व्यसन त्यागने का संकल्प लिया। सायंकाल इसी स्थान पर भजनोपदेश एवं व्याख्यान हुए। श्री छोटेलाल जी प्रधान के आदेशानुसार आज की सभा के अध्यक्ष श्री देवकरण पहलवान (भू.पू. सरपच) को बनाया गया। इस सभा में म० जगमालसिंह, म० खेमचन्द व अन्य क्षेत्रीय भजनोपदेशकों ने बहुत मधुर भजन सुनाए। श्री रामलाल जी आर्य बौद्धिक अध्यक्ष आर्य वीर दल ने अपने व्याख्यान में बौद्धिक ज्ञान पर सुन्दर, प्रभावशाली प्रकाश डाला। श्री लालचन्द जी विद्यावाचस्पति (श्री मंगलजयकोर आध्यात्मिक ज्ञान आश्रम खेड़की) ने अपने व्याख्यान व भजनों में बताया कि आर्यसमाज देश का सच्चा रक्षक है। संकट के समय सदैव हमारे महापुरुषों ने त्याग, बलिदान किया है। समय की समस्याय देखते हुए आर्यसमाज को नौजवानों की ऐसी सेना तैयार करनी चाहिए जो संकट के समय देश के काम आ सके। हमारे आर्य वीरों को आधुनिक शस्त्र-अस्त्र विद्या में निपुण होना चाहिए। श्री लालचन्द जी ने ग्रामवासियों से कहा कि आपका यह कार्यक्रम हरयाणा के मुख पत्र "सर्वहितकारी" में प्रकाशित होगा। "सर्वहितकारी" जो कि वास्तव में ही सभी की भलाई करने वाला है। यह प्रसिद्ध पत्र देश-विदेश में वेदों का, आर्य साहित्य का प्रचार करता है। अतः इस आर्यसमाज को तथा आप सभी सज्जनों को इस पत्र का ग्राहक बनना चाहिए। यह "सर्वहितकारी" पत्र हमारी संस्कृति, सभ्यता और साहित्य का ज्ञान गागर में सागर की भांति लेकर आता है। इन्होंने अपने गान में बताया कि देश में नौजवान कैसे हों और उनके गीत, गान और राग कैसे हों।

॥ गाना ॥

गावे स्वर ताल मस्ती में, उसे मैं राग कहता हूं ॥टेक॥
करे न्यौछावर सब कुछ देशभक्तों की भांति।
हो रक्त गुलाल मस्ती में, उसे मैं फाग कहता हूं ॥१॥
फंसे नहीं मोह लालच में, मिले चाहे राज्य विश्व का।
तजे धन-माल मस्ती में, उसे मैं त्याग कहता हूं ॥२॥
फिरे चाहे वन पहाड़ों में, अपनी आन-बान के कारण।
झुके नहीं आये काल मस्ती में, उसे सिर की पाग कहता हूं ॥३॥
न्याय के पथ को सत्य समझे, अपना या पराया हो।
करे ना ख्याल मस्ती में, उसे बे-लाग कहता हूं ॥४॥
हो देशद्रोही, घातक, शोषण जनता का करता हो।
बने चाण्डाल मस्ती में, उसे मैं दाग कहता हूं ॥५॥
लिया बदला पिता जी का जाकर लन्दन में देखो।
करो ना टाल मस्ती में, उसे मैं आग कहता हूं ॥६॥
दुष्ट के अन्न का करे त्यागन, मेवा मिष्ठान्न क्यों न हो।
गरीब की खावे दाल मस्ती में, उसे शुद्ध साग कहता हूं ॥७॥
चुगल चुगली से चूके ना देखो वह कृतघ्न होता है।
घात की मारे भाल मस्ती में, उसे काला नाग कहता हूं ॥८॥
"लालचन्द" कथन तेरा कर्म, करते बढ़ो आगे।
कर्त्तव्य प्रतिपाल मस्ती में, उसे मैं भाग्य कहता हूं ॥९॥

इस शिविर का कार्यक्रम प्रतिदिन विधिवत् होता रहा। दि० ३०-६-९१ को समाप्ति समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में राव बंशीसिंह जी विकास व पंचायत मन्त्री हरयाणा सरकार को आमन्त्रित किया गया। सर्वसम्मति से आज की सभा के अध्यक्ष म० ताराचन्द जी आर्य (भू.पू. प्रधान आर्यसमाज नारनौल) को चुना गया तथा मंच संयोजक श्री दुलीचन्द जी शर्मा सरपंच ग्राम मुण्डियां खेड़ा को बनाया गया। मुख्य अतिथि महोदय के आगमन पर ग्रामवासियों व आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने भव्य स्वागत किया। आर्य वीर दल के शिक्षार्थियों ने व्यायाम, आसन का प्रदर्शन किया।

यह प्रदर्शन देखकर मन्त्री महोदय एवं सभी दर्शक बड़े प्रभावित हुए। मन्त्री महोदय जी ने अपने भाषण में बताया कि ऐसे शिविर प्रत्येक ग्राम में लगने चाहियें। महर्षि दयानन्द जी बताया कि आर्य बनें और संसार को बनावें। आर्य पवित्र व श्रेष्ठ होते हैं। सत्यार्थप्रकाश में कहा है कि श्रेष्ठ व दस्यु दो ही प्रकार के मानव होते हैं। इसीलिए हमें श्रेष्ठ बनना चाहिए जैसे कि इस क्षेत्र के महान् योगी, समाज सुधारक बाबा खेतानाथ जी हुए। हमें उनके पद-चिन्हों से शिक्षा लेनी चाहिए तथा सच्चे आर्य बनना चाहिए। तत्पश्चात् मन्त्री महोदय राव बंशीसिंह जी ने "यज्ञ-शाला" का शिलान्यास किया तथा ग्रामवासियों की अन्य मांगों को भी स्वीकार किया। इस भव्य-दीव्य समारोह में दोपहर की कड़कती धूप में जन-समूह अपार था तथा महर्षि दयानन्द जी, योगिराज श्रीकृष्ण जी तथा बाबा खेतानाथ के जय-जयकार से वातावरण गुंजायमान हो रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जिला महेन्द्रगढ में आर्यसमाज की जागृति चरम सीमा पर है। इस शिविर में ग्रामवासियों का बड़ा सहयोग रहा। मास्टर श्रीराम जी इत्यादि सज्जनों ने आदि से अन्त तक बहुत सहयोग दिया। म० ताराचन्द जी पूर्व प्रधान तथा श्री छोटेलाल जी प्रधान ने मन्त्री महोदय जी हार्दिक धन्यवाद प्रकट किया। शांतिपाठ से यह आयोजन सुसम्पन्न हुआ।

सम्प्रेषक—मा० सुशील (खेड़की)
डा०—बेरावास, जि० महेन्द्रगढ़ (हरयाणा)

पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार नहीं रहे

आर्यसमाज के जाने-माने विद्वान् और चारों वेदों का भाष्य करके वेदों के प्रति अपनी अनन्य निष्ठा प्रकट करनेवाले श्री पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार का ३ जुलाई की रात को ८ बजे ९२ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। वे संस्कृतेतर अन्य अनेक विषयों के भी पण्डित थे और कुशल अध्यापक थे। जो भी विषय छात्रों को पढ़ाना होता, वे इतनी तत्परता और लगन से पढ़ाते थे कि छात्रों को वह विषय हृदयंगम हो जाता। वेद मन्त्रों की व्याख्या करने और शास्त्रीय दृष्टि से इनकी संगति लगाने में उनकी प्रतिभा अपूर्व थी। अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में केवल वेदों का अध्ययन ही उनका एकमात्र व्यसन था। उनके द्वारा लिखा सामवेद भाष्य कई वर्ष पहले छप चुका है। स्वामी जगदीश्वरानन्द जी उनके ऋग्वेद भाष्य को छाप रहे हैं। जिसके अभी तक केवल दो ही खण्ड छपे हैं। लगभग १५ हजार पृष्ठों में लिखा यह चारों वेदों का भाष्य इनका अक्षय कीर्तिमान सिद्ध होगा।

अभी तक स्व० श्री पं० जयदेव विद्यालंकार ही एकमात्र चतुर्वेद भाष्यकार आर्य विद्वान् थे। श्री पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार जी अब नहीं रहे।

तो सिर्फ ३४ वर्षों में एक और भारत तैयार हो जाएगा

(नई दिल्ली १० जुलाई वार्ता) यदि जनसंख्या वृद्धि की मौजूदा दर पर अंकुश नहीं लग पाया तो भारत की जनसंख्या अगले ३४ वर्ष में लगभग दोगुनी हो जाएगी और यह विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश बन जायेगा। यह चेतावनी योजना आयोग के एक कार्यदल ने अपनी रिपोर्ट में दी है। इस समय देश की जनसंख्या ८४ करोड़ से ऊपर है। १९८१-९१ के दशक में जिसमें २३.५ प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

विशेषज्ञों का मानना है कि शिक्षा का जनसंख्या की वृद्धि को रोकने से सीधा ताल्लुक है। इस सम्बन्ध में विशेषज्ञ केरल का उदाहरण देते हैं। जो साक्षरता में सबसे आगे है और जनसंख्या वृद्धि की दर में सबसे पीछे।

अधिकृत जानकारी के अनुसार भारत के हिस्से में विश्व के कुल भूक्षेत्र का केवल २.४ प्रतिशत क्षेत्र आता है जबकि इसकी जनसंख्या विश्व की कुल जनसंख्या का १५ प्रतिशत से अधिक है। इसकी ८४ करोड़ की जनसंख्या में से लगभग ३२ करोड़ व्यक्ति गरीबी रेखा से नीचे रहकर जीवन यापन कर रहे हैं।

जनसंख्या वृद्धि की वर्तमान वार्षिक दर २.०६ प्रतिशत है अर्थात् एक करोड़ ६० लाख व्यक्ति प्रतिवर्ष बढ़ जाते हैं। इस हिसाब से सन् २००० तक ही भारत की आबादी एक अरब को पार कर जाएगी।

योजना आयोग के विशेषज्ञ इस बात पर एकमत हैं कि जनसंख्या में इतनी तेजी से वृद्धि देश की प्रगति और योजना कार्यक्रमों पर पानी फेर रही है और अनेक तरह की सामाजिक आर्थिक, पर्यावरणीय तथा परिस्थितिकीय समस्यायें जटिल होती जा रही हैं।

शिक्षा के अलावा रोजगार, चिकित्सा सुविधाओं, महिलाओं की स्थिति, कम आयु में शादी, खेल-कूद और मनोरंजन के साधनों तथा वृद्धावस्था में सुरक्षा आदि से भी जनसंख्या वृद्धि की दर सीधे जुड़ी हुई मानी जाती है। केरल के साथ एक बात यह भी है कि वहां प्रति हजार पुरुषों पर १०४८ महिलायें हैं। इस आधार पर अन्य बातों के अलावा यह भी कहा जा सकता है कि सर्वाधिक शिक्षित राज्य होने के नाते केरल में लड़के और लड़की में राजस्थान, उत्तर प्रदेश, असम, प० बंगाल, हरयाणा, पंजाब और केन्द्र शासित क्षेत्रों चण्डीगढ़ और दिल्ली जितना भेदभाव नहीं बरता जाता जहां प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या राष्ट्रीय औसत से भी कम है। राष्ट्रीय औसत १९९१ की जनगणना के अन्तरिम आंकड़ों के अनुसार प्रति हजार पुरुष पर ९२९ महिलाओं का है।

भारतीय संदर्भ में प्रति हजार पुरुषों पर ९५० अथवा इससे अधिक महिलाओं का होना एक सकारात्मक पहलू माना जाता है।

इस श्रेणी में केरल और हिमाचल प्रदेश के अलावा आन्ध्र प्रदेश, गोवा, कर्नाटक, मणिपुर, उड़ीसा, तमिलनाडु, पांडिचेरी, दादरा और नगर हवेली तथा दमन दीव आते हैं। जनसंख्या के प्रति वर्ग किमी. घनत्व की दृष्टि से केन्द्र शासित प्रदेशों में दिल्ली सबसे ऊपर है। राज्यों में पहले स्थान पर पश्चिमी बंगाल और दूसरे स्थान पर केरल आता है।

"म्हानै प्यारो लागै जी म्हारो गांव"

हर गांव में एक आर्य ऐसा होना चाहिए जो अपने गांव को हथेली पर रखे। ऐसे एक-एक से अनेक हो जायेंगे। वह सब मिलकर हर बस्ती से शराब के ठेकों तथा फुटकड़ विक्रेताओं को धरना देकर खत्म करा देंगे। यह श्रेष्ठ पुरुषों की मण्डली जिस गांव में जायेगी वहीं शराब के विक्रेता गांव छोड़ जायेंगे।

गांव में ऐसे राम जब पैदा हो जायेंगे, उन्हें तो भगवान् की ही आज्ञा शिरोधार्य होगी। वे तो गांव की पूजा करेंगे। उनके हृदय में गांव ऐसे बस जायेगा, जैसे माता के हृदय में नवजात शिशु बस जाता है। धीरे-धीरे वह अवस्था युवा रूप धारण कर लेगी। इनकी एकता का रूप सरकार के अधिकारियों की नस-नस में समा जायेगा। वह भ्रष्ट रूप छोड़ उनके साथ अपने क्षेत्र को उभारने में लग जायेंगे। उनको सभी देव पुरुष दिखाई देने लगेंगे। पशुओं को भी वह देव मानेंगे।

आर्यो क्या वह समय अब नहीं आया है, अब शराब के कारण हर युवक यौवन खो चुका है। हर अध्यापक शराब पीता है, पटवारी, पुलिस वाले, ब्लाक वाले, हस्पताल वाले सभी राजकीय कर्मचारी शराब चाहते हैं। गांव में अब एक आदमी किसी भ्रष्ट आदमी को रोकनेवाला नहीं रहा। चवन्नी छाप गुण्डे सरेआम शराब पीकर बहन-बेटियों की इज्जत उतारने पर तुले रहते हैं। विधायक मन्त्री कहने को चाहे कुछ भी कहें, पर शराब की फैक्ट्रियां इनकी ही बदौलत खोली गई हैं। अतः मेरी प्रार्थना सभी श्रेष्ठ पुरुषों से है कि वे गुरु पूर्णिमा २६-७-९१ को कासनी ठेका बन्द कराने हेतु धरना देने में अपनी स्वीकृति अतिशीघ्र भेज दें।

—दीपचन्द ग्राम पो० कासनी, जि० रोहतक

महर्षि दयानन्द गोसंवर्द्धन दुग्ध केन्द्र गाजीपुर दिल्ली में १००० दूध देनेवाली गऊओं के संरक्षण का प्रावधान

महर्षि दयानन्द द्वारा गो-करुणानिधि के गोरक्षा सिद्धान्त को मूर्तरूप देने का सत्प्रयास

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की शानदार उपलब्धि ५ करोड़ रुपये की निधि के लिए आर्य जनता से सहयोग की हार्दिक अपील

आर्य जनता तथा गोभक्तों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने दिल्ली के गाजीपुर नामक स्थान में कुछ वर्ष पूर्व जो १२.५ एकड़ भूमि महर्षि दयानन्द गो-संवर्द्धन दुग्ध केन्द्र के लिए दिल्ली विकास प्राधिकरण से ली थी, उसमें निर्माण कार्य प्रारम्भ हो चुका है। उक्त भूमि को समतल करने, चारदीवारी, सिंहद्वार, जल व्यवस्था के लिए बोरिंग एवं १०० गायों के लिए शैड बनवाने में अभी तक सभा द्वारा कई लाख रुपये व्यय हो चुके हैं।

गऊओं के ६ शैड और बनवाने तथा अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं पर कम से कम ५ करोड़ रुपये के व्यय का अनुमान है। अतः धनीमानी गोभक्त जनता मुक्तहस्त से दान देकर ऋषि ऋण से उऋण होने का प्रयास करे। आप गोरक्षा के इस पुनीत कार्य में सहयोग देकर योगिराज श्रीकृष्ण जी महाराज के सच्चे भक्त और अनुयायी कहला सकते हैं।

कृपया अपनी सहयोग राशि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, के नाम महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२ को बैंक ड्राफ्ट/चैक अथवा मनीआर्डर से भिजवायें।

निवेदक संचालन समिति :

रामसिंह राठौर — अध्यक्ष
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती — प्रधान सार्वदेशिक सभा
पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् — वरिष्ठ उप-प्रधान सार्वदेशिक सभा
सत्यानन्द मुंजाल
कैप्टन देवरत्न आर्य
घनश्यामदास गोयल
सोमनाथ मरवाहा एडवोकेट
गजानन्द आर्य
छोटूसिंह एडवोकेट
प्रो० शेरसिंह
महाशय धर्मपाल
(डा० सच्चिदानन्द शास्त्री) सभा मन्त्री

गुरुकुल होशंगाबाद (म.प्र.) में प्रवेश प्रारम्भ

यहाँ पर महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट आर्ष पद्धति से शिक्षण देने की व्यवस्था है। ७वीं कक्षा उत्तीर्ण छात्रों को गुरुपूर्णिमा (२६ जुलाई ९१) तक प्रवेश दिया जाएगा। यहां आर्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर एवं महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरयाणा) की मान्यता प्राप्त परीक्षायें भी दिलाई जाती हैं। शिक्षण सर्वथा निःशुल्क है। किन्तु भोजन, घृत, दुग्ध का मासिक व्यय २००) दो सौ रुपये अभिभावकों को देना होगा। आजीवन वैदिक धर्म के प्रचार करने के इच्छुक योग्य युवक ब्रह्मचारियों को शुल्क में छूट एवं प्रवेश में प्राथमिकता दी जायेगी। शीघ्र सम्पर्क करें।

जगद्देव नैष्ठिक आचार्य
आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद (म०प्र०) ४६१००१

"ग्राम अलांकुपा 'फुलवाणी' में आर्यसमाज मन्दिर का उद्‌घाटन"

१२ जून को अति समारोह के साथ ग्राम अलांकुपा में आर्यसमाज मन्दिर का उद्‌घाटन श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने किया। इस मन्दिर का निर्माण उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से ग्रामीण आर्य [illegible] ओं ने किया है, ये सभी लोग ईसाइयत छोड़कर वैदिक धर्म में आये हैं, इस अवसर पर इस क्षेत्र के अनेक आर्यबन्धु भी उपस्थित थे। सारे कार्यक्रम का संचालन श्री पं० विशिकेसन शास्त्री ने इस ढंग से करवाया कि वातावरण उत्साह से भर गया।

मन्त्री
विशिकेसन शास्त्री

* कवि के प्रति *

कवि गीत सुनाना आज मुझे, अपने भावों का वह सुन्दर।
माधुर्य-भरा, चातुर्य-भरा, उत्कृष्ट चेतना का मनहर।

जिसमें प्रात: की अरुणाई, श्यामल सन्ध्या-सी नीरवता।
निश्छल गंगा-सी पावनता, मादक फूलों-सी कोमलता।

मदमाती पिक-सी मधुमयता, सुरभित चन्दन-सी शीतलता।
जगमग दीपक-सी उज्ज्वलता, कल-कल निर्झर-सी निर्मलता।

छू ले गन्तव्य अभीप्सा का, नित नूतन छन्दों से बढ़कर।
कवि गीत सुनाना आज मुझे, अपने भावों का वह सुन्दर।

कितनी ही बार न जाने तव, मृदुतर अन्तर में आया हूं।
संगीत कभी प्रांजल तेरा, हे कविवर! कब सुन पाया हूं।

नव-गीत सुनाओ वह जग को, जो मिट्टी को चन्दन करदे।
प्रिय! प्रीत दिखाओ वह सबको, जो मरुथल को नन्दन करदे।

स्वर-लहरी अनुपम सुना नव्य, झूमे जिससे वसुधा, अम्बर।
हिय-गान सुना ऐसा जिससे, संवेदन छलक उठे सत्वर।

रचयिता—
महेन्द्रसिंह 'उत्साही'

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३७०/७३

नं नं० ८८ [illegible] १,१६ ०८ ५३ ०६२

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८   अंक ३४   २८ जुलाई, १९९१   वार्षिक शुल्क ३०)   (आजीवन शुल्क ३०१)   विदेश में ८ पौंड   एक प्रति ७५ पैसे

शरीर और जीवात्मा

(डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम. ए. एल. टी. जी., ४९ राप्तीनगर कालोनी, आरोग्य मन्दिर, गोरखपुर-२७३००३)

"आत्मा अमर है, देह नश्वर यह अटल सिद्धान्त है" यह वाक्य आत्मा की अमरता और शरीर की नश्वरता का प्रतिपादन करता है। इस आत्मा के सिद्धान्त को समझने के लिए हमें पहले अविद्या शब्द को समझना होगा। सत्यार्थप्रकाश में स्वामी जी ने अविद्या की परिभाषा करते हुए लिखा है—"अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या" अर्थात् अनित्य में नित्य की, अशुचि (अपवित्रता) में शुचि (पवित्रता) की, दुःख में सुख की और अनात्मा में आत्मा की कल्पना करना और उसके अनुसार व्यवहार करना ही अविद्या है। यदि मनुष्य शरीर और आत्मा के वास्तविक स्वरूप को समझ ले तो वह मुक्ति या मोक्ष का अधिकारी हो सकता है। मोक्ष का मतलब है बन्धन से छुटकारा। बन्धन क्या है और हम बन्धन में क्यों पड़ते हैं? क्या हम बन्धन में पड़ने से ही कर्तव्यविमुख होते हैं? कर्तव्यविमुख होने का मतलब क्या है? कर्तव्यविमुख होने का मूल कारण बन्धन है और बन्धन में पड़ने का मतलब है कि हम अधार्मिक कार्य करने लगते हैं। अधार्मिक कार्य क्या है?

दूसरे के धन का अपहरण करने का मतलब है अनुचित साधन या हिंसा द्वारा धन का हरण। इस अविद्या के वश में होकर हम झूठ बोलते हैं। दूसरों की हिंसा करते हैं। इन सब बुराइयों का कारण है अनात्मा में आत्मा की बुद्धि या संकुचित और छिछली देहबुद्धि। मेरा विचार है कि मैं और मुझसे सम्बन्ध रखनेवाले लोगबाग बस इतनी ही मेरी व्याप्ति है, वे सब मेरे लिए गैर अथवा नगण्य हैं। ऐसे भेद की दीवार यह देहबुद्धि खड़ी कर देती है और तारीफ यह है कि जिन्हें 'मैंने' 'मैं' अथवा 'मेरे' हैं उनके भी केवल शरीर पर हमारी दृष्टि रहती है। शरीर पर दृष्टि रखने का तात्पर्य है कि हम इस अनात्मा शरीर को ही आत्मा समझ लेते हैं। हम जब इस शरीर को आत्मा मान लेते हैं तो इस शरीर की अनित्यता, अपवित्रता, दुःख और अनात्मा में क्रमशः नित्यता, शुद्धता, सुख और आत्मा की कल्पना कर अज्ञान में फंस जाते हैं। यह अज्ञान हमें हमारे मार्ग से विमुख कर देता है। अरे मनुष्य! याद रख यह देह आत्मा नहीं। यह आत्मा के विकास का साधन है। यह अमर नहीं। यह तो बदलता भी रहता है। बचपन, जवानी और बुढ़ापा इस चक्र को सभी देख रहे हैं। यह देह अपवित्रता का घर है। रात-दिन मलमूत्र की नालियां इसमें बहती हैं और हम सदा इसे धोने में लगे रहते हैं, पर वह गन्दगी कहां दूर होती है। धोना है तो शरीर को स्वच्छ रख अवश्य पर आत्मा की भी स्वच्छता की बात सोच। आत्मा की पवित्रता ही मानवता का मार्ग उद्घाटित करती है।

शरीर पांच भूतों से बना एक अनित्य पदार्थ है। इसे कहीं नवद्वार वाला माना गया है और कठोपनिषद् में तो इसे ग्यारह द्वार वाला बताया गया है। वहां लिखा है—

पुरमेकादशद्वारमजस्यावक्रचेतसः। अनुष्ठाय न शोचति विमुक्तश्च विमुच्यते। एतद्वैतत्।

अर्थात् सरल चित्तवाले अनुत्पन्न जीवात्मा के ग्यारह द्वार वाले इस नगर शरीर को अनुष्ठान करके मनुष्य नहीं सोचता है और मुक्त हुआ छूट जाता है। यही वह जीव है। शायद आप जानना चाहेंगे कि ग्यारह दरवाजे कौन-कौन से हैं १ सिर, २ आंख, २ कान, २ नासिका-छिद्र, १ मुख, १ नाभि, १ मल और १ मूत्रस्थान यह ग्यारह दरवाजे हैं। जिस समय मनुष्य इस शरीर का सदुपयोग करता है, वह अपने मन को सरल, बुद्धि को पवित्र और चित्त को शान्त तब वह शरीर मनुष्य के लिए सुख का साधन हो जाता है, और इसके लिए आवश्यक है कि हम अपनी इन्द्रियों पर अधिकार करें, अपने को जितेन्द्रिय बनायें। जितेन्द्रियता के लिए आवश्यक है कि हम विषय के वास्तविक रूप को समझें। यह सोचें कि देह अनित्य है। पर हम अपने को नित्य और अमर मानते हैं। परिणाम यह होता है कि इसे अमर समझकर उचित या अनुचित का ध्यान बिना किए संसार के सम्पूर्ण सुखों और सुख-साधनों को अपने वश में करने लगते हैं। तभी हम गरीबों को सताते हैं, एक दूसरे से ईर्ष्या करते हैं और इस अमर शरीर के लिए सुख की ओर ऐसे सुख की खोज में निकल पड़ते हैं जो कभी नष्ट न हो, और उस समय वास्तविक सुख को छोड़कर दुःख रूप जो विषय हैं उन्हीं में सुख की कल्पना कर उन्हें प्राप्त करने के प्रयत्न में नष्ट हो जाते हैं। स्मरण रखिए विषयों में सुख नहीं। "आपातरम्याः विषयाः" विषय जब भोगे जाते हैं, तब तक उनमें सुख है बाद में तो "पर्यन्त परितापिनः" दुःखदायक होते हैं। अतः जब हम शरीर को अनित्य समझेंगे तभी हम शरीर को साधन समझेंगे और उस सबसे नित्य आत्मा के सुख के लिए निकल पड़ेंगे और उस समय स्वभावतः हमें आत्मा को सुख देनेवाले, आनन्द देनेवाले ब्रह्म के समीप पहुंचने का प्रयत्न करना होगा। आनन्दस्वरूप ब्रह्म की समीपता प्राप्त करनी होगी। प्रभु की सच्ची उपासना क्या है? ब्रह्म के प्रभु के गुणों को अपने में धारण करना। तभी हमें सच्चे सुख और आत्मिक आनन्द की प्राप्ति होगी।

जिस जीव के सुख की प्राप्ति करनी है वह कैसा है? कठोपनिषद् में इसके रूप का वर्णन करते हुए लिखा है—हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद् होता वेदिषत् अतिथिर्दुरोणसत् नृषद्वरसदृतसद्व्योमसद् अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्।१।

ऊर्ध्वंप्राणमुन्नयत्पानं प्रत्यगस्यति। मध्ये वामनमासीनं विश्वेदेवा उपासते।२।

अस्य विस्रंसमानस्य शरीरस्थस्य देहिनः।
देहाद्विमुच्यमानस्य किमत्र परिशिष्यते। एतद्वैतत्।३।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्यसमाज का छठा नियम

लेखक—मांगेराम आर्य, प्रधान आर्यसमाज बीकनेर दिल्ली-४०

आर्यसमाज का छठा नियम है :—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना। जो आर्य समासद शारीरिक व आत्मिक रूप से उन्नत होंगे वे ही सामाजिक उन्नति कर सकेंगे। अतः आर्यसमाज के मुख्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति हेतु कुछ विचारणीय व अनुकरणीय सूत्र इस लेख में दिए गए हैं :—

निस्संदेह आर्यसमाज में निराशा के लिए कोई स्थान नहीं है। अनेक निष्ठावान्, कर्मठ एवं समर्पित कार्यकर्ता आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में जुटे हैं। किन्तु आज के नेतृत्व वर्ग में शीर्षस्थ नेताओं के निकट रहनेवाले कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जो धर्मात्मा बनने की अपेक्षा अपने को धर्मात्मा दिखाने में, परोपकारी बनने की अपेक्षा अपने को परोपकारी दिखाने में अधिक प्रयत्नशील रहते हैं। वे कार्य स्थल पर अनुपस्थित और मंच स्थल पर अग्रिम पंक्ति में उपस्थित रहते हैं और समर्पित कार्यकर्ताओं को दूर रखने में सिद्धहस्त हैं। अपने बच्चों को आर्य वीर दल से दूर रखते हैं और दूसरों के बच्चों को अनुशासन का पाठ पढ़ाते नहीं थकते। इस प्रकार की सोच के तथाकथित नेताओं को समय रहते पहले कार्यकर्ताओं की पंक्ति में अपनी इच्छा से ही आजाना चाहिए। नींव की ईंट के त्याग को समझो, फिर द्वार के ऊपर की ईंट का स्थान स्वतः मिल जायेगा। इसी में आर्यसमाज-संगठन का भला है।

वैदिक ग्रन्थों एवं आर्यसमाज के तपस्वी विद्वानों के वचनामृत संग्रह कर इन शीर्षकों में "शारीरिक उन्नति', "आत्मिक उन्नति" व "सामाजिक उन्नति" पाठकों की सेवा में प्रस्तुत हैं। जो निश्चित रूप से आर्यसमाज के छठे नियम के पालनार्थ प्रत्येक आर्य का मार्ग-दर्शन करने में सहायक सिद्ध होंगे। पहले बनो फिर बनाओ। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ आत्मा निवास करता है और फिर स्वस्थ शरीर और स्वस्थ आत्मावाला आर्य संगठन को स्वस्थ बनाने में निश्चित रूप से सफल होगा।

शारीरिक उन्नति—

१. स्वास्थ्य का सदा ध्यान रखना चाहिए। २. शक्ति की पूजा होती है। ३. सन्तोषी सदा सुखी। ४. संयम बहुत शक्तिशाली हथियार है। ५. शास्त्र-शस्त्र एक दूसरे के पूरक हैं। ६. युवक बचेगा देश बचेगा। ७. खेल के मैदान में राष्ट्र निर्माण होता है। ८. स्वस्थ सन्तान पैदा करना धर्म और अस्वस्थ सन्तान पैदा करना अधर्म। ९. वीर्य रक्षा करना महान् तप है। १०. व्यायाम दिनचर्या का आवश्यक अंग होना चाहिए। ११. शुद्ध जलवायु से शरीर निरोग रहकर बलिष्ठ बनता है। १२. पैर गरम, पेट नरम और सिर ठण्डा रहना अच्छे स्वास्थ्य के लक्षण हैं। १३. व्यायाम आलस्य का शत्रु है। १४. भाग्य के दर्शन परिश्रम में होते हैं। १५. शिक्षा पद्धति में सर्वप्रथम स्थान व्यायाम शिक्षा को देना है। १६. ईश्वर परिश्रमी को चाहता है। १७. शारीरिक बल के बिना कोई ऐश्वर्य-युक्त नहीं हो सकता।

आत्मिक उन्नति—

१ संध्या एवं स्वाध्याय (वेद अध्ययन) और व्यायाम हमारी दिनचर्या के आवश्यक अंग होने चाहियें, इससे हमारे जीवन में निष्ठा, नियमितता तथा पराक्रम की भावना में उत्तरोतर वृद्धि होती रहती है। २ माताजी की सेवा से सहिष्णुता, पिताजी की सेवा से दृढ़ता, गुरुजी की सेवा से विनय आदि गुण हममें बढ़ते हैं। ३. माता, पिता की सेवा का अवसर न मिलने पर बालक अपने को उपेक्षित तथा युवक असहाय अनुभव करता है। ४. अपने पर नियन्त्रण संसार पर नियंत्रण ५. मर्यादाओं का पालन करने से पुरुष से पुरुषोत्तम बन जाता है। ६ मनुष्य का कार्य ही उसका स्मारक होता है। ७. आत्महत्या महापाप ८. यज्ञ कर्म महाकर्म है। ९ वेद आज्ञा पालन परम धर्म है। १०. विद्या दान महापुण्य है। ११. निष्पक्ष श्रोता एवं वक्ता बनो। १२. महान् पुरुषों के समीप रहो। १३ दूसरों के भरोसे रहना मानो मृत्यु को निमन्त्रण देना है। १४. अवसर हाथ से न जाने दो। १५. निराशा को पास न फटकने दो। १६. सत्पुरुषों का आदर करो। १७. बलिदान से कभी भी न डरना। १८. अस्थिरता में तीसरा व्यक्ति कुचाल चल सकता है। १९. दृढ़ निश्चयी के सामने ओछे व्यक्ति नहीं ठहरते। २०. निर्भयता से मुक्ति (जीवन) मिलती है। २१. मित्र की संकट में अवश्य सहायता करो। २२. निर्लज्ज के झूठ बोलने पर आश्चर्य न करो। २३. करनी सो भरनी। २४ समय हमारा है, हम समय के नहीं। २५. उन्नत मनुष्य के मार्ग में कोई बाधक सफल नहीं होता। २६. दूसरों का दिल प्रेम से और पराक्रम से जीता जा सकता है। २७. धर्म जीवन में लाने से स्थिर रहता है। २८. धर्म जिह्वा पर अस्थिर रहता है। २९. अकेला ज्ञान नास्तिकता की ओर ले जाता है। ३०. अकेला धर्म अन्धविश्वास की ओर ले जाता है। ३१. सप्रमाण बोलने में मान एवं साहस बढ़ता है। ३२. एक बार आजमाना चहिए दो बार नहीं। ३३. पग आगे बढाकर पीछे मत हटाओ। ३४. आत्मविश्वास बहुत ही बड़ा हथियार है। ३५. मानव की पहचान करनी आवश्यक है। ३६. घर में महापुरुष के निवास से सुख बढ़ता है। ३७. बात की बात समाप्त होने पर उसे भूल जाना चाहिए। ३८. विनयशील को नमस्कार करो। ३९. झूठी आशा मत रखो। ४०. काम समय पर होगा। ४१. लक्ष्य महान् हो। ४२. कृतज्ञ रहो। ४३. हृदय से निकले शब्द हृदय में निवास करते हैं। ४४. शत्रु पर विजय पाओ। ४५. प्रभु के न्याय में विश्वास रखो। ४६. जिस इच्छा के पीछे संकल्प होता है वह अवश्य पूरी होती है। ४७. ईश्वर का न्याय अटल है। ४८. किया गया शुभ कर्म कभी निष्फल नहीं होता। ४९. मृत्यु से कभी न डरें। ५०. अपने हितैषी की इच्छा-पूर्ति में सदैव तत्पर रहें।

सामाजिक उन्नति—

१. यथायोग्य उत्तम व्यवहार है। २. द्वेष और भ्रम के जाल से सदैव दूर रहना हित में है। ३. न्याय का पक्ष अन्त में विजयी होता है। ४. अन्याय को सहनेवाला कभी समाज सुधारक नहीं हो सकता। ५ विद्वान् तथा क्षत्री की आंखों में न खटको। ६. ओछे मनुष्य के पंजों में न फंसो। ७. दिखावा अधिक दिन नहीं चलता। ८. जो भी कार्य करो, सोचकर प्रारम्भ करो, और फिर उसकी गहराई में गए बिना पीछे न हटो। ९. संगठन के लिए बलिदान एवं समर्पण की आवश्यकता होती है। १०. मित्र की सहायता करना न भूलो। ११. स्वार्थी व्यक्ति स्वार्थ पूरा होने तक ही साथ रहते हैं। १२. मन का पापी आवश्यकता से अधिक मीठा होता है। १३. सिद्धान्तहीन व्यक्ति चाहे जो बुरा कार्य कर सकता है। १४. निन्दक सत्य से कोसों दूर रहता है। १५. ओछे विरोधी का भयभीत रखो। १६. किसी को केवल प्रसन्न अथवा अप्रसन्न करना अच्छा सिद्धान्त नहीं। १७. अवसरवादिता का काल पांच व दस व बीस वर्ष होता है। १८. किसी की सभा न बिगाड़ो। १९. कृतघ्न का नाश होता है, तो चिन्ता न करो। २०. भाइयों से, भक्तों से ही मनुष्य बड़ा बनता है। २१. सामाजिक कार्य में विरोधी को दबाने के लिए अपने परिश्रम द्वारा दूसरों को प्रभावित कर अपने पक्ष में कर लेना चाहिए। २२. परिस्थितियां भी गुरु हैं। २३. आदर कराया जाता है, किया नहीं जाता। २४. अभाव का गृहस्थी पर दुष्प्रभाव पड़ता है। २५ इतिहास की दिशा को बदलना बुद्धिमत्ता नहीं है। २६. हार खाना अच्छा है, हार से डरना अच्छा नहीं है। २७. मित्र और शत्रु के बल को जांच आपत्तिकाल में ही सम्भव है। २८. किसी को उसकी निन्दा करके हराना निन्दनीय एवं हानिकारक है। २९. निर्लज्ज तर्क से नहीं, विवशता से हार मानता है। ३०. नेता को जनता का होना चाहिए। ३१. वैरी का विश्वास कैसा ? ३२. शीघ्रता न करो—शीघ्रता करो। ३३. साथी वही जो साथी के सुख में सुख तथा दुःख में दुःख समझे। ३४. विघ्न टालने के लिए पूर्ण की सहायता लो। ३५. जिसका जितना कार्य हो, उसे उसको उतना ही सौंपना चाहिए। ३६. सांप को फन उस समय उठाने के लिए कहो जब तुममें उसको कुचलने की शक्ति हो। ३७ दूसरों से अधिक आशा न करो। ३८. गुणहीन जातीयता का सहारा लेता है। ३९. दुष्ट वृत्तिवाले को ललकार के कहो। ४०. ऋणी होना अच्छा नहीं। ४१. जड़मति को निर्देश चाहिए, निवेदन नहीं। ४२. सहज पके सो मीठा। ४३ सांच को आंच नहीं। ४४. मिलकर चलो। ४५. दूसरों के लिए जीने का नाम जिन्दगी है। ४६. एक गलत मित्र से हजार शत्रु अच्छे। ४७. यज्ञमय जीवन बनाओ। ४८ इतिहास को भुला देनेवाला इतिहास का निर्माण नहीं कर सकता। ४९. वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था से ही सामाजिक न्याय सम्भव है। ५०. विरोध की आंच से सत्य की कान्ति चौगुनी चमकती है।

एक अध्ययन—

कुरान, भारतीय संविधान और अन्य धर्मावलम्बी

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष-वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ०प्र०)

६ फरवरी को उत्तरप्रदेश के सहारनपुर नगर में धारा-१४४ को तोड़कर मुसलमानों ने नगर की सडकों पर प्रदर्शन किया और जिलाधिकारी श्री हरिकिशन पालीवाल को ज्ञापन दिया। प्रदर्शन में डा० आनन्द सुमन के विरुद्ध नारे लगाये जारहे थे। डाक्टर की पुस्तक "मैंने इस्लाम क्यो छोड़ा" पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग को लेकर यह प्रदर्शन किया गया और ज्ञापन दिया गया। ग्यारह वर्ष पूर्व डाक्टर आनन्द सुमन ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली थी। तभी उन्होंने अपने इस्लाम छोडने के कारणों पर प्रकाश डाला था।

जब कोई व्यक्ति किसी विचारधारा को छोडकर किसी अन्य विचारधारा को ग्रहण करता है तो उसके सामने अपनी पूर्व विचारधारा को छोड़ने के जो कारण उपस्थित हो रहे हों, उन कारणों को उसका व्यक्त करना स्वाभाविक ही है। मनुष्य क्योंकि सामाजिक प्राणी है। अतएव समाज के समक्ष अपनी परिस्थिति को रख देना अनुचित नहीं है। ऐसा करके वह किसी के साथ अन्याय नहीं करता और न कोई नैतिक अथवा कानूनी अपराध ही करता है। किसी अन्य की दृष्टि में वह ठीक और उचित हो सकती है। है, तो हो, वह तो उन्हें बेतुकी तथा अनुचित समझता है और यह ईमानदारी है कि जैसा समझे वैसा ही व्यक्त करदे। यही डा० आनन्द सुमन जी ने किया है। उन लोगों की बात इससे पृथक् है, जो लोग, भय तथा आतंकवश अपना मत परिवर्तित कर लेते हैं।

डा० सुमन किसी लोभ, भय अथवा आतंक के वशीभूत होकर वैदिक धर्म में दीक्षित नहीं हुए हैं। वह तो अपने अध्ययन के परिणामस्वरूप सिद्धान्तों से प्रभावित होकर इस्लाम त्यागकर वैदिक धर्मी बने हैं।

उनकी उक्त पुस्तक पर प्रतिबन्ध की मांग करना संविधान प्रदत्त मूल अधिकार "विचारों की अभिव्यक्ति" का सरासर हनन है। उस पुस्तक से किसी के अधिकारों का हनन नहीं होता और न उसका उद्देश्य किसी का अपमान करना है।

प्रतिबन्ध तो कुरान पर लगाया जाना चाहिए, क्योंकि वह न केवल भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त मूल अधिकारों का ही हनन करता है अपितु भारतीय संविधान ने जो मानव के सर्वप्रथम मूल अधिकार नागरिक के जीवन की सुरक्षा का दायित्व अपने ऊपर लिया है, उसका भी हनन करता है। यह भारतीय संविधान और मानवता का घोर अपमान है। अतएव भारत सरकार से कुरान पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग करना न्याय और नैतिक दृष्टि से सर्वथा उचित और सवैधानिक है।

यहां हम अपनी ओर से कोई टिप्पणी किये बिना कुरान की कुछ ही आयतों के हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत कर रहे हैं, जिनमे मुस्लिमेतरों के प्रति घृणा करने तथा उन्हें मार डालने के स्पष्ट निर्देश दिए हैं, यद्यपि ऐसे वाक्य कुरान में भरे पड़े हैं। अन्त में भारत के प्रबुद्ध नागरिकों से न्याय और नैतिकता के नाम पर यह कहना चाहते हैं कि वह भारत सरकार से भारतीय संविधान की गरिमा की रक्षार्थ मांग करें और भारत सरकार के धार्मिक विषयों के परामर्शदाता विधि विशेषज्ञों से यह मांग करते हैं कि वह भारत सरकार को संविधान की अस्मिता और गरिमा की रक्षार्थ प्रेरित करें।

कुरान की आयतों का अनुवाद—

(१) और यहां तक उनसे लड़ो कि फसाद बाकी न रहे और एक अल्लाह का दीन हो जाये। (आ०-१९३, सू०-२, मं०-१)

(२) मुसलमानों को उचित है कि काफिरों को मित्र न बनाये सिवाय मुसलमानों के और जो वैसा करेगा तो उससे और अल्लाह से कुछ (सरोकार) नहीं। (आ०-२८, सू०-३, मं०-१)

(३) ऐ ईमानवालो ! अपने लोगों को छोड़कर (किसी गैर को) अपना भेदी मत बनाओ कि यह लोग तुम्हारे साथ बुराई करने मे कुछ उठा नहीं रखेंगे। (आ०-११८, सू०-३, मं०-१)

(४) और जिस वक्त तुम अल्लाह के हुक्म से काफिरों को कत्ल कर रहे थे (उस वक्त) अल्लाह ने तुमको अपना (फतह) का वादा सच्चा कर दिखाया। (आ०-१५२, सू०-३ मं०-१)

(५) ऐ ईमानवालो ! सन्तोष करो, परस्पर थामे रखो और लड़ाई में लगे रहो। (आ०-२००, सू०-३, मं०-१)

(६) उनको पकडो और जहां पाओ कत्ल करो। मुसलमानों को मुसलमान का मारना योग्य नहीं और यही लोग हैं जिन पर हमने तुम्हें खुला अधिकार दे रखा है। जो कोई अनजाने मार डाले, बस एक गर्दन मुसलमान का छोडना है और खून बहा उन लोगों को ओर सौंपी हुई, जो उस कौम से होवे और तुम्हारे लिए दान कर देवे, जो दुश्मन की कौम से। (आ०-९१, ९२, ९३, सू०-४, मं०-१)

(७) ऐ ईमानवालो ! मुसलमानों को छोड काफिरों को मित्र मत बनाओ। क्या तुम अल्लाह के प्रति खुला अपराध अपने ऊपर लेना चाहते हो। (आ०-१४४, सू०-४, मं०-१)

(८) प्रश्न करते हैं तुमको लूटो से, वह लूटें वास्ते अल्लाह के और रसूल के और डरो अल्लाह से। (आ०-१, सू०-८, मं०-१)

(९) और काटे जड़ काफिरों की। मैं तुमको सहाय दूंगा साथ सहस्र फरिश्तों के पीछे-पीछे आनेवाले। अवश्य मैं काफिरों के दिलों में भय डालूंगा। बस मारो ऊपर गर्दनों के और काटो पोरी-पोरी। (आ०-७, ९, १२, सू०-८, मं०-१)

(१०) अल्लाह और उसके पैगम्बर के समीप इन मुशरिकों अहद क्यों कर हो सकता है ? तुम कुफ्र के ध्वजवाहकों से युद्ध करो, क्योंकि उनकी कस्मों का कोई विश्वास नहीं है। ये तलवारों के जोर से ही बाज आयेंगे। (आ०-६, सू०-९, मं०-१)

(११) ऐ पैगम्बर ! ईमानवालों को जिहाद का शौक दिलाओ, अगर तुममें से जमे-जमे रहनेवाले बीस व्यक्ति भी होंगे तो दो सौ पर भारी बैठेंगे और अगर तुममें से सौ होंगे तो सहस्र काफिरों पर भारी बैठेंगे, क्योंकि यह ऐसे लोग हैं जो समझ नहीं रखते। अब अल्लाह ने तुम पर बोझ हल्का कर दिया और उसने देखा कि तुममें कमजोरी है तो अगर तुममें से सहस्र होंगे तो अल्लाह के हुक्म से वह दो सहस्र पर भारी बैठेंगे और अल्लाह उन लोगों का साथ देता है जो जमे रहते हैं। जब तक अच्छी तरह खूंरेजी न करले पैगम्बर को मुनासिब नही कि उसके पास कैदियों का जमाव हो, तुम तो संसार के माल-असबाब चाहने वाले हो और अल्लाह (तुम्हारे हाथों दीन को कायम करवाकर तुम्हारे लिए) (आखिरत) की चीजें देना चाहता है। (आ०-६५, ६६, ६७, सू०-८, मं०-२)

(१२) फिर जब अदब के महीने (जीकाद, जिल्हिज, मुहर्रम, रजब) बीत जाये तो उन मुशरिकों को जहां पाओ, कत्ल करो और उनको गिरफ्तार करो, उनको घेरलो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। फिर अगर वह लोग तोबा करे और नमाज कायम करे और जकात दें, तो उनका रास्ता छोड़ दो। (आ०-५, सू०-९, मं०-२)

(१३) और लड़ो उनसे यहां तक कि न रहे फसाद यानि शिर्क बाकी और सब अल्लाह का दीन हो जाय, बस अगर वह बाज आजाए तो जो कुछ यह लोग करेंगे अल्लाह देखनेवाला है और जान रखो

(शेष पृष्ठ ४ पर)

आम मात्र स्वादिष्ट फल ही नहीं औषधि भी है

हमारे देश में आम को सुदूर दक्षिण में कन्याकुमारी से लेकर उत्तर में हिमालय की तराई तथा पश्चिम में पंजाब से लेकर पूरब में असम तक सफलतापूर्वक इसे लगाया जाता है। पल्लव, पुष्प मंजरियों कलश फल और काष्ठ की उपयोगिता के कारण किसी अन्य वृक्ष ने भारतीय मानस को इतना प्रभावित नहीं किया है जितना आम ने किया है। इसीलिए इसे फलों के राजा की उपाधि से विभूषित किया गया है।

प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद के ग्रन्थों से आम के विषय और उपयोगिता पर बहुत विस्तृत वर्णन मिलता है। आम की छाल के गुणों के वर्णन में इसे लघु रूक्ष रस कषाय, शीतवार्य और विपाक कटु बताया गया है। जबकि पका फल मधुर गुरु स्निग्ध, और कच्चा फल अम्ल होता है। पका फल वात पित्त शामक तथा कच्चा फल त्रिदोष कारक होता है।

आम के कच्चे फल में जल २१ प्रतिशत, जलीय सत्व ६१.५ प्रतिशत, सेल्यूलोज ५ प्रतिशत अविलेय भस्म १५ प्रतिशत, विलेय भस्म ०.६ प्रतिशत होता है। इसमें पोटाश, आरटरिक अम्ल तथा साइट्रिक अम्ल भी होता है। पक्के आम में भी रंजक द्रव्य, पर्णहरित द्रव्य कार्बन डाई सल्फाईट, बेन्जोज, गलिक एसिड, ससाइट्रिक एमिड तथा गोड गोंद होता है। इसमें विटामिन ए और सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसलिए आम का प्रयोग विभिन्न व्याधियों से छुटकारा दिलाने में सहायक होता है।

भोजन में अपचन भूख का कम लगना है अरुचि होने पर कच्चे फल का प्रयोग करना चाहिए। हृदय रोग, रक्ताल्पता (एनीमिया), रक्तपित्त में पका फल प्रयोग करते हैं। पका फल शुक्रदौबल्य को दूर करता है। शारीरिक दुर्बलता वण विकार तथा कमजोरी में आम के फल का प्रयोग बहुत लाभप्रद सिद्ध होता है। मीठे आम का रस ५ तोला, सौंठ २ माशा पीसकर सुबह के समय पीने से अरुचि और भूख न लगने की समस्या हल होकर शरीर को शक्ति मिलती है।

लू लगने पर कच्चे फल को आग में पकाकर पानक बनाकर पिलाते हैं। उसके लिए कच्चे आम राख में भूनकर उसका गुदा निचोड़ पाव पानी में चीनी मिलाकर दिन में दो बार पीने से लू लगी हो तो अच्छा लाभ करता है। पका फल बलवर्धक होता है। विटामिन ए होने के कारण यह विभिन्न रोगों के संक्रामण के खिलाफ शरीर में शक्ति उत्पन्न करता हुआ आंखों के लिए लाभदायक होता है। त्वचा एवं धातुओं की वृद्धि के लिए और अस्थियों के लिए विटामिन सी होने के कारण आम अत्याधिक उपयोगी होता है।

फल के अतिरिक्त आम के पल्लव पुष्प, छाल और बीज (मज्जा) का प्रयोग चिकित्सा के लिए किया जाता है। छाल में टैनिन १६-२० प्रतिशत होता है।

आम के पत्ते को मधुमेह (शुगर) पर बहुत गुणकारी बताया गया है। आम के पत्ते जो पेड़ से झड़ गए हों उन्हें बारीक पीसकर सुबह शाम १५ दिन तक २ माशा खाने से बहुत लाभ होता देखा गया है। परहेज तो आवश्यक है। निकला जाता है। बीज मज्जा में गैलिक, टेनिक, एसिड, वसा, शर्करा, गोंद, भस्म तथा प्रचुर स्टार्च ७२.८ प्रतिशत होता है। अत्यधिक रक्तस्राव, व्रण में छाले पड़ने पर पुष्प, पल्लव तथा बीज मज्जा का चूर्ण लगाकर लाभ मिलता है। प्रमेह (डायबीटीज) तथा पूयमेह (ग्नोरिया) में बीज मज्जों का प्रयोग करना हितकारी होता है। पत्तों का रस वमन रोकने के लिए प्रयोग किया जाए तो शीघ्र लाभ देता है। पुष्प त्वक तथा बीज मज्जा का प्रयोग अतिसार और प्रवाहिका में लाभकारी होता है। रक्तप्रदर श्वेतप्रदर (ल्यूकोरिया) में भी बीज (मज्जा) का प्रयोग बहुत गुणकारी साबित हुआ है।

—अर्चना भद्रा

हिन्दुओं की कट्टरता

(ले०—पं० गंगाप्रसाद विद्यार्थी एम. ए. एम. फिल जबलपुर, सिटी)

शक, सिथियन, हूण, ग्रीक भी भारत में आए,
आक्रमण किए फिर कुछ प्रदेश भी जीत लिए।
बहुत से भारत में रह गए, यहीं पर बस गए,
आपस में रल-मिल गए, शादी विवाह हुए।
सब हिन्दुओं में मिल गए, रच पच गए,
अब कही कोई नहीं दिखता, ढूंढने पर भी नहीं मिलता।
जब पारसी मुसलमान ईसाई आए,
तब हिन्दुओं में दुर्बुद्धि जागी, इनसे दूर रहने की ठानी।
हिन्दू से तो मुस्लिम ईसाई होता था,
पर मुस्लिम ईसाई हिन्दू नही होता था।
घोड़े पर धूल डालने से गधा बन जाता था,
पर गंगा नहाने से भी गधा न घोडा बन पाता था।
इसी में अपना बडप्पन समझते थे,
हिन्दू अपने लाल नित्य प्रति खोते थे।
शूद्रों अछूतों का भी निरादर किया,
विधवाओं को तिरस्कृत व अपमानित किया।
स्वार्थ के आगे न अनाथो की परवाह हुई,
गौ भक्तों की घटती और गौ घातकों की बाढ़ हुई।
प्रभु की अनन्त दया से दयानन्द भारत में आया,
जिसने इस उल्टी गंगा को फिर से सीधा बहाया।
बिछड़े हुए लोगों को फिर से अपने में मिलाया,
शुद्धि का नाम दे अहिन्दू को हिन्दू बनाया।
शुद्धि चक्र यदि तेजी से चल जाता,
तो क्या भारत में कभी भी पाकिस्तान बन पाता।
अब भी हिन्दुओ सम्भल जाओ, शुद्धि को व्यापक रूप से अपनाओ।
केवल भारत को ही नहीं, समस्त विश्व को तुम आर्य बनाओ॥

(पृष्ठ ३ का शेष)

कि जो चीज लूट (गनीमत) में लाओ, उसका पांचवां भाग अल्लाह के लिए। (आ०-३९, ४१, सू०-८, मं०-२)

(१४) ऐ ईमानवालो! अगर तुम्हारे बाप भाई ईमान (इस्लाम) के मुकाबले में कुफ्र को प्यारा समझे तो उनको अपना समझकर न पकडो अर्थात् अपना साथी न बनाओ और जो तुममें ऐसों के साथ मित्रता रखोगे तो यही लोग जालिम होंगे।
(आ०-२३, सू०-९, मं०-२)

(१५) ऐसे किताबवाले जो न अल्लाह पर ईमान लाते हैं और न उसके पैगम्बर की हराम की हुई चीजों को हराम समझते हैं और न सच्चे दीन को मानते हैं, उनसे लड़ो और यहां तक कि अपने हाथों से जजिया (धार्मिक कर) दे और जलील होवे।
(आ०-२९, सू०-९, मं०-२)

(१६) ऐ ईमानवालो! तुमको क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि अल्लाह की राह में (जिहाद के लिए) निकलो तो तुम जमीन पर ढेर हुए जाते हो, क्या आखिरत को छोड़कर दुनिया की जिन्दगी पर रीझे हो तो आखिरत के मुकाबले में दुनिया के साज-सामान बिल्कुल नाचीज हैं। अगर तुम न निकलोगे तो (अल्लाह) तुम्हें बड़ी दुःखदायी मार देगा और तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को लाकर मौजूद करेगा और तुम उसका कुछ नहीं बिगाड सकोगे और अल्लाह हर चीज पर ताकतवर है।
(आ०-३८, ३९, सू०-९, मं०-२)

(१७) निश्चय अल्लाह ने बस मोल ली है मुसलमानों से जाने उनकी और माल उनके बदले कि वास्ते उनके बहिश्त है। लड़ते हैं, बीच मार्ग अल्लाह के, बस मारते हैं और मर जाते हैं।
(आ०-१११, सू०-९, मं०-२)

(१८) ऐ लोगो! जो ईमान लाये हो, अपने आस-पास के काफिरों से लड़े जाओ और चाहिये कि वह तुमसे सख्ती महसूस करे।
(आ०-१२३, सू०-९, मं०-२)

वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द का जून मास १९९१ का प्रचार कार्य

प्रेषक—प्रो० ओमकुमार आर्य (सह-संयोजक-वेदप्रचार मण्डल, जीन्द)

गत मास में २ जून रविवार के एक दिन मण्डल की मासिक बैठक आर्यसमाज जीन्द शहर में हुई थी जिसमें जून मास के कार्यक्रम का निर्धारण किया गया था और उसके अनुसार निम्नलिखित स्थानों पर प्रचार कार्य किया :—

आर्य वीर दल नरवाना की ओर से आर्य व० मा० विद्यालय नरवाना में आर्य वीर दल का शिविर २ जून से ९ जून तक रखा गया और मण्डल की भजन मण्डली ने शिविर के दौरान वहां प्रचार कार्य किया जिससे शिविरार्थी आर्य वीरों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। तत्पश्चात् जीन्द के आस-पास देहात में मण्डल के भजनोपदेशक श्री चन्द्रभान जी आर्य अपनी मण्डली के साथ प्रचारार्थ घूमते रहे तथा इन गावों में प्रचार किया :—अमरहेड़ी, खैरखेड़ी, रूपगढ़ रामचन्द्रवाला, बरसाना, भिगाना, खोखरी, सीसर, निर्जन, खरक, खेड़ा, मोरखी।

रामचन्द्रवाला और बरसाना गांव में यज्ञ के अवसर पर अनेक युवकों ने यज्ञोपवीत धारण किए तथा दुर्व्यसन त्यागने का संकल्प लिया। गांव भिगाना में नम्बरदार साहब की कोठी पर यज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दस नौजवानों ने यज्ञोपवीत धारण किए तथा तीन व्यक्तियों ने मद्यपान छोड़ देने की शपथ ली और मद्यपान सदा के लिए छोड़ दिया तथा एक राधास्वामी सज्जन ने काफी देर की चर्चा और शंका-समाधान के पश्चात् राधास्वामी मत छोड़कर वैदिक धर्म में अपनी पूरी आस्था प्रगट की तथा आर्यसमाज के प्रचार में सक्रिय सहयोग देने का व्रत लिया।

इस प्रकार वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द यथासामर्थ्य प्रचार कार्य में जुटा हुआ है। इलाके की जनता और मण्डल के प्रत्येक सदस्य का पूरा सहयोग हमें मिल रहा है तथा पूज्य स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती के नेतृत्व में मण्डल सफलतापूर्वक कार्यक्षेत्र में लगा हुआ है।

जुलाई मास के लिए और १७ गांव प्रचार हेतु चुन लिए गए हैं और भजनोपदेशक महोदय अपनी मण्डली लेकर प्रचार क्षेत्र में चले गये हैं।

आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल सिरसा का उत्तम परीक्षा परिणाम

वर्ष १९९०–९१ का हमारे स्कूल का परीक्षा परिणाम अत्यन्त ही उत्साहवर्धक एवं प्रेरणादायी रहा।

१०+२ कक्षा	८५%
X	९०%
VIII	७७%

दसवीं कक्षा में निम्न छात्रों ने ७०% से अधिक अंक प्राप्त किए

१. प्रभुदयाल पुत्र श्री बीरबलराम	७४%
२. संदीपसिंह पुत्र श्री दलीपसिंह	७१.५%
३. जगदीशकुमार पुत्र श्री कृष्णकुमार	७१%

खेलों में सफलताएं—

१. गत वर्ष १९९०–९१ में हमारा स्कूल हाकी, बालीबाल व एथलैटिक्स में स्कूलों के टुर्नामेण्ट में जिले भर में प्रथम रहा।

२. गत वर्ष १९९०–९१ में स्कूल ने केन्द्रीय सरकार द्वारा घोषित १०,००० रु० पुरस्कार हाकी, बालीबाल व एथलैटिक्स में जिले भर में प्रथम रहकर प्राप्त किया। लगातार पिछले दो वर्षों से स्कूल बालीबाल में १०,००० रु० का पुरस्कार प्राप्त करता आ रहा है।

विद्यालय प्रबन्ध समिति सिरसा के प्रयास से ४ लाख रुपये की लागत से स्कूल भवन के ऊपर पहली मंजिल का निर्माण करवाया गया है। इसका प्रयोग १०+२ के लिए किया जाएगा।

स्कूल में विद्यार्थियों की संख्या में तेजी से वृद्धि होरही है। सिरसा जिले में इस संस्था का विशेष स्थान बन गया है।

प्रिंसिपल
आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल, सिरसा

रेल बजट एक नजर में

—माल भाड़े में १० फीसदी बढ़ोतरी का प्रस्ताव। लेकिन कुछ जरूरी वस्तुओं जैसे खाने का नमक, खाद्य तेल, खाद्यान्न, दालें, चीनी, गुड़, मिट्टी का तेल, डीजल और फल सब्जियों के माल भाड़े में कोई बढ़ोतरी नहीं।

—पार्सल और सामान की दरों में १० फीसदी बढ़ोतरी।

—८०० किलोमीटर तक की दूरी के लिए ऊंचे दर्जे के यात्री भाड़े में २० फीसदी और ज्यादा दूरी के लिए १५ फीसदी बढ़ोतरी।

—राजधानी एक्सप्रेस, नई दिल्ली-बम्बई एसी एक्सप्रेस और शताब्दी एक्सप्रेस का भी भाड़ा बढ़ा।

—साधारण ट्रेनों के दूसरे दर्जे के किराए में कम से कम एक रुपये की बढ़ोतरी। ४०० किलोमीटर तक की दूरी के लिए पांच रुपये की बढ़ोतरी।

—मेल/एक्सप्रेस के यात्री भाड़े में कम से कम एक रुपये की बढ़ोत्तरी और १३०० किलोमीटर से ज्यादा की दूरी के लिए अधिकतम २० रुपये की बढ़ोतरी।

—दूसरे दर्जे के स्लीपर, प्रभार, सुपरफास्ट प्रभार, आरक्षण शुल्क और प्लेटफार्म टिकट की कीमत में कोई बढ़ोतरी नहीं।

—दूसरे दर्जे के मासिक सीजन टिकट के किराए में चार से १६ रुपये और पहले दर्जे के किराए में १६ से ६४ रुपये की बढ़ोत्तरी।

—यात्रियों की सेवा में सुधार।

—यात्री सेवाओं की रूपरेखा और पांच से सात वर्ष के लिए निवेश योजना तैयार करने के मकसद से एक कार्य दल बनाया जाएगा।

—शहरी रेल परिवहन में सुधार और उनका विस्तार किया जाएगा।

—वाराणसी, बड़ोदरा, जोधपुर आगरा, तिरुचिरापल्ली, कोयबतूर, सूरत और नागपुर रेलवे स्टेशनों पर आरक्षण के काम का कम्प्यूटरीकरण।

—रेल लाइनों के बदलने का बकाया काम आठवीं योजना के अन्त तक पूरा करने का प्रयास किया जाएगा।

—१९९१-९२ के दौरान ३३२५ किलोमीटर लम्बी रेल लाइनों को बदलने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए एक हजार करोड़ रुपये मुहैया कराए जाएंगे।

—१९९१-९२ में देश के १२ हिस्सों में ३१४ किलोमीटर लम्बी रेल परियोजना शुरु की जाएगी।

—आठवीं योजना के दौरान तीन हजार किलोमीटर लम्बी रेल लाइनों का विद्युतीकरण किया जाएगा।

—इस वर्ष के दौरान ६७५ किलोमीटर लम्बे मार्ग का विद्युतीकरण पूरा करने का लक्ष्य है।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में प्रवेश

सर्वसाधारण आर्यजनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ पूर्णरूपेण आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकार में है। यहां पर हरयाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की ८वीं कक्षा तक तथा श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर की पाठविधि (जो महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध है) के अनुसार मध्यमा (१०+२) और शास्त्री (बी.ए.) कक्षा तक के अध्यापन का प्रबन्ध है। ३१ जुलाई तक प्रवेश चालू रहेगा। अतः प्रवेशार्थी अवसर का लाभ उठावें। योग्य आचार्य एवं अध्यापकों का समुचित प्रबन्ध है। पूर्ण जानकारी के लिए गुरुकुल कार्यालय में पधारकर अथवा फोन नं० २७५३९८ से सम्पर्क करें।

धर्मचन्द
मुख्य अधिष्ठाता
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ डा० नई दिल्ली-४४
जिला फरीदाबाद

सभा के ऋषि-लंगर के लिए दानदाताओं को सूचि द्वारा श्री जयपालसिंह आर्य भजनोपदेशक

नं०	नाम आर्यसमाज		दान देनेवाले सदस्यों के नाम	क्वि०	कि०
१.	बराणी	जि० रोहतक	श्री महावीरसिंह मन्त्री	१	
२.	बराणी	,,	श्री प्रतापसिंह प्रधान	१	
३.	जहाजगढ	,,	श्री मा० चन्द्रभान	१	
४.	बिगोवा	भिवानी	श्री ईश्वरसिंह मांगेराम जिलेसिंह ओमप्रकाश	१	
५.	,,	,,	श्री कश्मीरीलाल सरपंच	१	
६	दूबलधन	रोहतक	श्री रूपराम व श्री भंवरलाल	१	
७.	बाघपुर	,,	श्री बलवन्तसिंह प्रधान	१	
८.	बोहर	,,	श्री देवव्रत द्वारा	१	
९.	लाढोत	,,	श्री मा० बलवीरसिंह द्वारा	१	
१०.	,,	,,	श्री मा० रामप्रकाश	१	
११.	आसन	,,	श्री सुखदेव शास्त्री व रामकर्ण द्वारा	१	
१२	,,	,,	श्री सरूपलाल हरिचन्द राजपाल रामचन्द्र कवलसिंह	१	
१३.	पाकस्मा	,,	श्री विजयपाल देवव्रत जी प्रधान	१	
१४.	नयाबास	,,	श्री प्रतापसिंह प्रचार मन्त्री द्वारा	९	२५
१५.	गोच्छी	,,	श्री धर्मपाल शास्त्री		२५
१६.	कलहावड़	,,	श्री दयानन्द मिस्त्री राजसिंह व श्री भीमसिंह दफेदार	१	५०
१७.	,,	,,	श्री सज्जनसिंह प्रधान	१	
१८.	कटवाड़ा	,,	श्री शमशेरसिंह द्वारा	२	
१९.	आसन	,,	श्री जयपालसिंह आर्य सभा भजनोपदेशक	१	
२०.	रुडकी	,,	श्री ओमप्रकाश प्रधान आर्यसमाज	१	
२१.	रुडकी	,,	श्री रामचन्द्र सुपुत्र श्री रतनसिंह उपमन्त्री	१	
२२.	पाकसमा	,,	श्री धर्मवीर शास्त्री	१	
२३	मकडौलीकलां	,,	श्री बलवन्तसिंह प्रधान	१	
२४	कलहावड़	,,	श्री चन्द्रसिंह पहलाद चन्द्रभान रणवीर रामकुमार भगते	१	
२५.	,,	,,	श्री रखेराम मौजीराम व श्री रार्मासह	१	

कुल जोड़ बोरी ३४

नकद दान

२६	सांघी	२५०) रु०	श्री सुरेन्द्र सुपुत्र मांगेराम
२७.	खेडी आसरा	२५०) रु०	श्री सुरेन्द्रसिंह सुपुत्र श्री प्रियव्रत ठेकेदार
२८.	कलहावड	१००) रु०	श्री ईश्वरसिंह शास्त्री
२९	,,	२५) रु०	श्री चन्दराम
३०.	,,	११) रु०	बलवीरसिंह नम्बरदार

कुल जोड रुपये ६३६)

वेद प्रचार मण्डल जिला जीन्द की जुलाई मास की बैठक में लिए गए महत्त्वपूर्ण निर्णय

रविवार ७ जुलाई १९९१ को वेद प्रचार मण्डल जिला जीन्द की मासिक बैठक आर्यसमाज मन्दिर जीन्द शहर में सुबह १०-३० बजे हुई जिसकी अध्यक्षता मण्डल के संयोजक श्री स्वामी रत्नदेव जी महाराज ने की। बैठक में उपस्थिति काफी उत्साहवर्द्धक थी, १५ सदस्य उपस्थित थे। इसमें सर्वसम्मति से निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए :—

१. मण्डल पिछले लगभग एक वर्ष से कार्यरत है और अब तक का कार्य सन्तोषजनक रहा है तथा आगे और भी ज्यादा उत्साह और लग्न से कार्य करने का संकल्प दोहराया गया।

२. सभी ने महसूस किया कि प्रथम वर्ष की समाप्ति पर मण्डल का प्रथम वार्षिक सम्मेलन सितम्बर मास के तीसरे सप्ताह में उचाना मण्डी में आयोजित किया जाए जिसकी तैयारी अभी से आरम्भ करदी जाए और इस सम्बन्ध में व्यापक जन-सम्पर्क किया जाए जिसके लिए श्री जयकिशन जी आर्य, श्री सूबेसिंह जी आर्य तथा श्री मा० रायसिंह जी आर्य पर विशेष दायित्व सौंपा गया। वे पूज्य स्वामी रत्नदेव जी के मार्गदर्शन में कार्य करेंगे और आवश्यक जन-सम्पर्क करेंगे तथा मण्डल के किसी भी सदस्य की सेवा एतदर्थ लेते रहेंगे।

३. जुलाई मास के लिए सफीदों उप-मण्डल में १६ गांव प्रचार हेतु चुने गए। गांवों की संख्या में यथा आवश्यकता और परिस्थिति के अनुसार संशोधन भी किया जा सकता है।

आर्यसमाज जीन्द शहर के प्रधान श्री जयकिशन जी आर्य, मन्त्री श्री राजवीर जी आर्य (जो मण्डल के सदस्य भी हैं) ने बैठक वास्ते बड़ी अच्छी व्यवस्था करवाई और पूरा सहयोग दिया। अत: उनका तथा उनके माध्यम से आर्यसमाज जीन्द शहर का धन्यवाद किया गया। अगली मासिक बैठक ४ अगस्त १९९१ को सुबह १०-३० बजे आर्यसमाज उचाना मण्डी में रखी गई है। पश्चात् बैठक विसर्जित हुई।

प्रो०—ओमकुमार आर्य
सह-संयोजक वेदप्रचार मण्डल, जीन्द

हरिद्वार में वेदप्रचार की धूम

हरिद्वार १४ जुलाई। विश्ववेद परिवार संघ के संस्थापक तथा महामन्त्री श्री पं० ब्रह्मप्रकाश जी शास्त्री तथा कार्यवाहक अध्यक्ष श्री स्वामी वेदानन्द जी वैदिक के हरिद्वार शुभागमन पर आर्यसमाज हरिद्वार ने एक जनसभा का आयोजन किया। सभा को सम्बोधित करते हुए श्री शास्त्री ने कहा कि वेदों की शिक्षा के प्रसार और प्रचार के बिना यह सारा विश्व शीघ्र ही अशान्ति की ज्वाला में जलकर भस्म हो जायेगा। श्री स्वामी जी ने कहा कि यदि हिन्दू मात्र वेदों की शिक्षा पर चलने का व्रत धारण करले तो भविष्य में सारी विपदायें नष्ट हो सकती हैं। गरीबदासी सम्प्रदाय के महन्त श्री स्वामी श्याम-सुन्दरदास जी ने विश्ववेद परिवार संघ को अपना पूरा सहयोग देने का वचन दिया। आर्यसमाज हरिद्वार के आचार्य श्री देवेन्द्रकुमार जी शास्त्री ने हरिद्वार में शीघ्र ही संघ की शाखा खोलने का वचन दिया।

अन्त में आर्यसमाज के मन्त्री महोदय ने धन्यवाद तथा शान्ति-पाठ के पश्चात् सभा को विसर्जित किया। संघ के सदस्य बनने का पता—महामन्त्री विश्ववेद परिवार संघ-११/१२४ पश्चिम आजाद नगर, दिल्ली-५२

कृपालसिंह आर्य
मन्त्री आर्यसमाज हरिद्वार

जयललिता मासिक वेतन नहीं लेंगी

मद्रास, २१ जुलाई (वार्ता)। तमिलनाडु की मुख्यमन्त्री सुश्री जयललिता अपना मासिक वेतन नहीं लेंगी। कल रात जारी की गई एक सरकारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार सुश्री जयललिता प्रति माह अपने वेतन में से प्रतीक के तौर पर मात्र एक रुपया ही लेंगी।

उन्होंने कहा कि मुझे यह वेतन लेना उचित नहीं लगता क्योंकि जनता ने मुख्यमन्त्री पद के लिए मुझे इसीलिए चुना है कि मैं उनकी सेवा कर सकूं।

(पृष्ठ १ का शेष)

न प्राणेनापानेन मर्त्यो जीवति कश्चन ।
इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन्नेतावुपाश्रितौ ॥५॥

जीव के विषय में यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने कर्मों के अनुसार विभिन्न योनियों में जाता है। वह कहीं कुटी में रहने वाला, मनुष्य शरीरधारी, श्रेष्ठ शरीरधारी, कहीं आकाश में रहने वाला, कहीं जल और कहीं पृथ्वी पर उत्पन्न होनेवाले पेड़ इत्यादि के रूपों को धारण करता है। यह हंस है। जिस प्रकार हंस नीरक्षीर विवेक के द्वारा दोनों को पृथक् कर देता है वैसे ही जीव भी प्रकृति रूपी जल से ब्रह्मरूपी दूध को अलग कर लेता है तब वह हंस ही नहीं परमहंस बन जाता है। इसके बिना शरीर और इन्द्रियां बेकार हैं। शरीर में रहनेवाले प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय यह सब जीव के ही आश्रय से रहते हैं।

इस प्रकार मनुष्य को चाहिए कि वह शरीर और आत्मा के भेद को समझे और शरीर को साधन तथा इसके द्वारा परमसाध्य प्रभु को प्राप्त करे। हे जीव !

है कहां मंजिल तुम्हारी ?
दिन हजारों होगए तुमको,
सुनो हे हंस सुन्दर !
पंख खोले स्वर्ग ही की,
ओर यों उड़ते निरन्तर।
किन्तु तुममें और उनमें,
कम हुआ कुछ भी न अन्तर।
दूर होता ही गया वह तुम,
बढ़े ज्यों-ज्यों निकटतर।
है तुम्हारी चाल न्यारी।
मुक्त हो अमरत्व से भी
मुक्त हो अजरत्व से भी
मुक्त हो पूर्णत्व से भी
मुक्त हो देवत्व से भी।
सूत्र जो सब सूत्र का है,
मुक्त हो उस तत्त्व से भी।
और यह होते हुए भी,
तुम गए मनुजत्व से भी
क्यों तुम्हें निज भूल प्यारी।
सब गुणों से युक्त भी,
होते हुए गुणहीन निकले।
इन्द्र और कुबेर भी होते,
हुए तुम दीन निकले।
ज्ञानमय होते हुए भी
अज्ञान में तल्लीन निकले।
शक्ति सब तुमने बिसारी।
बुद्धि से कह दो कि अब,
तू सर्वदा निरुपाय हो जा।
शक्ति से कह दो कि तू,
अब तू सर्वदा असहाय हो जा।
ध्यान से कह दो कि,
अन्तर्ध्यान हो मृतप्राय हो जा।
और अपने से कहो,
तू ब्रह्म का पर्याय हो जा।
कर समर्पित सिद्धि सारी,
है यही मंजिल तुम्हारी।
यही जीवात्मा का रूप है,
इसे ही समझना है।

गांव में शराब ठेकों के खिलाफ महिलाओं ने प्रदर्शन किया

पूंडरी, (पराशर)। जिला कैथल के गांव खेड़ी शेरू की दर्जनों महिलायें व बच्चों ने जिला कैथल के उपायुक्त श्री महासिंह के कार्यालय के सामने प्रदर्शन किया और मांग की कि उक्त गांव में प्रत्येक मोहल्ले में चल रहे नाजायज शराब के ठेकों को तुरन्त हटाया जाए। इस गांव के सभी नागरिकों ने हरयाणा सरकार से शिकायत की है कि गाव की महिलायें सायं के समय घर से बाहर नही निकल सकती क्योंकि गांव के प्रत्येक घर में शराब की बोतलें उड़ाई जाती हैं। गांव की महिलाओं का आरोप है कि इनके युवा पुत्र घर से जबरदस्ती सामान ले जाकर बेचकर शराब पीते हैं। उपायुक्त कैथल ने उपमण्डल अधिकारी (ना) एम.के. मिड्डा को सारे मामले की जांच के आदेश दे दिए हैं। उपमण्डल अधिकारी श्री मिड्डा ने महिलाओं के शिष्ट मण्डल को आश्वासन दिया कि गांव में चल रहे अवैध शराब के ठेके को तुरन्त उठा लिया जाएगा चाहे वह कितने भी प्रभावशाली व्यक्ति का क्यों न हो। गत दिवस जिला के दर्जनों गांवों की महिलाओं ने उपायुक्त को लिखित रूप में शिकायतें भी की हैं कि उनके शराबी पतियों को नसीहत दी जाए क्योंकि अक्सर गांव में लोग शराब पीकर अपनी पत्नी व बच्चों को पीटते हैं। इन महिलाओं ने चेतावनी दी है कि यदि अतिशीघ्र शराब के ठेके न हटाए गए तो महिलायें प्रदर्शन व भूख हड़ताल करेंगी। (दैनिक जन-सन्देश से साभार)

ऐसे आज कपूत हुए

भड़काऊ अश्लील है शिक्षा, मेरा देश डुबायेगी।
मझधार पडी है नाव आज, किस तरह किनारे आयेगी॥
शक्ति खोकर भक्ति करते, नहीं समझ में आया है।
वीर्य रूपी हीरे को, कामी बन व्यर्थ बहाया है।
सेंन्ट सुगन्ध लगा मानव ने, कृत्रिम खुशबू पाई है।
चेहरे पीले पडे हुए, लाली नजर न आई है॥
रामायण महाभारत गीता, वेद को पढना छोड दिया।
दानवता ही दानवता, मुख मानवता से मोड़ लिया॥
परशुराम, हनुमान, भीष्म जी, दयानन्द से पूत हुए।
लेकिन आर्यावर्त के अन्दर ऐसे आज कपूत हुए।

—महेश आर्य, गांव० पो० पन्हेड़ा खुर्द
बल्लभगढ, जि० फरीदाबाद (हरयाणा)

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के समाचार

१. शिक्षण कार्य आरम्भ

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में शिक्षण कार्य आरम्भ हो गया है। ब्रह्मचारी गुरुकुल के नियमानुसार प्रातः ४ बजे से रात्रि १० बजे तक सुयोग्य तथा अनुभवी अध्यापकों के निर्देशन तथा निरीक्षण में दिनचर्या का पालन कर रहे हैं। दिनांक १८ जुलाई को सभी ब्रह्मचारियों का मुण्डन संस्कार तथा १९ जुलाई को यज्ञोपवीत संस्कार वैदिक रीति के अनुसार सम्पन्न हुआ। पं० ओमप्रकाश जी सिद्धान्तशिरोमणि, पं० ओमप्रकाश यजुर्वेदी अध्यापक एवं सभा के उपदेशक पं० चन्द्रपाल जी शास्त्री, पं० अर्जुनदेव आर्य तथा पं० कुलवन्तराय आर्य ने इस कार्यक्रम को सफल करने में योगदान दिया। ३१ जुलाई तक गुरुकुल में प्रवेश चालू है। इच्छुक माता-पिता अपने बच्चों का प्रवेश करवाकर लाभ उठावें।

२. मुख्याध्यापक की आवश्यकता

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के लिए आर्यसमाज के सिद्धान्तों के ज्ञाता तथा मुख्याध्यापक के कार्य के अनुभवी एक मुख्याध्यापक की आवश्यकता है। सेवानिवृत्त महानुभाव को प्राथमिकता दी जावेगी। इच्छुक महानुभाव निम्नलिखित पते पर शीघ्र आवेदन-पत्र भेजें।

—धर्मचन्द, मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फोन २७५३१८

३. गुरुकुल के चारों ओर वेदप्रचार की धूम

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में जहां शिक्षण कार्य के साथ-साथ ब्रह्मचारियों को उपदेशों तथा भजनों द्वारा वैदिक धर्म से परिचित करवाया जाता है, वहां गुरुकुल के चारों ओर के ग्रामों में सभा के उपदेशक पं० चन्द्रपाल जी शास्त्री, पं० हरिश्चन्द्र जी शास्त्री, पं० भजनलाल आर्य एवं भजनोपदेशक पं० खेमसिंह जी, पं० मुरारीलाल बेचैन तथा स्वामी देवानन्द जी आदि की भजनमण्डलियां वेदप्रचार कर रही हैं। गत दिनों ग्राम अनंगपुर, लकड़पुर, धूमसपुर, दयाल नगर, डेरी लकड़पुर, तेखण्ड, बदरपुर, मोलड़बास, मीठापुर, ताजपुर पहाड़ी, तिलपत, पल्ला, स्वामी श्रद्धानन्द बस्ती गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, ऋषिनगर छज्जननगर, तोताराम कालोनी, ऊषा कालोनी, झाड़िया मार्केट, आर्य नगर सराय ख्वाजा, बदसिया, असाना, शास्त्री कालोनी फरीदाबाद, नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद, सैक्टर ७ फरीदाबाद, सैक्टर १५ फरीदाबाद, मैन बाजार बल्लभगढ, दशहरापुर बूजघाट, सेहतपुर, मदनपुर, बाली, तुगलकाबाद, गुड़गांव, गोविन्दपुरी दिल्ली, महताब डेरा, बसन्तपुर आदि।

४. गुरुकुल को आटा तथा पंखों का दान

गत सप्ताह गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र के कुमार ट्रेडिंग कम्पनी ने एक पंखा तथा एक क्विंटल आटा और इसी प्रकार श्री अशोक जी मालिक मनोहर स्टोन क्रेशर ने दो पंखे दान दिए हैं। —केदारसिंह आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० २३२०/७३ रजि न० P/RTK-४९ मुद्रितमवत् १,२६ ०८, ४३. ०९०

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक ४२ २८ सितम्बर, १९९१ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

वेदार्थ-विचार

प्रा० भद्रसेन द.क० साधु आश्रम (होशियारपुर)

कक्षा के कक्ष से—

निकष—वन सप्ताह तो सुना था, यह वेद सप्ताह क्या है? क्योंकि पर्यावरण या प्रदूषण आदि की दृष्टि से वन की बात तो सर्वविदित है।

प्राध्यापक—यहां मूल भावना किसी के महत्त्व की ओर ध्यान आकर्षण की है। अतः वेद के महत्त्व को उजागर करने के लिए यहां वेद के सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है।

नमन—यह वेद है क्या?

प्रा०—वेद एक शब्द है और इस प्रकरण में ऋग्वेद आदि चार पुस्तकों का वाचक है।

जितेन्द्र—यहां शब्द से क्या भाव है?

प्रा०—बोली जानेवाली सार्थक ध्वनियों के मेल को शब्द कहते हैं, अर्थात् हम अपने भाव एक दूसरे के प्रति प्रकट करने के लिये जिस माध्यम का सहारा लेते हैं, उसको भाषा कहते हैं। भाषा की प्रथम ईकाई अ, इ, उ, क, ख आदि वर्ण होते हैं। वर्णों के मेल से शब्द, पद बनते हैं, जैसे कि आज, दिन, वेद, यज्ञ आदि। शब्द-नाम और क्रिया के भेद से मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं। शब्दों के मेल से वाक्य बनते हैं। वाक्य के रूप में ही हम अपनी बात कहते हैं।

प्रा०—वैसे तो हाथ आदि के संकेत से भी अपने भाव दूसरों को समझाये जा सकते हैं, पर वह बात सामान्य भावों तक ही सीमित रहती है। दिल के सूक्ष्म भाव, सुनिश्चित, स्पष्ट रूप से भाषा द्वारा ही अभिव्यक्त होते हैं। अतः मानव समाज के व्यवहार में भाषा का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है।

निकष—वेद शब्द का शब्दार्थ क्या है?

प्रा०—वेद शब्द का मुख्य शब्दार्थ है ज्ञान, वैसे ज्ञान, सत्ता, लाभ, विचार अर्थवाली विद धातु से वेद शब्द बनता है। अतः ये चारों अर्थ इससे व्यक्त हो सकते हैं। हां, इस प्रसंग में वेद शब्द का तात्पर्य ऋग्, यजु०, साम और अथर्व नामक चार पुस्तकों (की रचनाओं) में समाया ज्ञान से है। जोकि भारतीयता के अनुसार ईश्वरीय ज्ञान है।

धीरज—अभी ऊपर संकेत किया गया है, कि ऋग्वेद आदि नामक पुस्तकों का ज्ञान वेद है। क्या वेद पुस्तक रूप में सामने आये? और ये पुस्तकें किसने, कब, कैसे बनाई हैं?

प्रा०—जिस तरह के आजकल पुस्तक रूप में ऋग्वेद आदि मिलते हैं। इस रूप में वेद सामने नहीं आये। तब तो इस प्रकार की रचना के लिए लेखक, लिखने की सामग्री आदि की अपेक्षा होगी। जोकि सारी स्थिति भौतिक रूप में होनी चाहिए।

अजय—तो फिर क्या शब्द बोले गये? हां शब्द सदा मुख आदि से उच्चारा जाता है। अतः वेदविहित शब्द का उच्चारण किसने किया?

प्रा०—आर्यसमाज के विश्वास के अनुसार वेद का ज्ञान ईश्वर ने दिया है।

सोमेश—क्या ईश्वर के हमारे जैसे ही मुख, तालु आदि उच्चारण अंग हैं? जिनसे बोलकर वह वेद देता है।

प्रा०—ईश्वर सर्वव्यापक है, अतः हमारे जैसा उसका सीमित, आकार, शक्तिवाला शरीर नहीं है। ईश्वर के सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान होने से वह बिना बोले ही ज्ञान दे सकता है।

सुमनेश—क्या आप अपनी बात को और स्पष्ट करेंगे? क्योंकि यह सब कुछ पहेली लगती है?

प्रा०—शब्द जैसे मुख से बोले जाते हैं। ऐसे ही मन, हृदय, अन्तःस्थल में भी इनका प्रकटीकरण होता है। जैसे कि विचार के समय हम अपने मन में ऊहा-पोह के रूप में प्रश्न-उत्तर करते हैं। इसका एक और उदाहरण है—हिप्नोटिज्म, जादूगरी इनमें भी मानसिक प्रभाव से दूसरों द्वारा [illegible] किये जाते हैं।

इसका स्पष्ट अभिप्राय यही है, कि ईश्वर सर्वव्यापक होने से सभी के हृदयों में भी रहता है। अतः ईश्वर ने सृष्टि के शुरू में अग्नि, वायु आदि के हृदयों में अन्तर्यामी होने से वेद का ज्ञान, शब्द, अक्षर विन्यास दिया।

अजय—अग्नि, वायु, सूर्य आदि तो भौतिक पदार्थों के नाम हैं। इनके माध्यम से यह कैसे सम्भव है?

प्रा०—जैसे अग्नि आदि भौतिक पदार्थों के नाम हैं, ऐसे ही ये ऋषियों के भी नाम हैं। अतः ज्ञान ग्रहण में समर्थ ऋषियों के हृदय में ईश्वर ने वेदज्ञान दिया।

सोमेश—इन्हीं चारों को ही क्यों दिया? हृदय तो सभी मनुष्यों के पास होते हैं।

प्रा०—ईश्वर कर्म फलदाता है अतः जिसके जैसे कर्म होते हैं, उनको वैसा ही वह फल देता है। इन चारों ऋषियों के पूर्वजन्म के ऐसे शुद्ध कर्म तथा तदनुरूप शुद्ध, समर्थ हृदय थे। अतः इनके हृदयों में ही वेद का प्रकाश किया। दूसरों की भलाई के लिये फिर उन्होंने अन्यों को यह ज्ञान दिया। इस प्रकार आगे वेद का प्रचार-प्रसार हुआ।

प्रकाश—यह वेदज्ञान ईश्वर ने कब दिया?

प्रा०—दुनिया के शुरू में संसार के बनानेवाले ने सूर्य आदि भौतिक पदार्थों, मनुष्यों को बनाने के बाद यह वेदज्ञान दिया।

मनुष्य ही ज्ञान के ग्रहण और विकास में सक्षम हैं, पर मनुष्यों को तब तक ज्ञान नहीं आता, जब तक उनको कोई आरम्भ में देता नहीं। एक बार ज्ञानी होने पर ही मनुष्य नया विकास कर सकता है, वैसे नहीं। क्योंकि मनुष्यों का प्रारम्भिक ज्ञान नैमित्तिक होता है, जैसा निमित्त (शिक्षक) वैसा ज्ञान।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

वेद में सर्वस्व समर्पण

(पं० धर्मदेव "मनीषी" वेदाचार्य, गुरुकुल कालवा)

मनुष्यों को अपना सर्वस्व किसके अनुष्ठान के लिए समर्पण करना चाहिए यह निम्नलिखित मन्त्र में उपदेश किया है—

आयुर्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा प्राणो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहापानो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा व्यानो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहोदानो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा समानो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा चक्षुर्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा वाग्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा मनोयज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहात्मा यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा ब्रह्मा यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा ज्योतिर्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा स्वर्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा पृष्ठं यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा यज्ञो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा ॥यजुर्वेद २२।३३॥

अर्थ—हे मनुष्यो ! तुम ऐसी कामना करो कि हमारी (आयुः) आयु (स्वाहा) श्रेष्ठ क्रिया—यज्ञ एवं (यज्ञेन) परमेश्वर और विद्वानों का सत्कार, संगत कर्म और विद्या आदि के दान के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो, (प्राणः) जीवन का मूल प्राणवायु (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योगाभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो, (अपानः) दुःख को हटानेवाला अपान (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योगाभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो, (व्यानः) सब सन्धियों में व्याप्त चेष्टा का निमित्त व्यान (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योगाभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो (उदानः) बल देनेवाला उदान (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योगाभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो (समानः) रस को समान करने वाला समान (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योगाभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो, (चक्षुः) नेत्र (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योगाभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो, (श्रोत्रम्) ज्ञान-इन्द्रियों का उपलक्षण श्रोत्र=कान(स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं(यज्ञेन) योगाभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्)समर्पित हो, वाक् कर्म-इन्द्रियों की उपलक्षणवाणी (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योगाभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो, (मनः) अन्तःकरण (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योगाभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो। (आत्मा) जीव (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योगाभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो। (ब्रह्मा) चारों वेदों का ज्ञाता ब्रह्मा (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एव (यज्ञेन)योगाभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो (ज्योतिः) ज्ञान-प्रकाश (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योगाभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो। (पृष्ठम्) प्रश्न=जिज्ञासा और जो शेष है वह (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योगाभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो। (यज्ञः) व्यापक परमेश्वर (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योगाभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो, ऐसी कामना है।

भावार्थ—मनुष्य सारी आयु, शरीर, प्राण, अन्तःकरण, इन्द्रियाँ और सर्वोत्तम सामग्री को यज्ञ के लिये समर्पित करें, जिससे पाप-रहित एवं कृत-कृत्य होकर परमात्मा को प्राप्त करके इस लोक और परलोक में सुख को प्राप्त करें।

मनुष्य अपना सर्वस्व किसके लिए समर्पण करें—

सब मनुष्य अपनी आयु को होम, परमेश्वर और विद्वानों का सत्कार संगत कर्म और विद्या आदि के दान में समर्पित करें। प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, चक्षु, श्रोत्र, वाणी, मन, आत्मा, ब्रह्मा, ज्योति=ज्ञानप्रकाश, सुख, प्रश्न=जिज्ञासु और अवशिष्ट सब पदार्थों को यज्ञ और योगाभ्यास आदि में समर्पित करें। जिससे पापरहित होकर कृत-कृत्य होवें। परमात्मा को प्राप्त करके इह-लोक और पर-लोक में सुख को प्राप्त करें।

महर्षि दयानन्द जी महाराज सत्यार्थप्रकाश में यज्ञ का लक्षण इस प्रकार करते हैं :—

"यज्ञ" उसको कहते हैं कि जिसमें विद्वानों का सत्कार यथायोग्य शिल्प अर्थात् रसायन जोकि पदार्थ विद्या उससे उपयोग और विद्यादि शुभगुणों का दान अग्निहोत्रादि जिनसे वायु, वृष्टि, जल, औषधि आदि की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुंचाना है, उसको उत्तम समझता हूं।

हिंदी दिवस १४ सितम्बर, १९९१

किसने क्या कहा ? और किसने क्या किया ?

—पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह

इलाहाबाद, १५ सितम्बर—पूर्व राष्ट्रपति जैलसिंह ने कहा है कि देश के विकास के लिए अंग्रेजी का मोह छोड़कर हिंदी भाषा अपनानी ही पड़ेगी।

श्री जैलसिंह ने ये विचार हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर यहां आयोजित कार्यक्रम के उद्घाटन के अवसर पर व्यक्त किये।

उन्होंने कहा अंग्रेजी भाषा को संविधान में स्थान नहीं मिला है पर उसके बगैर हमारा काम नहीं चल रहा।

पूर्व राष्ट्रपति ने राजनीतिज्ञों पर आश्चर्य व्यक्त किया कि जिस भाषा हिंदी में वे वोट मांगते हैं सांसद बनने के बाद उसी भाषा को वे भूल जाते हैं।

श्री जैलसिंह ने कहा कि आजादी के बाद से देश को विकास के लिए बुनियादी जिन मुद्दों की आवश्यकता है उन मुद्दों को अमल में लाना जरूरी होगा। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी का दर्शन सभी को अपने-अपने सामने रखना होगा। जिन्होंने कि स्वतन्त्रता आंदोलन में भाग लेने की व्यवस्तता के बावजूद गरीबों और दलितों की सेवा के लिये समय निकाला।

इस अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति को अभिनन्दन ग्रंथ पेश किया गया जिसमें उनके द्वारा दिये गये पुराने भाषणों और हिंदी के विद्वानों की सूक्तियों का भावानुवाद समाविष्ट है।

संकलनकर्ता—हरिराम आर्य

पारिवारिक यज्ञ सम्पन्न

दिनांक १६-९-९१ को प्रातः आर्यसमाज कंवारी के मन्त्री सूबेदार रामेश्वरदास आर्य की बैठक में प्रधान श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी द्वारा यज्ञ किया गया। यज्ञ पर आर्य सदस्यों के अतिरिक्त अन्य नर-नारियों ने भी भाग लिया। क्रांतिकारी जी ने यज्ञ के महत्त्व तथा शराब, धूम्रपान व चाय न पीने पर बल दिया। इस अवसर पर हिसार से आये श्री धर्मसिंह जी योगी जी ने आहार, व्यवहार, ब्रह्मचर्य तथा व्यायाम पर प्रकाश डाला। साथ में गांव की तीन महिलाओं और ६ पुरुषों को जिनके दमा, रांगड, कमर में दर्द, पैरों में दर्द आदि का निवारण कुन्जल क्रिया तथा योगासनों द्वारा दूर करने बारे प्रैक्टिकल करके तथा कुछ आयुर्वेदिक दवाई देकर दूर करने का प्रयत्न किया तथा साथ-साथ स्वस्थ रहने के लिये नियमित व्यायाम एवं आसन करने पर बल दिया।

—पहलवान वजीरसिंह आर्य
कंवारी (हिसार)

—:o:—

आर्यो ! गुरुकुल का निर्माणकार्य चालू है

वस्तुतः आर्यसमाज ही देश, धर्म और ऋषि परम्परा को सुरक्षित रख सकता है। आज भी आर्यसमाज में कर्मठ जीवनदानियों और त्यागियों की कमी नहीं है। स्वामी ओमानन्द जी के तप और त्याग ने सैकड़ों देशभक्त साधु ब्रह्मचारी विद्वानों को पैदा किया है।

गत ३ मार्च को रोहतक से तीन किलोमीटर दूर लाढौत रोड पर गुरुकुल लाढौत की आधारशिला आचार्य बलदेवजी गुरुकुल कालवा के पवित्र करकमलों द्वारा रखी गई थी। आपको स्मरण होगा इस गुरुकुल के लिए गुरुकुल झज्जर के स्नातक, सुयोग्य विद्वान्, आजीवन ब्रह्मचारी, आचार्य हरिदत्त ने पौने चार एकड़ भूमि तथा एक लाख चालीस हजार रु० नकद दिये हैं। पैतृक सम्पत्ति के अतिरिक्त अपना अमूल्य जीवन भी गुरुकुल को अर्पित किया है। परिणामस्वरूप गुरुकुल का निर्माण कार्य प्रारम्भ होगया है। लेकिन जरा विचारिए आर्थिक कठिनाई के इस समय में क्या यह सहज कार्य है ? ईंटे, लोहा, सीमेंट और लकडी आदि के भाव आसमान को छू रहे हैं तो क्या इस महगाई को देखते हुए आप देव दयानन्द द्वारा प्रदर्शित इस महान् कार्य से विमुख हो जायगे ? क्या एक नवयुवक द्वारा सोत्साह प्रारम्भ किये पवित्र यज्ञ को शिथिल होता देख सकेंगे ? तो फिर आइये आचार्य बलदेव द्वारा किये इस शुभारम्भ को पूर्ण करने में तन मन धन से जुट जाइये।

इन पंक्तियों को पढकर आप इस देव कार्य को दूसरों पर मत छोड़िये अपना कर्त्तव्य पहचानिये। विचार कर निश्चय कीजिये कि आप किस रूप में अपनी कितनी और कौनसी आहुति इस यज्ञ में डाल सकते हैं।

मन्दिर धड़ा-धड़ बन रहे हैं, गुरुद्वारे फटाफट बन रहे हैं, गिरजे चटापट बन रहे हैं तो फिर अपने गुरुकुल दनादन क्यों न बनें। अपना ओ३म् ध्वज गांव-गांव और गली-गली में क्यों न लहराये। प्रत्येक सिख, प्रत्येक ईसाई और प्रत्येक मुसलमान अपनी नई बननेवाली संस्था में अपना भाग श्रद्धापूर्वक लगाता है।

अतएव उनकी संस्था गिने दिनों में तैयार दीखती हैं। निःशुल्क श्रमदान (कारसेवा)की परम्परा उनमें अनुकरणीय है। फिर हम ही क्यों पीछे रहें। जब राममन्दिर के लिए अयोध्या में लाखों कार सेवक पहुंच सकते हैं तो गुरुकुल निर्माण के लिए भी अवश्य पहुँचेंगे और पहुंच रहे हैं। आपने आगे कदम बढ़ाये हैं ये मंजिल पाकर ही रुक सकें। प्रतिदिन पहुंचानेवाले कारसेवकों की सूची में आप अपना नाम अंकित करा सकें। प्रभु हमें ऐसी शक्ति प्रदान करे। संक्षेप में आप निम्न प्रकार से निर्माण कार्य में भागीदार बन सकते हैं —

- १०१ रु० देकर वार्षिक सदस्य बनकर
- ११०० रु० देकर आजीवन सदस्य बनकर
- ५१०० रु० सम्मानित आजीवन सदस्य बनकर
- ५१००० देकर सरक्षक ,, ,, ,,
- एक दिन या अनेक दिन श्रमदान (कार्यसेवा) करके या उतने दिन उतने व्यक्तियों की मजदूरी भेजकर।
- किसी दानी को प्रेरित करके अधिकाधिक दान दिलाकर।
- अपने या अपने पूर्वज माता-पिता आदि के नाम कमरे या मुख्य द्वार बनवाकर।
- गुरुकुल के आचार्य व सदस्यों को साथ लेकर चन्दा कराकर।
- ट्रैक्टरवाले किसान भाई एक दो दिन सामर्थ्यानुसार मिट्टी आदि पहुंचा कर।
- मासिक, पाक्षिक या साप्ताहिक पत्रिकाओं के सम्पादक इस प्रलेख को प्रकाशित कराकर।
- अपनी पवित्र कमाई में से प्रतिदिन एक रु० गुरुकुल को देकर।
- ५, ११ या २१ रु० प्रतिमास दे सकते हैं।

विशेष—उपरोक्त को पढकर आपने अपनी प्यारी संस्था के लिए अवश्यमेव कुछ न कुछ निश्चय किया होगा। यदि हां तो इस सम्बन्ध में अन्य जानकारी व पत्र-व्यवहार तथा धन आदि गुरुकुल के निम्न पते पर भेजें। स्मरण रहे गुरुकुल को सरकार ने आयकर (इन्कम टैक्स) से मुक्त किया है।

पता : — आचार्य हरिदत्त,
गुरुकुल लाढौत, रोहतक

निवेदक :— प्रबन्ध समिति गुरुकुल लाढौत

अंतर्राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता में गुरुकुल कुरुक्षेत्र का दबदबा

थानेसर २१ सितम्बर—विद्या विहार गुरुकुल के पहलवानों के जिलास्तरीय अन्त. अखाड़ा कुश्ती प्रतियोगिता में अपने प्रदर्शन से सब को आश्चर्यचकित कर दिया तथा सभी वर्गों में सबसे अधिक इनाम और मेडल प्राप्त कर लिया। तीन दिवसीय जिला अन्त:अखाड़ा कुश्ती प्रतियोगिता स्थानीय द्रोणाचार्य स्टेडियम में सम्पन्न हुई, जिसमें १७५ पहलवानों ने भाग लिया। कुरुक्षेत्र के उपायुक्त रणीराम बंसवाल ने विजयी पहलवानों को तो पुरस्कार दिये मगर ५ हजार रुपये का अनुदान खेल विभाग को कुश्ती खेल को बढावा देने के लिए दिए।

सबसे कम उम्र के पहलवानों ने चौदह वर्ष तक की श्रेणी २४ किलोग्राम की कुश्ती में गुरुकुल के संदीप ने पहला, खेड़ी मारकंडा के हरिकृष्ण ने दूसरा स्थान प्राप्त किया।

२८ किलो वजन में गुरुकुल के रामनिवास ने पहला और तरुणदीप ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। ३० किलोग्राम वजन में गुरुकुल के सतबीर ने पहला और गीता निकेतन विद्यालय के सत्यवीर ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। ३२ किलो वजन में गुरुकुल के ही जसमेर के पहला और महेंद्र ने दूसरा स्थान प्राप्त किया मगर ३५ किलो वजन की कुश्ती में पेहवा के अनुज कुमार ने गुरुकुल के शमशेरसिंह को पछाड़कर पहला स्थान प्राप्त किया। ४८ किलो में गुरुकुल के विलसन ने खेडी मारकडा के जसमेर को हराकर पहला स्थान प्राप्त किया।

१६ वर्ष की से कम उम्र के पहलवानों में ३८ किलोग्राम में गुरुकुल के ओमप्रकाश ने प्रथम तथा एस.पी.डी.ए. के सुरेश ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। ४० किलो में गुरुकुल के जयपाल और गुरमेल ने पहले और दूसरे स्थान प्राप्त किया। ४५ किलो में गीता निकेतन के नरेशकुमार ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। ४५ किलो में गुरुकुल के कर्मवीर और सुरेश पहले और दूसरे स्थान पर रहे। ५५ किलो में एस. पी डी. ए के दयालसिंह ने गुरुकुल के बहजीत शाहबाद के अश्विनी कुमार को चित करके पहला स्थान प्राप्त किया। १८ वर्ष से कम आयु की श्रेणी में अपने-अपने वजन में गुरुकुल के संजीव नेत्रपाल, जयनारायण, धर्मवीर सिवकुमार तथा ओमप्रकाश ने पहला स्थान प्राप्त किया।

सीनियर वर्ग में ४८ किलोग्राम वजन के पहलवानों की कुश्ती देखने लायक रही। खेडी मारकडा के रमेश पहलवान ने सारसा के बलराम को धाराशायी किया। ४३ किलोग्राम में सारसा के बलवान् के शाहबाद के राजकुमार को हराकर बाजी जीत ली। ५७ किलोग्राम की कुश्ती में शाहबाद के बलवीर ने गुरुकुल के हुकमसिंह ने हराकर अपने अंक बराबर किये। ६८ किलोग्राम वजन में पेहवा के करनैलसिंह पहलवान ने गुरुकुल के मेहरसिंह पहलवान को हराया।

(दैनिक जनसत्ता)

उपनिषद्-विद्या

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष—वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ० प्र०)

वास्तविकता यह है कि उपनिषद् किसी पुस्तक का नहीं अपितु एक विद्या का नाम है। अनेक पुस्तकें उपनिषद् के नाम से प्रचलित हैं उन सब पुस्तकों में उपनिषद् विद्या है और न केवल है ही अपितु उनका विशद विवेचन है। किन्तु उपनिषद्-विद्या इतनी ही है, जितनी पुस्तक रूप में उपलब्ध है—ऐसा मान बैठना भ्रांति होगी।

उपनिषद् जैसा कि इस शब्द से ही प्रकट है, उप=निकट, निषद्=बैठना, सम्पूर्ण शब्द का अर्थ हुआ निकट बैठना। किसके निकट बैठना? जिसका वर्णन इस नाम के ग्रंथों में किया गया है। उपनिषद् अध्यात्म-विद्या के ग्रंथ हैं। विद्या शब्द का अर्थ है ज्ञान अतः उपनिषद् विद्या का अर्थ हुआ वह ज्ञान, जिसके द्वारा परमात्मा से निकटता स्थापित की जा सके।

उपनिषद् तथा निकटता स्थापित करना—इन शब्दों का ध्वनितार्थ यह है कि अभी तक निकटता नहीं है। निकटता होती तो निकटता प्राप्त करने अथवा निकटता स्थापित करने का प्रश्न ही कुछ नहीं था।

इससे यह सन्देह कहो या प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या परमेश्वर किसी स्थान विशेष पर रहता है? क्या वह सर्वव्यापक नहीं है? परमेश्वर किसी स्थान विशेष पर नहीं है। वह तो सर्वदेशीय और सर्वव्यापी है। यदि ऐसा है तो दूरी किस बात की? फिर तो वह प्रत्येक समय और प्रत्येक स्थान पर साथ ही नहीं है अपितु प्रत्येक समय हमारे भीतर भी है। दूरी का अर्थ पृथक् स्थान ही नहीं होता।

दूरी केवल स्थान अर्थात् देश की ही नहीं होती। देश की दूरी भी होती है और साथ ही समय और ज्ञान की भी दूरियां होती हैं। इस प्रकार तीन प्रकार की दूरियां हुईं। कहीं दूरी का अर्थ स्थान की दूरी होता है? कहीं समय की दूरी और कहीं ज्ञान की दूरी? स्थान की दूरी को दो स्थानों के मध्य की दूरी कहते हैं। फिर चाहे वह स्थान नगर हो, ग्राम हो, देश हो या अन्य दो प्राणी अथवा वस्तु विशेष हो। सर्वव्यापक होने के कारण क्योंकि परमेश्वर हमारे भीतर भी है, अतः यह देश अथवा स्थान की दूरी तो हमारे और उसके मध्य में है ही नहीं। एतदर्थमेव उससे निकटता प्राप्त करने के लिए कहीं, किसी स्थान पर जाने का तो प्रश्न ही नहीं।

जहां तक प्रश्न समय की दूरी का है, समय अर्थात् वर्ष, मास, दिन, प्रहर, घड़ी, पल, विपल आदि। ऐसी कोई बात तो है नहीं कि ईश्वर दो वर्ष पहले अथवा ४ दिन पहले, मिल सकता था या दो मास अथवा १५ दिन बाद मिलेगा। वह तो प्रत्येक समय मिल सकता है और जीवनपर्यन्त न मिले—यह भी हो सकता है। हमारे भीतर भी व्यापक होने के कारण प्रत्येक समय मिला हुआ है।

तीसरी दूरी है ज्ञान की। यदि कोई वस्तु हमारे पास ही रखी हो और हम उस वस्तु को न जानते हों तो उसके द्वारा होनेवाले लाभ से वंचित ही रहेंगे। उदाहरण के लिए कोई स्वामी अपने भृत्य को कोई वस्तु उठा लाने को कहे। भृत्य वहां जाये, जहां वह वस्तु रक्खी हुई अनेक वस्तुओं में से वह कौनसी है, जिसे उठा लाने को स्वामी ने कहा था? वह वस्तु जिसे ले जाने के लिए वह आया है, अत्यन्त निकट है, सामने रक्खी है; किन्तु आकृति का ज्ञान न होने से नहीं उठा पाता। वह निकट होते हुए भी उसके लिए तो दूर ही है उसकी दूरी केवल न जान पाना है। यदि उसे जानले, उसकी आकृति का ज्ञान हो जाये तो कोई भी लेशमात्र भी दूरी नहीं है। फिर तो वह निकट, अतीव निकट है। इसी को ज्ञान की दूरी कहते हैं। यही ईश्वर और मानव के मध्य की दूरी है। यदि यह निकल जाय तो ईश्वर की प्राप्ति में क्या देर? देर तो ईश्वर के स्वरूप को जान लेने की है। जो स्वरूप को जानेगा, वही तो पहचानेगा। स्वरूप को न जानकर ही तो भटक रहा है। स्वरूप का ज्ञान न होने के कारण ही तो स्वार्थी और धूर्तजनों के द्वारा ठगा जाता है। स्वरूप के ज्ञान न होने के कारण ही तो उसके विषय में अनेक अनर्गल कल्पनायें कर रक्खी हैं, मानव ने। उसके स्वरूप के ज्ञान के अभाव में ही तो उसकी नाना प्रकार की मूर्तियां बना रखी हैं।

वेद ने तो स्पष्ट घोषणा की हुई है 'न तस्य प्रतिमा अस्ति' (यजु० ३२/३) उसकी प्रतिमा नहीं है। हो सकती भी नहीं—क्योंकि वह शरीरधारी नहीं है। शरीरधारी की प्रतिमा बनायी जा सकती है, शरीरधारी की, अशरीर की नहीं। जिसका कोई शरीर न हो, उसकी आकृति नहीं हो सकती। वेद ने तो इस विषय में भी अत्यन्त स्पष्ट घोषणा कर रक्खी है।

> स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धपापविद्धम्।
> कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छा-
> श्वतीभ्यः समाभ्यः ॥ (यजुर्वेद ४०।८।)

इस मन्त्र में कहा गया है कि परमात्मा सब ओर व्याप्त है, बल का भण्डार, शरीर रहित, उसके फोड़ा-फुन्सी नहीं होते, घाव आदि नहीं लगते, वह नाड़ी-नस के बन्धन से बाहर है अर्थात् उसके नस-नाड़ियां नहीं हैं, वह शुद्ध है और उसके द्वारा पाप नहीं होते। वह क्रान्तदर्शी और मननशील, सर्वत्र स्थित है, स्वयं स्थित है और अपनी शाश्वत प्रजाओं, जीवात्माओं के लिए यथोचित अर्थों अर्थात् भोग्य पदार्थों की व्यवस्था करता है।

इस मन्त्र में परमात्मा को सब ओर व्याप्त और सब ओर स्थित कहा है देहधारी न तो सब ओर तथा सब पदार्थों में व्याप्त हो सकता है और न सर्वत्र स्थित ही हो सकता है। वह तो एक समय में एक ही स्थान पर रह सकता है। आगे तो स्पष्ट ही कह दिया है कि वह कार्य अर्थात् देहवाला नहीं है। कोई भ्रांति ही न रहे। इसके लिए आगे कहा है कि उसके फोड़, घाव आदि नहीं होते। घाव आदि की सम्भावना तो शरीर में ही होती है। शरीर नहीं है, इसलिए घाव भी नहीं होते। नाड़ीरहित का अर्थ भी देहरहित होना ही है। देह होती तो नाड़ियां अवश्य होतीं, देह होती तो अशुद्ध भी हो सकती थी। अशुद्धियां तो लगती ही देह में ठहरीं। वह शुद्ध है, इसका भी यही अर्थ है कि देह-रहित है। पाप और मक्कारियां मनुष्य दैनिक सम्बन्धों में फंसा होने के कारण ही करता है। भगवान् के द्वारा पाप इसलिए नहीं होता क्यों कि वह देह और दैहिक सम्बन्धों से आबद्ध नहीं है। इस मन्त्र के अर्थों पर विचार करने से अत्यन्त स्पष्ट है कि भगवान् शरीरधारी नहीं। अतः उसकी मूर्ति की कल्पना करना कोरी अविद्या और अज्ञान अर्थात् उस प्रभु को न समझना ही है। स्थान विशेष पर अवस्थित अवतार आदि मानवों अथवा मूर्ति की कल्पना से मनुष्य तभी तक फंसा रहता है, जब तक वह यह ठीक से न समझ ले कि परमात्मा क्या है? जहां यह समझ आयी कि ज्ञान की दूरी समाप्त हुई और परमात्मा की प्राप्ति हुई। ज्ञान की दूरी के समाप्त होने का नाम ही निकटता प्राप्त करना है। यह ज्ञान जिस पुस्तक अथवा विचार से प्राप्त हो—उसका नाम उपनिषद् है।

उपर्युक्त विवेचन के सन्दर्भ में विचार किया जाए तो यह बात एकदम स्पष्ट हो जाती है कि उपनिषद् एक विद्या है और उस पर जितना विचार किया जाए, उतनी ही उपलब्धि अध्यात्मक्षेत्र में होगी। उतनी ही प्रभु से निकटता हो जायेगी। जहां तक हमने समझा है, यह उपनिषद् की पराकाष्ठा है। इस पराकाष्ठा को वेद के निम्न मन्त्र में प्रस्तुत कर दिया है :—

> यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं वा घा स्या अहम्।
> स्युष्टे सत्या इहाशिषः ॥ ऋ० ८/४४/२३

(शेष पृष्ठ ६ पर)

गतांक से आगे—

वेदप्रचार सप्ताह के पवित्र अवसर पर—

वेद क्या हैं—वेद ही ईश्वरीय ज्ञान क्यों ?

लेखक—सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

इन चारों वेदवाणियों की प्रेरणा के सम्बन्धों में सामवेद मन्त्र संख्या ६४५ में कहा गया है—मन्त्र है—

प्रावीविपत् वस्व ऊर्मिनं सिन्धुर्गिरस्तोमान् पवमानो मनीषा अन्तः पश्यन्

अर्थात्—ब्रह्मचर्य की रक्षा द्वारा अपने जीवन को पवित्र बनाने के स्वभाव वाला मनुष्य, जैसे—सिन्धुः उर्मि न—समुद्र अपने में तरंगों को प्रेरित करता है उसी प्रकार वाच—पदार्थों के गुणधर्मों का स्पष्ट कथन करनेवाली ऋग्वेद अथवा विज्ञानवेद की वाणियों को—प्रावीविपत् यह मनुष्य अपने अन्दर प्रकर्षेण प्रेरित करता है और उन वाणियों के द्वारा विज्ञान को बढ़ाकर प्रकृति के पदार्थों का ठीक उपयोग करता है। इसी प्रकार—गिर—यजुर्वेद की उपदेशात्मक गिराओं-वाणियों को अपने में खूब प्रेरित करता है और अपने कर्त्तव्यों का स्मरण करता है। ऐसे ही यह श्रेष्ठ मनुष्य, स्तोमान्—सामवेद की स्तुति—समूहरूप वाणियों को भी अपने अन्दर प्रेरित करता है और स्तोमों के द्वारा प्रभु के निकटतम सम्पर्क में आकर शक्तिशाली बनता है। इसी प्रकार, मनीषा=अथर्ववेद की बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण नैतिक उपदेश देनेवाली बातों को भी यह अपने मे सदा प्रेरित करता है। इसी प्रकार चारों वेद-वाणियों से प्रेरणा पाकर मनुष्य अपने जीवन को पवित्र बना सकता है।

परमात्मा ही इन वेदवाणियों को प्राप्त कराता है -इसलिए वेद परमेश्वरोक्त कहे जाते है। इसमें सामवेद मन्त्र संख्या—६५५ का मन्त्र प्रमाणित करता है कि—गोवित्प्रवस्व-अर्थात् परमात्मा वेदवाणियों को देनेवाले हैं। सृष्टि के प्रारम्भ में जीवों के कल्याण के लिए वेदज्ञान को ऋषियों के हृदयों में प्राप्त करते हैं क्योंकि वे प्रभु भुवनेषु अर्पित—सब लोक-लोकान्तरों में व्यापक हैं। प्रेरणा आन्तरिक होती है। वह हृदय के अन्दर ही होती है। इसी बात को कहते हुए सामवेद मन्त्र संख्या ९६० में कहा गया है। मन्त्र है—

"अजानो वाचमिष्यसि पवमान विधर्मणि।
क्रन्दन् देवो न सूर्यः।

अर्थात्—वाचं-इष्यसि इस वेदवाणी को परमात्मा हमारे में प्रेरित करते हैं। वेदवाणी का उच्चारण करते हुए वे प्रभु हमें हमारे कर्त्तव्य कर्मों को प्रेरणा प्राप्त कराते हैं जिससे कि उनके द्वारा हम उचित प्रकार से अपना जीवन धारण कर सकें।

जैसे प्रातःकाल होते ही उदित सूर्य प्रकाश फैलाता है, इसी प्रकार परमात्मा सृष्टि का आरम्भ करते ही ऋषियों के पवित्र अन्तःकरण में वेदवाणी को प्रेरित करते हैं। इस प्रेरणा के द्वारा ही ऋषि मुनि वेद का ईश्वरीय सन्देश जन-जन तक सृष्टि के आरम्भ में पहुंचाते हैं। ऋषियों से इस ईश्वरीय सन्देश को सुनकर ही श्रुति अर्थात् वेदज्ञान का श्रवण करते हैं। इन प्रमाणों से पूर्णतया सिद्ध होता है कि वेद ईश्वरोक्त हैं—ईश्वरीय ज्ञान हैं। वेद का यह ज्ञान स्वाभाविक प्रवाह बनकर नदी के जल की तरह से सारे विश्व में ऋषियों द्वारा प्रवाहित किया जाता है। इस ज्ञान के पवित्र प्रवाह में स्नान कर ही मनुष्य पवित्र बन जाता है। क्योंकि ये वेदवाणियां हमारी रक्षा के लिए ही परमात्मा द्वारा रची गई हैं।

इस प्रभु में द्वारा रचित वेदवाणी को सामवेद के मन्त्र संख्या ९९० में अष्टापदी वाक् का नाम दिया गया है। मन्त्र है—

वाचं अष्टापदीं अहं नवस्रक्तिं ऋतावृधम्।
इन्द्रात् परितन्वं ममे।

मन्त्र का अभिप्राय यह है कि मैं इन्द्रात्—उस ज्ञानरूप परमैश्वर्य वाले प्रभु से, वाच—वाणी को, परिममे—अपने अन्दर निर्मित करता हूं। किस वाणी को ? अष्टापदी—आठों दिशाओं में अर्थात् सर्वत्र व्याप्त। सर्वत्र लोक-लोकान्तरों में प्रभु ने इस वाणी का तो उपदेश दिया है।

अष्टापदी अथवा नाम, धातु, अव्यय, उपसर्ग, स्वर, व्यंजन अनुस्वार, विसर्ग रूप आठ पदों वाली। नवस्रक्तिम्-प्रभुस्तवन का सृजन करनेवाली-सर्वे वेदा यत् पद आमनन्ति—सारे वेद उसी प्रभु का तो स्तवन कर रहे हैं अथवा-नवविधियों का सब शक्तियों का सृजन करनेवाली वेदवाणी. ऋतावृधम्—सत्य का वर्धन करनेवाली हैं। तन्वम् -सूक्ष्म, अर्थात जिसमें सब विद्याएं बीज रूप से निहित हैं। ऐसी है यह ईश्वरप्रदत्त वेदवाणी।

आदि सृष्टि में परमेश्वर गुरु ने ही अपनी सर्वशक्तिमत्ता से इन शब्दों का उच्चारण भी करना सिखाया। क्योंकि शुरु-शुरु मे जीवों को शब्द और भाषा का ज्ञान न होने से उन आदि ऋषियों में स्वतः शब्दोच्चारण का सामर्थ्य न था। यह शब्दों का उच्चारण कैसे होता है इसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने वेदांगप्रकाश के प्रथम भाग में वर्णोच्चारण शिक्षा में शब्द की उत्पत्ति, उसका स्वरूप, एव लक्षण का वर्णन करते हुए लिखते हैं—

आकाशवायुप्रभवः शरीरात्,
समुच्चरन् वक्त्रमुपैति नादः।
स्थानान्तरेषु प्रविभज्यमानो,
वर्णत्वमागच्छति यः स शब्दः।

अर्थात्—आकाश और वायु के संयोग से उत्पन्न होनेवाला, नाभि के नीचे से ऊपर को उठता हुआ जो मुख को प्राप्त होता है उसको नाद (आवाज) कहते हैं। वह वह कण्ठ आदि स्थानों में विभाग को प्राप्त हुआ वर्णभाव को प्राप्त होता है उसको शब्द कहते हैं।

आत्मा बुद्ध्या समेत्यार्थान्,
मनो युङ्क्ते विवक्षया।
मनः कायाग्निमाहन्ति,
स प्रेरयति मारुतम्।
मारुतस्तूरसि चरन्मन्द्रं
जनयति स्वरम्।

अर्थात्—जीवात्मा अपनी बुद्धि से अर्थों की संगति करके कहने की इच्छा से मन को युक्त करता है, विद्युत्रूप मन जठराग्नि को ताड़ता वह वायु को प्रेरणा करता और वायु उरःस्थल से विचरता हुआ मन्दस्वर को उत्पन्न करता है।

यह सारी की सारी क्रिया आदि मानव अर्थात् वेदज्ञान को प्राप्त करनेवाले पवित्रात्माचार ऋषियों के हृदय मे स्वत. ही नहीं हो जाती, परन्तु ईश्वर ही अपने सामर्थ्य से स्वयं ही कराता है। इसमें महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के सातवें समुल्लास में वेदेश्वर विषय और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदोत्पत्ति प्रकरणों में लिखते हैं कि अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा इन चार ऋषियों को जैसे वादित्र को कोई बजावे या काठ की पुतली को चेष्टा कराए इसी प्रकार ईश्वर ने भी उनको निमित्तमात्र किया था।

परमात्मा ने अपना यह ज्ञान उन ऋषियों को शब्दों, भावों तथा भाषा आदि के साथ दिया था। वेद में जितने शब्द अर्थ सम्बन्ध हैं वे सब ईश्वर ने अपने ही ज्ञान से उनके द्वारा प्रकट किये थे। ईश्वर

(क्रमशः)

हिंदी सप्ताह मनाया गया

८ सितम्बर से १४ सितम्बर तक कोसली क्षेत्र के अनेक गांवों में हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। हिंदी सप्ताह का आरम्भ रेलवे स्टेशन कोसली पर एक सगोष्ठी से किया गया। १० सितम्बर को ग्राम कोसली में हिंदी सभा का आयोजन किया गया। जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री हरध्यानसिंह के मनोहर भजन हुए। सभा को सम्बोधित करते हुए श्री हरिराम आर्य प्रधान आर्यसमाज कारोली ने हिंदी के महत्त्व पर प्रकाश डाला और आग्रह किया कि लोगों को हिंदी भाषा को अंग्रेजी या किसी अन्य भाषा से अधिक मान देना चाहिए। अपने बही खाते पत्रादि हिंदी में लिखने चाहियें और अपने पत्रों पर पते हिंदी (नागरीलिपि) में लिखने चाहियें।

१३ सितम्बर को ग्राम टूमणा में ग्रामीण सभा और बृहत्तर हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। निकटस्थ क्षेत्र से दस गांवों के लगभग एक हजार लोगों ने सभा में भाग लिया। सम्पूर्ण आयोजन की अध्यक्षता पं० सुरेन्द्र आचार्य ने की। विद्वानों के उपदेश हुए और पवित्र अग्नि की साक्षी में शराब छोडने तथा हिंदी अपनाने के बारे व्रत धारण कराये।

राष्ट्रभाषा हिंदी के बारे में बोलते हुए श्री हरिराम आर्य ने बताया, भारत को प्रादेशिक भाषाओं तथा राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में अंग्रेजी का वर्चस्व बाधक है। अंग्रेजी का प्रचलन बने रहना न केवल हमारे भाषाई ज्ञान के विकास और राष्ट्रीय एकता पर कुठाराघात कर रहा है, अपितु भारत की सभ्यता, संस्कृति, शिक्षा इतिहास में भी विष घोल रहा है। भारत के ८५ प्रतिशत लोग अंग्रेजी नहीं जानते फिर भी उन पर उपनिवेशवादियों की भाषा अंग्रेजी थोंपी जा रही है। न चाहते हुए भी भारत के विद्यार्थी पेट के लिए विदेशी भाषा में मत्था-पच्ची करते हैं। राजनीति पर सामती गुट का प्रभाव है जो अंग्रेजी माध्यम से सत्ता व नौकरी के अधिकारों को अपने हाथों में बनाये रखना चाहते हैं।

उन्होंने आग्रह किया कि भारत की प्रादेशिक भाषाओं या किसी भी भाषा के पढ़ने में दोष नहीं किन्तु जो भाषा अपनी मातृभाषा और राष्ट्र की अन्य प्रादेशिक भाषाओं को कुचल रही हो उसे हर मूल्य पर बहिष्कृत करना आवश्यक है।

१४ सितम्बर को हिंदी सप्ताह का समापन भी कोसली रेलवे स्टेशन पर स्वतन्त्रता सैनिकों की गोष्ठी में किया गया। कोसली रेलवे स्टेशन मात्र ऐसा बाजार है जिसमें दुकानों के नामपट्ट ९९ प्रतिशत हिंदी में लिखे हैं।

१३ सितम्बर को टूमणा सभा का आयोजन ग्रामवासियों के सहयोग से सर्वश्री लक्ष्मीनारायण शर्मा, चमनलाल प्रभाकर, पं० सूरज भान, हरिराम आर्य, लेखराम शर्मा, जगदीशप्रसाद के प्रयत्नों का फल था जिसमें सर्वश्री कृष्णदत्त शर्मा सत्यनारायण शर्मा आदि विद्वानों ने भाग लिया।

:—०—:

शोक समाचार

महाशय मगूराम जी बूंदवाल भगवाडी खुर्द जिला अलवर का दिनाक ३-९-९१ को पक्षाघात के कारण स्वर्गवास होगया। वे आर्यसमाज के प्रमुख कार्यकर्त्ता थे। परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति दे और परिवारजनों को धैर्य प्रदान करे।

मा० जगमालसिंह बेधड़क
आर्यसमाज सिलारपुर तोताहेड़ी
जिला महेंद्रगढ

डा० देवव्रत आचार्य सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक बने

दिल्ली—सार्वदेशिक आर्यवीर दल समिति की १४-१५ सितबर को बैठक हुई जिसमें पं० बाल दिवाकर हंस ने स्वेच्छा से प्रधान सञ्चालक पद से विमुक्त होने की इच्छा की और अपने स्थान पर डा० देवव्रत आचार्य को प्रधान सञ्चालक बनाये जाने की संस्तुति की। सर्वसम्मति एवं करतलध्वनि के साथ डा० देवव्रत आचार्य को दल का प्रधान सञ्चालक मनोनीत किया गया।

श्री देवव्रत जी गुरुकुल झज्जर के सुयोग्य स्नातक हैं। इन्होंने व्याकरणाचार्य, दर्शनाचार्य, पी० एच० डी०, वेदवागीश, व्यायाम पारङ्गत और डी० वाई एड० (योगाचार्य) की उपाधियां प्राप्त की हैं। आप पिछले २५ वर्षों से समस्त भारतवर्ष में नवयुवकों को भारतीय व्यायाम, योग प्रशिक्षण एवं शस्त्रास्त्र, कराटे इत्यादि का प्रशिक्षण दे रहे हैं। उनके मार्गदर्शन में सैंकड़ों व्यायाम शिक्षक देश के विभिन्न स्थानों में प्रशिक्षण दे रहे हैं। आपके आने से आर्यवीर दल में नवीन चेतना आई है। हमें यह पूरी आशा है कि आपके नेतृत्व में आर्यवीर दल प्रगतिपथ पर आगे बढ़ेगा।

—कार्यालय मन्त्री

वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज गन्नौर शहर का ३९वां वार्षिकोत्सव ४, ५, ६ अक्तूबर १९९१, शुक्रवार, शनिवार, रविवार को होना निश्चित हुआ जिसमें हमारे मुख्यातिथि, श्रीमती शांति राठी शिक्षामन्त्री हरयाणा सरकार होगी।

प्रेमनाथ आहूजा, प्रचारमन्त्री,
आर्यसमाज गन्नौर शहर
सोनीपत, (हरयाणा)

(पृष्ठ ३ का शेष)

अर्थात् हे परमात्मा! हे प्रकाशमय प्रभो! मैं आपके निकट पहुंचा तो किन्तु अब मैं आपसे बिछुडना, विलग होना नहीं चाहता। मैं तो यह भी नहीं चाहता कि मैं केवल आपके पास ही रहूं। मेरी तो अब यही एकमात्र अभिलाषा है कि मैं तू ही हो जाऊं। यदि तू यह समझता है, दयामय देव! यदि आप यह समझते हैं कि अपने अल्प सामर्थ्य के कारण मैं आप सर्वशक्तिमान् के स्वरूप को धारण कर पाने में असमर्थ हूं, आप जैसा अग्निस्व धारण करने के योग्य नहीं हूं तो फिर आप ही मैं हो जाये। जो भी हो, मैं अब आप जैसे अग्निस्वरूप जाज्वल्यमान को प्राप्त करके छोड़ने को तैयार नहीं हूं।

इससे आगे उपनिषद् का कोई अर्थ नहीं हो सकता, कोई लक्ष्य भी नहीं हो सकता। उपनिषद् विद्या का अर्थ तो ब्रह्मप्राप्ति की ओर जीव को ले चलना ही है। उस ओर चलने के लिए इस विषय का विशद विज्ञान है, उस सबका विवेचन इस लेख में सम्भव नहीं।

अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाण की अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक दिनांक ६ अक्टूबर, ९१ रविवार को दोपहर १२ बजे आर्यसमाज मन्दिर चरखीदादरी जिला भिवानी में होनी निश्चित हुई है।

शोक समाचार

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय सेवक श्री सत्यवीरसिंह की माताजी का दिनांक १९-९-९१ को स्वर्गवास होगया। वे पिछले कई दिनों से बीमार थी। परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति दे और परिवारजनों को धैर्य प्रदान करे।

शेरसिंह
व्यवस्थापक 'सर्वहितकारी'

तपोवन का शरदोत्सव

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून का शरदोत्सव दिनांक २ अक्तूबर से आरम्भ होकर ६ अक्तूबर को सम्पन्न होगा जिसमें सामवेद-पारायण यज्ञ तथा योग-साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उपकुलपति आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार, स्वामी सत्यपति जी महाराज तथा आचार्य आर्य नरेश जी पधारेंगे।

मुख्य यजमान श्रीमती शांतिदेवी रहेंगी।

—(देवदत्त बाली)
मन्त्री
वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी,
तपोवन

(पृष्ठ १ का शेष)

वरुण—ईश्वर ने यह वेदज्ञान क्यों दिया ?

प्रा०—जैसे ईश्वर ने सभी के लिए सूर्य, चन्द्र, जल, वायु, पृथिवी और उसके भौतिक पदार्थ दिए हैं। ऐसे ही इन पदार्थों को बर्तने और इनसे लाभ उठाने के लिए वेदज्ञान दिया। क्योंकि बिना ज्ञान के किसी पदार्थ को बर्तकर लाभ नहीं लिया जा सकता है। जैसे कि हम बर्तने के लिए आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि यन्त्र और वाहन लाते हैं। तब ही उसको बर्तने का ज्ञान या परिचय पुस्तिका भी लाते हैं और तभी उसका उपयोग कर इच्छित लाभ का ग्रहण कर सकते हैं। जैसे कि :—

कोई रोगी किसी चिकित्सक के पास जब जाता है, तब वह उसको देखकर और हाल-चाल पूछकर केवल जैसे दवा ही नहीं देता, अपितु उसके साथ सेवनविधि, पथ्यापथ्य भी बताता है। ऐसे ही ईश्वर ने प्राकृतिक पदार्थों के साथ उनको बर्तने का ज्ञान भी दिया।

प्रत्येक राज्यव्यवस्था का एक संविधान होता है, जिसके अनुसार वहां की सारी व्यवस्था तथा नागरिकों के कर्मों के फल का भुगतान होता है। ऐसे ही जग के व्यवस्थापक का संविधान ही वेद है। उसमें जहां सूर्य आदि भौतिक पदार्थों का परिचय है, वहां मानव-जीवन का दर्शन और व्यवस्था का भी निर्देश है।

निकष—इसका भाव यह हुआ, कि प्राकृतिक पदार्थों और वेद-ज्ञान का दाता एक ही है ?

प्रा०—यह आर्यसमाज का पूर्ण विश्वास है कि, इन दोनों रचनाओं का एक ही कर्ता है। अतएव इन दोनों में एकरूपता है। जैसे कि भूगोल और भूगोल पुस्तक की एक रूपता हो सचाई की पहचान होती है। ऐसे ही एक कर्ता के कारण प्राकृतिक पदार्थों और ईश्वरीय ज्ञान में एकरूपता ही इस ज्ञान के सत्य एवं ईश्वरीय होने की कसौटी है।

सुमेधा—ऋग्वेदादि का वर्ण्य विषय और परिचय क्या है ?

प्रा०—मानव जीवन और संसार के पदार्थों का वर्णन करना ही वेद का विषय है। इन दोनों बातों का उत्तर काफी विस्तृत है, इस लिए 'वेदोद्यान' देखिए।

निकष—इतिहास की पुस्तकों में तो पढ़ाया जाता है, कि वेदों में अग्नि, इन्द्र, वरुण आदि देवों की स्तुति, प्रार्थना ही है ?

प्रा०—यह प्रश्न बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण है यह ठीक है, कि अग्नि, विष्णु, सूर्य आदि पदों को आधार बनाकर ही वेदों का वर्णन है। इनको वेद की भाषा में देवता कहते हैं। ये अग्नि, इन्द्र, सोम आदि देवता पद जहां ईश्वर के लिये आये हैं, वहां प्रकरण के अनुसार भौतिक पदार्थों, जीव, नेता आदि के लिए भी प्रयुक्त हुए। ये कहां, किसके वाचक हैं ? यही सबसे मुख्य रूप से समझने वाली बात है। इसका सुन्दर समाधान 'वेदों की कुञ्जी' में उदाहरण सहित समझाया गया है।

हरयाणा की शिक्षामन्त्री श्रीमती शांति राठी

हिसार, १५ सितम्बर—हरयाणा 'रजत जयन्ती' समारोह की शृंखला में हरयाणा साहित्य अकादमी द्वारा हिसार राजकीय कालेज में में राज्य स्तरीय हिंदी दिवस एवं साहित्य पुरस्कार समारोह में उपस्थित लेखकों एवं विद्वानों को सम्बोधित करते हुए अकादमी की अध्यक्षा एवं हरयाणा की शिक्षामंत्री श्रीमती शांति राठी ने देशवासियों से अंग्रेजी की दासता से अपना दामन छुड़ाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि विदेशी भाषा और चिंतन से स्वदेशी भावना का प्रचार सम्भव नहीं है।

उन्होंने कहा कि स्वभाषा-स्वसंस्कृति तथा स्वदेशाभिमान तभी विकसित होंगे जब हम अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी को उचित स्थान देंगे। श्रीमती शांति राठी ने हरयाणा में संस्कृति एवं साहित्य को प्रोत्साहन देने तथा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने की योजनाओं को लागू करने का आश्वासन दिया।

समारोह में वर्ष १९९०-९१ के लिए पुरस्कार दस लेखकों को प्रदान किया गया। इस अवसर पर हिंदी कहानी प्रतियोगिता के लेखकों को भी पुरस्कृत किया गया। समारोह के दूसरे स्तर में आयोजित लेखक गोष्ठी में दो शोधपत्र पढ़ें गये। पहला शोधपत्र डा० जयभगवान गोयल ने तथा दूसरा प्रो० माजदा असद ने पढ़ा।

तीसरे स्तर में लेखक गोष्ठी की अध्यक्षता डा० केदारनाथ सिंह प्रो० भारतीय भाषा केन्द्र जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली ने की। इस गोष्ठी में हरयाणा, चण्डीगढ़ तथा दिल्ली के १५० लेखकों ने भाग लिया।

इस अवसर पर हरयाणा साहित्य अकादमी द्वारा लगाई प्रकाशनों की पुस्तक प्रदर्शनी का शिक्षा मन्त्री श्रीमती शांति राठी ने उद्घाटन भी किया।

वानप्रस्थ आश्रम

अति हर्ष का विषय है कि आर्यसमाज माडल टाऊन पानीपत में वान प्रस्थ आश्रम बनकर तैयार होगया है।

आर्य विचारोंवाले वानस्थी रिहायश हेतु सम्पर्क करें।

प्रधान, आर्यसमाज माडल टाऊन, पानीपत (हरयाणा) पिनकोड-१३२१०३

यहां धर्मार्थ औषधालय नित्य-प्रति सत्संग, खुला आंगन, प्रशासन निःशुल्क पुस्तकालय नन्हें मुन्ने बच्चों की आर्यवीर दल की शाखा, संन्यासियों का आशीर्वाद शांत तथा फूलों का सुगन्धमय वातावरण की सुविधाएं प्राप्त है।

आर्यसमाज माडल टाऊन, पानीपत
ओम आर्य, मन्त्री